सचित्र विशेषांक.

वर्ष २३
अंक १-२.

सम्पादक—मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत।

वीर सं० २४५६,
कार्तिक-मार्ग०

सेवामें अर्पित है कीजे

पत्र दिगम्बर जैन।

श्रीमान् सिंघई पन्नालालजी जैन परवार एम० एल० सी०
वर्तमान सभापति, भारत० दि० जैन परिषद्।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २) विशेषांक मूल्य ॥)

विषय-सूची।

चित्र–सूची।

श्रीसमन्तभद्रस्वामी व राजा शिवकोटि।

शिवकोटि नृपने हठ किया, पिण्डो नमनके हेतु जब।
कर ही लिया सु समन्तभद्राचार्यने स्वीकार तब॥
धर ध्यान देव जिनेन्द्रका, मस्तक तनिक नीचा किया।
पिण्डो फटो, चन्द्रप्रभूने "दास" तब दर्शन दिया॥

जैनविजय प्रेस-सूरत.

॥ श्रीवीतरागाय नमः

नाना काजभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततामु, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम्॥

वर्ष २३वाँ	वीर सम्वत् २४५६, कार्तिक-मगसिर, विक्रम सम्वत् १९८६.	अङ्क १-२.

सुमतिनाथ भगवान।

(रचयिता-पं० परमेष्ठीदासजी जैन, न्यायतीर्थ—सूरत।)

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान॥

दम्भ कषाय कलह कुरीतिका, हो जावे अवसान।
चकनाचूर हमारा होवे, सब झूठा अभिमान॥
सुमति दो सुमतिनाथ भगवान॥ १॥

प्राणहीन सम जैनजाति नित, सहती है अपमान।
अब तो शीघ्र सम्हल जावें हम, हो निजपरका भान॥
सुमति दो सुमतिनाथ भगवान॥ २॥

होते नित्य आक्रमण नूतन, कायर हमको जान।
अब हो जैन समाज साहसी, रक्खे धर्मकी आन॥
सुमति दो सुमतिनाथ भगवान॥ ३॥

आपसकी तू तू म मैं तज, तजे मूर्खता मान।
धर्म हेतु हम तन मन धनका, करदें हँस कर दान॥
सुमति दो सुमतिनाथ भगवान॥ ४॥

अत्याचार क्षार हो जावें, करें प्रयत्न महान।
नहीं बुराई धर्म देशकी, सुनें हमारे कान॥
सुमति दो सुमतिनाथ भगवान॥ ५॥

जगसे प्रेम हमारा होवे, अपने बन्धु समान।
हिलमिल करके "दास" सभी फिर, गावें जिनगुण गान॥
सुमति दो सुमतिनाथ भगवान॥ ६॥

नूतन वर्षाभिनंदन ।

आओ नव वर्ष पधारो ॥ आओ० ॥
अपने शुभागमनसे सबकी अन्तर्दशा सुधारो ॥आओ०॥

आये हो तो शुभ हो आओ,
सबके हृदय कंज विकशाओ,
कइ. कुवासनाओंके कारण हृदय हो रहे तंग।
दूर हटा संकोच उन्होंका लाओ नूतन रंग॥
मिटे यह जिससे अन्तर्दाह,
बढ़े प्रतिदिन नव नव उत्साह,
इतना करनेको भूतलपर प्यारे वर्ष पधारो ॥आओ०॥

(२)

हृदय अज्ञतासे जकड़े हैं,
कुरूढ़ियोंको वे पकड़े हैं,
हो फिर भला वहांपर कैसे उदारताका वास।
कैसे अन्तर्दाह न हो क्यों बने न दुखके दास॥
हृदय अज्ञता दूर हटाओ,
हृदि अज्ञता नहीं बढ़ाओ,
कर संचार सुशिक्षाका सामाजिक दशा सुधारो ॥आओ०॥

(३)

फूट राक्षसी नाच रही है,
सर्व नाशको याच रही है,
सामाजिक संगठन कहो फिर कैसे होगा आज।
बिना संगठन बन सकता क्या उन्नत कभी समाज॥
फूट राक्षसी दूर हटाओ,
हृदय हृदयमें प्रेम बढ़ाओ
हार्दिक कल्मष प्रेम सलिलसे आओ शीघ्र पखारो ॥आओ०

(४)

उन्नत तभी सुधर्म बनेगा,
शांति दयामें देश सनेगा।
सुखमय होकर सभी तभी पालेंगे पूर्ण स्वराज।
सुर क्या अहमिन्द्रोंसे बढ़कर होगा पुरुष समाज॥
स्वर्ग लोक नर लोक बनेगा,
दम्भ द्वेष मात्सर्य हनेगा।
सफल स्वागमन अहो बनाने आओ वर्ष पधारो ॥आओ०॥

निर्वाण ।

(रचयिता-पं० मूलचन्द्रजी जैन 'वत्सल')

निर्वाण ।

हां ! कर्मजालसे मुक्त वीरका श्रेष्ठ आत्मकल्याण ।
आत्म विजयकी पूर्ण सफलताका हां अंतिम दृश्य ॥
मानवीय सर्वोत्कृष्ट सत्ताकी प्राप्ति अदृश्य ।
जीवात्माका विश्व बंधनोंसे सदैवको त्राण ॥
हां निर्वाण ॥ १ ॥

निर्वाण ।

हां ! कर्मजालसे मुक्तवीरका श्रेष्ठ आत्मकल्याण ।
मनुजो ! देखो ! मानवका परिपूर्ण आत्म उत्थान॥
हां, मानवका ! तुम मानव हो? सोचो कुछ ला ज्ञान।
क्या पासकते हो तुम भी ! जग बन्धनसे परित्राण ॥
हां निर्वाण ॥ २ ॥

निर्वाण ।

हां ! कर्मजालसे मुक्त वीरका श्रेष्ठ आत्मकल्याण ।
पासकते हो तुम भी हे मनुजो ! वह मुक्ति महान ॥
कर सकते हो तुम भी हे मनुजो ! वह आत्मोत्थान ।
करो प्रयत्न बने हो तुम क्यों, हा ! ऐसे म्रियमाण ॥
होगा सफल तुम्हारा तब ही दिवस वीर निर्वाण ।
हां निर्वाण ॥ ३ ॥

आशीर्वाद ।

दि-न दिन उन्नति करे, "दिगंबर जैन" हमारा ।
गं-ग सलिल सम बहे, विमल शिक्षाकी धारा ॥
ब-ने विश्वका मित्र, कलहसे करे न यारी ।
र-खे नीतिसे प्रीति, भावना यही हमारी ॥
जै-न दिगंबर धर्मको, उन्नति पथपर दे पठा ।
न-हीं डरे उपसर्गसे, क्षमा खड्गसे दे हटा ॥
स-दा समयपर ही-मित्रोंसे मिलने जावे ।
दा-व धर्मका यही, सुभग सन्देश सुनावे ॥
जी-ता हरदम रहे, जातिको शीघ्र जगावे ।
ता-न एकता भरे, फूटका भूत भगावे ॥
र-त रहकर कर्तव्यपर, "प्रेम" सुधा पीता रहे ।
हे-भगवन् ! संसारमे, जैनधर्म जीता रहे ॥

निवेदक-ब्र० प्रेमसागर--बुढार।

નૂતન સાલ મુબારક હો.

નૂતન આ વર્ષ તમો સૌને, મુબારક હો મુબારક હો,
તમારા કષ્ટ સૌ ટળીને, સદા આનંદ મંગળ હો.
નડો ના અન્ય આપત્તિ, ઉપાધિ આધિ ને વ્યાધિ,
આપો સુખ શાંતિ સર્વદા, પ્રભુની હો કૃપા જયાદિ.
સાહ્ય દીન દુઃખીને થઇને, સફળ જીંદગી કરી લેજો,
લઇ આશિષ અંતરની, અમર જગ કીર્તિ મેળવજો.
મુરાદો સૌ ફળો મનની, વધો સંતત્તિ સંપત્તિ,
બાળી મનના દુરાચારો, પ્રભુમાં રાખજો પ્રીતિ.
રહી સંપી સદા જંપી, રહો સદ્ કૃત્યને કરતા,
કદી સત્ય નીતિ ધર્મ ન, મૂકશો જીવ આ જાતા.
હો દીર્ઘાયુ ભલાઇમાં, સદા શુભ કૃત્યે સિદ્ધિ હો,
નૂતન આ સાલ મુબારક હો!

મુબારક નિત્ય આનંદ હો.

રામચંદ્ર માધવરાવ મોરે-સુરત.

નૂતન-વર્ષાભિનંદન.

(હરીગીત છંદ.)

વૃદ્ધિ થજો ધન ધાન્યની, લહાવા બહેરા માણજો,
વીર-ભીમ-હનુમંત સમ, પુત્રો થકી સુખ પામજો.
સાથી બની નિજ દેશના, સંગ્રામમાં ધન વાપરો,
નૂતન બની આ વર્ષમાં, આનંદમાં દીન ગાળજો. ૧.

× × ×

આ વર્ષમા આનંદથી, હે મિત્ર મોજો માણજો,
ધન ધાન્યનો સંગ્રહ કરી, સૌ સંપ માંહી ચાલજો.
કાંતી વણી નિજ હાથથી, અંગે ધરો ખાદી તમો,
નૂતન બની આ વર્ષમાં, આનંદમાં દીન ગાળજો ૨.

× × ×

કર્તવ્ય જે અધુરાં રહયાં છે, આપણાં ગત વર્ષનાં,
કમ્મર કસીને પૂર્ણ કરજો, કામ થાએ દેશનાં.
ભારત તણા ઉદય વિષે, તમ વિત્ત વ્હાલું વાપરો,
નૂતન બની આ વર્ષમાં, આનંદમાં દીન ગાળજો. ૩.

× × ×

તન મન અને ધન વાપરી, ભારત તણી સેવા કરો,
તમ બાળુડાંને જ્ઞાન દઇ, સંસારમાં પગ આદરો.
ગાંધી સમા ગાંભીર્યથી, સૌ દેશને ઉદ્ધારજો,
નૂતન બની આ વર્ષમાં, આનંદમાં દીન ગાળજો. ૪.

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાણીસાકર, કંપાલા.

નૂતન વર્ષ સ્વાગત.

(લેખકઃ-મોતીલાલ ત્રી. માલવી-આકરોલ.)

કંઇ વર્ષ ખરે સુખરૂપ ગયાં,
નવું વર્ષજ તેમ જજો સુખમાં.
મનની શું મુરાદ ફળો સરવે,
મમ આશ ખરી પ્રભુ તેજ ફળો. ૧

શુભ કામ કરી જગતે હિતનાં,
વરમાળ ધરો જયની કરમાં.
શુભ દાન કરી ધનવાન બનો,
મમ આશ ખરી પ્રભુ તેજ ફળો. ૨

દુઃખ જાય દુરે ઘર કુસંપથી,
સુ સંપ કરો બનવાજ સુખી.
સદ્ બુદ્ધિ સદ્ગુન એ બક્ષજો,
મમ આશ ખરી પ્રભુ તેજ ફળો. ૩

ગગને વિલસો ઘટમાં પ્રગટો,
વિશ્વે સઘળાં સુખનાં કિરણો.
પરમારથ એ પ્રતિબિંબ પડો,
મમ આશ ખરી પ્રભુ તેજ ફળો. ૪

હિંદ વ્યોમ વિષે સુખ રશ્મી વધો,
પરિતાપ બધા હરિયે ડુબજો.
સુમતિ પ્રસરો સહુ વિશ્વ વિષે,
મમ આશ ખરી પ્રભુ તેજ ફળો. ૫

નિજ દેશ તણો ધરી ચાહ મને,
જન હિત તમો મનમાં ધરજો;
દુઃખીયા જનનાં મન દુઃખ હરો,
મમ આશ ખરી પ્રભુ તેજ ફળો. ૬

તન વ્યાધિ ઉપાધિ કદી ન નડો,
સુખ સંપત્તિ સંતતિ લાભ મળો.
શુભ કીર્તિ અને નિજ આયુ વધો,
મમ આશ ખરી પ્રભુ તેજ ફળો. ૭

अद्भुत-महिमा ।

(पं० गुणभद्रजी जैन-कलोल)

पालक सभीके कोई पालक तुम्हारा नहीं ।
त्राता हो महींके आपका न कोई त्राता है ॥
बिपुल विभूतियोंका दाता है सदैव तू ही ।
दीनबन्धु आपका कहीं न कोई दाता है ॥
गाते अमरेन्द्र भी तुम्हारा ही गुणानुवाद ।
अनघ कदापि तू न अन्य गुणगाता है ॥
सादर समस्त विश्वनीय तुझे ध्याते रहें ।
लेकिन तू कभी भी न प्राणियोंका ध्याता है ॥
सुधा भरा शांत उपदेश सुन प्राणिवर्ग ।
मानों मंत्र मुग्ध हो विलोकते तुम्हारी ओर ॥
तौभी तृप्त होते नेक लोचन कदापि नहीं ।
होता कभी तृप्त क्या विलोक चंद्रको चकोर ॥
हम तो तुम्हारे दीन सेवक हैं दीनबन्धु ।
रहते हैं प्रस्तुत सदैव निज हाथ जोर ॥
फूलसा है कोमल तुम्हारा चित्त सर्व प्रति ।
मेरे प्रति वही चित्त हाय शिलासा कठोर ॥

" उबारेंगे । "

(पं० रवीन्द्रनाथ जैन न्यायतीर्थ ।)

छीन सर्वस्व बने आज ये हमारे प्रभु ।
बनाकर भिखारी, कहें तुम्हें हम बनावेंगे ॥
ठूंस जेल मार तोप तीर अरु तमंचोंसे ।
पैरों तले कुचल तुम्हें धूल अब मिलावेंगे ॥
धूल किन्तु तूल होय छाय जब गगन माहिं ।
वायुके झकोरोंसे तुम्हें अब उड़ावेंगे ॥
बिजुलीके पानका अघात कई बार कर ।
गैरोंसे " नाथ " आज भारत बचावेंगे ॥

संबोधन ।

भए तुम कायर, क्यों हे वीर ?
तुम अपने पुरखोंको देखो, कैसे थे गंभीर,
कालबलीसे भी लड़नेमें, होते थे न अधीर ॥१॥
थे रणके ऐसे वो सच्चे, चाहे जाय शरीर,
पीठ दिखाना किसको कहते, डारत वैरिनु चीर ॥२॥
बलधारी, व्रतधारी, भारी, ब्रह्मचारी, प्रणवीर,
ऐसनुके तुम ऐसे उपजे जैसे रूख करीर ॥३॥
उठो! उठो! क्यों नाम लजाओ, धारो कर समशीर,
भारतकी 'प्रिय' लाज बचाओ, दूर करे सबपीर ॥

"प्रिय"

शहीदे-वतन ।

नामकर जाते अमर, देश पै मरनेवाले ।
काम कर जाते हैं वे, जांसे गुजरनेवाले ॥
जिस्म फानीकी नहीं, करते वो कुछ भी परवा ।
खेल जाते हैं, अरे जानपै मरनेवाले ॥
सच्चे होते हैं बड़े, कौलके अपने पूरे ।
होते वो और हैं, जो कहके मुकरनेवाले ॥
साफ बतला दिया है, 'दास'[1]ने करके सबको ।
ऐसे होते हैं फिदा, देशपै मरनेवाले ॥
लाजिमी है 'प्रिये' तुझको भी सबका कभी लेना ।
यूं तो होते हैं सभी, पेटके भरनेवाले ॥

पन्नालाल 'प्रिय'–वृन्दावन ।

दिगंबर ।

दि–न हो अथवा रात सदा जो ध्यानमग्न ही रहते हैं ।
गं–ग धारकी भांति आत्मनदमें ही जो नित बहते हैं ॥
ब–ने जहांतक प्राणि मात्र-हितहेतु भावना भाते हैं ।
र–हित द्वेष मद मोह, दिगंबर "दास" वही कहलाते हैं ॥

१ यतीनदास ।

चित्र-परिचय।

इस विशेषांकमें प्रकट किये गये चित्रोंका संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है-

(१) श्रीमान् सिंघई पन्नालालजी परवार जैन, रईस-अमरावती (बरार)-आपके नामसे हमारे पाठक अच्छी तरहसे परिचित होंगे। आप परवार समाजके नेता व बड़े दानी व राजमान्य भी हैं। अभी नागपुर प्रांतीय धारा-सभाके लोकनियुक्त सभासद हैं। परवार डिरेक्टरी आपने ८०००) खर्च करके तैयार कराई थी, जिससे परवार समाजका बड़ा उपकार हुआ है। परवार सभाके पांचवें अधिवेशनके आप सभापति थे तथा अभी ही हमारी भारत-वर्षीय दिगंबर जैन परिषदके सप्तम अधिवेशन अंतरीक्षजी (सिरपुर)के आप ही सभापति बनाये गये थे, जिससे वर्तमानमें आप ही सभापति हैं। आशा है कि आपके सभापतित्वमें परिषद इस वर्ष विशेष उन्नति कर सकेगी। आप चिरायु होकर धर्म, समाज व देशकी विशेष २ सेवा करते रहें।

(२) श्री स्वामी समंतभद्र और राजा शिवकोटि-स्वामी समन्तभद्र संभवतः फणिमंडलान्तर्गत "उरगपुर" के राजकुलमें उत्पन्न हुये थे। आप बहुत समय तक गृहस्थाश्रममें नहीं रहे और दि० मुनिदीक्षा कांची (कांजीवरम्) या उसके सन्निकट ग्रहण की थी। इस अवस्थामें स्वामीजीने गहन तपश्चरण और अटूट ज्ञानसंचय करनेमें समय व्यतीत किया था। जब स्वामीजी "मणुवकहल्ली" ग्राममें विहार कर रहे थे तब उनको भस्मक नामक महा रोग उत्पन्न होगया और वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। इसी कारण शास्त्रोक्त मुनिजीवन बिताना उन्हें असंभव होगया और 'सल्लेखना' व्रत अंगीकार कर लेना उचित समझा तथा गुरु महाराजसे आज्ञा मांगी। तपोरत्न गुरु महाराजने इसलिये यह व्रत देना स्वीकार नहीं किया कि स्वामीजीकी अल्पायु नहीं थी। प्रत्युत आदेश किया कि जिस वेषमें जैसे हो, रोगके शांतिका उपाय करो, रोग शान्त होजानेपर प्रायश्चित्त पूर्वक पुनः मुनिधर्म धारण किया जासक्ता है।

स्वामीजीने हृदयमें जैन धर्मका श्रद्धान रखते हुये भी दिगम्बर वेषका परित्याग कर अपने शरीरको भस्मसे आच्छादित बना लिया! और वे कांची पहुंच गये, (आराधना कथाकोषमें बनारस लिखा है) वहांका राजा शिवकोटि था और उसका 'भीमलिङ्ग' नामक शिवालय था। स्वामीजी वहां पहुंचे और राजाको आशीर्वाद दिया और बोले कि 'राजन्'! मैं तुम्हारे इस नैवेद्यको शिवार्पण करूंगा,। राजा प्रसन्न हुये और सवा मनका प्रसाद मंगवाया। स्वामीजी अकेले मंदिरमें रह गये तथा अपनी जठराग्निको शान्त किया, उपरान्त दर्वाजा खोल दिया। संपूर्ण भोजनकी समाप्ति देखकर राजाको आश्चर्य हुआ और प्रतिदिन प्रसन्नतापूर्वक नैवेद्य भेजने लगा। स्वामीजीकी जठराग्नि मिटने लगी और उत्तरोत्तर भोजन अधिक परिमाणमें बचने लगा,

आपने इसे देवप्रसाद बतलाया, मगर राजाको संतोष न हुआ और अगले दिन बलात् दरवाजा खुलवा दिया गया। समन्तभद्रजीने उपसर्ग आया जान उसकी निवृत्ति पर्यन्त अन्नजलका परित्याग किया। स्वामीजीकी शिवलिंगके प्रति भक्ति है या नहीं, यह जाननेके हेतु राजाने पिण्डी नमन करनेका आग्रह किया। तब स्वामीजी चतुर्विंशति तीर्थंकरकी स्तुति करनेमें लीन होगये और "चंद्रप्रभं चंद्र मरीचिगौरम्" इत्यादि आठवें तीर्थंकरकी स्तुति करते हुये उस भीमलिंगकी ओर देखा तो किसी दिव्यशक्तिके प्रतापसे चन्द्रप्रभु भगवानकी जाज्वल्यमान प्रतिमा प्रगट होती दिखाई दी!

राजा इस माहात्म्यको देखकर चकित होगया और वह अपने छोटे भाई शिवायन सहित समन्तभद्रके चरणोंमें गिर पड़ा। स्वामीजीने चतुर्विंशति स्तोत्र पूर्णकर राजाको धर्मोपदेश दिया जिसके प्रभावसे वह अपने पुत्र श्रीकंठको राज्य देकर शिवायन सहित दि० जैन मुनि होगया। वही शिवकोटि मुनि उपरांत आचार्य हुये और स्वपर कल्याण किया।

स्वामीजीने भी प्रायश्चित्त पूर्वक पुनः मुनि दीक्षा धारणकी और घोर तपस्या करने लगे। शुभ चन्द्राचार्यने आपको 'भारतभूषण' लिखा है। समन्तभद्र भारतके पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिणके प्रायः सभी देशोंमें अप्रतिद्वंदी सिंहकी तरह निर्भयताके साथ वाद करते हुये घूमे थे। आपने गंधहस्ति महाभाष्य, आप्तमीमांसा, युक्त्यनुशासन, स्वयंभूस्तोत्र, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, तत्वानुशासन आदि अनेक ग्रन्थ निर्माण किये हैं।

स्वामी समन्तभद्रके समयमें बहुत विवाद है, आपका कब स्वर्गवास हुआ इत्यादि बातें भी अनिश्चितसी हैं। तथापि जैन पट्टावलियोंसे आपका अस्तित्व समय शक संवत् ६० (ई० सन् १३८) प्रगट है। स्वामीजीका विशेष परिचय हम किसी आगामी अंकमें अवश्य प्रगट करेंगे। यह चित्र जो कि बहुत ही भावपूर्ण व आकर्षक है 'वीर' के समन्तभद्र अंकसे लिया गया है।

(२) अतिशयक्षेत्र श्री नेमिगिरि-जिंतूर-इस नूतन परिचित परन्तु अतीव प्राचीन अतिशय क्षेत्रका परिचय हमको श्री जिनसेवी ब्रह्मचारी महावीरप्रसादजी-जिंतूर द्वारा प्राप्त हुआ है, जो निम्नप्रकार है—

दक्षिण हैदराबाद (निजाम) के परभणी जिलेमें जिंतूर ग्रामसे २ मील दूरीपर यह नेमिगिरि पर्वत आया हुआ है, जो जमीनसे करीब आध माइल ऊंचा है। ऊपर पहाड़को काटकाट कर बड़ा विशाल भव्य मंदिर बनाया गया है जिसमें अलग२ छह मंदिर बने हुए हैं। मूलनायक श्री नेमिनाथजीकी पद्मासन प्रतिमा ९ फीट ऊंची है, परिक्रमा हो सकती है। पूर्व भागमें श्री शांतिनाथजीकी पद्मासन श्यामवर्ण प्रतिमा ६ फीट ऊंची है-परिक्रमा हो सकती है। पश्चिम भागमें फण सहित श्री पार्श्वनाथकी ७ फुट ऊंची पद्मासन प्रतिमा करीब पाव इंच अंतरीक्ष है। परिक्रमा हो सकती है। इसके उत्तर

भागमें श्री नंदीश्वरकी ४ फीट ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। इसके पासमें श्री बाहुबलीका मंदिर है। प्रतिमा श्यामवर्ण ९ फीट ऊंची पद्मासन है। इसके बायें पांवमें पारस था सो किसीने निकाल दिया है—चिह्न दिखाई देता है! फिर रास्तेके पूर्व भागमें श्री आदिनाथस्वामीकी पद्मासन प्रतिमा चार फीट ऊंची है। तथा पासमें ही पंचपरमेष्ठीकी प्रतिमा ४ फीट ऊंची है। भीतर जानेका रास्ता ढाई फीट चौड़ा इतना ही ऊंचा था जो सन् १९२३ में खुदवाकर बड़ा किया गया है, जिससे खड़े होकर जा सकते हैं। यह पहाड़ छोटे२ वृक्षोंसे ऐसा आच्छादित है कि अजान पुरुष यह नहीं जान सकते कि यहां कोई भी मंदिर होंगे। जो लोग यहां आकर इन प्राचीन भव्य मंदिरोंका दर्शन करते हैं वे प्रसन्न होकर मुक्तकंठसे स्तुति करते हैं। उत्तर दिशामें जमीनसे एक मील ऊँचेपर शिखरबंद मंदिर है जिसमें प्रतिमा नहीं है परन्तु चरण हैं। यह मंदिर १२ मीलसे दिखता है। कई लोग कहते हैं कि ३००—४०० वर्ष पहले जितूरमें जैन राजा थे या राज्यमान्य श्रेष्ठिवर्य थे। ये नित्य इन मंदिरोंकी पूजा करनेको आते थे जिसके लिये जिंतूरसे सुरंग खुदवाई गई थी। सुरंगका चिह्न गांवके मंदिरमें मौजूद है। जिंतूर गांवको जैनीनगर भी कहते थे। अनुमानतः अपभ्रंश नाम जिंतूर होगया होगा। औरंगजेब बादशाहके जमानेमें गांवके १२ मंदिर धराशायी होगये थे जिनके चिन्ह अभी दिखाई देते हैं। मंदिरके स्थानोंपर खुदवानेसे बड़ी२ प्रतिमा मिलती हैं। किसी२ का कहना है कि यह जिंतूर सोमवंशी क्षत्री चारसेनका बसाया हुआ है जिसकी साक्षि कालिका पुराणमें है। तथा जिंतूरसे ८ मीलपर चारठाना नामक गांवमें भी जैन मंदिरके चिह्न मौजूद हैं। मानस्तम्भ भी है, खुदवानेपर जैन बिम्ब भी मिलते हैं। बोगार जैन सोमवंशी क्षत्री थे उनके एक जैन राजाका किला १० मीलपर बंधा हुआ था जिसके चिह्न मालूम होते हैं। ऐतिहासज्ञोंको इसकी विशेष खोज करनी चाहिये। वर्तमानमें जिंतूरमें २० घर जैनियोंके हैं व २ मंदिर हैं। स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंदजीके भतीजे श्री० सेठ ताराचंद नवलचन्दजी वीर सं० २४४९ ई०सन् १९२३में जिंतूर पधारे थे तब नेमिगिरिकी वंदना करके व निरीक्षण करके कह गये थे कि हम इसका कुछ जीर्णोद्धार कर देंगे (जैनमित्र वर्ष २४ अंक ३२) अतएव सेठ ताराचन्दजीको इस बातपर अवश्य लक्ष देना चाहिये। हम आशा करेंगे कि ब्र० महावीरप्रसादजी इस अतिशयक्षेत्रको विशेष प्रसिद्धिमें लानेके लिये पूर्ण उद्योग करते रहेंगे।

(४) श्री आयुर्वेदाचार्य पं० सत्यंधरजी जैन वैद्य, काव्यतीर्थ—छपारा—आपका जन्म परवार जातिमें सं० १९५६में सनाई (सागर) में हुआ था। पिताका नाम छोटेलालजी था तथा आपका प्रथम नाम चुन्नीलाल था। आपको ४ वर्षकी आयुमें पिताका वियोग होगया था। जिससे काकाके पास रहने लगे थे। गरीबीके कारण आपको बहुत तकलीफें उठानी पड़ीं, फिर

सन् १९१४में कारणवश आप सागर पहुंचकर सत्तर्कसुधा० पाठशालामें प्रविष्ट होगये । इस विद्यालयके अधिष्ठाता न्या० पं० गणेशप्रसादजी वर्णी थे । आपकी सत्यवाक्पटुतासे प्रसन्न होकर वर्णीजीने आपका नाम 'सत्यंधर' रख लिया । यहां ६ वर्ष तक रहकर काशी व कलकत्ताकी संस्कृत, साहित्य व व्याकरणकी कई परीक्षायें पास कीं। फिर सेठ डालचंदजी सागरकी २०) मासिककी छात्रवृत्ति लेकर वैद्यक पढ़नेको काशी चले गये, वहां १ वर्ष पढ़कर मेलसा फिर सागर आकर विद्यालयमें कार्य करने लगे । साथमें पढ़ते भी रहें व 'आयुर्वेदभूषण'की परीक्षा पास की । फिर विशेष वैद्यक पढ़नेके लिये डालचंदजी सर्राफकी ओरसे आप कानपुरमें वैद्यराज पं० कन्हैयालालजी वैद्यरत्नके पास पहुंचे, वहां दो वर्ष पढ़कर 'आयुर्वेदाचार्य'की परीक्षा पास करली व दो वर्ष तक कानपुर जैन औषधालयका कार्य सुचारुरीत्या किया । कार्य छोड़नेपर वैद्यराजजीने आपको प्रशंसा पत्र दिया था । अभी आप दो वर्षसे छपारामें जानकीबाई धर्मार्थ औषधालयमें तथा पार्श्वनाथ विद्यालयमें उत्तमतया कार्य करते हैं तथा साथमें धन्वंतरी आयुर्वेदिक फार्मसी खोलकर ऊंचे २ रस भस्म वगैरह बनाते हैं । स्वभाव भी सरल है । आशा है जैन समाज आपके वैद्यकीय उत्तम ज्ञानका लाभ उठावेगी ।

(५) **श्रीयुत मोहनलाल मथुरादास काणीसाकर-कंपाला** (आफ्रिका)—आप वीसा मेवाडा जैन जाति व काणीसा (खंभात, गुजरात)के निवासी हैं परन्तु अभी २-३ वर्षसे निजी प्रयत्नसे आफ्रिकाके कंपाला नगरमें जाकर अच्छे व्यापारी स्थानपर नियुक्त हैं व "दिगम्बर जैन" के गुजराती लेखकोंमेंसे एक उत्तम लेखक हैं । 'जैन संस्कार विधान' नामक पुस्तक भी आपने लिखकर गुजरातीमें प्रकट की है । कुटुम्बको विना कहे ही निज उद्योगमे आफ्रिका चले गये थे परन्तु वहां जाकर सुखी होनेपर आपके कुटुम्बी आपसे प्रसन्न हैं । आप चिरायु होकर विशेष योग्यता प्राप्त करें ।

वीर-विनय ।

(रचयिता-श्री० ब्र० प्रेमसागरजी-बुढ़ार।)

बो—ध केवल प्राप्तकर, त्रैलोक्य अवलोकन किया ।
लो—कके कुल प्राणियोंको, मोक्षमार्ग बता दिया ॥
म—रना जरा अरु जन्म लेना, रोग तीनों हैं बड़े ।
हा—य ! इनके वश हुए, प्राणी भवोदधिमें पड़े ॥
वी—र तुमने उक्त रोगोंकी, दवा बतला दई ।
र—त्न तीनों प्राप्त हों तब, प्राप्त हो शिवकी मही ॥
की—र्ति तीनों लोकमें, भगवन् तुम्हारी छागयी ।
ज—न जो शरणमें आगये, उनकी विपत्ति नशा दई ॥
य—ह जानकर आया शरण, मेरी विपत्ति विनाशिय ।
हो—ऊं स्वतंत्र न जग भ्रमों, ऐसी दया परकाशिये ॥
बे—शक विना तकशीर मुझको, कर्म देते परी हैं।
रो—ग करदो नष्ट उनको, तो लहूं भवतरी मैं ॥
ग—ति चारमें मुझको रुलाते, कष्ट देतें हैं महां ।
पा—षाणसे भी अति कड़े हैं, रहिम इनमें है कहां ?
प—रमातमा इनसे बचाओ, मैं विनय करता खड़ा ।
की—जिये भवपारमैं, चिरकालसे इसमें पड़ा ॥
क्ष—य करो सब कर्म मेरे, मैं वरूं शिव नारिको ।
य—ह लगी दिल 'प्रेम'के, बस छोड़दूं संसारको ॥

सम्पादकीय-वक्तव्य

नूतन वर्षारंभ। आजकल करते २ "दिगम्बर जैन" को प्रकट होते हुये २२ वर्ष वीतगये और हर्ष है कि आज यह पत्र २३वें वर्षमें पदार्पण करता है। गत वर्षोंमें 'दिगम्बर जैन' ने जैन समाजकी कैसी सेवा की है उसको बतानेकी हमें आवश्यक्ता नहीं है, परन्तु इतना तो हम अवश्य कहेंगे कि १८ वर्ष पहिले "दिगम्बर जैन" ने ही सचित्र विशेषांक प्रकट करनेकी शुरूयात की थी जो आजतक बराबर प्रकट होता चला आरहा है व इसका ही अनुकरण हमारे समाजके कितनेक पत्रोंने किया है, यह जानकर किसको हर्ष न होगा?

यह सचित्र विशेषांक यद्यपि कारणवशात् कुछ देरीसे प्रगट होरहा है तौभी इसका लेख-संग्रह देखकर पाठकोंको इसकी देरी नहीं खटकेगी। इस अंकमें हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी व संस्कृत ऐसी चार भाषाओंके ६१ लेख व कविताओंका संग्रह पाठकोंको दृष्टिगत होगा। जिनमें "नेपालके शिलालेख व जैनधर्म" नामक ऐतिहासिक नवीन लेखसे तो जैन समाजको कई नई २ बातें मालूम होंगी। हम हरएक पाठकसे आग्रह-पूर्वक निवेदन करेंगे कि वे इधर उधरके पन्ने पलट कर व चित्रादि देखकर ही इस अंकको अलमारीमें रख न दें परन्तु समय निकाल कर इसीके सभी लेख व कविताओंको क्रमशः पढ कर लाभ उठाइये ताकि हमारा परिश्रम सफल हो।

इस अंकके लिये हमें इतने लेख व कविता-ओंका संग्रह प्राप्त हुआ है कि उन सबको हम स्थानाभावसे प्रकट नहीं कर सके हैं परन्तु वे आगामी अंकोंमें अवश्य प्रकट होते रहेंगे। जिन२ सुज्ञ लेखक व कवियोंने इस अंकके लिये अपनी२ कृतियां भेजी हैं उनका हम आभार मानते हैं व आशा करते हैं कि इस प्रकार वे दिगंबर जैनकी सेवा करते ही रहेंगे। इसबारके चित्रोंके विषयमें हम यह अवश्य कहेंगे अबके सिर्फ पांच चित्र रख सके हैं परन्तु इनमें 'स्वामी समंतभद्र व राजाशिवकोटि' का चित्र व 'नेमगिरि' तीर्थका चित्र पाठकोंको अतीव आकर्षक मालूम होगा। हमारा विचार नये मुनियोंके चित्र प्रकट करनेका था परन्तु वे प्राप्त न हो सकनेसे प्रकट नहीं कर सके हैं। परन्तु आगे प्राप्त होनेपर आगामी अं-कोंमें प्रकट करनेका अवश्य प्रयत्न करेंगे।

***

उपहारग्रन्थ। इस वर्षके ग्राहकोंको "नवरत्न" तथा जैन विवाह विधि (हिंदी भाषामें) ऐसे दो बिलकुल नवीन ग्रन्थ उपहारमें देनेका हमने निश्चित किया है, जो तैयार होने पर सब ग्राहकोंको इस वर्षके मूल्य २।=) की वी० पी० से भेजे जांयगे। मनिओर्डरसे मूल्य भेजनेवाले २।) भेजें।

***

तिथिदर्पण। इस वर्ष (वीर सं० २४५६) का जैन तिथि दर्पण श्री १०८ मुनि श्री शांतिसागरजी छानीके चित्र सहित प्रकट

करके आश्विनके अंकके साथ सब ग्राहकोंको भेज दिया गया था तथा नये ग्राहकोंको यह तिथिदर्पण इस अंकके साथ भेजा गया है ।

* * *

निवेदन । हम पुराने पाठकोंसे एक निवेदन अवश्य करेंगे कि "दिगंबर जैन" आपको २।) रुपयेमें सचित्र विशेषांक, 'तिथिदर्पण' व उपहारग्रन्थादि देकर कितना लाभ पहुंचता है अतः आपका विशेष नहीं तो इतना ही फर्ज है कि आप इसकी ग्राहक संख्या बढ़ानेका पूर्ण प्रयत्न करते रहें । यदि प्रत्येक पाठक एक २ ग्राहक बढ़ा देवे तो ग्राहक संख्या दूनी हो सकती है व पृष्ठ संख्या भी बढ़ सकेगी । आशा है कि हमारा यह निवेदन खाली नहीं जायगा ।

* * *

भा. दि. जैन परिषद्का अधिवेशन और उसकी सफलता । जैन समाजको यह बात भलीभांति विदित है कि जब भा० दि० जैन महासभा मनमानी सभा हुई या यों कहिये कि उसमें फूटमफूट हुई तब ही कुछ धर्मप्रेमी श्रीमानों और धीमानोंने धर्म एवं समाजसेवाके हेतु परिषद्की स्थापना की थी । उसने आजतक गत ७ वर्षोंमें जो आशातीत उन्नति एवं उद्देश्यकी पूर्ति की है वह भी जैन समाजसे छिपी नहीं है । परिषद्के अन्य२ स्थानोंपर अधिवेशन होकर जागृति होती रही, उसी प्रकार सप्तम अधिवेशन भी गत कार्तिक शुक्ला १५को अतिशय क्षेत्र श्री अन्तरीक्षजीमें हुआ था । सभापति थे समाज एवं राज्यमान्य धर्मप्रेमी–श्रीमान् सिंघई पन्नालालजी जैन रईस एम० एल० सी० अमरावती । फिर क्या पूछना था ? कार्य इतनी सफलता, शांति एवं उत्साहके साथ हुआ कि वर्णन नहीं किया जासका । जनसंख्या भी १५००–२०००के अनुमान होगी। जिसमें श्री० ब्रह्मचारी जिनसागरजी, ब्र० नेमचंदजी, ब्र० सीतलप्रसादजी, ब्र० महावीरप्रसादजी, विद्यावारिधि बैरिष्टर चम्पतरायजी, व्याख्यान वाचस्पति पं० देवकीनंदनजी, प्रोफेसर हीरालालजी, बालचंद देवीदासजी चवरे वकील, पं० वृजवासीलालजी, वामनराव बदनोरे वकील आदि उल्लेखनीय सज्जन थे ।

सभापतिजीने जिस निर्भीकता, सत्य एवं धार्मिक भावोंसे युक्त भाषण दिया था वह वास्तवमें अनुकरणीय है । आपने विदेशगमन, शारदा ऐक्ट, अन्तर्जातीय विवाह, स्त्री-शिक्षा प्रचार, अजैनोंको जैन बनाने, प्राचीन जैनों (कलाल, सराक आदि)का उद्धार करने, स्वदेशी प्रचार आदिका युक्तिपूर्वक समर्थन किया था । महामंत्री बाबू रतनलालजी वकीलने परिषदकी गत वर्षकी रिपोर्टमें बतलाया था कि इसके अन्तर्गत परीक्षालयमें बोर्डिंगोंके ५०० विद्यार्थी परीक्षामें बैठे थे । करीब १००) मासिक छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती हैं । प्रकाशन विभागमें ३२ ग्रन्थोंकी १५००० कोपी मौजूद हैं । अनेक पुस्तकें लागत व विनामूल्य ही प्रचार की जाती हैं । गत वर्ष १०००) की पुस्तकें बिकी और २००) की मुफ्त बांटी गई । परिषद्के ५०० सभासद हैं । लोगोंकी अतीव उत्कंठा

होनेसे बैरिष्टर सा०का 'शिक्षा व गृहस्थ धर्म' पर बहुत ही विद्वत्तापूर्ण भाषण हुआ था।

परिषद्में १८ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुये थे। जिनमें अन्तर्जातीय विवाह, जैन दीक्षा, जैन सीरीझ, स्त्रीशिक्षाप्रचार, इतिहास संशोधन बोर्ड, शारदाऐक्टसमर्थन आदि उल्लेखनीय हैं।

चालू वर्षके लिये ३९००) का बजट मंजूर किया गया। जिसमें २९००) प्रचारविभाग, ९००) दफ्तर, ३००) परीक्षाविभाग, २९०) घाटा वीर, २९०) मुतफर्रिक खर्चके लिये नियुक्त किये हैं। परिषदको अन्य दानी सज्जनोंने तो सहायता दी ही थी किन्तु सभापति महोदयने भी २९०) प्रदान किये थे। हमें विश्वास है कि ऐसे योग्य सभापतिकी अध्यक्षतामें परिषद इस वर्ष और भी उन्नतिकारक कार्य कर दिखावेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि परिषद थोड़े खर्चमें आशातीत कार्य कररही है। सच बात तो यह है कि इसके मंत्री बाबू रतनलालजी वकील निस्वार्थ सेवक हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है कि वह दिन दूनी वृद्धिगत होती हुई जैनधर्म एवं जैनसमाजकी सेवा करती रहे।

***

शारदा ऐक्ट और जैन समाज।

अधिकांश भारतवासी शारदाऐक्टसे भलीभांति परिचित होचुके हैं, और वे उसका हार्दिक समर्थन करते हैं। भले ही कुछ लोग केवल रूढ़िभंगके भयसे उसका विरोध करते हों, मगर विवेकी और उच्च जातीय बहुजन इसको हृदयसे चाहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसके चालू होनेपर भारतको अनेक लाभ होंगे। जैसे—कि इससे अनमेलविवाह न हो पायेंगे, कारण कि ३—४ वर्षका अंतर तो हर हालतमें रह जावेगा। और वृद्ध विवाहका तो काला मुँह हो ही जावेगा। कारण कि योग्य सुशिक्षित कन्या उस अयोग्य संबंधको स्वयं होने न देगी। इसके अतिरिक्त जैनसमाजमें जो १९ वर्षसे नीचेकी १७०० से भी अधिक संख्याके ऊपर विधवायें हैं उनमें अब वृद्धि न हो सकेगी। १४ वर्ष तक कन्या योग्य धार्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षा संपन्न होसकेगी। फल यह होगा कि शिक्षित एवं सुयोग्य दम्पतिका आनंदमय जीवन व्यतीत होगा और उनसे योग्य संतान उत्पन्न होगी। इत्यादि अनेक लाभोंको देखते हुये हमारी विचारशील अधिकांश जैन समाज भी इसको हृदयसे चाहती है। किन्तु जो भाई कुछ लोगोंके बहकावे या उल्टी शिक्षासे इसको उचित न समझते हों उन्हें चाहिये कि वे एक वार फिर शान्तिसे विचार करें। अपने धर्मशास्त्र, समाजशास्त्रको देखिये, एक नहीं हजारों उदाहरण यौवनसंपन्न होनेपर विवाह होनेके मिलेंगे। अतः यदि आप धर्मशास्त्रोंपर विश्वास रखते हैं, समाज और देशके हितैषी हैं तो विना किसीके कहे सुने अपनी संतानका योग्य वयमें ही सम्बन्ध करें। हम तो यहांतक कहेंगे कि सगाई भी छोटी अवस्थामें न की जावे, कारण कि इसके होजानेपर भी संतानपर अच्छा असर नहीं पड़ता। हमें आशा है कि हमारा दयाप्रेमी धार्मिक समाज इसका अवश्य

पालन करेगी और जो अज्ञानतासे विरुद्ध प्रवृत्ति करें उनको समाज एवं सरकारी सत्ता द्वारा रोकनेका पूर्ण प्रयत्न करेगा ।

* * *

धर्मचन्द्रका परदेशगमन और कठोर प्रायश्चित्त।

हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सेठ वैजनाथजी अग्रवाल दिग० जैनके पुत्र धर्मचन्दजीको लण्डन गमनके कारण कलकत्तेकी दिगम्बर जैन पंचायतसे ब्र० चांदमलजी और ब्र० प्यारेलालजी द्वारा कठोर एवं अनुचित दण्ड दिया गया है! प्रायश्चित्त पूर्ण करनेकी अवधि एक वर्ष है। दंड इसप्रकार दिया गया है—५ उपवास, ५० नीरस एकासन, ६० एकासन, सम्मेदशिखर, गिरनार व सोनागिरजीकी यात्रा, णमोकार मंत्रका जप एक वर्ष तक, अनार्यदेशगमन निषेधक ट्रेक्ट छपानेके लिये ११), संस्थाओं व जैनगजट, स्याद्वाद केशरी आदि पत्रोंको (!) ५००) दान इत्यादि ।

अब विचारना यह है कि इतना कठोर दण्ड प्राप्त करने योग्य धर्मचंदजीने क्या घोर पाप किया था? क्या परदेशगमन मात्रसे उन्हें इतना दण्ड देना न्यायसंगत कहा जासक्ता है? इस बीसवीं शताब्दीमें परदेशगमनका निषेध करना जैन जातिको व्यापारिक व धार्मिक उन्नतिसे वंचित रखना है। जैन पुराणोंमें परदेशगमन व जहाज यात्राके धर्मात्मा जैनियोंके दृष्टांत भरे पड़े हैं। आजकल भी पेरिसमें १०० के करीब जैन जौहरी यहांके गये हुये व्यापार करते हैं और यहां आते जाते रहते हैं, कौन उनको प्रायश्चित्त देता है? घोर पापीको भी जो दण्ड देना भारी कहा जासक्ता है वह दण्ड निरपराधी धर्मचंद्रजीको देना सर्वथा अनुचित है। हम तो उनसे साग्रह कहेंगे कि वे अदण्डनीय होकर भी इस अनुचित घोर दण्डका कारण पूछें और अनुचित सिद्ध होनेपर इसे कदापि स्वीकार न करें।

* * *

शिवहारामें रथयात्रा बंद!

खेद है कि १० से १४ दिसम्बर तक शिवहारा (बिजनौर) में होनेवाले रथोत्सवको बाबू सोहनलाल श्री वास्तव कलेक्टरने कुछ मुसलमानोंके अनुचित विरोध करनेपर अपनी अन्यायपूर्ण आज्ञासे रोक दिया है! यद्यपि धार्मिकोत्सवोंका प्रबन्ध करना सरकारका कर्तव्य है तथापि उसको रोक देना कहां तक न्याय कहा जासक्ता है? हजारों रुपया खर्च किये जाकर हर प्रकारकी तैयारी होनेपर यकायक धार्मिक कार्य रोक दिये जावें और जैन समाज चुपचाप ठंडी पड़कर अपनी तैय्यारीके बंधे बंधाये बिस्तरोंको फिरसे खोलकर सो जावे यह लज्जाकी बात है! हमारी कमजोरी, हमारी बेहदशान्ति और अकर्मण्यताका ही यह फल है? अन्यथा कितने मुसलमानोंके जुलूस रोके गये। कितने सिक्खोंके धार्मिकोत्सव रोकनेमें सरकारको सफलता मिली? कितने आर्यसमाजियोंके उत्सव रोकनेका साहस सर्कारकर सकी? तब फिर हमारे ऊपर ही इस अन्यायके होनेपर क्यों न हमें आन्दोलन करके अपने अधिकारोंकी रक्षा करना चाहिये? जैन समाजको सचेत होनेकी आ-

वश्यकता है। केवल प्रस्ताव पास करके सरकारके पास भेज देनेका अब कुछ भी असर नहीं होता है। इसलिये भारतवर्षीय दि० जैन परिषदका कर्तव्य है कि आवश्यकता हो तो सत्याग्रहकी भी स्कीम समाजके सामने रखे और वह शीघ्र अमलमें लाकर अपने धार्मिक स्वत्वोंकी रक्षा करे तथा शिवहाराका रथ निकलवाये विना चैन न लेवे।

५०००)का दान—महेश्वर नि० कुंवरलाल देवचंदजीने अन्त समय ५०००) दान किया है। जिसमें २५००) महेश्वरमें पाठशाला खोलनेके लिये हैं।

गिरनारजी (जूनागढ़)—में मगसिर सुदी ४ को श्रीमंत सेठ पूरनसावजी (सिवनी), लश्करोड़ा निवासी सेठ सोमचन्द उगरचन्दजीकी ओरसे तथा बाबू हरप्रसादजी आरा, व ब्र० प्यारेलालजीकी ओरसे, ऐसी चार वेदी प्रतिष्ठायें पहाड़ व तलहटीके मंदिरोंमें धूमधामसे हुई थी तथा पंचमीको रथोत्सव भी निकाला गया था। (अजमेरसे दो रथ मंगाये गये थे।) इस मौकेपर वहांपर गुलाबाई महिलाश्रम (सिवनी)का वार्षिकोत्सव भी हुआ था जिसमें ललिताबाई, चमेलीबाई, रतनबाई आदिके मार्मिक व्याख्यान हुए थे तथा पं० परमेष्ठीदासजी न्यायतीर्थ (सूरत)ने पधारकर अच्छा शास्त्रोपदेश दिया था।

किस्मतकी कुंजी—नामक छोटीसी पुरानी पुस्तक इस अंकके साथ भेंटमें भेजी गई है। उसको पाठक संग्रहीत रखके उससे अवसरोंका जब चाहें लाभ उठावें।

जैनसमाचारावलि।

सोलापुर—में श्री० सेठ हीराचन्द नेमचन्द दोशीने अपनी स्व० पत्नी राजूबाईके स्मारकमें १२०००) देकर एक प्रसूतिगृह बम्बई गवर्नरके हस्तसे अभी खुलवाया है।

शिवहारा—में सरकार द्वारा रथोत्सव रोके जानेपर स्थान२ पर विरोध होरहा है।

सिलोंडी—के तारनपंथी मंदिर जिसमें शास्त्र ही विराजमान था अब मूर्ति स्थापित कीगई है।

मोरेना—में माघ वदी ४-५-६को श्रीगोपाल दि० जैन सिद्धान्त विद्यालयका वार्षिकोत्सव होगा। तब वहां शास्त्रिपरिषद् भी करली जानेवाली है तथा आचार्यसंघ भी सोनागिरिसे विहार करते हुए यहां पधारनेवाला है।

श्री० वैरिष्टर चम्पतरायजी—नागपुर, मद्रास आदिका भ्रमण कर व वहां जैनधर्मपर व्याख्यान देकर अभी बम्बई (ही० गु० जैन बोर्डिंग, तारदेव) पधारे हैं। यहां १ माह रहकर आगामी फर्वरीमें फिर जैनधर्म प्रचारार्थ एक वर्षके लिये विलायत जानेवाले हैं। वहां जैनधर्म प्रचारके कार्यके लिये श्री० जुगमंदिरलाल बैरिष्टर ट्रस्टफण्डसे १५०) मासिककी सहायता एक वर्षके लिये स्वीकार हुई है।

सब धर्मोंकी सभा—आगामी उष्ण ऋतुमें स्विटझरलैंडमें असकाना स्थानपर सब धर्मोंकी सभा होनेवाली है। हम बैरिस्टर चम्पतरायजी साहबसे निवेदन करेंगे कि आप इस मौकेपर वहां अवश्य पधारकर जैनधर्मकी प्रभावना करें।

चार नये मुनि हुए; आचार्य संघमें ७ मुनिगण–मुनिसंघ पहुंचनेपर सोनागिर सिद्धक्षेत्रपर मगसिर सुदी १९को मुनिदीक्षाका बड़ा भारी उत्सव हुआ था। तब आचार्य १०८ श्री शांतिसागरजीसे चार नये मुनि दीक्षित हुए हैं। (जो पहले ऐलक थे) जिनके नाम–मुनि श्री चंद्रसागरजी, मुनि श्री पायसागरजी, मुनि कुंथुसागरजी (पार्श्वकीर्ति) और मुनि श्री नमिसागरजी। इससे अब आचार्य संघमें ७ मुनि श्री साथ२ विचरते हैं! सुदी १४को मुनि वीरसागरजीने केशलोंच किया था तथा सुदी १९ को ब्र० प्यारेलालजी क्षुल्लक हुए। नाम अजितसागरजी रक्खा गया व दो प्रतिमाधारी रतनचंदजीने ब्रह्मचर्यदीक्षा ली थी। उत्सवमें १२०० आदमी उपस्थित थे। उत्साह अवर्णनीय था।

नागपुर–इतवारीमें सेठ फतेहचंद दीपचंदकी ओरसे नवीन धर्मशाला ता० २३ दिसम्बरसे खुली है। मुहूर्त करनेको संघपति सेठ घासीलालजी बम्बईसे नागपुर पधारे थे।

अनेकांत–नामक ऐतिहासिक अतीव उपयोगी मासिकपत्र समंतभद्राश्रम, करोलबाग–देहलीसे पं० जुगलकिशोरजी मुख्त्यारके सम्पादकत्वमें दो माहसे प्रकट होने लगा है, जो इतिहास व साहित्य अन्वेषियोंके लिये अतीव उपयोगी है। वार्षिक मूल्य ४) है।

५००० वर्षके पुराने जैन चिह्न–सिंधुनदीकी घाटी मोहन जोदरोकी खुदाई करनेपर नासाग्रदृष्टि अर्द्धोन्मीलितनेत्र ध्यानमय योगियोंकी मूर्तियां मिली हैं जो जैन ही होसक्ती हैं।

परिषद्‌की परीक्षा–हमारे भारतवर्षीय दि० जैन परिषद्‌के परीक्षालयकी परीक्षा इस साल १० फर्वरी ३०से होगी। मंत्री–ला० उग्रसैन, जैन हाईस्कूल, बड़ौत (मेरठ) हैं।

सरसेठ हुकमचंदजी–की पार० संस्थाओंके मैनेजर सांवलदासजीका ता० २ नवंबरको कोलेरासे अचानक स्वर्गवास होगया। आप अतीव योग्य व्यक्ति थे।

केशरियाजी हत्याकांड–के शिकार पं० गिरधारीलालजी न्यायतीर्थके भ्राता पं० माधवचन्द्र न्यायतीर्थ गोरझामरका भी ता० २३ अक्टूबरको स्वर्गवास होगया जिससे सारा कुटुम्ब निराधार हुआ है। इसलिये हत्याकांड कमेटीका फर्ज है कि दुःखी मातापिता व विधवाओंकी कुछ न कुछ सहायता करे।

कुडची अत्याचार–जांच कमीशन गत ता० २४ दिसम्बरको बंबईसे दि० जैन युवक मंडलकी ओरसे गया था। जिसमें दीपचन्दजी सोलिसिटर, नवरे मंत्री हिंदू महासभा बंबई, जगमोहनदास (मन्त्री), हरि मोरेश्वर जोशी पूना, अंकले वकील बेलगांव, व बी० बी० पाटील बेलगांव, कुडचीमें उपस्थित हुए थे। वहां सुबह २ घण्टे घूमकर स्थान, मूर्ति आदिकी जांच की तथा दुपहरको ६॥ घण्टे तक वहांके जैनियोंके इजहार लिये थे। डेप्युटेशनके जानेसे लोगोंको बहुत धैर्य बंधा है व सबने निर्भयतासे बयान लिखाया था। दो स्त्रियोंने भी अपने बयान लिखाये थे। कमिटी रात्रिको वापिस लौटी तब गांववालोंने सबको हारतोरा दिया था।

कमेटीके सभ्य श्री वामन मुकादम इस कार्यमें बड़े प्रयत्नशील हैं तथा वे इस चर्चाको बम्बई धारासभामें लेजानेवाले हैं। इसलिये इस कमेटीकी विस्तृत रिपोर्ट चार भाषाओंमें प्रगट करने आदिके लिये करीब ४००)-५००) की शीघ्र आवश्यकता है। सहायता सेठ माणिकचंद पानाचन्द, जौहरी बजार, बंबईको भेजनी चाहिये।

श्वे० जैन कान्फरन्स–का तेरहवां अधिवेशन जुन्नेर (पूना)में रा॰सा॰ रवजी सोनपालके सभापतित्वमें आगामी माघ सुदी ३-४-५ को होगा।

श्रीमती मगनबहिन जे० पी०–की ५०वीं जन्मगांठका उत्सव गत ता० २९ दिसम्बरको बम्बई श्राविकाश्रममें सा०र० पं०दरबारीलालजी न्यायतीर्थके सभापतित्वमें हुआ था।

प्राचीन प्रतिमाएँ मिलीं–लाशपुर (बुन्देलखण्ड)में खुदाई होनेपर ३६ दि० जैन मंदिर व अनेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं, जिनमें ३१ अखँडित हैं जो टीकमगढ़ राज्यके कब्जेमें थीं। परन्तु जैनोंके लगातार प्रयत्न करनेपर वे प्रतिमाएँ प्राप्त होकर सरकनपुरके दि० जैन मंदिरमें विराजमान की गई हैं। प्रतिमाओंपर 'संवत ११८६ फागुन सुदी ७ रविवार गहोई वंशीय साहु पद्मलक्षणने प्रतिष्ठा कराई' ऐसा लेख है।

केशरियाजी हत्याकाण्ड–में दण्ड प्राप्त-रोशनलालके पुत्रका विवाह अभी उदयपुरमें हुआ था, तब आमंत्रण करनेपर भी आपके यहां कोई भी दिगम्बरी या श्वेतांबरी जीमने नहीं गये थे, न राजाने आपको हाथी आदि सामान दिया था।

अक्कलकोट–में सेठ हीराचन्द लक्ष्मीचन्द दि० जैन दशाहूमड़के पुत्रका विवाह सोलापुरमें जेठालाल पीतांबरदास श्रीमाली श्वे० जैनकी पुत्रीसे हुआ है।

लाहौरमें–अभी राष्ट्रीय महासभाका ४४वां अधिवेशन पं० जवाहिरलाल नेहरुके सभापतित्वमें बड़ी शानके साथ हुआ था। जिसमें भारतमें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करनेका व धारासभा बहिष्कारका प्रस्ताव पास हुआ है।

दुःखद वियोग व दान–आरामें श्री० बा० निर्मलकुमारजी जैन रइसके भ्राता बा० चक्रेश्वरकुमारजी वकीलकी धर्मपत्नी (राजाबहादुर भूपेंद्रनारायणसिंह नशीपुरकी सुपुत्री राजकुमारी निर्मलादेवी)का सिर्फ २१ वर्षकी आयुमें स्वर्गवास होगया। अंत समय २१००) दान इस प्रकार किया गया है। १९००) जैन बालाविश्राम आरा, १००) अपाहिजोंको भोजन वस्त्रादि व १००) फुटकर। अंत समयमें श्रीमती पंडिता चंदाबाईजी आदिने विधिपूर्वक समाधिमरण कराया था।

ભાઇ ધામીનો વિયોગ—ભાવનગર નિવાસી ઉત્સાહી કાર્યકર્તા ભાઇ અમૃતલાલ વિઠ્ઠલદાસ ધામીનો આશરે ૪૦ વર્ષની વયે કાર્તક વદ ૯ ને દિને વિયોગ થવાથી ભાવનગર તેમજ ગુજરાતના દિ. જૈનોને એક ઉત્સાહી કાર્યકર્તાની ખોટ પડી છે. ભાવનગર, મુંબઇ વગેરે સ્થળે શોક સભાઓ પણ થઇ હતી.

ટાકાટુકા—માં ગડિયા પાનાચંદ ગુલાબચંદ (વાંકાનેર) તરફથી માગશર સુદ ૧૧ ધ્વજા દંડ ઉત્સવ ને તેરહદ્વીપ પૂજન જલયાત્રા પૂર્વક થયું હતું જ્યારે આશરે ૭૦૦) મંદિરમાં ઉપજ થઇ હતી ને બ્ર. ફતેહસાગરજીએ પધારી ઉપદેશ આપ્યો હતો.

આંકલી—(સુરત) માં માગશર સુદ ૧૧ વેદી પ્રતિષ્ઠા ભ. સુરેંદ્રકીર્તિજીના હસ્તે પંચ તરફથી થઇ હતી. જે વખતે તેરહ દ્વીપ પૂજન પણ થયું હતું. સુરત, બુહારી, સોજીત્રા વગેરેથી આશરે ૪૦૦ ભાઇ બ્હેને લાભ લીધો હતો ને ૨૦૦૦) ની ઉપજ મંદિરમાં થઇ હતી. શેઠ ઉત્તમચંદ ભાઇચંદે ૪૨૬) નું સોનાનું ભામંડળ મંદિરમાં અર્પણ કર્યું છે.

વ્યારા—(સુરત) ના અધુરા મંદિરનું કાર્ય પુરૂં કરવા માટે ભ. સુરેંદ્રકીર્તિજીના પ્રયાસથી મુંબાઇથી ૫૦૦) ને સુરતથી ૫૧૦) ની સહાયતાનાં વચન મળ્યાં છે. મોટી મોટી રકમ નીચે મુજબ છે. મુંબઇ–૨૦૧) માણેકચંદ પાનાચંદ ૫૧) ડાહ્યાભાઇ ધરમચંદ, ૫૧) સોભાગચંદ મેઘરાજ, ૫૧) મનુભાઇ પ્રેમાનંદ, ૩૫) સંઘપતિ શેઠ ઘાસીલાલજી, ૨૫) લલ્લુભાઇ ચોકસી, ૨૫) શેઠ ચુનીલાલ હેમચંદ,–સુરત–૨૨૫) તાસવાલા લલ્લુચંદ જેઠાભાઇ, ૧૫૧) તાસવાલા વેણીલાલ કેશુરદાસ, ૩૫) પરભુદાસ હેમચંદ. ૨૫) ડાહ્યાભાઇ રીખવદાસ, વગેરે. મંદિરનું કાર્ય હવે પૂર્ણ થઇ વૈશાખ માસમાં પ્રતિષ્ઠા થવાની પૂર્ણ સંભાવના છે.

મહાસિયા—નું વિદ્યાલય ત્યાગી દેવેંદ્રસાગરજીના જાડોલ ચાલી જવાથી ભાંગી પડ્યું છે તેથી કોઇ ભાઇએ હવે એ વિદ્યાલયને નામે સહાયતા મોકલવી નહિ.

વિજયનગર—થી મોડાસિયા ફતેચંદભાઇ મહામંત્રી લખે છે કે હું તા. ૧૭ ડીસેંબરે વીંછીવાડા ગયો હતો. ત્યાં પાઠશાળા પર મુનિ શાંતિસાગરજીનું બોર્ડ ખુલ્લું મુકવાનો મેળાવડો કર્યો હતો. આ પાઠશાળાને ૧૪૦) સાગવાડાથી તથા ૬૦) તીર્થક્ષેત્ર કમેટીથી મળે છે. વિદ્યાર્થી ૮૦ છે. વિશેષ મદદની જરૂર છે. પ્રતાપ ફંડમાં ૧૬) મળ્યા હતા. સુદી ૧૫ ને દિને વિજયનગરના સંઘવી વજેચંદ અમરચંદે ચોવીસ પૂજા ભણાવી જમણ કર્યું હતું.

આંતરી—(ડુંગરપુર) માં એક મંદિર બાબત દિગંબરી શ્વેતાંબરીમાં ઝઘડો પડ્યો હતો તે માટે મોડાસિયા ફતેહચંદભાઇ મહામંત્રીએ પ્રયાસ કરી જવાસમાં ૧૪ ગામનું પંચ એકઠું કરી સંપ કરાવી આપ્યો છે.

શ્રાવિકાશ્રમ સોજીત્રા—ના પ્રચાર માટે શ્રીમતી મેનાબ્હેન ગુજરાતમાં ત્રણ માસથી ભ્રમણ કરી રહ્યા છે તેમને નીચે પ્રમાણે રૂ. ૪૧૩॥ ની સહાયતા મળી છે.

૩૮) અમદાવાદ	૧૨॥ જંત્રાલ
૨૨। સીતવાડા	૫૮॥ કલોલ
૩૧॥ ઓરાણ	૧૦) પાલડી કાંકજ
૨૪॥ લાકરોડા	૨૨) અસલાલી
૨૩) પેથાપુર	૨૭) વાંચ
૬૬॥ દહેગામ	૧૦) હાથીજણ
૩૧) ગલુવા	૨૭॥ કરમસદ
૬૨। દેલવાડ	
૧૫। વડાસણ	
૧૯। બાલય	

આ ઉપરાંત માંડવી,મહુઆ, સુરત, અંકલેશ્વર વીગેરેની સહાયતા આવતે અંકે પ્રગટ થશે.

सावधान हो जाइये !

(लेखकः—पं० परमेष्ठीदासजी जैन, न्यायतीर्थ-सूरत)।

आज हमारी, हमारे देशकी तथा धर्म और समाजकी परिस्थिति भयानक होगई है। सर्वत्र क्रान्ति कलह और स्वेच्छाचार दृष्टिगोचर हो रहा है। फिर भी हम असावधान हैं, निश्चिन्त हैं, उपेक्षाप्रिय हैं, मानों इस तूफानका हम पर कुछ भी असर न होगा, हम उससे सर्वथा बचे रहेंगे, वह हमारा कुछ भी बिगाड़ न कर सकेगा! मगर याद रहे कि इस असावधानीका ऐसा भयानक परिणाम होगा कि इस भूतल पर हमारा अस्तित्व ही न रहेगा और हम सदाके लिये विलीन होजावेंगे।

इतिहास कहता है कि एक समय समस्त भारतभू जैनधर्मकी पवित्र क्षत्रछायामें शान्ति-पूर्वक काल व्यतीत कर रही थी। एक दूसरेसे बन्धुत्वका नाता रखकर आनन्दसे जीवन व्यतीत करते थे। घृणा द्वेष मात्सर्य और अभिमानको त्याग कर सभी सच्चे जैन थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन वर्णोंसे चार भेद होकर भी धर्मका मार्ग एक था। सब ही उस पतितोद्धारक श्री जिनेन्द्रदेवकी उपासना कर अपनी कलुषित आत्माको पवित्र बनाकर कृतकृत्य होजाते थे। जातीय दुरभिमान, धार्मिक दम्भ, और थोथी महत्ताका नाम नहीं था। यही कारण है कि समस्त भूमण्डल जैनधर्मी होगया था और "जैनधर्म सार्वधर्म है" यह बात साक्षात प्रमाणित हो गई थी।

मगर हमारी बेवकूफी या असावधानी अथवा दुराग्रह और दंभके कारण आज हम मिट गये हैं। संसारमें तो क्या भारतवर्षमें भी हम नगण्य हैं। मिटते २ हम आज साढ़े ग्यारह लाख ही अवशेष हैं, सो भी वास्तविक जैन तो अंगुलियोंपर गिनने लायक भी नहीं रहे! हमारी इस अल्पसंख्यक बची खुची जैनजातिके भीतर घुसकर भी यदि कोई विवेकी देखे तो मालूम होगा कि साढ़े ग्यारह लाखमें भी बारह लाख टुकड़े होगये हैं! यह सब हमारी ही अदूरदर्शिताका फल है। यदि अब भी यही परिस्थिति बनी रही तो विश्वास रखिये कि हम आपसकी मारामारमें ही अपनी शक्तियोंको खोकर नाश हो जावेंगे।

तनिक हृदयपर हाथ रखकर विचार तो कीजिये कि यह सब फूटमफूट हुई क्यों? और हुई भी तो अबतक क्यों चालू है तथा दिनोंदिन क्यों बढ़ती जारही है? यदि निष्पक्षपात दृष्टिसे विचार करेंगे तो आपका अन्तरात्मा यही उत्तर देगा कि हमारा हठ और व्यर्थाभिमान ही इसका प्रबल कारण है। हमारी समाजमें कुछ ऐसे दुराग्रही मौजूद हैं जो अपना पक्ष होनेसे ही अन्यथा बातको सत्य सिद्ध करनेका दुस्साहस करते हैं और सत्यको भी अपने मंतव्यके प्रतिकूल होनेसे असत्य उद्घोषित कर पापसे भयभीत नहीं होते।

एकको दूसरेकी विद्वत्ता असह्य है अथवा अपनेको ही सर्वोच्च समझ कर दुरभिमानमें मस्त होजाते हैं। फल यह होता है कि दूसरा यदि सत्कार्य करे, वास्तिव मार्ग बतलाये तो भी उसे नहीं मानते और जो कुछ भी वह कहता है उसको उल्टा सिद्ध करनेकी धुनमें मस्त हो जाते हैं, बस, झगड़ा खड़ा होजाता है। यदि सच पूछा जावे तो समाजमें क्षोभ पैदा करनेवाले होते दो चार ही व्यक्ति हैं, मगर वह कुछ व्यक्तियोंकी आग सारे समाजमें धधक उठती है। जब हम आपसकी काट छांटमें ही अपनी शक्तियोंको लगा देते हैं तब हम बाहर सेवा कैसे और कब कर सक्ते हैं? और जब सार्वजनिक कार्योंमें भाग नहीं लेंगे तब फिर हमारा नाम, हमारी सत्ता या हमारी गणना किसप्रकार रहसक्ती है?

दुर्भाग्यसे हमारी समाज एकसे एक नये टंटे लेकर खड़ी होजाती है। कभी किसीकी कृपा (!) होती है तो कभी किसीकी, कभी कोई अपना यथेच्छ सिद्धान्त सामने रखता है तो कभी कोई वास्तविकताका भी निषेध कर डालता है। बस हम आपसमें ही मर मिटते हैं। यही कारण है कि आजतक समाजमें शांति नहीं हो पाती। कुछ धर्मात्मा व्यक्तियोंने प्रयत्न भी किया था कि हम सब मिल जुलकर अपनी उन्नति करें। अमुक व्यक्ति अपने विचारोंसे कैसा भी क्यों न हो मगर हमारे धार्मिक और उससे सम्बंध रखनेवाले कार्योंमें बाधक न हो। किंतु कुछ कलहप्रिय जनोंको यह बात पसंद न आई और बना बनाया खेल बिगाड़ डाला! अस्तु। "बीती ताहि बिसार दे, आगेकी सुध लेहु" जो हुआ सो हुआ। अब तो संपूर्ण जैनसमाजको सावधान होनेकी आवश्यक्ता है।

अब हमारा कर्तव्य है कि किसी प्रकार भी हो, आपसमें सुलह करके उत्थानका मार्ग सोचें। हमारी बची खुची सत्ताको भी सामर्थ्यशाली लोग कुचल देना चाहते हैं, हमारे अवशिष्ट उत्कर्षको न देख सकनेके कारण कुछ अविवेकी अजैन भाई द्वेष करते हैं और व्यर्थ ही हमारे धार्मिक और सामाजिक कार्योंमें अड़ंगा लगाते हैं। हमारे धार्मिक उत्सव तनिक सी धमकीमें रोक दिये जाते हैं और हम प्राणहीनकी तरह अत्याचारोंको सहन करते रहते हैं! तथा हम छिन्नभिन्न होनेके कारण किसीका मुकाबिला नहीं कर सकते, अपनी समाजका गला अन्यायकी फांसीसे नहीं निकाल सकते। हमारे ऊपर आज कैसे२ अत्याचार होरहे हैं यह एक सहृदयी जन ही जान सकता है।

जैनसमाज सावधान! अब प्रमादका समय नहीं है, लोग उन्नतिके मार्गमें तेजीसे दौड़ लगा रहे हैं, ऐसे समयमें यदि तू असावधान रही तो इस दौड़में कुचल जावेगी। इसलिये जमानेके साथ रहकर अपने जीवनकी रक्षाके वास्तविक उपायोंका अवलम्बन कर। इस समय जैनसमाजके बच्चा २ को सावधान होनेकी आवश्यकता है। कुछ स्थितिपालकोंके दुराग्रह एवं कतिपय सुधारकोंके उच्छृंखल मार्ग, यह दोनों उपेक्षणीय हैं। वास्तविकताको ग्रहण कर खुले रूपमें उसका प्रचार करना चाहिये। आज जैन संख्या बढानेका तथा आन्तरिक परि-

स्थिति परिशोधनका जबरदस्त प्रश्न हमारे सामने है। यदि यह दोनों हल होजावें तो एकबार फिरसे जैन धर्मकी विमलपताका भारत मंदिर पर फहरा सक्ती ह।

यदि सत्य दृष्टिसे विचार किया जावे तो संख्या वृद्धिका धार्मिक उपाय केवल अजैनोंको जैन धर्ममें दीक्षित करना ही है। इसका जो दुराग्रही निषेध करते हैं वे वास्तविकतासे च्युत हैं और स्वयं पक्षपातकी फांसीमें फंसकर समाजका गला भी फंसाये रखना चाहते हैं। दूसरे प्रश्नका हल होना भी असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। इसके लिये तो पंडित–बाबू, नवयुवक–वृद्ध, स्त्री–पुरुष, गरीब और श्रीमान सभीको मिलकर या साथ लेकर काम करना होगा। यदि समाज यह स्वीकार करले तो जैन धर्म और जैन समाज क्यों न अपना विजयी डंका भारतमें बजादे? बस, है हमारे सावधान होनेकी आवश्यक्ता, फिरतो संसार आज सत्यका पुजारी है।

हम थोथी बातोंमें जितनी शक्ति लगाते हैं और समाजमें व्यर्थका क्षोभ उत्पन्न कर देते हैं उतनी शक्ति यदि अपने सुधार, समाजोत्थान और धार्मिक उन्नतिमें लगावें तो निःसंदेह जैनधर्म एवं जैनसमाजकी मान्यता भारतवर्षमें हो जावे। शिक्षितोंका कर्तव्य है कि वे प्रत्येक जिज्ञासुको अपने धार्मिक सिद्धांत बतलावें, भाषण लेख एवं अध्ययन अध्यापन द्वारा दूसरोंको जैन सिद्धांतसे परिचित करावें। दूसरे लोग जब आपके धार्मिक ज्ञानसे युक्त होजावेंगे तब वे स्वयं अन्धकारसे निकल कर आपके इस पतित पावन जैनधर्मको स्वीकार करनेको तैयार होजावेंगे। ऐसी अवस्थामें जो भी मनुष्य जैनधर्मी होकर आत्मकल्याणका इच्छुक हो उसे वे रोक-टोक जैन दीक्षा देकर स्वपर कल्याण करना चाहिये। और जो कदाग्रही पंडिताभास इसका व्यर्थ निषेध करते हैं उनकी परवाह न करें। तथा हमारी छोटी२ जातियें जिनमें कन्या लेन देनमें बड़ी २ आपत्तियां आती हैं उनमें परस्पर बेटीव्यवहार अर्थात् अन्तर्जातीयविवाह करना प्रारम्भ कर देना चाहिये। क्योंकि यह भी संख्यावृद्धिका एक धार्मिक उपाय है। तथा इससे धर्ममें भी कोई बाधा नहीं आती।

यदि हम इस विकाश युगमें अपनी सत्ता न जमा सके, अपनी संख्यावृद्धि न कर पाये और कुरूढियोंका काला मुह न किया तो विश्वास रखिये कि हमारी सत्ता इस भारत भू पर रहना असंभव है। आज तो "जिसकी लाठी उसकी भैंस" है। इसलिये अब हमें शीघ्र सावधान होनेकी आवश्यक्ता है। धनवानोंका कर्तव्य है कि विवाह शादियों एवं मरणभोजमें व्यर्थका व्यय न करके इस परम कल्याणकारी कार्यमें अपनी अटूट सम्पत्तिको प्रदान करके ही जीवन सफल समझें और ऐसे शुभ कार्योंमें बाबू तथा पंडित दोनों सहयोग देकर अपनी शिक्षाको सफल बनावें। जो कुछ हठग्राही जन इसे न मानें उनको दूरहीसे हाथ जोड़कर स्वयं सावधान होकर मुस्तैदीके साथ काम करें। फिर देखिये कि कौन हमें रोक सक्ता है और कौन हमारे अधिकारोंमें बाधक होसक्ता है?

सिद्धान्ताध्ययन विचार।

(लेखकः—पं० मिलापचन्दजी कटारिया जैन-केकड़ी)।

क्षुधा आदि बाधाओंको मेटनेके लिये जैसे पशुओंके आहार निद्रा भय मैथुन आदि कार्य होते हैं वैसे मनुष्योंके भी होते हैं किंतु जिस ज्ञानकी विशेषता मनुष्य समाजमें है वह पशुओंमें नहीं है इसीसे मनुष्य श्रेष्ठ समझा जाता है। किसीने ठीक ही कहा है कि—'ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः' जिस प्रकार खानसे निकला हुआ रत्न संस्कारके योगसे बहुमूल्य वान् होजाता है उसी प्रकार मनुष्य भी ज्ञान-संस्कारसे महान् गिना जाता है। अथवा जैसे बारंबार अग्निसंस्कारसे सुवर्ण दीप्तिवान होजाता है उसी तरह बारंबार ज्ञानाभ्याससे मनुष्य भी दीप्तिशाली माना जाता है। यह तो निश्चित है कि—माताके उदरसे निकले बाद अगर मानवको शिक्षा ग्रहणसे बिल्कुल ही रोकदिया जाए तो सचमुच वह पशुसे भी निकृष्ट होसक्ता है। इसी विषयक नीतिका यह श्लोक कितना मर्मस्पर्शी है—

शुनः पुच्छमिव व्यर्थं जीवितं विद्यया विना।
न गुह्यगोपने शक्तं न च दंशनिवारणे॥

इसमें कहा है कि—विद्याविहीन जीवन कुत्तेकी पूंछकी भांति व्यर्थ है जो न तो गुह्यांगको ढक सक्ती है और न मक्खियोंको ही उड़ा सक्ती है।

ज्ञानकी इतकी अधिक महिमा होनेके कारण ही शास्त्रकारोंने स्वाध्यायको 'न स्वाध्यायात्परं तपः' पदसे सभी तपोंमें बढ़कर तप कहा है।

मूलाचारमें कहा है कि—

बारसविधह्मिय तवे सब्भंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे।
णवि अत्थि णविय होहदि सज्झायसमं तवो कम्मम्॥९७०।
सूई जहा ससुत्ता ण णस्सदिहु पमाद दोसेण।
एवं ससुत्त पुरिसो ण णस्सदि तह पमाद दोसेण॥९७१॥
'बट्टकेराचार्य।'

अर्थ—तीर्थंकर गणधरादिकर दिखाये अभ्यंतर बाह्य भेदयुक्त बारह प्रकारके तपमें स्वाध्यायके समान उत्तम अन्य तप न तो है और न होगा।

जैसे सूक्ष्म भी सुई प्रमाद दोषसे गिरी हुई यदि डोराकर सहित हो तो नष्ट नहीं होती—देखनेसे मिलजाती है, उसी तरह शास्त्रस्वाध्याययुक्त पुरुष भी प्रमाद दोषसे उत्कृष्ट तप रहित हुआ भी संसार रूपी गड्ढेमें नहीं पड़ता।

जो ग्रंथ परमपूज्य केवलीके बचनोंकी परम्परा लिये हों और जिनमें आत्माका परमाराध्य मोक्षकी कारणभूत कथनी हो उससे बढ़कर कौन होसक्ता है?

वर्तमानके उपलब्ध जैन परमागमकी रचना गौतम गणधर कथित सूत्रके आधारसे हुई है।

गौतम स्वामीने किस समय किस प्रकार ग्रंथ रचनाकी यह वर्णन उत्तर पुराणमें गुणभद्रसूरिने बड़ेही हृदयग्राही ढंगसे किया है, पाठकोंकी जानकारीके लिये उसे हम यहां देते हैं—

गौतम गणधर अपना जीवन वृतांत सुनाते हुये कहते हैं कि—

श्रीवर्धमानमानम्य संयमं प्रतिपन्नवान् ।
तदैव मे समुत्पन्नाः परिणामविशेषतः ॥ ३६८ ॥
ऋद्धयः सप्त सर्वांगानामप्यर्थपदान्यतः ।
भट्टारकोपदेशेन श्रावणे बहुले तिथौ ॥ ३६९ ॥
पदार्थानर्थरूपेण सद्यः पर्यणमन् स्फुटम् ।
पूर्वाह्ले पश्चिमे भागे पूर्वाणामप्यनुक्रमात् ॥ ३७० ॥
इत्यनुज्ञातसर्वांगपूर्वार्थो धीचतुष्कवान् ।
अंगानां ग्रंथसंदर्भं पूर्वरात्रे व्यधामहम् ॥ ३७१ ॥
पूर्वाणां पश्चिमे भागे ग्रंथकर्ता ततोऽभवम् ।
इति श्रुतर्द्धिभिः पूर्णोऽभूवं गणभृदादिमः ॥ ३७२ ॥
७४ वां पर्व

अर्थ—श्री वर्द्धमान स्वामीको नमस्कार कर संयम धारण कर लिया। परिणामोंकी विशेष विशुद्धि होनेसे उसी समय मुझे सात ऋद्धियां प्राप्त हुईं। तदनंतर श्री वर्द्धमान भट्टारकके उपदेशसे श्रावण कृष्ण प्रतिपदाके दिन सवेरेके समय सब अंगोंके अर्थ और पद शीघ्रही अर्थ रूपसे स्पष्ट जान पड़े और इसी तरह उसी दिनके सामके समय अनुक्रमसे सब पूर्वोंके अर्थ और पदोंका ज्ञान होगया। इस प्रकार मुझे सब अंग और पूर्वोंके अर्थोंका ज्ञान होगया तथा चौथा मनःपर्ययज्ञान भी होगया। तदनंतर मैंने रात्रिके पहिले भागमें अंगोंकी ग्रंथरूपसे रचना की और रात्रिके पिछले भागमें पूर्वोंकी ग्रंथ रचना की इस तरह अंग और पूर्वोंसे ग्रंथोंकी रचना कर मैं ग्रन्थकर्ता प्रसिद्ध हुआ हूं। इस प्रकार श्रुतज्ञानऋद्धिसे पूर्ण होकर मैं श्री वीरनाथका पहिला गणधर हुआ हूं।

जिस जैन वाणीका प्रादुर्भाव इतनी महत्ताको लिये हुये है उसका प्रचार संसारमें प्रचुरताके साथ होना चाहिये किन्तु इस विषयमें जैन समाज आज जो कुछ भी कर रहा है वह संतोषप्रद नहीं कहा जासक्ता। और तो क्या हम अबतक ग्रन्थ प्रकाशनका प्रबंध भी ऐसा नहीं करपाये जिसे ठीक कह सकें। इसके लिये हमारे पास द्रव्यकी कमी नहीं है क्योंकि जो समाज प्रतिसाल मेला प्रतिष्ठाकी धामधूममें लाखों रुपये लगाती है उसके लिये यह कैसे कहें कि धनकी कमी है? कमी है सिर्फ ग्रन्थ प्रकाशनमें रुचि होनेकी। सच तो यह है कि धनी लोग इसे महत्वका काम ही नहीं समझते हैं इसका भी एक कारण है। पिछले कुछ समयमें जैन समाजकी बागडोर प्रायः ऐसे लोगोंके हाथमें थी जो स्वयं मदांध और विवेकशून्य होकर परमगुरुके पदपर आसीन थे और इसी महान् पदपर अपनेको हमेशह कायम रखनेके लिये जनताको ज्ञानहीन बनाये रखना चाहते थे! इसके लिये लोगोंको उल्टी पट्टी पढाई गई कि श्रावकोंको सिद्धांत ग्रंथोंके पढनेका अधिकार नहीं है! गृहस्थोंका काम तो केवल दान पूजा प्रभावना करना ही है। इसीमें उनका कल्याण है। बस भोले लोग इस भुलावेमें आगये। फल उसका यह हुआ कि जनताकी रुचि पूजा प्रभावनाके काममें ही इतनी अधिक बढी कि आज भी वे

अपनेको न सम्हाल सके। खेद तो यह है कि उक्त प्रकारका स्वार्थमूलक उपदेश ही नहीं दिया गया किंतु उसे संस्कृत प्राकृत भाषामें ग्रंथबद्ध भी करदिया गया जिससे इस चक्करमें कतिपय विद्वान भी आते रहे। इस तरह यह मिथ्या परम्परा चलपड़ी। आज भी कुछ पंडित कहलानेवाले ऐसे हैं जो कभी कभी "श्रावकोंको सिद्धांताध्ययनका अधिकार नहीं है" इस मिथ्या धारणाको प्रकट किया करते हैं। पं० उदयलालजी कासलीवालने तो 'संशयतिमिर-प्रदीप' नामक पुस्तकमें इस भ्रमपूर्ण मान्यताकी दिलखोल पुष्टि की है और एक मात्र अवनतिका मूल कारण ही श्रावकोंका सिद्धांताध्ययन बताया है। उसमें अध्ययन तो दूर रहा आर्यका और गृहस्थोंके सामने सिद्धांतग्रंथोंका बांचना ही अयोग्य ठहराया गया है! बलिहारी है ऐसी समझकी! आश्चर्य इस बातका है कि जिसका विधान किसी भी आर्ष ग्रंथमें नहीं है उसे कुछ मामूली ग्रंथोंमें देखकर ही ये लोग कैसे प्रमाण करलेते हैं? सिद्धांताध्ययनका निषेध हमें तो किसी ऋषि प्रणीत ग्रंथमें लिखा नहीं मिलता बल्कि विधान ही पाया जाता है। नीचे हम ग्रंथोंके कतिपय उद्धरणोंसे यही सिद्ध करते हैं—

भगवज्जिनसेनाचार्य आदिपुराण पर्व ३९में श्रावकोंके लिये क्रियाओंका वर्णन करते हुये कहते हैं कि—

पूजाराध्याख्यया ख्याता क्रियाऽस्य स्यादतः परा।
पूजोपवाससंपत्या शृण्वतोऽगार्थसंग्रहम्॥ ४९॥
ततोऽन्या पुन्ययज्ञाख्या क्रिया पुण्यानुबंधिनी।
शृण्वतः पूर्वविद्यानामर्थं सब्रह्मचारिणः॥ ५०॥

अर्थ—पूजा और उपवासरूप संपत्तिको धारणकर ग्यारह अंगोंके अर्थसमूहको सुननेवाले श्रावकके पूजाराध्यनाम पांचवी प्रसिद्ध क्रिया होती है।

तदनंतर अपने साधर्मी पुरुषोंके साथ चौदह पूर्वोका अर्थ सुननेवाले श्रावकके पुण्य बढानेवाली पुण्ययज्ञ नामकी छट्ठी क्रिया होती है।

यह तो हुआ श्रावकोंके पढने सुननेका अधिकार। अब आर्यकाओंका अधिकार भी देख लीजिये—मूलाचारके पंचाचाराधिकारमें बट्टकेरस्वामीने लिखा है कि—

तं पढिदुमसज्झाये णो कप्पदि विरद इत्थिवग्गस्स।
एत्तो अण्णो गंथो कप्पदि पढिदुं असज्झाए॥८१॥

अर्थ—वे चार प्रकारके अंग, पूर्व, वस्तु, प्राभृत, रूप, सूत्र, कालशुद्धि आदिके बिना संयमियोंको तथा आर्यकाओंको नहीं पढने चाहिये। इनसे अन्य ग्रंथ कालशुद्धि आदिके न होनेपर भी पढने योग्य माने गये हैं। इसमें आर्यकाओंको कालशुद्धि आदिके होते हुये अंग पूर्वादि ग्रन्थोंके पढनेकी आज्ञा दीगई है। हरिवंश पुराण १२ वां सर्ग में भी लिखा है कि—

जयकुमार द्वादशांगधारी भगवानका गणधर हुआ और सुलोचना ग्यारह अंगकी धारिका आर्यिका हुई॥ ९२॥

इन उल्लेखोंसे उन लोगोंका भी समाधान होजाता है जो श्रावकोंके लिये प्रचलित सिद्धांतग्रन्थोंके पढने सुननेका तो अधिकार बताते हैं किंतु गणधरकथित अंग पूर्वादि ग्रन्थोंके अध्ययनका निषेध करते हैं, उन्हें अब अपनी उस मिथ्या धारणाको निकाल देना चाहिये। कहते

हैं कि नेमिचन्द्राचार्यने चामुण्डरायके सामने सूत्रपाठ करना बन्द कर दिया था और पूछनेपर कहा था कि श्रावकोंको सुननेका अधिकार नहीं है इत्यादि कथायें काल्पनिक मालूम होती हैं। जहां श्लोक और गाथा तक मिथ्या रच ली जाती हैं वहां ऐसी कथाओंको गढ़ते कितनी देर लगती है? ऋषि-वाक्योंके सामने ऐसे कथन कदापि प्रमाण नहीं माने जासकते। जिनसिद्धांतग्रन्थोंके वदौलत ही जैनधर्मका गौरव है उनका पठनपाठन बन्द करना भी क्या कभी उचित कहा जासकता है? यहां तो मूलभूत सम्यग्दर्शन ही तत्वार्थ श्रद्धानसे होता है। मजा तो यह है कि—गोम्मटसार, लब्धिसार, राजवार्तिक, श्लोकवार्तिक आदि महाग्रन्थोंके रचयिताओंने जब कहीं भी यह नहीं लिखा कि हमारे इस ग्रन्थको श्रावक पुरुष न पढ़े तब ये दूसरे निषेध करनेवाले कौन होते हैं? प्रत्युत विद्यानन्दस्वामीने तो अपने अष्टसहस्री ग्रन्थके अन्तमें कहा है कि—मेरे इस ग्रन्थको पढ़नेका अधिकार कल्याणेच्छु भव्योंके लिये नियत है। इससे अध्ययनका मार्ग कितना विशाल होजाता है? चामुण्डराय कृत चारित्रसार शीलसप्तक प्रकरणके 'स्वाध्यायस्तत्वज्ञानस्याध्ययनमध्यापनं स्मरणं च' वाक्यसे स्वाध्यायका लक्षण ही तत्वज्ञानका पढ़ना पढ़ाना और चिंतवन करना किया है और जो खासकर ऐसा स्वाध्याय श्रावकोंके षट्कर्ममें प्रतिपादन किया गया है। क्या तत्वज्ञानसे सिद्धांत भिन्न है? यह तो निश्चित है कि—देशनालब्धि देशविरती तो क्या अव्रती तकके होती है उसी देशनालब्धिका स्वरूप आचार्य नेमिचन्द्रने लब्धिसारमें यों कहा है—

छद्दव्वणवपयत्थो देसयरसूरिपहुदिलाहो जो।
देसिदपदत्थधारणलाहो वा तदियलद्धी दु॥ ६॥

अर्थ—छहद्रव्य और नव पदार्थोंका उपदेश करनेवाले आचार्य आदिका लाभ यानी उपदेशका मिलना और उनकर उपदेशे हुये पदार्थोंके धारण करने (याद रखने)की प्राप्ति वह तीसरी देशनालब्धि है।

ग्रन्थाध्ययनका निषेध करना एक ऐसी निर्मूल और अयुक्त वात है कि जिसकी पुष्टि किसी भी परमागमसे नहीं होती है और तो और, खास समवशरणमें ही भगवानकी दिव्यध्वनिको तिर्यंच तक श्रवण करते हैं। क्या कोई कह सक्ता है कि केवलीकी दिव्यध्वनिमें द्वादश सभाके समक्ष सिद्धान्त विषयक उपदेश नहीं होता है? यदि कहो कि—"सिद्धान्ताध्ययनका अधिकार हो तो भले हो किंतु श्रावकोंको अध्यात्म ग्रन्थोंके पढनेका तो अधिकार नहीं है सो भी ठीक नहीं है। जिनसेनस्वामीने पंद्रहवीं व्रतचर्या क्रियाका वर्णन करते हुये पर्व ३८में कहा है कि—

सूत्रमौपासिकं चास्य स्यादध्येयं गुरोर्मुखात्।
विनयेन ततोन्यच्च शास्त्रमध्यात्मगोचरम्॥ ११८॥

अर्थ—इसे प्रथम ही गुरुमुखसे उपासकाचार पढ़ना चाहिये और फिर विनय पूर्वक अन्य अध्यात्मशास्त्रोंका अभ्यास करना चाहिये।

कुछ भी हो, किसी ग्रन्थके अध्ययनकी मनाई करना विलकुल निःसार है। इसकी अनुपयोगिताका तो खास प्रमाण यही है कि इस समय इसपर कोई ध्यान नहीं दिया जारहा है। केवल

अंध परम्परा भक्तोंकी कहनेभरकी चीज रह गई है। अगर इस अनिष्ट पूर्ण आज्ञाका पालन किया जाता तो बड़ा ही दुर्भाग्य होता—जैन धर्मकी इस समय जैसी कुछ अवस्था है वह भी नहीं रहती। फिर भी सिद्धांत ग्रन्थोंका जैसा पठन पाठन होना चाहिये वैसा नहीं होरहा है। प्रत्येक साल इसमें विद्यार्थी पास होजाते हैं किंतु वे खाली पास ही हैं, उससे सन्मार्गका महत्व वे द्योतित नहीं कर सके। क्यों कि जिस उद्देश्यसे इनका पठन पाठन होना चाहिये वह प्रायः नहीं है। पूर्वकालमें इनका अध्ययन सम्यग्ज्ञानकी प्राप्ति, कषायोंकी मंदता और जैन मार्गका गौरव प्रकट करना इन उद्देश्योंको लेकर होता था अबतो केवल टका पैदा करने और अपना आदर सन्मान होनेके अर्थ इनका पठन होता है। इसके लिये वे जिन ग्रन्थोंके समीचीन अध्ययनके लिये कमसे कम दस पंद्रह वर्ष चाहिये उन्हें पांच चार वर्षहीमें जैसेतैसे पढ़कर प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेते हैं और फिर उनका मनन करना भी छोड़ दिया जाता है। फल यह होता है कि पांचसात वर्ष बाद वे ग्रन्थ अपठितसे होजाते हैं। ऐसे कितनेही विद्वान कहलानेवाले मिलेंगे जो नाम मात्रकी पदवियोंको चिपटाये हुये गर्वोन्मत्त फिरते हैं काम पड़नेपर सिद्धांत विषयक किसी खास शंकाका समाधान ये नहीं कर सकते। निरंतरके अध्ययन विना उनका प्रमाणपत्र विचारा धरा ही रह जाता है, वह केवल दिखानेभरकी चीज रह जाती है और उससे कुछ अर्थ नहीं निकलता। इस तरहके प्रमाणपत्रोंसे कुछ लाभ भले ही हो किंतु हानि भी पूरी होती है। इन्हें प्राप्तकर मनुष्य अपनेको ऐसा कृतकृत्य समझने लगता है कि फिर उस विषयमें कुछ भी प्रयत्न नहीं करता है नतीजा जिसका यह होता है कि अंजुलीके जलकी तरह वे शनैः २ सिद्धांत ज्ञानसे खाली होते २ आखिर खोकले रह जाते हैं। सो ठीक ही है 'अनभ्यासे विषं विद्या' होता ही है। जिसकी स्थिति ही निरंतर मनन चिंतवनके ऊपर निर्भर है। उसका प्रमाणपत्र सर्वदाके लिये मानना ही विडंबनापूर्ण है। जहां इन प्रमाणपत्रोंकी खटपट नहीं है वहां बहुत बड़ा लाभ यह है कि मनुष्यको अपनी लियाकत दिखानेको हर समय अपनेको तय्यार रखना पड़ता है। इससे मेरा अभिप्राय परीक्षा देकर प्रमाणपत्र लेनेकी व्यवस्था उठा देनेका नहीं हैं किन्तु दीर्घकाल तक यथेष्ट अध्ययन होना चाहिये यह भाव है। अस्तु;

अन्तमें हम यह लिखकर कि—'किस तरहके ग्रन्थ काल शुद्धि आदि न होनेपर पढ़ने योग्य हैं' विराम लेते हैं। मूलाचार पंचाचाराधिकारकी गाथा ८२में कहा है कि सम्यग्दर्शनादि चार आराधनाओंका प्रतिपादक ग्रन्थ, सत्रह प्रकारके मरण निरूपक ग्रन्थ, पंच संग्रह ग्रन्थ, स्तोत्र ग्रन्थ, आहारादिके त्यागका उपदेशक ग्रन्थ समायिकादि षडावश्यक प्ररूपक और महापुरुषोंका चरित्र वर्णन करनेवाली धर्मकथा इस तरहके ग्रन्थ विना कालशुद्धि आदिके भी पढने योग्य माने गये हैं। कालशुद्धि आदिका वर्णन इसी पंचाचाराधिकारमें है सो वहांसे देखलें।

प्राचीन अतिशयक्षेत्र श्री नेमगिरि-जिन्तूर बग्गान (निजामस्टेट)।

Samadhi-Shataka.

(By :—*Mr. Herbert Warren Jain, LONDON*)

Verse 15. "The root of this misery, namely the circle of births and deaths is none other than this false knowledge which identifies the body with the soul. Freeing oneself from this delusion, and not allowing the senses to relate themselves to external objects, one should concentrate himself within (that is to say should try to realise the subjective soul).

I have in my time been considerably troubled by one particular part of the above injunction. Can it be true that we should not allow the senses to relate themselves to external objects ? That we should give up identifying the body with the soul is something we can believe should be done, but what does it mean when it is said that we should not allow the senses to relate themselves to external objects ? Does it mean that we are not to allow ourselves to see and hear the things around us ? Would it not be the same as being blind and deaf ?

In about the early part of the year 1920 I was fortunate enough to be in correspondence with an ascetic, Nemisagar Varnijee, and I took the opportunity of asking him these questions. There may be other people who are similarly troubled, and so I think it may good to make use of the permission he gave me to publish correspondence which came from him, even though it be now more than nine years ago.

He very kindly explained the verse in question to me in a letter dated September the 11th, 1920, which reads as follows:—

"Jain Boarding House, Doddapet, Mysore."

Dear Sir, I am very glad to read your letter of the 20th of June 1920. I shall try to answer your questions as far as I am able to do so. However, I cannot answer all your questions in a single letter. First I shall try to clear your difficulty as regards the fifteenth stanza of the Samadhi-Sataka.

You have already given the substance of the stanza in your letter. Now your question is 'How knowledge (Matijnana) is possible if we do not allow the senses to receive knowledge from the outer world ? It can be answered thus:—

We may be conscious of a thing even during its absence. For example, a certain lady had an only son. Let us suppose that he is now dead. At some time after his death the mother by accident thinks of her son and mourns for him. She sees her son's exact form. After she has seen him wandering in front of her, often several of his daily doings such as thus walking, thus sitting, thus reading, flash to her mind. But none of these, whether his body, his doings, or his virtues are actually present. Thus we infer that we can have a knowledge of things even when they are absent. This kind of knowledge is called Smrathi Jnana or knowledge by recollection or by remembrance.

Let us take another example. Someone in London knows many things about India, either by reading books, or by listening to people who have actually seen India. He can either retain this knowledge in him, or impart it to others. But he has never seen India or anything that he knows about her. This

kind of knowledge is called Shrutijnana, or knowledge through books or experiences of other people.

Similarly the atom is never visible to our senses; yet we believe in its existence, it becomes an object of our knowledge, but we never see it. This kind of knowledge also is called Shruti Jnana. The knowledge of Akasha is of a similar kind, i. e., though Akasha is formless and unknown to our senses, yet we see that there is such a thing as Akasha. By this we have to infer that things are absolutely unknown to our outer senses are capable of being understood by us.

There are five different kinds of knowledge: Mati Jnana comes through our five outer senses and also through our consciousness wihch is called an inner sense. Shruti Jnana, though it is derived from Mati Jnana is ultimately dependent upon consciousness, the inner sense. In this respect I give you another example. Let us suppose that someone in London has listened to the description of Bombay given by another person, and keeps it in his memory. After some time this same Londoner gives an account of Bombay to a third person as if this Londoner had actually seen the town. This is because he remembers the description given by the person to whom he had listened. This means that the things he knew before come back to him. This sort of knowledge is called Shruti Jnana.

Now let us turn our attention to the stanza of Samadhi-Sataka. "Misery in this life is due to our misconception of the soul; we think that the body is the soul. We must get rid of thls ignorance and think of the soul as it actually is; not once, but over and over again. To do so we must be free from thoughts of the outer world. so long as our outer senses are turned towards the world, the inner sense cannot turn inside. Therefore, if we want our mind to think only of soul, we should not allow our senses to go in the opposite direction. If the mind is to be free from the outer relation, senses must first be checked."

This is the substance of the stanza. Your doubt is that if the senses are to have no connection with the object in the material world, Matijnana cannot exist.

When the mind is absorbed in the contemplation of the soul we lose nothing if the senses are not concerned with the material world. In such a state of contemplation the object of mind is soul. Therefore the objection that thought cannot be apart from an object does not hold good here, because the object of thought is the soul itself.

First we get an idea of soul, either from other people who know it, or by the study of religious books. By constant thinking of the first idea, our knowledge of our soul remains fixed in us. Then if we go to a calm place and sit thinking calmly, soul becomes visible to our knowledge. This process is called 'Manasa Pratyaksha', visible to mind. In the Jain scriptures even this state of knowledge is called Paroksha. (Here we use the words Paroksha and Pratyaksha to mean partial and full. Here partial does not mean that there are some things yet to be known about soul, it only means that we know every detailed account of Atma, but we cannot see him actually as we see material things. This you can very well understand if you take two people one of whom knows the description of New York, while the other has actually seen the town). The eleventh sutra of the Tatvartha Sutra says Adya Paroksham, which means that of the five kinds of knowledge, the first two, Matijnana and Shrut Jnana, are Paroksha. Formless things are visible only to Kevala Jnana,

and as the soul is formless it can be seen only by Kevala Jnana, and our knowledge of soul is Paroksha, it is Shrutijnana, which, as explained above, is Paroksha.

I will give you another instance to show that during the stoppage of sense-connection with the outer world we get a particular kind of knowledge, Shruti Jnana. Let us suppose that a judge has to write a decree on a serious case. He shuts himself up in a room and thinks only of those methods which would help him in this situation. He gets the solution. What kind of knowledge is this? It is purely mental and not of the senses. Thus we infer that knowledge can come from the mind without the outer senses. This knowledge may have for its object either the outer world or the soul. The stanza of the Samadhi-Sataka says that the knowledge mentioned in it must have soul for its object. When this kind of knowledge remains fixed on a certain object for some time, it becomes Dhyana or meditation, which is of three kinds, Subha, Asubha, and Sudha, good, bad and pure.

Asubha Dhyana or bad meditation consists in thinking of evil to others, of false things, of sensual pleasures, of things that bring distress to the mind, and so on. The result of this is that so long as the mind is engaged in this sort of meditation sinful karma atoms enter the soul at every moment without any interval and result in bringing us low birth and misery.

Sudha Dhyana, good meditation, is to think of doing good to others, of the divine virtues of Parmatman, of the pure characteristics of righteous people, of the benefits derived from others, of the means of relieving beings from misery, or of the real nature of a substance. The special characteristic of this meditation is that it must be quite free from liking or disliking. So long as the soul is engaged in this contemplation, meritorious Karma atoms will be continuously flowing into the soul, the effect of which will be the giving to the meditator in his next birth a beautiful, healthy body, fame, abundance of worldly things, long life, temporal power, boundless wealth, a loving wife and beautiful children, a great retinue of followers, etc.

Suddha dhyana, pure meditation, can be described as contemplation upon the spotless virtues, omniscience, everlasting happiness, of the Siddhas or pure souls who have attained salvation. But here there is a distinction between the meditator and the meditated. There is still a higher sort of meditation which consists in thinking of one's own pure self completely separated from other things. This meditation checks the inflow of all sorts of karma atoms, whether good or bad and destroys the previously gathered piles of karma just like fire destroys a manger. If we continue in this manner...all our Karmas will be destroyed, we shall be freed from worldly suffering and enjoy eternal happiness. Therefore in order to overcome this disease of Karmas which are the cause of endless births and deaths, we must taste this pure meditation. This is the full significance of the fifteenth stanza of Samadhi—Sataka."

The letter is then finished up in the usual way.

My difficulty arose evidently from supposing that just as we should never think that the body is our self or soul, so also we should never allow our senses to relate themselves to external objects, whereas the stanza evidently only means that we should not allow the senses to relate themselves to external objects if we wish to think about the soul, but of course at other times we must do so.

H. Warren.
84 Shelgate Road, LONDON.

Faith and Truth.

(By:—Tarachandra Jain Pandya, Jhalarapatan City.)

Truth is the nature of soul, and being natural it is, in reality, simple and easy. But the worldly soul has remained so long under the spell of Uutruth, and so much ignorant of Truth that when she sets out on the path of Truth, she feels it as if it were strange and difficult to walk on. The pilgrim who treads upon it finds it strewn all over with thorns and drier than even the vast deserts of Sahara with no oases to delight his eyes and comfort his mind. He sees beside it a road looking as comfortable and beautiful as a bed of roses and even skirted by the pleasant gardens filled with the sweet fragrance of their flowers. He must guard against the temptation of leaving his own track, and taking to this seemingly pleasant road. For, if he yields to this temptation, he is ruined. Many are tempted here and as a result lose themselves, and a few who boldly continue in their journey find the heavens threatening, the clouds darkening, the lions roaring, and the oceans over-flooding. Even the Earth under their feet quakes and seems to be slipping away, and everything they touch or feel becomes painful to them The air becomes poisonous, the friends are turned into foes, and, what the worse, even truth appears to be ugly, fearful, and useless. Amidst such circumstances, the evil thought, the Satan of the allegorical world, soars to their heads and asks them to come to him, to give up their pursuit, and drive with him in his flying car of gold, and thus to save themselves, and with a bewitching smile he promises to make them the masters of the world with all its treasures. It is only after baffling all these threats and temptations, and proving himself a true gold by being tested on this touchstone that a pilgrim of Truth is able to enter the mansion of Right, and there eat of the viands of the gods, the Perfect, who are attended on by Bliss, Knowledge, Tranquility and Power, and dwell there for ever and ever enjoying the supersensual pleasures of eternal kingdom. The pilgrims must have faith and firm resolution to stand all the obstacles. How can a man persevere in the face of the worst difficulties unless he believes in the existence and excellence of his goal, and in the correctness of his path ?

But Faith must not be blind Faith. It must be Right Faith, Faith in Truth, otherwise Satan also will cite the scriptures and claim the reposing of trust in him. Right Faith is founded on a proper knowledge of Truth. How is this knowledge to be gained ? The answer to it is easy. Self is the treasury of all knowledge, and Truth is the nature of self. Therefore, it follows that the best way to know the truth is to contemplate on the Self. But in order to contemplate properly, it is essential that the mind must be calm and unprejudiced, i. e. free from the fourfold passions of anger, deceit, pride and avarice. The weaker these passious become, the calmer the mind grows and the fitter it becomes for the task of contemplation and realing Truth. Therefore, suppress your desires.

and passions as much as you can, and whenever possible, lift up your mind from the evils of the noisy world into the purer regions, contemplate on yourself, and diligently seek within yourself to find out answers to such questions as : Who are you ? Whence have you come and where will you go at last ? What is the nature of the world and the substances it contains ? What is the nature of self ? What is the nature of the relation between the soul and the other substances of the world ? What is the present condition of your self, and how can it be made perfect ? A day shall come when light will come from your Self and Truth will be revealed to you.

Besides this, the great masters of proved perfection, who are desireless and therefore impartial, omniscient and therefore infallible, and their lessons as faithfully transmitted by the sincere and unselfish pilgrims of Truth; and the society of the saints who are free from the worldly desires and whose only business is the realisation of Truth and the perfection of themselves—these also are of immense help in acquiring the knowledge of Truth. The worship, the reverential reflection, of the form of the Perfect Soul whether as conceived by the mind or as methodically represented by the images formed of matter, is also conductive to the cognition of Truth, in as much as it gives an idea of what Perfection is, enables the devotee to withdraw his mind from the mundane objects and concentrate it on the Self, and ultimately leads to the belief that the Self is similar to the Perfect Soul—the Ideal.

The seeker after Truth should study the lessons of the Great Masters and try to comprehend them as far as is possible for his intellect. He need not be afraid if he is not possessed of great intellect. One can travel thousands of miles holding a dim lantern whose range of light does not extend to more than a foot, because as he advances so the light also continues moving onward. So, the sincere and unprejudiced lover of Truth tries to find out the explanation of a statement or dogma to as much extent as his intellect allows, and when he has found it true to that extent, he takes on trust the rest which is beyond his power of comprehension, so long as it is not proved to be false. He is always fond of reasoning and enquiry, because his heart's desire is to understand Truth thoroughly and correctly. But he reasons and enquires as a humble student of Truth and not as a pedantic debator. He goes on steadily with his travel, and with every forward step that he takes, his mind becomes increasingly illuminated.

The miraculous effect of faith upon mind is evident even in the common affairs of life. It is Right Faith which makes one's knowledge of Truth worthy of being entitled Right Knowledge. How can a man's knowledge be considered right as long as he himself does not believe in it ? His very lack of belief indicates that he has doubts about its soundness.

It should be noted here that though the worship of the idols, the study of the scriptures, the society of the saints etc. are helpful in the realisation of Right Faith as accessories, yet they are not always necessary for it, nor are they the sure signs of it. Right Faith is a peculiar enlightenment of soul which can only be experienced and cannot be described. This state results when the intensity of the passions is destroyed; and the soul feels an unshakable confidence in its own self-existing, excellent, omniscient and immortal nature, and in its being essentially different and separate from matter with which it has been associated from times without beginning. With the dawn of Right Belief, the power of the passions begins to decline, the soul grows indifferent

to the worldly objects and fixes its interest on itself, its inherent qualities of mercy, equanimity, humility and fearlessness, etc. begin to be manifested, and it is as it were invested with an indomitable will to follow the path of Truth with unflinching zeal, and irresistable vigour, and disperse the clouds of the Karmas that have hemaned it round, so that it grows purer and purer and shines with increasing resplendence, and eventually becomes what it is. The cause of this Right Belief lies in the soul itself. The student of Truth must look to this only source for receiving the light, and all other means that he is recommended to adopt serve only to make him a fit recipient.

Tarachand Pandya.

प्रार्थना ।

(वसन्ततिलका)

विश्वेश ! सागर समान अपार तेरी ।
संसारमें झलकती महिमा कहां ना ॥
देवाधिदेव, अज और अनंत है तू ।
सारा त्रिकाल दिखता तुझमें पड़ासा ॥१॥

आलोकमान नभ जीवन-दान-दाता ।
तू व्याप्त है सब कहीं विमल प्रभासे ॥
श्री साधु-चित्त-खग हैं उड़ते तुझीमें ।
तेरी पड़े जगत पे सुविशाल छाया ॥२॥

देवेश ! जोड़कर हाथ पुकारता मैं ।
तेरी कृपा मधु ही बल जोर मेरा ॥
ना मांगता सुख, कठोर कुदुःख मांगू ।
चाहूं न भोग भवके, भव नाश चाहूं ॥३॥

देखूं न मैं तनिक भी अपने गुणोंको ।
निन्दार्थ देख न सकूं परदोषको मैं ॥
देखूं कभी न धन कामिनि देह शोभा ।
अन्धा बना नयनसे इतना मुझे तू ॥४॥

लूं देख दोष निजके गुण दूसरोंके ।
सौन्दर्य वा दुख छिपे न कभी हियोंका ॥
आकाश भेदकर सत्य तुझे लखूं मैं ।
मेरे बना नयनको बलवान ऐसे ॥५॥

निन्दूं न सज्जन कहूं यशको न मेरे ।
बोलूं कठोर कटु शब्द न शत्रुसे भी ॥
भाषूं न झूठ यदि संपद भी दिलावे ।
ऐसी महेश ! बन जाय जबान गूंगी ॥६॥

कांपे अनीतियुत विक्रम गर्जनासे ।
धर्मोपदेश सुन गूंज उठे सभी भू ॥
सप्रेम सत्य कह मुग्ध करूं सबोंको ।
ऐसी अमोघ करदे बलवान वाणी ॥७॥

हों थालमें चमकते पकवान सारे ।
सुस्वादवांछित सुगन्धित नेत्रहारी ॥
वे न्याय-अर्जित न हों यदि तो न खावे ।
ऐसी अशक्त रसना बन जाय मेरी ॥८॥

आनन्दसे चख सके मिलजाय जोभी ।
खा शुद्ध, भूख जितना बल पुष्टता दे ॥
भूखी खिला इतरको दुखको न पावे ।
हो शक्तियुक्त रसना सुखकार ऐसी ॥९॥

गोले सहूं गरल दारिद-दाहको भी ।
निन्दा सहूं खड्ग-चोट कुरोग सारे ॥
भू भाग शीतल, निराश वियोग पीडा ।
तेरी कृपावश सहूं इनको खुशीसे ॥१०॥

अन्यायको सह सकूं पर ना कभी भी ।
आपत्ति देख सच पे चुप ना रहूं मैं ॥
ना देश-जाति अपमान सहूं जरा भी ।
ऐसी बना सहनशक्ति महेश मेरे ॥११॥

मानिन्द मेड़ गुरु सन्मुख हो रहूं मैं ।
रक्षार्थि शत्रुपर हाथ उठा सकूं ना ॥

माषा विहीन पशु हैं उनको न पीडूं।
ऐसा मुझे शुभद कायर तू बनादे ॥१२॥
अन्याय देख पर पै सुर भी पछाडूं।
साधूं स्वकाज कर दूर हजार बाधा ॥
सिंहादि तुच्छ समझूं, मयको डराऊं।
ऐसा सुसाहसिक वीर मुझे बनादे ॥१३॥
हो दीनबंधु मलमूत खुशी उठाऊं।
तेरा सुसेवक बनूं, अभिमान ना हो ॥
निस्वार्थ भाव धरके जगको सुसेवूं।
ऐसा सदा नत रहूं इस भांति चाहूं ॥१४॥
ऐश्वर्य तुच्छ समझूं, प्रभुता घिनाऊँ,
सुज्ञान-दीप्त नम दिव्य विचारकेमें—
ऊँचा उडूं बन सकूँ सम ठीक तेरे।
चाहूँ महेश बनना इतना बड़ा मैं ॥१५॥
संसारके विषय मैं विष घोर मानूँ।
जानूँ न भेद अहि माल रिपु सखाका ॥
स्वर्गीय भोग सुख छोड़ भजूँ दुखोंको।
ऐसा मुझे परम पागल तू बना दे ॥१६॥
कर्तव्य जाय दिख मानस-आरसीमें।
निन्दा तथा सुयश बन्धनमें पडूँ ना ॥
हो कर्मशील जगमें सुसरोज शोभूँ।
ऐसा प्रवीण मुझ मानवको बना दे ॥१७॥
सारांश है यह कि पाप करूँ नहीं मैं।
तृष्णा असत्य इनसे डरता रहूं मैं ॥
तेरा विरोध यमराज समान मानूं।
ऐसी प्रभो! निबलता मुझको सदा दे ॥१८
अन्याय पाप पर मैं लड़ जीत पाऊं।
खोऊँ न शान्ति, सुख दुःख डिगा सके ना ॥
पा ज्ञान जीत मनको भव-जाल तोडूं।
ऐसा प्रभो! सबल तू मुझको बना दे ॥१९

ताराचन्द पांड्या जैन, झालरापाटन।

Jainism & Science.

(By:—Ramniklal Vimalshi Shah, Bombay).

(1) **Introduction**—Before writing anything on the subject—proper, let me confess to you, my readers, frankly, that I am merely a student of Comparative Study of "Jainism & Science." Whenever I read a book of science, I keep in my mind an idea to compare the striking facts of its contents with those of Jainism—the facts that I have learnt. I do not profess either to be a Pandit or a Literary Scholar. I will try to give here what is worthy to be given.

(2) **Main Body**—*(a)* One striking fact that, we, the Jains believe is that the bodies which have got one sense have got soul i. e. have life. Just in this twentieth century, some ten years ago there came out an Indian—one of the greatest scientists of the world today—who proved it and showed to the world that it was the fact. As ill luck would have it, he was not a Jain. Of course we are proud of him and we are content with him as he was an Indian. He was Sir Jagdish Chandra Bose. Before this proof was given in scientific terms by our hero—nobody in this world of materialism and memon—worship believed the truth of the statement.

(b) Another striking fact that we, the Jains, believe lies in our Karmic Theory. There seem some auspicious signs for the proof of it. Sir Oliver Lodge in his book on "Modern Scientific Ideas" published in 1928 has very nearly disclosed it. We beleve 'Karmic Matter to be the minutest particles not visible eventh rough the most powerful microscopes. These particles, if I mistake not, resemble the electrons and protons of Science. Jains believe in Seven Tattvas (तत्त्व) out of which Asrava, Bandha, Samvara, Nirjara & Moksha (आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा,

मोक्ष,) take active part in explaining this 'Karmic Theory'. The inflow of karmic particles, their attachment to the soul, their stoppage, their partial and complete outflow—this is the order. After the death of a body, if the balance of particles is zero, then and then only the soul attains liberation (मोक्ष) or otherwise, it has to change its place of residence in any other form or shape according to and owing to (नाम कर्म) Nama Karma. In short we believe that these Karmic particles are responsible for the structure of materials—and the structure takes place owing to the soul's Nāma karma. Sir Oliver Lodge has said in his above-named book—in the chapter about 'old atoms of matter' that it is this complicated nature of electrous and protons that is responsible for the Structure of bodies. Dear Readers, what does this sentence show ? As I said—it very nearly proves our Jain fact. Of course, it is not acknowledged on all hands and also it is not announced as a Scientific fact by the conference of authorities in Science.

(c) The third striking fact that we, the Jains believe comes in the questions about 'God.' Jains do believe in God. Let no one forget this fact—God as the purest and holiest of all beings—God free from all karmic particles—but not God as a creator of all Jains believe in God as such. Science defends Jainism. Let nobody for a moment think that science does not believe in Religion and Nature. Sir Oliver Lodge has emphasized the fact that the duty of science is not to create but to admire, appreciate and verify what is already created. For answering some very complicated questions, Science has to go to Religion and Nature. Science says that everything is automatically and scientifically created—nobody creates anything. It is merely due to the chemical actions—each in different manner—between elements that new substances are formed.

Conclusion—So many facts and truisms of Jainism are being proved day by day. And I am sure—after some hundreds of years as Science will advance—there will be a time when the people will know the facts of Jainism as the scientific fact proved by human beings. As ill luck would have it, we have no men in that field. It is because of that, that in spite of having truths with us, nobody is ready to put complete faith in us and our principles. We are rich in money—we are poor in art—really a very miserable contrast. Also shame for us that we do not know how, where and why to spend money. We merely spend it in erecting edifices and temples and not for living beings.

—❧—

यही है सार दुनियामें, दया करिये, धरम करिये।
प्रभूकी यादमें रहकर, सुफल जीवन-जनम करिये॥
लगै परमार्थमें तनमन, ये धन, तो श्रेष्ठ है सबसे।
सुधारा होय परभवका, यही हरदम करम करिये॥
सिखाता है दया करना, तुम्हारा हो, तुम्हें मजहब।
यही बहतर, जहांतक हो, नरम दिल हो रहम करिये॥
निकालो फूटको दिलसे, बढ़ाओ प्रेम, प्रेमी हो।
सभी हिलमिल रहो बाहम, सदा आली हिमम करिये॥
तरक्की कररही सब जातियां मिलकर, जरा देखो।
तुम्हीं गाफिल हो, गफलतमें पड़े हो, हा शरम करिये॥
उठो फिर देर करनेसे, हाथ तब आयगा 'प्रिय' क्या?
पड़ेगा सिर्फ पछताना, मेरी बातें रकम करिये॥

'प्रिय'

भगवान महावीर।

(लेखक:—पं० मूलचंद्रजी जैन वत्सल, संपादक आदर्श जैन चरितमाला, बिजनौर।)

अवतरण।

आजसे १९२८ वर्ष पहिले इस भारतवर्षके बिहार प्रान्तमें कुण्डपुर नामक सुन्दर नगर अत्यन्त प्रसिद्ध था। नाथवंशीय प्रतापशाली महाराजा सिद्धार्थ उसके अधिपति थे। वह अत्यन्त नीतिकुशल सम्राट थे। उनकी महारानीका नाम त्रिशलादेवी था। त्रिशलादेवीने अपने उज्वल गुणोंके समूहसे चन्द्राभाकी किरणोंको जीत लिया था, उसका दर्शन मानवोंके नेत्रोंको सुख और शांति प्रदान करता था। जब वह बोलती थी, तब उसके मुँहसे अमृतकी वर्षा होने लगती थी। वह सौन्दर्य, शीलता और महलोचित समस्त कार्योंकी ज्ञाता उस समयके महिला मण्डलमें एक ही थी।

उन्होंने अपने उज्वल आदर्शसे भगवान महावीरके जन्म प्रदानसे सारे संसारमें महिलाओंकी पूज्यताको प्रदर्शित किया था। उन्होंने दिखला दिया था, कि जो महिलाएं निरादर और घृणाकी पात्र समझी जाती हैं उनके गर्भसे ही विश्वपूज्य महात्मा जन्मलेकर संसारका उद्धार करनेको तत्पर होते हैं।

महाराजा सिद्धार्थ और त्रिशलादेवीका समय धर्मसेवनके साथ२ सांसारिक सुखोंके उपभोगमें संतोषपूर्वक व्यतीत होता था।

सत्यधर्मकी सृष्टि अनन्तकालसे है। उसका अस्तित्व कभी नष्ट नहीं होता। कालके परिवर्तनके साथ२ यद्यपि उसके प्रचार तथा पालनमें हीनाधिक्यता अवश्य होती रहती है, किंतु उसका कभी अन्त नहीं होता।

जिस समय उसके प्रचारक महात्माओंका अधिक सद्भाव होता है, उस समय उसका प्रचार सारे संसारमें उन्नत रूपसे होता है, किंतु जब कभी उसके प्रवर्तक धार्मिक महात्माओंकी कमी होजाती है तब उसका प्रकाश कुछ क्षीण होजाता है।

चतुर्थ कालके आदिसे भगवान ऋषभदेवसे लेकर भगवान पार्श्वनाथ पर्यन्त २३ तीर्थंकरोंका अवतरण होचुका था। उन्होंने अपने २ धर्म प्रचारके समयमें अहिंसामयी जैनधर्मको सारे संसारका राष्ट्र धर्म बना दिया था। उन्होंने अपने अद्भुत त्याग और ज्ञानशक्ति द्वारा सत्य अहिंसा धर्मकी पताकाको अखिल संसारमें फहरा दिया था। संसार उस शांतिमय जैन धर्मकी शरणमें रहकर अपने आत्मोद्धारके मार्गको प्राप्त कर चुका था। भगवान पार्श्वनाथके तीर्थ-

कालके पश्चात् वैदिक धर्मका प्रकाश बढ़ा। उसने धीरे धीरे पूर्ण हिंसामय प्रभाव भोले संसारी मानवों पर डालना प्रारम्भ किया। संसारी मानव उसके मिथ्याचरणके जालमें जकड़े जाने लगे। धीरे २ मिथ्याचरणोंने एक बड़ा भयंकर रूप धारण कर लिया, भयंकर पशु-हिंसा होने लगी। निर्बल प्राणियोंके सिरपर अत्याचारकी तलवार लटकने लगी। सबल और धनिक समाज अपने बढ़े हुए अन्यायोंकी पूर्ति निःशंक होकर करने लगा। क्रियाकांडी, पाखंडी प्रेतगण अपने मूढ मन्त्रके अन्चलमें मनमाना अनाचार करने लगे। शांतिप्रिय भव्यजन सत्य मार्गका प्रकाश न पाकर अकुलाने लगे। सारे संसारमें घोर कोलाहल होने लगा। ऐसे अवसर पर ही सत्यधर्मका सन्देश लेकर मानवोंको अहिंसा पथपर आरूढ़ कराने वाले, शांतिअमृतका पान कराने वाले भगवान महावीरका अवतरण हुआ। जबसे भगवान गर्भमें आए, तबसे देवांगनाएं माताकी अनेक प्रकार सेवा करने लगीं। महाराजा सिद्धार्थके विशाल आङ्गनमें देवोंद्वारा रत्नवृष्टि होने लगी। एक समयको सारे संसारमें आनंदकी मलय पवन बह उठी। दिशाएं निर्मल होगईं, पक्षीगण मन्द२ स्वरसे कलरव करने लगे। चैत्र शुक्ला त्रयोदशीके दिन शुभ समयमें महादेवी त्रिशलाके उदर कोषरूपी प्राची दिशासे वीर बालसूर्यका जन्म हुआ। भगवानके अद्भुत पुण्य प्रभावसे देवताओंके सिंहासन कंपित हो उठे। स्वर्गलोकमें आश्चर्यजनक मंगलनाद होने लगा। इन्द्रराजने अपने दिव्य ज्ञान द्वारा भगवान महावीरका जन्म होना ज्ञात किया। वह स्वर्ग लोकसे देवताओंके समूहको लेकर स्वयं शची समेत ऐरावत हाथीपर चढ़कर लीला सहित महाराजा सिद्धार्थके राजप्रासादके सम्मुख उपस्थित हुए। वहां उन्होंने भगवानके जन्मोत्सवके उपलक्षमें बड़ा भारी उत्सव किया। उन्होंने उनका ठाट-बाटसे जन्माभिषेक किया। देवांगनाओंने नयन मनहारी नाच द्वारा, दर्शकोंका हृदय विमुग्ध कर दिया। कुछ समयको कुण्डलपुरने स्वर्ग-पुरीके स्वरूपको धारण कर लिया। सुरराज बालक महावीरको अपनी गोदमें लेकर उनके अनंत दीप्तिपूर्ण मुखमण्डलका अवलोकन कर किंचित् भी तृप्त नहीं हुए। उन्होंने अपने हजार नेत्रोंद्वारा अनेकवार बालशिशु वर्द्धमानके रूपसुधाका पान किया। पश्चात् माता त्रिशलादेवीकी गोदमें उन्हें सौंप दिया और उन्हें "वर्द्धमान" नामसे सम्बोधित कर जन्मकल्याणकके हर्षसे परिपूर्ण होकर स्वर्गको लौट गए।

महावीरत्व।

प्रभातका सुन्दर समय था, प्रतापी सूर्यने अपनी स्वर्णमयी किरणों द्वारा पृथ्वीमंडलको स्वर्ण तुल्य बना डाला था। उपवनमें नवीन पुष्प प्रफुल्लित होकर हँस रहे थे। उपवनकी शोभा प्रभातकालीन मंजुलताने द्विगुणित रूपसे वर्द्धित कर दी थी। बालक महावीर इस सुन्दर समयमें समवयस्क बालकों समेत उपवनमें क्रीड़ा करनेके लिये चल दिये। वह बालकोचित क्रीड़ा विनोदमें निमग्न होगए।

बालक महावीर, महावीर थे। उनके शरीरमें अतुल बल था, उनका पराक्रम अद्वितीय था। समवयस्क बालकोंके साथ क्रीड़ा करते हुए वह नक्षत्रोंके समूहमें चंद्रके समान प्रतीत होते थे। उनका मुँह मंडल अपूर्व तेज और विलक्षण प्रभासे प्रदीप्त होरहा था। इसी समय कपोलोंसे मदधारा बहाता हुआ, मदलोलुप–भ्रमरोंके नादसे अत्यन्त क्रोधयुक्त हुआ, भयंकर चिंघाड़ करता हुआ, मदोन्मत्त, कालके सदृश भयानक एक गजेन्द्र तीव्र गतिसे दौड़ता हुआ क्रीड़ा करते हुए उस बाल-मंडलकी ओर आता हुआ दिखाई पड़ा। उस भयंकर हाथीको अपनी ओर आते हुए देखकर समस्त बालकगण भयपूर्वक यत्र तत्र भागने लगे, किन्तु बालक महावीर निर्भयता पूर्वक अपने स्थानपर खड़े रहे।

हाथी अपनी सूंडको उठाकर उनके सन्मुख उपस्थित हुआ, बालक महावीरका हृदय किंचित् भी भयभीत नहीं हुआ, किन्तु उन्होंने साहस-पूर्वक हाथीके सम्मुख होकर अपनी दृढ़ मुष्टि-काका उसके ऊपर प्रहार किया और उसे मदरहित कर शीघ्रतासे उसके मस्तक पर आरूढ़ होगये। उनका यह अद्भुत पराक्रम अवलोकन कर समस्त प्रजाजनोंको अत्यन्त आश्चर्य हुआ और वह हाथी जो कि वास्तवमें एक देव था, बालक महावीरकी महान् शक्तिकी परीक्षा करनेके लिए आया था, अपना (हाथीका) भेष बदलकर शीघ्र देवके रूपमें प्रकट होकर बालक महावीरकी महान् शक्तिकी प्रशंसा करने लगा। वह उनके उस अलौकिक बल—सूचक कार्यसे अत्यन्त मुग्ध हुआ और उन्हें "महावीर" इस नामसे संबोधन कर स्वर्गलोकको चला गया।

आदर्श गृहस्थ जीवन।

बालक महावीर काल द्रव्यके परिगमनके साथ साथ सरलतासे पूर्ण बाल्यावस्थाका परित्याग कर युवावस्थाके क्षेत्रमें विचरण करने लगे। क्रमशः वह पूर्णयुवा होगए। उनके सुन्दर शरीरमें प्रभा न समा सकी। वह उनके शरीरसे बाहर निकलने लगी। उस प्रभाके प्रकाशमें उनका स्वर्ण शरीर अत्यन्त चमक उठा। उनके सुडौल और पुष्ट अंगोंपर सुन्दरता नृत्य करने लगी। दर्शकोंके नेत्रकमल उनके अवलोकनसे प्रफुल्लित होने लगे।

लाख प्रयत्न करनेपर भी कामदेव उनके शरीरमें प्रवेश नहीं कर सका। उनके स्वच्छ अन्तःकरणमें उसे किंचित् भी स्थान प्राप्त नहीं हुआ। उसने अनेकों प्रयत्नों द्वारा उनके हृद-यमें विषय विकार उत्पन्न करनेकी चेष्टा की, किंतु उसे अत्यन्त निराश होना पड़ा। उन्होंने कामदेवके आक्रमणोंको बुरी तरहसे नष्ट कर दिया। अस्तु, वह उनके स्थानको छोड़कर अन्य देवोंकी शरणमें रहने लगा।

युवक महावीर मति श्रुत और अवधिज्ञानसे युक्त संपूर्ण विद्याओं और कलाओंसे परिपूर्ण थे। गृहस्थावस्थामें रहते हुए भी वह जलमें कमल सदृश उसके विषय प्रलोभनसे सर्वथा विलग रहते थे। उनके मनमें कभी स्वप्नमें भी भोग-विलास संबंधी लालसाएं उत्पन्न नहीं होती थीं।

महाराजा सिद्धार्थने कुमारको पूर्ण यौवन-संपन्न निरीक्षण किया। उन्होंने योग्य कन्या-

ओंके साथ पाणिग्रहणका आयोजन किया, किंतु अनेकबार आग्रह करनेपर भी कुमार वर्द्धमान किसी प्रकार पाणिग्रहण करनेके लिये तैयार नहीं हुए। उन्होंने आजन्म पर्यंत ब्रह्मचारी रहनेका प्रण किया। महाराजा सिद्धार्थ उनकी इस दृढ़ प्रतिज्ञाके संमुख अधिक कुछ भी नहीं कह सके। युवक महावीरने कामविकार रहित ३० वर्ष पर्यंत गृहस्थाश्रममें रहकर अपना आदर्श जीवन सुखपूर्वक व्यतीत किया।

वैराग्य ।

प्रभातका समय था। पक्षीगण मधुर स्वरसे मार्तंडके प्रतापका स्वागत कर रहे थे। समस्त दिशाएँ प्रभा पूर्ण होरही थीं। विश्वप्राणियोंके हृदयोंमें नवीन उत्साह और आनंद प्रवाहित होरहा था। युवक महावीर अपने महलके उच्च शिखरपर विराजित हुए प्रभातकालीन दृश्यका अवलोकन कर रहे थे। प्राची दिशामें अरुण मेघमण्डल स्वर्ण लालिमाको लज्जित कर रहा था। महावीर स्वामीके नेत्र उस अरुण मेघमंडलकी शोभापर मुग्ध होगए। वह अनिमेष दृष्टिसे उस ओर विलोकन करने लगे। उन्हें अवलोकन करते एक क्षण भी नहीं हुआ था, कि वह लालिमा नष्ट होगई और उसके स्थानमें नभमण्डलका शुभ्र पटल दिग्दर्शित होने लगा। भगवान महावीरने इस परिवर्तनका अवलोकन किया और बड़े ध्यानसे अवलोकन किया। इस परिवर्तनसे उनके हृदयमें एक नवीन विचार धारा प्रवाहित हो उठी। वह विचारने लगे—"ओह! संसारका दृश्य बड़ा ही नश्वर है। यहां एक क्षण मात्रमें ही कुछका कुछ होजाता है। इस अस्थिर संसारकी समस्त वस्तुएं क्षणभंगुर हैं, नष्टप्राय हैं। सांसारिक वैभवके संबंधमें तो कहा ही क्या जा सकता है, क्योंकि वह तो प्रत्यक्ष ही जड़ है और क्षणिक है; किंतु मानवोंका यह शरीर भी प्रति समय विनाशके सम्मुख उपस्थित होकर इस आत्माका त्याग कर देता है। ओह! इस क्षणिक वैभव और इस नश्वर शरीरसे मानवोंका इतना मोह! इतना स्नेह!! इतनी तल्लीनता!!! क्या इन परिवर्तनशील वस्तुओंकी तीव्र स्नेह मदिराके नशेमें मस्त हुए यह संसारी मानव अपने आत्मकल्याणसे सर्वथा विस्मृत नहीं हो रहे हैं? क्या इन्हीं नश्वर प्रलोभनोंके जालमें बद्ध हुए वे कर्मोंकी परतंत्रतामें नहीं पड़ रहे हैं? क्या वे इस मधुर विषय विलास सागरमें निमग्न हुए अपने कर्तव्य-पथसे उन्मुख नहीं हो रहे हैं? क्या आत्मकल्याणसे विस्मृत मायामरीचिकामें फंसे हुए इन अज्ञानी संसारी मानवोंने स्वार्थ, अन्याय, अत्याचार और कपटाचारको अपना सहमित्र नहीं बना रक्खा है?

वह किसलिए? केवल क्षणिक विषय लालसा पूर्तिके लिए ही न! किंचित् कुत्सित वासना तृप्तिके लिए ही न! ओह! इन घृणित कुकर्मोंके लिए इतना कष्टमय व्यापार! इतनी अशांतिमय कल्पनाएं और इस प्रकार तन्मयता! क्या इन्हें यह ज्ञात नहीं है कि जिसके लिए वह इतनी मारकूट, इतनी प्रपंचना, इतना पाप और अत्याचार कर रहे हैं, वह दो दिनका

क्षणिक विनोद है। आह ! मैं भी तो अबतक इस संसार चक्रके ऊपर मीठी निद्रामें पड़ा हुआ जीवन व्यतीत कर रहा था। मैं भी अपने जीवनके अमूल्य समयको व्यर्थ नष्ट कर रहा था। मैं अनंत शक्तिशाली आत्मा होते हुए भी इस गृहस्थाश्रमके बंधनमें पड़ा हुआ था। अपने वास्तविक कर्तव्यसे विमुख हो रहा था। मेरा कर्तव्य था आत्मोद्धार, देशोद्धार और विश्वोद्धार। बस, अब नहीं; अब मैं इस क्षणिक संसारकी नश्वरता अवलोकनमें अपना एक क्षण भी नष्ट नहीं करूँगा। अब मैं शीघ्र ही संसारके इन समस्त मायाजालोंको काटकर अविनश्वर सुख सम्पन्न आत्मा बनूंगा। मैं इस संसारका त्याग करूँगा। मैं तपस्वी बनूंगा।" इस प्रकार एक क्षणमात्रमें उनका हृदय वैराग्यसे भूषित होगया। वह बाल ब्रह्मचारी, वह अद्वितीय आत्मविजयी, वह प्रबल बलशाली, मदनविजयी महावीर उसी क्षण समस्त सांसारिक जाल त्यागनेका संकल्प करने लगे।

गृहत्याग।

महावीरस्वामीके संसार–विरक्त होनेका संवाद स्वर्गनिवासी देवताओंको विदित हुआ। नियमानुसार लौकांतिक देव भगवानके सम्मुख आए। उन्होंने भगवानकी तीन प्रदक्षिणा देकर नमस्कार करते हुए, उनके इस शुभकृत्यकी अत्यंत प्रशंसा की। वह विनयपूर्ण शब्दोंमें कहने लगे– "प्रभो ! आपने जो दीक्षा ग्रहण करनेका विचार किया है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। यह कर्मोद्धारका कार्य आपके अतिरिक्त और कौन कर सकता है ? धन्य है आपकी इस वैराग्य वृत्तिको !" इसप्रकार शिष्ट वचनों द्वारा भगवानके वैराग्यको दृढ़कर वह अपने स्थानको चले गए। पश्चात् इन्द्रने चतुर्विध देव तथा इंद्राणी समेत उपस्थित होकर भगवानका अभिषेक अपूर्व उत्साह सहित किया।

महाराजा सिद्धार्थ तथा समस्त गृहजनोंको अब ज्ञात होगया कि कुमार महावीर शीघ्र ही इस गृहस्थाश्रमका त्याग कर दिगम्बरी दीक्षा लेलेने वाले हैं। उनका हृदय पुत्र वियोगके भीषण दुःखसे व्याप्त होने लगा। समस्त गृहजनोंके मनमें विषादकी तीव्र तरंगे उमड़ने लगीं। माता त्रिशलादेवीका हृदय पुत्रवियोगके इस दुःसह दुःखको संभाल न सका, वह फूट२कर रोने लगी। स्नेहकी धारा प्रबल वेगसे लहराने लगी। उन्होंने रोते रोते क्षीण स्वरमें कहा– पुत्र ! तुम यह क्या कर रहे हो ? इतने बड़े राज्य वैभवका इस प्रकार क्यों त्याग कर रहे हो ? ओह ! तुम्हारा यह सुकुमार शरीर, जिसने कभी सूर्य किरणोंके आतापका अवलोकन नहीं किया, वह तपश्चरण जैसी तीव्र आंचके सम्मुख कैसे स्थिर रह सकेगा ? आह ! बेटा तु घोर कष्टमय क्षुधा तृषाकी तीव्र वेदनाको कैसे सहन कर सकेगा ? पुत्र ! इस प्रकार हमारे आनंदको अनायास नष्ट कर इस दुःसह दुःखमय वियोगका कार्य मत करो।

मोहमग्ना माताको इस प्रकार विलाप करते हुए बिलोक कर सौधर्म इंद्रने सान्त्वना देते हुए कहा–माताजी ! आपका पुत्र त्रैलोक्य स्वामी

है। इन सिंहके समान निर्भय महावीरको किस बातका भय? ये अनंत बल संपन्न चरम शरीरी हैं। इनके शरीरको कोई भी वस्तु कष्ट नहीं दे सक्ती। पूज्या जननी! संसारमें परिभ्रमण करते हुए अनंतकाल पर्यंत इस आत्माने असहनीय कष्टोंको सहन किया है। अब यह उन संसार जनित समस्त दुःखजालोंको नष्ट कर अविनश्वर सुखका अनुभव करेंगे और इस कष्टमय संसारसे इन अज्ञानी संसारी मानवोंका उद्धार करेंगे। यह समय दुःख अथवा शोक करनेका नहीं है, किन्तु अत्यन्त हर्षका है। वन्दनीय माता! आपको मोहजालमें पड़कर इसप्रकार खेद करना उचित नहीं। सौधर्मेन्द्रके इसप्रकार बोधपूर्ण वचनोंको श्रवण कर माताका मोहजाल भग्न होगया।

पश्चात् इन्द्र, देव आदि भगवानको देवताओं-द्वारा निर्मित विचित्र पालकीमें बिठाकर जय-जयकार करते हुए पूर्व दिशाकी ओर नंदनवनको लेगए। वहांपर चंदनके वृक्षके नीचे सुन्दर फटिक शिलापर इन्द्राणीने विविध रत्नोंके चूर्णसे स्वस्तिक निर्माण कर पुष्पमालादिसे सुन्दर मण्डप बना रक्खा था। भगवान पालकीसे उतरकर उसी मंडपमें विराजमान होगए।

भगवान महावीरने समस्त रत्नजड़ित भूषणोंको, हीरोंसे चमकते हुए मुकुटको जीर्ण तृण सदृश अकिंचन समझकर त्याग दिया। अपनी सुकुमार, किंतु बलशाली भुजाओं द्वारा समस्त केशोंको उखाड़कर "ॐ नमः सिद्धेभ्यः" कहते हुए पंच महाव्रत और २८ मूल गुणोंको धारण किया। वह आत्म-ध्यानमें मग्न होगए। समस्त देव तथा मनुष्यादिक उनकी स्तुति वंदना कर अपने अपने स्थानको लौट गए।

आत्म--दृढ़ता।

भगवान महावीर तीव्र तपश्चरणमें मग्न थे, सुमेरु शिखर सदृश निश्चल निश्चेष्ट और निर्भय तपश्चरणकी प्रभासे उद्दीप्त उनका शरीर दर्शनीय था। उन्होंने निराहार रहकर छह मास पर्यन्त तीव्र तपश्चरण किया। तपश्चरणके प्रभावसे उन्हें प्राणियोंके हृदयके समस्त विचारोंको जानने वाला मनःपर्यय नामक ज्ञान प्राप्त हुआ। पश्चात् वह भ्रमण करते हुए दशपुर नगरमें आए। वहांके कुल नामक राजाने उन्हें आहार-दान दिया, जिससे उसके यहां देवोंद्वारा पंचाश्चर्य किए गए।

भगवान महावीर आहार लेकर पुनः ध्यानस्थ होगए। उन्होंने तीव्र २ तपश्चरण किए, जिसके प्रभावसे उन्हें अष्ट प्रकारकी ऋद्धिएं और अनेक सिद्धिएं अनायास ही प्राप्त हुईं।

अनेक स्थानोंपर भ्रमण करते हुए एक दिन भगवान महावीर उज्जयिनी नगरीके स्मशानमें आकर पद्मासनसे ध्यानमें स्थित हुए। अनायास ही भ्रमण करते हुए स्थाणु नामक रुद्रने उन्हें देखा। पूर्व संस्कारके प्रबल प्रकोपके कारण उन्हें अवलोकन कर उसके हृदयमें दारुण द्वेषकी दाह दहकने लगी। वह उनकी इस प्रकार शांत सरल और निष्कंपताको सहन नहीं कर सका। उसने पूर्वजन्म कृत वैरका स्मरण कर भगवानके ऊपर अनेक प्रकारके

असहनीय उपसर्ग किए। उसने विद्याके प्रभावसे अपना विकराल वेष धारण किया, वह कभी दीर्घ तथा भयानक स्वरूप धारण करता था, कभी रोता था, कभी हंसता था, कभी गाता था और कभी अपने बड़े २ दांत निकालकर मुंहसे भयंकर अग्निज्वाला निकालता हुआ भयंकर चिंघाड़ करता था, किन्तु भगवान महावीर अपने ध्यानमें स्थिर रहे। तीक्ष्ण और विकराल दाढ़ोंसे प्रलयकाल जैसे चिंघाड़ते हुए सिंह और व्याघ्र हुंकारने लगे, किन्तु वह निर्भय रहे। अपनी कराल और चपल जिह्वाओंसे आकाश मण्डलको विषमय बनाने वाले पन्नग समूह फुंकारने लगे, किन्तु वे निश्चल थे। पश्चात वह नवीन, अनन्त यौवनसे मदोन्मत्त, अनेक तरुणी कामनियोंके मधुर लीला विलास और कमनीय कटाक्षोंसे कामदेवके साम्राज्यकी रचना करने लगा, किन्तु वह अटल थे। इसप्रकार वह उनके ऊपर अनेक उपसर्गोंका पहाड़ ढाने लगा, किंतु भगवानके वज्र हृदयकी टक्करसे वह समस्त उपसर्ग चूर २ होगए।

रुद्र ज्यों २ नवीन आपत्तिंए उनके सम्मुख खड़ी करने लगा, त्यों २ उनके हृदयमें दृढ़ता और आत्म तन्मयता बढ़ती गई। अन्तमें दृढ़ आत्मशक्तिकी विजय हुई। दुरितात्मा रुद्र उनकी इस आत्ममग्नता पर अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुआ। उसे अपने कुत्सित कृत्योंपर घृणा हुई। वह उनका अनेकप्रकारसे गुणगायन करता हुआ अपने पापोंका प्रायश्चित्त करने लगा।

भगवानने भिन्न २ वनोंमें भ्रमण करते हुए १२ वर्ष पर्यन्त घोर तपश्चरण किए। वह आत्मध्यानमें स्थिर रहते हुए कर्मोंकी सत्ताको नष्ट करने लगे।

सर्वज्ञता--प्राप्ति।

भगवान महावीरने ध्यानमें निश्चल रहते हुए अपनी आयुके ४२ वर्ष समाप्त कर दिए थे। आज उन्होंने जृंभिला ग्रामके निकटस्थ शाल वृक्षके नीचे विशाल शिलापर स्थित होकर कर्मोंको सम्पूर्णत: नष्ट करनेका संकल्प किया। उन्होंने परम शुक्लध्यान धारण किया। ध्यानकी तीव्र अग्निमें उन्होंने प्रबल पराक्रमी मोहकर्मको नष्ट कर डाला और मोहके नष्ट होते ही वैशाख शुक्ला दशमीके दिवस त्रैलोक्यके पदार्थोंको स्पष्ट प्रदर्शित करनेवाले सर्वज्ञ पदको प्राप्त किया। वह केवलज्ञान द्वारा तीन लोककी वस्तुओंको स्पष्ट देखने और जानने लगे। सर्वज्ञताके साथ साथ उन्होंने अनंत दर्शन, अनंत वीर्य और अनन्त सुखको प्राप्त किया।

आत्म विजयी भगवान महावीरके अलौकिक केवलज्ञान साम्राज्यका महा महोत्सव मनानेके लिए स्वर्गाधिपति इन्द्रने समस्त देवताओं संयुक्त मानव लोकको प्रस्थान किया। भगवानके केवलज्ञानकी महान महिमा प्रदर्शित करनेके लिए उन्होंने अपने कोषाधिपति कुबेरको त्रैलोक्य मनोहारी समवशरण रचना करनेकी आज्ञा दी। कुबेरने सुन्दर बारह सभाओंसे सुशोभित मानवोंके नेत्रोंमें आश्चर्य हर्ष और आनन्दकी सृष्टि करने वाले समवशरणकी रचना की; उसके मध्यमें उज्वल रत्न--सिंहासन निर्मित किया।

रत्न-सिंहासनपर विराजमान भगवानकी चतुर्मुख दिव्यमूर्ति मानवोंके नेत्रोंको हर्षित करने लगी।

इन्द्रने उपस्थित होकर अपूर्व भक्ति और विनय संयुक्त भगवानकी १००८ नामों द्वारा स्तुति की। पश्चात् वह भगवानके दिव्य उपदेश श्रवण करनेकी इच्छासे यथेच्छ स्थान पर बैठ गए। सुर, असुर, नरसमूह भगवानके उपदेशामृत पानके लिए उत्कंठित हो उठा, किन्तु अधिक समय व्यतीत होचुकनेपर भी उनकी दिव्यध्वनि प्रकट नहीं हुई।

इस घटनासे देवराजको अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उन्होंने शीघ्र ही दिव्यध्वनि प्रकट न होनेके कारण पर विचार किया। उन्हें उसी समय ज्ञात होगया कि भगवानकी दिव्यध्वनिका विवेचन करने वाले किसी गणधरके उपस्थित न होनेसे ही भगवानकी वाणी अभीतक प्रकट नहीं हुई। अस्तु, वह गणधर होनेवाले चार वेद और अष्टादश पुराणादिक समस्त शास्त्रोंके ज्ञाताके गौतमको लानेके लिए चल दिए।

देवराज एक वृद्ध ब्राह्मणका वेश धारण कर विप्रराज गौतमकी सभामें उपस्थित हुए और उन्होंने निम्न प्रकार निवेदन किया "द्विजराज! मैं भगवान महावीरका शिष्य हूं। उन्होंने मुझे एक श्लोक बतलाया था, किंतु उसके पश्चात् वह शीघ्रतः ध्यानस्थ होगए एवं उस श्लोकका अर्थ उन्होंने मुझे नहीं बतलाया। आप विद्वान हैं, इससे मैं आपके समीप आया हूं, किन्तु संभवतः आप उसका अर्थ नहीं बतला सकोगे।"

गौतमने गंभीरता पूर्वक उत्तर दिया-ओह! तु उस महावीर स्वामीका शिष्य है जो अपनेको सर्वज्ञ नामसे प्रगट करता है। उसके श्लोकका अर्थ बतलानेमें क्या विशेषता है। अच्छा कह? वह कौनसा श्लोक है?

वृद्ध ब्राह्मणने कहा-महाराज? तब क्या वास्तवमें आप मेरे श्लोकका अर्थ बतला देंगे और यदि आप न बतला सकेंगे तो आपको अपनी शिष्य मंडली सहित मेरे गुरुका शिष्य होना पड़ेगा।

द्विजराज गौतमने इसे स्वीकार करते हुए कहा-अपना श्लोक मेरे सम्मुख शीघ्रतः प्रकट करो? वृद्ध ब्राह्मणने "त्रैकाल्यं द्रव्य षट्कं" आदि पूर्ण श्लोकको गौतमके सम्मुख कहकर उनसे उनका अर्थ बतलानेके लिए कहा।

श्लोक श्रवण कर गौतम विचार सागरमें पड़ गए। बहुत विचार करनेपर भी वह उस श्लोकके अर्थका कुछ भी निर्णय नहीं कर सके। तब वह विचारने लगे कि यदि मैं श्लोकका विपरीत अर्थ बनाकर कह दूंगा तो महावीर-स्वामीके सम्मुख मेरी पोल खुल जायगी। यदि इस ब्राह्मणके सम्मुख विवाद करता हूं और कदाचित् इसके साथ विवादमें पराजित होगया तो मेरी बड़ी हंसी और अपमान होगा। अस्तु मेरा कर्तव्य है कि इसके गुरु महावीर स्वामीके सम्मुख जाऊँ, वह महान व्यक्ति हैं यदि उनके सम्मुख विवाद करता हुआ, पराजित भी हो जाऊँगा तो भी मेरा अपमान न होगा इसप्रकार विचार करते हुए उन्होंने कहा-"ब्राह्मण तेरे इस क्षुद्र श्लोकका अर्थ तेरे गुरुके सम्मुख ही

कहूंगा, जिससे उन्हें भी मेरी विद्वत्ता प्रकट होजाए" देवराज यह तो जानते ही थे। वह विप्रराज गौतमको उनके ज्येष्ठ भ्राता वायुभूति और अग्निभूति नामक प्रसिद्ध विद्वान और ५०० शिष्योंको अपने साथ लेकर समवशरणकी ओर चल दिए।

समवशरणके समीप आते हुए गौतमने कुछ दूरसे ही द्वार पर स्थित हुए उस मानस्तम्भका अवलोकन किया। उसे देखते ही उनका समस्त मिथ्या अभिमान नष्ट होगया। पश्चात् उन्होंने संसारकी महान महिमाको जीतनेवाले अपूर्व प्रभावयुक्त समवशरणको देखा और समवशरणमें विराजित देव और मानवोंके समूहसे सेवित दिव्यप्रभावविशिष्ट त्रैलोकेश्वर भगवान महावीरके वीतराग मुखमण्डलका अवलोकन किया। उनका हृदय भगवानकी भक्ति और विनयसे परिपूर्ण होगया। उनके हृदयके समस्त मिथ्या विचार नष्ट होगए। उन्होंने गद्गद् कण्ठ होकर भगवानको तीन प्रदक्षिणा देते हुए साष्टांग नमस्कार किया। पश्चात् उन्होंने भगवानसे प्रार्थना करते हुए जीवादिक तत्वोंके स्वरूप जाननेकी इच्छा प्रकट की। भगवानने अपनी दिव्यध्वनि द्वारा जीवादिक तत्वों तथा मोक्षके स्वरूपका वर्णन किया। अकाट्य युक्तियों द्वारा विस्तारपूर्वक तत्वार्थका वर्णन श्रवण करते ही द्विजराज गौतमका हृदय सम्यग्ज्ञानसे परिपूर्ण होगया। उन्होंने अपने समस्त शिष्यों तथा भाईयों समेत भगवानके सम्मुख जैनेश्वरी दीक्षा ली। उसी समय उन्हें अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान होगया और वे भगवानके सर्व प्रथम गणधर हुए। भगवानने महान् मिथ्यात्वी ब्राह्मणको जैनधर्मका परम उपासक बना दिया।

उपदेशामृत।

भगवान महावीरस्वामीने अपनी दिव्यध्वनि द्वारा मानवोंको धर्मका वास्तविक स्वरूप बतलाते हुए उन्हें सत्यार्थ मोक्षमार्गपर लगाया। उन्होंने अपने दिव्य उपदेशों द्वारा प्रगट किया था कि यह जीव अनन्त ज्ञान और अनन्तदर्शन स्वरूप है। इसमें त्रैलोक्यके पदार्थोंके जाननेकी शक्ति है। यह अविनाशी और अक्षय सुख साम्राज्यका स्वामी है। इसका स्वरूप संसारके समस्त पदार्थोंका जानना और देखना है, किंतु यह अनन्तकालसे शरीर और इससे सम्बंधित सांसारिक अजीव (पुद्गल) द्रव्योंके संसर्गमें निवास करता हुआ इन पुद्गल पदार्थोंको ही अपना स्वरूप समझ रहा है। किंतु यह समस्त पदार्थ उसके स्वरूपसे सर्वथा विरुद्ध हैं। विरुद्ध पदार्थोंमें आत्म कल्पना कर यह अनन्तकालसे मोह मग्न होरहा है। सांसारिक वैभव, वनिता, पुत्र तथा शरीरकी क्रियाओंको अज्ञानसे अपना मानता हुआ, उनके लिये अनेक प्रकारके राग-द्वेषादि तथा कषायके भाव कर रहा है, तथा अनेक हिंसादिक पापोंका सदैवसे सेवन कर रहा है। जिससे ज्ञानावर्णादिक आठ कर्मोंका इसके निरन्तर आश्रव (आना) होता रहता है। और कषाय भावोंकी अत्यन्त तीव्रताके कारण उन आते हुए कर्मोंका आत्मासे बन्धन होजाता है। वह कर्म (बंध)से इसकी ज्ञान, दर्शन तथा आत्म

शक्तिको नष्ट कर मिथ्यात्वके चक्रमें फंसाकर इसे शुभ, अशुभ गतियोंमें परिभ्रमण करा रहे हैं। यह उनके बन्धनमें इस प्रकार बद्ध हो रहा है कि इसे अपने शुद्ध स्वरूपका किंचित् भी ज्ञान नहीं हो पाता है।

किन्तु यही जीव जब अपने श्रद्धान ज्ञान और आचरणको ठीक करता है और यह पुद्गलादिक अन्य द्रव्योंसे अलग अपने शुद्धात्मा पर विश्वास करता है तथा व्रत नियम और दशलक्षण आदि धर्मोंको धारण करता है और १२ प्रकारके तपश्चरणोंको करता है तब इसके कर्मोंके आनेका संवरण (संवर) होता है। पश्चात् जब यह आत्मध्यानमें पूर्ण मग्न होजाता है तब इसके पूर्व कर्मोंकी निर्जरा अथवा उनका नाश होने लगता है और यह सर्व कर्मोंको नाशकर अनंत सुखके स्थान मोक्षको प्राप्त करता है।

उन्होंने गृहस्थधर्म तथा मुनिधर्मका वर्णन करते हुए गृहस्थोंके लिये १२ व्रत और मुनियोंके लिए १३ प्रकारके चारित्रका वर्णन किया था। जिसमें उन्होंने अहिंसाको सर्व श्रेष्ठ बतलाया था। उनका उपदेश श्रवण कर बड़े २ मिथ्यातियोंने सत्यधर्मको धारण किया था। हिंसक व्यक्तियोंने हिंसावृत्ति छोड़ अहिंसादि व्रतोंको धारण किया था और सारे संसारमें अहिंसाधर्मकी दुंदुभि बजने लगी थी। पाखण्डी और बड़े २ दिग्गज वादी लोग उनकी स्याद्वादमई निर्दोष व्याख्यानशक्तिके सम्मुख परास्त होकर उनकी शरणमें आए थे। इसप्रकार भगवान महावीरस्वामीने अनेक वर्षों पर्यंत सारे आर्यक्षेत्रमें भ्रमण कर मोक्षमार्गका उपदेश देते हुए सत्यपथ प्रदर्शित किया था।

राजगृहीके तत्कालीन राजा श्रेणिक (बिम्बसार) ने अनेक प्रश्न भगवान महावीरसे करके मनुष्योंकी शंकाओंको दूर कराया था। उस समय सारा आर्य-खण्ड जैनधर्मका उपासक बन गया था।

निर्वाण-प्राप्ति।

अनेक देशोंमें विहार करते हुए भगवान महावीरने अपनी आयुके बहत्तर वर्ष समाप्त कर दिए थे। उनकी आयुका केवल २ मासही काल शेष रह गये थे। उपदेश देते हुए वह विहार प्रांतके समीप पावापुर नामक स्थान पर पधारे। पावापुरके बनमें एक सुन्दर सरोवर था। उसके बीचमें एक मनोहर उच्च टापू था। उस स्थान पर आसीन होकर उन्होंने अपनी मन, वचन, कायकी समस्त प्रवृत्तियोंको रोककर समस्त कर्मोंको नष्टकर कार्तिक कृष्णा अमावस्याके सुन्दर प्रभातकालमें निर्वाण पदको प्राप्त किया। उनका आत्मा इस भौतिक शरीरको छोड़कर अनन्त सुखके स्थान लोकके अन्तिम भाग मोक्ष स्थानमें स्थित हो गया। वहां वह अनन्त काल तक अविनश्वर अक्षय अविचल आत्मसौख्यका उपभोग करेंगे।

भगवानको मोक्ष प्राप्ति हुई जानकर इन्द्र तथा देवताओंने पुनः उपस्थित होकर उनका बड़े उत्साहसे निर्वाण महोत्सव मनाया। वे भगवान महावीर हमारे हृदयोंमें साहस, शक्ति और अविचल धर्मभक्ति जागृत करें।　　"वत्सल"

अकारणबंधु।

(मित्र-संवाद)

लेखकः-धर्मरत्न पंडित दीपचंदजी वर्णी।

पाठकोंको विदित होगा, कि सिंघई टेकचंद्रके पड़ौसमें एक वयोवृद्ध सज्जन मनीरामजी रहते हैं, वृद्ध होनेके कारण सभी लोग इन्हें दादा कहते हैं और वास्तवमें ये हैं भी दादा, क्योंकि अशरणको शरण देना, दुखियोंकी सहायता करना, दुराचारों और दुराचारियोंके मार्गका अवरोध करना, सद्गुण और सद्गुणियोंको उत्तेजन देना मात्र यही इनका एक कर्तव्य है। घरके खाते पीते होनेसे कोई भी आदमी इनका विरोधी नहीं है, लोगोंपर इनका खासा दबाव है, दबाव क्या ए नगरनिवासियोंके सच्चे विश्वासपात्र होरहे हैं, इसीसे नगरके सभी छोटे बड़े इनके पास आकर अपनी गुप्तसे गुप्त वार्ताएँ कह जाते हैं, और ये भी उसकी बातको गोप रखकर उत्तम सम्मति देदिया करते हैं, उसके दुख मोचनका उपाय बता देते हैं। हां एक बात अवश्य है कि दुराचारियोंका या तो इनके यहां प्रवेश नहीं होता, या उनके निकट आनेसे वे फिर दुराचारी नहीं रहते।

आज दीवालीका पवित्र दिन है, इस दिन परम पूज्य श्री अंतिम तीर्थंकर श्री १००८ वर्द्धमानस्वामीने शेष अघाति कर्मोंको नाश करके अनुपम अविनाशी परमानन्दपद (मोक्ष) प्राप्त किया था, और उनके प्रधानशिष्य श्री १००८ गौतम गणधरने जीवके अनादि शत्रु मोहादि घातिया कर्मोंको नाश करके केवलज्ञान प्राप्त किया था, और जो बहुत शीघ्र अपने गुरुवर्यके निकट शिवपुरीमें आकर उन्हींके समान स्वाधीन व अनुपम अविनाशी परमानन्दके पदके भोक्ता होगए। यही कारण है कि संसारमें यह पर्व सर्वमान्य होगया। केवल जैन अजैन (हिन्दू-मात्र) ही नहीं मुसलमान भी इस पवित्र पर्वको किसी रूपमें मानते हैं, इसका कारण भी यही है कि महावीरप्रभुने जीव मात्रके हितका उपाय संसारको बताया था, तब क्यों न संसार उनका गुणगान करे ?

इसी पवित्र पर्वोत्सवको मनानेके लिये सर्कारी न्यायालय व स्कूल कालेज आदि भी बंद होनेसे कर्मचारी व विद्यार्थीगण अपने २ स्थानोंको आये हुए हैं।

उन्हीं आगन्तुकोंमें पाठकोंके चिर परिचित सिंघई टेकचन्द्रजीके ज्येष्ट पुत्र (जिनकी अवस्था इस समय लगभग २२ वर्षके है और जो एम० ए० के साथ २ एल० एल० बी० का अभ्यास इलाहाबाद यूनिवर्सिटीमें कर रहे हैं) भी आये हुए हैं, परन्तु आप शरीरसे

अस्वस्थ हैं। न ज्वर है और न कोई ऐसी बीमारी है, कि जिसका उपाय शीघ्र होसके; किन्तु आपका चेहरा फीका होगया है, भूख नहीं लगती, और यदि तोला दो तोला कुछ खाते भी हैं, तो कच्चा दस्त होजाता है, सुस्ती बनी रहती है, किसी काममें जी नहीं लगता, चित्त चिंताओंसे व्याकुल रहता है। इत्यादि अवस्था देखकर टेकचन्द्रके होश उड़ गये, उन्होंने घबराकर १ पत्र अपने अनन्य मित्र जयचन्द्रजीको लिख दिया, वे उसे पातेही वहां आगए। और भी लोग (सम्बन्धी) यह खबर पाकर आने लगे, सभी आकर अपनी२ डेढ़ चांवलकी खिचड़ी पकाने लगे। कोई बोला देहरादून लेजाओ, कोई राहुकी राह देने लगा, कोई किसी हकीम वैद्य व डोक्टर आदिकी राह देने लगा। वैद्य डोक्टर आये भी परन्तु वे रोगकी जांच न कर सके। टेकचन्द्रजी बड़े चक्करमें पड़ गये, हजार मुंह हजार बातें, किस २ की सुने और क्या करें?

उनकी घबराहट देखकर जयचन्द्रने उन्हें धैर्य दिया और कहा कि चिंताकी बात नहीं है, रोग साध्य है, अभी बहुत नहीं बढ़ा है, मैं इसका निदान शीघ्रही करूंगा, ऐसा कहकर वे मनीराम दादाकी बैठकमें गये और अवसर पाकर सब बात कहदी।

मनीराम समझ गये, और बोले चिंता जैसी बात नहीं है। सवेरेका भूला शामको भी घर आ जावे तो भूला नहीं समझना। मैं बूढ़ा होगया हूं, चला नहीं जाता, इसीसे वहां नहीं पहुंचा, यहीं घरके चैत्यालयमें दर्शन करके स्वाध्याय कर लेता हूं,। टेकचन्द्रने बीमारीकी बात कही थी तब मैंने उसे अपने पास लानेको कहा था। परन्तु सुनते हैं कि वह लड़का मेरे पास आनेमें शर्माता है, इसीसे मुझे कुछ शक होगया है।

जय०—दादा! मैं आया और उसकी खबर पूछी, सो वह बोला तो सही परन्तु साम्हने नजर नहीं मिलाता, और न बातका स्पष्ट उत्तरही देता है।

मनी० बेटा जब टिक्का (टेकचंद) ने उसकी सगाई नगीदवाले मानकचन्द्रकी नन्हीं बिटियासे की थी, तभी मैंने उसे रोका था कि थोड़ी उमरमें सगाई भी कर देना बालक बालिकाओंके लिये बहुत जोखमभरा हुआ करता है, तुम ऐसा न करो। सो टिक्का तो राजी होगया परन्तु उसकी कुछ न चली, और रानीबहू (टेक० की मां) के आग्रहसे वह कार्य होगया। हां यह बात अवश्य है कि टेकचंद्रने प्रतिज्ञा की थी कि मैं इसका लग्न २० वर्षसे पहिले नहीं करूंगा, और इसका उसने पालन भी किया है। गत वर्ष ही उसका लग्न हुआ है, जिसका कि अभी दुरागमन भी नहीं हुआ।

जय०—दादा! जब मिट्ठन बीस वर्षका होगया, तब लग्न हुआ, और फिर भी दुरागमन नहीं हुआ, तब एक जवान होनहार बालककी ऐसी दशा क्यों होगई?

मनी०—बेटा! तुम उसे अकेलेमें मेरे पास भेजना, और यदि तुमको सुनना हो, तो तुम, बैठकके पीछेवाली कोठरीमें पहिलेसे आ बैठना,

परंतु स्मरण रहे कि जो कुछ सुनो उसे सिवाय टेकचंदके और किसीसे न कहना, और टेकचंदसे भी किसीसे भी न कहनेकी प्रतिज्ञा करा लेना। क्योंकि जो कोई हमारे ऊपर विश्वास रखकर अपना हृदय हमें सौंप दे, तो हमारा भी यह कर्तव्य है कि उसकी धरोहरको हम इधर उधर न होने देवें। अच्छा बेटा अब जाओ मैं सामायिक करूंगा ११॥ बज गये हैं।

प्रेमचन्द्रने लगभग २ बजे मिट्ठनको किसीप्रकार मनीरामके यहां भेज दिया और आप भी संकेतानुसार गुप्त आ बैठे।

मिट्ठन०—दादाजी प्रणाम!

मनी०—बेटा मिट्ठन! खुश रहो, आओ बेटा मेरे पास आजावो।

मिट्ठन०—(कुछ दूर बैठकर) यहीं चरणोंके पास ठीक हूं।

मनी०—पास आओ बेटा हृदयसे लगालूं, बहुत दिनमें देखा है।

मिट्ठन०जब पास आगया तब मनीरामने उसके मस्तकपर हाथ रखकर पुनः आशीर्वाद दिया, मुख चूमा, और कुशलवृत्त पूछनेके बाद बोले—कि बेटा शरीर बहुत दुर्बल होगया है चेहरा फीका २ दिखता है, सो क्या ज्वर आता रहा?

मि०—(नीचा मस्तक करके) नहीं तो।

म०—परीक्षाकी चिंता ऐसी ही होजाती है, बेटा एम० ए० और एल० एल० बी० दो दो परीक्षाओंकी महिनत करना खेल नहीं है। मेरे लाल! तुमसे एक साथ दो न होसकें तो एक ही एक करो, कोई जल्दी थोड़े ही है। भगवानकी दयासे अपने पास सब कुछ है, कोई नौकरीके वकीलात तो करना नहीं है। विद्या सीखना है, और उसके सहारे अपनी, अपनी समाज और अपने देशकी रक्षा करना अभीष्ट है सो शरीर अच्छा रहेगा, तोही सब कुछ कर सकेंगे।

मि०—सो तो आपकी दयासे कर सक्ता हूं, और बहुतसे लड़के करते ही हैं उसकी तो कोई चिंता नहीं हैं।

मनी०—तब फिर तुम्हें फिर ही क्या है? बेटा बेफिकरीसे खूब खाओ पहिनो, दण्ड पेलो और पढ़ो और यदि इस समय जी न लगे तो कुछ दिनकी छुट्टी लेलो, और चलकर गांव पर रहो, वहां पवित्र जीवन कुछ दिन बिताना मैं भी अठाईमें वहीं रहूंगा।

मि०की आंखोंमें पानी आगया, गला भर आया, वह आगे बातें न बना सका, मनी० ने उसकी दशा देखकर मस्तक पर हाथ रखकर पुचकार कर पूछा, बेटा रोते क्यों हो? (मनीरामका भी गला भर आया) बस दोनों क्षणेक स्तब्धसे रह गये! इस प्रेमाकर्षणको देखकर मि० अपने को न छिपा सका और फूट २ कर रोने लगा। मनीने भी चार आंसू बहादिये पश्चात् अपनेको सम्हाल कर फिर बोले—बेटा घबराओ नहीं, जो बात हो मुझसे बेलिहाज होकर कह दो, शंकाका कोई कारण नहीं है। मुझसे जो बनेगा तुम्हारी भलाईके लिये उठा न रक्खूंगा।

मि०—दादा! मैं पतित होगया हूं तुमको मुंह दिखाने योग्य नहीं रहा।

म०—बेटा ! कहो२ अब तुम पतित नहीं रहे, किन्तु अब पावन होने लगे हो, भूल सभीसे प्रायः होजाती है । परन्तु जो अपनी भूल देख लेता है, मान लेता है और छोड़ना चाहता है, वह सुधर भी जाता है, सो अब तुम सुधर गये समझो, अच्छा संक्षिप्तमें अपना वृतान्त कह बताओ ।

मि०—मैं जब कालेजमें दाखिल हुआ, तबतक मुझे कोई विकार न था, मेरा आत्मा पवित्र था, आपकी व पिताजीकी संगति रहती थी, और कभी२ जय० काकाके अमृतमई उपदेश मिलते रहते थे । परन्तु कालेजमें पहुंचने पर संगतिका बदलाव हुआ, उपदेशका अभाव हुआ। वहां एक दिन घूमने जारहा था कि अचानक मेरी दृष्टि पुस्तक विक्रेताकी दुकानपर रखी हुई "ढोला मारू" पुस्तकपर पड़ी । मैंने उसे खरीदली, उसे पढ़ते ही मेरे भावोंमें फेर पड़ गया और चिंतासी रहने लगी । मेरी अवस्था ठीक ढोला मारू जैसी होगई, मित्रोंने मेरे विचारोंका समर्थन किया । मैं अपने विवाहके दिन गिनने लगा । आपकी नतबहूको देखनेकी लालसा बढ़ गई । परन्तु जब वह दिन दूर पाया तो उन कुमित्रोंकी संगतिने मुझे और ही मार्ग बता दिया । बस मेरा पैसा खाने पहिरने, व परोपकारसे बचकर कुतवाली बाजारकी मंजिलोंपर जाने लगा, कारणवश वहां न पहुंचा तो हाथसेही आत्मघात करलिया (!) दुर्भाग्यसे एक लखनवी लड़का जो देखनेमें सुन्दर व पुष्ट शरीर था मेरी कोठरीके पास फर्स्ट इयरमें दाखिल हुआ, वह प्रेम दिखाने लगा, और अंतमें उसने मुझे अपना प्रेमी बना लिया, बस मैं बे सुध होगया । मेरा जीवन सर्वस्व चला जाने लगा, मुझे हिताहितका कोई भान न रहा । अन्तमें यह व्यवस्था हुई कि अब स्वप्नमें बुरे विचार उठ जाते हैं, और सर्वस्व खो बैठता हूं । गत वर्ष लग्नके समय मुझे बड़ी चिंता होती थी, सब खुश होते और मैं एकान्तमें भाग्यको रोता कि क्यों किसी निरपराधिनीके जीवनको खो रहा हूं । परन्तु भय और लज्जासे कुछ न कह सका, आप मेरे पूज्य हैं । बस यही मेरी जीवन कहानी है, यही रोग है ।

मनी०—(मस्तक पर हाथ धरके) बेटा ! शांत होओ धैर्य रक्खो तुम्हारा कल्याण होगा, अभी रोग असाध्य नहीं हुआ है । मेरे साथ चलो मैं शीघ्रही तुम्हें आराम कर दूंगा । अच्छा अब तुम जाओ, कल २ बजे आना, तब बात करेंगे, जाओ व्यालू करो, अब मैं भी थोड़ासा दूध पी करके सामायिक करूंगा, जाओ खुश रहो, चिंता न करो, हां बेटा जाओ ।

जय०—दादा ! आपका अनुभव ठीक निकला, वास्तवमें छोटी उमरमें लग्न कर देना, तो बालक बालिकाओंका तत्काल घात करदेना है ही परन्तु उनकी बाल्यकालमें सगाई कर देना भी कम हत्या नहीं है । आज मेरा भ्रम मिट गया । क्योंकि जबसे उन बालक बालिकाओंकी सगाई होजाती है, तभीसे अपने आपको पति—पत्नी मानने लग जाते हैं, प्रत्यक्ष व परोक्ष एक दूसरेको देखनेकी इच्छा बढ़ जाती है । परस्पर समाचार पानेके इच्छुक रहने लगते हैं और कहीं चौनजरा होगया तो शरमा जाते हैं । एकां-

नमें मिलने और बातचीत करनेकी इच्छा बढ़ जाती है। वे पति-पत्नियोंके संमिलनकी बातें बड़ी रुचिसे सुनने लगते हैं। गाली-गलोज आदि अपशब्दोंका अर्थ लगाते और उनकी कल्पना मूर्तियां भी बनाने लगते हैं। कभी २ अबोध शिशुवयमें बालक-बालिकाएं अपने पति पत्नीकी कल्पना अन्य साथी बालक-बालिकाओंमें कर लेते हैं और फिर ऐसे ही खेलखेलने लगते हैं। यदि कुछ बड़े हुए लज्जा व भय हो गया तो छिपकर ऐसे ही कार्य करने लगते हैं। पढ़े लिखे हुए तब गुप्त पत्र लिखना, भेजना उत्तर मंगाना, अवसर मागना आदि कार्य होने लगते हैं और उपन्यास व किस्से कहानीकी किताबें पढ़ना, लोगोंका हास्य, मजाक, गाली बकना, खोटे गीतों व प्रेम कथाओंका सुनना, लग्नादि अवसरोंपर जाना, वहांके लीलामय श्रृंगार विनोद देखना, उनमें भाग लेना आदि बातें तो अग्निकुण्डमें आहुति डालती हैं। बस इसीसे उनके बालक व बालिकाओंमें असमयमेंही जवानीके चिन्ह फूट पड़ते हैं-वे बिचारे भोले यात्री यात्राके आरम्भमेंही लुट जाते हैं और काल आये विनाही कालके गालोंमें चले जाते हैं। दादा आज मेरे ये विचार बहुत दृढ़ होगए।

मनी०-अच्छा जाओ फिर आना, आशीर्वाद चिरायु होहु।

दूसरे दिन २ बजे मिट्ठनलाल फिर दादाके यहां आया और दादाने उसे निःसंकोच होकर एक समवयस्क मित्रके समान सब बातें समझाई और भविष्यमें पुनः ऐसी भूल न करेगा, ऐसी प्रतिज्ञा भी दिलाई। पश्चात वे उसे अपने साथ ग्रामपर लेगये, वहांके शुद्ध वातावरमें उसे कितने ही दिनोंमें मिट्ठनलालके समस्त रोग विना ही दवाके कूच कर गये। अब वह निरोग होकर पुनः कालेजमें पढ़नेको चला गया।

अब मिट्ठनलाल वास्तविक मिट्ठन होगया है, वे ही कुमित्र जिन्होंने एक दिन उसे मार्गच्युत कर दिया था, आज उसीके द्वारा सुधर रहे हैं, वह अब एक आदर्श पुरुष बन गया है। एक दिन अचानक उसे अपनी पूर्व स्थितिकी स्मृति आगई उससे वह पश्चात्तापकी आहें भरने लगा, इतनेमें और कई मित्र आगए उन्होंने उससे सब बातें पूछी और जब मनीराम दादाके द्वारा उसके सुधारकी बात सुनी तो सबके मुँहसे सहसा निकल पड़ा-"मनीराम दादा तुम दुखियोंके अकारण बन्धु" हो, तुमने एक मिट्ठनहीको नहीं किन्तु अनेक होनहार भारतीय बालकोंके जीवनमें अमूल्य परिवर्तन कर दिया है। सबने मिलकर एक सोसायटी कायमकी और उसका उद्देश रक्खा "नवयुवक सुधार।"

नोट-सज्जनो! गवर्नमेन्टने शारदाबिल पास करदिया है और उससे १४ व १८ वर्ष तकके बालक बालिकाका लग्न होना अनेक अंशोंमें बंद भी होजायगा, जिसके लिये १४ वर्षसे कमकी कोई विधवा नवीन न बन सकेगी। यह तो अच्छा हुआ, परन्तु वरकन्याकी सगाई होना तो कोई बन्द नहीं किया गया है। और सर्कारने कोई गाने व परस्पर कुशब्द बोलने, कुहास्य करने, नाटक देखने, उपन्यास

पढ़ने, मेलोंठेलोंमें जाकर परस्पर स्त्री पुरुषोंको धक्काधूमी करनेकी मनाईके लिये तो कोई कायदा नहीं बनाया है ? न बनाया ही जासक्ता है । इन बातोंके लिये तो समाजमें तथा माता पितादि गुरुजन ही चाहें तो अपने वंश परंपरा सुधारने व संतानके हितके लिये अपने २ कायदे व नियम आप ही बनाकर उनके आश्रित भावी संतानको जीवनदान देसके हैं । वे चाहें तो उनकी सगाई भी १४—१८ तो क्या १८—२५ वर्षकी उमरमें करके तत्काल ही व्याह कर सकते हैं । वे स्वयं सदाचारी बनकर अपनी सन्तानको सदाचारी बना सकते हैं । वे अपने उपदेशों व आचरणोंसे बालकोंके संस्कार बाल्यकालसे ही ऐसे बना सकते हैं कि जिससे उनपर दूसरा रंग ही न चढ़े और वे भीष्म पितामह या भीम जैसे ब्रह्मचारी बन सकें । युधिष्ठर व राम जैसे सत्यवादी न्यायी बने, अर्जुन जैसे धनुर्धर योद्धा बने, स्वामी समंतभद्र जैसे वादी विद्वान बने, धन्यकुमार जैसे पुण्यशाली श्रीमान बने, अभयकुमार जैसे न्यायी दयालु बने, कन्याएं भी पुनः सीता और द्रोपदीका समय उपस्थित कर देवें ।

आज आप अपनी सन्तानपर अनाज्ञाकारी, कायर, निर्बल, शौकीन, भ्रष्टाचारी, धर्मभ्रष्ट, आदि अनेकों दोषारोपण करते हो । परन्तु क्या कभी भी आपने अपने भी अकर्तव्योंपर ध्यान दिया है कि तुमने उनको पैदा करके क्या पितृ व मातृ धर्मपालन किया है ? क्या अच्छा खिला देने, अच्छे वस्त्राभूषण पहिरा देने, बालवयमें सगाई विवाह कर देने और मनमाना स्वेच्छाचारी बना देने मात्रमें ही तुम्हारा धर्म है ?

तुम कितने संयमी हो ? क्या तुम बालकोंके निकट सोते हुए या खेलते हुए उनके सन्मुख स्व स्त्री संगमसे बचे हुए हो ? क्या तुम उनके सन्मुख कभी किसी स्त्री पुरुषसे अनुचित हंसी मजाक नहीं करते ? क्या तुम स्वयं अपनी पत्नी व बालकों सहित या अकेले मित्रों सहित नाटक प्रहसन देखने नहीं जाते ? क्या तुम कभी उनके साम्हने काम कथाएं नहीं करते, न अपशब्द बोलते हो ? क्या आप कभी उनको ब्रह्मचर्यके गुणों और आदर्श चरित्रोंकी कथाएं भी सुनाते हो ? क्या तुम अपने शीलवान होनेका प्रमाण देसक्ते हो ? क्या तुम बाल्यविवाहके सच्चे विरोधी हो, और स्वयं भी प्रतिज्ञाबद्ध हो कि ३५ या ४० वर्षकी वयके बाद यदि मेरी पत्नीका वियोग निःसंतान होनेपर भी होजावगा तो मैं अपना लग्न न करूंगा ? यदि हो तो ऐसे अनर्थकारी विवाहोंमें कन्याविक्रयके विवाहोंमें क्यों शामिल होते हो ? और अपने छोटे छोटे होनहार कुमार ब्रह्मचारी विद्यार्थी बालक बालिकाओंको विवाहोंमें क्यों लिवा जाते हो ? सज्जनो ! जरा सोचो और समझो ! तुम्हारे ही पापोंका फल संतान भोग रही है, बहुत पुत्र पुत्रियोंके माता पिता बननेकी अपेक्षा सुयोग्य थोड़े ही संतान पैदा करके उनकी रक्षा करो, जिससे पुनः धर्म देश और समाजका उत्थान हो तथा भारतसे आरत हट कर वह सुखी बने ।

श्री० आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेदभूषण-
पं० सत्यंधरजी जैन काव्यतीर्थ, धन्वंतरी आयुर्वेदिक फार्मसी-छपारा।

(वैद्यकशास्त्रके अद्वितीय नवीन विद्वान)।

"जैनविजय" प्रेस-सूरत।

जैन धर्म और चारित्र।

(लेखक—श्रीमान् ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी।)

वास्तवमें हरएक मानवकी उन्नति व अवनति चारित्रसे होती है। चारित्र हरएकको करना ही पड़ता है चाहे वह कुचारित्र हो चाहे वह सुचारित्र हो। मन वचन कायका वर्तन ही चारित्र है। जो मिथ्या श्रद्धानी, बहिरात्मा व अज्ञानी है उसका सर्वकालीन सर्व चारित्र कुचारित्र है चाहे वह मुनिव्रत पाले, श्रावकव्रत पाले, बहुत तप करे व कषायोंको जीते। परन्तु सम्यक्दृष्टी, अंतरात्मा व ज्ञानीका सर्वकालीन चारित्र सुचारित्र है चाहे वह भोजन पान करे, विषयभोग करे व तप साधन करे या ग्रही व मुनिधर्म पाले।

श्री अमृतचंद्र आचार्यने समयसार कलशमें कहा है:—

ज्ञानिनो ज्ञाननिर्वृत्ताः सर्वे भावा भवन्ति हि।
सर्वेप्यज्ञाननिर्वृत्ताः भवन्त्यज्ञानिनस्तु ते ॥ २२-३ ॥

भावार्थ—ज्ञानीके सर्व भाव ज्ञानसे बने हुए होते हैं जब कि अज्ञानीके सर्व भाव अज्ञानसे बने हुए होते हैं। सम्यग्ज्ञानी स्वाधीनताका उपासक है जब कि मिथ्याज्ञानी पराधीनताका। सम्यग्ज्ञानी यथेष्ट मार्गके पूर्व या सामने जारहा है तब मिथ्याज्ञानी यथेष्ट मार्गसे विरुद्ध पश्चिमको जारहा है। सम्यग्ज्ञानी वस्तुस्वरूपको यथार्थ जानता है मिथ्याज्ञानी अयथार्थ जानता है। रज्जुमें सर्पका भ्रम करनेवाला मिथ्या ज्ञानी है। रज्जुमें रज्जुका ज्ञान रखनेवाला सम्यग्ज्ञानी है।

यह संसारी जीव अशुद्ध है; क्योंकि शरीर सहित है सिद्ध परमात्मा शुद्ध है; क्योंकि शरीर रहित है। वास्तवमें हरएक आत्माका स्वरूप एक समान है कोई अंतर नहीं है। हरएक आत्मा अमूर्तीक है व गुण पर्यायवान है अर्थात् ज्ञान दर्शन, सुख वीर्य, सम्यक्त व चारित्र गुणोंका धारी है तथा एकरूप कूटस्थ न रहकर परिणमन करनेवाला अर्थात् कार्य करनेवाला है। इसीसे यह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है कि आत्माके ज्ञानरूप भावोंमें बदला हुआ करता है। यदि बदलनेकी शक्ति न होती तो ऐसा नहीं होसक्ता था।

हरएक आत्मामें ज्ञान, शांति, आनंद ये तीन गुण ऐसे हैं जिनको हमें समझ लेना चाहिये—

(१) ज्ञान उसे कहते हैं जो सर्व जाननेयोग्य पदार्थोंको जान सके। ज्ञानसे बाहर कोई बात अज्ञानरूप नहीं रह सक्ती है। शुद्ध आत्मा इसीसे सर्व पदार्थोंको एक काल जानते रहते हैं। संसारी जीव कम जानते हैं; क्योंकि ज्ञानावरण नाम कर्मका मैल संसारी जीवोंमें लग रहा है। तथापि शक्ति सर्वज्ञपनेकी हरएक संसारी आत्मामें भी है। जितना जितना अज्ञानका परदा हटता जाता है उतना उतना ज्ञानका स्वरूप झलकता

जाता है। यह तो हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि विद्यार्थियोंका ज्ञान बढ़ता है। यह बढ़ना कैसे हुआ? क्या शिक्षकगण अपना ज्ञान काटकर विद्यार्थियोंको देते हैं? ऐसा होता तो शिक्षकोंका ज्ञान घटता जाता। इससे मालूम होता है कि न तो शिक्षक अपना ज्ञान देते हैं न विद्यार्थी शिक्षकोंसे ज्ञान लेते हैं। होता यही है कि शिक्षकोंके समझानेसे व पुस्तकोंके पढ़नेसे आत्मबल जब पुरुषार्थ करता है तब अज्ञानका परदा हटता है और ज्ञान स्वयं विकसित हो जाता है। इससे सिद्ध है कि हरएक आत्मामें पूर्ण ज्ञान है। इसी तरह हरएक संसारी या सिद्ध आत्माका स्वभाव शांतिमय है। क्रोध, मान, माया, लोभरूप होना स्वभाव नहीं है। ये अशुद्ध भाव संसारी जीवोंमें होते हैं; क्योंकि उनके साथ चारित्र मोह नाम कर्मका संयोग है। पानीमें मिट्टी मिले रहनेसे जैसे पानी गंदला दिखता है वैसे क्रोधादिका मैल आत्माके भावोंमें मिले रहनेसे आत्मा क्रोधादिरूप दिखता है। इसलिये आत्माका स्वभाव क्रोधादि नहीं हो सक्ता, क्योंकि इनसे ज्ञानमें विकार होता है—वे ज्ञानको विगाड़ते हैं। एक बड़ा ज्ञानी मानव भी क्रोधके वशीभूत हो उचित अनुचित बोलने व करने लगता है। लोभके वशीभूत हो नीतिको उल्लंघन कर लेनदेन कर लेता है। मानके आधीन हो निर्बलोंको सताता है। मायाचार करके अपने सरल स्वभावको व सरल शुद्ध ज्ञानको मैला कर डालता है। इसके विरुद्ध शांतभाव ज्ञानको बढ़ाता है। सूक्ष्म तत्वविचार व गम्भीर पुस्तकोंसे ज्ञानका लाभ तब ही होता है जब मन शांत होता है। इससे सिद्ध है कि हरएक संसारी या सिद्ध आत्माका स्वभाव शांतिरूप है।

तीसरे आनन्द भी हरएक आत्माका स्वभाव है। हम इस सच्चे आनन्दका स्वाद नहीं पारहे हैं, क्योंकि हमारे आनन्दके ऊपर अज्ञान व मोहका परदा पड़ रहा है। तौभी जब कभी हम किसी स्वार्थको न रखकर दूसरोंके हितार्थ अपना कुछ मोह व लोभ त्यागते हैं, दूसरोंको दान देते हैं, व उनका भला करते हैं तब हमको भीतरसे एक हर्ष मालूम होता है यही सच्चे सुखका झलकाव है। यह सुख इंद्रियोंके विषयभोगसे होनेवाले काल्पनिक व क्षणिक व अतृप्तिकारी सुखसे विलक्षण है। यह स्वाधीन है जब कि इंद्रिय सुख पराधीन है। जैसे अग्नि ईंधनोंसे कभी तृप्त नहीं होती है वैसे तृष्णाकी दाह इंद्रियसुख भोगसे कभी तृप्त नहीं होती है उल्टी बढ़ती जाती है। इस तरह हरएक आत्मा स्वभावसे समान हैं। रागद्वेष, मोहभाव कर्मोंके द्वारा उत्पन्न होनेवाले विकार हैं। मेरे शुद्ध आत्मस्वभावसे भिन्न यह सब कर्मका मैल है—शरीर है व शरीरके साथी अन्य चेतन व अचेतन पदार्थ हैं, उसको आत्माका और रागादि व शरीरादिका भेद नहीं मालूम है। जो अपने आत्माके शुद्ध स्वभावको नहीं पहचानता है, जो इंद्रियोंकी चाहकी दाहमें जलता रहता है, जो इस जीवनको ही सब कुछ मानता है, जो स्त्री पुत्र धनादिमें लवलीन रहता है, जिसे आत्मतत्वकी बात नहीं सुहाती है वही अज्ञानी बहिरात्मा मिथ्यादृष्टी है। परन्तु जो आत्माको

अनात्मासे भिन्न पहचानता है, जिसको आत्मिक सुखकी रुचि होती है, जो पराधीन जीवनसे स्वाधीन जीवनको श्रेष्ठ समझता है, जो आत्मिक सुखशांतिका प्रेमी है, वही अंतरात्मा सम्यग्दृष्टी ज्ञानी है। ज्ञानीका लक्ष्य आत्माकी ओर अज्ञानीका लक्ष्य शरीरकी ओर रहता है। ज्ञानी स्वोन्मुखी है अज्ञानी परोन्मुखी है। ज्ञानी भोजनपान कुटुम्ब पालन एक आवश्यक कर्तव्य जान करता है तन्मय नहीं होता है, अज्ञानी उन्हींमें तन्मय होजाता है। अज्ञानी पुण्यके लोभसे धर्म साधन करता है ज्ञानी परिणामोंकी शुद्धि व आत्मचिंतनके लिये धर्मका साधन करता है। ज्ञानी आत्मरसिक है। अज्ञानी विषयभोग रसिक है।

इसलिये हरएक जैनी कहलानेवालेको सच्चा जैनी बनना चाहिये। अर्थात उसको श्री जिनेन्द्र कथित जीव अजीव तत्वको पहचानना चाहिये, उसे शुद्ध परमात्मा वीतराग भगवानको ही पूजना चाहिये जो सर्व दोषोंसे रहित हैं। उसे परिग्रह आरम्भरहित साधुको ही नमन करना चाहिये जो सुखशांतिके साधक हैं। उसे इस पवित्र जिन धर्मपर ही श्रद्धा लानी चाहिये जो आत्महितका बीज है व वस्तु स्वरूपको यथार्थ बतानेवाला है। एक जैनीको ज्ञानकी वृद्धिके लिये व आत्माका मनन करनेके लिये नीचे लिखे छः कर्तव्योंको यथासम्भव पालना चाहिये।

(१) जहां सुभीता हो वहां नित्य श्री जिनेन्द्रका उनकी ध्यानमय मूर्तिके द्वारा पूजन व दर्शन करना चाहिये। यदि कहीं ऐसे स्थान पर हो व ऐसे कार्यसे आजीविका हो कि दर्शन मिलना कठिन हो तो परोक्ष ही ध्यान करके नमस्कार कर लेना व स्तुति पढ़ लेना चाहिये।

(२) नित्य श्री जिनवाणीका पठन किसी भी समय कुछ देर कर लेना चाहिये।

(३) नित्य प्रातः व सन्ध्या कुछ देर एकांतमें बैठकर अपने आत्माका मनन करना चाहिये। वैराग्यमई भावको भाना चाहिये अर्थात् सामायिक करना चाहिये।

(४) नित्य प्रातःकाल २४ घण्टेके लिये नियम संयमके अभ्यासके हेतु धारना चाहिये।

नं० ३ व ४ के कार्यके सम्पादनके लिये दि० जैन पुस्तकालय—सूरतसे सामायिकपाठ व नियमपोथी –)॥ व –)में मंगा लेना चाहिये।

(५) सत्संगति रखनेके लिये कुछ देर ज्ञानी धर्मात्माओंकी व शास्त्र सभाकी संगति करनी चाहिये।

(६) नित्य कुछ दान देकर फिर भोजन करना चाहिये। जो धन कमाया जावे इसमेंसे कमसेकम १०वां भाग निकाल कर दान व धर्ममें लगाना चाहिये।

हरएक जैनीको इन छः बातोंको करते हुए श्री समन्तभद्राचार्यने जो ८ मूलगुण बताए हैं उनपर चलना चाहिये। इन ८ मूलगुणोंसे हरएक मानवका आचरण उत्तम होजाता है वह जगतको सतानेवाला नहीं रहता है—(१) मांसकी डली खाना नहीं, (२) मदिरा पीना नहीं, (३) मधु खाना नहीं, (४) जान बूझकर वृथा पशु पक्षी आदिको मारना नहीं-दयाभाव रखना, (५) असत्य बोलना नहीं-झूठको महा पाप समझना, (६) चोरी करना नहीं, (७) अपनी

विवाहित स्त्रीमें संतोष रखना, (८) आजन्म किसी जायदादका प्रमाण बांध लेना, उतनी पूरी होनेपर संतोष करना-नया आरम्भ नहीं करना।

जो कोई मानव ऊपर लिखित चारित्र पाल सकेगा वही जैनी है चाहे जैनकुलमें पैदा हो या अन्यमें। आजकल जैन लोगोंने इन ८ मूल-गुणोंको बिलकुल भुला दिया है। हां मांस, शराबसे बच रहे हैं व कुछ हिंसासे भी परन्तु झूठ, चोरी, कुशीलके त्यागका ध्यान नहीं है न तृष्णा ही परिमित है। इन बातोंके सिवाय और चारित्रको पीछे पालनेके लिये छोड़कर हर-एकको इनसे ही अपनी उच्चता मानना चाहिये।

एक ज्ञानी सम्यग्दृष्टी कुटुम्बमें रहता हुआ इन ८ बातोंको व ६ नित्य कर्तव्योंको पालता हुआ आदर्श गृहस्थ बनकर चारित्रवान होसक्ता है। ऐसा ज्ञानी स्त्री पुत्रादिकी रक्षा करता है इसलिये नहीं कि ये स्त्री पुत्रादि हैं परन्तु इसलिये कि ये जीव हैं इनका हमारा सम्बंध हुआ है इससे इनका हित करना उचित है। यदि कोई मर जाता है ज्ञानीको शोक नहीं होता, यदि कोई जन्मता है तो ज्ञानीको हर्ष नहीं होता। ज्ञानी जलमें कमलवत् घरमें रहता है। भीतरसे आत्मरसका स्वाद लेता है।

इंद्रियकी चाहकी पीड़ा न सह सकनेके कारण न्यायपूर्वक अल्पभोग भोगता है तथापि भोग भोगना जीवनका उद्देश्य नहीं समझता है। आत्मसुख भोगना व अपने जीवनसे अन्य जीवोंको परोपकार करना ही अपना ध्येय मानता है। ऐसा ज्ञानी गृहस्थ ऊपर लिखित स्थूल चारित्र पालता हुआ हरप्रकारकी लौकिक उन्नति कर सक्ता है, वह शास्त्रविद्या सीखकर देशरक्षा कर सक्ता है। दुष्टोंका दमन कर सक्ता है। व्यापारार्थ व अन्य उचित कार्यवश देश परदेश यात्रा कर सक्ता है। उसको कहीं भी कोई कठिनता नहीं पड़ सक्ती है। उसके मात्र मांस व मदिराके लेनेका त्याग है। इसका हरप्रकारसे बचाव रखना चाहिये।

एक जैन गृहस्थ आठ मूलगुण स्थूलपने पालता हुआ लोकमें यशस्वी, न्यायवान, सदाचारी, सत्यवादी, कार्यकुशल रह सक्ता है व सम्यक्त भावके प्रभावसे आत्मिक उन्नति भी करता रहता है। ज्ञानीके लिये यह जगत क्रीड़ाभूमि है या एक नाटक गृह है। अज्ञानीके लिये महान दुःख व आकुलताका घर है।

इस जैनधर्मको पशु तक धारण कर सके हैं मानवोंकी तो बात ही क्या है? म्लेच्छदेशके लोग आर्यखंडमें आकर मुनिपद भी धार सके हैं। वर्णव्यवस्था मात्र लौकिक संगठन है। जैनी होनेपर चार भाइयोंको अधिकार है कि वे उसकी योग्यताके अनुसार उसका वर्ण चार-मेंसे कोई स्थापित कर दें और फिर उसके साथ एक वर्णवाला समान बर्ताव करे। जहां वर्ण-व्यवस्था नहीं है वहां हरएकको अधिकार है कि वह जैसा उचित समझे वैसा परस्पर व्यव-हार करे।

इस जैनधर्मको जगतव्यापी बनाना व हर-एकको पालने देना यही तीर्थंकरोंकी आज्ञा है। यही प्रभावना अंग है।

एक बालविधवाकी आत्मकथा।

(लेखक-श्री० पं० क्षेमंकर जैन, न्यायतीर्थ-खंडवा)

आकाशमण्डल मेघाच्छन्न था। अंधकारने अपनी विस्तृत चादरसे संसारको इसप्रकार ढक रक्खा था जैसे पापीके हृदयको दुर्वासनाएं। उसी समय एक नवोढ़ा बालविधवा अपने घरसे निकलकर यमुनाकी गोदमें अपने दैव दुर्विपाकसे समुत्पन्न सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारोंसे वृद्धिंगत दुःख दावाग्निको सदाके लिये शांत करनेको इष्ट पथावलम्बन कर धीरे२ जाने लगी। कुछ समयमें शांतिप्रदायिनी यमुनाके तटपर पहुंच इष्टदेवका स्मरण करके चिंतित भावसे खड़ी होकर कहने लगी, कि देवि! यद्यपि हमारा धर्म हमको आत्मघात करनेके लिये मना करता है, लेकिन अब जीवनके दुःख असह्य होगये हैं, धैर्य धारण करनेकी शक्ति लुप्त होगई है, इसीलिये मुझे अपने अंकमें स्वीकार कर शांति दो। सम्प्रति मेरी जैसी अनेक दुखिनी अबला प्रचलित रूढ़ियों एवं पुरुषोंके अत्याचारोंको सहन करती हुई सुखके लिये आपमें ही शांत हुई हैं। जिसको कोई शरण नहीं उसको तुम्हीं शरण हो।

यमुनाके तटपर एक ब्रह्मचर्याश्रम था। जिसमें भारतीय नवशिशुओंको शास्त्रानुसार ब्रह्मचर्य शिक्षाके साथ २ देश, जाति, धर्मके उत्थान करनेकी भी शिक्षा दी जाती थी। जब कि कार्तिक कृष्णा ३० का दिन समस्त भारतीयोंका परम प्रिय दीपमालिकाका पर्व आनेवाला था उसके आठ दिन पहिले ही पर्वकी उत्पत्ति आदिके विषयमें उपदेश होता रहता था।

उपदेश श्रवण कर एक साहसी नवयुवक श्रोताने अपने मनमें प्रतिज्ञा करली कि "मैं समस्त प्राणियोंकी रक्षा करता हुआ विधवाओंकी रक्षा तन, मन, धनसे करूंगा। इसी आशयसे वह यमुनाके किनारे शांतिस्थलमें आकर बैठा और विचार रहा था कि सामाजिक खोटे बन्धनों एवं रूढ़ियोंके जन्मदाता तथा पालक जनोंसे संतप्त अनेक विधवा यहां ही शरण लेती हैं। इतनेमें ही पानीमें बड़े जोरसे धमाका हुआ। आवाजके साथ ही वह भी उसी स्थलपर कूद पड़ा और कुछ कालोपरांत उस बालाको बाहर निकाल कर थोड़ी दूर स्थित गाड़ीपर बिठाकर अपने घरकी ओर रवाना हुआ। गाड़ी जाकर एक भव्य महलके नीचे ठहर गई। जिसके चारों ओर मनोहर उपवन था।

वह एक विशाल और दिव्य महल है उसके समीपके उपवनमें जुही, चंपा, चमेली, गुलाब, मोगरा आदि विविध प्रकारके फूल फूले थे। जिसमेंसे मंद समीर उनकी सुगंधको लेता हुआ महलके निवासियोंको आनन्द और सुगंध अर्पण करता था। महलके एक सुसज्जित कमरेमें जाकर सुन्दरीको सान्त्वना देते हुए युवकने

प्रश्न किया कि—बहिन ! किस कठोर दुःखसे आपको आत्मघात करनेकी आवश्यकता हुई ? सुन्दरीने अपनी कथा इस प्रकारसे प्रारम्भ की। मैं रामपुर निवासी कपूरचंदकी इकलौती पुत्री हूं। मेरा नाम रामभरोसी है। मेरी माता ९ सालकी अवस्थामें मुझे छोड़कर चल बसी। मेरे पितापर मेरे लालनपालनका भार आपड़ा। मेरे पिताकी परिस्थिति दीन थी और जो कुछ था वह भी मातारामकी तेरई (नुक्ते)में लगचुका था।

मेरी अवस्था १४ वर्षकी होनेपर पिताको मेरी शादीकी चिन्ता लगी। उसी समय अनेक वृद्धोंके दलाल रुपयोंकी थैलियां लेकर कौओंकी तरह मेरे पितापर गिरने लगे। लेकिन मेरे पिताकी मेरेपर असीम प्रीति होनेके कारण मेरा विवाह किसी वृद्धसे रुपया लेकर न किया गया। बादमें ककरापुरके रईस लाला जमनाप्रसादजीके आग्रहसे उनके मध्यम पुत्र........के साथ मेरी सगाई होगई। इसमें क्या रहस्य एवं भेद था वह मैं और मेरे पिता बिलकुल न समझ सके। लेकिन मेरे पिताको इस बातसे शांति तो जरूर हुई कि एक अच्छे घरके लड़केसे बेटीका संबंध होनेसे वह जिन्दगी सुखसे बितायगी। और मुझे भी आश्रय मिलेगा।

इसके बादमें मेरा पाणिग्रहण हुआ। विवाहकी सामग्री मेरी ससुरालसे आजानेके कारण हमारे पिताको कोई कष्ट न उठाना पड़ा। विवाहके अनन्तर मैं ससुराल गई। मेरे हृदयमें हर्ष द्विगुणित होरहा था। सौभाग्य रात्रिको हम आरामगृहमें पहुंचाये गये। मेरे बारम्बार वार्तालाप करनेपर भी पतिदेवसे कुछ भी प्रत्युत्तर नहीं मिला। अन्तमें निराश मनसे सो गई। ४–८ रोज ऐसा ही हुआ। कुछ कालके बाद अपनी सहेलियोंसे मुझे पतिकी मधुप्रमेहकी बीमारीका हाल मालूम हुआ। क्योंकि वह बचपनसे ही कुमार्गगामी थे। यह बात मुझे मालूम होनेपर मेरी कुल आशा और उल्लास, निराशा और दिलगीरीमें परिणत हो गया। अन्तमें मेरा सौभाग्य भी दो वर्षके भीतर ही दुर्भाग्य रूपमें बादलोंकी छायाके समान उड़ गया। इसके पहिले ही मेरे पिताका स्वर्गवास प्लेगके कारण होचुका था। फिर क्या था मेरी सासू आदिने कहना शुरू कर दिया, कि 'हत्यारी चांडालनी अपने घरको पहिले ही खाकर आई थी, जबसे तू आई तबसे ही मेरा लड़का बीमार होगया था, उसके बदले तू न मर गई रांड' इत्यादि अनेक आक्षेप मेरे ऊपर होने लगे। गोबर आदि नीच कार्योंका भार भी मुझे सौंपा गया। कार्यको ठीक करने पर भी अब मुझे पहरनेको पर्याप्त कपडे एवं भोजनको पूर्ण अन्न भी दुर्लभ जान पड़ने लगा। फिर भी मैं अपने दैवको दोष देती हुई सती अंजना, मनोरमा, सीता आदिको स्मरण करती हुई सब सहन करती रही।

कुछ कालके बाद मेरे देवरकी सगाई होकर उसी वर्ष विवाहका निश्चय हुआ। विवाहके दिन निकट होनेसे अनेक प्रकारके कांचों एवं रेशमी वस्त्रोंसे सुसज्जित मंडप बनाया गया। जिसमें प्रवेश करनेसे एक भी अनेकरूपमें मालूम होते थे। उसमें करीब १ हजार रुपया व्यय किया गया। जबकि वधूको चढ़ानेके लिये रेशमी वस्त्र और सुवर्णके जेवर समस्त नगरकी स्त्रियोंके

देखनेके लिये मंडपमें लाये गये उसी समय मैंने भी कपडोंको पसार कर देखना चाहा था कि मेरी सासूने 'अरीरांड दुष्ट चांडालनी पतिभक्षणी' आदि अनेक शब्दबाणोंसे मेरे हृदयको चीरते हुए कहा कि तूने शुभ मांगलिक द्रव्यको स्पर्श कर ही लिया! समस्त कार्य समाप्त होनेपर सासूजीने अपने हाथों पैरों और झाडुओंसे मेरा और भी सत्कार किया। फिर क्या था—मेरा हृदय भर चुका था। मैं यमुनाके अंकमें सोकर अपनी जीवन नैय्याको पार करनेका निश्चय करके समय पाकर निकल पड़ी। पश्चात् जो कुछ हुआ वह आपसे छिपा नहीं है।

रमेशचंद बाबू सच्चे सुधारक, देश और जातिके धर्मप्रेमी एक अच्छे रईस व्यक्ति थे। उनकी गुणयुक्ता धर्मपत्नीने अपने स्वर्गवासके समय १ लाख रुपया इसलिये निकाला था कि उससे एक जैन विधवाश्रम खोला जाय। जिसमें अनाथ विधवायें अपने शीलकी रक्षा करती हुई विद्याध्ययन करके स्वपरोपकारमें लीन हों। बस, रमेशचंद्रबाबूने रामभरोसीको भी उसी जैन विधवाश्रममें प्रविष्ट करके सब प्रकारसे उसका प्रबंध कर दिया। वह भी निश्चिंत होकर विद्याध्ययन करने लगी और क्षयोपशमके ठीक होनेसे आश्रमके कोर्सको ९ वर्षमें समाप्त कर लिया। पश्चात् आश्रमाश्रित महिला संरक्षणी सभाका मंत्रित्वपद बाबु रमेशकी सम्मतिसे रामभरोसीको सौंपा गया। नन्दगांवमें गजरथप्रतिष्ठा होनेवाली थी वहांपर महिला संरक्षणी सभाका उत्सव मनाया गया जिसमें करीब ५००० स्त्रियां भिन्न२ नगरोंसे एकत्रित हुई। सभाकी रिपोर्ट एवं अन्य ३–४ विदुषियोंके भाषण समाजसुधार, मनुष्य कर्तव्य, आदिपर होजानेके बाद रामभरोसीदेवीने इस प्रकार अपना भाषण प्रारम्भ किया—

पवित्र पूज्य भगिनियो! आपसे इस अज्ञ बालिकाकी एक छोटीसी अर्जी है जिसको स्वीकृत करनेकी कृपा करेंगी। सुज्ञ बहिनो! "स्त्री संसारका आभूषण है।" यह प्रत्येक जानता है "स्त्री घरकी लक्ष्मी है" यह सब कोई समझता है "स्त्री संसारकी उत्पत्तिकर्त्री है।" यह हरएक मानता है, फिर भी ऐसी उच्च एवं पूज्य स्त्री जातिको पुरुष जातिने नीचसे नीच एवं दीन समझ लिया है। इससे मैं पुरुषोंपर आक्षेप नहीं करती कि वह निर्दय और क्रूर हैं मगर मेरे भाइयोंने ऐसा समझ रक्खा है कि स्त्री पुरुषकी सिर्फ दासी ही है, इसी सबबसे उसको न विद्या पढ़ाई जाती है न वह गृहकार्यमें सुज्ञ बनाई जाती है। फिर हम आर्य महिलाएं किसप्रकार उन्नति पासक्ती हैं? इस जमानेको समझकर प्रत्येक महिलाको शिक्षित गृहकार्य निपुण एवं अपने पैरोंपर खड़े होना चाहिये तभी हम गृहस्थ जीवनको स्वर्गीय जीवन बना सकती हैं, देशके उपकारार्थ मर सकती हैं। इस विषयको समाप्त कर अपनी आत्मकथा सुनाना भी आरम्भ किया। फिर उत्सव समाप्तिके बाद उसकी सासू जो कि वहां आई हुई थी रामभरोसीके चरणोंको अश्रुजलसे प्रक्षालन करती हुई चरणोंपर गिर पड़ी और क्षमा मांगने लगी देवीने तुरंत उठकर समझाया कि शोक मत करो "यह मेरा ही दैव दुर्विपाक था"।

पद्मा-पद्यावली ।

(र०—जैन सा० शास्त्री प्रेमचन्द्रो जैनः काव्यतीर्थः ।)

पद्मस्थितेऽपि चपले स्थितिवर्जितासि ।
पद्मे विचारयसि साधुगुणाश्च कापि ॥
लोके तथापि महिमा तव वर्ण्यतेऽत्र ।
चित्रीयते मनसि चित्रमियं हि वार्त्ता ॥१॥

सद्दानितापि बहुलं दृढबन्धनेन ।
लोके प्रयासि शतशो, हि विनाशभावम् ॥
प्राप्तासि मोहनकलां सहवासदोषात् ।
क्षीराब्धिमध्यगतक्रूरमहाविषस्य ॥ २ ॥

नैष्ठुर्यकं गतवती दृढकौस्तुभान्नु ।
रागज्ञतासि सकलं किमु पारिजातात् ॥
प्राप्तासि चन्द्रशकलात् किमु वक्ररूपम् ।
संसर्गजाः निरवशेषगुणा हि दोषाः ॥३॥

धर्माद्विमोचयसि पापमयं करोषि ।
नानाकुशीलरचनाश्च तनोसि पापे !
श्राद्धादिविग्रहवती त्वमविग्रहापि ।
चेतःसु प्रापयसि नैकविकारभावान् ॥४॥

न रूपं वैदग्ध्यं न चिरपरिचयं नावगणनाम् ।
सुशीलं कौलीनं गणयसि न कार्यं कुशलतां ॥
न धर्मं नाचारं न निजकुलकीर्तिं विधुजतां ।
अहो नाना नाट्यं प्रकटयसि हा क्षीरजसुते ॥५॥

अरे! चित्रं लोके भ्रमसि निखिलेऽद्यापि रभसा।
सुधासूतेस्समयभ्रमितशिखर्युत्पन्नगुणतः ॥
सरोजस्थिता नु मृदुलचरणे कण्टकवलात् ।
पदं धत्से स्थैर्यात् क्वचिदपि न पीडानुभवनात्॥

सुजनमसुभमूलं निन्दितं हा वितर्क्य ।
सजसि कुटिलमूले ! शूरवीरं कुशीले ॥
विटनटजकुशीलान् वर्द्धयित्वातिकालम् ।
रहसि विविधशास्त्रज्ञानपारङ्गतानाम् ॥ ७ ॥

कुमुदपतिसभायां लभ्यमानापि लोके ।
कलुषयति सुचित्तं चित्रविद्युत्प्रभेयम् ॥
प्रगटयति हि दीप्तीमात्मकीयां यथैव ।
वमति जनकदम्बाः ध्वान्तकीर्तिं तथैव ॥८॥

सततविततरागा पद्मनाभेऽपि वेश्या ।
त्वदभिजनितरागान्येन लोकान्तरेण ॥
जड़जनपरिणीया प्रेयसी चक्रिणोऽपि ।
विकटकटुकपाका भायते सोदरापि ॥९॥

तथा सत्यपि लोके लभसि निखिले नावगणनाम्
विचित्रं नास्त्यत्र यदसि भुवने सर्वफलदा ।
किमाश्चर्यं पूज्या भवति वडवा कार्यवशतः॥
तथैवासि भोग्या समरसुधापानरसिकैः॥१०॥

दानचिंतामणि-अत्तिमब्बे।
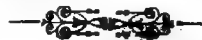
(लेखक-प्रो० पं० के० भुजबली शास्त्री-आरा)।

वेंगी मण्डलके कम्मेनाडंतर्गत पुंगनूर नामक ग्रामके रहनेवाले कौंडिन्यगोत्रोत्पन्न नागमय्य नामक जैन ब्राह्मणके मल्लप्प पुन्नमय्य नामक दो पुत्र थे।

वे ही पीछे चालुक्य-नरेश तैलपदेवके सेनापति हुए। इनमेंसे पुन्नमय्य तो अपने वैरी गोविन्दरके साथ लड़कर कावेरी नदीके तीरमें मारा गया। मल्लप्प तैलपदेवके मरणोपरान्त ई० स० ९९७से १००८ में आहमल्लके राजा होनेपर मुख्याधिकारी हुआ। राजनीतिज्ञ, अप्रतिमल्ल मल्लप्पकी धर्मपत्नीका नाम अप्पकब्बे था। उन्हें गुंडमय्य, एलमय्य, पोलमय्य, आहवमल्ल, बल्ल नामक पांच पुत्ररत्न तथा अत्तिमब्बे गुंडमब्बे नामक दो पुत्रीरत्न प्राप्त हुये। उक्त दोनों पुत्रियोंका विवाह चालुक्य चक्रवर्तीके महामन्त्री धल्लपके पुत्र नागदेवके साथ हुआ। नागदेव बाल्यकालसेही बड़ा पराक्रमी और साहसी था। अतः चालुक्य नरेश आहवमल्लने प्रसन्न होकर इन्हें अपना मुख्य सेनापति बनाया। यह नागदेव अनेक युद्धोंमें असीम पराक्रम दिखलाकर विजयी हुआ और अन्तमें रणरंगमें मारा गया। विदित होता है कि इन्हें "ओरटरमल्ल" की उपाधि भी रही। इनकी छोटी स्त्री अत्तिमब्बेकी सगी बहन गुंडमब्बे तो पतिके साथ सती होगई (!) पर अत्तिमब्बे अपने पुत्र अण्णिगदेवकी रक्षा करती हुई असिधाराव्रत धारण कर व्रतनियमोंमें अपना समय व्यतीत करने लगी। यही स्त्री-रत्न हमारी चरित्र नायिका हैं।

जैनधर्ममें इनको अटूट श्रद्धा थी। आपने सुवर्णमय तथा रत्नजड़ित डेढ़ हजार प्रतिमायें निर्मापन कराकर स्थापित की और कई लाख रुपयोंका दान किया। इस अगणित दानसे ही यह दानचिंतामणि कहलाती हैं। अजितपुराणकी प्रशस्तिसे ज्ञात होता है कि इसी स्त्री-रत्नकी प्रेरणासे कविरत्न, कविचक्रवर्ती, कविकुंजरांकुश, उभय-भाषाकवि आदि अनेक उपाधिधारी राजमान्य कवि अजितसेनाचार्यजीका शिष्य, सुप्रसिद्ध जैन मंत्री चावुण्डरायका कृपापात्र रन्न ने अजितपुराणकी रचना की थी इसमें कविने अजित तीर्थंकरका चरित्र बारह आश्वासोंमें वर्णन किया है। यह चम्पू ग्रन्थ है। इसे पुराणतिलक और काव्यरत्न भी कहते हैं। यह ग्रन्थ ई० सन् ९९३ में रचा गया था। इस ग्रन्थके विषयमें रन्नका कहना है कि जिस प्रकार आदि पुराणके कारण आदिपंप "ब्राह्मण-वंशध्वज" कहलाया था उसी प्रकार इस ग्रन्थ (अजितपुराण)से मैं-रन्न "वैश्यध्वज" कहलाया अजितपुराणमें कविने अत्तिमब्बेकी बड़ी प्रशंसा की है। रन्न अत्तिमब्बेको वीरमार्त्तण्ड चाउण्ड-

रायसे कम नहीं मानता था। खास करके दानमें तो चामुण्डरायसे भी अत्तिमब्बेको कविने उच्चासन दिया था। यह रन्नके अजितपुराणसे पाठकोंको स्वयं विदित हो जायगा। श्रावक धर्मोके पालनमें रेवतीके साथ सौजन्यमें सीताके साथ शीलमें देवकीके साथ दान गुणमें सुलोचनाके साथ कविने अत्तिमब्बेकी तुलना की है। कविने इतनेमें ही सन्तुष्ट न होकर आगे अत्तिमब्बेको जिनपद्मभक्ता, जगत्रयवन्दिता, दान गुणैकाम्बुधि आदि अनेकानेक विशेषणोंके द्वारा तीर्थंकरकी जननी बतलाया है। कविचक्रवर्तीका कथन है जिनजननी और अत्तिमब्बेमें इतना ही अन्तर है कि जिनजननीने जिनेश्वरको अपने गर्भमें धारण किया था पर अत्तिमब्बेने उन्हे अपने मनमें। उनकी असीम श्रद्धाको प्रदर्शित करनेवाली एक घटनाका उल्लेख कविने इस प्रकार किया है।

एकबार जिनभक्ता अत्तिमब्बे गोमटेश्वरके दर्शनार्थ श्रवणबेल्गोल गई थी। वहां उनके जिनेश्वरके निकट पहुंचतेही शुभसूचक अकालमें वृष्टि हुई। कवि इस अकालवृष्टिका हेतु अत्तिमब्बेकी सच्ची भक्तिको ही बतलाते हैं। अत्तिमब्बेके पिता मल्लप्प और चाचा पुन्नमय्यने अपने गुरू जिनचन्द्रदेवके प्रति परोक्ष विनय प्रगट करनेके लिये कन्नड कविरत्नत्रयोंमें अन्यतम और कविचक्रवर्ती, उभयकविचक्रवर्ती, सर्वदेवकवीन्द्र, सौजन्यकुन्दांकुर आदि उपाधिधारी राजमान्य कवि पोन्नसे शान्तिनाथ पुराणकी रचना करवाई थी। यह शांतिपुराण चम्पूरूप काव्य है। इसमें बारह आश्वास हैं। इसकी कविता बहुत सुन्दर है। अत्तिमब्बेने अपने पिताके प्रति परोक्ष भक्ति प्रकट करनेके लियेही इसकी एक हजार प्रतियां लिखवाकर वितरण करवाई थी। इतिहासवेत्ताओंका अनुमान है कि उस समय उक्त शान्तिनाथ पुराण नष्ट हो रहा था या पाठकोंको सुलभतासे नहीं मिलता रहा। इसीलिये दानचिंतामणिको ऐसा करना पडा। जो कुछ हो, यहां मुझे इससे केवल अत्तिमब्बेके दानचिन्तामणि उपनामकी सार्थकता बतलाना है। कविचक्रवर्ती रन्न चावुण्डराय तथा अत्तिमब्बेको बहुत कुछ मानता था। खास करके कविने अपने लडकेका चावुण्डराय और लडकीका अत्तिमब्बे नाम रक्खा था। इससे उल्लिखित बात और भी स्पष्ट हो जाती है। इस अत्तिमब्बेकी संक्षिप्त जीवनीसे आधुनिक स्त्री-समाजको अवश्य लाभ उठाना चाहिये। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि महापुरुषोंकी जीवन घटनासे हम लोगोंका जीवन अवश्य सुधर जाता है।

युवको चेतो !

युवको उठो पड़े क्यों, सोते अपने पैर–पसार।
लखो धर्मकी दशा हुई, क्या अपने नयन उघार॥
कुड़ची और बयानाका तो, देखो अत्याचार।
कायर कैसे बने ? वीरता दिखलाओ इस बार॥
श्री पूज्य अकलंक तथा, निकलंक देवसे बन जाओ।
तथा हकीकत राय सरीखे, वीर भावको भर लाओ॥
रखो आत्म विश्वास, आत्मबल युवको ! अपना प्रकटाओ।
करो धर्मसे "प्रेम" धर्मके लिए सैकड़ों शर खाओ॥

निवेदक–ब्र० प्रेमसागर–बुढ़ार।

भोजनका समय।

(लेखक—श्रीमान् पं० मनोहरलालजी जैन, वैद्य-शिवपुरकलां)।

खाली पेटमें जब रक्त अधिकतासे एकत्र होने लगता है और पेटकी ग्रंथियें (गांठें) फूलने लगती हैं तब शरीरके स्नायुओंमें एक प्रकारकी विकलता उत्पन्न होने लगती है उसीका नाम भूख है, जिसकी प्रत्येक प्राणीमें स्वाभाविक इच्छा होती है, और जो हमको भोजनका ठीक समय बतला देती है। भोजनकी सूचना मिलना कि भोजन तैयार है यह वास्तवमें भोजनका समय नहीं, किन्तु जब जठराग्नि खूब प्रदीप्त होकर "कब भोजन मिले" ऐसी प्रबल इच्छा ही ठीक भोजनका समय है। बहुतसे अज्ञानी नित्यका कार्य समझ भोजनके लिये ही जीते हैं, चाहे क्षुधा हो या न हो खानेसे मतलब, यह उनकी महान गलती है। क्षुधाके अभावमें भोजन करना नाना रोगोंका आह्वानन करना है। भोजन करना जरूरी कार्य अवश्य है परन्तु उसी समय जब कि जठराग्नि किये हुये भोजनको अच्छी तरह पाचन कर चुकी हो। जैसे अग्निकी छोटीसी चिनगारीके ऊपर उसकी शक्ति प्रमाण ईंधन दिया जाय तो वह क्रमशः बड़े२ काष्टोंको भी थोड़े ही समयमें भस्म करनेकी शक्ति पैदा कर लेती है। यदि बीचमें ही उस छोटीसी चिनगारीपर एकदम काष्टादिकोंका भार रख दिया जाय तो वह वहींपर दबकर समाप्त होजायगी। उसी प्रकार जठराग्निको अपने पूर्वान्नकी पाचन क्रिया समाप्त किये बिना ही पुनः पाचनका कार्य दे दिया जायगा तो वह उस कार्यको पूरा न कर सकेगी प्रत्युत दूसरे अन्नके भारसे पाचन यंत्र कमजोर होजायगे और अन्न पेटमें पड़ा२ सड़ेगा। जिसका परिणाम मंदाग्नि, अजीर्ण, अतिसार, ग्रहणी, कृमि, दन्तादि रोग उत्पन्न होजाता है।

अतएव यदि अपने स्वास्थ्यको अच्छा रखकर संसारमें कुछ कार्य कर दिखना है तो भोजन-लोलुपी मत बनो, जीनेके वास्ते यथासमय मित भोजन करो। जो मूर्ख खानेको ही जीते हैं और पशुओंकी तरह अंटसंट अप्रमाण रीत्या खाया करते हैं वे अकालमें ही कालके ग्रास बनकर अपने अनुपम अलभ्य नररत्नको नष्ट कर बैठते हैं जैसा कि आयुर्वेदमें लिखा है—

> अनात्मवन्तः पशुवद्भुंजते येऽप्रमाणतः।
> रोगानीकस्य ते मूलमजीर्णं प्राप्नुवन्ति हि॥
> (भावप्रकाश)

जिन मनुष्योंकी इंद्रियां अपने आधीन नहीं हैं वे पशुके समान अप्रमाण भोजन करते हैं उनके विसुचिका (हैजा) अजीर्णादि असाध्य रोग होजाते हैं।

बहुतसे लोग भोजनको जाते ही नाक मुंह सुकड़ाते और बड़े बेचैन होते हैं। थालीपर बैठते ही नाना चटपटी स्वादिष्ट चीजोंपर मन दौड़ाते हुये बड़े ही कष्टसे जरा२ ग्रास मुखमें रखकर पेटकी पूर्ति कर लेते हैं। वस्तुतः हम इसको सची भूख नहीं कह सकते क्योंकि सच्ची भूखमें कष्ट और अशांति कभी नहीं होती। सची भूखमें भोजन स्वादिष्ट और प्रिय मालूम होता है, मिर्च मसाले आदि चटपटी चीजोंकी आवश्यक्ता नहीं पड़ती। भोजनका वास्तविक समय वही है कि जब सच्ची भूख उत्पन्न हो। आयुर्वेदमें भोजनका समय निम्न प्रकार बतलाया गया है—

"प्रसृष्टे विण्मूत्रे हृदि सुविमले दोषे स्वपथगे।
विशुद्धे चोद्गारे क्षुदुपगमने वातेऽनुसरति॥
तथाग्नावुद्दीप्ते विशदकरणे देहे च सुलघौ।
प्रयुंजीताहारं विधिनियमितः कालः स हि मतः॥
(वाग्भटे)

अर्थ—जब मलमूत्रका उत्सर्ग हुआ हो, मन प्रसन्न हो, वात, पित्त, कफ, इन तीनों दोषोंकी स्थिति यथोचित हो, शुद्ध उद्गार (डकार) आती हो, भूख लगी हो, जठराग्नि प्रदीप्त हो, समस्त इंद्रियायें विशुद्ध हों और देह हलकी हो, तब भोजन करना चाहिये क्योंकि भोजनका वास्तविक समय इन्हीं लक्षणोंसे प्रगट होता है।

जिस प्रकार विना भूख खाना हानिकारक है उसी प्रकार भूख लगनेपर न खाना अथवा समय टालकर खाना भी हानिकारक है। क्षुधा-प्रदीप्त होनेपर भोजन न किया जाय तो वह अपने शारीरिक मांस मेदादि धातुओंको दग्ध करने लगती है, और शरीरमें निर्बलता ग्लानि-अरुचि आदि कार्य उत्पन्न होने लगते हैं। इस-लिये सच्ची भूख लगनेपर "शतं विहाय भोक्त-व्यम्" इस नीतिका जरूर ही अनुसरण करना चाहिये।

देखा जाय तो एक समयका किया हुआ भोजन ६ घंटेमें पच जाता है। बाद ६ घंटेके बीचमें न खानेसे समयपर अच्छी कड़ी भूख लगेगी। बहुतसे लोग दिनभर कुछ न कुछ खाना ही करते हैं जिससे उनके भोजनका कोई समय नियत नहीं रहता। नियत समयपर किया हुआ साधारण सूक्ष्म भोजन भी लाभप्रद है, किन्तु अनियत समयपर किया पौष्टिक भोजन भी लाभ-दायक नहीं, प्रत्युत दुखदाई बतलाया गया है। निरोगी और दीर्घजीवी बनना है तो भोजन शुद्ध शांतिपूर्वक प्रसन्न चित्त होकर खूब चबा२कर खाना चाहिये। जितना अच्छा शुद्ध भोजन करोगे उतना ही उसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। मनमें नाना शुद्ध विचारोंकी उत्पत्ति होगी और रस भाग भी अच्छा बनकर शरीरको सुन्दर और पुष्ट बनायगा। ये बात जगतप्रसिद्ध है कि "जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन—जैसा पीवे पानी वैसी बोले बानी" बाजारके अशुद्ध कई दिनोंके बनें भोजन मत करो इससे स्वास्थ्य खराब होजाता है। बाजारके नाना रंगीन चट-कीले पदार्थोंको देखकर जिव्हालम्पटी मत बनो। कुछ परिश्रम करके शुद्ध और ताजा भोजन करना सीखो इससे स्वास्थ्यको लाभ और पैसोंकी बचत दोनों काम सिद्ध होते हैं।

उपवास करलेना अच्छा परन्तु कई दिनोंका बासा सड़ा गला भोजन करना अच्छा नहीं। भोजन सदैव ताजा शुद्ध और प्रकृतिके अनुकूल करना चाहिये । बहुतसे अनभिज्ञ मनुष्य भोजनके बाद ही यत्र तत्र शीघ्रतासे चल फिर कर परिश्रमके कार्यमें लग जाते हैं लेकिन भोजनके बाद शारीरिक परिश्रम भूलकर नहीं करना चाहिये । आयुर्वेदमें भोजन बाद ही परिश्रम करना मृत्युका कारण बतलाया गया है। अतः भोजनोत्तर क्रमशः शनैः शनैः सौ कदम चलो जैसे कि कहा है–

भुक्त्वा शतपदं गच्छेद्वामपार्श्वेन संविशेत ।
शब्दरूपरसस्पर्शगंधाश्च मनसः प्रियान् ॥
भुक्तवानुपसेवेत तेनान्नं साधु तिष्ठति । (सुश्रुते)

भोजन करके धीरे२ सौ कदम चले, फिर बांई करवट करके शयन करे, और जो अपने मनको प्रिय शब्द रूप रस स्पर्श सुगंध हैं उनका सेवन करे। ऐसा करनेसे अन्न भले प्रकार पच जाता है ।

मनुष्योंको बहुतसे विपरीत आचरण भी स्वास्थ्यको अधिक नुकसान पहुंचाते हैं, जैसे प्यासके समय पानी न पीकर भोजन कर लेना ऐसा करनेसे गुल्म, बायगोला, शूलादि रोग उत्पन्न होजाते हैं। इसी प्रकार क्षुधा लगनेपर पानी पी लेनेसे जलोदरादि रोग उत्पन्न होजाते हैं ।

महावीराष्टक (सार्थ)

तीसरीबार छपगया । मू० –)।
मैनेजर–दि० जैन पुस्तकालय–सूरत ।

मकरध्वज वा चन्द्रोदय रस।

यासम औषध जगतमें और न दूजो कोय।
अनुपानके फेरसे सकल रोग क्षय होय ॥१॥
वैद्योंमें विख्यात है जानत है संसार ।
ऐसा उत्तम औषधि मिले न बारम्बार ॥२॥

इससे बढ़कर वैद्यक शास्त्रमें कोई औषधि नहीं है। ऐसा कोई भी रोग नहीं जिसपर यह औषधि अपना पूरा २ प्रभाव जुदे २ अनुपानोंसे न करे । वैद्योंसे पूछिये मृत्युसमय भी २ मात्रा देनेसे १ घंटे बात करा सक्ती है। नपुंसकता निर्बलताकी तो एक ही मात्र दवा है। हर-एक प्राणीको यह औषधि घरमें रखनी चाहिये मूल्य केवल २४) तोला खर्च ।।=)

मैनेजर, जैन कल्पतरु औषधालय,
फर्रुखनगर–पंजाब ।

नव कोठोंमें सिद्ध वीसा यंत्र ।

यह यंत्र नौ कोठोंका बड़ी कठिनता तथा खोजसे मिला है । इसके पास रखनेसे सभामें सम्मान, राजद्वारमें विजय, शत्रुदमन, रोग नाश, वशीकरण, भूत प्रेत बाधा न करे, व्यापारमें लाभ और नाना प्रकारके फायदे मन्द हैं । यह यंत्र पर्वतपर एक महात्माजीसे उनका आराधन कर आज्ञानुसार लिया गया है । इसमें न तो कहीं शून्य है और न भूक अक्षर । दूसरीबार आया है इसको हम चांदीके यंत्रमें देते हैं न्योछावर १।=)

ज्योतिषरामभवन फर्रुखनगर, पंजाब ।

वर्तमान-शिक्षाप्रणाली ।

(लेखक:—प्रो० पं० नाथूलालजी शास्त्री "वज्र" इन्दौर) ।

जब हम प्राचीन भारतके आदर्शको अर्वाचीन भारतसे तुलना करते हैं तो हमें हमारी दीनता और दीनताका मुख्य कारण यही प्रतीत होता है कि हमने ही आलसी और अकर्मण्य होकर अपने हाथों देशको तबाह और बरबाद किया है। भारतवर्षकी वर्तमान परिस्थिति कैसी शोचनीय होरही है, बेकारोंकी संख्या बढ़ती जारही है, गरीब हाहाकार कर रहे हैं, कहीं अन्न नहीं तो कहीं जल नहीं। ऐसी विकट और भयानक अवस्थामें जब कि देश सब तरह दुखी होरहा है, दिनदूनी धनिकोंकी विलासिता बढ़ती जारही है। समाज और धर्म दिनदूना रसातलको पहुंच रहा है; क्या किया जाय? इसकी खोज निकालना असम्भव नहीं पर टेढ़ीखीर अवश्य है।

हमारी शिक्षाप्रणालीने हमें और भी फेशनेबिल (विलासी) बना दिया है कि हम अब कहीं क्लार्क या शिक्षकके सिवाय कोई कार्य नहीं कर सकते। न हम अपना सामान अपने आप स्टेशन ले जा सके हैं, न मामूली रोजगारसे अपनी गुजर कर सक्के हैं, न पुस्तकें बेच सक्के हैं और न दुकान ही पर तराजू बांट लेकर आटा दाल या नमक बेच सक्के हैं। क्यों कि हमने समझ रखा है कि कहीं हमारे बी० ए० या शास्त्री पदमें बट्टा न लगे, हमारी फेशनमें धब्बा न लग जावे इसलिये इन कार्योंसे हम शरमाते हैं। हमें नहीं मालूम कि स्वावलम्बन और साहस भी कोई आत्मगुण है और अमेरिका आदिका अनुकरण इस विषयमें करना भी हमें अनुचित नहीं है। सिर्फ पढ़ाना या क्लार्कीमें हमें हमारी शिक्षाका उपयोग कर देना पड़ता है। किन्तु इतना होनेपर भी अब पढ़ानेको स्कूल नहीं; क्लार्कीको दफ्तर नहीं। कहीं २५ या ३० रुपयोंके स्थानके लिये आवश्यक्ता निकलने पर सैकडों नहीं हजारोंकी संख्यामें प्रार्थना पत्र आते हैं; वे भी दीनता सूचक। इन सबका मुख्य कारण हमारी आधुनिक किसी भी शिक्षाका ठीक नहीं होना है। अब हम कहें कि हमने अकर्मण्यता और आलस्य पूर्वक सुखकी नींद ली; इसीलिये आज यह दशा होरही है तो इससे क्या लाभ होगा? "गई सुगई अब राख रहीको" की नीतिके अनुसार अब तो उसका प्रतीकार करना ही आवश्यक है। इस क्रांति युगमें हमें स्वावलम्बी, साहसी और निर्भीक होना चाहिये। यूरोप और अमेरिकाने जो विज्ञानमें उन्नति की है, जब हम अपने शास्त्र उठाकर देखते हैं तो हमें अपने शास्त्रोंमें उन सबकी यथार्थ स्थिति मालूम होजाती है और वे सब

वैज्ञानिक आविष्कार जैन धर्मके अविरुद्ध ही प्रतीत होते हैं; जो हमारे आचार्योंने हजारों वर्ष पहिले लिखे हैं।

नवयुवको! तुम ही देश और समाजके आधारस्तम्भ हो। तुम्हारे ऊपर ही समाजका भविष्य निर्भर है। इसलिये तुमसे ही कहना योग्य है कि दृढ़ संकल्प द्वारा महापुरुषोंके जीवनचरित्रको आदर्श रखते हुये आलसी और अकर्मण्य मत बनो। स्वावलम्बन और सदाचार पूर्वक जीवन होना चाहिये, यह समझते हुये कर्तव्य पथपर आरूढ़ होजावो। अवश्य समुत्थान होगा।

जब हम संस्कृत शिक्षा की ओर दृष्टि डालते हैं तो हम देखते हैं कि अधिकांश विद्यालयों और पाठशालाओंमें पुस्तकें और शिक्षाशैली ऐसी निकम्मी है कि विद्यार्थी व्यवहारसे अनभिज्ञ और केवल रट्टू निकलते हैं, उनमें आत्मशक्तिका अभाव रहता है। न वे लायब्रेरीकी पुस्तकें पढ़ते हैं न संसारके समाचार पत्र ही देखते हैं। और यदि पुस्तकें देखते भी हैं तो निकम्मे उपन्यासोंमें अपना अमूल्य समय बरबाद करते हैं। विद्यालयों और पाठशालाओंके कोर्समें ऐसी पुस्तकें होनी चाहिये कि जिनसे भविष्यमें काम होसके। पुस्तकोंके पढ़नेके साथ साथ टेलरिंग (कपड़े सीना), वैद्यक, शार्टहैंड, महाजनी, टाइपराइटिंग, इंजिनीयरिंग, ड्रूइंग और फोटोग्राफरीकी शिक्षा भी देना आवश्यक है। व्याख्यानशिक्षा और हारमोनियम द्वारा धार्मिक गायन सिखाकर जैन सिद्धांतका प्रचार आम तौरपर सरलतया होसकता है।

विद्यार्थियोंको उनकी अमुक कार्यकी ओर विशेष प्रवृत्ति देखकर उधर ही झुकाना चाहिये और प्रोत्साहित करते रहना आवश्यक है। किन्तु वर्तमान शिक्षालयोंमें किसी भी प्रकृतिके छात्र आवें उन सबको एक ही लकीर पर चलाया जाता है। फिर अन्तमें उन्नति हो तो कैसे हो?

विद्यार्थी अपने पठनक्रमके अतिरिक्त अन्य परीक्षा देना चाहते हैं तो उन्हें रोक दिया जाता है और इन्हीं कारणोंसे विद्यार्थीकी यथेच्छ बुद्धिका स्फुरण नहीं होपाता है। शिक्षाके साथ२ आचरणपर ध्यान नहीं दिया जाता, न व्यायाम ही पर कुछ गौर किया जाता है, इसलिये कर्मक्षेत्रमें अवतीर्ण होनेपर वे चिड़चिड़े, दुर्बल और क्षयग्रस्त दृष्टिगोचर होते हैं। उनका जनतापर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता, न वे किसीके आदर्श बन सकते हैं। मैं सत्य लिख रहा हूं कि अधिकांश संस्कृतवाले अपनी कोर्सकी पुस्तकोंको पढ़कर पास तो होजाते हैं, लेकिन समाजमें शास्त्रपढ़ना, उपदेश देना और बातचीत करना तक उन्हें नहीं आता और वे अनेक उपाधि धारी धीमान् कहला कर यूनिवर्सिटी और विद्यालयोंको बदनाम कराते हैं। यही हालत अंगरेजी शिक्षा प्रणालीकी है। वे तो धार्मिकज्ञान प्राप्त करना अपने कर्तव्यके बाहर समझते हैं तथा व्यवहारमें भी चतुराई प्राप्त नहीं होपाती इसलिये वे भी अपमानित होते हैं। अतः—

विद्यार्थीयो! शिक्षा तुम्हारी योग्य होना चाहिये।
निज धर्म और स्वदेशका भी ज्ञान होना चाहिये॥

जब पुस्तकोंका घोटना अब ध्येय है।
आशा करें कैसे कहो तुमसे हमारा श्रेय है॥

हमारी इसी अनुचित शिक्षा प्रणालीके कारण विद्यार्थी अपना भविष्य। जीवन सम्बन्धी निश्चित ध्येय नहीं बना पाते हैं और बलात् उन्हें नौकरी खोजनी पड़ती है।

लोग कहा करते हैं कि दीन और अनाथ विद्यार्थी द्रव्याभावके कारण नौकरीके सिवाय और क्या कर सकते हैं? किन्तु मैं सज्जनोंसे निवेदन करूंगा कि उन्हें हमारे आदर्श नेताओंके ज्वलंत उदाहरण सामने रखते हुये मालूम करना चाहिये कि वे प्रारम्भकालमें निर्धन थे, किन्तु उनके द्विगुणित उत्साह, अथक परिश्रम, कार्यक्षमता और कर्मवीरताने आज उन्हें संसारका शिरोभूषण बना दिया। विद्यार्थियोंको इनका आदर्श रखते हुये अपने निश्चितध्येयकी ओर अग्रसर होना चाहिये। अपने कार्यको पूर्ण किये विना उसमें अनुत्साहको प्रदर्शित करना और प्रतिकूलता देखकर निरुत्साही होना निरी कायरता है। किसीने कहा है कि—

जीवनचरित महापुरुषोंके हमें नसीहत करते हैं।
हम भी उनसे अपना जीवन स्वच्छ साफ कर सकते हैं॥
हमें चाहिये हम भी अपने बना जांय यह चिह्नकाम।
इस जमीनकी रेतीपर जो कभी किसीके आवे काम॥

किसी तरह खोटे उपन्यासोंमें समय न खोकर बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक पुस्तकोंमें ही सतत परिश्रम करना चाहिये, चारित्र सुधारनेका यह सरल उपाय है। जो बाल्यावस्थामें आचरण पर ध्यान नहीं देते वे बी० ए० या एम० ए० पास होने पर भी समाज और लोकमें प्रतिष्ठा नहीं पाते, उनपर लोगोंकी श्रद्धा नहीं रहती और वे बुरी तरह समालोचक होजाते हैं। क्योंकि इस भूमंडलमें आत्मशक्ति, सादगी, सत्संगति और शिष्टाचार आदि गुणोंके द्वारा ही अनेक नररत्न अपनी दिगंतव्यापिनी प्रशस्त धवलकीर्तिकौमुदीका प्रसार कर गये हैं। क्या हम मनुष्य नहीं? हममें वह बल नहीं कि हम भी वैसे बन सकें? हां! है, प्रत्येक आदमीमें महावीर और अकलंक होनेकी शक्ति है; इसलिये आचरण पक्का और सच्चा होना अत्यंत आवश्यक है। संसारमें वह व्यक्ति पूजनीय नहीं होसक्ता जिसके पास अनुकूल सम्पत्ति है, वह पूजनीय नहीं जो राज्यासनपर आरूढ़ है, वह भी पूजनीय नहीं हो सक्ता जिसके पास वैज्ञानिक भण्डार है। पूजनीय वही होसक्ता है जो स्वावलम्बी है, सदाचारी है।

जब तक किसीका आचरण पक्का न हो सच्चा न हो।
तब तक महत्तर कार्यमें वह किस तरह कच्चा न हो॥

इसलिये छात्रालयोंमें इसपर ध्यान देते हुये अपने मार्गपर आरूढ़ रहना चाहिये।

हममें अकलंक और समंतभद्र होनेका बल मौजूद है किंतु चाहिये उनके गुणोंका अनुकरण, चाहिये अपूर्व साहस तभी अकलंक जैसी आत्मामें धर्म और देशको फिरसे समुज्वल कर सकेंगी।

ब्रह्मचर्यपूर्वक पच्चीस वर्षकी अवस्था तक विद्याध्ययन कर उपर्युक्त नियमानुसार पूर्ण योग्यता संपादन करलेना आवश्यक है।

संस्कृतका शास्त्री कक्षा तकका ज्ञान, बोलने और लिखने तथा अनुवाद कर सकें वहां तक अंग्रेजी, हिन्दी साहित्यमें उत्तमा परीक्षा, उत्तम व्याख्यान जो परिमार्जित और सञ्जीवनोत्पादक भाषामें सुसज्जित हों, इसके साथ साथ धार्मिक और देश सम्बन्धी भजन और भूगोल, राजनीति विषयक ज्ञान प्राप्त करते हुये व्यावहारिक ज्ञान और व्यायामसे हृष्टपुष्ट शरीरका होना आवश्यकीय है। इतने ज्ञानके संपादन कर लेने पर देश और जैनधर्मके उद्धार करनेमें सफलता प्राप्त होसकती है।

जहां उपर्युक्त शिक्षा दी जावेगी वहींसे महाकवि रवीन्द्रनाथ टागौर जैसे संसारके महामान्य पुरुष तैयार होकर जननी जन्मभूमिका उद्धार करते हुये देश तथा विदेशमें जैनधर्मको विश्वधर्म बनानेमें कृतकृत्य होसकेंगे।

शिक्षा तुम्हारी योग्य हो स्याद्वादमें अनुराग हो।
गुरुकी विनय अरु भक्ति हो मधु मांसका भी त्याग हो॥
साम्राज्य हो जब एकताका सादगी हो वेशमें।
तब जानलो जिनधर्मका उद्धार होगा देशमें॥

निःस्वार्थ होकर अस्थिचर्मावशिष्ट नरोंकी पर्णकुटीमें जाकर क्षुधा और पिपासासे आकुलितोंको तृप्त कर सकें तभी सच्ची सेवा समझिये।

इसलिये संसारमें यदि जन्म धारण किया है तो अपना जीना तब ही सार्थक है जब धर्म और जन्मभूमिके उद्धारार्थ प्राणोंका बलिदान करनेमें भी न हिचकें।

नवयुवको! सर्वसाधारण ऐसे उच्च उद्देशको पालन कर सके उसी प्रकार लिख रहा हूं। तुम नौकरीका ध्येय मत रखो, आत्मबल और परिश्रमके साथ स्वावलम्बी बनो। पुस्तकें वेचो, खादी वेचो, टेलरिंगका कार्य करो और साधारण कार्य करनेमें मत शरमाओ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे अल्प संख्यामें भी युवक परिश्रम करेंगे तो अकलंक शासन फिरसे उच्च शिखरपर आरूढ़ होगा! यह कलियुग नहीं है किन्तु करयुग है अजुमा करके देखलो।

प्यारे युवको! अब भी चेतो, उठो और जिनधर्मकी ध्वजा अखिल विश्वमें फहराते हुये परम पुनीत भारतको वैसाका वैसा बनादो।

मूसरचंद।

(समस्या-पूर्ति)

जिन द्वार दरिद्र पुकार करें,
दुखिया अति दीन खड़े तरसें।
धनवीर धनादिक पैसनको,
नहिं देत कभी अपने करसें ॥ १ ॥
पुनि पाप प्रवृत्त रहें दिन रैन,
न खायें नहीं परको खरचें।
अरु लोक विषै नहिं नाम कियौ,
व कियौ निज नाम पशू नरसें ॥ २ ॥
नहिं भोग सुभोग कियौ कबहूं,
धरती धन गाड़ सदा तरसें।
पशु पुच्छ विहीन फिरें जगमें,
निज पेट भरें नित ही खरसें ॥ ३ ॥
लख लाल गुलाल सु ख्याल उन्हें,
धन देय सदा मनमें हरषें।
"वे मूसरचंद सु मूसरधार-
जलधर ऊसर पै बरसें" ॥ ४ ॥

परमेष्ठीदास जैन, न्यायतीर्थ-सूरत।

वायु और जल।

(लेखक-पं० शिखरचंद जैन वैद्य-फर्रुखनगर।)

ज्ञान दिवाकर धूपगुण विद्याकिरण प्रकाश ।
कुमति विनाशी सुमति दो जियालाल मम तात ॥

यह सब कोई जानता है कि ग्रीष्मऋतुमें जब बहुतसा ताप होता है तो स्वास बड़ी कठिनतासे लिया जाता है व रुकने लग जाता है। परन्तु इसका कारण यह है कि जिस पदार्थमें ताप लगता है उसके परमाणु अलग २ होजाते हैं इसलिये जब सूर्यका ताप वायुपर लगेगा तो इसके भी परमाणु अवश्य अलग२ होजायेंगे। तो अब जानना चाहिये कि जो जिसका स्वभाव होता है यदि वह उसके विरुद्ध करे तो वह अवश्य दन्ड पाता है। जो शरीरकी प्रकृतिसे विरुद्ध करेगा अवश्य दण्ड पावेगा। इसलिये हम सदा जितनी वायुसे स्वास लेते हैं यदि वह उससे घट जाय तो अवश्य हमें हानि पहुंचेगी। इस कारण ग्रीष्ममें सूर्यके तापसे वायुके पतली होजानेसे अर्थात् उसके परमाणु अलग होजानेके कारण हमको हानि पहुंचती है। अर्थात् हमारा श्वास रुक जाता है। पृथ्वीके ऊपर ४५ मील तक वायुने हमको घेर रक्खा है। इस वायु मण्डलके बीच ही प्राणी तथा वनस्पति बढ़ते हैं, इसके विना आग जल नहीं सकती, जल वह नहीं सकता, दीपक थिर नहीं रहता। यदि वायुमें दुर्गन्ध मिली हो तो मन अप्रसन्न होजाता है और उस दुर्गन्ध वायुके सेवनमें कठिनता होती है, इसी तरह सुगंधित वायुके सेवनसे मन अत्यन्त प्रसन्न भी होजाता है, इसलिये निर्मल वायु सेवन करना उत्तम है। जैसे सूर्यकी ताप लगनेसे वायुके परमाणु फट जाते हैं। शीतकालमें हिमके मिलनेसे वही परमाणु कठिन और वर्षाऋतुमें मलीन होजाते हैं। वायुका यह स्वभाव है कि जिस वस्तुसे टकराकर चलती है उसकी सुगंध व दुर्गन्धको शीघ्र ग्रहण कर लेती है और जब पहली वस्तुसे आगे बढ़ दूसरी वस्तुसे टकराती है तो उसका गुण ग्रहण करती है और जब कुछ दूर जाकर खुले मैदानमें पहुंचती है तब बिलकुल साफ होजाती है। इसलिये वायु ऊपरकी उत्तम होती है और पूर्व विद्वानोंने बड़े परिश्रम और खोजनेपर यह निश्चय किया है कि जैसी वायु पृथ्वीसे चार कोश अर्थात् १ योजन ऊंचेपर है यदि ऐसी वायु पृथ्वीपर बनी रहे तो किसी प्रकारका रोग न हो। क्योंकि ऊपर वह वायु अत्यन्त निर्मल रहती है जब वह नीचे उतरती है तो इसमें वृक्ष, फल, फूल, वनस्पतिके परमाणु मिलकर इसको मलीन कर देते हैं। इसलिये बाग, वन, पर्वतसे टकराई हुई वायु भी निर्मल नहीं है। इसको केवल ग्रीष्म

ऋतुमें इसलिये ग्रहण किया है कि वृक्षोंके टकरानेसे वायुमें उष्णता नहीं रहती है परंतु रात्रिके समय वृक्षोंमें एक प्रकारका विष उत्पन्न होता है और वह वायुमें मिलकर हानिकरता है। इसलिये रात्रिके समय तो किसी भी मोसमकी वायु उत्तम नहीं है। वायुके ऋतुवार गुण दोष फिर किसी समय पाठकोंको दिखावेंगे अब कुछ जलका वर्णन लिखते हैं।

जल।

आकाशका जल चार प्रकारका होता है। जिसमें १—धाराजल, २—कारक (ओला) का पानी, ३—तुषार जैसे नदी व समुद्रमें भाफ उठती है उससे उत्पन्न तुषार जल, ४—हेम यानी पालेका जल। यह ही चार प्रकारका जल पृथ्वीपर गिरनेसे एक तो कुआं, दूसरा सर पहाड़के नीचेका और गहरी जमीनमें जो वर्षाका जल भरजाता है उसे सारस कहते हैं और तीसरा चोव्या अर्थात् गढे पृथ्वीमें आपमें हो पत्थरोंसे पूर्ण लता झाडी आदिसे ढका हो नीलवर्ण जल सहित हो उसे चौव्या कहते हैं। चौथा निर्झर अर्थात् झरनेका जल पांचवी नदी छट्ठा तडाग अर्थात् तालावका जल सातवां बावडीका आठवां जो गहरी जमीनको फोडकर मोटी धारा जलकी गिरे उसे औद्भिक कहते हैं। इन्हीं स्थानोंके भेदसे यही जल आठ प्रकारका कहा गया है। अब जलके गुण कहते हैं।

जिसमें फैन न उठताहो, सूखे हुए तृण पत्तोंसे रहित और स्याही जिसमें न हो नर्मल हो और सूर्य चन्द्रमाकी किरणे रात्रि दिन जिसमें पड़ती हों और नित्य जिसका जल निकलता हो ऐसे कुएका जल शीतकालमें थोड़ा गर्म करने पर ग्रीष्मऋतुमें ताजा निकालकर स्नान करनेमें काम देता है। परन्तु ऐसे जलको काममें लानेसे पहले जलको दुहरे कपड़ेमें छानकर साफ करले। सूर्य उदयसे पहले या अस्त होनेसे पीछे अथवा भोजन करनेके पीछे स्नान कदापि नहीं करना चाहिये। स्नान हमेशा सूर्योदयपर ही श्रेष्ठ है। अब हम इसी जलके पीनेके जो गुण हैं भोजनके साथ लिखेंगे प्रथम स्नानके ही विशेष गुण दिखाते हैं।

नियत समय पर स्नान करनेसे शरीर चुस्त रहता है, सुस्ती पास नहीं फटकती गठिया रोगमें स्नान करना बड़ा लाभकारी है। यह शरीरके जोड़ोंकी गांठोको साफ करता है खुजली आदि शरीरके जोडोंकी गांठको साफ करता है खुजली आदि शारीरिक बाह्य रोग नित्य स्नान करनेवालेके नहीं होते। इसलिये प्राणी मात्रको सूर्योदय पर नित्य स्नान करना अत्यन्त लाभकारी जानना चाहिये। अनेक मनुष्य ऐसा करते हैं कि सोकर उठते ही स्नान करने लगते हैं उस समय उनकी आंखोंमें नींद समाई हुई होती है और शरीरके सम्पूर्ण रोम के छिद्र खुले होते हैं सो तुरत जलके पड़नेसे ज्वरको उत्पन्न करते हैं, इसलिये स्नान करनेसे पहले निद्रा या आलस्य त्याग दिया करें। अनेक मनुष्य नदीका जल कुएसे उत्तम समझ उसीमें स्नान करना भला समझते हैं। जिस जलमें देशान्तरसे प्रवाहमें मिश्रित हुए उत्तम मध्यम

जघन्य वस्तुओंका अंश मिला है उस नदीका ऐसा जल विना छाने अत्यन्त हानिकारक है। चतुर मनुष्य उसका सेवन कदापि नहीं करते। केवल अविवेकी लोग ही नदी आदिको तीर्थ मान उसमें कूद २ अपवित्र करके अपनी भी हानि ही करते हैं। स्नानके भाजनोंके विषयमें विद्वानोंकी एक सम्मति नहीं है किसीने ताम्र और किसीने पीतल कहा है परंतु और धातुओंको बुरा कहनेमें किसीने भी इन्कार नहीं किया है, परंतु हमारे विचारमें तो सर्व धातुओंके वर्तनमें अधिक समय तक पानी रखा रहनेसे खराब होजाता है। इसलिये ताजा पानी छाणकर गर्मकर फिर छाणकर स्नान करे। इसके बराबर उत्तम वस्तु और नहीं है। इसलिये बुद्धिमानोंको इसके अनुकूल ही वरताव करना उचित है जिससे किसी प्रकारका रोग न हो।

स्नान करनेके प्रकरणमें जिस जलको उत्तम वर्णन किया है उस कुएका जल शीतल पीनेसे वात पित्त कफ और तृषा दाह मुर्छा धूमनी अजीरण वमन अन्नके न पचनेके कारण हृद-यका भारी होना इत्यादि इन सबको नाश करता है। और यही जल वायुसे मिल नवज्वर और वातव्याधि और गलेके रोगोंमें और पसलीके शूलमें वमन हो और विरेचन कर्म हुवा हो और पेटके अफारेमें विद्रधीमें (अर्थात् त्वचा रुधिर मांस मेदादिक बिगाड आदि दोष धीरे २ ऊंचा और पीडा सहित गोल अथवा चोडी सूजन उत्पन्न करते हैं उनको विद्रधी कहते हैं) इन सब रोगोंमें शीतल जल न पीवे यानी उष्ण जल पीवे। एक खंड हीन जल जैसे १ सेरका तीन पाव रहे ऐसे २ खन्ड हीन ३ खन्ड हीन वात पित्त कफसे उत्पन्न ज्वरमें क्रमसे पिये। येही तप्त जल रात्रिमें पीनेसे श्लेष्माको विशेष नाश करता है। जो जल श्रेष्ट रक्खा हुवा दिनको सूर्यकी किरणोंसे तपे और रात्रिको चंद्र किरणसे शीतल हुवा हो उस जलको 'आरेद' कहते हैं। वह जल अमृतके तुल्य और वायु पित्त कफ तीनों दोषोंको नाश करता है। इस जलमें अमृत और विष दोनों गुण हैं थोड़ा २ पीनेसे और एक ही बार अधिक पीनेसे अमृत तथा विष सदृश होता है। ऐसे ही जो मनुष्य प्रमाण करके नित्य जल पीते हैं अथवा भोजन समय नहीं उसके पीछे पीते हैं सो उत्तम सुख भोगते हैं यह जल सब रोगोंको दूर करने वाला है। कुएका जल कफनाशक व श्रेष्ट अत्यन्त लघु क्षारसहित और दीपन है। तालावका जल पाकमें कडुआ मीठा कसेला वायुवर्द्धक और भारी है। बावडीका जल पित्तकारक है परन्तु वायुनाशक और क्षुधार है। झरनेका जल कटु यानी कफनाशक लघु अग्नि दीपक गुणोंमें कोष्ट और लेखन अर्थात् मेदा आदिके छीलनेवाला है। आद्भिद जल पित्तघ्न अविदाही अर्थात् दाहका नहीं पैदा करनेवाला अग्निदीपक जलोंमें कोष्ट और लघु (हलका) है। चौम्र जल दोष रहित अग्निवर्धक है, सारस जल मधुर है, नदीका जल लघु लेखन कफ नाशक रूक्ष और पाकमें कटु है और जो जल अना-र्तव अर्थात् विना ऋतुका जैसे पूस आदि चार

मास वर्षाका जल अनार्तव कहाता है सो जल स्नान और पीनेमें सर्वत्र निंदित है । और जो जल नवीन अर्थात् वर्षाका है वह भी उत्तम नहीं है क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशचारी सर्पोंके फुफ-कारसे विषवायु जलमें मिलकर उसको बिगाड़ती हैं और वही जल पृथ्वीपर पड़कर जिस जला-शयमें मिलता है उसको विषरूप कर देता है । यही कारण है कि वर्षाऋतुमें मोसमी रोगादि विकार उत्पन्न होते हैं ।

जो नदियां शीघ्र बहने वाली और जिन-मेंसे जल अत्यन्त हलका हो वह सेवने योग्य है, अन्य नदियोंका जल कभी भला कभी बुरा होता रहता है और जो नदियां धीमी बहनेवाली हैं वह सदैव निन्दीय हैं । वर्षाऋतुका जल यद्यपि हलका और निर्मल होता है परंतु विषयुक्त होनेसे सेवने योग्य नहीं हैं । आश्विन मासमें जो जल आकाशसे बर्षे उसको पृथ्वीपर न पड़ने दे ऊपर रोक ले उसको वैद्योंने गंग जलके समान कहा है । वह जल सम्पूर्ण जलोंमें उत्कृष्ट अमृत समान गुण कर-नेवाला है, आयुको वृद्धि करता है, सब रोगोंका नाशक है, बलदायक, रुचिकारक स्वादमें मीठा पथ्य और लघु है और अन्तःकरणके अन्धकार अर्थात अज्ञानताको दूर करके बुद्धि बढ़ाता है, त्रिदोष नाशक है । वर्षा-ऋतुमें ऊपर लिया (रोका) हुआ शरदकालमें सब जल हेमन्तमें सर्व जल गुणकारी और निर्मल होजाते हैं । हेमन्तऋतुमें किसीने तालाब जल भी लिखा है, ग्रीष्म और बसंतऋतुमें कुएका या झरनेका जलसेवन करनेसे सुख होता है । गंगा नदीका जल वर्षाऋतुमें बिगड़ जाता है, शेष अच्छा रहता है । अनेक रोगोंको नष्ट करता है, हलका मीठा भी है । जो जल पाले (हिम)से उत्पन्न होता है वह पालेका जल दांतोंको ठिठ-राता है, दूषित है, उसे कदापि नहीं बरतना चाहिये ।

जो मनुष्य भोजनसे पहले अर्थात निरन्तर जल पीते हैं वह जल सब धातुको सुखाता है जो भोजनके बीचमें जल पीते हैं उनकी भी हानि करता है । भोजनके मध्य जलका न पीना आरोग्यताका कारण है । जो मनुष्य जलका अधिक सेवन करते हैं उनका शरीर शिथिल बल-हीन होजाता है, पेट फूलकर बुरे ढंगका होजाता है । पूर्वोक्त कथनानुसार यह बात स्पष्ट है कि वर्षाऋतुमें जल बिगड़ जाता है इसलिये उसको साफ करके काममें लाना चाहिये । अब हम जलके गुण व स्नान करनेके गुण लिख चुके इस समय पाठकोंको यह और बताना चाहते हैं कि स्नान किये पीछे क्या करना उचित है ।

स्नान करके शीघ्र ही नर्म और उज्वल वस्त्रसे शरीरको साफ करे फिर मौन सहित एक स्थान पर एक वस्त्र ओढ़कर बैठे और इष्टदेवका स्मरण कर सच्चे चित्त (मन) से यह नियम ले कि आज मैं सम्पूर्ण दिनमें कोई अयोग्य अनुचित कार्य न करूँगा, किसी जीवको वृथा कष्ट न दूंगा, अपनी आजीविकामें उद्यम और यथाशक्ति दीन मनुष्योंपर दयाभाव रक्खूंगा । इसप्रकार स्मरण तथा प्रार्थना करनेमें कमसे कम आधी

घड़ी अवश्य लगावें, क्योंकि आधी घड़ीका विश्राम रक्तको शुद्ध करता है, शरीरमें निर्मल वायुका गमनागमन होता है सम्पूर्ण इन्द्रियां निर्मल और पवित्र होती हैं, किसी प्रकारका कष्ट उत्पन्न नहीं होता और दिनभर यह जीव अपने नियमका ध्यान रखे तो यह जीव अशुभ कर्मोंके बंधनसे बचता है। जो मनुष्य इसके प्रतिकूल चलते हैं वह नानाप्रकारके कष्ट सहते हैं स्नान किये पश्चात विश्राम न लेकर मार्ग चलनेसे शरीरके सम्पूर्ण जोड़ोंमें अशुद्ध और मलिन वायु प्रवेश करती है, जिससे बहुधा हड़फूटन शून्य गठिया आदि रोग उत्पन्न होते हैं। स्नान करके अन्य प्रकारका परिश्रम करना भी बुरा है। सो रहनेसे शरीर प्रमादी उन्मत्त होजाता है, स्नान करके मैथुन करनेसे बलहीन होजाता है और स्नान समयकी गीली धोती या अन्य कोई गीला वस्त्र शरीरपर लपेटनेसे दाद, खुजली सीप इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। शिरके बाल अधिक समय तक गीले रहनेसे मस्तक निर्बल होजाता है। जैसा शरीरके लिये स्नान आवश्यक है वैसा ही स्नान किये पीछे थोड़ा विश्राम भी आवश्यक समझना चाहिये। मनुष्य मात्रको उचित है निम्नलिखित सात समय मौन धारण करें। भोजन १ वमन २ स्नान ३ मैथुन ४ मल त्याग ५ मूत्र त्याग ६ ध्यान ७ इन सात समय मौन रखनेसे शरीरकी रक्षा बहुत होती है तथा कई रोग ऐसे समयके बोलनेसे होते हैं अब आगे किसी समय हम ऋतुओंका वर्णन विस्तृत रूपसे पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करेंगे।

स्त्रीशिक्षाकी * * * * आवश्यकता।

[ले०—कमलाबाई परवार मारोठ (मारवाड़)]

हे अनन्त गुणधारक देव! पहले हमारा यह महिला समाज क्या ज्ञानमें, क्या कर्तव्यनिष्ठामें, क्या धर्मकर्ममें सभी बातोंमें संसारका आदर्श गिना जाता था। अपने त्याग गुणसे देवोंके द्वारा भी पूज्य था। वही आज अपने कर्तव्य मार्गसे भ्रष्ट होकर अबला नामसे पुकारा जाता है! वास्तवमें अपना सब बल खोकर वह अबला बन भी गया है। हे पतितोद्धारक देव! क्या हम अबलाओंको सदैवके लिये इसी अवस्थामें रखेंगे या उद्धार करेंगे? प्रभु! हमारा इस कष्टमय एवं दुखद अज्ञान जीवनसे उद्धार कर अपने पतितपावन नामको सार्थक कीजिये। हे नाथ! आपके निकट एक मात्र यही प्रार्थना है कि हममें वह बल प्रदान कीजिये जिससे हम अपने मार्गके संकटोंसे न घबड़ाकर बराबर अपनी, अपने धर्मकी, देशकी तथा समाजकी उन्नति करती जांय।

पूज्य माताओ तथा प्यारी बहिनो!

प्राचीन तथा वर्तमान विद्वानोंके विचारोंसे यह बात भलीभांति निश्चित होचुकी है कि स्त्री समाजके विना शिक्षित हुए कोई भी जाति या देश उन्नत नहीं होसकता। इस बातके साक्षी हमारे जैन शास्त्र हैं। आप लोग भूली न होंगी कि हमारे परमपूज्य युगादि पुरुष

भगवान् ऋषभदेवने इसी उद्देश (आदर्श) को दुनियांके सामने रखनेके लिये सर्व प्रथम अपनी ब्राह्मी, सुन्दरी नामकी पुत्रियोंको पढ़ाया था। यूरोपका प्रसिद्ध बादशाह नेपोलियन बोनापार्ट जिसके नामसे यूरोपखण्ड कांपता था उसने एक दफे एक स्त्रीसे पूछा था कि मुझे बतलाओ अच्छे वीर एवं विद्वान सदाचारणी महान पुरुष देशमें कैसे बनाये जांय? उस स्त्रीने उत्तर दिया था कि स्त्रियोंको इसी प्रकारकी शिक्षासे शिक्षित कर दीजिये। और बात है भी ठीक, क्योंकि देश व समाजकी उन्नति तथा अवनति उसकी भावी सन्ततिपर निर्भर है। यदि सन्तान उन्नत होगी तो वह देश तथा समाज उन्नति करेगा ही करेगा। कारण देश तथा समाज कोई अन्य वस्तु नहीं है। केवल उन्हींका (सन्तानोंका) ही समूह देश तथा समाजके नामसे पुकारा जाता है।

सन्तानकी उन्नति पूर्णरूपसे माताके आधीन है। सन्तानका जितना अधिक सम्बंध मातासे है उतना और किसीसे नहीं होता है। यदि माता शिक्षिता और धर्मपरायणा होती है तो बालक भी उसीके अनुरूप होता है। परन्तु वर्तमान माताओंको अज्ञानांधकार चारों ओरसे घेरे हुए है। मिथ्यात्व और व्यर्थ विचारोंने उनके मनोंमें स्थान पा रक्खा है। १०० स्त्रियोंमें शायद ही एक स्त्री धर्मसे परिचित है।

यदि आप कहें कि सब प्रायः मंदिर जाती हैं, प्रतिदिन दर्शन पूजन करती हैं, शास्त्र सुनती हैं, तीर्थयात्राओंमें अपने सबंधियोंसे रो गाकर एवं अनुरोध कर जाती हैं, बड़े बड़े व्रत पालती हैं और अनेक वस्तुएं त्याग करती हैं, इसपर भी तू उनको धर्मशून्य बतलाती है। किन्तु माताओ! हम लोग सब निसन्देह इन सब कामोंको करती हैं पर हृदयपर हाथ रख सोचकर सच तो कहिये कि वास्तविक श्रद्धान और ज्ञानसे इन कार्योंको क्या आप या हम करती हैं? यदि नहीं तो यह सब दिखावेके लिये करना नहीं है तो क्या है? हम सब मथुरामें गईं तो मथुराबाई और काशीमें गईं तो काशीबाई हैं। हममें अज्ञान एवं मिथ्यात्व कूट२ कर भरा हुआ है। पीर पैगम्बरोंका पूजन हमारा प्रधान कर्तव्य होरहा है। इसी प्रकार हममें धर्मसम्बंधी तथा नैतिक शिक्षाके न होनेसे हमारे बालक धार्मिक शिक्षासे शून्य एवं नैतिक शिक्षा शून्य होजाते हैं। तथा कई माताएं अपनी शिशु सन्तानको कुमार्गकी तरफ झुकती देखकर हर्ष मानती हैं तथा उनको और उत्साहित करती हैं। जैसे पाठशालाको न भेजना, मां बापको गाली दिलवाना, उनकी मूछें उखड़वाना, गोदमें लेकर अपने गालपर थप्पड़ लगवाना। यदि बालक किसीकी चीज़ छीन लाया अथवा मारपीट गाली गलौज कर आया तो उसको उसका दोष न समझा प्रसन्नता जाहिर करना आदि। इसका यह दुष्परिणाम निकलता है कि वे बालक बड़े होनेपर असभ्य, अशिक्षित, निर्लज्ज और चोर होकर देशके लिये लज्जाके कारण होते हैं।

यूरोपके बड़ेसे बड़े तत्ववेत्ताओंका कथन है कि बालकोंकी शिक्षा माताओंके द्वारा होती है

इसी लिये उनको प्रथम अध्यापक कहना चाहिये। बालकोंके कोमल हृदयोंपर जैसा माताके आचरण और उपदेशका असर होता है वैसा बड़े २ अनुभवी चतुर अध्यापकोंके उपदेशका भी नहीं होता। जितना बालक दो वर्षमें स्कूलमें सीखता है उतना माता यदि चाहे तो आठ दिनमें सिखा सकती है। अतएव बालकोंके निष्पाप और पवित्र हृदयोंपर शुरूसे जिस प्रकारका भाव अंकित कर दिया जायगा वह आगेके लिये सदैव बढ़ता चला जायगा तथा बड़े होनेपर वह विचार दृढ़ होजायगा। और उसका उनके मनसे निकलना असम्भव होजायगा। अतएव उनकी सम्हालके लिये समयपर बालकपनमें उनके मनोंपर उत्तम २ विचार अंकित करनेके लिये माताका सुशिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है।

यदि सूक्ष्मदृष्टिसे विचार किया जाय तो मालूम पड़ता है कि लड़केसे लड़कीकी शिक्षा अधिकतर आवश्यक है। क्योंकि संतान पालनकी यथेष्ट जिम्मेवारी वास्तवमें मातापर ही है और इसका समर्थन महापुराणकार भगवान जिनसेनाचार्य सरीखे पूज्य दिगम्बराचार्योंने भी किया है। भगवान ऋषभदेव तो इसके मार्ग प्रदर्शक ही थे। यह बड़े २ वैद्यों और सिद्धान्तवेत्ताओंका मत है कि जिस समयसे बालक गर्भमें आता है उसी समयसे माताका प्रभाव बालक पर पड़ने लगता है। और ५, ६ वर्ष तक उसीके संरक्षणमें बालक रहता है। इसीलिये विद्वानोंने कहा है कि जिस समयसे बालक गर्भमें आता है उसी समयसे गर्भिणीको सुशील स्त्रीपुरुषोंके मनोहर चरित्र और कथायें पढ़नेको देकर उसके चित्तको प्रसन्न करना चाहिये, जिससे उनके गुणोंका गर्भ पर उत्तम प्रभाव पड़े।

जन्मसे लेकर ५ वर्षका होने तक बालकके निष्पाप पवित्र मनपर धर्म और नीतिके चित्र खींचनेवाली चित्रकारिणी माता बड़ी विदुषी और पंडिता होनी चाहिये, जिससे बालक भी बड़ा पंडित और विद्वान् बन सके। भारतमें जितने नररत्न हुए हैं अथवा विदेशोंमें जो महान् पुरुष पैदा हुए हैं, उन सबके ऊपर प्रथम माताका ही प्रभाव पड़ा था। अमेरिका प्रजातंत्र राज्यके सभापति एडमिया साहिबने अपनी पुस्तकमें एक जगह लिखा है कि अब तक इस पृथ्वीपर जितने नररत्न पैदा हुए हैं उनका मुख्य कारण उनकी सुशीला और शिक्षिता मातायें ही थीं। क्योंकि कहा है कि जैसा बीज होता है वैसा अंकुरा पैदा हुआ करता है। तथा जैसा सूत होगा वैसा ही कपड़ा बनेगा इसी प्रकार जैसी माता होगी वैसी ही उसकी सन्तान होगी। कहावत प्रसिद्ध है कि—" जैसे जाके बाप मतारी, वैसे वाके लड़का। जैसे जाके नदी नाले वैसे वाके भरका। "

इसलिये यदि माता शिक्षित नैतिक सदाचरण सहित धार्मिक भावनासे युक्त स्वदेशाभिमान युक्त होगी तो उसके लड़के भी वैसे ही सर्वगुण सम्पन्न होंगे। वे धर्म देश जातिपर अपनी जान भी कुर्बान कर देंगे। इसके लिये आपको दूर न जाना होगा। भारतके हृदयसम्राट् प्रातःस्मरणीय दुःखितोद्धारक महात्मा गांधी ही हैं। यदि उनकी पूज्य मातुश्री इन गुणोंकरयुक्त न

होती तो अपनेको कभी इसप्रकारका आदर्श महान् पुरुष देखने सुननेको नहीं मिलता। दूसरा उदाहरण शौकतअली महम्मदअलीकी पूज्य माता बी अम्मा थी जिनके ये बचन सुवर्णाक्षरोंमें लिखने लायक हैं कि "बेटा ! तुम दोनोंको देशके लिये कुर्बान करते मुझे जो हर्ष होता है वह अवर्णनीय है, देशके साथ दगाकर मुझे मुंह मत दिखलाना"। ये वीरोत्साहवर्धक वाक्य कितनी ऐसी मातायें हैं जिनके मुखसे सुननेको मिलते हैं सिवाय इसके कि "बेटा अमुक जगह मत जाना, वहां भूत है।"

प्यारी बहिनो ! ऊपर मैंने यह बतलानेकी कोशिश की है कि स्त्री शिक्षाकी आवश्यकता क्यों है, पर इसके साथ ही सम्बंध रखनेवाले शिक्षा सम्बंधी प्रश्नको भी कुछ न कुछ हल करना अत्यन्त आवश्यक है। आजकलकी शिक्षाने स्त्रीसमाजने वह भारी भूलें करदी हैं जिससे देश जातिकी परिस्थितिके जानकार हमारे हितैषी पूर्वजगण हमारी शिक्षा सम्बन्धी उन्नतिके बाधक होगये हैं।

माताओ ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि अपने धर्म, देश, समाज तथा अपनी उन्नतिके लिये, अपने गार्हस्थ्य जीवनको सुखमय बनानेके लिये सन्तानको सुशिक्षित बनानेके लिये हमें शिक्षित होना आवश्यक है। बिना शिक्षाके पाये हमारा संसार शान्त और सुखमय नहीं बनसक्ता पर साथ ही यह प्रश्न होता है "शिक्षा होनी कैसी चाहिये ?" इस समय हमारी शिक्षाके कर्तावर्ता समाजके नेतागण हैं, वे दो शक्तियोंमें विभक्त हैं। एक शक्ति तो हमारी शिक्षा दीक्षाको यूरोपके सांचेमें ढालना चाहती है। वह हमको पुरुषोंके समान स्वतंत्र बनानेमें मस्त है। वे चाहते हैं कि हमारे किसी भी काममें पुरुष रोकटोक न कर सकें, हम अपनी पुरानी रीति रिवाज पड़दा वगैरह छोड़कर पुरुषोंके साथ हाथमें हाथ मिलाये बाजारोंमें घूमती फिरें। हमारी वेशभूषामें नई सभ्यता हो, नई चमक दमक हो, हम दूसरोंके साथ हंसी मजाक कर सकें, हम डिगरियां प्राप्त करें, आफिसमें नौकरी करें, घरगिरस्तीका काम हमें नहीं करना पड़े, चूल्हेसे सिर नहीं मारना पड़े, सन्तान पालन नहीं करना पड़े। उनकी इच्छा हमें विलासियोंमें पूर्ण रीतिसे पागनेकी है। और असभ्य भारतको सभ्य यूरोपके ढांचेमें ढालनेकी है।

दूसरी शक्ति इसके विरुद्ध है। वह चाहती है भारतका महिलासमाज शिक्षित तो हो पर वह बना रहे भारतीय ही। विदेशी होनेमें भारतकी बरबादी है—गौरव नहीं है। अपनापन भुला देनेसे कोई गौरवशाली नहीं हो सकता। वह स्त्री शिक्षाके विरुद्ध नहीं पर भारतीयता गमा देनेके विरुद्ध है। वह चाहती है कि हमारा महिला समाज घरगिरस्तीके सब काम करे, जो सदाचार स्वास्थ्य और धार्मिक दृष्टिसे उपयोगी हैं। वही अपनी सन्तानका पालन करे, वह लोक लाजको छोड़ निर्लज्ज न बने, हमें जरूरत नहीं कि वह भड़कीली सभ्यताके मोहमें फंस देशको फेशनके रोगसे तबाह करदे, हमारे पूर्वजों और धर्मशास्त्रोंकी पवित्र मर्यादाका भार-

तसे नाम उठादे । वह नहीं चाहती कि हमारी कुलदेवियां बाजारोंमें बेशर्म घूमती फिरें, आफिसोंमें नौकरी करें । वह कहती है कि प्राचीन कालसे स्त्रीशिक्षाका उद्देश धार्मिक वासनाओंका बीज बोकर उसे देश, जातिके उपकारार्थ समर्थ बनानेका है । यदि उनकी शिक्षाका उद्देश विदेशों सरीखा प्रायः विलासप्रियताको लिये हुए होता, उसमें धार्मिक संस्कारकी गन्ध न होती तो यवनोंके समयमें आई विपत्तियोंके समय वे अपने धर्मकी रक्षा कदापि नहीं कर सकतीं । हजारों पापियोंको अपने आत्मबलसे रसातलका रास्ता नहीं बतातीं । पर नहीं, उनमें उनके रोम रोममें धार्मिक भाव भरे थे । उससे उन्होंने पापियोंका गर्व नष्ट किया और अपने धर्मकी रक्षा की, और भारतका मुख उज्वल किया । इसी लिये भारत ही क्या पर यूरोप भी उन देवियोंके गुणोंपर मुग्ध है । और वे आज भी संसारमें भारतीय रमणीके नामसे पुकारी जाती हैं । इसी लिये हमारी कुल महिलायें भारतीयता ही को अपनावें और अपने पवित्र गुणोंद्वारा भावी सन्तानकी आदर्श बनकर भारतको और अधिक गौरवशाली बनावें । इससे मेरी समझमें दूसरी शक्तिके विचार ही कल्याणकारी हैं । बहिनों ! भारतका भारतीयतामें ही कल्याण है । आशा है आप लोग इन विचारोंसे सहमत होंगी तथा इस तरफ लक्ष्य देकर इस काममें अपनी बहिनोंका हाथ बटावेंगी इसीमें अपनी जातिका तथा अपना कल्याण है ।

—※—

महिला-महत्व ।

(ले०-रंगलाल भंवरलाल जैन-उदयपुर)

सज्जनो ! इस कोनेसे उस कोनेतक पूर्वसे पश्चिम और उत्तरसे दक्षिण तक चहुंओरसे यह निनाद कर्णगोचर होरहा है कि उन्नति करो । इसप्रकार कहना जितना सरल है उतना ही कार्यरूपमें परिणत करना कठिन एवं टेढ़ी खीर है । इस प्रश्नको हल करनेके पहले हमको इस बातपर ध्यान देना होगा कि इन आवाजोंके उठनेका क्या कारण है । क्या वास्तवमें समाज उन्नति पथसे विपरीत अवनति मार्गपर है या नहीं ? उत्तरमें निःसंकोच कहना होगा कि अवनति ही नहीं परन्तु मरणोन्मुख दशा हो रही है; और इसका प्रधान कारण स्त्री समाजका अपना कर्तव्यच्युत होना है । अशिक्षाका साम्राज्य जो दृष्टिपथ होरहा है उसका उल्लेख करना अपनी ही जांघ उघाड़ना है । दुर्भाग्यसे स्त्री समाजके चित्तको हतोत्साही एवं मूर्ख रखनेकी चेष्टा करनेवाले व्यक्तियोंकी भी भरमार है । सौभाग्यसे स्त्रीसमाजको सुपथ एवं कर्तव्यनिष्ठ बनानेका प्रयत्न करनेवाले कोई विरले व्यक्ति मिल भी जायें तो रूढ़ियोंके फकीर चट जल्दी विरोध करनेको अपनी २ लम्बी चौड़ी वक्तृता शुरू कर देते हैं, जिससे स्त्री समाजमें कर्तव्यपरायणता एवं समाजसेवाके भाव जागृत भी हों तो वह रुक जाते हैं ।

हमारे विचारसे तो स्त्रियोंको भी उतने ही अधिकार हैं जितने कि पुरुषोंको। हां स्त्री शक्तिकी अपेक्षा योग्य संहनन न होनेसे मोक्ष नहीं जा सकती पर आर्यिका व्रत धारण कर स्वर्गकी अधिकारिणी तो बन सकती है। (फिर भी संहनन आजके जमानेमें तो दोनोंके समान ही हैं) मैनासुन्दरीने जिनेन्द्रभगवानकी अभिषेक पूर्वक पूजा की और गंधोदकसे अपने प्राणप्यारे कोटिभट राजा श्रीपालका कोढ़ दूर कर निरोग किया था। स्त्रियोंके लिये पूजन करनेका विधान कई शास्त्रोंमें मिलता है और पूजन प्रक्षालपूर्वक ही होती है, कहीं भी शास्त्रोंमें यह उल्लेख नहीं मिलता कि बिना अभिषेकके पूजन की जाती है। इसलिये जो भाई स्त्रियोंके पूजन प्रक्षाल करनेका निषेध करते हैं वे स्त्रियोंके धार्मिक सत्वोंको छीननेकी चेष्टा करते हैं। अस्तु समाजके मुख्य दो अंग हैं—पुरुष और स्त्री। यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि सन्तान पैदा करनेमें पुरुष बहुत कुछ अपेक्षा रखता है पर स्त्रीका जितना सन्तानके बुद्धिबल एवं अंगोपांग पर असर पड़ता है उतना पुरुषका नहीं। इसलिये स्त्री समाजका बहुत कुछ महत्व होना चाहिये। संस्कृत काव्योंको आद्योपान्त पढ़ा जाय तो स्पष्ट विदित होजाता है कि बड़े २ कालीदास, भारवी, दण्डी आदि कवियोंने अपनी कृतियोंका महत्व स्त्रियोंके गुणदोष वर्णनके बहानेसे ही प्रकट किया है। ये कविगण अजैन हैं इसलिये शायद जैन समाज इस कथनको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखेगा, उसके समक्ष कुछ जैन आचार्योंके नाम प्रकट करते हैं जैसे—जिनसेन, गुणभद्र, सिद्धसेन, दिवाकर, वादीभसिंह, हरिश्चंद्र, सोमदेव आदिकी कृतियें भी स्त्रियोंके महत्व प्रकट करनेमें कम नहीं हैं। रानी प्रियकारिणीको राजदरबारमें आनेपर राजा सिद्धार्थने बैठनेके लिये आधा आसन दिया। देखिये उत्तरपुराण।

राजगृहीके राजा सत्यन्धरने विजयाको राजदरबारमें बैठनेके लिये आधा आसन दिया जिसने जीवंधर जैसे मोक्षगामी सत्पुरुषको पैदा किया। देखो क्षत्रचूडामणी लम्ब प्रथम। मानतुंग स्वामीने भगवान आदिनाथके बहानेसे किसप्रकार उनके माताके महत्वको प्रकट किया है। देखो आदिनाथ स्तोत्र काव्य २१। राजा रामचंद्रजीने किसप्रकार सीताजीका सम्मान किया। इसी प्रकार सती मैना, अंजना, द्रौपदी, राजुल आदि रमणियोंकी जीवनियें हमको स्पष्ट बतला रही हैं कि उन्होंने अपने गुणोंसे अपनेको ही उन्नत नहीं किया प्रत्युत सारे भारतको मुकुटायमान बना दिया। इस पुण्य भारत धरातलपर पतिसेवा, पितृसेवा, दाम्पत्यसेवा, भोजन पाक ज्ञान, शील, सहनशीलता, कार्यदक्षता, मितव्ययिता, गृहप्रबंध, शास्त्रार्थ आदिमें एकसे एक बढ़कर नारियें अवतीर्ण हुई हैं। इस भारतवर्षमें कई ऐसी ललनाएं पैदा हुई जिनका आदर्श गुणानुवाद अब भी स्तवनगोचर होरहा है। उनमेंसे कुछ उदाहरण हम आपके समक्ष प्रकट करनेका प्रयत्न करते हैं। सत्यभामा शास्त्रार्थमें साक्षात् सरस्वती ही थी। देखो प्रद्युम्नचरित्र सर्ग २ श्लोक ९९। रुक्मणीने श्रीकृष्णको शिशुपालके युद्धावसर पर रथ हांक कर सारथीपनेका काम दिया।

रानी कैकयिका राजा दशरथको संकटके समय रथ हांककर मदद देना सुप्रसिद्ध ही है। इन उदाहरणोंको पाठकगण कदाचित पौराणिक धर्म-शास्त्रका ढकोसला समझेंगे इसलिये कुछ अर्वाचीन समयके उदाहरण देदेना ठीक समझते हैं। महारानी पद्मावतीने पातिवृत धर्मकी रक्षार्थ प्रचण्ड अग्निमें प्रवेश किया, पर जीतेजी अलाउद्दीनको अपनी नजरके नीचे न आने दिया। झांसीकी रानी लक्ष्मीबाईने किस प्रकार अपने बुद्धिबलद्वारा राज्य प्रबंध रक्खा और वीरतासे युद्ध किया। इधर महाराणी अहल्याबाईने स्वदेश रक्षार्थ कितनी लडाइयां लडीं और अपने शासनकालकी राज्य प्रबंधकी शैलीको चहुं ओर फैलाया। प्रसिद्ध इतिहासकार पंडित गौरीशंकरजी ओझाने राजपूतानेके इतिहासमें लिखा है कि राजपूतानेमें महिलाओंका अधिक सत्कार रहा है और वे ही वीर माताएं, वीर पत्निएं कहलानेका गौरव रख सकती हैं। देखो History of Rajputana, Part first Pages 76. दि० जैन धर्मके अनुयायी सम्राट चंद्रगुप्त मौर्यके शासन कालमें स्त्रियोंका पूरा विश्वास रहता था, उसके दरबारमें रहनेवाले एक यूनानी दूत मैगास्थिनासनेउसके शासनकालका उल्लेख करते हुए Early History of India में लिखा है कि जब राजा महलके बाहिर जाता तो बहुतसी स्त्रियां उसके शरीरके निकटतम रहती थी और उसके घेरेके बाहर शस्त्र भाला लिये पुरुष रहते थे। वीरवर दाहिर देशपतिकी रानी लाडीकी वीरताका उल्लेख करते हुए फिरिश्ता लिखता है कि जब अरब सेनापति मुहम्मद बिन कासिमने युद्धमें सिंधके राजा दाहिरको मारकर उसकी राजधानीपर अधिकार कर लिया और दाहिरका एक पुत्र विना युद्ध किये भाग निकला। इस-समय उसकी माता लाडी कई हजार राजपूत सेना साथ ले पहले मुहम्मद कासिमसे सरे मैदान लड़ी। देखो ब्रिग फिरिश्ता जि० ४ पृ० ४०९।

चौहान राजाने जब चंदेलके राजा परमर्दि देवपर चढ़ाई की तो उसके विषयमें यह कहा जाता है कि इस समय उक्त राजाके सामन्त आल्हा व ऊदल वहां उपस्थित नहीं थे। वे किसी बातपर स्वामीकी अप्रसन्नताके कारण कन्नौजके राजा जयचंदके पास जारहे थे। पृथ्वीराजकी सेनासे अपनी हानि होती देखकर चंदेल राजाकी रानीने आल्हा व ऊदलको बुलानेके लिये दूत भेजे। परन्तु उन्होंने अपने स्वामी द्वारा किये हुए अपमानका स्मरण कर जानेसे इन्कार किया। उस समय उन वीरोंकी माताने जो शब्द अपने पुत्रोंको कहे थे उसे सुनकर पाठकगण सहसा अनुमान कर सकते हैं कि वे अपने प्राणोंसे प्यारे पतिदेव एवं पुत्रोंको युद्ध-क्षेत्रमें भेजती थीं। उसने आल्हा व ऊदलको सम्बोधन कर कहा है कि—हाय विधाता! तूने मुझे बांझ ही क्यों न रखा? क्षत्रिय कुलकी मर्यादा उल्लंघन करनेवाले कुपुत्रोंके होनेसे तो बांझ रहना कई दर्जे श्रेष्ठ है। धिक्कार है उन क्षत्रीपुत्रोंको, जिनका स्वामी संकटमें पड़ा हो और आप सुखकी नींद सोवे। जो राजपूत मरने मारनेसे डरकर संकटके समय स्वामीकी सहायताके लिये अपना शिर देनेको तत्पर नहीं

होता वह असलका बीज नहीं है। हाय! तूने इस वंशकी सब कीर्ति डूबो दी।

महाराणा रायमलके पाटवीपुत्र पृथ्वीराजकी पत्नी तारादेवीका पतिके साथ टोडे जाकर पठानोंके साथ युद्धमें स्वामीकी सहायता करना सुप्रसिद्ध ही है।

मारवाड़ राजा जसवंतसिंहजी जब औरङ्गजेबसे हार उज्जैनके रणक्षेत्रसे भाग अपनी राजधानी जोधपुरको लौट रहे थे उस समय उनकी पटरानीने गढ़के द्वार बंद करवाकर राजाको भीतर बैठनेसे रोक दिया था देखो—Tod Rajasthan book 2 Page 724.

रायसेनका राजा सलहदी पुरबिया (नम्बर) जब सुलतान बहादुर शाह गुजरातीसे परास्त हो मुसलमान होगया और तोपोंकी मारसे २ बुर्ज उड़ गई, उस समय सलहदीने सुलतान बहादुर शाहसे कहा है कि आप मेरे बालबच्चे और स्त्रीको न सतावें, मैं गढ़में जाकर लड़ाई बंद करवा दूंगा। सुलतानने एक सिपाही साथ देकर गढ़पर भेजा। उसकी रानी दुर्गावती (जो राणा सांगाकी पुत्री थी) ने अपने स्वामीको देखते ही धिक्कारना प्रारम्भ किया और कहा कि इतनी निर्लज्जताके बजाय तो मर जाना श्रेष्ठ है! मैं अपने प्राण त्यागती हूं यदि तुम्हें राजपुत्रत्वका स्वाभिमान है तो मेरा वैर शत्रुसे लेना। इस प्रकारके वाक्य राजाको बज्रपातके समान मालूम हुए और तत्काल १०० राजपूत जवानोंको साथ ले शत्रुसे जाभिड़ा और इधर राणी दुर्गावतीने ७०० वीर पत्नियों एवं दो बालकोंको लिये प्रचण्ड अग्निमें प्रवेश किया! देखो Brig firista book 4 Pages. 122.

प्यारे सज्जनों! इस प्रकार कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां हरएक व्यक्तिके चित्तमें यह भाव जाग्रत होसकते हैं कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।"

धर्मनिष्ठ सज्जनो! उक्त परिस्थिति और आधुनिक समयपर तुलनात्मक विचार प्रकट किये जायें तो कहना होगा कि पूज्यताके बजाय पैरोंसे ठुकराई जानेका दृश्य नजर आरहा है। पहले तो हमारे मात पिता ही पुत्र पुत्रीके पालनमें अन्तर डाल देते हैं। बात २ पर हमारी माताएं पुत्रीको यह कहकर सुनाया करती हैं कि तू क्या निहाल करेगी? आदि वाक्यप्रहारों द्वारा कन्याके खिलते हुए हृदयकमलको मुरझा डालती हैं। यहांतक कि पुत्रको सबसे अच्छी चीज देती हैं और पुत्रीको सूखी बासी रोटी! छोटा भाई बड़ी बहिनके शिरमें मारदे तो कुछ नहीं कहती और यदि इसके उपलक्षमें बड़ी बहिन छोटे भाईको मारदे तो हमारी माताएं बहुत बुरी तरह बिगड़ने लगजाती हैं। इससे कन्याके हृदयमें कैसे भाव पैदा होसकते हैं सो इस प्रश्नको हम पाठकोंके विचारार्थ यहांही छोड़ते हैं। हमें आश्चर्य इस बातका है कि क्या हम इसको माता पिताका सन्तानके प्रति अनुराग कहें किंवा स्वार्थ! जिस माताके उदरमें पुत्र ९ माह रहता है उतनीही पुत्री, जितना प्रेम पुत्र प्रदर्शित करता है उससे बढ़कर पुत्री। यह ख्याल करना असत्य है कि पुत्र हमारा नाम चलावेगा और पुत्री दूसरेकी घरकी अधिकारिणी होगी। परन्तु उनको विचारना चाहिये कि बिना कन्याके कोई वंश चल

सकता है ? प्राण जाते भी वे पितृभक्ति मातृभक्तिसे च्युत नहीं होती । इसलिये पुत्रोंसे तो पुत्री भी कई दर्जे श्रेष्ठ है । ऐसी हालतमें हमारे माता पिताका सन्तान पालनमें पक्षपात करना मूर्खता है । उनका कर्तव्य है कि समान रीतिसे पालन पोषण करें एवं शिक्षामें भी समान वर्ताव करें ।

शिक्षाके प्रतापसे विनय, विनयसे पात्रता और पात्रतासे धन, धर्मकी प्राप्तिसे स्वर्ग दिखता है, कलह दूर भगती हैं, लक्ष्मी और सरस्वतीकी अटूट कृपा रहती है । एक कविका कहना है कि "जहां सुमति तहं सम्पति नाना, जहां कुमति तहं विपति निदाना" इस वाक्यसे यह और भी स्पष्ट होजाता है कि एकता और दाम्पत्य प्रेमके लिये स्त्रियोंको पढ़ाना लाजिम ही नहीं प्रत्युत अनिवार्य है । भगवान ऋषभदेवने सबसे प्रथम अपनी ब्राह्मी और सुन्दरी नामकी कन्याको पढ़ाया इसलिये लड़कियोंको पढ़ाना कोई नवीन बात भी नहीं है । इस बातपर यह प्रश्न उठ सकता है कि पढ़ाना तो कौन २ विषय, और पाठनशैली कैसी होनी चाहिये । धर्माचरणके लिये गृहस्थधर्म, लिपि ज्ञान, वैद्यक, शिल्पकला एवं कुछ गणित पढ़ाना आवश्यक है । जिससे सब कार्य सम्हाल सके ।

इसलिये अय प्यारी बहिनो ! उठो आप अपने स्वात्माभिमानको पुनरुज्जीवित करो । शिक्षाके प्रचारमें अग्रगामिनी बनो और अपने जीवनको आदर्श समझो । आपको अपना जीवन "कार्येषु मन्त्री करणेषु दासी, भोज्येषु माता रमणेषु रम्भा " के माफिक बनाना चाहिये, फिर देखिये इस देशका उत्थान कैसे नहीं होता ।

जैनधर्म ही * * * सुखका साधन है।

(लेखक-श्री० पं० वृजवासीलालजी जैन, प्रकाशक-"वीर," मेरठ) ।

आज संसारमें जीवतत्वके विषयमें बहुत कुछ मतभेद है । सबसे बुरा रिवाज हमारे देशके विद्वानों तथा सामान्य पुरुषोंमें यह पड़ गया है कि जिस सिद्धांतको पाश्चात्य लोग स्वीकार करलें वह सत्य है, शेष असत्य हैं । ऐसा होनेका कारण ये बताया जाता है कि वे लोग किसी बातको अन्धविश्वाससे नहीं मानते किन्तु उसे प्रत्यक्ष कर देख लेते हैं । परन्तु यह कारण भी ठीक प्रतीत नहीं होता क्योंकि वैज्ञानिक नियम भी बहुतसे बदलते जारहे हैं। जिनके लिये किसी समयमें ये घोषणा की गई थी कि ये नियम अंतिम हैं अर्थात् इनमें अब तब्दीली कभी नहीं होगी वे ही नियम कुछ समयके बाद और विद्वानोंने पलट दिये और संसार अब उन्हें ही मान रहा है । जैसे परमाणुके विषयमें प्रथम जो मत था अब उसके विरुद्ध किन्हीं विद्वानोंने यह घोषणा की है कि प्रथम जितना परमाणु माना जाता था उसमें भी असंख्यात विद्युत्कण हैं और मध्यमें बहुत बड़ा विद्युत केन्द्र है । इत्यादि बहुतसे नियम बदलते रहते हैं इसलिये उनके सिद्धांत ही सत्य है यह कैसे विश्वास किया जावे ?

पाश्चात्य विद्वानोंने तीन प्रकारके विकाश माने हैं-पौद्गलिक विकाश १, जीवन विकाश २,

मानसिक विकाश २, पौद्गलिक विकाशमें उन्होंने यह बतलाया है कि पुद्गलका स्वभाव परिवर्तनशील वा गतिमान् है। उसमें गति होनेके कारण गति होते २ सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्रादि दृष्टिमय जगत् स्वयं बन गया। ये कल्पना फ्रान्सके विद्वन् लाप्लासने की थी और यह कहा था कि इस जगतका मूल उपादान कारण एक द्रव्य था जिसका नाम नेबुला (Nebula) बतलाया था और उसमें परिवर्तन होते २ यह सब जगत् बन गया। परन्तु उन्होंने यह नहीं बतलाया कि जिस कालमें आपने इसे नेबुला रूपमें माना है क्या उससे प्रथम समय नहीं था? या इसमें परिवर्तन शक्ति नहीं थी? यदि थी तो वह कौनसी अवस्थाका परिवर्तित रूप था और उससे प्रथम क्या था? ये प्रश्न निरंतर होता ही चला जायगा जिसका परिहार वे कुछ नहीं कर सके। इस विषयमें निर्दोष सत्य सिद्धान्त यही है जो भगवान् जिनेन्द्रदेवने प्रतिपादन किया है अर्थात् पुद्गलकी पर्यायें दो प्रकारकी हैं—अनादि अनन्त, और सादि सान्त। सूर्य चंद्र गृह नक्षत्रादिककी पर्यायें अनादि अनन्त हैं। इतर पदार्थोंकी पर्यायें सादि शान्त हैं।

जीवन विकाशमें बहुतसे विद्वानोंके बहुतसे मत हैं परन्तु इन सबमें विशेष आदर प्राप्त मि० डार्विनको है जिन्होंने ये सिद्ध करनेकी चेष्टा की है कि सबसे प्रथम एक शरीरमें जीवन उत्पन्न हुआ उसके बाद बहुतसी योनियां बन गई और विकाश होते २ अंतिम विकाश मनुष्य शरीर है। वर्तमानमें बहुतसे पाश्चात्य विद्वन् संशोधित रूपमें इस सिद्धान्तको स्वीकार करते हैं। मि० डार्विन भी विकाशवादी हैं। लेकिन जब मि० डार्विनके सिद्धान्तों पर विचार किया जाता है कि जिस समय प्रारम्भमें जीवन उत्पन्न हुआ उस समय जिस कलल रसके योगसे जीवनशक्ति उत्पन्न हुई उससे पूर्व समयमें वो शक्ति थी या नहीं? यदि नहीं थी तब आई कहांसे, यदि थी तब प्रथम जीवन क्यों नहीं था? यदि यह कहा जावे कि रस तो था परन्तु उस रसमें जो चार तत्व हैं—१ कार्बन, २ हाइड्रोजन, ३ ओक्सिजन, ४ नाइट्रोजन इन चारोंकी जितने २ अंशकी आवश्यक्ता है उतने २ अंशमें नहीं मिली इसलिये जीवन नहीं उत्पन्न हुआ। तब प्रथम बात तो यह है कि जिन मि० हक्सेलने इस रसका प्रयोगशालामें प्रयोग करके इन चार तत्वोंका अनुमान किया है वे इनको निर्जीव मानते हैं। दूसरी बात यह है कि मि० डार्विनके अनुमानसे पूर्व कभी योग्य अंशोंमें मिला ही नहीं, इसका क्या प्रमाण? यदि उसी समय मिला तो क्यों और किसने मिलाया?

तदनन्तर उनका जो यह मत है कि प्रथम सूक्ष्म कीटाणु हुये फिर कुछ बड़े जन्तु हुये फिर सांप हुये फिर रीढ़वाले पशु हुये फिर बन्दर हुये फिर मनुष्य हुये! यहांपर प्रथम तो यह विकाशक्रम ही ठीक नहीं बनता क्योंकि विकाशरूप शरीरकी ऊंचाई चौड़ाईसे है या दृढ़तासे है या ज्ञानसे है? कोई भी क्रम नहीं

बनता और मानवी विकाश हुये तो बहुत समय होचुका। अमेरिकामें खुदाईके समय जो ३॥ फीटकी मनुष्यकी खोपड़ी निकली थी, जिसको भूगर्भके शास्त्रवेत्ताओंने दस हजार वर्षकी निश्चित की थी और संभवतः उससे प्रथम भी मनुष्य होंगे। फिर इतने दिनोंके विकाशके बाद और कुछ नया विकाश क्यों नहीं हुआ? ये जितना जीवन संबंधी विकाश बाद है समस्त भ्रममूलक है किन्तु भगवान् जिनेन्द्र द्वारा प्रतिपादित यही सिद्धान्त सत्य है कि ये जीव अनादि कालसे कर्मोंके वशमें पड़ा हुआ चार जाति सम्बन्धी चोरासी लाख योनियोंमें जन्म मरण करता रहता है। जिसमें ये कोई क्रम नहीं है कि इस शरीरके बाद यह शरीर धारण करना पड़ेगा किन्तु जब जैसे कर्म करता है तब वैसा शरीर धारण करता है।

मनोविकाशके संबंधमें मि० हर्बर्ट स्पेन्सर आदि विद्वानोंने ये विचार प्रकट किये हैं कि जिसप्रकार मि० डार्विनने जीवन विकाशका क्रम माना है उसी प्रकार मनोविकाश वा ज्ञान-का विकाश होता जाता है, जिसका क्रम यह बतलाते हैं कि पशुओंसे ज्यादा ज्ञान असभ्य जंगली मनुष्योंमें था और वह विकाश होते २ आजकलके मनुष्योंमें और भी ज्यादा है। परन्तु ये नियम भी भ्रममूलक है। क्योंकि प्रथम ये क्रम ही नहीं बनता कि पशुओंसे सब ही मनुष्योंमें ज्ञान विशेष होता है क्योंकि समाचार पत्रोंसे पाठकोंको ज्ञात होगा कि जर्मन युद्धके समय कबूतरोंने कितने बुद्धिमानीके कार्य किये थे। एकबार हिन्दी बंगवासीमें निकला था कि अमेरिकामें एक घोड़ा ऐसा है जिसके सामने संख्या लिख देनेसे वह पैरोंसे जोड़ लगा देता है। कुत्ता बंदरोंकी भी बहुतसी क्रियायें ऐसी हैं जिनको सामान्य मनुष्य नहीं कर सक्ता। ये क्रमविकाश मनुष्योंमें भी ठीक सुघटित नहीं होता क्योंकि ये विकाशक्रमसे होता ही जाता तो पितासे पुत्र विशेष ज्ञाता होता और विकाशक्रम यह स्वाभाविक है तब इतने स्कूल कॉलिज इत्यादि बनानेकी कौन आवश्यक्ता है? जितने मनुष्य हैं सब ही समान ज्ञानी होने चाहिये, ऐसे मनुष्य क्यों हैं जिनको पढ़ानेके लिये बहुत प्रयत्न करनेपर भी वे पढ़ नहीं सके? वर्तमान संसारमें अज्ञानी होना ही नहीं चाहिये परन्तु बहुतसे महामूढ मनुष्य उपस्थित हैं इत्यादि। इस सिद्धान्तमें भी भगवान् जिनेन्द्र-देवद्वारा प्रतिपादित यही सिद्धान्त सत्य है कि इस जीवका स्वभाव ज्ञान है परन्तु इस ज्ञान गुणको आवरणित करनेवाले ज्ञानावरणीय कर्म है, जिनका क्षयोपशम होता रहता है उतनाही ज्ञान विकासित होता रहता है और जितना ज्ञानावर्णीय कर्मका उदय होता है उतनाही ज्ञान आवृत होजाता है अर्थात् ज्ञानके विकाश तथा ह्रासमें कोई क्रम कारण नहीं है किन्तु ज्ञानावर्णीय कर्म है।

विकाशवादका सिद्धान्त ही भ्रममूलक है क्योंकि प्रत्यक्ष बाधित है। एक ही पदार्थमें विकाशके बाद पतन होजाता है। इस विषयमें भी भगवान जिनेन्द्रदेव द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त सत्य है कि समस्त पदार्थोंमें षट्गुणी हानि वृद्धि होती रहती है, न सदा हानिही होती है न सदा वृद्धि ही होती रहती है। अस्तु!

मेरे लिखनेका यह अभिप्राय नहीं कि पाश्चात्य विद्वानोंके मत मानना ही नहीं चाहिये किन्तु मेरा अभिप्राय यह है कि जैसे इतिहासवेत्ताकी सम्मति गणितशास्त्रके सिद्धान्तोंमें मान्य नहीं हो सकती, इसीप्रकार पाश्चात्य विद्वान् केवल पौद्गलिक पदार्थोंको ही अपनी२ रसायनशालाओंमें प्रयोग करके उसकी शक्तियोंका परिज्ञान कर रहे हैं इसलिये पौद्गलिक पदार्थोंके विषयमें उनकी सम्मति हमको मान्य है। परन्तु जीवतत्व जो पुद्गलसे सर्वथा भिन्न पदार्थ है उसके विषयमें उनकी सम्मति हमको माननेकी आवश्यका नहीं है। जीवतत्वके विषयमें भारतीय सिद्धांतोंमें भी कुछ मतभेद है। न्याय सांख्य वेदांत मीमांसा योग वैशेषिक दर्शनकारोंने तथा वेदोंने जीवतत्वका स्वतंत्र लक्षण कहीं भी नहीं किया, एक परमात्माकी सत्ता ही स्वीकार की है। केवल वैशेषिक दर्शनकारोंने आत्मा एक द्रव्य माना है परन्तु उसका लक्षण निर्देश कुछ नहीं किया, केवल जीवित शरीरकी होनेवाली क्रियाओंको उसके चिह्न बतलाये हैं। इन्हीं दर्शनकारोंने उस परमात्मशक्तिको ईश्वर ब्रह्म पुरुष आदि कई नामोंसे कहा है। और उसे मायासे प्रकृतिसे वासनासे कर्माशयसे संबंधित अवस्थामें जीव कहकर और शुद्ध अवस्थामें ईश्वर वा ब्रह्म कहा है। जब इन सिद्धान्तकारोंने जीवतत्वका कुछ लक्षण निर्देष ही नहीं किया तब उसपर विचार ही क्या होसक्ता है?

कुछ विद्वानोंका मत है कि ईश्वरका लक्षण सच्चिदानन्द है और जीवका लक्षण सतुचित है। सत्का अर्थ है सत्ता वा अस्तित्व। चित्का अर्थ है चैतन्य अर्थात् जीव नित्य और चेतनावान् है। इस लक्षणमें जीवमें आनन्द गुणका अभाव बतलाया गया है। जिस पदार्थमें जो शक्ति होती है वह ही व्यक्त होसक्ती है, जो शक्ति नहीं होती वह व्यक्त भी नहीं होसक्ती; इसीलिये जीवका मोक्षादिके लिये प्रयत्न करना व्यर्थ है। यहांपर वे विद्वान यह कह देते हैं कि जीव मोक्षावस्थामें परमात्माका विशेष सन्निधिकरण होनेके कारण परमात्माके आनन्दगुणका उपभोग करता है। परन्तु उनका यह कथन दार्शनिक विचारवालोंके सन्मुख हास्यास्पद है क्योंकि किसी द्रव्यका गुण किसी द्रव्यमें नहीं जाता। यदि ऐसा होने लगे तो द्रव्य शांकर्य दोष आजाता है, जिसका परिहार किसी प्रकार भी नहीं होसक्ता। और न किसी पदार्थका कोई लक्षण ही निश्चित होसक्ता है। जिस गुणकी मुख्यतासे आज किसी पदार्थका लक्षण किया जाता है कल वही गुण दूसरे पदार्थमें चला जाता है।

यदि विशेष सन्निधानसे ही किसी द्रव्यका गुण किसी द्रव्यमें चला जाता है तो जड़ पुद्गलका विशेष सन्निधान होनेसे इसका जड़त्व धर्म भी जीवमें आसक्ता है। इत्यादि अनेक दोष उपस्थित होते हैं। सुख गुणका ज्ञानके साथ अविनाभावी संबंध है। चार्वाकादि मतवालोंने जो स्वतन्त्र जीवतत्वके होनेका निषेध किया है उसपर विशेष विचार करनेकी आवश्यका नहीं है। जीवके नित्य स्वतन्त्र होनेके वर्तमानमें बहुतसे प्रत्यक्ष

प्रमाण हैं। कई समाचारपत्रोंमें यह समाचार छपते रहते हैं कि अमुक शहरमें किसी २ बालकने अपने पूर्वजन्मके वृत्तान्त कहे और सर्वथा सत्य निकले। इसप्रकार प्रत्यक्ष प्रमाण होनेपर अनुमान प्रमाणकी आवश्यक्ता ही नहीं रहती। पृथिव्यादि जिन पंचतत्वोंके संयोगसे चेतनाशक्तिकी उत्पत्ति कही जाती है वह किसी प्रकारसे भी सिद्ध ही नहीं होती। जब चार्वाकोंका ये सिद्धान्त है जो गुण है, वह ही द्रव्योंसे स्वयं संबंधित होकर पदार्थ बनजाते हैं, पदार्थोंका कर्ता कोई नहीं, पदार्थ स्वयं बन जाते हैं, तब चेतना गुण भी जिस द्रव्यसे संबंधित होजाता है वह ही जीव माया स्वतन्त्र पदार्थ है।

इसप्रकार जीवसंबंधी जैनदर्शनेतर विद्वानोंके विचारोंपर विचार करनेसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि किसी भी विद्वानने जीवतत्वके स्वरूपको यथार्थ प्रतिपादन नहीं किया अतएव यह स्वयं सिद्ध है कि भगवान् जिनेन्द्रदेवके द्वारा प्रतिपादित ज्ञान दर्शन सुख सम्यक्त चारित्र वीर्यादि अनन्त गुणोंका अखंड पण्ड अनादिनिधन चेतना पुंज है यही वास्तविक जीवतत्वका स्वरूप है इसी प्रकार तमाम सत्यार्थ तत्वोंके प्रतिपादन करनेसे जैनधर्म ही सुखका कारण है।

जाति सुधार।

कीजे जाति सुधार सुधीजन, कीजे जाति सुधार;
कुमति रूढ़ियोंने आ घेरा,
निज कर्तव्योंसे मुंह फेरा।
इससे आज भटकते फिरते, दीन हुये हर द्वार॥
बालविवाह खुशीसे करते,
जरा न शंका हैं मन धरते।
अरु करते अनमेल शादियां, बड़े२ सरदार॥
नित बूढोंका व्याह रचाते,
कन्या विक्रयको अपनाते।
बिन रोके इन कुरीतियोंके, नहिं होगा उद्धार॥
आपसमें जो छिड़ा हुआ है,
योग विजातिय पड़ा हुआ है।
आर्ष प्रणीत वचनपर फिर तुम, क्यों करते तकरार
नित प्रति झगड़े नये हैं होते,
टांग पसारे तुम हो सोते।
कुड़ची जैसे जुल्म देखकर, क्यों न करते विचार
सभा सम्मेलन हो नित करते,
नये २ प्रस्ताव सुधरते।
फिर भी दिखाता प्रियवर, कोई जाति सुधार॥
बन्धु हमारे भूखों मरते,
विद्या बिन जहं तहं वे फिरते।
दे करके सद्ज्ञानामृतको, कीजे ज्ञान प्रचार॥
धर्म अहिंसा परमो धर्मः,
फैलादो घर २ यह मर्मः।
फहरावे पुन वीर पताका, ग्राम देश प्रति द्वार॥
हिलमिल करके हृदय मिलाओ,
द्वेष भावको दूर भगावो।
करके पूरा जाति संगठन, कीजे 'देव' सुधार॥

बाबू छंकोड़ीलाल जैन–गोटेटोरिया।

सच्चे वीर।

(रचयिता–पं० कल्याणकुमार जैन "शशि", रामपुर।)

(१)

प्राण यदि जावें भले पर धर्मका क्यों ओत हो ?
भाव हार्दिक हैं यही जिनधर्मका उद्योत हो ॥
इसलिये मेरी न तुम हे बन्धुवर ! चिन्ता करो।
जैन धर्म प्रकाश हित निज प्राणकी रक्षा करो ॥

(२)

होगये सहसा विकल अकलंकजी इस बातसे।
तुरत यों कहने लगे कम्पित गिरा लघु भ्रातसे ॥
लोचनोंके सामने क्या बन्धु मरने दूं तुझे ?
हाय ! क्या बनकर निठुर तन त्याग करने दूं तुझे ॥

(३)

अन्य जगकी वस्तुएँ तो प्राप्त होसकती सभी।
क्या सहोदर भ्रात भी फिर विश्वमें मिलता कभी ?
पुत्र मित्र कलत्र इनका नित्य मिलना सिद्ध है।
भ्रात मिलता है न फिर यह बात लोक प्रसिद्ध है ॥

(४)

तर्क सुन अकलङ्कका निकलङ्क मौन खड़े रहे।
फिर तुरन्त विचार कर मृदु बैन यों सादर कहे ॥
धन्य है जगमें वही जो धर्म खो सकता नहीं।
धर्मसे बढ़कर परम प्रिय भ्रात होसकता नहीं ॥

(५)

जन्म लेकर कौन जगतीमें नहीं मरता कहो ?
किन्तु अवसरका मरण सौभाग्यसे मिलता अहो ॥
धर्म पक्ष समक्ष मत प्रिय बन्धुमें ममता धरो।
हो भला जिनधर्मका, हे भ्रात कार्य वही करो ॥

नेपालके शिलालेख और जैनधर्म ।

(लेखक—बाबू कामताप्रसाद जैन, सम्पादक-"वीर", अलीगंज ।)

जैनशास्त्रोंमें कहा गया है कि भगवान महावीरने कैवल्यपद प्राप्त करके समग्र भारत और उसके आसपासके देशोंमें पवित्र धर्मका प्रचार किया था । और फिर उसी धर्मका प्रचार जैनाचार्योंने यूनान आदि दूरस्थ देशोंमें जाकर कर दिया था । जैनियोंकी इस मान्यताके प्रमाणमें आधुनिक खोजद्वारा प्राप्त उल्लेख मौजूद हैं । यह स्पष्ट है कि कैस्पिया और रूमानियामें एक समय जैनधर्मका अस्तित्व था । नॉरवे और स्वेडेनमें भी अहिंसा धर्मका झंडा फहरा चुका है । ओकसियाना, बल्ख और समरकंदमें भी जैनधर्मका प्रकाश फैल चुका है । जेरूसलमके एक द्वारका नाम ही इस धर्मकी स्मृतिको आज भी बतला रहा है । नेपालके हिमालय तटके सीमाप्रान्तमें एक जैन मुनिका पवित्र मंदिर मौजूद है । यूनानके अथेन्स नगरमें आज भी एक जैन श्रमणकी समाधि जैनधर्मके प्रभावको प्रकट कर रही है ।* सीलोन (लङ्का) में भी भगवान महावीरका धर्म प्रचलित हुआ था, यह बात स्वयं बौद्ध ग्रंथोंसे प्रकट है । वहांके प्रसिद्ध नगर अनुरुद्धपुरमें एक 'निरग्रन्थ-श्रमणोंका मंदिर बतलाया गया है ×। सारांशतः यदि जैनसमाज स्वयं अपने विद्वानोंद्वारा और अधिक खोज इस विषयकी करावे तो सारे संसारमें जैनधर्मकी व्यापकताके चिह्न अवश्य ही प्राप्त होजावें। इस लेख द्वारा आप यह देखेंगे कि जैनधर्म संभवतः नेपालका राजधर्म भी रह चुका है ।

'इन्डियन एन्टीक्वेरी' भाग ९ पृष्ठ १९१—१९४ पर पं० भगवानलाल इन्द्रजी और डॉ० जी० बुल्हर साहबने कतिपय शिलालेख प्रकट किये हैं, जो उनको नेपालसे मिले थे और उनका अनुवाद भी दिया है । इन महोदयोंने अपने विवेचनमें इन शिलालेखोंका कोई संबंध जैनधर्म अथवा किसी अन्य धर्मसे प्रगट नहीं किया है, किन्तु इनकी आकृति और 'परम भट्टारक' आदि शब्दोंने हमें इनका विशेष अध्ययन करनेके लिए आकर्षित किया। वस्तुतः हमें इन शिलालेखोंका संबंध, जिनको हम नीचे जैन विद्वानोंके अवलोकनार्थ उपस्थित करते हैं, जैनधर्मसे स्पष्ट नजर पड़ता है ।

पहिले ही नेपालाधिपति राजा मानदेवका शिलालेख संवत् ३८६ का दिया गया है ।

१—गोल्डिन्सन साहबकी रिपोर्ट । २—भगवान महावीर पृष्ठ ६ । ३—मेजर जनरल फरलॉनाकी "शार्ट स्टडीज" पृष्ठ ६७ । ४—पूर्व पृष्ट ३३ । ५—पूर्व पृष्ट २८ । * बंबईप्रान्तके प्राचीन जैन स्मारक पृष्ट २१३ ।

× Der Jainusmus. P. 58

इसमें जैनधर्मका संबंध कुछ भी नहीं है। यह स्पष्ट है कि राजा शिवभक्त था। यही हाल दूसरे शिलालेख सं० ४१३ का है। किंतु तीसरा शिलालेख जो राजा वसंतसेनका सं० ४३९ का है, उसमें अवश्य ही जैनधर्मका संबंध हो तो आश्चर्य नहीं है। बतलाया गया है कि यह शिलालेख छे फीट ऊंचे एक पत्थर पर उकेरा हुआ है, जिसके सिरेपर चक्र और दो शंख अंकित हैं। यह पत्थर लगन्टोल काटमांडूके निकट लुगकदेवीके मंदिरके पास पड़ा हुआ है। वर्षात आदिके कारण अक्षर अस्पष्ट होगए हैं। कुल २३ लाइन हैं। भाषा संस्कृत है। यह इसप्रकार पढ़ी गई हैं:—

(१) ॐ स्वस्ति मानगृहात्य (रमदे) वतबप्पभ-
(२) ट्टारक महाराज श्री पादानुध्यातः श्रुतन-
(३) (यद्वा) दानदाक्षिण्यपुण्यप्रतापविक-
सितसि—
(४) तकीर्तिभट्टारकमहाराज श्रीवसंत—
(५) सेनः (कुशली) .... स्वचिकरणेषु कर्म—
(६) स्थान (ब) .... जेकाश्वकुश
(७) .... विज्ञित्तमस्तु जो यथा
(८) .... किष्कुक
(९) ... . कुबेर
(१०) .... रणाय
(११) .... ट्टारक—
(१२) ....भ्यप्येतेषान्त्र—
(१३) .... द्विकार्येषु सद्दि
(१४) ....यथापि तेषां—
(१५) .... (भो) चित ....
(१६) ....
(१७) .... त्पादोपजीविभिरि ....
(१८) .... यश्चेषामाज्ञाप्युल्लं (घ्य) ....
(१९) .... द्दा तस्याहं दृढं मर्षा....
(२०) इति समाज्ञापना संवत् ४३९ (आश्व)
(२१) युजि शुक्ल दिवा १ दूतकः सर्व्वदण्डना
(२२) यक महाप्रतिहाररविगुप्त इति
(२३) भाक्षुडि च महीशीले व्यवहरतीति।

इसका भाव यह है कि मानगृहसे भट्टारक महाराज पद धारी परम (Great) वसन्तसेन जो परम देव बप्पभट्टारकके चरणोंका ध्यान करते हैं, वह आज्ञा देते हैं। आज्ञा क्या थी, वह लुप्त होगई है। भाव ही अपरभागमें राजाके गुणोंकी प्रशंसा है। अन्तिम भागका अर्थ है कि यह आज्ञा संवत् ४३९ के आश्वयुज मासकी शुक्लपक्ष प्रतिपदाको अंकित हुई। दूतक सर्व्वदण्डनायक महाप्रतिहार रविगुप्त थे, जो भाक्षुडु महीशिलमें कार्य कर रहे थे। इसमें जिन परम देव बप्पभट्टारकका उल्लेख है, उनके विषयमें पंडितजी या डॉ० सा० फुटनोट द्वारा अनभिज्ञता प्रकट करते हैं; यथाः—

"I am unable to say who this Bappa Bhattaraka was But I think, that it is a general title used by chief priests; for the Valabhi Kings and those of Vengi (Journal Bo. Br. R. A. S. XI. 355) also declare their devotion to the feet of this Bappa Bhattarka. Acharyas or chief priests frequently bear the same titles as crowned kings."

अतएव इस विवेचनसे इस शिलालेखपर कुछ विशेष प्रकाश नहीं पड़ता है; किन्तु हमें इसका संबंध जैनधर्मसे होना बहुत संभवित दिखता है। पहिले ही जो इसपर शङ्ख और चक्रके चिह्न हैं वे जैनधर्ममें विशेष स्थान रखते हैं। शङ्ख २२ वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथका चिह्न है और चक्र "धर्मचक्र" है, जो तीर्थंङ्कर भगवानके समवशरणमें होता है। इन चिह्नोंको देखते हुए यह उचित जंचता है कि इस शिलालेखका संबंध नेपालमें स्थित किसी उस जैन मंदिरसे हो, जिसके मूलनायक भगवान नेमनाथ हों। इस अनुमानका समर्थन राजा वसन्तसेनकी 'भट्टारक' उपाधि और परमदेव बप्प भट्टारकके उल्लेखोंसे होता है। भट्टारक जैन साधुओंका वाचक खास शब्द है। जैन मंदिरोंके अनेक लेख व शास्त्र इसके साक्षी हैं। तथापि चालुक्य वंशके उन राजाओंकी यह उपाधि रही है, जो जैन धर्मानुयायी थी। राष्ट्रकूट वंशके परम जैनी राजा अमोघवर्षकी भी यह उपाधि थी। सम्राट् कुमारपाल जब जैनी हुये तो उनके विरुदोंमें परम "परम भट्टारक" भी लिखा जाने लगा ('समस्तराजावलिविराजितमहाराजाधिराज परमभट्टारक परमेश्वर....श्री कुमारपालदेव कल्याण विजयराज्ये') इस प्रकार वल्लभीके राजा शीलादित्यको श्वेताम्बर शास्त्र जैन धर्मानुयायी प्रगट करते हैं और उनके विरुदोंमें भी एक विरुद 'परमभट्टारक' है। उदयपुरके राणाओंमें जैत्रसिंहके पुत्र तेजसिंह 'परमभट्टारक' उपाधिको धारण किये हुये मिलते हैं और इन्होंने जैनोंके लिये कई कार्य किये तथा इनकी पत्नी जयतल्लदेवी जैनधर्मानुयायी थी; जिन्होंने चित्तौड़में 'श्यामपार्श्वनाथ' का मंदिर बनाया था। ऐसे ही और भी कई राजओंका विरुद 'परमभट्टारक' मिलता है और उनका जैन सम्पर्क भी स्पष्ट है। इस दशामें यह कहा जासक्ता है कि राजाओंका 'भट्टारक' विरुद उनके जैन सम्पर्कका द्योतक है।

उक्त लेखके बप्प भट्टारक यदि जैन साधु हों तो आश्चर्य नहीं। "बृहद जैन शब्दार्णव" (पृ० ७४) में है कि एक बप्पदेव नामक जैन साधु थे, जिन्होंने 'प्रथम श्रुतस्कंधके ५ खंडो' पर 'व्याख्या प्रज्ञप्ति' नामक टीका लिखी थी। होसक्ता है कि इन्हीं बप्पदेवका उल्लेख 'बप्प भट्टारक' रूपमें हुआ हो। किन्तु इसके लिये पुष्ट प्रमाणोंकी जरूरत है। उधर उदयपुर राणावंशके संस्थापक भी एक 'बप्प' नामक व्यक्ति कहे जाते हैं। चित्तोड़के लेखमें इनके उल्लेखमें एक चरण यह भी है—

"बप्पाख्यो वीतरागश्चरणयुगमुपासीत (सीष्ट) हारीतराशेः।" इसमें 'वीतराग' शब्द दृष्टव्य है; जो जैनधर्ममें विशेष रूढ़ है। नेपालका राजवंश मेवाड़के राणाकुलसे संबंधित कहा जाता है। होसक्ता है कि राणावंशके मूलपुरुष बप्प ही जैन साधु होकर बप्पदेव भट्टारक हुये हों। इस विषयमें एक गवेषणापूर्ण खोज होनेकी जरूरत है। तो भी उक्त शिलालेखका जैन सम्बन्ध साध्यकोटिमें आता है और इस अपेक्षा फिलहाल बप्पभट्टारकको जैन मान लेनेमें कोई आपत्ति नहीं है।

जैन शिलालेखोंका प्रारम्भ 'ॐ, स्वस्ति, श्री' शब्दोंसे होता है और उक्त एवं अन्य शिलालेखोंमें यही क्रम पाया जाता है। डॉ० ग्लासेनॉप्पने अपनी पुस्तक 'डर जैनिज्मस' में यही लिखा है (पृ० १३१-१३६) इसलिये नेपालका इन शिलालेखोंका जैन संबंध स्वीकार कर लेना बेजा नहीं है। संभव है कि राजा वसंतसेन जैनधर्मभक्त हों।

अगाड़ी चौथा शिलालेख सं० ५३६ का अस्पष्ट है। उसमें किसीको एक ग्राम दान देनेका उल्लेख है। पांचवां शिलालेख राजा शिवदेवका है, जिनकी भी उपाधि 'भट्टारक' और "लिच्छिविकुलकेतु" आदि हैं। शायद उन राजाका भी जैनधर्मसे अनुकरण हो तो अनुचित नहीं; क्योंकि भट्टारक उपाधि उन राजाओंको ही प्रायः मिलती है कि जिनका अथवा जिनके पूर्वजोंका सम्बन्ध जैनधर्मसे रहा हो; जैसे राष्ट्रकूट चालुक्य राजवंश। यहां यह राजा लिच्छिविकुलके बताये गये हैं और लिच्छिविकुलसे भगवान महावीरका घनिष्ट सम्बंध था। राजा चेटक भगवानके मातुल थे। तथापि इस कुलमें भगवानके पहलेसे जैनधर्मकी गाढ़ मान्यता थी, यह प्रगट ही है। इस दशामें राजा शिवदेवका 'भट्टारक' उपाधि धारण करना, जो जैन संबंधकी द्योतक है, उचित ही प्रतीत होता है। इस शिलालेख द्वारा यह राजा एक ग्रामके निवासियोंको कुछ अधिकार सामन्त अंशुवर्मन्‌की सिफारशसे देते हैं।

छट्ठा शिलालेख इन्हीं अंशुवर्म्मन्‌का श्रीहर्ष सं० ३४का बतलाया गया, परन्तु यह लेख स्पष्ट नहीं है। यह शिलालेख काटमान्डूसे ४ मील दक्षिण दिशामें स्थित बुङ्गमती ग्रामके निकट गढ़े हुये पाषाणपर अंकित है। इसके सिरे पर दो हिरनोंके बीचमें चक्रका चिह्न है। इस पाषाणको हर बारह वर्षके उपरान्त 'अवलोकनेश्वर' की रथयात्राके समय यहांके निवासी निकालते हैं। इसकी भी लिखावट उपरोक्त दो शिलालेखोंके समान है और यह इसप्रकार है-

(१) स्वस्ति कैलासकूटभवनाद्भगवत्पशुपति भट्टारक पादा-

(२) नुगृहीतो बप्पपादानुध्यातः श्रीमहासामन्तांशुवर्म्मा कुशली-

(३) बुगायूमीग्रा (म) निवासिपगवा (न्) कुटुम्बिनो यथा प्रधानअंकुश-

(४) कमाभाष्य (समा) ज्ञापयति विदितम्भवतु भवताअंकुक्कूटम्-

(५) काणा .... नां मत्स्यानाञ्चा वा बनेन परितुष्टैरस्वामि-

(६) भं .... प्रसादः (क) तो युष्माभिरप्ये-

(७) .... यदा च पुनर्धर्मसङ्कराणि-

(८) .... (त)था राजकुलं स्वम्प्रविचार-

(९) .... प्रसादोस्मत्प-

(१०) .... विलंघचान्यथा-

(११) .... नो नियतम्पुष्कला मर्यादा ब-

(१२) .... भिः पूर्वराजकृतप्रसादा-

(१३) .... दूतकश्चात्र महासर्वा-

(१४) यक विक्र संवत् ३४ ज्येष्ठ शुक्ल दशम्या सू

इसमें महासामन्त अंशुवर्म्मन्‌के कैलाशकूट

महलसे बुगायूमी ग्रामके निवासियोंको यह आज्ञा देनेका उल्लेख है कि वे मुर्गी, सूअर, और मच्छी आदि पशुओंकी प्राणरक्षा पर हर्षित होंगे। शेषभाव उड़ गया है। दूतक विक्रमसेन हैं। इन महासामन्तको पशुपति भट्टारकके पादानुग्रहीत और बप्पदेवके चरणोंके ध्याता प्रगट किया गया है। पशुपति भट्टारकका नामोल्लेख पहले नहीं आया है। इससे ऐसा माळूम होता है कि बप्पदेव भट्टारक दक्षिण-पश्चिम भारतके देशोंमें धर्म प्रचार करते हुये यहां पहुंचे होंगे, क्योंकि वल्लभी और वेन्गीके राजागण भी इन्हीं बप्पदेवकी आराधना करते मिलते हैं। यहां पहुंचकर जब मानदेवके वंशमें उन्होंने जैन धर्मके प्रतिभक्ति उत्पन्न करदी होगी जैसे कि पूर्वोक्त विवेचनसे प्रगट है, तब उन्होंने अपने गुरु अथवा सहयोगी भट्टारक पशुपतिको भी बुला लिया होगा। अगाड़ी एक शिलालेखमें उपरान्त एक भट्टारकका उल्लेख 'पशुपत वंश-परम्परा' रूपमें जो हुआ है, उससे यही प्रतिभावित होता है कि यह पशुपति भट्टारक बप्पदेवके गुरु हैं अथवा इन्होंने नेपालके पट्टपर पशुपति भट्टारकको ही आसीन किया था। इसके अतिरिक्त यह भी संभव है कि यहां पशुपतसे भाव श्री तीर्थंकर भगवानका हो क्योंकि बप्प भट्टारकका यहां आना स्पष्ट है। इसलिए उन्होंने अपने तीर्थंकर भगवानसे ही पट्ट चलाया होगा। पशुपतिका अर्थ श्री पार्श्वाभ्युदयकी टीकामें जिनेन्द्र भगवान किया है; यथाः—"पशुपतेः पशून् मन्दबुद्धिन् पाति रक्षाति इति पशुपतिः। तस्य हितोपदेष्टुः जिनेश्वरस्येत्यर्थः। कर्महतः पशुपति नामेति नाशङ्कनीयम्। 'सर्वज्ञः शुभतोजिनः पशुपतिः' इति बहुलमुपलम्भात्।" इस ग्रंथसे यह भी प्रगट होता है कि यहां नेपालमें उस समय जैन मंदिर मौजूद थे। (देखो पृ० १४८) हालमें एक ब्रह्मचारी पाशुपत काठमांडूके मंदिरमें भगवान पार्श्वनाथकी मूर्तिके दर्शन कर आये बतलाते हैं।

हां, आजकल 'पाशुपत' नामक एक संप्रदाय विशेषका अस्तित्व मिलता है और वह शैव धर्मकी ही एक शाखा कही जाती है। किन्तु उसकी उत्पत्ति किस तरह हुई, यह प्रकट नहीं। इन शिलालेखोंके समयमें शैवधर्म और उसमें बड़ा अंतर था, यह स्पष्ट है। अतः हो सक्ता है कि मूलमें उसका निकास जैनधर्मसे हुआ हो। नेपालके इतिहाससे ऐसा ही भास होता है। जोहो, इस सबसे यह बिल्कुल संभवित है कि यह भट्टारकगण जैन थे और वसन्तसेन, अंशुवर्म्मन, आदि राजाओंको उन्होंने जैन धर्मका प्रेमी बनाया था। तथा नेपालमें जैन मंदिर थे और वहां जिनेन्द्र भगवान पशुपति नामसे प्रख्यात थे। इस शिलालेखके हिरण और चक्र जैन चिह्न हैं। हिरण शांतिनाथ स्वामीका चिह्न है और चक्र धर्मचक्र है। तथापि इसमें अहिंसाकी प्रधानताको व्यक्त करनेवाली पशुओंका रक्षा करनेकी आज्ञा है, सो भी जैनधर्मके मूल भावकी द्योतक है। इस तरह इसका जैनधर्मसे संबंध स्पष्ट प्रकट होता है। तथापि सातवां शिलालेख जो इन्हीं सामंतका

दिया गया है, उससे यह स्पष्ट होजाता है कि इन्होंने अपने पूर्वज मानदेवादिके धर्मके अतिरिक्त दूसरे धर्मको अवश्य ही स्वीकार किया था। तथापि शिवधर्मकी मान्यता स्वीकार करनेपर भी उन्होंने अपने पूर्वजों द्वारा निर्मापित 'शिवलिंगों' की रक्षा करनेकी आज्ञा प्रगट की है। जैसे कि इस शिलालेखसे प्रगट है। इसपरसे शायद यह कहा जावे कि इस दशामें उनका जैनधर्म प्रेमी होना असंभव है। परन्तु यह आपत्ति कुछ मूल्य नहीं रखती, जब हम जानते हैं कि सिद्धराज, कुमारपाल आदि जैसे प्रख्यात जैन राजाओंके भी ऐसे ही उल्लेख मिलते हैं। जैन श्रावक तेजपाल, वस्तुपालके विषयमें ज्ञात है कि उन्होंने जैन होते हुये भी महादेवका मंदिर बनवाया था। सचमुच राज्यवंशोंमें जो पूर्वजोंका धर्म होता था उसके प्रतिसे एकदम कटुभाव धारण नहीं कर लिये जाते थे, ऐसा ही प्रतीत होता है। अतएव अंशुवर्मन् जो निम्न लेखमें अपने पूर्वजोंकी कितियोंकी रक्षाका प्रबंध कराता है तो कोई अनोखी बात नहीं है। शिलालेख इसतरह पढ़ा गया है:—

(१) ॐ स्वस्ति कैलासकूटभवनादनिशि निशि चानेकशा—
(२) स्त्रार्थविमर्शावसादितासद्दर्शनतया धर्माधिका—
(३) रस्थितिकारणमेवोत्सवमनतिशयम्मन्यमा—
(४) नो भगवत्पशुपतिभट्टारकपादानुगृहीतो बप्प—
(५) पादानुध्यातः श्र्यंशुवर्मा कुशली पश्चिमाधिक—
(६) रणवृत्तिभुजो वर्तमानान्भविष्यतश्च यथार्ह—
(७) कुशलमाभाष्य समाज्ञापयति विदितम्भव—
(८) तु भवताम्पशुपतौ भगवाञ्छङ्करभोगेश्वरोस्मद्भ—
(९) गिन्या श्री भोगवर्म्मजनन्या भोगदेव्या स्वभर्तृ राज—
(१०) पुत्रशूरसेनस्य पुण्योपचयाय प्रतिष्ठापितो—
(११) मश्च तद्दुहित्रास्मद्भागिनेय्या भाग्यदेव्या प्रतिष्ठा—
(१२) पितो ळडितमहेश्वरो यश्चैतत्पूर्वजैः प्रतिष्ठापि—
(१३) तो दक्षिणेश्वरस्तेषामधः शालापाञ्चालिके-भ्यः प्रतिपा—
(१४) दनायातिसृष्टानामस्माभिः पश्चिमाधिकरणस्याप—
(१५) वेशेन प्रसादः कृतो यदा च पाञ्चालिकानां प्रतिक्षुन
(१६) कार्यमेतद्गतमुत्पस्यते यथाकालं वा नियमितं व—
(१७) स्तु परिहापयिष्यति तदा स्वयमेव राजभिस्तरा—
(१८) सनेन विचारः करणीयो यस्त्वेतामाज्ञामतिक्रम्यान्यथा—
(१९) प्रवर्त्तिष्यते तं वयममर्षयिष्यामो भाविभिरपि भूप—
(२०) तिभिर्धर्म्मगुरुतया पूर्व्वराजकृतप्रसादानुवर्तिभि—
(२१) रेव भवितव्यमिति स्वयमाज्ञा दूतकश्चात्र युवरा—
(२२) जोदयदेवः संवत् ३९ वैशाखशुक्लदिवा दशम्यां

इसमें भी सामन्त अंशुवर्म्माको 'पशुपति

भट्टारकपाद नुगृहीतो ' और 'बप्पपादानुध्यातः' प्रगट किया है; तथापि कहा गया है कि उन्होंने शास्त्रार्थोंके मन्थनसे अपनी अदृढ़ मान्यताओंको नष्ट कर दिया है। उपरांत अपने पूर्वजों द्वारा प्रतिष्ठित तीन शिवलिंगोंकी व्यवस्थाकी आज्ञा दी गई है। आठवां शिलालेख कुछ महत्वका नहीं है। उसमें सामान्यतः कोई स्थान बनानेका उल्लेख है। नौवां शिलालेख जिष्णुगुप्तका श्री हर्ष सं० ४८ का है। यह कछितपट्टनमें एक मंदिरके पास पड़ा हुआ है। इसप्रकार है:-

(१) ॐ स्वस्ति............भट्टारक महाराज-

(२) श्री ध्रुवदेवस्य....प्रजाहितैषी निरवद्यवृत्तः

(३) पुण्यान्वयादागतराज्यसम्पत्समस्तवी (राश्रि) तशासनो यस्स कैलासकूटम-

(४) बनाद्भगवत्पशुपतिभट्टारकपादानुगृहीतो बप्पपादानुध्यातः श्री जिष्णुगुप्तः

(५) (कु) शली थम्बुगांगुलमूलवाटिकाग्रामेषु निवासमुपगतान्कुटुम्बिनः कुशल-

(६) (मा) भाष्य समाज्ञापयति विदितमस्तु भवताम्भट्टारकमहाराजाधिराजश्रयंशु-

(७) वर्म्मपादेर्युष्मदीयग्रामाणामुपकाराय योसौ तिलयक आनीतोभूत्प-

(८) तिसंस्काराभावद्विनष्टमुद्वीक्ष्य सामन्तचन्द्रवर्मविज्ञप्तैरस्माभिस्तस्ये-

(९) व प्रसादीकृतस्तेन चास्मदनुज्ञातेन युष्मद्ग्रमाणामेवोपकाराय

(१०) (प्र) तिसंस्कृतोस्य चोपकारस्य पारम्पर्य्याविच्छेदेन चिरतरकालोद्वहना-

(११) य युष्माकं वाटिका अपि प्रसादीकृतास्तदेतास्यो यथाकालम्पिण्ड-

(१२) कमुपसंहृत्य भवद्भिरेव तिलमकप्रतिसंस्कारः करणीय एतद्ग्राम-

(१३) त्रयव्यतिरेकेण चान्यग्रामनिवासिनाम केषांचिन्नेतुं लभ्यतेस्य च

(१४) प्रसादस्य चिरस्थितये शिलापट्टकशासनमिदन्दत्तमेववेदिभिर्न

(१५) कैश्चिदयम्प्रसादोन्यथा करणीयो यस्त्वेतामाज्ञामतिक्रम्यान्यथा तिलम-

(१६) (क) ल (ये) तस्यावश्यन्दण्डः पातयितव्यो भविष्यद्भिरपि नृपतिभिः पूर्वरा-

(१७) (ज) कृतप्रसादानुवर्तिभिरेव भवितव्यमिति अपि चात्र वाटिकानामुद्देशः

(१८) (थंबु) ग्रामस्य दक्षिणोद्देशे पूर्वेण रामविं मा २ तिलमकस्य पश्चिमप्रदेशे मा १

(१९)....कुलं पूर्वेण मा ४ मूलवाटिकाग्रामस्योत्तरतः अशिकोपदेशे मा ८

(२०)....प्रदेशे मा १ गाङ्गुलग्रामं पश्चिमेन कडम्प्रिकप्रदेशे मा ४ कङ्कंपदेशे

(२१) मा ४ स्वयमाज्ञा संवत ४८ कार्तिक शुक्ल २ दूतको युवराज श्री विष्णुगुप्तः

इसमें जिष्णुगुप्त राजाको भी पशुपति भट्टारक और बप्पदेवका उपासक बतलाया गया है। तथा यह भी प्रकट है कि यह राजा भी अंशुवर्म्माके समान ही लिच्छवि कुलोत्पन्न महाराज ध्रुवदेवके सामन्त थे। इन ध्रुवदेवकी उपाधि भट्टारक महाराज भी थी। उपरान्त थम्बुगाङ्गुल और मूलवाटिकाके ग्रामवासियोंके लाभके लिए अंशुवर्म्मा द्वारा बनाई हुई नहर जो खराब होगई, उसको ठीक कराने तथा हमेशा वह ठीक रहे ऐसी व्यवस्था इसमें की गई है। इसमें दूतक युवराज

श्री जिष्णुगुप्त हैं। शिलालेखके सिरेपर मछली-का चित्र है; सो इसका भी सम्बंध जैनधर्मसे है; क्योंकि मछली भगवान अरहनाथका चिह्न है। इससे भी इस बातका समर्थन होता है कि बप्प भट्टारक जैन थे और उनके भक्त राजा जिष्णुगुप्त थे। अस्तु; अगाड़ी १०वां शिलालेख भी इसी ढंग और भावका इन्हीं जिष्णुगुप्तका है। इसमें चक्र और कमलके चिह्न हैं, जिनका सामञ्जस्य पद्मनाथ तीर्थंकरके चिह्नसे बैठ जाता है। डा० सा०ने इनको विष्णु और लक्ष्मीका चिह्न बतलाया है। लेखका पूर्वभाग इस प्रकार है—

(१) ॐ देवा....यावस्थितो....स्मा पौरस्त्यबल—

(२) तिमुख....ङ्गराविम् एतत्पान्यत्रिगह्वस्त्वयि परवश—

(३) न्दनीयो....लैवं: स्वकर्मपहस्त्य [द्वि] मा सेश्वरा (श्रीः)

(४) स्वस्ति मानगृ (हा)....दितचित्तसन्तति-लिच्छविकुलकेतुभट्टारक—

(५) राज श्री ध्रुवदेवपुरस्सरे सकलजननिपद्रवो-पायसंविधानार्पित (मा)—

(६) नसः कैलासकूटभवनाद्भगवत्पशुपतिभट्टार-कपादानुगृहीतो बप्प—

(७) पादानुध्यातः श्री जिष्णुगुप्तः कुशली दक्षिणकोलीग्रामे गीटापाञ्चालिका—

(८) इत्यादि।

ग्यारहवां शिलालेख भी इन्हीं जिष्णुगुप्तका है और उसमें मुण्डश्रृंखलिक साधुओंको खेत दान देनेका उल्लेख है। शिलालेख बहुत अस्पष्ट है और पूरा पढ़ा भी नहीं गया है। संभव है कि इसका मूल भाव कुछ और हो। 'मुण्डश्रृंखलिक' शब्दसे 'मुण्ड श्रावक' हो तो आश्चर्य नहीं। बुद्धघोषके कथनसे प्रमाणित है कि लगभग इसी समय उदासीन जैन श्रावक 'मुण्ड श्रावक' के नामसे विख्यात थे। किन्तु शिलालेखको अच्छी तरह पढ़े बिना कुछ नहीं कहा जासका। अस्तु, जो हो; १२ वां शिलालेख शिवदेवका श्री हर्ष संवत ११९ का है। प्रारंभमें एक बैलका चिन्ह है, जिसका सम्बंध ऋषभदेवसे भी बैठ जाता है, जिनका चिन्ह बैल था और जिन्होंने कैलाश परसे मुक्तिलाभ किया था। शिलालेख इस प्रकार है:—

(१) ॐ स्वस्ति श्रीमत्कैलासकूटभवनात् लक्ष्मी-कल्पाङ्गनकल्पपादपो

(२) भगवत्पशुपतिभट्टारकपादानुगृहीतो बप्प-पादानुध्यातः परमभट्टार—

(३) कमहाराजाधिराज श्री शिवदेवः कुशली। वेथग्रामके प्रधानाग्रेसरान्सकल—

(४) निवासिकुटुम्बिनो यथार्हंकुशलमभिधाय समाज्ञापयति विदितमस्तु भव—

(५) तां यथायं ग्रामः शरीरकोट्टपर्यादो (पयुक्त) श्राहभटानामप्रावेश्येनाचन्द्रार्का—

(६) वनिकालिको भूमिच्छिद्रन्यायेनाग्रहारतया मातापित्रोरात्मनश्च विपुलपु—

(७) ण्योपचयहेतोरस्माभिः स्वकारित श्रीशिवदेवे-श्वरं भट्टारकन्निमित्तीकृत्य—

(८) तद्देवकुलखण्डस्फुटितसंस्कारकारणाय वंशपाशुपताचार्येभ्यः प्रति—

(९) पादितस्तदेवमवगतार्थैर्भवद्भिः समुचितदेयभागभोगकरहिरण्यादि—

(१०) सर्वप्रत्यायानेषामुपय(च्छ)द्भिरेवानुपालयमा-
नैरकुतोभयैः स्वक-

(११) र्मानुविधायिभिरितिकर्तव्यताव्यापारेषु च
सर्वैरेवमीषामाज्ञाश्रवणविधे-

(१२) येर्भूत्वा सुखमत्र स्थातव्यं सीमा चास्य
पूर्वेण वृहन्मार्गो दक्षिणपूर्वतश्च-

(१३) शिवी प्रणाली तामेव चानुसृत्य स्वल्पः
पंथा दक्षिणतश्च तेह्नु पश्चिमे-

(१४) नापि तेह्नु उत्तरस्यामपि त्रिशिमण्डाति-
क्रमकः उत्तरपूर्वतश्चापि सहस्र-

(१५) मण्डकभूमिस्ततो यावत्स एव वृहन्मार्ग
इत्येवं सीमान्तर्भूतेस्मिन्नग्र-

(१६) हारे भोटविष्टिहेतोः प्रतिवर्षं भारिकजनाः
पञ्च ५ व्यवसायिभिर्ग्र-

(१७) हीतव्याः ये त्वेतामाज्ञाम्व्यतिक्रम्यान्यथा
कुर्युः कारयेयुर्वा तेस्माभिर्भृशन-

(१८) क्षम्मन्ते ये चास्मदूर्ध्वम्भूभुजो भ (विष्यं-
ति तेपि प) रस्वहितापेक्षया पूर्वराज-

(१९) कृतोयं धर्म्मसेतुरिति तद (वगत्य)....
....रक्षा.... ....संरक्षणी-

(२०) यस्तथा चोक्तं पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो
यस्माद्रक्ष युधिष्ठि (र महीं महीम-)

(२१) तां श्रेष्ठदानाच्छ्रेयोनुपालनं ॥ षष्ठिं वर्ष
सहस्राणि स्वर्गे मो (दति भू-)

(२२) मिदः आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्येव
नरके वसेत् ॥ इति स्वयमा-

(२३) ज्ञा दूतकश्चात्र राजपुत्रजयदेवः सं० ११९
फाल्गुनशुक्लदिवादशम्याम् ।

इसमें परम भट्टारक महाराजाधिराज शिवदेवकी आज्ञा अंकित है। यह शिवदेव भी "पशुपति भट्टारक 'पादानुगृहीतो और बप्पपादानुध्यातः" प्रकट किये गये हैं। आज्ञा वैचक ग्रामके निवासियोंके प्रति है कि उनका ग्राम 'अग्रहार' रूपमें वंशपाशुपताचार्यके श्री शिवदेवेश्वर भट्टारकको मंदिरके जीर्णोद्धारके लिए देदिया गया है। इसलिए ग्रामकी मालगुजारी आदि आचार्यको ही देना चाहिये। फिर ग्रामकी चौहद्दी दीगई है। दूतक युवराज जयदेव हैं। अतएव इससे स्पष्ट है कि पशुपति भट्टारक ही वहां मुख्य थे। उन्हींके वंशमें इन राजाके समयमें शिवदेवेश्वर भट्टारक पदासीन थे। इस अवस्थामें राजा शिवदेव भी जैनधर्म प्रेमी थे, ऐसा मालूम होता है।

तेरहवां शिलालेख इन्हीं शिवदेवका श्रीहर्ष सं० १४३ का है। यह 'पशुपति'के मंदिरके दक्षिण द्वारपर लगा हुआ है। यह ध्यानमें रहे कि पशुपति भट्टारककी मानता नेपालमें अधिक होगई थी और उनके नामका मंदिर भी वहां मौजूद है। इस मंदिरके विषयमें अधिक परिचय प्राप्त नहीं है। नेपालमें भ्रमण करके यदि कोई जैन विद्वान् इस विषयपर अधिक प्रकाश डाले तो वहां जैन धर्मके अस्तित्वका विशेष हाल मालूम हो। यह शिलालेख बहुत अस्पष्ट है किन्तु यह स्पष्ट है कि यह शिवदेव विहारको दानमें दिये गये एक ग्रामका उल्लेख करता है। डॉ० सा० इस विहारको बौद्धोंका बतलाते हैं- किस अपेक्षासे, यह कुछ बतलाया नहीं है। परन्तु ऊपर हम देख चुके हैं कि शिवदेव भट्टा-

रक पशुपति भट्टारकके वंशमें थे, जो जैन साधु ही प्रतीत होते थे। इस कारण उनका स्थापित किया हुआ संघ बौद्ध नहीं होसक्ता। "आर्य संघ"के रूपमें जैन संघका भी उल्लेख होसक्ता है। खंडगिरि उदयगिरिके जैन शिलालेखमें जैन संघका उल्लेख 'आर्यसंघ' रूपमें ही हुआ है। फिर जैन शास्त्रोंमें 'आर्य' शब्दका व्यवहार अपने साधुओंके लिए हुआ मिलता है। (देखो वृ० जै० श० शब्द आइकल) तथापि इस शिलालेखके प्रारम्भमें भी दो शंखोंके बीचमें एक चक्र मालूम होता है; जिनका सम्बन्ध जैनधर्मसे है यह हम पहिले ही देख चुके हैं। इस दशामें इस शिलालेखका सम्बन्ध भी जैनधर्मसे होना संभवित है। 'विहार' शब्दके कारण शायद इसे बौद्धोंका ख्याल किया गया; किन्तु उक्त बातोंको देखते हुए इसे एकदम बौद्धोंका कह देना हम उचित नहीं समझते। तिसपर यह बात भी नहीं है कि 'विहार' शब्दका प्रयोग जैनियों द्वारा न हुआ हो और उन्होंने 'विहार' न बनाये हों। श्रीमान् ब्र० शीतलप्रसादजीने जो 'बंबई प्रान्तके जैनस्मारकों'का संग्रह प्रकट किया है उनमें कई जैन विहारोंका उल्लेख है। पृष्ठ ११० पर "कारम्बिकविहार" "भूपालविहार" और "ओलिकाविहार" का नामोल्लेख है। यह जैनियोंके विहार हैं। इसलिए नेपालमें भी "जैनविहार" होना बिलकुल संभव है। शिलालेख इस प्रकार पढ़ा गया है:—

(१)....भट्टाधि .... (प)शुपतिभट्टारकपादानु—
(२) गृहीतो बप्पपा(दनुध्यातः)....परममाहेश्वर-
परमभट्टा—
(३) रकमहाराजाधिरा (ज श्रीशिवदेवः कुशली)
—अतग्रामे प्रधानपुरस्सरा—
(४) न्सर्वकुटुम्बिनः कुशल (माभाष्य)....गुप्त-
बसु....बयि—
(५) ग्रांमो भगवत्पशुपतौ सु—रितसु....न सर्वे
विना ....
(६) मनुरोधार्थ ....
(७) —हापरः .... वि
(८) ष्टिरहितो ....
(९) मयच ....
(१०) पञ्चापराधकारिणां....राजकुलानाम्....
कहपत्रादि सर्वं——य—
(११) स्यार्यसंघस्य....शिवदेवविहारचतुर्दिगार्य-
भिक्षुसंघायास्मा—
(१२) भिरतिसृष्टः सीमा चास्य पूर्वोत्तरेण श्रेष्ठि-
नुल्मू—श्रीगुप्तमध्यमाळी तस्याः किंचित्पू—
(१३) र्वेण वृहद्दारया दक्षिणमनुसृत्य (वृह)द्वा—
मिम्पूर्वदक्षिणेन (वे) ष्टयित्वा........म—
(१४) मार्गस्तद्दक्षिणमनुसृत्य सरलवन (ग्राम-
मार्ग) स्व.... ....सृत्य.... ....
(१५) लिकक्षेत्रपश्चिमकोणाद्दक्षिण (पश्चि)मम-
नुसृत्य—श्री विदरिकविहारस्य सन्धौ—
(१६) मरियक्षेत्रपश्चिमाद्ग्या दक्षिणङ्ग (त्वा)....
ककम्भूदक्षिणेश्वराम्बतीर्थक्षेत्राणां संधिः—
(१७) .... दक्षिणकोणात्किंचित्पश्चिमङ्गत्वामि-
सम्भूमे—
(१८) दक्षिणमनुसृत्य तत्पूर्वदक्षिणाद्ग्यान् पश्चि-
मङ्गत्वा किंचिदुत्तराञ्च ततः पश्चिम—
(१९) मनुसृत्य च बिल्मूदक्षिणपश्चिमकोणाद्द-
क्षिणङ्गत्वा कोम्प्रिग्रामकगोष्ठिकक्षेत्रम्—

(२०) दक्षिणकोणात्किंचित्पश्चिमङ्गत्वा हुम्प्रिगां-
ग्रालिकक्षेत्रम्....स्या दक्षिणमनुसृत्य–

(२१) ....राभूमेरुत्तरपूर्वकोणे हुम्प्रिग्रामी वृह-
त्पथस्तस्य (श्चिममनु) सृत्य हुम्प्रि—

(२२)....स्त....रोघोनुसृत्य मेकणि–(स्ति)
कमकस्तदग्राण....मधिरुह्य–

(२३) ...कसारेणोत्तरपश्चिममनुसृत्य–नी....

(२४) ....(श्च) तक्षेत्रं पूर्वदक्षिणास्यशः पश्चिम-
ङ्गत्वाकोम्रि....तक्षेत्रस्ततः–

(२५) ....स्तस्योत्तरञ्च वृहदारामस्य पूर्वमुखे
महापथः....ङ्गत्वा वृह–

(२६) ....कोणादधोवतीर्य वनपर्यंतमुपाद्राय....
तस्त....श्वप्रतीर्थ....गग्व....र्थ–

(२७) .... स्तस्त्रोतोनुसारेण

(२८) ....दाराग्रानुसारेण श्रेष्ठि........किन्या

(२९) .... प्रहारो यदि कदाचिदार्यसंघस्य
शि.... यैस.... ....

(३०) तदा प....मा .... वारणीयमापणकशाधि
कमा.... .... एवा–

(३१) यैभि....स्येवमवगतार्थैरस्मत्पादोपजीवि-
भिरन्यैर्वाम्प्रसा (दोन्य) था न

(३२)....माज्ञामुल्लङ्घ्यान्यथा कुर्यात्कारयेद्वा....
स्सुतरान्न मर्षणीयो

(३३) ये .... भूमिपालास्तैरप्युभयलोकनिलय
सुखार्थिभिः पूर्व–

(३४) राजविहितो विशिष्टः प्रसाद इति प्रयत्न
तस्सम्यक्परिपालनीय एव यतो

(३५) धर्मशास्त्रवचनम्बहुभिर्वसुधा दत्ता राज-
भिस्सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि–

(३६) स्तस्य तस्य तदा फलमिति । स्वयमाज्ञा
दुतकश्चात्र भट्टारक श्री शिवदेवः ।

(३७) संवत् १(४)३ ज्येष्ठ शुक्ल दिवा त्रयो-
दश्याम् ।

इसमें जो सीमाओंका विवरण है उससे यह ज्ञात होता है कि आसपास अन्य विहार और आराम भी थे। इस कारण भी जनप्रसिद्धिके अनुसार जैन संघका स्थान विहार कहलाता था। सारांशतः इस विषयमें जैन विद्वानोंको अध्ययन करके प्रकाश प्रकट करना चाहिये। विशेष अध्ययनसे संभवतः इस ओर कुछ अधिक विवरण इन शिलालेखोंके विषयमें ज्ञात हो। उपरान्त जो शिलालेख हैं उनमें स्पष्टतः शिवभक्ति अथवा विष्णुभक्तिका दिग्दर्शन है और इससे स्पष्ट है कि बीचमें जो जैनधर्मके प्रति इस राज्यवंशके किन्हीं राजाओंका प्रेम होगया था, वह वृषदेवके उपरान्त कुछ काल बाद प्रायः जाता रहा और यह राज्यवंश अपने पहले पूर्वजोंके धर्मका अनुयायी होगया। इसके साथ ही इस बीचके कालमें भी शैवधर्मके प्रति इन राजाओंके भाव बिल्कुल फिरे नहीं थे, यह उक्त विवरणसे ज्ञात है। उपरांतके शिलालेखोंमें एकाध स्थानपर पशुपति आचार्यका भी स्मरण कर लिया गया है। इस प्रकार इन शिलालेखोंसे नेपालके उक्त राज्यवंशोंमें जैनधर्मका अस्तित्व प्रतिभाषित होता है। नेपालमें जैनधर्मका आधिक्य विशेष होना संभवित भी है, क्योंकि श्रावस्ती प्रारम्भसे ही जैन धर्मका मुख्य केन्द्र रही है। अस्तु इन शिलालेखोंपर अधिक प्रकाश पड़ना आवश्यक है।

इन शिलालेखोंके अतिरिक्त नेपालके प्राचीन इतिहाससे भी वहांपर जैनधर्मके प्रचलित होनेके किंचित् दर्शन होते हैं। यहां त्रेतायुगके अंतमें राजा सुधन्वाका राज्य होना लिखा है। यह राजा जनकपुर सीताके स्वयंवरमें गया सो वहां मरवा डाला गया। इस पौराणिक वार्तामें कुछ तथ्य यदि है तो वह स्पष्ट प्रकट नहीं है; परंतु यह तो विदित ही है कि हिन्दू पुराणोंमें सुधन्वा राजाको जैनी बताया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि अवश्य ही नेपालमें जैन धर्मका अस्तित्व एक समय रहा था। जैन उत्तरपुराणमें जनकराजाको पशुयज्ञ करते बतलाया है। अतएव उपरोक्त प्रकार जो जनकपुरमें राजा सुधन्वाका मारा जाना बताया गया है, वह उसके जैनीपनका ही द्योतक है। अगाड़ी नेपालके इस पौराणिक इतिहासमें बनारससे एक काश्यप नामके बुद्धका आकर उपदेश देना लिखा है।[2]

भगवान पार्श्वनाथका जन्म और केवलज्ञान प्राप्तिका स्थान बनारस ही है और उनका गोत्र काश्यप था; तथापि वे बुद्ध सर्वज्ञ तीर्थंकर भी थे, यह प्रगट है। इसलिये संभवतः काश्यप बुद्ध जो नेपालमें आये थे वह भगवान पार्श्वनाथजी ही थे। इसके अतिरिक्त नेपालके इतिहासमें राक्षस और वानरवंशी लोगोंको पशु समान मुखाकृतिवाले नहीं बतलाया है, उनको प्रगट मनुष्य लिखा है[3]। इससे भी वहां जैन प्रभाव प्रगट होता है। क्योंकि जैन शास्त्रोंमें ही राक्षस और वानरवंशी लोगोंको विद्याधर मनुष्य लिखा है[1]। वहींके इतिहासमें एक विरूपाक्ष व्यक्तिको पाशुपतकी पूजा करते लिखा है। वहां उसने सूर्यको पकड़ लिया कि जबतक मैं खा न लूं तबतक यह डूब न जाय। क्योंकि बौद्ध (!) रात्रिको खाते नहीं[2]। यहांपर बौद्धसे मतलब जैनका ही है, क्योंकि बौद्ध लोगोंको रात्रि भोजन त्यागका नियम नहीं है। डा० राइट सा० भी यही कहते हैं कि नेपालमें बौद्धमार्गी रातको खाते हैं[3]। अस्तु; यहांपर जो जैनोंका उल्लेख बौद्धरूपमें किया गया है यह इसीलिये कि पहले ब्राह्मण विद्वान जैन और बौद्धको समान कोटिमें गणना करते थे[4]। अतएव इससे नेपालमें जैनधर्मका अस्तित्व बिलकुल स्पष्ट प्रमाणित होजाता है। अगाड़ी जो यहांके इतिहासमें लिखा है कि—शंकराचार्य जब यहां आये तब चारों वर्ण बौद्धमार्गी थे, जिनमें कुछ विहारमें भिक्षु रूपमें रहते थे, कुछ श्रावकरूपमें रहते थे, कुछ तांत्रिक थे—कुछ आचार्य थे—कुछ गृहस्थ थे[5]। सो इससे भी जैनधर्मका अस्तित्व प्रकट होता है। श्रावक शब्द जैनियोंके लिये व्यवहृत होता है। बौद्धोंके यहां भी यह शब्द व्यवहारमें आता है; परन्तु भिक्षुओंके लिये। और यहांपर बौद्ध भिक्षुओंका उल्लेख 'भिक्षु' रूपमें किया ही जाचुका है। इसलिए श्रावक शब्द फिर दुबारा उनके लिए व्यवहृत नहीं होसक्ता। यह नेपालवासी जैनियोंका ही द्योतक

१–राइट हिस्ट्री ऑफ नेपाल पृ० ८३। २–पूर्व० पृ० ८४। ३–पूर्व० पृ० १५८ और १७४।

१–जैन पद्मपुराण पृ० ५४०। २–राइट, हिस्ट्री आफ नेपाल पृ० ९२। ३–पूर्व० फुटनोट। ४–ऐशियाटिक रिसर्चेज भाग ३ पृ० १९२। ५–राइट, हिस्ट्री० पृ० ११८–११९।

है। शंकराचार्यने वहां पहुंचकर महा उपद्रव किया और शैव धर्मका सिक्का जमा दिया। इसी समयसे जैनधर्मका लोप वहां होचला होगा। पशुपतिका मौजूदा मंदिर प्राचीन नहीं है—बल्कि नवीन बना हुआ है। इसलिए उससे उसका जैन संबन्ध प्रमाणित नहीं होसक्ता। इस तरह नेपालमें जैनधर्मका प्रचार एक समय रहा प्रमाणित है। नेपालसे जो ग्रंथ केम्ब्रिज यूनिवर्सिटीमें गये उनमें निम्न जैन प्रतीत होता है:—

(१) स्वयंभूचैत्यभट्टारकोद्देश, (२) अष्टमी पर्व विधान कथा, (३) अमरुशतक, (४) धनंजय निघण्टु, (५) सिद्धांतदीपिका, (६) सिद्धांतसार, (७) तत्त्व संग्रह और (८) कुलकुट्टकल्प। किसी विद्वानको इन ग्रंथों बावत देखकर हाल प्रगट करना चाहिये। इत्यलम्।

वन्दे जिनवरम्।

बोलिये मिलकर सभी जन शब्द वंदे जिनवरम्।
एक क्षण भी भूलिये मत शब्द वन्दे जिनवरम्॥
दुःख दुर्गतिको मिटाकर, स्वर्ग सुख देता यही।
इसलिये जपते रहो नित, शब्द वंदे जिनवरम्॥
पाप अग्नीसे हृदय, जिसका जला करता है रोज।
शांति करनेको उसे, है नीर वंदे जिनवरम्॥
मोह शत्रूसे छिड़ा है, युद्ध चेतन भूपका।
विजयी बनानेके लिये है, शस्त्र वंदे जिनवरम्॥
सब तरहका दुःख हरता, और करता सुखका।
दिल लगा भजते रहो तुम, शब्द वंदे जिनवरम्॥
सोते, उठते, बैठते चलते व करते काम कुछ।
पहिले जिह्वापर बुलाओ, शब्द वंदे जिनवरम्॥
सर्वसाधक मंत्र यह विश्वास इसपर लाइये।
"प्रेम" क्षण भर भी न भूलो, शब्द वंदे जिनवरम्॥

ब्र० प्रेमसागर-बुढ़ार।

गांधी टोपी।

अहमदाबादके मिल मजूरों और मालिकोंमें झगड़ा होगया। मजूरोंने हड़ताल की। अनसूया बहिन उनकी अगुआ बनी। जहां अनसूया बहिन नेत्री हों, वहां गांधीजी कैसे न होंगे?

लड़ाई करीब महीने भर तक चली। गांधीजी रोज मजदूरोंके पास जाते और उन्हें सिखावन देते। गरीब मजदूरोंको पेट भर खानेको भी नहीं मिलता था, फिर भी वे उत्साहसे गांधीजीका उपदेश सुनते थे और हड़ताल पर अड़े थे।

जैसे जैसे दिन बीतते गये गांधीजी मजदूरोंमें और मजदूर गांधीजीमें तदाकार होते गये। जो भेदसा देख पड़ता था वह गांधीजीको खटकने लगा। आपने सोचा इन मजदूरोंको पहननेके लिए कपड़ोंकी कमी और मैं इतने कपड़े पहनूं? मेरी इस लम्बी पगड़ीकी दस टोपियां बन सकती हैं और दस आदमियोंके सिर ढक सकते हैं।"

तबसे गांधीजीने पगड़ी उतारकर सफेद टोपी पहनना शुरू किया। धोती छोटी की। लम्बे अंगरखेको फजूल समझ कर निकाल डाला। इस तरह मजदूरोंके साथ जब एकरूप होगए, तब कहीं गांधीजीकी सत्याग्रही आत्माको सन्तोष हुआ।

जब गांधीजीने सफेद टोपी पहनना शुरू किया तो लोग अचंभेमें आ गये।

"सफेद टोपी ? अजी, कहीं टोपी भी सफेद हुई है ? लाल हो, नीली हो, पीली हो, काली हो। लेकिन सफेद भी कहीं टोपी होती है ?"

"अजी, देखो तो सही, गांधीजी सफेद टोपी पहने हैं!" यों कहकर लोग हंसते। कोई कहता, "यह टोपी तो मथुरा वृन्दावनके चोबेजीकी टोपी है।"

लेकिन लोगोंकी हंसीसे गांधीजी कब डिग-नेवाले हैं ? लोगोंकी आंखोंमें सफेद टोपी भले ही खटकती हो, बुरी मालूम होती हो, लेकिन खादीका दुरुपयोग होना तो बचता है।

कोई कहता, "आप खादीकी टोपी भले ही पहनें, हमें इन्कार नहीं, मगर रंगकर पहनें तो जल्दी मैली न हो।"

सच पूछा जाय तो जैसे सफेद टोपी मैली होती है, वैसे ही काली भी। लेकिन कालेमें काला मिल जाता है, जिससे मैल दीखता नहीं।

गांधीजी कहते—मैल छिपानेके लिए रंगना ! इससे तो यही अच्छा है कि थोड़ी मेहनत करके टोपी साफ कर लिया करें; टोपी रोज २ साफ हो। मैली होने ही क्यों दें ?

सफेद टोपी लम्बी आयु लेकर जन्मी थी। उसके जनक थे अटल सत्याग्रही स्वयं गांधीजी, फिर कोई कितना ही विरोध क्यों न करे वह कैसे मरती।

वह नहीं मरी। उलटी दिन दिन फूलती फलती गई।

धीरे धीरे हंसनेवाले चुप होगये। सब कोई सफेद टोपी पसंद करने लगे। सब किसीको यह जंच गई। गरीबोंने सस्ती देखकर धारण की। चिकनेपोशोंने यह सोचकर पहनी कि रोज रोज धोकर साफ तो रख सकते हैं।

कवि और कलाकार भी सफेद टोपी पहनने लगे और उसकी प्रशंसा करने लगे। कहते, "सच्ची सुन्दरता तो इसीमें है, काली टोपियोंमें क्या धरा है ?"

स्वयंसेवकोंकी तो वह राष्ट्रीय वर्दी बन गयी। लड़के सफेद टोपी पहननेमें बड़प्पन समझने लगे, क्योंकि उसे पहननेसे भारतमाताके सिपाहीसे लगते हैं।

इस तरह होते होते खादीकी सफेद टोपीका नाम पड़ गया " गांधी टोपी !"

(२)

सेठ—मुनीमजी, अबसे आप गांधी टोपी पहनकर न आवें।

मुनीम—आप तो ऐसा हुक्म करते हैं जिसकी तामील करना मुश्किल है।

सेठ—सो आप जानें! लेकिन हमारे यहां गांधी टोपी नहीं चल सकती।

मुनीम—लेकिन मैंने खादीके कपड़े पहननेका जो व्रत ले रखा है, उसे कैसे छोड़ूं ?

सेठ—आपको खादी पहननेसे मना कौन करता है, हम तो यह कहते हैं कि उसे काली रंगवा लो, झगड़ा मिटा।

मुनीम—अगर मुझे सफेद ही पसन्द हो ? इसमें आप रुकावट क्यों डालते हैं ?

सेठ—नौकरी करनी हो तो जैसा कहते हैं कीजिए। सफेद टोपीमें आप स्वयंसेवकसे मालूम

पड़ते हैं। अगर कोई यह जान ले कि हमने स्वयंसेवक रक्खा है तो हमें भारी नुकसान पहुंचे।

मुनीम–सेठ साहब, मेरी समझमें नहीं आता, कि आप क्या कहते हैं। मैं आपकी नौकरी ईमानदारीसे बजाते हुए अगर सफेद टोपी पहनता हूं, तो इसमें आपको नुकसान कैसे होता है।

सेठ–देखिये, मुनीमजी, माथापच्ची न कीजिये। यह गांधी टोपी है और हमारे यहां गांधी टोपी देखकर लोगोंको हमपर शक हो सकता है।

मुनीम–इसमें शककी क्या बात है? गांधीजी तो हमारे देशके सबसे महान और सबसे पवित्र पुरुष हैं।

सेठ–होंगे, मगर कलसे आप गांधी टोपी निकालकर ही नौकरीपर आवें।

मुनीम–टोपी तो नहीं निकाल सकता।

सेठ–तो आप नौकरीसे बरी हैं।

मुनीम–जैसी आपकी मर्जी।

सेठ–देखो, पीछे पछताओगे। इस अपशकुनी टोपीके लिए नौकरी खोरहे हो।

मुनीम–सेठजी, आपकी सलाहके लिये कृतज्ञ रहूंगा। लेकिन मैं पेटके लिये देशका और गांधीजीका अपमान सहन नहीं कर सकता। जय! जय!

देशभक्त मुनीमने नौकरीपर लात मारदी, गांधी टोपी नहीं उतारी।

वैसे तो गांधी टोपीकी कीमत सिर्फ तीन चार आने ही है, मगर राष्ट्रीय दृष्टिसे वह अनमोल है।

इसके कई कारण हैं—

पहला–यह कि इस टोपीकी चाल गांधीजीने चलाई।

दूसरा–यह कि वह पवित्र खादीकी बनती है।

तीसरा–यह कि वह हमेशह बगुलेके परकी भांति सफेद रखी जासकती है।

चौथा–यह कि वह हलकी और सस्ती है।

छठा–यह कि वह हमारी राष्ट्रीय वर्दी है।

सातवां–यह कि उसका नाम "गांधी टोपी" अमर होचुका है।

और सबसे बड़ा कारण यह है कि उसके लिए अनेक देशभक्तोंने कष्ट सहे हैं।

ऐसी अनमोल गांधी टोपी पहननेमें किसे अभिमान न होगा? "मतवाला"।

हृदयमें हो सन्मति भगवान।

वीर प्रभूके चरणों नमकर,
जिन शासनको चितमें धरकर।
गुरु आज्ञासे प्रेरित होकर,
करूं जाति उत्थान॥ हृदयमें॥
निर्भय हो सन्मार्ग दिखावें,
कुटिल कुरीति निकाल भगावें।
सच्ची सबमें प्रीति बढ़ावें,
धर्म हित दे दें जीवनदान॥ हृदयमें॥
प्राणि मात्रके मित्र बने हम,
दुःखी जनोंके दुःख हरें हम।
गुणी जनोंमें प्रीत करें हम,
चढ़ उन्नति सोपान॥ हृदयमें॥
गुरूजनोंमें भक्ति-भाव हो,
जैन धर्ममें पूर्ण चाव हो।
मिथ्यातमसे दूर भाव हो,
प्रगटे ज्ञान महान॥ हृदयमें॥
लक्ष्मीचन्द्र-सागर विद्यालय।

कथं वयं वीरानुयायिनः?

(लेखकः—पं० रवीन्द्रनाथो जैनः न्यायतीर्थः ।)

लोके यः कश्चित् कस्यचिदप्यनुयायी स तं गुणवन्तं बुद्ध्वानुकरोत्येव, हीनगुणवन्तं कोऽपि नेच्छति ।

ते च गुणा द्विविधाः, सामान्याः विशेषाश्चेति। न खलु सामान्यगुणेन संहितः सन् विशेषत्वाभावेः कोऽपि स्तूयतेऽनुयायी भवति कश्चिज्जनस्तस्य वा, किन्तु विशिष्टगुणत्वेनैव संपूज्यते। संसारिजनाः किमर्थमेषामनुयायिनः किञ्च विशिष्टत्वं तेषु इत्यनयोपरि विचार्यते किंचित्। संसारेऽस्मिन् सर्वे सुखमिच्छन्ति दुःखद बिभ्यन्ति वा। उक्तं चापि—

" जे त्रिभुवनमें जीव अनन्त,
सुख चाहें दुखतें भयवंत ।"

सर्वे जनाः कृष्यादिकं किंकरीवृत्तिं किमर्थं कुर्वन्ति ? सुखार्थमेव, स च सुखः आत्मन्याह्लादपरिणतिरूप एव । यद्यप्यधुना दृश्यते हि ईप्सितार्थावाप्तौ सुखं भवति, किन्तु समाधिस्थानां योगिमहोदयानां किमपि बाह्यवस्तु नोपलभ्यते, तथापि आत्मन्याल्हादो जायते। अत एवोक्तं पुरातनमहर्षिमहोदयैः—'मनोरतिं सौख्यमुदाहरंति।'

तत्र वास्तवं सुखं मुक्तौ एव, यत्र नास्ति काचिदाकुलता। उक्तं चापि—

आतमको हित है सुख सो सुख आकुलता बिन कहिये।
आकुलता शिव माहि न तातें शिवमग लाग्यो चहिये॥

आत्मनः मोक्षे सर्वकर्ममलकलङ्कविमुक्ता शुद्धस्वात्मस्वरूपलीनावस्था भवति तत्र आत्मनः स्वाधीनता वर्तते ।

एतदर्थमेव सर्वेषां बौद्धशैवादीनां प्रयासः किन्तु बहुविवादमत्र वर्तते, तेषु कतमः श्रेयानिति विचार्यतेऽत्र । सांख्याः—" तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानं मोक्षः " चैतन्यं पुरुषस्य स्वरूपं तच्च ज्ञेयाकारपरिच्छेदपराङ्मुखं" इति कथयन्ति । किन्तु ज्ञानस्य ज्ञेयकल्पनाया एव तदभावे कथं ज्ञानं संभवति ? यथा घटं परिच्छिन्दत् ज्ञानं घटज्ञानं भवति तथापि तस्य परिणतिः घटाकारेण परिणमति न रसरूपादिरूपेण। यदा हि विशेषपरिणतेरप्यभावस्तदा कथं मोक्षस्य घटना संभवति। वैशेषिकास्तु बुद्धिसुखदुखेच्छाद्वेषप्रयत्नधर्माधर्मसंस्कारानामत्यंतक्षये पुरुषस्य मोक्षः" इत्यभिदधंति। परञ्च यदा आत्मनः विशेषगुणानामभावः तदा विशेषद्रव्यस्याप्यभावः स्यात्। यतो नहि गुणपर्यायवियुक्तं द्रव्यं भवति ।

बौद्धास्तु प्रदीपनिर्वाणकल्पमात्मनिर्वाणं मन्यते।

दिशं न काचित् विदिशं न काचित्,
नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम् ।
दीपो क्षयात् शान्तिमुपैति यथाहि,
तथैव जीवो निर्वाणमश्नुते ॥

अतः तत्रात्मनोत्यन्ताभावात् कस्य मोक्षव्यवस्था क्रियते ? अपि च बौद्धानां मते पदार्थानां क्षणिकत्वात् कथं सुखेन सम्बंधः भवेत्? अपि च बौद्धानाम् मते नार्थक्रिया वस्तुनः वर्तते । तदुक्तं-

सन्तानेषु निरन्वयक्षणिकचित्तानामसत्स्वेव चेत् ।
तत्वाहेतुफलात्मनां स्वपरसंकल्पेन बुद्धः स्वयं ॥
सत्वार्थं व्यवतिष्ठते करुणया मिथ्याविकल्पात्मकः ।
स्यान्नित्यत्ववदेव तत्र समये नार्थक्रिया वस्तुनः ॥

(श्री अकलंकदेवः)

अपरेऽपि जीवस्य स्वसत्ताविनाशस्य परमात्मस्वरूपे लीनं कथयंति । केचित् तस्य परब्रह्मपदावाप्तिं न स्वीकुर्वंति । केचित् जीवस्य सुख दुःखव्यवस्था परमात्माधीना कथयंति । इत्यत्र सर्वत्र जीवस्य परं स्वातन्त्र्याभावात् न मोक्षोपदेशः श्रेयान् ।

जैनानां मते तु-"निरवशेषनिराकृतकर्ममलकलंकस्याशरीरस्यात्मनोऽनन्तज्ञानादिगुणमव्याबाधसुखमात्यन्तिकमवस्थान्तरं मोक्षः ।"

तत्रात्मनः स्वातन्त्र्यं वर्तते, पृथक् सत्तापि कर्ममलवियुक्तास्ति ।आत्मनो विशेषगुणाः ज्ञानदर्शनसुखवीर्यादयोऽपि राजन्ते तत्र । अतः तत्रैव मोक्षव्यवस्था श्रेयसी नान्यत्र । परं चार्हतमतेऽपि मोक्षोपदेशः बहुभिः तीर्थंकरैरुपदिष्टः । किन्तु वयं "वीरानुयायिनः, इति पदेन कथं व्यवह्रियन्ते ?

"अस्माकमन्त्योपदेष्टा धर्मस्य वीरः, तदुपदेशानुसारेणैवाचार्यैः व्याख्यानं क्रियते, अस्माभिश्च परिपाल्यते इति साधारणगुणव्याख्यानं" विशेषव्याख्यानं तु वीरोऽन्तर्बहिरुभयत्राऽपि वीरत्वेन युक्तः । तथैवान्यत्रार्थी वृत्तिमभ्युपगम्य विशेषेण ईर्ते जानातीति वीरः सर्वज्ञ इत्यर्थं । व्यवहारे तु वीरः शूरवीरः । व्यवहारे स कथं वीरः ? इति विचार्यते-

वीरात्प्राक्त्रयोविंशतिः तीर्थंकरा अन्येऽपि समभूवन् । तेषु समये च कीदृशः जना आसन् ? ऋषभमहावीरजिनौ मुक्त्वा शेषजिनानां समये पूर्वतीर्थंकरोपदिष्टधर्मे संलग्नाः पुरुषा आसन् । यद्यपि अजितादिजिनैः पूर्वं धर्मप्रकाशीकृतः, किन्तु द्वाविंशतिजिनानां समये बहुमतानां प्रादुर्भावो नासीत् । जैनशास्त्रेषु अन्यधर्मशास्त्रेषु इतिहासेवोक्तं यत बहूनां धर्माणां त्रिसहस्रवर्षपूर्वं प्रादुर्भाव आसीत् । अतः तत्र तीर्थंकरैः सुगमरीत्या धर्मोपदेशः प्रदत्तः । आदिजिनपूर्वकाले तु यद्यपि न धर्ममतयः जना आसन् तथापि तत्प्राक् भोगभूमिप्रवृत्तिरासीत् । कर्मभूमिप्रारम्भ एव आदिजिनो बभूव, तत्समये सूर्यचंद्रादिकं दृष्ट्वा यदा जनाः भयं प्राप्ताः आसंस्तदा तेषां कुलकरेण तीर्थंकरादिसत्पुरुषैः यत्कथितं तत्सर्वमान्यं कृतं । यतश्चैते मन्दकषायिनः भोगभूमिजाश्च, तेषां शुभलेश्याः बभूवुस्तस्मात्सुगमेन ते धर्मे आयाताः ।

किन्तु वीरजिनसमयात्प्राक् जनाः तीव्रकषायिनः कर्मभूमिजा अशुभलेश्यावंतश्च आसन् तस्माद्धर्मोपदेशमनपेक्ष्य विपरीतमार्गो गृहीतस्तैः । यतश्च नेमिप्रभुनिर्वाणानंतरम् धरणीतलेस्मिन् ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती बभूव येन च षट्खण्डमहीराज्यं भुक्तं । स च मांसादिसेवी आसीदतस्तेन स्वशासनबलेन सर्वे तद्राज्यवासिनः दुश्चारिण्नः कर्म-

भ्रष्टाश्च कृताः। स च मृत्वा श्वभ्रं जगाम। सा च हिंसा श्री पार्श्वजिनेन स्वधर्मोपदेशामृतेन विनिवारिता तथापि नन्दवच्छकिंवच्छप्रभृतयः वानप्रस्थाः सन्यासिनः तीव्रमानवशंगताः सन्तः आजीवकमतोपदेशं ददुः।

ततश्च सात्यकिनामा एकादशमः रुद्रः महादेवाख्यया भुवि प्रसिद्धिमगात्, तेन च स्वविद्याभिः दुर्धर्मप्रसारः कृतः। ततश्च बौद्धपूरणकस्सपमक्खलिगोशालाजितकेशादयः बहवः धर्मप्रवर्तकमन्याः सम्बभूवुः। तैश्च जनानां धर्मामृतपूरितहृदयं कषायकलुषितं कृतं।

जीवानां न कोऽपि शरणभूतस्तदासीत् यस्य शरणं ते अग्मुः। "ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभेत" इत्येवंप्रकारेण नरमेधयज्ञप्रवृत्तिरासीत्। ये गोहिंसानिषेधकः त एव गोमेधयज्ञकर्तार आसन्। कथनस्याभिप्रायोऽयं यत्तदा बहुलकषायकलुषितचित्ताः जना आसन्। तदैव जगद्धितैषी महावीरप्रभुः प्रादुर्भूत्वा हिंसां च हत्वा हितोपदेशं चकार।

महानुभाव!

अज्ञः सुखमाराध्यः, सुखतरमाराध्य भवति विशेषज्ञः।
मूढमतिदुर्विदग्धः, ब्रह्मापि तं नरं न रंजयति॥

इति केनापि सत्यमुक्तं। किन्तु महावीरसमये जनाः मूढमतयः दुर्विदग्धा आसन्। एवं भूतान यदा ब्रह्मापि न रंजयितुं शक्तस्तथापि वीरप्रभुणा मोक्षमार्गरताः कृतास्ते। अत एव वीरमहावीरातिवीरादि नाम लेभे। यदि वयं वीरसिद्धांतप्रसारं कृत्वा जनमात्रहितैषिणः स्याम तदा "वयं वीरानुयायिनः।" इति।

जैन गृहस्थकी दिनचर्या।

(लेखक–वैद्यविद्याविशारद पं० सत्यंधरजी जैन, आयुर्वेदाचार्य–छपारा।)

पाठको! आज इस लेखद्वारा मैं उस नियमको, उस क्रियाको, उस आचरणको, उस कर्तव्यको, आप लोगोंके साम्हने उपस्थित कर रहा हूं जो कि हमारा मुख्य कर्तव्य है, तथा जिसके पालन करनेसे हमको ऐन्द्रिक सुख (मोक्षसुख) की प्राप्ति होसक्ती है। चतुर्थकालमें उन्हीं कर्तव्योंका पालन नियमसे होता था इसी लिये उस समय इसी भरतक्षेत्रसे असंख्याते जीव मोक्षको जाते थे। तथा उसी क्रियासे अभाव होजानेका यह कटुक फल है जिसके कि इस पंचमकालमें हम लोग मोक्ष नहीं जासक्ते। उसी नियमको हमारे परम पूज्य पंडितप्रवर आशाधरजीने सागरधर्मामृतके षष्ठाध्यायमें अच्छी तरह विवेचन किया है। उसके आधारपर मैं भी कुछ नियमोंका वर्णन करता हूं।

सबसे प्रथम प्रति मनुष्यका कर्तव्य है, कि वह प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्तमें अर्थात् ४ बजे सुबह शयन त्याग करे तथा शयन त्याग करते हुए भी महामंत्र (णमोकार) का जाप करे तथा प्रभाती स्तुति भजन वगैरह पढ़े जिससे चित्तकी प्रसन्नता हो तथा उसी समयमें इस बातका चिंतवन करना चाहिये कि–

मैं कौन हूं, किस कुलमें पैदा हुआ हूं, मेरा धर्म क्या है, मेरी जाति कौन है, मेरा वर्ण

कौनसा है, यह जीव संसारमें अनादि कालसे क्यों भटक रहा है, उस भटकनेका मुख्य क्या कारण है, तथा संसारसे निकलनेका भी क्या उपाय है ? वास्तवमें जीवोंका कल्याण करनेवाला कौनसा धर्म है। मैं किस धर्मका आश्रय करूं जिसके द्वारा मेरा कल्याण होजाय और अपने अभीष्ट स्थानको प्राप्त करलूं ? यह मनुष्य पर्याय मैंने कितनी कठिनतासे प्राप्त की है। यही एक मनुष्य पर्याय मोक्षको देनेवाली है, यह श्रावककी पर्याय ही कैसी उत्तम है तथा जैन-धर्मका शरण, शरीरकी आरोग्यता, धर्मात्मा माता पिता भाइयोंका मिलना, धर्मपरायणा स्त्रीका मिलना, आज्ञाकारी धर्मतत्पर पुत्रका प्राप्त होना, विद्वानोंका समागम, संपत्ति विभूतिका मिलना तथा मान प्रतिष्ठाका मिलना इत्यादि जितनी भी शुभ सामग्री है वह किस तरह प्राप्त हुई है ? तथा इसके विपरीत अवस्था हो तब भी उसका इस प्रकार विचार करे जैसे दुष्ट मातापिताओंका मिलना (यहांपर दुष्ट माता पिताओंसे उन माता पिताओंका तात्पर्य है जो कि अपने बच्चोंमें झूठा मोह करते हुए व्यर्थका लाड़-प्यार करते हैं। किन्तु उनकी हितकारी शिक्षाओंपर ध्यान नहीं देते हैं।) दुष्ट कलहकारिणी स्त्रीका प्राप्त होना, तथा दुष्ट, आज्ञा भंग करनेवाला कुमार्गी पुत्रका मिलना, दुष्ट भाइयोंका मिलना, संपत्तिका नहीं मिलना, जैनधर्मका सुलाभ नहीं मिलना, जिन भगवानकी पूजा नहीं करना, शास्त्र स्वाध्याय नहीं करना, शरीरकी दुर्गुणता, स्वास्थ्यका अच्छा नहीं रहना, इत्यादि संसारमें दुःख देनेवाली अशुभ सामग्रीका मिलना किस कारणसे प्राप्त हुआ है ?

इस प्रकार चाहे शुभ सामग्री प्राप्त हो चाहे अशुभ सामग्री प्राप्त हो, उन दोनों अवस्थाओंका चिंतवन करते हुए दोनोंके कारणको विचार करे तथा दोनों अवस्थामें समान बुद्धि रखता हुआ अपने कर्तव्यका पालन करे।

इस प्रकार वर्तमान दशाका पूर्ण चिंतवन करके दीर्घशंका-शौचादिसे निवृत्त होकर स्नान वगैरह करके घरके एकांत पवित्र स्थानमें अष्ट द्रव्यसे भगवानकी पूजन करे (यहांपर पंडित आशाधरजीने मंदिर जानेके प्रथम ही जो यह पूजन करनेका उपदेश बतलाया है, मेरे ख्यालसे पहिले श्रावकके प्रत्येक गृहमें मंदिर रहते थे, इसलिये पहिले ही यहांपर पूजन करनेका विधान बतलाया है।) फिर शांतिपाठ वगैरह करके यथाविधि पूजाको समाप्त कर उस एक दिन सम्बंधी समस्त व्रत वगैरहका निश्चय करना कि आज मुझे कौनसा व्रत रखना है, एकासन करना है या उपवास करना है, या २ बार ही भोजन करना है तथा आज १० हरी खाऊँगा या ५ हरी खाऊँगा या बिलकुल ही नहीं खाऊंगा तथा रसोंका त्याग करना कि आज १ रसका त्याग या २ रसका त्याग, इत्यादि। तथा मैं आज कितने पदार्थोंका उपभोग करूंगा, कितने कपड़े पहिनूंगा, कितने बर्तनोंसे काम लूंगा, मैं आज कितनी दूर जाऊंगा। इस प्रकार वह उस दिनका पूर्ण विचार करके भोगोपभोगके पदार्थोंका निश्चय करले। कारण

कि वह जितनी वस्तुएं अपने उपयोगके लिये रख लेता है तथा जितने आरंभ परिग्रहके रखनेका नियम कर लेता है वह उतने ही पापका भागी होता है अधिकका नहीं। इसलिये प्रत्येक गृहस्थका यह आवश्यकीय कर्तव्य है कि वह प्रातःकाल उस नियमको अवश्य ही करे।

उसके पश्चात् जो गृहस्थ अपनी शक्तिके अनुसार अपनेही हाथसे शुद्ध प्रासुक सामग्रीको लेकर मार्गमें स्तोत्रादिका पाठ करता हुआ ईर्यासमितिसे गमन कर जिनालयको भगवानकी पूजन करनेके लिये जाता है वह गृहस्थ पवित्र धर्मात्मा है। यहांपर आचार्य उस गृहस्थकी प्रशंसा करते हैं—

यथा विभवमादाय जिनाद्यर्चनसाधनम्।
व्रजन्कौत्कुटिको देशसंयतः संयतायेत ॥ ६ ॥

अर्थात्—जो गृहस्थ श्रावक अपनी शक्तिके अनुसार पूजनकी सामग्री लेकर भगवानकी पूजनके लिये जाता है वह श्रावक मुनिके सदृश जान पड़ता है।

इस प्रकार श्री मंदिरजीको जाता हुआ श्रावक बड़े हर्ष तथा उत्साहके साथ तथा गाजे बाजेके साथ जब मंदिरजीके दरवाजे पर पहुंचे तब "निःसही निःसही" ऐसे शब्दका उच्चारण करता हुआ मंदिरजीमें प्रवेश करे। और प्रवेश करके शुद्ध पानीसे अपने पग धोकर फिर समवशरणमें जाकर प्रत्येक वेदीके बाईं बाजू तरफ खड़ा होकर स्तोत्रादिका पाठ करता हुआ ३ प्रदक्षिणा देवे। भगवानकी पूजन, शास्त्रकी पूजन तथा निर्ग्रन्थ गुरु हों तो उनकी पूजन यदि न हों तो परोक्ष पूजा करे, शास्त्रोंका स्वाध्याय करे तथा श्रावकोंको धर्मका उपदेश देवे तथा जितना भी समय मंदिरमें दे सके उतने समय तक रहे तथा इस बातको ध्यानमें अवश्य ही रक्खे कि जितने ही समय तक मंदिरजीमें रहे उतने समय तक धार्मिक चरचाके अतिरिक्त घर संबंधी चरचा नहीं करे। हंसी मजाक कौतूहल वगैरह न करे। ऐसा करनेसे कषायोंकी तीव्रता होती है तथा धर्मानुरागमें हानि होती है तथा जो चौरासी आसादना दोष बतलाये हैं यथाशक्ति उनका भी त्याग करे। इत्यादि विधिपूर्वक प्रातःकालीन पूजनकी विधि समाप्त करके अपने घर आकर यथाशक्ति उत्तम पात्र मध्यम पात्र जघन्य पात्र या कुपात्रको भी आहारदान देवे, बाद आप आहार करे। (उत्तम पात्र महाव्रतधारी भावलिंगी मुनि, मध्यम पात्र देशव्रती श्रावक, जघन्य पात्र अविरत सम्यग्दृष्टी श्रावक तथा कुपात्र सम्यग्दर्शन रहित द्रव्यलिंगीमुनि तथा श्रावक)। यदि काल दोष वश कोई पात्र न भी प्राप्त हो तो विद्यार्थी वगैरहको भोजन करावे अथवा समयपर कोई भी प्राप्त न हो तो अपने द्रव्यमेंसे थोड़ासा भाग निकालकर अलग कर देवे। बाद भोजनके आप अर्थोपार्जनके निमित्त बाजार या दुकानपर जावे और न्यायपूर्वक द्रव्योपार्जन करे और करीब ३ बजे फिर बाजारका कार्य छोड़कर मंदिरजी जाकर प्रातःकालके समान ही पूजन करे और दूसरी वेलामें यदि कोई मुनि आते हों तो उनको आहार देवे। बाद फिर सायंकालीन भोजन करे (शामका भोजन प्रत्येक गृहस्थको सूर्यास्तके १ घंटे पहिले अवश्य कर लेना चाहिये क्योंकि इसके

बादका भोजन रात्रिभोजनमें शामिल है ।) इस प्रकार दिनका कार्य समाप्त होनेपर रात्रिमें भी मंदिरजीमें जाकर भगवानके समक्ष अपने दिन-भरके किये हुए अच्छे बुरे कर्मोंकी आलोचना करे अर्थात् आलोचना पाठ पढ़े और किये हुए अनुचित कार्योंका पश्चात्ताप करे तथा शास्त्र स्वाध्याय करे बाद घर आकर शयन करे। रातमें यथाशक्ति जहांतक होसके ब्रह्मचर्यव्रतका परिपालन करे । यदि न कर सके तो स्वदार संतोष तो करे ही । यदि वह स्वदारसंतोष न करके परस्त्री गमन या वेश्यागमन करता है तो संसारमें उस सरीखा पापी दूसरा जीव नहीं है। सद्गृहस्थ महामंत्रका उच्चारण करता हुआ सो जाय । तथा यदि कभी बीचमें निद्रा भंग होजाय तो वह वैराग्यभावनाका ही चिंतवन करे। क्योंकि जो प्राणी संसारसे सदैव भयभीत रहता है तथा संसारकी असारताका सदैव चिंतवन किया करता है वह कभी न कभी अवश्य ही मोक्षको पालेता है । जैसा कहा है--

निद्राच्छेदे पुनश्चित्तं निर्वेदेनैव भावयेत् ।
सम्यग्भावितनिर्वेदः सद्यो निर्वाति चेतनः ॥

अर्थात्--प्राणियोंको चाहिये कि सदैव संसारकी असारता चिंतवन करें। यहां तक कि निद्रावस्थामें निद्रा भंग होनेपर भी चिंतवन करें क्योंकि वैराग्यभावका चिंतवन करनेवाला जीव अवश्य ही शीघ्र मोक्षपदको पाता है। इस प्रकार गमन करता हुआ करीब ४ बजे उसी ब्राह्ममुहूर्तमें निद्राका त्याग करे और फिर उसी प्रकार अपनी दिनचर्या बनावे जिस तरह कि पहिले वर्णन करचुके हैं ।

इस प्रकार मैं शास्त्रोक्त दिनचर्याका वर्णन करके पाठकोंसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि यदि वास्तवमें हमको अपना कल्याण करना है तथा हमें मनुष्य पर्यायको सार्थक करना है तो हमको इस मनुष्य पर्यायकी १ घड़ी भी व्यर्थ न खोकर अपना कल्याण करना चाहिये तथा अपने कल्याण करनेके साथ यदि सच्ची भावनासे समाजका उत्थान करना चाहते हैं तो करें अन्यथा धर्मविरुद्ध उपायोंसे यदि हम समाजका उत्थान करना चाहेंगे तो कभी भी न कर सकेंगे।

वीर-भावना ।

वीर प्रभु वारिधि दयाके,
धीर वीर गंभीर थे ।
कर्म रिपुके जीतनेको,
महाभट सम वीर थे ॥१॥
हे प्रभो ! करुणा दिखाके,
मार्गको दर्शाइये ।
संसारमें भूले हुओंको,
धर्म पर अब लाइये ॥२॥
सच्चे अहिंसा धर्मका,
डंका बजाया आपने ।
भूले हुए जगप्राणियोंको,
मग बताया आपने ॥३॥
भाइयों शिक्षा उसी अब,
वीरकी धारण करो ।
पावोगे " आनन्द " को,
यदि धर्मपर चलते रहो ॥४॥

निवेदक--आनन्द ।

श्रीयुत मोहनलाल मथुरादास शाह काणीसाकर.

हाल मुकाम-कंपाला (युगान्डा, इस्ट आफ्रिका)

स्वपुरुषार्थथी आफ्रिकामां योग्य स्थान प्राप्त करनार अने "दिगम्बर जैन" ना जाणीता लेखक.

"जैनविजय" प्रेस-सूरत।

(લેખકઃ-શાહ રમણીકલાલ વિમળશીદાસ.)

થોડાજ દિવસ પહેલાં મ્હારે પુનામાં એક મિત્ર સાથે સામાજીક સુધારકો વિષે વાત થઇ. વાતમાં ને વાતમાં ત્હેણે મ્હને કહ્યું-"રમણીકલાલ, ત્હમારી કિંમત શી? ત્હમારૂં કહ્યું લોકો કેમ માને? ત્હમારો અવાજ એટલો બધો સત્તાધારી (Authoritative) કેમ કહી શકાય? ત્હમે લખો કે જહેરમાં યુવક મંડળની જરૂરીયાત છે-જહેરમાં ઘરડા માણસોની મનોદશા સારી નથી. ગુલામી છે-પણ તેથી કહો કે કોણ સુધરી ગયા? કોણે ત્યાં જઇ મંડળ સ્થાપી નાંખ્યું? ઝહેરવાળા શું આગળ ધપ્યા? ત્હમારા શબ્દો પાણીમાંજ ગયાને? કલમ નકામીજ ઘસીને? પરીક્ષાનો વખત નકામો ખોયોજને?" હું તો આ સવાલો સાંભળી ઠંડોજ થઇ ગયો. મ્હારા જવાબની રાહ જોયા વગર એક પછી એક સવાલ ત્હેના મ્હોંમાંથી છુટવા માંડતાંજ શું જવાબ દેવો તે મ્હને સુઝ્યું નહિ. મ્હેં ત્હેનું બધું સાંભળી લીધું. ત્યાર બાદ ધીમે રહીનેજ કહી નાંખ્યું કે "ભાઇ, આનું નામજ પત્થર પર પાણી." હવે ઠંડા થવાનો વારો ત્હેનો આવ્યો. આટલી બધી માથાફોડનો જવાબ ફક્ત એક લીટી-અને તે પણ પાંચજ શબ્દોની-માં આવશે, ત્હેની ત્હેને સ્વપ્ને પણ ખબર ન હતી. મ્હારી પાસે ત્હેણે સમજુતી (Explanation) માગી. મ્હેં સ્હમજાવ્યું "ભાઇ પત્થર પર પાણી પડે કદી તે પીગળ્યો સાંભળ્યો છે? જો કે પ્રયોગો ચાલે છે છતાં હજી તો નથી સાંભળ્યો. નહિ પીગળવાનું કારણ ત્હેની સંપૂર્ણ જડતા. અત્યારે દિગંબર જૈન સમાજમાં એટલી બધી જડતા અથવા તો નિશ્ચેતનાત્મક બુદ્ધિ આવી ગઇ છે કે જો ત્હેના ભેજાં ઉપર આપણે ગમે તેટલું ચૈતન્ય રૂપી ઠંડું, ગરમ કે ચોકખું પાણી રેડીયે તોએ તે ભીંજાઇ પીગળે નહિ."

મ્હારો જવાબ ત્હેને ગમે તેવો લાગ્યો હોય ત્હેની મ્હને પરવા ન હતી. હું તો ખરી વાત કહેતો હતો. મ્હને કંઇ પણ વધારે પૂછ્યા વિના તે મ્હારી રૂમમાંથી ઉઠી ચાલવા માંડ્યો. મ્હેં પણ 'સાહેબજી" કહી ત્હેનું વિસર્જન કર્યું.

હવે વાંચકો! ચાલો ત્હમારી સાથે વાત કરૂં. ત્હમોજ કહો કે દિગંબર જૈન સમાજમાં હાલ લેખકોની કિંમત શી? ત્હેમનું લેખક તરીકેનું વજન શું? ત્હેમનો વ્યક્તિગત્ પ્રભાવ ગમે તેવો હોય, 'દિગંબર જૈન' પત્રમાં મુખ્યત્વે ઓરાણવાળા લલ્લુભાઇ રાયચંદ, મુંબાઇવાળા ચુનીલાલ વીરચંદ, બાકરોલવાળા મોતીલાલ ત્રીકમદાસ તથા પ્રાંતીજવાળા જીવરાજ ગુલાબચંદ વિગેરેના લેખો આવે, ગમે તેવું સારૂં ખોટું લખે-પણ ત્હમેજ કહો કે સમાજને ત્હેમની શી પડી છે? ત્હેમના કેટકેટલા શબ્દો સમાજે અમલમાં મૂકયા? ત્હેમનાં લેખમાં કહ્યા મુજબ કેટલા સુધારા થયા? જવાબમાં મીસ્ટર ઝીરો જલ્દી આવે છે. આ શું બતાવે છે? દિગંબર જૈન સમાજની જડતા નહિ? નિશ્ચેતનતા નહિ? મુડદાલપણું નહિ? કોણ ના કહી શકે તેમ છે? હું તો નથી જોતો કે કોઇ ના કહિ શકે. તેઓ કયાં કહે છે કે લોકો ત્હેમનું કહ્યું માને? તેઓ તો કહે છે કે લોકો જે ખરૂં હોય તે કહે. ખરૂં જોવાનું ત્હેમની જડ બુદ્ધિની જડ દૃષ્ટિથી નહિ પણ સ્હેજ આગળ ધપતી તેજસ્વી ઓજસ્ ધારી વિવેક બુદ્ધિથી (By the real sence of discrimination) તેઓ અમુક બાબત કહે અને જો તે ખોટી લાગે તો લોકો કહેતા કેમ નથી? ખરૂં કહું તો એ લોકોને ખોટી લાગતીજ નથી. જો ખોટી લાગે તો જવાબ ન આપે? જવાબ ન આપે એટલે એમ સ્હમજવાનું નહિ કે ત્હેમને વખત નથી-તેઓ એવી રીતે લખવાની લપમાં પડવા માગતા નથી. તેઓને વખત તો મળે છે. બહુ બહુ તો આખા દિવસમાં તેઓ ચૌદ કલાક કામ કરતા હશે, બાકીના

દશ કલાકમાંથી અડધો કલાક ગાળી જો જવાબ આપવો હોય તો ગમે તે માણસ આપી શકે છે છતાં તેઓ જવાબ ન આપે હેનું કારણ એજ કે હેમને તે સુધારકોની લખેલી દરેક બાબત માન્ય છે. અંગ્રેજીમાં પણ "Silence is half consent." ગુજરાતીમાં પણ હેનોજ તરજુમો "મુગ્ધતાથી અર્ધ અનુમોદનજ વ્યકત થાય." લેખકો તો એમ માની લે-પછી લોકોને હેમની બાબતો માન્ય હોવા છતાં તે પ્રમાણે ન વર્તે હેનું કારણ તે તો સમજી શકે કે લોકોના જીવનમાં હજી ચૈતન્ય નથી પ્રગટયું.

વાંચકો! હમેજ કહો કે આપણે શું કર્યું? આપણે કઇ દિશામાં આગળ વધ્યા? મ્હને ખાત્રી છે કે હમને કંઇક કહેવાનું મન થશે-સાથે સાથે મ્હને ખાત્રીજ છે કે હમે કંઇ કહીજ નહિ શકો. શું કહો? આપણે આગળ વધ્યા હોઇએ તો ને? આપણે રાજ્યદ્વારી ક્ષેત્રમાં શું ભાગ લીધો? આપણે શહેર સુધરાઇ ખાતાઓમાં પણ શું કર્યું? આપણે આપણી પોતાની માતૃભાષાના સાહિત્ય ક્ષેત્રમાં કેટલા ધપ્યા? હિંદના સામાજીક ક્ષેત્રમાં દિગંબરોએ શું કર્યું? અરે હેમના પોતાનાજ ક્ષેત્રમાં શું કર્યું? આપણે ભાગ શેમાં લીધો? કહું? જો ન લાગે તો-ખોટું ન લાવો તો-શ્વેતાંબરો સાથે લડવામાં શા માટે? દહેરાંઓ માટે. આપણે પૈસા પણ હેમાંજ ખર્ચ્યા, અક્કલ પણ હેમાંજ વાપરી, આગળ પણ હેમાંજ પડયા અને દુનીયાયે પણ દિગંબરોને તેથીજ જાણ્યા-બીજી કોઇ રીતે નહિ.

ભાઇઓ! આનો અર્થ એમ ન કરતા કે હું આપણી પોતાનીજ વિરૂદ્ધમાં છું. મ્હને દિગંબર ધર્મના તત્ત્વો ઘણાજ ગમે છે. હું પોતે પણ ચુસ્ત દિગંબર છું. છતાં આ તો જે પ્રમાણેની આપણી સ્થીતિ છે તે પ્રમાણેજ હું તો હમારી આગળ મૂકું છું. ખોટું ન લગાડતા, મ્હારા પર ગુસ્સે ન થતા! હું તો જે જોઉં છું તેજ કહું છું. શ્વેતાંબરો પણ આથી એમ ન સ્હમજે કે હું હેમની તરફેણમાં છું. હેમને તેમ સ્હમજવાની હું સાફ ના કહું છું, વાંચકો! હમે પુછશો કે ત્યારે શું:ધર્મસ્થાનો જવા દેવાં! લડવું નહિ! હું હમને નમ્રતાથી જવાબ આપીશ કે હું એ વિષય હમણાં નહિ ચર્ચું. એ કોઇ બીજી વખતે. અહિંઆ તો ફકત આપણે જે કર્યું છે તેજ કહું છું.

આપણી મનોદશા-કેવી!-ગુલામી. બિલકુલ સ્વતંત્રજ નહિ. સ્વતંત્રતાના વાતાવરણમાં રહીએ છતાંયે સ્વતંત્ર નહિ. કારણ? આપણે સાંકળોથી બંધાયા છીએ કંઈ ખબર છે? કહું? રૂઢીઓની. ભાઇઓ, યુવકો, બ્હેનો, વૃદ્ધ પુરૂષો, વડીલો-સર્વેને હું આમંત્રું છું. પોકાર કરીને કહું છું કે તે સાંકળોને તોડો-તોડો, દોડીને બહાર નીકળી પડો. આવો-જુવો, દુનીયા કેવી કુચ કરી રહી છે? આપણો નંબર કયાં આવી શકે?-સ્થિર આગળ વધવાની નહિ. આપણામાં આગળ વધવાની ધગશજ કયાં છે? જેટલાને ધગશ છે તેટલા આગળ વધવાનો પ્રયત્ન કરે છે. મુંબઇમાં દિ. જૈન યુવક મંડળ સ્થપાયું, મુંબાઇમાં નૃસિંહપુરા સેવા મંડળ સ્થપાયું-તે આ ધગશ વૃત્તિને લીધેજ. હું હમણાં તે મંડળો યે નહિ ચર્ચું. હેની ચર્ચા માટે ખાસ જુદુંજ લખાણ સમય આવે જોઇશું. આપણી મનોદશા-કેવી? અનન્ય ભક્તિ-આંધળી સેવા. મ્હને એક બનાવ યાદ આવે છે. જહેરનાં લોકોએ આજથી થોડાં વર્ષો પહેલાં એક બામટાને પુજી નાંખ્યો હતો-બાપજી ગણીને પગ ધોયા હતા. શરીરે પવન નાંખ્યો હતો, પગ દાબ્યા હતા. બામટાએ મૌન વ્રત લીધું હતું-ઢોંગજ હતો-પણ તે વખતે કેમ ખબર પડે? જહેરના અંધશ્રદ્ધાળુ ભક્તોએ હેને રૂપીયા પણ આપ્યા હતા. તે લુચ્ચો બીજે દિવસે સવારે કોઇ જાણે નહિ તેમ ત્રણ કે ચાર વાગે ઘોડાપર બેસી પલાયન કરી ગયો હતો.

આપણી મનોદશા-કેવી? ન્હાનો છોકરો જો સારૂં કામ કરતો હોય તો ઉદ્ધત કહેવાની-મ્હોટો

માણસ સારૂં કામ કરતો હોય તો દોઢડાહ્યો કહેવાની–વૃદ્ધ પુરૂષ જો સારૂં કામ કરતો હોય તો 'સાઠે બુદ્ધિ નાઠી' તેમ કહેવાની આવી મનોદશામાં બંધુઓ? ઉન્નતિ અશક્ય નથી લાગતી? લાગેજ. પણ બંધુઓ, તેમ ધારવાની ઉતાવળ ન કરતા. આપણામાં ઉન્નતિની પુરેપુરી શકયતા છે. ક્યારે? આપણા સમાજના લોકો સ્હેજ બુદ્ધિ વાપરી સંપના તત્વોને સમજે ત્યારે–વ્યવસ્થા શક્તિ શીખે ત્યારે–સંગઠ્ઠનનો ઉપયોગ જાણે અને આવી અધમ, નીચ મનોદશા છોડી દે ત્યારે. હું બહુ આશાવાદી છું. આવી સ્થીતિમાં પણ ઉન્નતિ તો હું જોઇ રહ્યો છું. મનોદશા છોડાવવાનો રસ્તો કહું?–લેખકોએ લેખ લખવાનો અખતરો ચાલુ રાખવો, રચનાત્મક કાર્યકર્તાઓએ પોતાનાં કાર્યો ચાલુ રાખવાં–યુવકોએ પોતાની ધગશ વૃત્તિને બહાર નીકળવાનો રસ્તો આપવો–મંડળો સ્થાપવા અને ખંત અને ઉત્સાહથી કાર્યે વળગવું–કેળવણી માટે યોગ્ય પગલાં લેવાં–સ્ત્રી તેમજ પુરૂષ બન્નેની આટલું ન થાય તો બંધુઓ! હમેજ કહો કે પરિણામમાં પત્થર પર પાણી કે નહિ?

आहार तेवो ओडकार.

श्लोक.

यदन्नं भक्ष्यते नित्यं, तादृशी जायते धिया ॥
दीपो भक्षति यद् ध्वान्तं, कज्जलं च प्रसूयते ॥

અર્થ—માણસ જેવું ભક્ષણ કરે છે, બુદ્ધિ પણ તેવીજ હોય છે. જુઓ? દીવો અંધારૂ ખાય છે તો કાજલ (મેંશ) ને ઉત્પન્ન કરે છે.

માટેજ—ઋષિયો અને જ્ઞાનીયો કહે છે કે શુદ્ધ અને સાત્વીક भोजन करो, અભક્ષ વસ્તુને કદીપણ ગ્રહણ ન કરો. પાપી લોકેના ઘરનું (યાને) નીચ લોકોના ઘરનું અનાજ, પાણી, કે કમાણી પણ બુદ્ધિમાં બગાડો કરે છે એ પ્રત્યક્ષ સિદ્ધ છે લોકમાં પણ કહેવાય છે કેઃ—

१.–जेवुं खाय अन्न, तेवुं थाय मन;
२.–जेवुं पीये पाणी, तेवी बोले वाणी.

दिगंबर जैन युवक मंडळ.

(મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ, કંપાલા-યુગાંડા)

ગત ભાદ્રપદ માસના દિગંબર જૈન માસિકમાં પાના ૩૬૭ પર દિગંબર જૈન યુવક મંડળ મુંબઇના ઉદ્દેશ્ય અને નિયમો છપાયા છે. વાંચી ઘણીજ ખુશી ઉપજે છે કે મારી મેવાડા કોમનાં પેટા મંડળો મરણ પામ્યા પછી, આજે ગુજરાતના અગ્રસ્થાને ગણાતા મુંબઇ શહેરમાં ઉપરના મંડળની સ્થાપના થાય છે.

થોડાં વર્ષ ઉપર સોજીત્રા સભામાં વીસા મેવાડા દિ૦ જૈન યુવક મંડળ સ્થપાયું હતું, જેના પ્રેસીડેન્ટ સાહેબ આધુનીક કેળવણી લઇ પ્રૌઢ થએલ સોલીસીટર સાહેબ હતા. તેમજ સેક્રેટરી સાહેબ પણ જાણીતા બી. એ. એલ. એલ. બી. હતા.

આવા વિદ્વાન કાર્યકર્તાઓના આશ્રય નીચે સ્થાપન થએલ સંસ્થા મૃત્યુ પામે એ મેવાડા કોમના યુવકોને શરમાવનારૂં નહિ તો બીજું શું ગણાય?

વળી તેજ અરસામાં વડોદરા જેવા સુધારામાં આગળ વધેલા શહેરમાં એક દિ૦ જૈન યુવક મંડળ સ્થપાયું હતું, જેણે કેટલીક પત્રિકાઓ કાઢીને તેમજ એકાદ શ્રીમંતના સત્રસમાં ભાગ લેવાની મનાઇ કરીને પોતાનું નામ કાંઇક આગળ આણેલું તે મંડળ પણ હાલ સુરસાગરને કાંઠે વિખરાઇ ગયું હોય તેમ જણાય છે.

તેવીજ રીતે આપણા ગુજરાત પ્રાંતમાં દિ૦ જૈન ધર્મને પ્રાંસાદ્ધિમાં આણનાર દાનવીર સ્વર્ગસ્થ શેઠ માણકચંદજીએ સ્થાપન કરેલ શ્રી મુંબઇ દિ. જૈન પ્રાંતિક સભા પણ હાલ આપણા ગુજરાતીઓને સારા નાશ્યે મદી પડી હોય તેમ જણાય છે.

ઉપરની ત્રણ સંસ્થાઓનું વર્ણન કરી હું તેઓના છિદ્ર બતાવવા માગતો નથી, પણ આપણે ગુજરાતીઓ આરંભે શુરા જેવા દેખાઇએ છીએ, તેમ આ મંડળનું ન થાય, તેટલાજ માટે મારે આપને ઉદ્દેશીને બે શબ્દો લખવાની જરૂર પડી છે.

હું ધારૂં છું કે-**આક્ષેપ શિવાય સુધારો નથી,** એ સિદ્ધાંત આપને માન્ય હશેજ. જો મારાથી કાંઇક વધારે લખાઇ જાય તો ક્ષમા પ્રદાન કરવા વિનંતી છે.

આપના મંડળના પ્રેસીડેન્ટ કોણ છે, તે જો કે-હું જાણતો નથી, પણ સેક્રેટરી સાહેબને હું નામથી ઓળખું છું, તે બાહોશ અને ખંતથી કામ કરે તેવા છે, તો તેને સ્થાનીક ભાઇઓ તન-મન-ધનથી મદદ કરી પગભર કરશો એમ આશા છે.

યુવક મંડળ જ્યારે સમાજમાં દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા કરતાં પણ વધુ માન મેળવે ત્યારેજ તેના કાર્યવાહકોના ચાતુર્યતા ગણાય.

યુવાનોનાં યુવાન કાર્યોમાં વૃદ્ધો આડા આવે છે, તેમને સમજાવી પોતાના વિચારના કરવા, તેજ આધુનીક યુવાની વિદ્યાનું ભૂષણ છે.

માનનીય સેક્રેટરી સાહેબે, જો બધા કાર્ય-કર્ત્તાનાં નામ બહાર પાડ્યાં હોત તો બહાર ગામના યુવકોને સભ્ય બનવા વધુ આકર્ષણ થાત.

મંડળના ઉદ્દેશ્ય સારા છે. પણ નિયમો ઘણાજ ઓછા હોઇ તેમા સુધારા વધારાની જરૂર છે.

૧—પંદર વર્ષની ઉમરનો પુરૂષ કરતાં વીસ વર્ષની ઉમરનો પુરૂષ મંડળમાં દાખલ થઇ શકે. તેજ યુવક ગણાય. આપણે એક બાજુ અઢાર વર્ષની ઉમરમાં લગ્ન કરનારને બાળ લગ્ન માનીએ છીએ, તે વખતે પંદર વર્ષની ઉમર બહુજ નાની ગણાય. વળી પાંત્રીસ વર્ષ સુધીની ઉમરનો પુરૂષ યુવક ગણાય. તે પણ ઉમેરવું જોઇએ, માનનીય સભ્ય અને કાર્યવાહક સભ્ય એથી મોટી ઉમરનો હોય તો પણ બાધ લેવો નહિ.

૨—આ મંડળના સભ્યે સ્વદેશીને ઉત્તેજન આપવું, એ એકજ નિયમ બહુ સંકુચિત ગણાય, પણ તેથી વધારે કડક અને વધારે નિયમ રાખી આદર્શ યુવક થાય તેમ હોવું જોઇએ, ને તોજ સમાજ પર છાપ પડે, બાકી જ્યાંસુધી મંડળના સભ્ય સામાજીક સડામાંથી નિર્વૃત ન થાય, ત્યાંસુધી તે સમાજ સુધારી શકેજ નહિ.

૩—સહાયક સભ્ય અને સામાન્ય સભ્ય નહિ પણ માનનીય સભ્ય અને સાધારણ સભ્ય હોવા જોઇએ.

માનનીય સભ્યની ફી હોવી જોઇએ નહિ, પણ તે જો ખુશી થઇ કોઇ રકમ મંડળને ભેટ કરે તો તે સ્વિકારવી જોઇએ.

મારી સુચનાઓનો અમલ કરવો જો મંડળના કાર્ય-કર્ત્તાઓને ઠીક લાગે તો હું જણાવવાની રજા લઉં છું કે મંડળના દરેક સભ્યે નીચેની પ્રતિજ્ઞાઓ લેવી જોઇએ, અર્થાત્ મંડળના છાપેલા નિયમ ફોર્મ પર દરેક સભાસદે સહી કરી તે પ્રમાણે વર્તવું જોઇએ, તોજ મંડળ કાંઇક આદર્શ બને. સભાસદ ઓછા થાય, એ પ્રશ્ન ઉઠશે પણ જો દશજ સભાસદ નીચેની પ્રતિજ્ઞા લીધેલા થઇ કાર્યની શરૂઆત કરે તો હું નથી ધારતો કે બીજા સભાસદ આપો આપ થયા સિવાય રહે.

દુનિયા ઝુકતી હૈ, મગર ઝુકાનેવાલા ચાહીએ, એ ભુલી જવું જોઇતું નથી. આજના યુવાનોના હૃદયમાં સમાજના સડા દૂર કરવા ધગશ છે, લાગણી છે, પણ તેમને ઉત્તેજન આપનાર સિવાય તેઓ ધુંધવાઇને બેસી રહે છે. આપનું મંડળ જો નીચેની પ્રતિજ્ઞાઓ લઇ કાર્યની શરૂઆત કરે તો આપણા સમાજને સુધરતાં જરા પણ વાર લાગે નહિ.

પ્રતિજ્ઞાઓ.

૧—હું મરણ નિમિત્તનો કોઇપણ ન્યાતવરો કરીશ નહિ, તેમજ તેવા વરામાં જમવા જઇશ નહિ.

૨—હું વર વિક્રય તેમજ કન્યા વિક્રયને

હૃદય પૂર્વક ધિક્કારું છું, જેથી મારાં સંતાનોને હું તે સિવાયજ વરાવીશ.

૩—હું કાંણુ માંડણુ કરીશ નહિ, તેમજ મારા ઘેર કરાવરાવીશ નહિ.

૪—હું પંદર વર્ષથી ઓછી ઉમરની કન્યા અને અઢાર વર્ષથી ઓછી ઉમરના છોકરાને પરણાવીશ નહિ, તેમજ તેવાં લગ્નોમાં ભાગ પણ લઇશ નહિ.

૫—હું હવેથી પરદેશી કાપડ પહેરીશ નહિ. તેમજ મારા કુટુંબીઓ માટે ખરીદીશ નહિ.

૬—શીમંતના શરમ ભરેલા પ્રસંગે હું કોઇને ત્યાં જઇશ નહિ, તેમજ મારે ઘેર શીમંત વિધિ શાસ્ત્ર આજ્ઞા પ્રમાણેજ કરાવીશ.

૭—રોટી વહેવાર ત્યાં બેટી વહેવારની પ્રથાને હું અંતઃકરણપૂર્વક માનનારો છું. ને હું તેવાં લગ્નોમાં બનતી મદદ કરીશ, પણ તે લગ્ન કન્યા વિક્રય–બાળ લગ્ન–વૃદ્ધ લગ્ન–વર વિક્રયથી રહિત હશે તોજ.

૮—હું મને ચાલીસ વર્ષ થયા પછી લગ્ન કરીશ નહિ. તેમજ તેવાં લગ્નમાં ભાગ પણ લઇશ નહિ.

૯—અસ્વચ્છતા અને અભક્ષતાના કારણ સિવાય હું જમવામાં પંક્તિ ભેદ માનતો નથી.

૧૦—નાત–જાતમાં તડ–પેટાતડ હું માનતો નથી.

૧૧—જૈન ધર્મ એ ઋષિ પ્રણિત ધર્મ હોઇ, તેમાં પડેલા મત, મતાંતર, ગચ્છ, સંઘ, આમ્નાયને હું માનતો નથી. ને હું મારી બનતી મહેનતે તે ભાગલા દૂર કરી જૈન ધર્મ એ છત્ર નીચે સમગ્ર સંઘને લાવવા કોશીષ કરીશ.

૧૨—તમાકુ, ચાહ, દારૂ, ગાંજો. ભાંગ, અફીણ, ઇત્યાદિ કેફી ચીજનું હું સેવન કરીશ નહિ. બધું નહિ બની શકે તો દારૂ, ગાંજો, અફીણનો અવશ્ય ત્યાગ કરીશ.

૧૩—માંસ ભક્ષણ એ જૈન શાસ્ત્ર અને દરેક શાસ્ત્રમાં નિષેધ છે, છતાં હું પ્રતિજ્ઞા કરું છું કે હું માંસ ભક્ષણ કરીશ નહિ, તેમજ તેના વ્યસનીઓને ઉપદેશ આપી સુધારીશ.

૧૪—મનુષ્ય માત્રને હું સમાન માનું છું. તેથી ઉંચ અને નીચના ભેદ હું તોડી નાંખવા બનતું કરીશ.

૧૫—અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરવો એ મારી મુખ્ય ફરજ છે.

૧૬—ચોરી અને વિશ્વાસઘાત એ મહાન પાપ છે, એ હું સારી રીતે સમજું છું.

૧૭—ક્રિયા સિવાયના ઉપવાસ નકામાં છે. એમ હું માનું છું, તેથી હું પોતે જ્યાં સુધી આચારમાં સુધરીશ નહિ, ત્યાં સુધી લાંઘણ ખેંચીશ નહિ. તેમજ બીજાઓને પણ આચારનું પાલન કરવા ભલામણ કરીશ.

૧૮—લગનમાં દારૂખાનું ફોડવું. તે અહિંસાવ્રત ધારીને શોભે નહિ, એમ હું માનું છું. તેથી મારાં બાળકોના લગ્નમાં દારૂખાનું ફોડીશ નહિ.

૧૯—માબાપને ઘેર તેમજ શ્વસુરને ઘેર રહી, ચાલુ સમયમાં વિધવાઓ જે અનર્થ ઉપજાવે છે. વિષય સેવન દ્વારા જે અનીતિ આદરે છે. ગર્ભપાતથી જે બાળહત્યાઓ કરે છે, તેથી હું ઘણો દિલગીર છું. જેથી હું મારી સર્વ શક્તિઓનો ઉપયોગ વિધવાઓને સુધારવા તેઓને શ્રાવિકાશ્રમ કે વિધવાશ્રમ જેવી સંસ્થાઓમાં મોકલાવી ઉચ્ચ ચારિત્રવાન બનાવી, તેઓને જૈન ધર્મનાં ઉંચા વ્રત ધારી ઉત્તમ આર્જીકા બનાવવાના કામમાં વાપરીશ.

૨૦—શ્રાવક શબ્દ જે ત્રણ ઉત્તમ વ્યંજનોથી બનેલો છે, તે હું સાર્થક કરીશ. અર્થાત્ શ્રદ્ધા વિવેક અને ક્રિયા ચારિત્રમાં ઉતારી જગતને શ્રાવક શબ્દનું રહસ્ય સમજાવીશ.

૨૧—બ્રહ્મચર્ય એજ શરીર સાચવનાર શસ્ત્ર છે, જેથી હું મારાથી બનતી મહેનતે બ્રહ્મચર્ય પાળવા કોશીશ કરીશ.

૨૨—વેસ્યા સેવન એ માદક ચીજના સેવન જેવું એક વ્યસન છે. તેમજ વેસ્યા એ એક રોગથી ભરેલું, દુર્ગંધ યુક્ત સ્ત્રી પાત્ર છે, તેનો સહવાસ કરનાર રોગ, અને અપજશનો ભોગ થઇ મનથી પાયમાલ થઇ, મરણાંતે દુર્ગતિમાં

જઇ પડે છે, જેથી હું મરણાંતે પણ વેશ્યા ઘરે જઇશ નહિ.

૨૩—શાસ્ત્રાજ્ઞા મુજબ સ્વીકારેલી પત્નિ સિવાય બધાં સ્ત્રી પાત્ર, મારે બહેન તુલ્ય છે. જેથી હું સ્વપ્ને પણ પરસ્ત્રીની ઇચ્છા કરીશ નહિ.

૨૪—મારો વ્યવહાર હું સત્ય અને ધર્મનાં ફરમાન મુજબ ચલાવીશ.

૨૫—હું કન્યાવિક્રયવાળા લગ્નમાં તથા મૃત્યુના જમણમાં ભાગ લઇશ નહીં.

પ્યારા સભાસદો.

આપ જો મંડળમાં દાખલ થતા પહેલાં ઉપરની પ્રતિજ્ઞાઓ પર સહી કરી પછીજ સભાસદ ફોર્મ પર સહી કરો, તો વધુ આનંદનીય છે.

સાંપ્રત કાળે દરેક સમાજ સુધારાને પગલે પગલાં માંડી રહ્યા છે, તેવા ટાઇમ તમારૂં આ પગલું પ્રશંસનીય છે.

વીસમી સદી વર્ણો અર્થાત્ પેટા તડાંને નાશ કરનારી છે. વીસમી સદી યુવકોની છે. વીસમી સદી વૃદ્ધોને સંન્યાસ લેવાની છે તો આપણે યુવકોએ એકમત થઇ આપણી ફરજો અદા કરવી જોઇએ,

ઉપરની પ્રતિજ્ઞાઓ લીધેલા યુવકો એકમત થઇ ધારે તો થોડાજ ટાઇમમાં સમાજનો ઉદ્ધાર કરી શકે.

શ્રાવકના પુત્રે શ્રાવકની ક્રિયા જાણવીજ જોઇએ, જૈને જૈન શાસ્ત્રો શીખવાંજ જોઇએ, એ સિદ્ધાંત અનાદિ નિધન છે, છતાં ચાલુ કાળે આપણા કેટલાય બંધુઓ જૈન શબ્દનો પુરો અર્થજ જાણતા નથી, તો શાસ્ત્રોનો ભાવાર્થ તો જાણેજ ક્યાંથી ?

આપણી એ અજ્ઞાનતા દૂર કરવા માટે ગુજરાતમાં એક જૈન વિશ્વ વિદ્યાલયની જરૂર છે, તે કામ યુવક મંડળે ઉપાડી લેવાની જરૂર છે.

વિદ્યાલય ગુજરાતના પ્રાચીન તીર્થ પાવાગઢ જેવા સ્થળે સ્થાપન કરી તેમાં ધાર્મિક અને રાજકીય કેળવણી આપવા ઉપરાંત સંસાર વ્યવહારની કેળવણી આપવાની પણ સગવડ કરવી જોઇએ.

આપણો વિદ્યાલય ખોલવાનો ઉદ્દેશ એ ન હોવો જોઇએ કે વિદ્યાલયમાંથી ઉત્તીર્ણ થએલો સ્કોલર પાઠશાળાની નોકરીમાં જોડાય.

વિદ્યાલય સ્થાપવાનો ઉદ્દેશ એ હોવો જોઇએ કે વિદ્યાર્થી ધાર્મિક કેળવણી સાથે સામાજીક કેળવણી લેવા ઉપરાંત રાજકીય કેળવણી લઇ વ્યવહાર ધર્મ કુશળ થઇ દેશાવર કે દેશમાં રહી સ્વતંત્ર ધંધો કરી ચારિત્ર પૂર્વક ગૃહસ્થ ધર્મ પાળી શકે, અને વૃદ્ધા વસ્થામાં સંન્યસ્ત લઇ આત્મ કલ્યાણ કરી શકે ? આપણાં ઉત્તર તરફનાં કહેવાતાં વિદ્યાલયો સાંપ્રતકાળે પંડિતો ઉપજાવવાનું કાર્ય કરી રહ્યા છે, જે પંડિતો વિદ્યાલયમાંથી નિર્ગત થયા પછી આપણીજ સામે પોતાના જ્ઞાનનો ઉપયોગ કરી આપણા સમાજનું અધઃપાત કરી નાંખે છે, તેમ આપણા વિદ્યાલયમાંથી ન થાય, તેને માટે આપણે વિદ્યાલયમાં સામાજીક, વ્યાપારિક અને ઔદ્યોગિક કેળવણી પણ આપવાની વ્યવસ્થા કરવી જોઇએ.

સમાજનાં નાણાંથી સાધન સંપન્ન થએલા તેઓએ આપણી ભારતવર્ષીય દિ૦ જૈન મહાસભાને જે રસાતળે પહોંચાડી છે, તેની યાદ આણતાં આપણાથી તેઓ તરફ તિરસ્કાર બતાવ્યા સિવાય રહેવાતું નથી. તેમનાજ પ્રતાપથી આપણા સમાજના પંડીતપક્ષ અને બાબુપક્ષ એમ બે પક્ષ પડી ગયા છે, તે પ્રભુ જાણે ક્યારે એકત્ર થશે. આપણા ગુજરાત પ્રાંતમાં તેવો વખત ન આવે તેને માટે આપણે યુવાનોએજ કટીબદ્ધ થવાની જરૂર છે.

યુવક મંડળોએ ગામવાર સ્થાપન થઇ તાલુકા કે સંભાવાર સંગઠન કરી વિભાગીય યુવક મંડળમાં જોડાઇ **જૈન ધર્મ** અને **જૈન સમાજમાં** જગતના મનુષ્ય માત્રને જોડાવા આમંત્રણ કરવું જોઇએ, અર્થાત્ જૈન સમાજ એજ એક સમાજ અને એજ એક ધર્મ એમ સર્વેનો કરવા તન–મન–ધનથી પ્રયાસ કરવો જોઇએ.

એકજ ધર્મ પાળતી જાતિઓ એકજ ગણાય, અર્થાત્ ધર્મદ્વારા જાતિનું સંઘટ્ટન કરી વીર પિતાના પુત્રો એકજ વાડામાં જોડાશે ત્યારેજ જગતમાં જૈન ધર્મના ઝંડો ફરકશે.

પ્રભુ તે દિન જલ્દી લાવે. તેજ ઇચ્છાપૂર્વક વિરમું છું. ૐ શાંતિઃ

कन्याओंनु भविष्य.

લે:-જૈન મહિલારત્ન લલિતાબ્હેન-મુંબઇ.

કન્યા એટલે કુમારીકા એ કુમારીકાજ ભવિષ્યમાં લગ્ન સંબંધથી જોડાય છે, એટલે સ્ત્રીપણાને પ્રાપ્ત થાય છે, અને ભવિષ્યમાં સંતાનની માતા બને છે.

કન્યાને નાનપણમાં જો સારી કેળવણી આપી હોય તો તે ગૃહને શોભાવનાર નિવડે છે અને સારી કેળવણી ન આપી હોય તો તે એક કુલાંગારરૂપ બીજાને પીડા આપનાર નિવડે છે. માટે માતા પિતાની ફરજ છે કે કન્યાઓને નાનપણથીજ સારી કેળવણી આપવી. કરકસરથી કામ કરનાર સ્ત્રીની ગણના ઉત્તમ સ્ત્રીઓમાં થાય છે, તો બાળક વધુ ખર્ચાળ બને તે ઉપર માતા પિતાએ ધ્યાન આપવું અને તેમને વૃથા ખર્ચ કરતાં સમજણ આપીને અટકાવવું જોઇએ. હલકી સ્ત્રીઓ મુખમાંથી હલકા વચન બોલે અને ઉત્તમ સ્ત્રીઓ ઉત્તમ વાણી વદે એ સમજણ બાળકને આપવા કરતાં ઉત્તમ વાણી વદનારની સંગતિમાં રાખવાં જેથી ભવિષ્યમાં બાળક ઉત્તમ વાણીને બોલનાર નિવડે. વળી કન્યાના માબાપ જો સજ્જન હોય તો તે કન્યાને એવો બોધ આપે કે જેવો માતા પિતા પ્રત્યે પૂજ્યભાવ તેવોજ સાસુ સસરા પ્રત્યે રાખવો જોઇએ. વળી કોઇને કલંક કે ખોટું આળ ન ચઢાવવું જોઇએ કેમકે આત્મા સર્વેનો સમાન છે. જો કોઇ આપણા પર ખોટું કલંક લગાડે છે તો આપણને ઘણું દુઃખ લાગે છે. તેમજ બીજાને પણ પોતાના પર આવી પડેલા આળથી દુઃખ થાય છે. કન્યાઓને નાનપણથીજ સવારમાં વહેલાં ઉઠવાની ટેવ પાડવી અને ઉઠીને તરત પ્રભુ સ્મરણ કરતાં શીખવાડવું. તથા માતા પિતા વડીલોને નમસ્કાર કરતાં પણ શીખવવું. વળી ઘરની વ્યવસ્થા ઠીક શીખવાડવી જોઇએ. ઘરની તમામ ચીજો ચોખ્ખી-સ્વચ્છ અને નિયમિત સ્થાને મુકવાની ટેવ હોવી જોઇએ. જો કન્યાને ખાલી ભણતર શીખવવામાં આવે અને ગૃહવ્યવસ્થાની કેળવણી ન આપવામાં આવે તો તે કન્યા ગૃહિણી થયા બાદ પોતાના ઘરને શોભાવી શકતી નથી તેમજ ગૃહવ્યવસ્થા ઠીક ન હોવાને લીધે ઘરની હવા પણ સારી રહેતી નથી, આ કારણથી અનેક રોગો ઘરના આખા કુટુંબને પીડે છે. વળી કન્યા દરેક સાથે હળીમળીને ચાલે એમ શિક્ષણ આપવું જોઇએ. હળીમળી ચાલનાર કન્યા ભવિષ્યમાં કુટુંબમાં સંપીને રહે છે. સંપીને રહેનારમાં દ્વેષરૂપી દુર્ગુણ દાખલ થતો નથી. વળી કન્યાને દરેક કાર્ય વિચાર વિવેક પૂર્વક કરવાની ટેવ પાડવી જોઇએ. ઉતાવળથી અવિચારી કામ કરનારને પાછળથી પસ્તાવું પડે છે. વળી કન્યાઓને નાનપણથી કપડાં તથા શરીરને સ્વચ્છ રાખતાં શીખવું જોઇએ. બાળકોના માત પિતાએ બાળકોના સાંભળતાં કે દેખતાં એવી વાતો અને કામ ન કરવાં કે જેથી બાળકોના મન પર ખરાબ છાપ પડે. વાણી હંમેશા સત્ય અને મીઠી બોલવી. પર નિંદા કરવી નહિ અન્ય પુરૂષ કામદેવ જેવો હોય તો પણ તેનાપર કુદૃષ્ટિ કરવી નહી. પોતાનો પતિ કાણો કુબડો ગમે તેવો હોય પણ તેને દેવરૂપ માનવો એ સ્ત્રીનો ધર્મ છે. સંકટો સહીને પણ શીલની રક્ષા કરવી એ પવિત્ર સ્ત્રીઓની ફરજ છે. દુઃખની વખતે ગભરાઇ જઇ હાય વોય ન કરવી પણ ધીરજથી સંકટ નિવારણનો માર્ગ શોધવો વિગેરે સારી કેળવણી કન્યાઓને આપવી કે જેથી ભવિષ્યની કન્યા એટલે ગૃહિણી ધર્મને પાળનાર સ્ત્રી યોગ્ય નિવડે. વળી નાનપણથી ભયનું ભૂત ન લાગવા દેવું જોઇએ. ભયથી માણસ અસત્ય બોલે છે. ભયથી માણસ ન કરવા લાયક પાપ કરે છે. વળી હું નિર્બલ છું એવી ભાવના મનમાં ન આવવી જોઇએ, પણ એવી ભાવના હોવી જોઇએ કે હું સર્વ શક્તિ-

માન અનંતજ્ઞાન દર્શન સુખ વીર્યનો ધણી છું. જો હું ધારૂં તો અબળાની સબળા થઇ શકું છું. ફક્ત મનની નબળાઇ જવી જોઇએ. કેટલીક સ્ત્રીઓને કંઇ કામ કરવાને કહીએ તો તેમના મુખમાંથી એમજ નિકળે છે કે અમારાથી નથી થતું અમને આવડતું નથી, એ એમની મનની નબળાઇ દેખાડે છે. નહિ, બ્હેનો તમે એ મનની નબળાઇ છોડો. તમે જે કળા શીખવા ચાહો તેમાં પુરતું મન આપો અને ખંતથી કામ કરો તો જરૂર તે કામ સિદ્ધ થશે. મનની નબળાઇ વાળાજ નાસીપાસ થાય છે. કાળા માથાનો માનવી જે ધારે તે કરી શકે-માત્ર પુરૂષાર્થ કરવો જોઇએ. જ્ઞાનદ્વારા પુરૂષાર્થ કરવાથી આત્મા અનંત કર્મોનો નાશ કરે છે. અને અક્ષય અનંત સુખને પ્રાપ્ત કરે છે. વ્યવહારમાં પુરૂષાર્થ દ્વારાએ જે ન પકડી શકાય એવી વિજળી તેને પણ જ્ઞાન દ્વારાએ પુરૂષે પકડીને એ દ્વારાએ બત્તીઓ ઉત્તમ પ્રકાશ બધાને આપે છે. વીજળીના પંખાઓ ગરમીની આકુળતાને દૂર કરે છે. ઇલેક્ટ્રીની ગાડીઓ લાખો માણસોને ઉપાડીને દોડે છે. આ બધું માણસોનુંજ કર્તવ્ય છે. આપણે પણ માણસોજ છીએ માટે આપણે પણ જે ધારીએ તે કરી શકીએ. અંતમાં મારૂં એજ કહેવું છે કે કન્યાઓને સારી કેળવણી આપવી અને સારા સમાગમમાં ઉછેરવી જેથી તે ભવિષ્યમાં સારી ગૃહિણી થાય.

“संसारनो सैनिक.”

(લેખકઃ-ચુનીલાલ વીરચંદ ગાંધી, મુંબઇ.)

યુવાન એ નવ સૃષ્ટિનો સર્જનહાર છે. યુવક અને યુવતિ એ સંસાર રથનાં બે ચક્રો છે, સુખ દુઃખનાં સહોદર છે. આ પતિઓના સામે થનારાં ને સહેનારાં એ સૈનીકો છે. જતા સર્પને રમકડું સમજી પકડવાની-નીડરતા ભરી રમત રમનાર બાળક-યુવક બને છે. એજ યુવક તે આવતી કાલની આશા છે. એજ યુવતિ કાલની ઊષા છે.

યુવકોની જુવાબદારી વધતી જાય છે. આજે ભારતનું ગૌરવ યુવકોની વીરતા પર આધારવંત છે. યુવક સંગઠનની ભેરીઓ ચોમેર ગર્જના કરી રહી છે. “યુથ લીગ ને યુવક મંડળો” ની સ્થાપના થતી રહી છે.

આજના યુવકને યુવતિને શીરે અનેક પ્રકારની જવાબદારી છે.

સમગ્ર ભારતના દિગમ્બર જૈન સમાજના યુવકોનું એક સંગઠન થવાની અનીવાર્ય જરૂર છે. અને ગામે ગામ યુવક સંઘની સ્થાપના થવાની ખાસ જરૂર છે.

જુની રૂઢીઓનાં બંધન તોડવાને ભગીરથ પ્રયત્નો કરવા-તમે શું કરશો ? વિધર્મીઓની ગુંડાશાહીથી બચવા તમારૂં બળ કેવી રીતે કેળવશો ? બાય કાંકલા અને ભીરૂતાથી વિમુખ થવા તમે શું કરશો ?

વીર બંધુઓ—યુવક સંગઠન માટે મંડળોની સ્થાપના કરો.

શારીરિક બળ માટે વ્યાયામશાળાઓ રચો, કસરતથી તમારાં શરીર સુંદર ને સુદૃઢ બનાવો, વીર વીરાંગનાના પાઠ ભણો, નીડર બનો, મરણનો એકજ દીવસ નીર્માણ છે, એ બરાબર સમજી તમારા મંદિરોનું રક્ષણ કરો. તમારી માતા અને

બહેનોની આબરૂ સાચવવા ગુંડા નહિ પરંતુ વીર બનો. વહેમ, પ્રમાદ અને જડવાદમાંથી બચો. તમે નિર્બળ છો, એ ભાવનાને તીલાંજલિ આપો. હ્લાવર અને હૃદયપુષ્ટ મનુષ્યના હાથમાં તલવાર હીમત વિના નકામી છે. કારણ કે બળ છે છતાં હિંમત નથી. આત્મબળ જેનું સર્વોપરી છે, તેની સામે વૈરી આયુધો હારે છે. એકલા બળથી વિજય નથી પરંતુ સાથે કળાની ખાસ જરૂર છે.

સાચો વીર ઘા ઝીલી શકે છે. ઘા ઝીલી શકે છે એજ ઘા કરી શકે છે. પીઠ પાછળના ઘા અને નીંદા એ તો ચોખ્ખી ભીરૂતા છે. જે વીરને મરતાં આવડે છે તેનેજ જીવતાં આવડે છે.

યુવકો. પ્રમાણીક માર્ગે કુચ કરવા તમારી જીવન નૌકા હાંકો, એમ શાસ્રો કહે છે. માતા પિતા ને વડીલોની આમન્યા સાચવી સ્વતંત્રપણે આગળ આવો. સ્વતંત્ર બનવા આકાશ પાતાળ એક કરો. સ્વચ્છંદી કદી ન બનશો. જેઓને ઘેર રિદ્ધી-સિદ્ધિ લાડી વાડી ને ગાડી છે, જેને બીજાના દુઃખોની દરકાર નથી, અન્યનાં આંસુડાંની જેને કીંમત નથી, તેવા એકલપેટાની જીવન પ્રથા સામે બેઠો બળવો જગાડવા તૈયાર થાઓ.

મુંબાઇનું શ્રી દિ. જૈન યુવક મંડળ તમોને જોડાવા અપીલ કરે છે. તમોને તમારા ગામમાં ને શહેરમાં યુવક મંડળ સ્થાપવાને વિનવે છે.

તમો મંડળ દ્વારા સંગઠન કરો તો તમારા પર અનિવાર્ય ફરજ છે.

લગ્નો, મરણો, ને વાહ વાહના શંખધ્વનિ પોકરાવવાના લ્હાવા નીચે જે અયોગ્ય અને બીજા જરૂરી ખર્ચા થતા હોય તે બંધ કરાવવા-ને તમારે સાચા સૈનીક થવું પડશે.

સમાજમાં જડ ઘાલી બેઠેલી અયોગ્ય રૂઢી-ઓને ઊખેડવા ધર્મને નામે ધર્માંધ બની સમા-જમાં ઝઘડા ઊપસ્થિત ન કરતા દોઢ ડાહ્યાઓને વિવેકથી સમજાવવા, ફરજનું ભાન કરાવવા સૈનીક થવું પડશે.

હર એક મનુષ્યમાં ત્રણ પ્રકારના જનુનમાંથી એક પ્રકારનું જનુન હોવું જોઇએ-

ધાર્મિક-સામાજીક-ને રાષ્ટ્રીય. આજે ધર્માંધતા ધારી બેઠેલો એવો એક વર્ગ છે કે તે જીભના જોરેજ આપખુદી ચલાવે છે. નબળો ધણી બૈરીપર શૂરો એ કહેવતે તેનું બળ કુંટુંબ, સમાજ ને આપસ આપસમાં ચાલે છે. ને તેથી કલેશની આગ સળગાવતાજ રહે છે

દેવના ગુણની ચર્ચા કોઇ સમાજ બંધુ સારી અપેક્ષાએ કરે, મુનિ, ને બ્રહ્મચારીઓની પ્રથા અયોગ્ય ને ક્રિયા રહિત દેખાતાં ચર્ચા કરે તો આ નામના ધર્માડંબરીઓ ઊહાપોહ કરી-તેને સખત શિક્ષા કરવા-દોડા દોડ કરે છે. પરંતુ જો વિધર્મી ગુંડાઓના હાથે પોતાનું, પોતાના ધર્મનું, પોતાના દેવનું અને માતા બહેનોનું અપમાન થતું હોય ત્યાં ત્યાં બગાસા ખાતા નીરાંતે નીંદ્રા લે છે.

મંદિરો ટુટે ગુંડાઓ સમાજ-બાળાઓને ઊઠાવી જાય, તેઓનાં શીયળ લુંટે, ભર બજારે સતાવે નદી કીનારે પાણી ભરવા જતી પનીહારી-ઓને કાંકરા મારે, છતાં મારા આ ધર્મવીરો આંખ પણ ઉંચી ન કરે. જીભ પણ ન હાલે, ને તે સમયે બિચારા ને બાપડા વાણીયા બગને...આજે જેઓ ધર્મને નામે મરવા તૈયાર છે. આજે જેઓ સમાજ અને ધર્મને માટે કંઇ પણ કરવા તૈયાર હોય તેઓને સમયનું માન ભર્યું આમં-ત્રણ છે કે કુદયી જવા તૈયાર થાય અને પોતાનું નામ શ્રી. દિ. જૈન યુવક મંડળને મોકલાવી આપે.

ધર્મની મોટી મોટી વાતો કરી જાણે છે. પરંતુ ધર્મરક્ષા કરવામાં જ્યાં લગારે તૈયારી ન હોય. ત્યાં ધર્મની હસ્તી રહેશે કે કેમ તે શંકા છે?

એક વર્ગ એવો છે કે દેવ દર્શનની મહત્તા ન સમજે છતાં જે આચરણ હોય તે ગાડરીયા પ્રવાહ પ્રમાણેજ-એટલે આ વર્ગ રૂઢી પૂજક છે. જુના રીવાજો એટલે બાપના કુવામાં ડુબી મરવું એ મોક્ષ છે. એવું માનનારો વર્ગ તે આ છે. દેશકાળ ભાવનાને અનુસરીને જો કોઇ નાડી પરિક્ષક હીતની દલીલ રૂઢી પૂજકો સન્મુખ કરે

તો-તે તે દલીલ તેઓને પ્રતિકુળ હોય તો તે દલીલ રજુ કરનારને તેઓ નાસ્તીક ને પાપી માને છે. સુધારા રૂપી રાક્ષસને પોષનારા સમજે છે. પુર્વજોની પાડેલી પ્રથાને લુંટનારો લુંટારો સમજે છે.

આ વર્ગ વાયું નહિ કરે પરંતુ હાર્યું તો જરૂર કરવાનો-જે પ્રગતિ યુવાનો આજ કરવાના છે, તેને આ વર્ગ બંધન રૂપ છે. એ બંધ કાચો છે, તે ધીરે ધીરે ટુટતોજ જાય છે છતાં તેના પાયા પ્રાચીન હોવાથી ટકી રહ્યા છે. આ વર્ગને યુવકો ચેતવણી આપે છે કે તે કીલ્લાનાં પડેલાં અને પડતાં અયોગ્ય વિપ્લવકારી બદી રૂપી બાકોરાં ને પુરી દેવામાં અક્કલ ને વીરતાનો ઉપયોગ કરે, દરેકનું હિતાહિત સમજે, લાભને નુકશાનનો સરવાળો કરતાં શીખે ને નફાનું સરવાયું કાઢી જુએ તો-પ્રાચીન પદ્ધતિને સૌ કોઇ પુજવા તૈયાર થાય. આજે એ પ્રાચીન પ્રથાને સ્વાર્થી જનોએ અતિશયોક્તિ મય બનાવી દૂષિત કરી છે ને તેના તેઓ પૂજક છે, એટલે એ પ્રથાનો નાશ કર્યેજ છુટકો છે.

જે પ્રથા નીચે સમાજનું પતન થતુ જાય છે, પાપાચાર વધતા જાય છે, પૈસા ઘટતા જાય છે, સમાજ ભીખારી બનતો જાય છે, વીર્ય હીન થતો જાય છે, ભુખે મરે છે. છતાં એ કેમ બને છે, તે જોવાની દરકાર નથી રૂઢી પૂજકોને? પોતાના વેપારમાં નુકશાની થતી હોય? નફો ન હોય? ખર્ચ પુરૂં થતું ન હોય ત્યાં ત્યાં નીતી ધર્મને અભરાઇએ મુકી જેઓ લેવાનાં ને દેવાનાં કાંટલાં જુદાંજ રાખે છે, સત્યતાને સ્થળે અસત્યતા વાપરે છે, પરંતુ સમાજનું પતન થાય છે, તેમાંથી બચાવના રસ્તા શોધવા એને ધર્મનો નાશ કહે છે. અને તેની જડીબુટ્ટી શોધવા જવી. અગર કોઇ બતાવે તો શાન્તિથી સાંભળવું વિચારવુ પડે ત્યાં પ્રતિષ્ઠાનું પાણી થાય છે,

ત્રીજો વર્ગ પરિવર્તન ઇચ્છે છે. કોઇપણ કારણસર પુન્ય ઘટતું હોય ને પાપ વધતું હોય તો તે અટકાવવા માંગે છે. જે છરી રક્ષણ કરવા રાખી હોય, છરી રાખવાનું કારણ સત્ય હોય છતાં જો તેનાથી આપણુંજ ગળું કપાતું હોય, આપણું પતન થતું હોય તો-તે છરીનો ત્યાગ કરવો, અગર તે છુરી વિનાશ કર્તા કેમ બની રહે છે, તે કારણો તપાસી દૂર કરવાં.

આજે જે પ્રથાથી માનવ જાત બેહાલ બની જતી હોય, જે પ્રથાથી પાપ પોષાતાં હોય, જે પ્રથાથી બાળાઓ વીધવા વધુ પ્રમાણમાં થતી હોય, જે પ્રથાથી યુવકને યુવતિના સંસાર ખારા ઝેર જેવા બનતા હોય, જે પ્રથાથી અયોગ્ય વય અને ગુણનાં કજોડાં થતાં હોય, ટુટતા દીલનાં જે લગ્ન હોય તેવી તેવી અઘટિત નીરસ પ્રથાઓનો નાશ કરવા માટે તેમજ અયોગ્ય ખર્ચાઓને બંધ કરવા, આ વર્ગ ખાસ પરિવર્તન ઇચ્છે છે. તેવી જુલમી પ્રથાઓની સામે શાન્ત અવરોધ કરવાને ઇચ્છે છે. આજનો સૈનિક દીલનો સાચો યુવક આ વર્ગની આગેવાની લે તો જલદી તેનો અંત આવી જાય.

આજે આપણી દરેકની વચ્ચે ચાર પ્રકારનું કાર્ય હાજર છે–

જેઓ ધર્મને પ્રાણ સમજતા હોય, જેઓ મોટાં મોટાં (પણ સાવ પોકળ) લેકચરો કરતા-શાસ્ત્રાર્થ નીપુણ હોય, તેવા પંડિત સમુહ અને સાચા જૈન બંધુઓએ-કુડચી-ધર્મ ને સમાજ રક્ષાને માટે સત્યાગ્રહ કરવા તૈયાર થવું જોઇએ ને ત્યારેજ સચ્ચાઇની ખબર પડે. જેમ બને તેમ તમારૂં નામ શ્રી દિ. જૈન યુવક મંડળને લખી મોકલો.

જેઓ જુના રીવાજમાંજ શ્રેય માને છે, જેઓ રૂઢીના ગુલામ બનીજ રહેવા માંગે છે, તેઓ ધર્મ ને સમાજનું પતન થતું અટકાવે-કેળવણીનો અભાવ ને સાધનની ખામીઓ પુરી કરે-વીધવાઓનું પ્રમાણ ઘટે તેવા રસ્તા શોધે, તેમની આજીવીકા અને ચારિત્ર સચવાય તેવા આશ્રમો રચે-તેમનું રક્ષણ કરે. ધર્મ પરિચારીકાઓ બનાવે-ત્યાગ મૂર્તિની મહત્તા સમજાવે, કલેશ ઝઘડા ને આર્થીક

બીમારીના ઉપાયો યોજે, સંગઠન કરે—અરસ પરસ મદદ કરતા થાય તે માટે સહકારી બેંક ઉઘાડે.

જે પરિવર્તન ઇચ્છે છે—તેઓ પ્રમાણીક પરંતુ તેજ વિચારના વૃધ્ધો ને યુવકો સાથે ભળે, વિચારોને છણે—ને ઠરાવો કરે. યુથલીગો રચે—સમાજ સામે રૂઢીઓનાં ખાતર સત્યાગ્રહ કરે.

ભદ્ર પરિણામી જીવોને માટે સારામાં સારો એજ માર્ગ છે કે—કુટુંબની રક્ષા કરે ને સમાજ ઉન્નતિના માર્ગમાં બનતો ફાળો આપે.

યુવક અને યુવતિઓ વિચાર કરે—અને આવતી વિટંબનાઓને નિડરતાથી ને કાર્યદક્ષતાથી વટાવી પાર ઉતારે તો તેવા સૈનિકોની જીતજ છે.

યુવક સૈનિક ઉત્સાહનાં પુર વહેવડાવે,
યુવક સૈનિક સદ્દગુણશાળી બનવા પ્રયત્ન કરે.
યુવક સૈનિક સેવા એજ એનું ધ્યેય રાખે,
યુવક સૈનિક ગારીલ ન બને.

વિશ્વની આવતી પ્રબળ આફતો એ પાપનો ભોગવટો સમજી તે પુરી કરે, સહન કરે પરંતુ તેના મનસ્વીપણા નીચે આરંભેલા કાર્યને સેવા ભાવે ને નિસ્વાર્થપણે કર્યેજ જાય તો જરૂર તે વિજયવંત નીવડે છે.

વાળની સંભાળ.

ત્વચાના ઉપલા પડના વાળ વધારો છે—એથી શરીરની શોભા ઉપરાંત તેનું રક્ષણ પણ થાય છે, પણ જ્યાં વાળને યોગ્ય પ્રમાણમાં ચિકાસ ન મળે તો તે બડ થઇ ખરી પડે છે. વાળ ધોવા સાબુ વાપરવાથી તે સુકા થઇ પડી જાય છે તેથી વાળ ધોયા પછી કોઇપણ તેલ ખુબ ચોળી ચોળીને વાળે લગાડવુ અને વાળ ચોળવા. વાળ ચોળવાથી તેના મૂળની ચામડીને ઘસારો લાગે છે તેથી તેમાં ઉષ્ણુતા આવી રૂધિરાભિસરણ વધારે થાય છે એમ થવાથી તેને જોઇતું પોષણ તથા ભેજ મળી તે સારી પેઠે વધી શકે છે. તથા તેમાંનો ક્યારે વધી જઇ માથાની ત્વચાનાં દર્દ થતાં નથી. છોકરીઓના વાળની શેર ગુંથો તે પીઠ પર છુટી રાખવી તથા વાળ તાણીને બાંધવા જોઇએ. નહી.

'વિદ્યાર્થી આરોગ્ય ઉપરથી.'

लोहीनां आंसु
अर्थात्
गरीबनी हाय !

(લેખકઃ—રામચંદ્ર માધવરાવ મોરે—સુરત.)

"આ જગતના વહેવારમાં, છે હાય બુરી ગરીબની;
કદિ હાય ! ખાલી જાય ના, સત્ય સત્ય હાય ! એ ભામિની."

સંધ્યાનો સમય છે. શ્રી સૂર્યનારાયણ પોતાના શાંત કિરણો પ્રસારતાં અસ્તાચળે ગમન કરી રહ્યા છે, પક્ષિઓ જ્યાં ત્યાં ઉડી કીલકીલાટ કરતાં વૃક્ષઘટામાં છુપાઇ રહ્યા છે. સરિતાનું નિર્મળ જળ શાંત રીતે વહી રહ્યું હતું. અસ્ત થતા સૂર્યનાં ઝાંખા કિરણ જળ ઉપર પથરાઇ જાણે શ્વેત ચાદર પાથરી હોય એવો ભાસ થતો હતો. કંઇક માણસો પવનની લહેરમાં આમતેમ ફરી કુદરતની આ રમણીયતા જોઇ આનંદ માની રહ્યા હતા.

આ સમયે એક તરૂણ બાલિકા સરિતા તટ પર કંઇક વસ્ત્ર ધોઇ રહી હતી. કુદરતી આ રમણીયતા તરફ હેનું બિલકુલ લક્ષ ન હતું. કોઇ-કોઇ વખત આમ તેમ ચકોર દ્રષ્ટિએ જોઇ પોતાના કાર્યે મંડી જતી, કારણ આ સ્થળે બીજું કોઇ પણ ન હોવાથી, વળી અંધકાર ધીમે ધીમે વધતો જતો હોવાથી પોતાનું કામ પુરૂં કરવામાં લીન હતી. એવામાં પાસેજ સ્મિત હાસ્ય કરતા પોતાની તરફ એકી ટસે જોઇ રહેલા એક યુવક પર અચાનક દ્રષ્ટિ પડી.

"આ દુષ્ટ આમ અચાનક અહિં ક્યાંથી ? બાલિકાએ હેની તરફ ક્રોધિત દ્રષ્ટિ કરી, મનમાં એટલુંજ બોલી ત્યાંજ કંપિત થઇ ઉભી."

"સુશીલા, આમ ગભરાય છે શા માટે ? શું હું કોઇ મોટો વાઘ કે રાક્ષસ છું. ? યુવકે હાસ્ય કરતાં કહ્યું."

'ચુપ એ નરપિશાચ! ત્હારે અહિં મ્હારી પાછળ આવવાનું શું કારણ? જો ત્હારૂં ભલું ચ્હાતો હોય તો ત્હારૂં ડહાપણ એટલેથીજ બંધ કરી મ્હારી સાથે એક પણ શબ્દ બોલ્યા સિવાય અહિંથી ચાલ્યો જા, નહિ તો હમણા હલ્લો મચાવા લોકોને અહિં ભેગા કરીશ, કાંતો સરિતામાં કુદી પડી મ્હારૂં જીવન અહિંજ પૂર્ણ કરીશ. તે બાલિકાએ સાહસથી કહ્યું.

"નહિ નહિ, સુશીલા, ત્હારા નામ પ્રમાણે સુશીલ સદ્ગુણી થઇ ત્હારા મુખમાંથી આવા શબ્દો કેમ નીકળે છે? શું તું મ્હને છેક તુચ્છ અને નીચ સમજે છે? હું તમારા સર્વના હિતને માટેજ કહું છું અને તે વિષેજ યોગ્ય બે શબ્દો જે મ્હારે કહેવાના છે તે કહેવા માટેજ આજે આમ અહિં આવ્યો છું. તમારી આવી ગરીબ દયાજનક સ્થિતિ જોઇ ખરેખર મ્હને બહુજ દયા ઉપજે છે. તું મ્હારૂં કહ્યું માનીશ તો ત્હારા પિતા પાસે નીકળતું સર્વ લ્હેણું માફ છે. વળી જે ચાહો તે આપી આખા કુટુંબને સુખી કરીશ. સુશીલા, મ્હારે ત્યાં શી વાતનું દુઃખ છે? જો કાલે તમારા ઘર પર પણ કબજો કરીશ તો તમો ક્યાં ભટકશો? એક તો ભુખમરાથી દીવસ વ્યતિત કરી રહ્યા છો તેમાં વળી આમ રખડતા તમારી શી દશા થશે? માટેજ કહું છું કે આવો અવસર ન ગુમાવતા ત્હારા પિતાને એ વિષે સમજાવ. મ્હારૂં કહ્યું માનશે તો સુખી થશે, નહિ તો આથીએ મહા બુરી દશા થશે."

"ચુપ એ પાપી! ધિક્કાર છે ત્હને અને ત્હારા દ્રવ્યને," ત્હારા જેવા ક્રૂર ઘાતકીને આધીન રહેવા કરતાં ભીખ માંગી પ્રભુ ઇચ્છાધિને રહેવું એજ શ્રેષ્ટ છે. એ નીચ! ત્હારો આ હમારા પ્રત્યે દયાનો ભાવ નહિ પરંતુ દયાને નામે મિથ્યાડંબર બતાવી હમારૂં સર્વસ્વ હસ્ત કરી અંતે આ નીચ મહત્વાકાંક્ષા બતાવી રહ્યો છે. ખરેખર ત્હારા પિતાના નામને કલંક લગાડનાર દુષ્ટ કુલાંગાર જનમ્યો છે. હાય! એ દુષ્ટ નરાધમ! તું હમારા જેવા કંઇક દીન અનાથ ગરીબોને કાળા ધોળા કરી રંજાડવામાં સંતોષ માની રહ્યો છે; પણ જાણજે કે ગરીબની હાયનું પરિણામ જરૂર ભોગવવું પડશે. શ્રીમંતાઇનો તોર આ ફાની દુન્યામાં કોઇનો રહ્યો નથી અને રહેશે નહિ. દ્રવ્યના મોહમાં અંધ થઇ ગરીબને તું તુચ્છ સમજતો હશે પરંતુ સજ્જનો, સચ્ચાઇ અને ભલાઇના વર્તનનેજ, ગરીબી ને અમીરી સમજી તેજ ખરા માનવી ગણાય છે. ક્રોધાવેશમાં તે બાલિકા આટલું બોલી યુવક તરફ તિરસ્કારની દ્રષ્ટિએ નિહાળતી ત્યાંથી સપાટામાં અદ્રશ્ય થઇ. યુવક પણ ચકિત થઇ જોતે જ રહ્યો.

"ઓહો! જેને ખાવાનાં ફાંફાં અરે હમારેજ આશરે જીવી રહ્યા છતાં આટલી બધી ઉદ્ધતાઇ! આજદીન સુધી કરેલા ઉપકારનો આ બદલો! જોઉં છું હવે ગર્વ કેટલા દીવસ ટકે છે. મ્હારા અપમાનનો બદલો હવે જરૂર લઇશ હવે મ્હને કોણ અટકાવી શકનાર છે? આમ મનમાં વિચારી નિસ્તેજ વદને તે યુવક પણ ત્યાંથી ચાલ્યો ગયો.

(૨)

પ્રભાતનો સમય થઇ ચુક્યો હતો. ગરીબદાસ પોતાના જુના પુરાણા મકાનનાં ઓટલા ઉપર નિંદ્રામાંથી જાગ્રત થઇ કપાળે બે હાથ દઇ ઉદાસ વૃત્તિએ કંઇક વિચારી રહ્યો છે, એવામાં ઘરમાંથી ભૂખથી પીડાતા તેમના નાનાં બાળકોનો કરૂણાજનક રડતો અવાજ આવતાં તેઓ તરત સમજી ગયા અને અંદર જઇ તેઓને છાના રાખતા પોતાની સ્ત્રી (મનોરમા) ને પૂછ્યું-કેમ, ઘરમાં કાંઇ પણ ખાવાનું છે કે?

"ના, માથું હલાવી મૌનવૃત્તિએ મનોરમાએ કહ્યું."

"ઘર વેચાણના જે રૂપિઆ મળ્યા હતા તે શું પુરા થયા? ગરીબદાસે હતાશ થઇ પુછ્યું."

"એ રૂપીઆ તે કેટલા હતા જે હજુ સુધી ચાલી શકે? આજ ત્રણ ચાર માસ એનાથીજ જેમ તેમ નિર્વાહ થયો, હવે આ મજુરીમાં જે

કંઇ મળે છે તે પરજ ચાલે છે. ગઇ કાલે સુશી-લાને પણ કંઇ ન મલ્યું, જે લાકડાંનો ભારો વેચવા લઇ ગઇ હતી તે પણ પાછો લાવી હતી. મનોરમાએ નમ્રતાપૂર્વક કહ્યું."

"હાય ! હવે હું પણ શું કરૂં ? ભીખ માંગતાંએ પત્તો નથી. પાસે પણ હવે કંઇ રહ્યું નથી. દુષ્ટ દુર્જનદાસે પણ પિતાના મરણ પછી ધીમે ધીમે દુઃખ દેવા માંડયું છે. એક દીવસે આપણી સુશીલા વિષે માંગણી કરતાં મેં તેના દુરાચારી વર્તન માટે ચોકખી ના પાડી હતી. વળી આપણી પાસે નીકળતા જે થોડા પૈસા હતા તેના પણ એકના ચાર ગણા બતાવી માંગી રહ્યો છે તેને ક્યાંથી લાવી આપવા ? હાય ! પ્રભુ હવે આ જંજાળમાંથી મુક્ત કરે તો સારૂં. આવી રીતે કુટુંબનું જીવન કેમ કેટલા દીવસ નભશે ? આટલું કહી ગરીબદાસે દુઃખિત હૃદયે એક ઉંડો નિઃશ્વાસો નાંખ્યો. પતિની સામે નિહાળતી મનોરમા પણ ત્યાંજ ઉભી આંખમાંથી આંસુ સારતી પોતાની પુત્રી સુશીલાને બોલાવવા લાગી. તરતજ એક નવ યુવાન બાલિકા આંખો ચોળતી ત્યાં આવી ઉભી."

"કેમ સુશીલા, આજે હજુ સુધી કેમ સુઇ રહી ! કંઇ તબીયત સારી નથી શું ? સુશીલાનું નિરતેજ વદન જોઇ માતાએ પુછયું. જા, દુર્જનમામાને ત્યાં જઇ થોડું અનાજ લઇ આવ. બાબુ ભુખથી રડી રહ્યો છે અને આજે ખાવા માટે જરાયે કંઇ પણ નથી માટે મોઢું ધોઇ જલ્દી જઇ આવ.

"ના એ નીચ પાપીને ત્યાં જીવ જતાંએ પગ નહિ મૂકીશ. ભલે ભીખ માંગીશું પરંતુ એવા ચંડાળની કપટી વાસનામાં દબાઇ જીવન કલંકિત કરવું તેના કરતાં ભલે મરવું એ સારૂં છે. સુશીલાએ માતાના શબ્દો સાંભળતાંજ આંખમાં આંસુ લાવી કહ્યું."

"એ માણુસે આપણને ઘણીજ સહાય કરી છે અને આજે તું એના પ્રત્યે આમ આટલો તિરસ્કાર કેમ કરે છે ? મનોરમાએ આશ્ચર્યતાથી પુછ્યું."

"એ નીચની ખોટા ડોલરૂપી સહાયતામાં છુપી આકાંક્ષા હવે જણાય છે અને હજુ જણાશે. કાલે એ દુષ્ટે મારી પાસે એક નિર્લજ માંગણી કરી. મેં તે પાપીને ધિક્કારી કાઢતા તેણે આપણને સખત ધમકી આપી હતી. સુશીલાએ તે વાત સ્પષ્ટ કહી દીધી."

આ વાત સાંભળતાંજ ગરીબદાસે એક ઉંડો નિઃશ્વાસો નાંખી કંઇ બોલવા જાય છે એવામાં બે અપરિચિત યુવકો ત્યાં ધસી આવ્યા અને ગરીબદાસને પકડી લઇ જવા લાગ્યા. ગરીબદાસ આ દ્રશ્ય જોતાંજ સમજી ગયા કે પેલા દુષ્ટનુંજ આ કારસ્તાન છે. હાય ! મ્હારા ઉપર નાહક દેવાનો ભાર મૂકી જે વાતનો ઇન્કાર કર્યો હતો તેનોજ આ બદલો લીધો છે. સુશીલા તથા તેની માતા આ દ્રશ્ય જોઇ આક્રંદ કરી રહ્યા હતા. વળી તેના ભાઇઓ પણ પિતાને પકડી જતાં જોઇ તેઓ પિતાને વળગી પડયા, સીપાઇઓ તેને ખેંચી રહ્યા હતા. ખરેખર આ હૃદયદ્રાવક દ્રશ્ય એક પાષાણને પણ પીગળાવે એવું હતું.

(૩)

સ્વપ્નપુરમાં ધર્મદાસ નામે એક મોટા જાગીરદાર હતા. તેમના નામ પ્રમાણે ખરેખર તેઓ ધર્મનાજ અવતાર હતા. આ અસાર સંસારને સ્વપ્નવત્ માની પોતાની અખુટ મીલ્કતમાંથી કંઇક પરમાર્થનાં કાર્યો કરી દુઃખીઓની આશિષ મેળવી હતી. તેમની ઉદાર વૃત્તિએ બિચારા ગરીબદાસને પણ બહુ સારી મદદ કરી હતી. ગરીબદાસ પાસે માત્ર રહેવાને ઘર અને સાધારણ જમીન હતી. જે ઉપર પોતાના કુટુંબનું પોષણ કરતા હતા. સમય જતાં તેમની સ્થિતિ બહુ ખરાબ આવતી ગઇ. આખરે જમીન અને ઘર માત્ર એટલુંજ પોતાની પાસે હતું તે પણ ધર્મદાસને વેચી તે ઉપર કુટુંબનું જીવન કંઇક સમય નીભાવ્યું. ધર્મદાસે તેની સારી કીંમત આપી, તેજ ઘર તથા જમીન નિઃસ્વાર્થ તેમને પાછી આપી હતી, પરંતુ ગરીબના નશીબ ગરીબજ.

ગરીબદાસ નામ પ્રમાણેજ ગરીબ, શાંત અને નમ્ર હતા. પોતાની આવી દયાદ્ર સ્થિતિ છતાં એ હંમેશા નીતિમય જીવન દેર ઇચ્છાધિને કુટુંબનું જીવન સંતોષથી ગુજારતા. લોકોની બનતી મહેનત મજુરી કરી ભૂખ્યા તરસ્યા દિવસ વ્યતીત કરતા. ધર્મદાસે પોતાના જીવન પર્યંત હેમને આવા સતૂપાત્ર જાણીનેજ સર્વ મદદ કરી પરંતુ ગરીબદાસને હેમના સદાના આભારમાં મર્યા સમાન લાગતું છતાં શું ? કે નાઇલાજ.

"દુન્યામાં સર્વ દુઃખનું મૂળ માત્ર એક ગરીબીજ હોય છે. ગરીબીજ પ્રાણી માત્રને હીનપદે પહોંચાડી માનવ જીવનની સર્વ આકાંક્ષા અને અમૂલ્ય જીવન નષ્ટ કરાવે છે; પરંતુ ગરીબી અને અમીરી સૌ સૌના કર્માનુસારજ મળે છે. અમીરીમાં અંધ થઇ અને ગરીબીથી કંટાળી અવિચારીપણાથી જે જન કોઈ પણ અવળેપંથે ન જતાં પોતાની સ્થિતિ અનુસાર સહન શક્તિ, સદ્વર્તન અને સંતોષથી પ્રસંગને માન આપી દીવસ વ્યતીત કરે છે હેનુંજ માનવી જીવન સફળ છે.અને ભવિષ્યમાં પ્રભુ પણ હેને સદા સ્હાય થાય છે."

દુર્જનદાસ એ ધર્મદાસનો મોટો પુત્ર હતો. હેના નામ પ્રમાણેજ હેના કર્મ હતા. મહા નિર્દયી મહાંધ, વ્યસની અને વ્યભિચારી હતો. કુટીલ અને દુષ્ટ મિત્રો સાથે બસ મોજમઝામાં રહી કોઇને પણ ગણકારતો ન હતો. હેના આવા દુરાચારોથીજ વૃદ્ધાવસ્થાએ પોતાના પિતાને અને નાના ભાઇને દગાથી મારી નાંખી કંઇક લોકોને સતાવી પોતે આનંદ માનતો. ખરેખર હેના પિતા ધર્મદાસને કલંક લગાડનાર એ કુલાંગાર પાપી હતો.

બિચારા ગરીબદાસને દુઃખદ સ્થિતિએ પોતાની નીચ વાસનાનો તિરસ્કાર થતાં છેવટે હેણા નિમિત્તે આજે બિચારાના બાળ બચ્ચાંને ટળવળતા મૂકી કેદમાં બેસાડનાર એજ નીચ પાપી હતો.

(૪)

શરદ્ઋતુનો સમય હતો. આકાશ ઘડીમાં ઘનઘોર ઘેરાઇ જતું તો ઘડીમાં સ્વચ્છ થતું, કદી કદી વિજળીના ચમકાર થઇ ઘોર ગર્જના કરતો વરસાદ તૂટી પડતો. દૂર જંગલમાં જંગલી જનાવરો તથા ગામના કુતરાઓ અપશુકન સૂચક ધ્વનિ કરી મહા ભયાનકતા ઉપજાવતા હતાં. આ વખતે સુશીલા પોતાની માતાનું માથું બંને હાથે દબાવતી ખાટલાની નીચે ઝોકાં ખાતી બેઠી હતી. ઘણા લાંબા સમયની માંદગીથી મનોરમાનું શરીર સુકાઇને લાકડાં જેવું થયું હતું. વળી આજે તાવનો સખ્ત જોર હોવાથી શરીર ધગધગી રહ્યું હતું; બેહોશીમાં કદી કદી શ્રવે તેવો બકવાટ કરતી, તો કદી ઉંડા નિઃશ્વાસો નાંખી હાથ પગ જોરથી પછાડતી હતી. સુશીલાની પાસે બાજુ કોઇ પણ માણસ ન હતું-માત્ર હેનો નાનો ભાઇ ફાટયા તૂટયા ગોદડામાં લપેટાઇ એક બાજુ સુઇ રહ્યો હતો. પાસેજ મંદ મંદ દીવો ઝગમગી રહ્યો હતો.

'મા, મા, સુશીલાએ ધીમા અવાજે માતાને જગાડવા માંડી. જવાબ કંઇ નહિ મળતાં સુશીલા થોડી વાર ચુપ રહી. કંઇક સમય જતાં પોતેજ પાસું બદલતા મનોરમાએ બુમ પાડી,'સુશીલા ..

"કેમ મા, સુશીલાએ ઝબકીને જવાબ આપ્યો."

" રાત્રિ કેટલી થઇ હશે ?"

"મધ્ય રાત્રિનો સમય થયો હશે."

"શું ? તું હજુ સુધી સુઇ નથી ગઇ?" "ના મા."

" જા તું સુઇજા, મને હવે જરા ઠીક છે. કંઇક સમય ત્યાં શાંતિ છવાઇ. સુશીલા પણ ત્યાંજ ઉદાસ ચિત્ત બેસી રહી હતી."

" તું હજુએ સુઇ નથી ગઇ ?" પુનઃ જાગ્રત થઇ પુછ્યું.

"હા સુવું છું, કહી સુશીલાએ ત્યાંજ ખાટલા સાથે માથું ઠેકવ્યું, પરંતુ તરતજ હેની મા ઝબકી ઉઠતા હેની પાસે ગઇ અને પુછ્યું."

"કેમ શું છે મા ?"

"કંઇ નહિ સુશીલા, આ વખતે ત્હારા પિતા હોય તો કેવું સારૂં......સુશીલા રડી પડી ત્હેનું હૃદય ભરાય આવ્યું."

"સુશીલા રડ નહિ, ત્હને ખબર છે કે ત્હારા પિતા ક્યારે આવશે ?"

"હવે તેઓ થોડા વખતમાં આવશેજ. ધીરજ આપતાં સુશીલાએ કહ્યું."

"શું ? આવશેજ ! જુઠું ન બોલ, દુષ્ટ દુર્જનદાસે હાય ! કેદમાં......"

"તે નરપિશાચનું નામ ન લ્યો. તે દુષ્ટેજ આપણને આજે આ સ્થિતિએ પહોંચાડી લોહીના આંસુ વહાવ્યા છે."

"હા હું પણ તેજ કહું છું, પણ મ્હારા વ્હાલા રત્નો, મ્હારી પાછળ ત્હમારૂં શું થશે......?"

"આજે આમ કેમ બોલે છે મા ? શું આમ હમને દુઃખમાં મુકી આ ફાની દુન્યા તજી તું એકલી ચાલી જઇશ?" સુશીલાએ ગળગળીત કંઠે કહ્યું.

"વારૂં, હવે એક વાર મ્હારા વ્હાલા પુત્રોનું દર્શન કરાવ."

મા, નાનો બાબુ તો સુઇ ગયો છે.

અને મનહર મનોરમાએ આશ્ચર્યતાથી પુછ્યું.

"શું તું સ્વપ્ન જોઇ રહી છે! પિતાજીના ગયા બાદ ચાર દીવશમાંજ આપણને મુકી પરલોક ચાલ્યો ગયો છે. આ વાક્ય સાંભળતાંજ મનોરમાની આંખમાંથી આંસુ નીકળી પડ્યા, કંઠ રૂંધાઇ ગયો. તે એકદમ ઠીવાના જેવી બની પથારીમાંથી ઉભી થવા જાય છે; એવામાં બારણા પર અવાજ થઇ બંને બારણાં જોરથી ખુલી ગયાં ભયભીત દૃષ્ટિએ બંનેની આંખો તે તરફ લાગી; સુશીલાએ એક ચીશ પાડી ત્યાંજ ઢળી પડી. ત્હેની માતાએ પણ કંપિત હૃદયે એક ઉંડો શ્વાસ મુકી. ઓ નરપિશાચ લોહીના આંસુ વહાવનાર દુષ્ટ દૂર થા...પ્રભુ ત્હારૂં ભલું નહિ કરે...એટલુંજ રૂંધાતા કંઠે બોલી પોતાની આંખ સદાને માટે બંધ કરી જમીન પર પછડાઇ પડી. કેમ હવેજ ખબર પડી, એમ કહેતો દુષ્ટ દુર્જનદાસ સ્મિતહાસ્ય કરતો ત્યાં ઉભો દ્રષ્ટિએ પડ્યો હતો.

× × × ×

ઉપલી ઘટનાને આજે કંઇક સમય વીતી ગયો છે, ગરીબદાસ આજે તે સ્થિતિમાં નથી. ત્હેમના છેવટના જીવનમાં ઘણોજ પરિવર્તન થયો હતો. સુશીલાના પણ લગ્ન થઇ ત્હેનું જીવન પણ હવે પહેલાનું નહતું. સુદૈવની કૃપાથી આજે તેઓ આનંદમાં દીવસ વ્યતિત કરી સર્વ વાતે સુખી છે.

પરંતુ દુર્જનદાસનું આજે ત્યાં નામ નિશાન પણ નથી. લોકો કહે છે કે વર્ષાકાળમાં મેઘ ગર્જનાથી વિજ તુટી પડતાં આખા કુટુંબની દુર્દશા થઇ, સર્વસ્વનો નાશ થવા પામ્યો હતો.

અહા ! હાય ! ગરીબની હાય !!

संगतिनां फळ.

ધર્માત્મા બંધુઓ ? જો તમારે સુખી થવું હોય, જો તમારે ઇજ્જત બાંધવી હોય, અને જો તમારે પુન્યની પ્રાપ્તિ કરવી હોય તો સજ્જન, ધર્માત્મા, સદાચારી, દરેલ અને ગુણીયલની સત્સંગતિ કરો.

હિદત, છાકટા જેવા, ચઢાઉ, ઉડાઉ, મદના ભરેલા, લુચ્ચા, લફંગા, લોભી, વ્યભિચારી, કોડલીવર ઓઇલ (માછલીનું તેલ) જેવા અભક્ષ ભક્ષણ કરનારા, ધર્મની અને ધર્માત્માઓની ઠઠ્ઠા મશ્કરી કરનારા, અનીતિ અને અન્યાયમાં પાછી પાની નહિ કરનારા, વગેરે અનેક એવા દુર્ગુણી હોય, એવાઓની કદીપણ સંગતિ કરશો નહી. સંગતિના ફળ જરૂર લાગ્યા વિના રહેશે નહી. જુઓ ?

શઠની સંગતથી સહે, ભલાજનો દુઃખ ભાર;

માંકણના મેળાપથી, ખાય ખાટલો માર.

માટેજ—સત્સંગતિ એજ પારસમણિ છે.

मोहन-माळा.

૧. જ્ઞાન રૂપી રત્નને મેળવીને બ્રહ્મચર્ય રૂપી વ્રત અંગિકાર કરી દયાને ધારણ કરો.

૨. આત્મ જ્ઞાન રૂપી સરોવરમાં સ્નાન કરીને પાપ રૂપી મેલ ધોઇ નાંખો.

૩. શરીર રૂપી કુંડમાં ધ્યાન રૂપી અગ્નિ સળગાવીને દુષ્ટ કર્મોની આહુતિ આપી ભસ્મ કરો ?

૪. કષાય રૂપી દુષ્ટ પશુને પૂર્ણાહુતિ પ્રસંગે આહુતિ આપી સ્વાર્થ સાધનની દુષ્ટ જીજ્ઞાસાને ભસ્મ કરો.

૫. એવી રીતે આત્મ યજ્ઞમાં દુષ્ટ કર્મોને બાળી આત્માને નિર્મળ બનાવો.

૬. મનાવે ધર્મ હિંસાને,
માનો મૂઢ મનુષ્ય તે.
નહિ તે પામશે મુક્તિ,
નર્ક માંહી તે પડે.

૭. ચઢાવા દેવને અર્થે,
યા અગ્નિ ઘૃત કારણે,
કરે જે ઘાત જીવોને,
જાણે જન તે દુર્ગતિ.

૮. બધાના ધર્મ આચરણમાં,
છે ચાર સાર સમાન તો.
અહિંસા સત્ય ધારીને,
ચોરી મૈથુન વર્જવાં.

૯. કરેલાં કર્મ શુભાશુભ,
ભોગવવાંજ પડે ખરે.
પુરાણે ક્ષીણ જો કર્મો,
કલ્પ કોટી ન સાંપડે.

૧૦. અહિંસાતણા ઉપદેશને, જે ધર્મમાં પ્રથમે ધર્યો,
નિશ્ચય થકી તે માનજો, છે ધર્મ સર્વે શ્રેષ્ટ તો.
હિંસા થકી પીડાય છે, જીવ-જાન તેનો જાય છે,
ફરમાન મોહન સાંભળો, હે ધર્મ કેમ ગણાય તે.

૧૧. દયા વિણુ ડહાપણુ નહિ, ડહાપણુ વિણુ નહિ ધર્મ,
ડહાપણુ ધર્મ દયા વિણો, છે એને શિર શર્મ.

૧૨. નહિ કાંઇ નીતિની રીતો, વળી નહિ ધર્મ કે સુત્રો,
નહિ આચારની પ્રીતો, ગણી લ્યો શ્વાનના સુતો.

૧૩. ધર્યો જો જન્મ ભારતમાં ધરો દિલ દાઝ ભારતની,
નહિ કો કાળમાં ચુકો, દિલેથી દાઝ ભારતની.

૧૪. હશે જે કર્મ માંહી તે, ન કોથી મિથ્યા થાવ,
લાખની પાઇ બનીને, પાઇ લાખો પામશે.

૧૫. સાહિત્ય-સંગીત-કળા વિનાનો,
પશુ પ્રમાણો પુંછડા વિનાનો
ખાએ ન ખડ તોપણુ તેય જીવે,
તે ભાગ્યવંતો પશુ તો પિછાણો.

૧૬. નથી વિદ્યા અને દાન. જ્ઞાન-તપ-ગુણ જે કને,
વૃથા જન્મી આ સંસારે, ધરા ભાર નાહક ધર્યો.

૧૭. ઘણા જનમ્યા અને જન્મે, પામ્યા નાશ ખરા મરે,
કરી જો દેશની સેવા, ધન્ય જીવ્યો તે ખરે.

૧૮. દાન-ભોગ અને નાસ્તિ, ધનતણી છે ગતિ,
કરે નહિ દાન ને ભોગ, જાએ છે તૃતીયા ભણી.

૧૯. મનુષ્યોના શરીર મધ્યે, આળસજ મહા રિપુ.
નથી બંધુ સમા ઉદ્યાગ, ઉદ્યોગી ન કદા દુઃખી.

૨૦. કાર્ય છે કર્મના આધીન, બુદ્ધિ કર્મ પ્રમાણુની,
અહો હે સુજ્ઞ પુરૂષોત્તમ, કરો કર્મ વિચારીને.

૨૧. થએલું દૈવ્યથી નિર્માણ, મળશે હાલજ કે પછી,
કરમનાં બંધનો આગળ, મહેનત શાથ વિશ્રાતમાં.

૨૨. રૂપાળાં ઇંધણોથી જ્યમ, વધેલી અગ્નિ જવાળા છે,
કરો નહિ સંગ વેશ્યાનો, નઠારાં તેનાં નખરાં છે.

૨૩. નથી જ્યાં કામ પ્રવેશ્યો, હશે જ્ઞાન વિવેકના,
પ્રવેશ્યો કામ જ્યાં જ્યાં છે, નાશી દૂર કુલીનતા.

૨૪. કર્યાં આરંભ જે કાર્યો, સ્ત્રીઓએ અતિ પ્રેમથી,
નહિ કોથી ઉલ્લંઘાએ, બ્રહ્મા પણુ સમર્થ નથી.

૨૫. સારા કુળમાં જન્મેલો પુરૂષ પણુ ખરાબ સોબતથી નઠારો બને છે.

૨૬—વૈર, વૈશ્વાનલ, વ્યાધિ, વાદ, વ્યસન, એ પાંચ પ્રકાર વૃદ્ધિ થવાથી અનર્થ ઉત્પન્ન કરે છે.

૨૭—કૃતજ્ઞ સ્વામીની સેવા, ઉત્તમ સ્ત્રીથી લગ્ન, અને નિર્લોભી પુરૂષથી મિત્રતા કરનાર કોઇ દિવસ દુઃખી થતો નથી.

૨૮—મિત્રતા સરખા સ્વભાવવાળાનીજ શોભે છે.

૨૯—સાપના દર પાસે રહેવું તેમજ શત્રુની પાસે રહેવું સારૂં છે, પણ ધર્મહીન મૂર્ખ અને લોભી પાપી મિત્ર સાથે રહેવું સારૂં નથી.

૩૦—પંડિતની સાથે રહેવાથી મરણ થાય તો પણ લાભદાઇ છે, પણ મૂર્ખ મિત્ર સાથે રહી રાજ્ય કરવું પણ દુઃખદાઇ નિવડે છે.

૩૧—દુઃખના સમયમાં ધીરજ રાખી કર્તવ્ય-ભ્રષ્ટ થવું નહિ, એજ ઉત્તમ મનુષ્યનો ધર્મ છે.

૩૨—સતિ સ્ત્રીને પતિ એજ પરમેશ્વર છે.

૩૩—દુષ્ટ પુરૂષને પડતીના સમયમાં અવળીજ બુદ્ધિ સુઝે છે.

૩૪—વીરપુત્ર જન્મથીજ વીર જેવા થવા જોઇએ.

૩૫—સંસારમાં તેનેજ ધન્ય છે કે જેના ગૃહે સદ્દગુણી પુત્રોનો નિવાસ છે.

૩૬—હૃદયમાં જે વિચારો યુદ્ધ કરતા હોય, તે મુખ દ્વારા બહાર આવે છે.

૩૭—સંસાર-સમુદ્ર સુખરૂપે પાર કરવા માટે પ્રથમ પુરૂષોએજ સુશીલ અને સત્યવાન બનવું જોઇએ

૩૮—દુનિયા દોરંગી છે. તે ગમે તેમ બોલે તેથી સુધારકોએ હિંમત હારવી યોગ્ય નથી.

૩૯—ચોરી કરનાર મનુષ્ય પોતાનો ગુન્હો મરણાંતે કબુલ કરતો નથી.

૪૦—વ્યભિચારી સ્ત્રીઓ છેતરવાના ઘણા પ્રપંચો જાણે છે.

૪૧-દુઃખ વખતે દૂર હઠનાર મિત્રો,
મિત્ર નહિ પણ કૂતરા છે.
મિત્રતાને નહિ સમજનાર,
મિત્ર નહિ પણ વ્યંતરા છે.

૪૨—ગુલામગીરી દુષ્ટ કર્મ કરવા કરવાની નથી, પણ સ્વામીના લાભમાં ધર્મપૂર્વક જીવન ગાળી ઉદર પોષણ કરવા કરાવાની છે.

૪૩-ધિક્કાર છે તે નોકરીને, જેની કદર થતી નથી.
ધિક્કાર છે તે નોકરીને જેથી નીતિ રહેતી નથી.

૪૪-જીવ્યું ભલું તે નારનું, જે સ્વામી સુખ [illegible];
જીવ્યું ભલું તે નારનું, જે ધર્મ પંથે ચાલતી.

૪૫—અનીતિથી મળતું સુખ દુષ્ટનેજ મુબારક હો.

૪૬—સતી સ્ત્રીઓ પતિ સિવાય કોઇની દરકાર કરતીજ નથી.

૪૭-શિયળનું તત્વ ત્રિલોકે બિરાજે,
શિયળ સાચું સાધન છે.
સાચી સતિને સાધનભૂત તો,
સાચું મંગળમય શીયળ છે.

૪૮—ભેંસ પાસે ભાગવત વાંચવાથી ફાયદો નથી.

૪૯—ઉદ્યોગ કર્યે સર્વ કાર્ય સિદ્ધ થાય છે.

૫૦-ખંત ધરીને કાર્ય જે કરશે, મહેનતનું ફળ મેળવશે,
ધૈર્ય રૂપ સદ્દગુણ ધરવાથી, મિત્ર કાર્ય સફળ થશે.

૫૧—જેને અનેક જાતની ઉપાધિઓ હોય તેનું એકે કામ ફળીભૂત થતું નથી.

૫૨—જે વૃક્ષ રોગવાળું છે તેનાં ફળ પણ રોગવાળાંજ આવે છે.

૫૩—કરણી તેવી પાર ઉતરણી.

૫૪—શરીરનાં સુખો ઉપરથી મમત્વ છોડવો તે વૈરાગ્ય છે.

૫૫—જે જ્ઞાતિમાં વર કન્યા વચ્ચે ચાર વર્ષનું અંતર રાખવામાં આવતું નથી તે જ્ઞાતિ જલ્દી નાશ પામે છે.

૫૬-આ સમય કહેવાનો નથી પણ કરી બતાવા કારણે,
કરી બતાવો કામ રૂડાં, આવી ધરથી બારણે.

૫૭-શ્રાવક તેનું નામ, જગે જે સત્ય અનુસરતા,
શ્રાવક તેનું નામ, દિલથી હિંસા ત્યજતા;
શ્રાવક તેનું નામ, ચોરી નહિ મુદ્દલ કરતા,
શ્રાવક તેનું નામ, પરસ્ત્રી દૂરથી ત્યજતા.

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાણીસાકર.
કમ્પાલા—(યુગાન્ડા, ઇસ્ટ આફ્રિકા)

आरोग्यना नियमो.

(લેખકઃ-મોતીલાલ ત્રી. માલવી, બાકરોલ)

૧-જે આત્માના બંધ મોક્ષની વાતો કરીએ છિએ તે બંધ મોક્ષ તન મનનેજ અવલંબીને છે.

૨-તન મનને નિત્ય સંબંધ હોવાથી પરસ્પરના આશ્રય વિના તેમની ઉન્નતિ અશક્ય છે.

૩-શરીર શુદ્ધિ નિરોગીપણું અને મન શુદ્ધિ-સદ્વર્તન એ બે આત્મ ઉન્નતિનાં પહેલાં પગથીયાં છે.

૪-લક્ષમાં રાખો કે તન મનની શુદ્ધિ કે અશુદ્ધિ પર પોષણના પદાર્થો મોટો કાબુ ધરાવે છે.

૫-શરીર, મન, અને આત્માની, અનુક્રમે ઉન્નતિ માટે શુદ્ધ અને સાદા ભોજનનીજ જરૂર છે.

૬-દરદો એ શારીરિક ગુન્હાની શિક્ષા છે અને શરીરના ગુન્હાની શિક્ષા શરીરનેજ થવી જોઇએ.

૭-જેમ સામાજીક ગુન્હાઓ માટે ફટકા, દંડ, કેદ, ફાંસી છે, તેમ શરીરના ગુન્હા માટે દરદ, ડૉકટરની ફી, પથારી, અને અકાળ મૃત્યુ છે.

૮-જેવા ગુણ દોષનું આપણું સ્થુળ શરીર ઘડાશે, તેવાજ ગુણ દોષનું સુક્ષ્મ શરીર-મન ઘડાશે.

૯-આપણી ભૂલો માટે કુદરત રોગ મોકલે, માટે તે ધૈર્યથી સહીને પ્રથમ ભૂલો સુધારવી.

૧૦-લખી રાખો કે આપણાં દરદો આપણે કે આપણાં માબાપોએ કરેલી ભુલનાંજ કડવાં ફળ છે.

૧૧-આપણાં શારીરિક અને માનસિક દરદો તથા વિકારોનો પણ આપણાં બાલકોને વારસો મળવાનો છે.

૧૨-રોગી અને દુરાચારી માબાપો નિરોગી અને સદાચારી બાલકોને જન્મ આપવા લાયક નથી

૧૩-વસ્ત્રાભૂષણથી મઢેલા રોગી બાળકો કાદવનાં પુતલાં કરતાં લેશ પણ વધારે ઉપયોગી નથી.

૧૪-"બ્રહ્મચર્ય" એ શરીરરૂપી ભવ્ય ઇમારતનો પાયો છે. "બાળ લગ્ન" એ ભવ્ય ઇમારતને જમીનદોસ્ત કરનાર છે.

૧૫-પંચકેશ રાખવા, દાઢી રાખવી, યા મુંડન કરાવવું, એ "બ્રહ્મચર્ય" નથી, "વીર્યનું" રક્ષણ કરવું તેનુંજ નામ "બ્રહ્મચર્ય" છે.

૧૬-વીર્ય સંબંધી આવક જાવકનો હિસાબ નહિ રાખનારાઓ વહેલું વહેલું "દેવાળું" કુંકે છે.

૧૭-આપણા બધા આચારો આડંબર માટે નહિ પણ આરોગ્ય માટેજ પળાતા હોવા જોઇએ.

૧૮-ઇન્દ્રિઓને પડેલી અને જડ થયેલી કુટેવો છુટતી નથી માટે તેનાથી તમે ચેતતા રહેજો.

૧૯-યાદ રાખો કે દરદો કરતાં પણ ઊંટ વૈદ્યોની દવાઓ શરીરની વધારે પાયમાલી કરે છે.

૨૦-શરીરમાં થતા ફેરફારો જોવાને આપણને આંખો અને ચામડી રૂપી દર્પણો આપ્યાં છે ?

૨૧-મળમૂત્રાદિ વેગોને વારંવાર અટકાવવાથી અનેક દરદો થાય છે તે વાત તમારા જાણવામાં હશે.

૨૨-શરીરની ગટરોને નિત્ય નિત્ય સ્વચ્છ રાખવી એ તન્દુરસ્તી પ્રાપ્ત કરવાની પહેલી ચાવી છે.

૨૩-તમારા રસોડામાં લખી રાખો કે-માપીને તથા ચાવીને ખાવું તે તન્દુરસ્તીની બીજી ચાવી છે.

૨૪-વળી બીજું લખી રાખો કે સાદો અને સાત્વિક ખોરાક એ આરોગ્યતાની ત્રીજી ચાવી છે.

૨૫-નિત્ય જાપ કરો કે શુદ્ધ હવા, શુદ્ધ પાણી, અજવાળું, અને સ્વચ્છતા, એજ આપણું જીવન છે.

૨૬-ભોજનના ભાણા પર ગડસાચડસી કરનારા બુભુક્ષિતો પોતાને હાથેજ પોતાનું ખુન કરનારા છે.

૨૭-ઓછું ખાવાથી જેટલો ફાયદો થાય છે, તેના કરતાં અકરાંતીયું ખાનારને સેંકડો ઘણું નુકશાન થાય છે.

૨૮-જમવાનો ઘંટ વાગે એ જમવાનો ખરો સમય નથી, ક્ષુધાનો ઘંટ વાગે તેજ ખરો સમય છે.

૨૯—ભાણાપર બેસતા પહેલાં તમે તમારા પેટની પહેલાં સલાહ લેજો, જીભની સલાહ કદિ લેતા નહિ.

૩૦—લખી રાખો કે આપણાં ઘણાં ખરાં દરદો આપણી બગડેલી હોજરીમાંથીજ જન્મ પામે છે.

૩૧—યાદ રાખો કે વીર્ય અને મગજ સંબંધી ઘણાક વિકારો બગડેલી પાચનક્રિયાને આભારી છે.

૩૨—તમારી નોટમાં નોંધી રાખો કે—જે ઇન્દ્રિય ગુન્હો કરે છે તે ઇન્દ્રિનેજ કુદરત શિક્ષા કરે છે.

૩૩—નોટ કરો કે જાદુઇ ગોળીઓ ગુમાવેલી જુવાની પાછી લાવશે, એ જુવાન મનના હવાઇ કિલ્લા છે.

૩૪—શરીરનો આખો સંચો એક ચુલાને આધીન છે, માટે તે ચુલાને—હોજરીનેજ નિયમિત ગોઠવો.

૩૫—તમો ન જાણતા હો તો જાણો કે બગડેલા દાંત પણ તમારી પાચનક્રિયાને બગાડી નાંખે છે.

૩૬—મોં ઉપર ઓઢીને સુવું અને ધીમું ઝેર પીવું એ બે બરાબર છે.

૩૭—દરરોજ વ્યાયામ કરો.

૩૮—ઉત્તેજક યાને માદક પદાર્થોનો ત્યાગ કરો.

૩૯—ઓછામાં ઓછા વીસ વર્ષ પર્યંત લગ્નબંધનમાં ન પડો.

૪૦—નિંદ્રા શાંત અને ગાઢ લો.

૪૧—સ્વચ્છ અને ખુલ્લી હવામાં તથા પુરા સૂર્યપ્રકાશમાં હમેશાં રહો.

૪૨—દરરોજ સવારમાં મળસકે ચાર વાગે ઉઠી શૌચ ક્રિયા, દંતધાવન ક્રિયા, અને સ્નાન ક્રિયા; અને પ્રાતઃસંધ્યા (સ્વાધ્યાય) થી પરવારી દરરોજ ઓછામાં ઓછા ૧ માઇલ પગે ચાલીને સ્વચ્છ અને ખુલ્લી હવાનો લાભ લો.

૪૩—તમારૂં વર્તન નિયમીત, સરળ, શાંત, પવિત્ર અને આદર્શ રાખો.

૪૪—હંમેશાં સત્ય બોલો અને ધર્મનું આચરણ કરો.

૪૫—હમેશાં મન શુદ્ધ, શાંત, સંયમી, અને સુપ્રસન્ન રાખો.

बाळलग्न-प्रतिबंधक कायदो.

(શારદા બિલ)

(લે:—મોતીલાલ ત્રી. માલવી—આકરોલ)

અજમેર નિવાસી રાયસાહેબ હરવિલાસ શારદા તરફથી વડી ધારાસભામાં બાળલગ્ન—પ્રતિબંધક કાયદાનો જે ખરડો રજુ થયેલો, તે વડી ધારાસભા અને લેજીસ્લેટીવ એસેમ્બલીએ પસાર કર્યા પછી કાઉન્સીલ આફ સ્ટેટે પણ મંજુર કર્યો, ત્યારપછી વાઇસરોયે પણ તેને સંમતિ આપી છે. એટલે હવે એ ખરડાએ રીતસર કાયદાનું રૂપ લીધું છે. એ કાયદો બ્રિટીશ હિન્દુસ્તાનમાં સન ૧૯૩૦ ની પહેલી એપ્રીલથી અમલમાં આવશે. આ કાયદાની અગત્યની કલમો જૈન સમાજની જાણ માટે નીચે પ્રમાણે વિગતવાર જણાવવામાં આવે છે.

૧— કલમ ૧. (क) આ કાયદાને સન ૧૯૨૮ નો 'બાળ લગ્ન—પ્રતિબંધ કાયદો" કહેવામાં આવશે (ख) આ કાયદાનો અમલ બ્રિટિશ બલુચીસ્તાન અને સંથાલ પરગણા સહિત સમસ્ત બ્રિટિશ હિન્દમાં થશે.

૨—કલમ ૨. (क) આ કાયદા માટે ૧૮ વર્ષની અંદરનો છોકરો અને ૧૪ વર્ષની અંદરની છોકરી "બાળ" ગણાશે, (ख) જે લગ્નમાં વર અથવા વધુમાંથી કોઇ બાળ હોય તે લગ્નને "બાળ લગ્ન" ગણવામાં આવશે. (ग) અઢાર વર્ષની અંદરના છોકરા છોકરીને સગીર ગણવામાં આવશે.

૩—કલમ ૩. જો પુરૂષ ૧૮ વર્ષની ઉપરનો અને ૨૧ વર્ષની અંદરનો હશે, અને બાળલગ્ન કરશે તો તેને રૂ. ૧૦૦૦ દંડ સુધીની સજા થઇ શકશે.

૪—કલમ ૪. જો પુરૂષ ૨૧ વર્ષ ઉપરનો હશે, અને બાળ લગ્ન કરશે તો, તેને એક માસની સાદી સજા યા રૂ. ૧૦૦૦ ના દંડ સુધીની સજા યા બંને સજા થઇ શકશે.

૫—કલમ ૫. જો કોઇ બાળ લગ્ન કરશે, કરાવશે, યા કરવાની આજ્ઞા આપશે, તો તેને

એક માસની સાદી સજા યા રૂ. ૧૦૦૦)ના દંડ સુધીની સજા યાતો બંને સજા થઇ શકશે.

૬—કલમ ૬. કોઇ સગીર બાળલગ્ન કરશે, તો તે જેના રક્ષણમાં હશે-પછી તે તેના માત પિતા હોય કે વાલી હોય કે કાનુની અથવા ગેરકાનુની રીતે સંરક્ષક બન્યા હોય-તેને તેવા લગ્ન થવા દીધા બદલ અથવા તેવા લગ્ન રોકવામાં અસાવધાની બતાવ્યા બદલ એક માસની સાદી કેદ યા રૂા. ૧૦૦૦ ના દંડ સુધીની સજા યા બંને સજા થઇ શકશે.

૭—કલમ ૭. આ કાયદા અનુસાર, પ્રેસીડન્સી માજીસ્ટ્રેટ અથવા જીલ્લા માજીસ્ટ્રેટ સિવાય કોઇ બીજી અદાલત મુકર્દમો ચલાવી શકશે નહિ.

૮—કલમ ૮. જે લગ્ન સંબંધમાં આ કાયદા પ્રમાણે અપરાધ થયો હોય, તે લગ્નની તિથીથી એક વર્ષની અંદર ફરિયાદ ન કરવામાં આવે તો કોઇ અદાલત કામ ચલાવી શકશે નહિ.

નોટઃ—માજી વાઇસરાય લૉર્ડ વિલિયમ બેન્ટિકે તે અરસાના બંગાળાના આગેવાન દેશનેતા અને સુધારક-રાજા રામમોહનરાયની સહાયતાથી સતી થવાનો ચાલ બંધ કર્યો, તે વખતે કેટલાક જુના વિચારનાને તે રિવાજ પસંદ પડયો નહોતો પરન્તુ દિવસે દિવસે લોકોને તેના ફાયદા જણાવાથી તે રિવાજ પછીથી અનુકુળ લાગ્યો, તેવીજ રીતે આ કાયદો શરૂઆતમાં તો કેટલોક મુશ્કેલ જણાશે, પરન્તુ દિવસે દિવસે તેના ફાયદા જણાતા જશે ત્યારે તે લોકોને વધુ સુલભ થઇ પડશેજ.

નામદાર ગાયકવાડ સરકાર અને મહીસુર રાજ્ય તરફથી "બાળલગ્ન પ્રતિબંધક કાયદો" કેટલાક વખતથી બહાર પડેલો છે, તેને આ કાયદાથી કેટલીક પુષ્ટિ મળશે અને ભવિષ્યમાં હિંદના બીજા દેશી રાજા રજવાડા પણ તેનું વહેલું કે મોડું અનુકરણ કરશે, જેથી ભવિષ્યમાં આ કાયદાનો સર્વત્રપણે અમલ થવાને વાર લાગશે નહિ એમ પૂર્ણ સંભાવના છે.

जैनोनुं दिग्दर्शन.

(લેઃ-હીરાલાલ પુરૂષોત્તમદાસ શાહ, મુંબઇ.)

જગતમાં જૈન દુનિયા—જગત્ જ્યારે પ્રગતિને પંથે પળ્યું છે, ત્યારે આપણો જૈન સમાજ ઘાઢ નિદ્રાને વશ થઇને સુતો છે. આ નિદ્રા એ બાળકોની પરિશ્રમ પછીની નિર્દોષ નિદ્રા નથી, પણ પાકટ વયે પહોંચેલા વિકૃત મનુષ્યની ચિરસ્થાયી નિદ્રા છે. આ નિદ્રા આપણા સમાજને શાપ રૂપ છે. જો આ નિદ્રા એ બાળકની નિર્દોષ નિદ્રા હોત તો જૈન સમાજ કયારનોય. બાળકની ચૈતન્યમય અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરી શકયો હોત. પરંતુઃ-આપણા સમાજની તે પરિસ્થિતિ નથી. એટલેજ આપણો જૈન સમાજ અવનતિના ઉંડાણમાં દીવસે દીવસે કુચ કદમ કરી રહ્યો છે. ઉંડાણમાં પડેલો આ સમાજ પોતાના યથાર્થ સ્વરૂપને ભુલી ગયો છે અને નિજ સ્વરૂપને ભુલી જઇ પર-વિષયક વસ્તુઓને પોતાની માની દીવસે દીવસે તેમાં લુબ્ધ થતો જઇ પોતે ઊંડી દુઃખગર્તામાં ઉતરતો જાય છે, અને એ પરિસ્થિતિને પોતાની ખરી પરિસ્થિતિ માની તેમાંજ રચ્યો પચ્યો રહે છે. જ્યારે જગતભરના બીજા સમાજો પોતાના કુરિવાજો આદિ સડારૂપી આંમળાઓનો ત્યાગ કરી પ્રગતિને પંથે ધપી રહ્યા છે, અને ખાડામાં પડેલો મનુષ્ય જે આશ્ચર્યતાથી હવાયાન ખેડતા મનુષ્યને જોઇ રહે છે, તે પ્રમાણે જૈન સમાજ વિસ્ફુરિત નયને જગતની કુચકદમ જોઇ રહ્યો છે. અને કેટલાક લાગણી પ્રાધાન્ય માણસો સમાજની આ પરિસ્થિતિ ઉપર ઉન્હાં ઉન્હાં અશ્રુ સારે છે.

જૈનોને તેમની સ્થિતિનું ભાન—જેમ ખાડામાં પડેલો મનુષ્ય જગતના પડપરનું પ્રકૃતિ સૌંદર્ય જોવા માટે ખાડામાંથી બહાર નીકળવાના પ્રયત્નો કરે છે, તેમ આપણી સમાજના કેટલાક

ઉછરતા યુવાનો જગતનું સ્વતંત્રતામય વાતાવરણ-રૂપી સૌંદર્ય પીતા કુદાકુદ કરી રહ્યા છે. આ કુદા કુદીએ અવનતિની ખીણમાં આરામથી ઉંઘતા કેટલાક માણસોને જગાડી મુકયા છે. આ પ્રમાણે યુવાનોની મદદથી આપણા સમાજમાં ધીમે ધીમે જાગૃતિ થવા માંડી છે. પૃથ્વી સુર્યની આજુબાજુ ભ્રમણ કરે છે. પૃથ્વીની બન્ને બાજુ એક પછી એક પ્રકાશમય અને અંધકારમય થતી જાય છે. આમાંની એક બાજુ તે જૈન સમાજ અને બીજી બાજુ બાકી રહેલું જગત. હું પ્રથમ કહી ગયો તેમ જગત પ્રગતિને પંથે પળ્યું છે, તેથી આપણી સરખામણીમાં તેની પ્રકાશમય બાજુ આવે છે. આ ઉપરથી વિશ્વ નિયમ પ્રમાણે જૈન સમાજને અંધકારમય બાજુ આવે. પૃથ્વીના ફરવાથી અંધકારમય બાજુમાં ધીમે ધીમે ઉષા પ્રગટ થઇ આખરે મધ્યાહ્ન તપે છે. જૈન સમાજની પણ તેમ ઉષા પ્રગટી છે. અને ભવિષ્યમાં જૈન સમાજનો સુર્ય પ્રખર તપશે. જેમ પૃથ્વી ઉપરની ઉષા સુર્યનાં બાલકિરણોને આભારી છે, તેમ જૈન સમાજની હાલની પ્રગટેલી ઉષા આપણા ઉછરતા નવયુવાનોનેજ આભારી હોઇ શકે.

જૈનોએ કરવાં જોઇતાં કાર્યો—હજી તો ચાર વાગ્યા છે. ભાગ્યેજ કોઇ માણસ શૌચ ક્રિયા માટે જાય છે. જૈન સમાજમાં પણ તેજ દશા છે. ઉષા પ્રગટયાં છતાં જૈન સમાજે નહિ જેવું શૌચ કાર્ય કરવાની પ્રવૃત્તિ આદરી છે. સમાજીક કાર્ય કરવાનું તો હજી જૈન સમાજે આરંભ્યું નથી. આર્થિક પરિસ્થતિ સુધારવા જોઇતા વિદ્યાભ્યાસ તરફ કંઇક કંઇક ધ્યાન અપાવવું શરૂ થયું છે. જો કે તે સંગીન તો નથીજ, છતાં જે થયું છે તેથી વધુ થવાની સંભાવના રહ્યાં કરે છે. અને ધાર્મિક બાબતોમાં તો જૈન સમાજ અવળાં પગલાં માંડી રહ્યો છે. ધર્મોન્નતિ કરવાને બદલે માંહો માંહે કલેશ અને વેરનાં બીજ વવાઇ રહ્યાં છે. શ્વેતામ્બરોમાં અંધશ્રદ્ધાળુ ભકતો તરફથી ઉત્તેજિત થતી બાલદીક્ષા અને તેના વીરોધીઓ દીક્ષા પ્રવૃત્તિના નામે આમ શ્વેતામ્બર સમાજનાં મૂળ ઉખડી રહ્યાં છે. દિગમ્બર સમાજને પણ સાથે સાથે પંડિત પાર્ટી અને બાબુપાર્ટીના કલેશથી ઘણુંજ સહન કરવું પડયું છે. અને હજુ વેળાસર ઉપાયો યોજવામાં ન આવે તો ઉપરના સમાજેનો નાશ નિર્માયો છે. તદુપરાંત પેટા વિભાગોમાં પણ જેવા કે-નૃસિંહપુરા, હુમડ, અને મેવાડા જ્ઞાતિઓમાં આગેવાનોના ખોટા મમત્વોને અને હઠાગ્રહોને લીધે કુસંપો અને તડોએ ઘર ઘાલ્યું છે. જો કે યુવકોની પ્રવૃત્તિને લીધે એક પરિણામ હુમડ જ્ઞાતિના એકત્રિતપણામાં આવેલું છે. આનો ધડો નરસિંહપુરા અને મેવાડા આદિ જ્ઞાતિઓએ લેવા જેવો છે. યુવાનોની ફરજ છે કે; આ દિશા તરફ તેઓ ધ્યાન દોડાવે; અને સમાજ એકત્રિત કરવા પોતાનો સંપૂર્ણ ફાળો આપે, તેમજ સામાજીક પ્રગતિમાં કુરિવાજો જેવા કે; કન્યાવિક્રય, બાળલગ્ન તથા વૃદ્ધ લગ્ન તથા સીમંતાદિ ન્યાતોના ગેરવ્યાજબી ખર્ચાઓ સમાજનું સત્યાનાશ વાળી રહ્યા છે, તેમજ બારમાદિના ખર્ચો પણ ગેરવ્યાજબી હોઇ, તે લોહીના લાડુ અટકાવવાની યુવાનોની પહેલી ફરજ છે.

જૈન યુવાનોને હાકલ—જૈન યુવાન! તું જો યુવાન હો, તારામાં યુવાનીની ભાવના હોય તો તારા માટે સમાજમાં ક્ષેત્ર ઘણું છે. તું નવયુગની ભાવના ઝીલવા તત્પર બન; અને તારા સમાજને ઉન્નતિના માર્ગે લઇ જવા પ્રયત્ન કર. અલબત એક હાથે કોઇપણ દીવસ તાલી પડતી નથી, છતાં સંગઠન એ એક એવી વસ્તુ છે કે; જેની સામે બીજું કોઇપણ બળ ટકી શકતું નથી. તો યુવાન બંધુઓ ! તમો જ્યાં હો ત્યાં તમારી સંગઠન શક્તિ વધારો, યુવક મંડળો સ્થાપો, અને તમારા સમગ્ર બળથી સમાજની જર્જરિત થઇ ગયેલી ઇમારત તોડી નાખી સંપૂર્ણ મજબુત. અને વિશાળ ઇમારત ઉભી કરો. સમાજના સડા-કુરીવાજો દુર કરી સમાજમાં સદભાવના તથા સંપ વધારી સમાજને ઉન્નતિના રસ્તે દોરી જાવ. યુવાન

એ હાલના જમાનાનો સુકાની છે. અને દરેક— સમાજ આજે પોતાના યુવાનોનું દોર્યું દોરવાય છે. અને પ્રગતિને પંથે પડી તેનાં સુમિષ્ટ ફળો ખાય છે. યુવાન ! તું કર્તવ્ય વિમૂઢ બનીશ નહી, વડીલાઇના ઓઠા નીચે દબાઇ જઇશ નહી, જ્યાં તારો આત્મા અન્યાય સામે બળવો પોકારી ઉઠવો જોઇએ, તે ટાઇમે વડીલોની ખોટી શરમ તને કર્તવ્ય—વિમૂખ ના બનાવે તે યાદ રાખ—ઇચ્છું છું કે આપણા જૈન સમાજના યુવાનો પોતાનું કર્તવ્ય સંભાળી લઇ સમાજને ઉન્નતિને પંથે લઇ જશે.

कर्मनी विचित्रता.

(લેખક:—પન્નાલાલ ડાહ્યાભાઇ ઝવેરી-સુરત)

કર્મ તારી કળા ન્યારી હજારો નાચ નાચાવે છે,
ઘડીમાં તું હસાવે ને, ઘડીમાં તું રડાવે છે.

હે કર્મ ! તારી ! વિચિત્રતા આશ્ચર્ય ઉપજાવે એવી છે. શ્રીમંતોની શ્રીમંતાઇ તોડાવનાર, અહંકારીઓના ગર્વને ઉતારનાર, રાજાને રંક બનાવનાર, મહત્ સુખમાં વિઘ્ન નાંખનાર, સત્યવાદીઓના સત્યને તોડાવનાર, જ્ઞાનીઓના જ્ઞાનને અજ્ઞાન બનાવનાર, હે કર્મ ! તારી કળા અજબ છે !

કર્મ એટલે રાગ દ્વેષાદિક પરિણામોના નિમિત્તથી કાર્માણુ વર્ગણા રૂપ જે પુદ્ગલ સ્કંધ જીવની સાથે બંધને પ્રાપ્ત થાય છે તેને કર્મ કહે છે.

આખો સંસાર આ કર્મની વિચિત્રતા ઉપર રચાયો છે. કર્મ એ મહાન વૃક્ષ છે અને તેની આઠ મોટી ડાળીઓ છે (૧) જ્ઞાનાવરણી (૨) દર્શનાવરણી (૩) વેદનીય (૪) મોહનીય (૫) આયુ (૬) નામ (૭) ગોત્ર (૮) અન્તરાય અને આ આઠની દરેક નાની નાની શાખાઓ છે તેને પ્રકૃતિ કહે છે. તે નીચે પ્રમાણે છે. (૧) પાંચ છે (૨) નવ છે (૩) બે છે (૪) અઠ્ઠાવીસ છે (૫) ચાર છે (૬) ત્રાણું છે (૭) બે છે અને (૮) પાંચ છે.

જેવી રીતે લોહચુંબક એની પાસે પડેલા લોખંડને આકર્ષે છે તેવીજ રીતે આ કર્મો આત્માને આકર્ષે છે અને તેથીજ કરીને આપણો આત્મા આ કર્મોરૂપી જાળમાં સપડાઇ જાય છે.

જેવી રીતે અદાલતમાં ન્યાયાધીશ ન્યાય સરખો આપે છે (ભલે પછી રાજા હોય કે રંક) તેવીજ રીતે આ કર્મોરૂપી જાળમાં ન્યાય સરખો મળે છે. આ કર્મોની ફીલસોફીમાં કોઇપણ બચી શકતું નથી. રાજાએ જેવું કૃત્ય કર્યું હોય તેવો તેને કર્મોનો ઉદય થાય છે અને ગરીબે જેવું કૃત્ય કર્યું હોય તેવો તેને કર્મોનો ઉદય થાય છે. હવે જો આપણે કોઇપણ કૃત્ય એકાન્તમાં કરીએ તો તેનું પણ ફળ મળે છે કારણ કે પુદ્ગલ પરમાણુંઓ દરેક ઠેકાણે હોય છે, એમ સાયન્સ પણ સાબીત કરે છે. આપણો આત્મા તેજ સ્વરૂપ છે અને ચારે તરફથી કર્મોથી ઘેરાયલો છે.

હવે કર્મ એ તો મૂર્તિક છે અને આત્મા અમૂર્તિક છે તો મૂર્તિક ચીજ અમૂર્તિક ચીજ ઉપર કેવી રીતે અસર કરી શકે ? ધારો કે એક મનુષ્યે દારૂ પીધો પછી તે પાગલ જેવો બની જાય છે આમાં શરાબ એ મૂર્તિક છે અને મનુષ્યનો આત્મા અમૂર્તિક છે તો જેવી રીતે દારૂ મનુષ્ય ઉપર અસર કરે છે તેવીજ રીતે આ મૂર્તિક કર્મો અમૂર્તિક આત્મા ઉપર અસર કરે એમાં કંઇ નવાઇ જેવું નથી, માટે હે બંધુઓ ! આપણે જેમ બને તેમ કર્મોનો ઉદય ઓછો થાય તેમ કરવાને પ્રયત્ન કરતા રહેવું જોઇએ.

હવે આપણે જેમ બને તેમ આપણું આન્તરિક હૃદય શુદ્ધ રાખવું જોઇએ અને તેને ખાસ કરીને મજબુત બનાવવાની જરૂરી આત છે, અને આન્તરિક હૃદય શુદ્ધ રાખવાથી આપણા પરિણામો શુદ્ધ થાય છે અને જ્યાં પરિણામો શુદ્ધ હોય ત્યાં કર્મોનો ઉદય ઓછો હોય છે. ધારો કે બે મિત્રો ફરવા નીકળ્યા. હવે તેમાંના એકે કહ્યું કે ભાઇ, મારે તો મંદિરે જવું છે અને બીજાએ કહ્યું કે મારે તો વેશ્યાને ત્યાં જવું છે. હવે બન્ને જણા પોત પોતાને

ઠેકાણે પહોંચી ગયા. તેમાં મંદિરમાં આવેલા મિત્રે વિચાર કર્યો કે મારો મિત્ર વેશ્યાને ત્યાં કેવી મોજ કરતો હશે ? હું તેની સાથે ગયો હોત તો કેવું સારૂં થાત ! અહિંયા એ મંદિરમાં છે છતાં એના પરિણામો અશુદ્ધ થાય છે. અને બીજો મિત્ર કે જે વેશ્યાને ત્યાં છે તેણે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે જો મેં મંદિરમાં જઈને પ્રભુ પ્રાર્થના કરી હતે તો કેવું સારૂં થાત ? આ માણસ વેશ્યાને ત્યાં છે છતાં તેના પરિણામો શુદ્ધ થાય છે.

આપણે દાંભિક દેખાવ બતાવવો ન જોઇએ (લોકોને દેખાડવાને માટે ન કરવું જોઇએ) માટે જેમ બને તેમ આન્તરિક હૃદય શુદ્ધ રાખવાને પ્રયત્ન કરવો જોઇએ અને પાપોથી દૂર રહેવાને પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. પાપ એ ઝેરી સાપ છે.

આપણો આત્મા કર્મ રૂપી જેલમાં સડી રહયો છે. આત્મા કર્મોથી લપટાયલો હોય ખરો ? ધારો કે એક વિદ્યાર્થી પરીક્ષા આપી આવ્યો અને પછી તેને કેટલી ફીકર થાય છે કે હું પાસ થઇશ કે નાપાસ થઇશ. અને ઘણે અંશે એમ બોલે છે કે ભાગ્યમાં જે પ્રમાણે નિર્માણ થયું હોય તે પ્રમાણે બન્યા સિવાય રહેતું નથી "यद् भावी तद् भविष्यति" હવે જ્યારે છોકરાનું પરિણામ બહાર પડે છે અને જ્યારે તે પાસ થાય છે ત્યારે તેને કેટલો બધો આનંદ થાય છે અને કદાચ નાપાસ થાય છે ત્યારે કેટલી બધી દીલગીરી થાય છે ? જો કદાચ છોકરો પાસ થયો હોય તો આગલા ભવમાં એને સારાં કર્મો કર્યાં હશે તેથી તે પાસ થયો. અને બુરા કર્મો કર્યાં હોય તો તેનું પરિણામ બુરૂં આવે છે. આવી રીતે આપણો આત્મા કર્મો રૂપી જાળમાં લપટાયલો છે, માટે જેમ બને તેમ આપણે સત કર્મો કરવાં જોઇએ.

હવે જેવી રીતે કર્મો આવે છે તેવીજ રીતે તેને કાઢવાનાં આપની પાસે સાધનો છે અને તે સાત તત્વનું ચિંતન છે (૧) જીવ (૨) અજીવ (૩) આશ્રવ (૪) બંધ (૫) સંવર (૬) નિર્જરા (૭) મોક્ષ હવે આ સાત તત્વો કેમ રાખ્યા છે! આઠ કેમ નહિ રાખ્યા ? ધારો કે એક માનવે જાહેરાતમાં ખરાબ કામ કર્યું અને સરકાર (Government) ને ખબર પડી, ત્યારે તેને પોલીશો ઘેર તેડવાને આવ્યા. તેવીજ રીતે પોલીસ રૂપી કર્મો આપના આત્માની પાસે આવે છે. એટલે કર્મોનું આવવું એ આશ્રવ છે. હવે તેને (પેલા માણસને) પોલીસો કેદમાં લઇ જઇને બેસાડે છે તેવીજ રીતે આ કર્મો આપણના આત્માને ઘેરી લે છે. આત્માનું કર્મોરૂપી જાળથી ઘેરાવું તેને બંધ કહે છે. હવે પેલો માણસ કે જેલમાં બેઠો છે તેને અમુક વખત છોડવવાને માટે જામીનો જોઇએ, છે તેવીજ રીતે આપના આત્માને કર્મોરૂપી જાળમાંથી છોડવવાને જામીનો જોઇએ છે, તે વ્રત ઉપવાસ વીગેરે કે જેથી કર્મો આવતા અટકે એટલે કર્મોનું અટકવું તેને સંવર કહે છે. હવે સરકાર તરફથી કેશ ચાલે તો તેને માટે વકીલો જોઇએ કે જેથી પેલો માણસ છુટી શકે તેવીજ રીતે આપણા આત્માને છોડવવાને માટે વકીલો જોઇએ, અને તે વકીલો છે સવિપાક નિર્જરા અને અવિપાક નિર્જરા છે એટલે કર્મોનું ધીરે ધીરે જવું તેને નિર્જરા કહે છે. હવે કેશ લડવાથી પેલો માણસ કદાચ છુટી જાય છે તેવીજ રીતે આ કર્મોનો જેનો તદન ક્ષય થાય છે કે તરતજ આ આત્મા મોક્ષપદ પ્રાપ્ત કરે છે, તો આ પ્રમાણે સાત તત્વોનું સ્વરૂપ છે.

માટે હે બંધુઓ ! આ કર્મો રૂપી જાળમાંથી છુટવાને આ સાત તત્વો (ઉપર કહ્યા તે) વગર પૈસાના તૈયાર છે અને તેનો જેમ બને તેમ ઉપયોગ જરૂર કરવો જોઇએ. માટે જેમ બને તેમ કર્મોનો ઉદય ઓછો થાય તેમ કરવાને પ્રયત્ન કરવો જોઇએ કે જેથી પરભવમાં આપણે સુખ અને શાન્તિને પ્રાપ્ત થઇએ.

આ માટે હે જીવ ! તું ખુદ તારા આત્માને ઓળખ અને આ કર્મરૂપી શત્રુઓની બેડીઓને તોડીને તું મોક્ષે જવાનો પ્રયત્ન કર!

'सुबोध वचनामृत.'

સુખ દુઃખ લેજે માનવી, છે લેવું નુજ હાથ;
નથી બીજાના હાથમાં, યાદ રાખજે વાત.
સદ કરણી, સદ્‌ગુણથી, મળશે સર્વે સુખ;
બદ કરણી, દુર્ગુણથી, દારૂણ મળશે દુઃખ.

× × ×

સજ્જનની સોબત થકી, સુખ સંપત્ત સૌ થાય;
દુર્જનની સોબત થકી, બુદ્ધિ બગડી જાય.

× × ×

લુચ્ચાને લુચ્ચો કહી, કોઈ ન કહેશો ભાઈ;
માફી પડશે માંગવી, ઉલટી તેને ઘેર જઈ.

× × ×

તારૂં આખર શું થશે, અને વળી ક્યાં જઇશ;
ઘણું કમાયો હાથથી, સાથે શું તું લઈશ.

× × ×

નિંદા સ્તુતિ નવ ગણો, હઇડે રાખી હામ;
સર્વેનું શુભ ચાહીને, કર તું તારૂં કામ.

× × ×

મુરખ જાણે મુજ વિના, ચાલે નહિ વ્યવહાર;
ગયા મહાવીર આદિજિનંદ, પણ ચાલે સંસાર.

× × ×

સંગત બીચારી શું કરે, જેનું હૃદય કઠોર;
નવનેજાં પાણી ચઢે, પથ્થર ન ભીંજે કોર.

× + ×

મુરખ જીવ જતા લગી, મૂકે નહિ છંછેડ;
મંકોડો મુકે નહિ, બચકું તૂટે કેડ.

× × ×

ફિરે નગારા કાળકા, ક્ષણ ભર છાના નહી;
કોઇ આજ અરૂ કલકો, ઘડી પલકકી માંહી.
ઘડી પલકકી માંહી, સમજ લે મનવા મેરા;
ધરા રહે ધનમાલ, જંગલમેં હોગા ડેરા.
કહત હૈ દીન દરવેશ, જગતમેં જીત મગારા;
ક્ષણ ભર છાના નહિ, કાળકા ફિરે નગારા.

× × ×

કાયાની શી માયા કાયા, વાદળની છાયા જેવી;
રૈતીના રચાયા પાયા, એવી કાચી કાયા છે.
દહન થતા દેખાય, રંક અને રાણી જાયા;
માયા સુધી મુવેલા ગણાયામાં ગણાયા છે.
ધન માટે ધાયા ને કમાયા ન કમાયા કાંઇ;
બંધને બંધાયા કાળ જાળમાં ઝલાયા છે.
ગુરૂ ચેલો ભાખ્યા, પણ સ્થિર ન થોભાયા ભાઇ;
અહીં સૌ સમાયા, એવી દૈવ કેરી માયા છે.

રતિલાલ કેશવલાલ શાહ–વડોદરા.

"क्षमा याचना."

કૃપાળુ સૃષ્ટિના દેવા, સદા તારી કરૂં સેવા;
હું માગું મહેરના મેવા, મટાડો કર્મનાં દેવાં.–૧
વિભુ છે એક તું સાચો, જગતનો ઠાઠ છે કાચો;
છતાં હું અન્યમાં રાચ્યો, નહિ તારો સુપંથ જાચ્યો.–૨
કીધાં અથાગ મેં પાપો, પ્રભુ તેની ક્ષમા આપો;
મતિ સન્માર્ગમાં સ્થાપો, સમાવો શોક સંતાપો.–૩
ન ધાયો પૂણ્ય પાઠોમાં, ભરાયો ઠાઠમાઠોમાં;
રમાયો રંગ રાગોમાં, ગુંથાયો કર્મ કાઠોમાં.–૪
મતિ મેં પાપમાં સ્થાપી, નથી મારા સમો પાપી;
અભય મારી મુને આપી, કરો આ રંક નિષ્પાપી.–૫
વિસાર્યા ધર્મના ધારા, વહાવી પાપની ધારા;
ક્ષમા એ પાપની પ્યારા, આપો સ્નેહથી સારા.–૬
નઠારો ને (હું) બન્યો પાપી, હૃદય તેની નહિ રાખી;
પ્રભુ તેને નહિ ભાખી, ક્ષમા આપોને સુભાગી.–૭
જપું હું આપના જાપો, સુબુદ્ધિ એહવી આપો:
મિટે સરવે પરિતાપો, અનેરી સન્મતિ આપો.–૮
ન હું ધન ધામને માગું, ન તારા પ્રેમને ત્યાગું;
સદા સુપંથમાં જાગું, પ્રભુ હું એ સદા માગું.–૯
અધમાધમ ભલે ચાવે, તથાપિ (તે) આશ્રયે આવે;
દિલાસો (તે) તુમથી પાવે, ભીખાભાઇ પ્રીતથી ગાવે.–૧૦

ભીખાભાઈ શાહ વાંચકર.

किस्मत की कुंजी

अर्थात्

प्रश्नमाला

जिसको

भारतीय गवर्नमेन्ट से धन्यवाद पाए हुए
जैनधर्म्मोद्योतकारक जक्तविख्यात राज्य
मान्य ज्योतिषरत्न दिवाकर महामान्य
श्रीपण्डित जैनीजीयालालजी चौधरी
रईस म्यौनिसिपल कमिश्नर कसबः
फर्रुखनगर ज़िला गुरगाँवः ने
बड़ेश्रम द्वारा बनाया ॥

सम्वत् १९५८ वैक्रमीय

आफिशियल मिशिन प्रिंटिङ्ग प्रेस मेरठ में छपा

प्रथम वार १००००]   [मूल्य ।)

॥ अथ किस्मत की कुंजी लिख्यते ॥

॥ भूमिका ॥

आज कल इस जक्त में जिधर दृष्टि उठा कर देखा जाता है सम्पूर्ण प्राणियों को दुखी और क्लेश युक्त देखने में आता है, और यद्यपि यह जक्त दुःख से भरा हुआ है। और एक दुःख में अनेक दुःख उत्पन्न होते रहते हैं। परन्तु कोई अज्ञानी जीव दुःख को ही सुख मानले, अथवा विपत्ति के समय धैर्य्य धार संतोष द्वारा उसको सहन कर ले यह पृथक् बात है। परंतु जिस को सच्चा और यथार्थ सुख कह सकते हैं। हमारे खयाल में उस सुख का तो इस वर्तमान कलिकाल में जहां तक देखा जाता है सर्वथा अभावही है। और दुःख भी नाना प्रकार के होते हैं, किन्तु सब से प्रबल दुःख आजीविका की न्यूनता वा उसके सर्वथा न मिलने का ही है॥

जिस को देखो यही कहता है। हाय! क्या करें खर्च अधिक, आमदनी कुछ भी नहीं। क्या कभी ऐसा भी समय था? कि एक की कमाई में दस प्राणियों का लालन पालन होता था। आज ऐसा समय है कि यदि कृपणता न की जाय तो दस की कमाई एक को भी थोड़ी होती है। जहां कहीं एक दुखी और अनेक सुखी हों उसकी सहायता कोई भी कर सक्ता है? परन्तु जहां सर्व प्रकार दुःखही दुःख हो वहां कौन किसी की सहायता करे। अपनाही गुज़ारा कठिन हो जाता है, फिर सोचना चाहिये, जो कोई दुखिया अपना दुःख कहा भी चाहे तो किससे कहे? और किस के आगे रोवे? कहां जाकर फरियाद करे? हा कष्ट! महा कष्ट!

भूतकाल (ज़मानेगुज़िश्ता) में बड़े बड़े विद्वान् ज्योतिषी और महात्मा लोग होते थे जो दुखिया प्राणियों का दुःख दूर करने के उत्तम और सुगम उपाय बतला दिया करते थे। इस समय प्रथम तो कोई पंडित ज्योतिषी महात्मा अथवा कोई विद्वान् मिलता ही नहीं। और यदि कोई मिले भी तो प्रथम भेट पूजा लिये बिना मुख से भी न बोले, फिर खयाल करने का स्थान है कि जो प्राणी खुद ही भूखा (तंग) है वह ज्योतिषी महात्मा की भेट कहां से लावे, और यदि किसी ने निज पेट पट्टी बांध कुछ देना चाहा तो वह पंडित जी के मन नहीं मानता। तात्पर्य्य यही निकाला की बेचारे निर्धन प्रश्न करने वाले की सर्वथा शामत अथवा मिट्टी खराब है॥

यह हम खूब जानते हैं कि आजकल जैसे जैसे देश में निर्धनता और निरुद्यमता बढ़ती जाती है वैसे ही ज्योतिषी विद्या की क़दर भी दिनोदिन घटती ही जाती है बल्कि आजकल के लिखे पढ़े प्राणी इस को घृणा दृष्टि से देखते हैं। परंतु उनको ऐसा पक्षपात वा वचन हट न चाहिये, प्रतिकूलता भी हो तो सप्रमाण होनी चाहिये, देखो आजकल के नवशीक्षित प्राणी जब अपनी पदार्थ विद्या की चमत्कारी बातें, अथवा मेस्मेरेज़्म के अनेक अलौकिक हाल किसी वृद्ध पुरुष के सन्मुख वर्णन करते हैं तो वह उनको झूठ समझ हंसने लगता है। भावार्थ किसी गँवार का भाई दूसरे देश में गया है। और उक्त गँवार तार (टैलीग्राफ़) के गुण नहीं जानता है

उससे कोई यह कहे कि हम तेरे भाई को खबर १० मिंट में मँगा सक्ते हैं और इस कथन को उक्त गँवार अपने मन में बिल्कुल झूठ समझे तो क्या उसका विचार ठीक है ? और क्या उसके झूठ समझने से तार (टेलीग्राफ) का गुण मिथ्या हो सक्ता है ? और क्या वे अपने मन में यह नहीं विचारते होंगे कि हाय कैसे मूर्ख से पाला पड़ा है । वास्तव में एक विचार रखने वाला प्राणी अपने से भिन्न विचार रखने वाले को मूढ़ (अज्ञ) और अपने आप को जानकार ख़याल करता रहता है। और यदि उसको समझाने वा सीधे मार्ग पर चलाने का यत्न भी किया जाय तो बहुधा निष्फल ही होता है । क्योंकि उसकी हट धर्म्मी और वचन पक्ष के कारण वक्ता का वचन चाहे कैसाही सत्य वा सप्रमाण क्यों न हो उसके ध्यान में निर्बल और मिथ्या ही भासता है और हटग्राही प्राणी सत्यवादी वक्ता के वचनों का भी हास्य युक्त तथा क्रूरता भरे शब्दों द्वारा प्रबल निरादर करता है। यदि न्याय दृष्टि से देखा जावे तो यह दोनों ही भूल में भूलते दिखाई देते हैं। क्योंकि सृष्टि की रचना विचित्र है। अन्त में ऐसा कौन है जो बल पूर्वक कह देवे कि कौन सच्चा और कौन झूठा है। परंतु विशेष भूल में वही प्राणी है जो किसी नवीन बात को सुनकर बिना विचारे ही उसको सत्य वा झूठ कहने लग जावे ॥

यह निश्चय है कि संसारी जीव सर्वज्ञ नहीं हैं। इस लिये उनको यह अधिकार नहीं है कि किसी की हाँसी करें, और यह भी सृष्टि की रचना से प्रतिकूल है कि सर्व प्राणियों के विचार और मत एक हो जायँ, विद्वानों की भी इस संसार में कुछ न्यूनता नहीं है, परंतु सर्व कार्य्यों में सब विद्वानों की भी एक मत नहीं होती। इस लिये किसी कार्य्य को बिल्कुल सत्य ठहरा देने के लिये भी हमारे पास कोई दृढ़ प्रमाण नहीं है, और यहां कसरतराय (बहुसम्मति) का होना भी कुछ कार्य्यकारी नहीं होता। यथार्थ तो यही है कि प्रत्येक प्राणी की बात ध्यान पूर्वक सुनी जाय। और प्रत्येक पुस्तक आद्योपान्त पढ़ ली जाय और कोई नवीन विषय श्रवण मात्र ही हृदय में धर लिया जाय। फिर निज चित्त की वृत्ति के अनुसार उस में से सारांश निकाल लेना उचित है। परंतु उस सारांशद्वारा अपना ही मन राजी हो जाय इतना ही बहुत है। उसके द्वारा किसी दूसरे का मस्तक खपाने अथवा उपहास्य करने में कोई चतुराई अथवा योग्यता नहीं है ॥

उक्त आशा पर मुझ को इस पुस्तक के लिखने का साहस हुआ। और यह विषय भी मुझको अधिक प्रिय और रुचिकारक है। और आजकल इसकी संसार में भी अधिक आवश्यकता है। क्योंकि प्रत्येक प्राणी को सूर्य्योदय से सायंकाल तक सहस्रों प्रश्न मन ही मन में उत्पन्न हुआ करते हैं जिनको ज्योतिषी के पास जाकर पूछना तो क्या मुख से निकालना भी बहुधा ठीक नहीं होता। परंतु उसके उत्तर पाने की इच्छा सर्वकाल बनी रहती है। इसका यही उपाय हो सकता है कि हम एक ऐसी पुस्तक सरल भाषा देवनागरी में रचें जिसके द्वारा प्रत्येक प्राणी बिना किसी की सहायता के अपने अभिष्ट प्रश्न का यथार्थ उत्तर जानले। और जिस प्रकार कोई प्राणी स्वाभिलाषी कुंजी द्वारा

रत्नों की ताळाबन्द पेटी का ताला खोलकर रत्न निकाल लेता है। पाठक इस पुस्तक द्वारा अपनी किस्मत (भाग) का ताला खोलकर सत्य परीक्षा कर सकैंगे। इस लिये यह अत्यन्त लाभकारी पुस्तक लिखी और नाम इसका "किस्मत की कुंजी" रक्खा गया है॥

"किस्मत की कुंजी"

इसके देखने के समय निम्न लिखित नियमों का अवश्य पालन करना होगा॥

(१) एक दिन में एकही प्रश्न किया जायगा। यदि विशेष आवश्यकता हो तो किसी दूसरे प्राणी से अपने लिये प्रश्न करा सकते हो परंतु ३ बार से अधिक फिर भी नहीं चाहिये॥

(२) वैशाख और श्रावण में शुक्र के दिन वा छठ तिथि को। ज्येष्ठ, फाल्गुण में बुध के दिन वा चौथ तिथि को। आषाढ़, अश्विनि में अष्टमी तिथि वा शनिश्चर के दिन। भाद्रपद, मार्गशिर्ष में मंगलवार वा दशमी तिथि के दिन। कार्तिक, माघ में बृहस्पतिवार वा द्वादशी तिथि के दिन। पौष, चैत्र में चंद्रवार और दूज तिथि के दिन कोई प्रश्न किसी प्रकार का भी नहीं करना चाहिये। यह योग्य सर्वथा त्याज्य है, भावार्थ वैशाख के महीने में जब शुक्र का दिन हो वह भी त्यागना और जिस दिन तिथि छठ हो वह भी त्यागनी। इसी प्रकार ऊपर लिखे सब महीनों में जानलेना

(३) मन में दगाबाजी रख कर अथवा कुतूहल (दिल्लगी) से कोई प्रश्न नहीं करना चाहिये बल्कि प्रश्नके समय शुद्ध मनसे प्रथमही ईश्वर का स्मरण करना चाहिये॥

(४) प्रश्न करने वाले की गोद में कोई बालक न बैठा हो। और प्रश्न करने वाला खुद भी किसी की गोद में बैठा हुआ न हो। यदि इसके प्रतिकूल हुआ तो कुछ भी फल न होगा॥

(५) सूर्य्य के उदय और ऽस्त के समय कोई भी प्रश्न नहीं करना चाहिये॥

(६) रजस्वलास्त्री और उपदंश(गर्मी) रोगसे पीड़ित प्राणियोंको प्रश्न नहीं करनाचाहिये

(७) प्रश्न करनेसे पहिले पुस्तकपर लवँग, इलायची अथवा कोई फूल चढ़ाना चाहिये॥

प्रश्न देखने की रीति इस प्रकार है॥

इस पुस्तक में सब ३० प्रश्न हैं उनके देखने की यह रीति है कि प्रश्न कर्त्ता जिस विषय का प्रश्न किया चाहे उसी विषय के चक्र के नव घरों में से किसी एक घरपर उंगली धरे फिर उसी संख्या के सन्मुख फल चक्र में फल देख लेवे यथार्थ मिलैगा। जैसे किसी को प्रश्न करना है कि मेरा मुकद्दमा क्या होगा? उसको चाहिये चक्र संख्या ६ पर किसी स्थान पर उंगली धरे और जहां उंगली धरे उस अंक का फल तालाश करे जो कुछ होनहार हैं फल मिलेगा। भावार्थ उसने ५० के अंक पर उंगली धरी उसका फल यह है कि इस झगड़े में खर्च अधिक पड़ेगा। इत्यादि॥

॥ दोहा ॥ वसु सर ग्रह शशि ऽब्द शुभ, माधव श्वेत तुषार॥
गुरु युत पुष्प विचार कै, रचा भाग फलसार॥१॥

वैशाख शुक्ला ७ गुरु १९५८ फर्रुखनगर] [ज्योतिषरत्न जीवाराम।

श्रीमान जीयालाल चित्तविनोद उत्तम और सत्य प्रश्नावली ॥

(१) धर्म्म प्रश्न			(२) रोजगार प्र.			(३) संतान प्रश्न			(४) विवाह प्र.			(५) नष्ट वस्तु प्र.		
१	२	३	१०	११	१२	१९	२०	२१	२८	२९	३०	३७	३८	३९
४	५	६	१३	१४	१५	२२	२३	२४	३१	३२	३३	४०	४१	४२
७	८	९	१६	१७	१८	२५	२६	२७	३४	३५	३६	४३	४४	४५

(६) मुकद्दमा प्र०			(७) रोगमुक्त प्र.			(८) नफा टोटा			(९) मित्रमिलाप			(१०) विदेशी प्र.		
४६	४७	४८	५५	५६	५७	६४	६५	६६	७३	७४	७५	८२	८३	८४
४९	५०	५१	५८	५९	६०	६७	६८	६९	७६	७७	७८	८५	८६	८७
५२	५३	५४	६१	६२	६३	७०	७१	७२	७९	८०	८१	८८	८९	९०

(११) देशाटन प्र.			(१२) परीक्षा प्र.			(१३) गर्भ में क्या है			(१४) शत्रुनाश			(१५) पशु लेनेका		
९१	९२	९३	१००	१०१	१०२	१०९	११०	१११	११८	११९	१२०	१२७	१२८	१२९
९४	९५	९६	१०३	१०४	१०५	११२	११३	११४	१२१	१२२	१२३	१३०	१३१	१३२
९७	९८	९९	१०६	१०७	१०८	११५	११६	११७	१२४	१२५	१२६	१३३	१३४	१३५

(१६) गुप्तभेद प्र.			(१७) नौकरी प्र.			(१८) मकानबना।			(१९) बागलगाना			(२०) मंदिरबनाना		
१३६	१३७	१३८	१४५	१४६	१४७	१५४	१५५	१५६	१६३	१६४	१६५	१७२	१७३	१७४
१३९	१४०	१४१	१४८	१४९	१५०	१५७	१५८	१५९	१६६	१६७	१६८	१७५	१७६	१७७
१४२	१४३	१४४	१५१	१५२	१५३	१६०	१६१	१६२	१६९	१७०	१७१	१७८	१७९	१८०

२१ पुत्रगोदलेना			(२२) वर्षा प्रश्न			(२३) राजदर्शन			(२४) नाजलेना			(२५) विद्यारम्भ		
१८१	१८२	१८३	१९०	१९१	१९२	१९९	२००	२०१	२०८	२०९	२१०	२१७	२१८	२१९
१८४	१८५	१८६	१९३	१९४	१९५	२०२	२०३	२०४	२११	२१२	२१३	२२०	२२१	२२२
१८७	१८८	१८९	१९६	१९७	१९८	२०५	२०६	२०७	२१४	२१५	२१६	२२३	२२४	२२५

(२६) समयकाल			(२७) कर्ज लेना			(२८) खेतीकरना।			(२९) मंत्रसिद्धि			(३०) कुश्तीलड़ना		
२२६	२२७	२२८	२३५	२३६	२३७	२४४	२४५	२४६	२५३	२५४	२५५	२६२	२६३	२६४
२२९	२३०	२३१	२३८	२३९	२४०	२४७	२४८	२४९	२५६	२५७	२५८	२६५	२६६	२६७
२३२	२३३	२३४	२४१	२४२	२४३	२५०	२५१	२५२	२५९	२६०	२६१	२६८	२६९	२७०

(१) धर्म प्राप्ति विषय प्रश्नों का फल।		(२) रोजगार सम्बन्धी प्रश्नों का फल।	
(१)	धर्म्म में रुचि थोड़ी हो जायगी॥	(१०)	रोज़गारशीघ्र अच्छा होनेवाला है
(२)	धर्म्ममें सदाकाल अधिकरुचिरहेगी	(११)	विशेषपरिश्रमकरनेसेरोज़गारहोगा
(३)	धर्म्मकरतेहुए शरीरमेंरोग पैदाहोंगे	(१२)	तुमको शराबकेव्यापारमें लाभ है
(४)	धर्म्म करने से जक्त में कीर्ति होगी	(१३)	लव,मिट्टी,कोयला,इनमें लाभहोय
(५)	धर्म्म कार्य्य में आकुलता उपजेगी॥	(१४)	इसव्यापारमेंअधिकहानिहैमतकर
(६)	धर्म्मकार्य्यमें पड़नेसेविशेषखुर्चहोगा	(१५)	तेरे कार्य्य में कोईशत्रु विघ्न करै है
(७)	धर्म्मकेमार्गमेंप्राणांत कष्टभय होगा	(१६)	अभी तेरे रोज़गार में विलम्ब है।
(८)	धर्म्म त्याग अधर्म्ममें मेल होयगा॥	(१७)	तेरेऊपरक्रूरग्रहहैकुछ दिनचुप हो
(९)	धर्म्म करनेसेनानाप्रकार सुख होगा	(१८	जोविचाराहैसो नहींहोगाअच्छी है

(३) संतान (औलाद) का प्रश्न फल।		(४) विवाह शादी का प्रश्न फल।	
(१९)	तेरीस्त्रीकोपीड़ाहै,उसकायत्नकर	(२८)	विवाह एक वर्षव्यतीत भयेहोगा
(२०)	प्रथम कन्या होयगी निश्चय जान	(२९)	स्त्रीकुरूपा कलहकारिणीमिलेगी
(२१)	पुत्रहोयगा परंतु विशेष न जीवेगा	(३०)	विवाह होना अति कठिन है।
(२२)	अभी संतानपैदाहोनेमें विलम्ब है	(३१)	विवाह तेरा अवश्यही होयगा।
(२३)	उत्तम गुणवाला पुत्र पैदा होयगा	(३२)	तेरा विवाह अष्टम मंगल रोके है
(२४)	तुम्हारे औलादका अभाव दीखैहै	(३३)	नष्टग्रह टलने से कार्य्य सिद्धहोगा
(२५)	औलाद होयगी परंतु सब कुरूपा	(३४)	कुछ खुर्च करनेसेही विवाहहोगा
(२६)	पिछली उमर में संतान का सुखहै	(३५)	विवाहमें अभीथोड़ासा विलम्बहै
(२७)	तेरे इष्टदेव की कृपा होगी तबही	(३६)	तुमको स्त्रीगुणरूपवाली मिलेगी

(५) नष्ट (चोरी गई) वस्तु ज्ञान प्र० फल।		(६) अदालत मुक़द्दमा प्रश्न फल।	
(३७)	यह वस्तुशीघ्र मिलेगी चोरस्त्री है	(४६)	अभी मुक़द्दमा विलम्ब से होगा।
(३८)	कुछ खुर्च करनेपर माल मिलेगा।	(४७)	इस मुआमलेमें तेरीही जीतहोगी
(३९)	पता पूरा लगैगा पर माल न मिले	(४८)	यह हाकिम ठीक न्याव न करेगा
(४०)	इस मालका पता नहीं चोरपक्काहै	(४९)	हेप्रश्नकर्त्ताआपेपानी न्यावहोगा
(४१)	किसीकी मददसे माल मिलेगा।	(५०)	भला होगा खुर्च अधिक पड़ेगा।
(४२)	चोरने तेरा माल दूसरेको देदिया	(५१)	इस कार्य्यमें अधिक कष्ट होयगा।
(४३)	मालका आधा भाग नष्ट होगया।	(५२)	खबरदार हो तुम्हारी हार होगी
(४४)	माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ दो	(५३)	आपसही में सफाई हो जायगी।
(४५)	चोर बालक है माल मिल जायगा	(५४)	पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

	(७) रोगीआराम कबतकहोगा प्र.फल।		(८) माल में नफा होगा या नुकसान।
(५५)	यह रोग अधिक दिन बना रहैगा	(६४)	इसमाल में उत्तम प्रकार लाभहै
(५६)	क्रूरग्रह लगाहै उसका उपायकरो	(६५)	इसमाल में कुछनफा नहीं होगा
(५७)	यहरोगदेवकोपकरहुवा दिखताहै	(६६)	यह कामतुमने घाटेका किया है
(५८)	भय मतकरो शीघ्र आराम होगा।	(६७)	खबरदार माल में चोरीकाभयहै
(५९)	रोगीकाअस्थानबदलदेना चाहिये	(६८)	तुम्हारासाथी दगाबाजीकरेगा
(६०)	रोगी बदपरहेजी करताहै रोकदो	(६९)	तुमको मालमें सवायालाभ होगा
(६१)	कुछ चिंतामतकरो ९ दिन भारी हैं	(७०)	यहमालकुछदिन रुककरबिकेगा
(६२)	आराम तोहोजायगा खर्चअधिकहै	(७१)	जिसभावबिकेबेचो रोकनाबुराहै
(६३)	होनहार में किसीका बसनहींचले	(७२)	मालमें खूब गहरा नफा मिलेगा

	(९) मित्र मिलेगा या नहीं प्रश्न फल।		(१०) प्रदेशी आगमन प्रश्न फल।
(७३)	मित्र शिघ्रही मिलनेवाला जानो।	(८२)	प्रदेशी शीघ्रही आया देखोगे।
(७४)	यह मित्र कपटी विश्वासघाती है।	(८३)	बिचाराबीमारीसे लाचारपड़ाहै
(७५)	यह मित्र कुछ बिलम्बसे मिलेगा।	(८४)	स्थानसेचलपड़ा मार्गमेंआरहाहै
(७६)	इस मित्र का विश्वास मतकरना।	(८५)	प्रदेशी दूर देशांतरमें विचरताहै
(७७)	यह मित्र बड़ा सज्जन और प्रेमीहै	(८६)	प्रदेशीमार्गचलते ठगाया गया है
(७८)	तुम्हारे मित्रके शरीर में पीड़ा है	(८७)	अभी उसकेमनमें लौटनेकी नहीं
(७९)	मित्र विश्वास योग्यहै शीघ्रमिलेगा	(८८)	प्रदेशी प्रदेशही में प्रसन्नरहताहै
(८०)	यह प्राणी खुदगर्जऔर मतलबीहै	(८९)	बिचाराखर्चसेतंगहै क्योंकरआवे
(८१)	तुम्हारामित्रदूसरेसेमिलावटरखताहै	(९०)	पराधीन प्राणीघरका नबाहरका

	(११) देशाटन (सफर) करना प्र. फल।		(१२) विद्या की परीक्षा का प्र॰ फल।
(९१)	प्रदेशगमन मत करे कुछ लाभनहीं	(१००)	परीक्षामें उत्तीरण होनाकठिनहै
(९२)	इस देशाटन में हानिलाभबराबरहै	(१०१)	विद्यामें अधूराहै उत्तीरणकैसेहो
(९३)	भूलकरभी मत जाओ हानिहोगी	(१०२)	तुम पास होजाओगे निश्चय है।
(९४)	शुभदिन जाओ विशेष लाभ होगा	(१०३)	कुछ साधारण लाभ होयगा।
(९५)	इस देशाटन में कोईनवीनबातहोय	(१०४)	द्रव्य खर्चकरोगेतोउत्तमफल हो
(९६)	अशुभविचार गमनकरो लाभहोगा	(१०५)	उत्तीरणहोजाओगेपर कष्टहोगा
(९७)	यह सफ़र करोगे तो बीमारीहोगी	(१०६)	तुम पास होगे तारीफके साथ में
(९८)	इसयात्रामें तुम्हारासाथी भला है	(१०७)	विद्यातो पूरी परंतु पास न होगे
(९९)	देशाटन सफल परंतु खर्च विशेषहै	(१०८)	कुछ बिलम्ब से पास होजायगा।

(१३) गर्भवती पुत्र जनेगी वा पुत्री ।	
(१०९)	इसगर्भके पूराहोनेकी आशानहीं
(११०)	इस गर्भ में कन्या उत्पन्न होगी
(१११)	इसगर्भ में शुभ लक्षणवालापुत्रहै
(११२)	यहगर्भवतीस्त्री मरीकन्याजनेगी
(११३)	यह गर्भ अधूरा जाता दीखताहै
(११४)	इस गर्भमें बालक जनाना बसेहै
(११५)	संतोष करो पुत्र उत्पन्न होगा।
(११६)	इस गर्भ में दो कन्या दिखती हैं
(११७)	गर्भमें एक कन्याएक पुत्रयुगलहैं

(१४) शत्रू दमन होयगा वा नहीं।	
(११८)	तुम्हाराशत्रूदुष्टहैदमनहोनानहीं
(११९)	शत्रूसे तुम्हारीनिश्चयजीतहोगी
(१२०)	तुम्हारीशत्रू द्वाराविशेषहानिहै
(१२१)	किसीमित्रकीसहायतासेभलाहो
(१२२)	शत्रू निर्बलहोगया क्योंडरतेहो
(१२३)	विश्वासमतकरना घात करेगा।
(१२४)	राजाकीसहायतासेसर्वभय मिटेगा
(१२५)	दुश्मनकीसाथतुम्हारीसुलहहोवेगी
(१२६)	शत्रूके कारण द्रव्य नाश होगा

(१५) पशु पालने में हानि लाभ प्र. फ.।	
(१२७)	तुमको पशुपालने में परमलाभहै
(१२८)	इस चतुष्पद से हानिलाभ समहै
(१२९)	यहपशुमतखरीदो भला न होगा
(१३०)	मनमें विचारा है सो ठीकनहींहै
(१३१)	तेरा मनोर्थ सर्वथा सिद्ध होयगा
(१३२)	आजकल पशुलेना देना बुरा है
(१३३)	पशु संग्रह मत करे पश्चतावेगा।
(१३४)	तेरा विचार बिलम्ब से फलेगा।
(१३५)	लेनादेनाठीकनहीं हानिलाभसम

(१६) मनमें गुप्त चिंता हो उसका प्र.फ.	
(१३६)	तेरी मनोकामना सफल होगी।
(१३७)	तेराकार्य्यसिद्ध होनेमें बिलम्बहै
(१३८)	इसकार्य्यमेंक्योंपड़ताहै खराबहै
(१३९)	तू दूसरे का विश्वास मत करे।
(१४०)	क्यातू दुखीहै डरेमतभलाहोगा
(१४१)	मन की चिंता मनही में रहैगी।
(१४२)	तुमको दुष्टजीव से पाला पड़ाहै
(१४३)	तुम्हारीचिंता देरकरके मिटेगी
(१४४)	भय सत्य है यत्नकर भला होगा

(१७) नौकरी मिलेगी या नहीं प्र. फ.।	
(१४५)	नौकरी अवश्य मिलेगी निश्चय।
(१४६)	बिलम्ब अधिक है धीरज धर।
(१४७)	यह कार्य्य नहीं होगा सचेतरहो
(१४८)	कुछ खर्च किये कार्य्य सिद्ध होगा
(१४९)	यहां क्या धराहै दूसराफिकरकर
(१५०)	तेरे कार्य्यमें शत्रू विघ्न करता है।
(१५१)	किसकी सहायता से भला होगा
(१५२)	इस विचार में अनेक विघ्न होंगी।
(१५३)	इससमयका प्रश्न कार्य्यकारीनहीं

(१८) मकान बनाने में हानि लाभ प्र.फ.	
(१५४)	मकान बनाओ सुख मिलेगा।
(१५५)	अधिक दिनों में पूरा होयगा।
(१५६)	इस कार्य्य में लाभ नहीं मतकरो
(१५७)	द्रव्यका खर्च विशेष होयगा।
(१५८)	इस कार्य्य में शत्रू उपद्रव करैगा
(१५९)	मकान निर्बल खराब बनेगा।
(१६०)	इसधरतीसेकुछगड़ा धनमिलेगा
(१६१)	इस मकानपर सदा झगड़े रहैंगे
(१६२)	पृथ्वीका भाग पृथ्वी में रहैगा।

(१९) बागलगाका शुभ या अशुभ प्र. फ. ।	
(१६३)	बाग लगाओ विशेष लाभ होगा
(१६४)	तुम्हाराबागअधिकदिनोंमेंफलैगा
(१६५)	बागमत लगाओ लाभ नहीं होय
(१६६)	बागमें द्रव्य विशेष खर्च होयगा
(१६७)	बाग में बनचर अधिक विघ्नकरेंगे
(१६८)	बागका स्थिर रहना कठिन है।
(१६९)	यह कार्य्य उत्तम फलदाई होगा
(१७०)	बागलगाओगेतोसदा झगड़े होंगे
(१७१)	मनोकामना सफल हुई समझो।

(२०) मन्दिर बनाना शुभ या अशुभ प्र०	
(१७२)	मन्दिरबनाओकीर्त्ति लाभहोगा
(१७३)	तुम्हारा अभिष्ट देरमें फलैगा।
(१७४)	मत बनाओ निर्वाहकठिनहोगा
(१७५)	मन्दिरमें लागत अधिक लगेगी
(१७६)	मन्दिर पर वज्रपातभयहोयगा
(१७७)	मन्दिर निर्बल खराब बनेगा।
(१७८)	यह विचार तुम्हारा उत्तम है।
(१७९)	मन्दिर बनना महा कठिन है।
(१८०)	इस कार्य्यका करनाही व्यर्थ है

(२१) पुत्र गोदलेना चाहता हूं प्र. फ. ।	
(१८१)	पुत्र अवश्य गोदलीजेनामहोयगा
(१८२)	यह लड़कावफादारी नहींकरेगा
(१८३)	यह कार्य्यकुछ खर्चकियेसिद्धहोय
(१८४)	पराये पूत किसका घर बसावेंगे।
(१८५)	परमात्मा कुशलकरे कामठीकहै
(१८६)	पुत्रगोदलेतेहोतो खबरदाररहना
(१८७)	इसबालक को तुमसेमुहब्बतनहीं
(१८८)	मातासेपुत्रकीसदाअनबन रहेगी
(१८९)	यहकार्य्य तुमकोसुखदाई नहोगा

(२२) वर्षा होयगी या नहीं प्र. फ. ।	
(१९०)	वर्षाशीघ्रहोनेवालीहै ऐसाजान
(१९१)	वर्षा होनेमें अभी विलम्बहोगा
(१९२)	कुछ नाममात्र की वर्षा होगी।
(१९३)	ऐसी वर्षा से क्या कार्य्य सरताहै
(१९४)	वर्षाहोयगीकुछकाम न आवेगी
(१९५)	ऐसीवर्षाहोयगीअनेकघरगिरेंगे
(१९६)	वर्षाकी अबकुछ आशा नहीं है
(१९७)	वृष्टि की अवस्था तुच्छहोगई है
(१९८)	गर्जनाविजलीचककेवलऔरनहीं

(२३) राजाके दर्शन में लाभहानि प्र. फ० ।	
(१९९)	यहविचारछोड़दोकुछ लाभ नहीं
(२००)	राजाकेदर्शनमेंद्रव्य की हानि है
(२०१)	राजाके दर्शनसे मनोर्थ पूर्णहोगा
(२०२)	राजाका दर्शन विलम्बमें होयगा
(२०३)	लाभहुआचाहताहैवैरीरोकताहै
(२०४)	राजा के दर्शनमेंकोईलाभनहींहै
(२०५)	राजाआदरकरेगाजक्तमेंनामहोगा
(२०६)	इसझगड़े मेंमतपड़ोपश्चातापहोगा
(२०७)	राजकादर्शनखाली अफल होगा।

(२४) नाज लेने देने के प्रश्न का फल।	
(२०८)	नाजमें अच्छा भारी लाभहोगा
(२०९)	नफाटोटा दोनों समान रहेंगे।
(२१०)	इसकार्य्यमें घाटा होगा मतकरो
(२११)	अन्नके बोझने का भय होयगा।
(२१२)	किसीकोसाझीकरोगेहानिहोगी
(२१३)	कुछ दिनपड़ारहैगा जबबिकेगा
(२१४)	अन्त में तुम्हारे सवाये होंगे।
(२१५)	बेचना चाहिये लेना ठीक नहीं।
(२१६)	इस समयका प्रश्न अफल है।

(२५) विद्यारम्भ फलदाई होगा या नहीं		(२६) इस वर्ष सुकाल होगा या दुर्भिक्ष	
(२१७)	तेराविद्यारम्भसर्वप्रकारसफलहोगा	(२२६)	यहपरमउत्तम सर्वथासुखकारी
(२१८)	बुद्धिनिर्बलहैसफलताहोनीकठिनहै	(२२७)	एक दशा सुकाल सर्वत्र अकाल
(२१९)	विद्याके पढ़नेमें विशेषश्रमकरायो	(२२८)	कहींदुर्भिक्ष और कहींसुभिक्ष।
(२२०)	तुमकोविद्यासेविशेषलाभनहींहोगा	(२२९)	यहवर्षप्रजाकोआनन्दकारीहोगी
(२२१)	विद्याद्वारातुम्हारीमनोकामनाफलेगी	(२३०)	इसवर्ष पूर्वदशामें अकराहोयगा
(२२२)	तुमकोविद्याहीपरमधनकीदाताहै	(२३१)	दक्षिणकी प्रजाकोप्रबलकष्टहोय
(२२३)	तुम्हारेनाममात्र विद्याकायोगहै	(२३२)	पश्चिमके निवासी पीड़ित होंय
(२२४)	आगेपढ़नापीछेभूलनाअच्छीबुद्धिहै	(२३३)	उत्तरदशाउत्तरदेवेऔरसबकुशल
(२२५)	तुमको विद्यासे कुछ लाभनहींहै	(२३४)	यहवर्ष सर्वप्रकार ऽशुभ जानना

(२७) कर्ज लेनेदेनेका प्रश्न और उत्तर।		(२८) खेतीकरने में हानिलाभ प्र० फ० ।	
(२३५)	कर्ज कालेनादेनादोनोंकामठीकहैं	(२४४)	खेतीकरो अधिक लाभहोगा।
(२३६)	जैसाप्रेमभावअबहैआगेनहींरहेगा	(२४५)	खबरदार अनावृष्टि भयहोगा।
(२३७)	इसकार्य्यका अंतपरिणामअच्छानहीं	(२४६)	एकप्रकारका कीड़ा विघ्नकरेगा
(२३८)	लेकरदेनामुश्किलहोजाताहै,क्यों?	(२४७)	मनोकामना सफल होजायगी।
(२३९)	दियासोखोया लियासोकमाया।	(२४८)	खेतीमेंजितनीमेहनतउतनासुख
(२४०)	इसकार्य्यमेंहानिलाभबराबरजानो	(२४९)	खेतीकर सावधानरहनाभलाहै
(२४१)	लेनदेनमेंकोईहर्जनहीं बेधककरो	(२५०)	इसखेतीमें ओलेकाभय होगा।
(२४२)	अंतसमयअदालतकामुखदेखोगे।	(२५१)	पवनके वेगकर अनेक कष्ट हों।
(२४३)	लेनाएक न देनादोहानिलाभसम	(२५२)	खेतीमतकर महान हानिहोगी

(२९) मंत्र सिद्ध करूं होगा या नहीं।		(३०) कुश्ती लड़नेमें जीतहोयगीयानहीं	
(२५३)	इसकार्य्यमें महानउपद्रव होवगा	(२६२)	अपनेइष्टदेवका ध्यानकरजीतेगा
(२५४)	मनचलायमान होजायगा जरूर	(२६३)	खबरदार शत्रुकी प्रबलता है।
(२५५)	इसविचारकोमनमें स्थानमत दे।	(२६४)	क्यों लड़ता है धाँधल मचेगी।
(२५६)	गुरुकी सहायतासे कार्य्य सिद्धहो	(२६५)	लड़ाई झगड़े मचानाठीकनहीं
(२५७)	आरम्भ विधि पीछे सफर करेगा।	(२६६)	सावधानहोकर लड़ तू जीतेगा
(२५८)	देवसिद्धिका समयनहीं चुपकाहो	(२६७)	क्योंघबराताहै काम सिद्धहोगा
(२५९)	तेराकाम विलम्ब पाय सिद्धहोगा	(२३८)	तेरे कार्य्य में शत्रु विघ्न करेंगे।
(२६०)	तू प्रसन्न मतहो फटकार लगेगी।	(२६९)	हमसत्य कहतेहैं तू हारजायगा
(२६१)	क्या मंत्रसिद्ध करना बालचेष्टा है	(२७०)	विजय ! विजय !! विजय !!!

हमारे दफ्तर का दस्तूर।

(१) इस सूचीपत्र में लिखा हुआ सामान नक़द दाम लेकर बेचा जाता है उधार का कुछ काम नहीं है।

(२) विदेशी ग्राहकों को चाहिये, हमारे सामानका मूल्य डाकमहसूल सहित हुन्डी, मनिआर्डर-द्वारा भेजें उनको फ़ायदा हो भेजा करें, परंतु नोट-वा-टिकट रजिस्टरी चिट्ठी में आनी चाहिये, और एक पैसा रुपया कमीशनका पृथक् देना होगा, बिना रजिस्टरी कराये जो नोट वा टिकट भेजने पर गुम होंगे तो उसके हम उत्तरदाता नहीं हैं

(३) जिन लोगों को हम विश्वासपात्र समझते हैं उनके पास सामान वेल्यूपेबल भी भेज दिया करते हैं, परंतु जो नवीन ग्राहक हमारा सामान वी.पी. मंगाना चाहें चौथाई दाम पेशगी भेजने पर या हमारे किसी जानकार की सही से पत्र लिख मंगा सकते हैं, और एकबार भरोसा होने पर फिर वही विश्वास पात्र होजायँगे।

(४) अपना पता, ठीकाणा, डाकखाने का नाम, ठीक २ स्पष्ट और साफ अक्षरों में लिखा करो जिसमें हमको सामान भेजते समय किसी प्रकार की रुकावट न हो, और रेल पारसलद्वारा चाहो तो स्टेशन का नाम साफ लिखो।

(५) बिकाहुआ सामान उलटा नहीं फिरेगा, लेकिन हमारे कर्मचारियों की भूल से कुछ अदलबदल होगी वा हिसाबमें भूल रहजायगी उसके हम जिम्मेवार हैं

(६) आठ आनेसे कमका माल वी.पी. न होगा, थोड़ा लेनेवाला पेशगी दाम भेजे।

(७) बेरंग पत्र किसी का भी नहीं लिया जायगा, यदि किसी चिट्ठी का उत्तर लेना चाहो या कुछ पूछना चाहो तो आधआने का टिकट या जवाबी कार्ड भेजो।

(८) किसी महाशयको यह अधिकार न होगा कि हमसे वी॰पी॰ द्वारा सामान मंगा कर फिर लौटावे, यदि कोई ऐसा करेगा तो उससे वी॰पी. की पूरी लागत और दस रुपये पृथक् हरजे के अदालतद्वारा वसूल किये जावेंगे।

(९) ईश्वर की कृपा से काम इतना बढ़ गया है कि जो चिट्ठी हमारे पास आती हैं उनको नम्बरवार तामील करें (सामान भेजें) तो आज की आई चिट्ठी का दसवें दिन नम्बर आवे, परंतु जिस चिट्ठी पर अधिक जरूरी लिखा होता है उसका सामान शीघ्र भी भावार्थ अगले दिनही भेजदेते हैं, यदि किसी महाशय की चिट्ठीको १५ दिनसे अधिक हो जावें और सामान नहीं पहुंचे तो जानना चाहिये चिट्ठी नहीं पहुंची गुम हो गई।

(१०) जो महाशय सामान मंगाने के लिये पत्र भेज चुके हैं और पीछे से उनको उस माल की जरूरत न रहे तो अपने पत्र के २ दिन पीछे तक केवल तार द्वारा हमको रोक सकते हैं नहीं तो सामान्य अवश्य लेना होगा।

(११) पत्रव्यवहार तथा मूल्य इत्यादि नीचे लिखे पते पर करना चाहिये।

☞ ज्योतिषरत्न पंडित जीयालाल जी—फर्रुखनगर, ज़िला, गुरगांवः।

आजाय, और इसके लेखानुसार वर्ताव किया जाय तो हम बल पूर्वक कहते हैं कि प्रथम तो कोई रोग उत्पन्न हो न हो, और जो हो भी जाय तो शीघ्र आराम होता है। छापा सुन्दर टाइप जिल्द सहित मूल्य ।॥।-) आने।

जैनसुधाबिन्दु।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रथमवार के रचे "सत्यार्थप्रकाश" के द्वादश समुल्लास में जो कुछ जैन धर्म के नाम से सवोक्त लेख लिखा था उसका विस्तार पूर्वक खंडन इस पुस्तक में लिखागया है, पुस्तक सर्वोपयोगी होने पर भी जैनियों के विशेष काम की है छापा टाइप मूल्य महसूल सहित ॥)॥

कोशबिन्दु देवनागरी भाषा के २००० दोहजारशब्दोंकाकोश मूल्य ।)॥

(१) हिन्दीबरटानियां, रसिक कवित्त -)
(२) सर्वविषहर, वैद्यक चिकित्सा ॥)
(३) उर्दूमुअलम, पढ़नेकी कल मू. ॥)
(४) औषधिसार, यूनानीइलाज मू. ॥)
(५) मिथ्याप्रचार, उपदेशी कथा ॥)
(६) मूषकस्तोत्र, हंसी का खज़ाना -)
(७) दयानन्दहृदय, धर्म्म विषय)॥
(८) धर्म्मसंताप, दयानन्द खंडन)॥
(९) दयानन्दमतदर्पण, पुनः मूल्य)॥
(१०) दयानन्द की बुद्धि, पुनः मूल्य)॥
(११) भजनसनातन, उत्तम वस्तु मू.)॥
(१२) सत्यामृत, झूठ की बुराई मू.)॥
(१३) योगाचार, यह ज्योतिष विद्या का उत्तम संग्रह जिसके द्वारा सुकाल, दुकाल, मन्दा, तेजमालूम हो जाता है मूल्य -)
(१४) चक्षुरक्षक, इसमें आंखोंकीशक्ति स्थिररखनेके अनेकउपाय, चश्मा लगाने की रीति और दवाई, सुर्मा, अंजन लिखे हैं ॥)
(१५) योगमहोदधि, वैद्यकविद्याकेप्रसिद्ध प्राचीन चरकसुश्रुत, भावप्रकाश सारंगधर आदि का मथन दोहा, चौपाईमें किया है मू. ॥)

जैनधर्म्म ग्रन्थ।

(१) रत्नकरंडश्रावकाचार, मूल्य ५)
(२) मोक्षमार्गप्रकाश, मूल्य ३)
(३) आत्मानुशासन, मूल्य ३)
(४) पार्श्वपुराण, भाषा मूल्य १।)
(५) समयसारनाटक, कवित्त मू. ॥॥)
(६) भूधरजैनसतक, भाषा मूल्य ॥)
(७) पूजनवृन्दावनकृत, भाषा मूल्य ॥॥)
(८) पूजननितनियम, सटीक मूल्य ॥)
(९) द्रव्यसंग्रहगाथा, टीका से मू. ।)
(१०) सन्दूरप्रकरण, भाषा मूल्य ।)
(११) चर्चाचन्द्रोदय, ३ भाग मूल्य ।)
(१२) स्वप्न का ख्याल, नाटक मूल्य ॥)
(१३) मूलतत्वार्थसूत्र, दाम ॥)
(१४) जैनवद्रीमूलवद्री, यात्रासमाचार ॥)
(१५) जैनभजनरतनाकर, बड़ा मू. ।-)
(१६) निशभोजनकथा, मोल -)॥
(१७) दर्शनस्तोत्र, चौपाई छन्द -)॥
(१८) भक्तामरभाषा, मूल्य -)
(१९) चारपाठसंग्रह, भाषा मू॰ -)
(२०) भक्तामरयुगम, मूल भाषा -)
(२१) भक्तामरसंस्कृत मूल पाठ)॥।
(२२) पंचमंगलभाषा, रूपचन्द कृत)॥।

(२३) बिषापहारभाषा, उत्तम पाठ)॥।
(२४) बारामासा ग़ज़ल लावनी,)॥।
(२५) दशआरतीभाषा, पृथक् मू.)॥।
(२६) शिषरमहातम, चौपाई बन्ध)॥
(२७) एकीभावस्तोत्र, भाषा मोल)॥
(२८) जैनशास्त्रोध्धार, भाषा मोल)॥
(२९) प्रातः स्मरणमंगल, पाठ)॥
(३०) निर्वाणकांड, भाषा मूल)॥
(३१) बैरागभावना, भाषा छन्द)।
(३२) जैन बालकों का गुटका मू.)।

और अनेक प्रकार की पुस्तक जैनधर्म सम्बन्धी हमारे पास मिलती हैं डाक खर्च ऊपर लिखी कीमत से जुदा लगेगा जो रुपये पीछे चार आना समझो।

देशीममीराऔरनानाप्रकारकेप्रसिद्धसुरमे

देशीममीरे का सुरमा नं. १ आजकल ममीरेके सुरमेकी संसार में इतनी धूमहै कि सौदागरलोगउसको दशरुपयेतोला तक बेचतेहैं, परंतुयह हमारा देशीममीरेका सुरमाऐसा उत्तमहै कि जिसकेसेवनकरनेसे फूला, जाला, ढलका, ललाई आदिअनेक रोग नष्ट होकर आंखें निर्मल साफ़ होजाती हैं, किसी तरहका नुकसाननहीं करता तथा परहेज़ भी नहीं चाहता। यह हमारे गुरु महाराजका प्रसाद है जिसको देते हैं वहीतारीफ़ करताहै, प्रशंसापत्रोंके ढेरलगे हुए हैं, मूल्य केवल चारआनातोला।

सुरमा नं० २—जो अमीरलोगफूलेका इलाजऐसीदवासे कियाचाहतेहैं जोलगे थोड़ी और आरामकरे उनकेलियेइससेबढ़कर कोईदवाक्याहोगी मू. एकरुपयातोला

बढ़ियासुरमा नं० ३-बहुधा अमीरलोगहमारेनम्बर १ के सुरमेको घटियासमझ केहाथ नहीं लगाते इसलिये कुछ सुरमादेशीममीरा और अनेकगुणकारी दवामिला करगुलाबकेअर्क में मोतियोंकेसाथ ४०दिनघुटवायाहै, बड़ाहीउत्तमहै दाम१तोला१)

अंजन नं० ४ बहुधाविद्यार्थी,दर्जी,वार्गवारलोगोंकीदृष्टिमेंअधिकश्रमके कारणनिर्बल ताहोजातीहै,रात्रिकोकुछनहींसूझताउनकेलिये यहपीलाअंजनलाभकारीहै ॥)तो०

शीतलसुरमा नं० ५ सुरमाजगानेवालेफिरीवालोंसेलेकरबहुधाकच्चासुरमालगाते हैं जोहानिकारक होताहै, वेलोगसस्ता खरीदनाही भलासमझतेहैं, इसलियेहमारा सुरमानम्बर ५ जो केवल एकआना तोला बिकताहै सबसे उत्तम और गुणकारीहै।

नम्बर ६ यहसफ़ेदसुरमानयेमोतियाबिन्दकेपानीकोरोकताहै, दाम४आनातोला

नम्बर ७ आसमानीरंगकागरीबलोगोंकेफूलाकाटनेकीदवा, दामचारआना तोला

नम्बर ८ यह सफ़ेद बढ़ियासुरमा मोतियाबिन्दका इलाज अमीरोंके लियेपरम लाभकारी नजलेके जलको इसप्रकार रोकताहै जैसे नदीका पुल दाम १) रु० तोला

नयनामृतअंजन नं० ९—वैद्यक, डाक्टरी, यूनानी, सबका यही मत है कि आंख के जितनेरोगहैं, कुछदिनसेवनकरनेसे यहशीघ्रआरामकरताहै मूल्यएकरुपयातोला

विशालचक्षु नं० १०—यह अलभ्य सुरमासौंफेको खरलमें गुलाबकेबढ़िया अर्क में मोती ममीरासर्वरस वगैरा ४० दवाई डालकर तैयार होतीहै और यहअमीरोंका जीवनप्राणहै ४९ दिन बराबर घोटाजाताहै दाम दशरुपये तोला शीशीमें भरादेतेहैं

बालरक्षा हफ्तगौहर बक्स ।

बहुधादेखनेऔरसुननेमें आताहैकिछोटीअवस्थाकेअनेकबालकरोग,मसाण, स्वास खांसी,पसली,लहक,दस्त,सुकिया,ज्वर,नेत्रपीड़ा,गलगंड आदिमें फंसकर मरजातेहैं और रोगकेसमय मूढ़विश्वासघाती खुदगर्ज़ लोगजोस्यानेकहलातेहैं, रोगीबालकोंके मातापिता और विशेषकर स्त्रियों से कहते हैं, तुम्हारे बालकको भूत लगाझपटाहै नज़रहै,हमारीभेटलाओ, यत्नकरेंगे, आशीर्वाददेंगे मंत्रपढ़ेंगे,यंत्रदेंगे आरामहोगा इत्यादिक बातेंबनाकर बिचारे गरीबोंको खूबलूटतेहैं, और बालक को आराम नहीं होता, क्योंकि वेलोगरोगका असलीभेद नहींजानते, हमनेजक्त की भलाईके लिये एक "बालरक्षाहफ्तगौहर" बक्स बनाया, इस में निम्न लिखित उत्तम सात पदार्थ हैं।

बिजलीका बड़ाकड़ान नं० १—बीजलीकेजलमें बुझाकर लोहेसेबनायाजाताहै, इसको जिसस्त्रीके बामपगमें डालोउसकी औलादनिरोगपुष्ट और सुन्दर उत्पन्नहोय

बिजलीकाछोटाकड़ान नं० २—इसको पुत्रकेदाहिने, कन्याके बामेपगमें डालने से नज़र,झपटा,मसाण,भूत,प्रेत,पसली,खांसी,लहक,स्वास,दस्त आदिक सम्पूर्ण रोग नष्ट होते हैं, और बिजली के गुण आजकल के लिखि पढ़ों से छिपे हुए नहीं हैं।

बिजलीकी जुगनी नं. ३—यहजुगनी खूबसूरतबनातकीबनतीहै पिछलीतरफ एकबिजलीका छल्ला और अगली तरफ नकली सोनेकी फुल्ली लगाई जाती है इसको बालक स्त्री दोनोंही गलेमें पहनसकते हैं, इसके पहननेसे, दस्त, सुस्ती, दिलधड़क दर्द, जीमतलाना, भय,हड़फूटन इत्यादि सर्वप्रकार के वायुरोग कमेंड़ातकनष्टहोतेहैं

बीस (२०) का यंत्र नं. ४ यहबस्तुघरमेंरक्खोरहैऔरजब कभीबालकवास्त्रीको किसीप्रकारकाभयहोउसकेगलेमें डालोपरम लाभकारीहै, इसकोचांदीसोनेमेंमंढालो

बिजलीका छल्ला नं० ५ बहुधागर्भवती, व रजस्वला स्त्रियोंको सोते समय खोटे स्वप्नदिखलाई दिया करतेहैं उनको यह छल्ला बामेंहाथकी उंगलीमें रखना चाहिये।

बिजलीकी राख नं० ६ यह राखबिजलीका कीटहै,बालकोंकेदांतनिकलतेसमय ज्वर,खांसी,दस्त,गलगंठ, आंखदूखना, निर्बलता इत्यादि अनेक रोग उत्पन्नहोतेहैं इस राखकोमधइके साथ उसके मसूड़ों पर मलनेसे सुगमता पूरवक दांत निकलतेहैं

मसाणकी गोली नं. ७—यहगोली सुकियामसाणऔर पसली (डब्बा)केरोगमें परमलाभकारीहैं ग्रहस्थोंकेघरमेंहरसमयबनी रहनीचाहिये एकबक्समें७गोलीदेतेहैं

(नोट) ऊपरलिखिसातोंरत्नकौड़ियोंकेमोलमिलतेहैं तरकीबकाछपाइआपरचासाथ होताहै, एकसुन्दरकाटकेबक्समें दियाजाताहै, यदिपंचजीका बनायाहुआ होताती सौरुपयेकोभी सस्ताथा हमकोइसकार्य्यमें पूराघाटा हुआहै परन्तुहम सवालखबक्स बेचनेका प्रण करचुकेहैं, अबतक (७३) हजार बिकचुकेहैं, पूरेहोनेपरयह रत्नमिलने कठिनहोंगे,इसी खयालसे अनेक लोगोंने दसदस पांचपांच इकट्ठे भी खरीदे हैं मोल केवल[illegible] महसूल पारसल [illegible]आना, रेलद्वारामंगानेमें पांचआनेमेंदस भावार्थ घर बैठे साढ़ेआठआने मिलेगा। यही बक्स अमीरोंके लिये बढ़िया भी बनाये गये हैं, उन का मोल पांच रुपया है इस में चान्दी सोने का भी काम होता है।

मृगीकाघृत—यहघृतबड़ीकठिनतासे बनायाजाताहै, इसकेइन्द्रीपरलगानेसेसम्पूर्णही नर्मोंकी कमजोरी, लड़कपनकी कुचालोंके कारणपुरुषत्वकी निर्बलता आदिक जितने विकार हैं सब एक बारही में नष्ट होते हैं, दुनियां में इस की बराबरी करने वाला कोईतिला अथवा दवाजनहीं, हम २० वर्षसे इसको उपयोगमें लातेहैं असंख्य रोगी इस से अच्छे हुए किसी प्रकारका उपाड़ नहीं करता ३ मासेका मोल ।।।) बाराआने

धातपुष्टकीगोलियां—यह मस्तक, रीढ़, रग, मांसको बलवान करतीहैं, हौलदिल याद भूलना, क्षीणता, हाथ पैरोंकाकांपना,भोजनमें अरुचि २० प्रकारकेप्रमेहइनसब को जड़मूल से नष्टकरके शरीरको क्रांतिमय करतीहैं, दाम १४ गोली १) रुपये की.

मूत्रकृच्छ्—(सोजाक) यहरोग विशेषपुराना होजानेसे मूत्रधारा पतलीपड़जाती है तब बून्दबून्द होकर भिरताहै, और अंतमें एकबारही बन्दहोकर मौतका दर्शनकरा देताहै, इसकेकारण, बद प्रमेह, गठिया आदिक रोगइसकेसाथही लगेरहतेहैंप्रथम हीइस रोगसे मूत्रमें जलन होवेसे जब बन्द होतीहै तो मूत्रमें चिणक और रुकावट होतीहै, पीतश्वेत मिश्रितरंगकी धातुका भरना कपड़ोंको खराबकरताहै, कभी गर्म वस्तु के सेवनसे पीप अधिक बहने लगती है तब रोगी विशेष दुखी होजाताहै इस रोग को हमारा तेल दावेके साथ दूर करता है, यह दो तेल जुदे जुदे होते हैं एक शीशी में ६ मासाहोता है दोनों प्रकार का मिश्रित एक तोला की शीशी का मू. १।)

नयासोजाक—इसके लिये उत्तम चूरण दिया जाताहै, सात दिनके सेवन करने से यहरोग बिल्कुलनष्ट होजाताहै दिनमें दोबारखानेको १४ पुड़ियाकेदाम ॥)आना

दमेकीदवाई—जब हमदेखतेहैं कि हमारी दवा सैंकड़ोंको आरामकरतीहै फिर यह क्योंकर मानें कि "दमादमके साथ जाताहै" हमारी अनमोल दवा संसार भरमें प्रसिद्ध है और शीतकाल में बल पूर्वक गुण करती है ६ मासे की शीशी का मोल १)

खांसीकी अनमोल दवा—यह अनेक बहुमूल्य दवा फूंक कर राख बनाई गई हैं जो लोग खांसीके लाखों यत्नकर निराश होगये हों वे एक बार इसका अवश्य सेवन करें देखो क्या चमत्कार दिखलाती है दाम एक तोला राख का एक रुपया १)

गठिया का चूरण—नवीन गठिया रोग इस चूरण के सात दिन तक दिन में २ बार सेवन करने से तत्काल आराम होता है १४ पुड़ियों का मोल आठ आना ॥)

दस्तावरगोली—जिसके उदरशूल वा कब्ज की शिकायत हो रात्रि को सोते समय दो गोली खाकर सोवे दूसरे दिन प्रातःकाल एक दस्त साफ़ खुलकर होजा-यगा, और पेटमें गरमीवा मरोड़ा कुछ न होगा, और स्नान ध्यान नित नियमपूजा पाठमें भी किसी प्रकारकी रोक न होगी, दाम २० गोलियों का १ बक्स दस आना

बुखारकी गोली—ज्वर, जूड़ी इकतरा तेइया, चौथैया, बल पूर्वक दूर करने में यह गोलियां बड़ी प्रसिद्ध हैं २० वर्ष से बराबर चलती हैं दाम २) रुपये की १००

बवासीरखूनी—इस रोगके लिये हमने एक प्रकार की राख बनाई है इस के तीन चार बार सेवन मात्रही आराम की आशा हो जाती है दाम एकआना पुड़िया

श्रीमरीतिला-यहतिलाबालकपनमेंकियेहुएदोषोंसे उत्पन्नहुई नपुंसकता,शिथिलता, वक्रता,निर्बलता,वीर्यवाहिनी,नसोंकामाराजाना,याकोमलहोजाना, मनकाकहींनलगना,इत्यादि सबविकारोंको दूरकरकेपुरुषत्वको उत्पन्नकरताहै,एकविशेषगुणइसमें औरभीयहहैकियदिएकतोलातिलामेंदशतोलामीठातेलमिलाकरचाहेजिसप्रकारकेदर्द परमलोशीघ्रआरामहोगा,हाथपांवकीऐंठन,कमरकीशिथिलता,वायुगठिया,वद,सबएक सप्ताहकेसेवनसेसमूलनष्टहोतेहैं,इसकोबड़े बड़े डाक्टरोंनेपरीक्षाकरीहैमूल्य२)रु०तो०

योगराजगुग्गल—यह कोढ़,बवासीर,संग्रहणी,प्रमेह,वातरक्त,नाफका दर्द,भगन्दर, उदावर्त, (दस्तसाफनहोना) क्षयरोग,वायुगोलामृगी, छातीका जकड़ना, मन्दाग्नि, खांसीस्वास,त्रिदोषजनितविकार,आमवात(गठिया)इनकोदूरकरताहैऔरपुरुषोंकेवीर्य विकारऔरस्त्रियोंकेअनेकरजदोषदूरकरबन्ध्याकोपुत्रदेताहै मूल्यछःआना।=) तोला

स्वासपसली और मसाण रोगकी गोली—संसारी असंख्य बालक मसाणरोग तथा पसलीके फड़कनेसे मरते हुए देखनेमें आतेहैं, इसका बड़ाभारी कारण तो यही है कि बालचिकित्साका अभाव हुया जाता है, हमारे देशके वैद्यहकीमडाक्टरबीमार के मुखसे अनेक प्रश्न पूछे बिना पूर्ण तौरसे किसीभी रोगका निदान नहीं करते और छोटे बालकों को अपना दुख बतला देनेकी बुद्धि वा सामर्थ नहीं इसलिये छोटेबड़े नवीन चिकित्सक यही कह दिया करते हैं कि बच्चोंका इलाज स्त्रियां तथा दाईठीक जानतीहैं, आश्चर्य की बात दाई विचारी क्या जाने हमने बाल चिकित्सा के अनेक प्रमाणिक ग्रंथों का मथन कर उक्त रोगके वास्ते गोली बनाई हैं जो गुण दिखलाने में जादूका असर रखतीहैं यह सबके घरमें सदाकालरहनी चाहियें मू० २॥)की १००

(नोट) आजकलके लोग झूठ अधिक बोलने लगेहैं, बिनापरीक्षा कियेही विज्ञापन छपादेतेहैं, संस्कृत ग्रंथोंके देखे पढ़े बिना ही दो चार पैसों की भाषा पुस्तक ले धन्वन्तरीके गुरु होने का दावा करते हैं, झूठे सच्चे खुशामन्दियों से दो चार सार्टीफिकेट लिखालेना और बात है, हम उसी दवाको उत्तम कहसकते हैं जिस को बड़े बड़े वैद्य हकीम डाक्टरोंने अच्छा बतलाया हो, और हम नाम के साथ परीक्षोतीर्ण, सनदयाफ्तः, कविराज, वद्यराज, राजवैद्य, इत्यादिक अक्षरों का योगभी अच्छा नहीं समझते, हमारी औषधियों का गुण बरतने परही पूरा २ मालूम होगा और बरतनेकी तरकीबका छपाहुआ परचा प्रत्येक दवाके साथ भेजाजाताहै, इनके सिवाय और सर्व प्रकार की दवा, शरबत, खमीरा, मोदक चूरण, चटनी, तैलादि मांग आने पर बनाकर भेज सकते हैं, जो कीमत ऊपर लिखी गई वह और डाक खर्च और बारदाना भी ग्राहकों के शिर होगा, हमारी सचाई काम पड़ने ही से मालूम होगी पत्रव्यवहार नीचे लिखे पते से करना चाहिये ॥

ज्योतिशरत्न पंडित जोयलाल चौधरी

फरुखनगर ज़िला गुरगाँवः ~~और हसीका देहली॥~~

સ્ત્રીઓ માટે શક્તિની પુષ્ટિદાયક દવા
સ્ત્રીઓનું અમૃત
સુંદરીસાથી
[રજીસ્ટર્ડ]
(લાખો સ્ત્રીઓ રોજ વાપરે છે અને લાખો સર્ટીફીકેટો મળ્યાં છે.
મંગાવો—તે સ્ત્રીઓના તમામ રોગને માટે અકસીર છે. સ્ત્રીઓના કોઇપણ દરદ જેવાં કે, લોહીવા, પ્રદર, રક્ત અને શ્વેત પ્રદર જેથી ચીકણી, ધાટી, પીળી, મળગુગળી, અગર લાલ રંગની લોહી જેવી રસી કે ધાતુ વહ્યા કરે છે, પેસાબે અગન બળે, હાથ પગના તળીઆમાં, કેડોમાં, માથામાં અને કોઇ વખતે આખા શરીરમાં સણકા મારે, હાટ, ચુસ અને કમતર થાય, ઝીણો તાવ હંમેશાં આવે, શરીર સુકાઇ ધોળા પુણા જેવું થાય, આંખોનુ તેજ કમી થાય, દિવસે દિવસે શરીર સુકાઇ બેહાલ થાય અશક્તિ આવે અને કામ થઇ શકે નહિ, આખો દિવસ કેડો અને માથું ફાટયાં કરે, તાવ, ઉધરસ, રતવા, દમ, ખાંસી, સોજા, ઉલટી, અરુચી, માસિક અટકાવ, હસ્તાન સંબંધી દરેક રોગ ગર્ભ ન રહેવો, ગર્ભાશયની પીડા, સુવાવડમાં પાવાથી કસુવાવડ, સુવારોગ થતો નથી. શરીર બળવાન બનાવે છે, લોહી સુધારે છે. ગોળો ચડવો, હિસ્ટીરીયા વગેરે તમામ રોગ અને આવા અનેક દરદોના સમૂહને આ સુંદરસાથી એકદમ મટાડી શકે છે. ડાકટરો અને વૈદ્યો પોતાનાં દરદીઓમા જથાક્રમ વાપરે છે.
૧ નાની બાળકીને પાવાથી શરીર પુષ્ટ રાખી યુવાન અવસ્થામાં પ્રદર વગેરે વ્યાધિ થવા દેતુ નથી. ૨ યુવાન સ્ત્રીઓને પ્રદરના વ્યાધિમાંથી બચાવી ગર્ભાશયને સુધારી ગર્ભ ધારણ કરી શકે તેવું બનાવે છે. ૩ ગર્ભ રહ્યો હોય તે વખતે પીવાથી અધુરે માસે ગર્ભ પડતો નથી, ગર્ભનું પોષણ કરી પૂર્ણ માસે વિના કષ્ટે પ્રસવ થાય છે. ૪ સુવાવડ પછી પીવાથી સુવારોગ થતો નથી, બાળકને પુષ્ટ કરે તેવું તંદુરસ્ત ધાવણ બનાવે છે અને બાળકનુ ને તેની માનું શરીર પુષ્ટ કરે છે ૫ સ્ત્રી રોગ તમામ મટાડે છે. હમેશાં પીવાથી સ્ત્રી તંદુરસ્ત રહી શકે છે. પ્રદર વગેરે વ્યાધિ થતા નથી. ૬ વૃદ્ધાવસ્થામા પીવાથી શરીર પુષ્ટ અને તંદુરસ્ત યુવાન જેવું રહે છે અને વૃદ્ધાવસ્થાને અટકાવે છે. આ માટે હજારો અભિપ્રાય મળ્યા છે અને હજારો સ્ત્રીઓ, ડાકટરો અને વૈદ્યો પણ તેનો ચાલુ ઉપયોગ કરે છે, તેજ તેની ઉત્તમતા છે.
ધરમપુરથી ડૉ. નાનાલાલ દેવીદાસ લખે છે કે: આપની દવા સુંદરીસાથી મારા દરદીઓને આપું છું. પ્રદર ઉપર ઘણોજ સારો ફાયદો થાય છે. માટે એક ડઝન સુંદરીસાથીની બાટલીઓ તુરત વી. પી. થી મોકલી આપશો.
બીલાડથી ડૉ. મોહનલાલ જે. પાઠક એલ. એમ. બી. લખે છે કે: સુંદરીસાથીનો મેં મારા દરદીઓમાં અજમાયશ કરી જોઇ તો તે સ્ત્રીઓનાં દરદો–પ્રદર, લોહીવા, ગર્ભાશયનો સોજો, સુવારોગ, વિગેરેમાં ઘણી ઉપયોગી અને અસરકારક માલમ પડી છે. તે પછી તો હું સ્ત્રીઓનાં દરદોમા સુંદરીસાથી વાપરું છું જેથી મારા ઘણા કેસોમા તે દવા ફતેહમંદ નીવડી છે. મારા દરદીઓને તો હું હવે સુંદરીસાથીજ વાપરવાની ભલામણ કરું છું.
વાંસાવડથી ડૉ. રેવાશંકર ઇશ્વર જોશી લખે છે કે: આપની સુંદરીસાથીની દવા મેં સ્ત્રીઓના દરદોમાં વાપરી જોઇ ખાત્રી કરી છે, અને તે સારૂં કામ આપે છે. હું હવે સ્ત્રી દરદીઓમા સુંદરીસાથી છુટથી વાપરું છું જેથી મને જસ મળે છે. અને હું ઘણા જ દરદીઓને સુંદરીસાથી વાપરવાની ભલામણ કરૂં છું.
જુનાગઢથી બેન કાશી હેમરાજ લખે છે કે: સુંદરીસાથીથી અમને ઘણોજ ફાયદો થયો છે. મારા વહાલા બેન જડાવને શ્વાસ, દમ ખાંસી વિગેરે હતાં, શરીર લેવાઇ ગયું હતું જ્યારે દમ ચઢતો ત્યારે તો એમજ ધારતી લાગતી કે હાલમ જ જીવ જશે, પણ આપની દવા સુંદરીસાથી તેણીને જીવતદાન રૂપ થઇ પડી છે તેથી અમે આપના ઘણોજ આભાર માનીએ છીએ.
કી. રૂ. ૧–૦–૦ ત્રણ બાટલી પીવી પડે છે. ત્રણના કી. રૂ. ૨–૧૦–૦
દવે કેમીકલ એન્ડ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્કસ, કાલબાદેવીરોડ–મુંબાઇ અને અમદાવાદ

दीन-हृदयके फफोले।

कौन कलेजा थाम सुनेगा, मेरी इन आहोंको ?
कौन बुझावेगा आकरके, दुखियाकी दाहोंको ?
हूं मनुष्य फिरभी पशुताका, लाञ्छन मुझपर भारी।
मुझको खानेको बैठी है, निर्दय दुनियाँ सारी॥
मेरे लिये दोष भारी है, ऊपर आँख उठाना।
किसी दयालुके समीप जा, अपनी कथा सुनाना॥
सबकी आँखोंमें खटका है, मेरा भूपर जीना।
इसीलिये तो खुला हुआ है, हरदम मेरा सीना॥
फटकारें दुतकारें मिलतीं, हैं बस जहां तहां पर।
इन दुखिया आँखोंके आँसू, कहाँ बहाऊँ जाकर॥
क्या मैं करूं कहाँपर जाऊँ, उदर पूर्ति करनेको ?
क्या मैं गला घोंट मर जाऊँ, विष खाऊँ मरनेको ?
किन्तु न इतना धैर्य हृदयमें, जो इतना कर डालूं।
विकट बुभुक्षाकी बाधाको, हो न व्यग्र सह डालूं॥
अब तो मुझे छोड़ना होगा, हा ! स्वधर्मसे नाता।
तब शायद मिल पायेगी, इन दुःखोंसे कुछ साता॥
हार्दिक भाव मसलने होंगे, इस दुनियामें आकर।
अब मनुष्यताको खोना है, हा ! मनुष्य कहला कर॥
इस प्रकार दुःखोंमें पीड़ित, आज हमारे भाई।
छोड़ धर्मको बनते हैं नित, मुसलमान-ईसाई॥
श्रीमानो ! चिन्ता इनकी कर, दयाभाव उर लाओ।
हो मनुष्य तो मनुष्यताके, कुछ कर्त्तव्य दिखाओ॥
व्यर्थ न व्यय करके निज धनका, इनको भी अपनाओ।
विषय वासनाओंमें ही मन, जलवत इसे बहाओ॥
निज चरित्रका कुछ सुधारकर, गुण्डोंको न खिलाओ।
अगर नहीं बनता यह तुमसे, भला न मुख दिखलाओ॥

विद्यार्थी-श्रीचन्द्र जैन, जयपुर।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला-सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

दिगंबर जैन

सम्पादकः—मूलचन्द किसनदास कापड़िया सूरत।

वर्ष २२वाँ
अङ्क ३.

वीर सं० २४५६
पौष.

विषयानुक्रमणिका.

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।-) विशेषांक मूल्य ।।।)

चातुर्वर्णमय परमेश्वर।

तू परम ज्ञाता ब्रह्मका है, ब्रह्म तू परमेश है।
तूने दिया सब प्राणियोंको, धर्मका उपदेश है॥
हे ज्ञानधन, ब्राह्मण तपोधन, इसलिये कहते तुझे।
तेरे मुखांबुज-वचन-रसका, रसिक बनने दे मुझे॥
सम्राट तीनों लोकका तू विश्वका त्राता महा।
त्रैलोक्यजेता मोहका तू, ही विजेता है अहा॥
तेजोमयी तू परम क्षत्रिय, युक्त है गुण नीतिसे।
निःसीम तेरी बल-भुजा, रक्षा करे भव-भीतिसे॥
तू साम्य मनकी ताकडी पर, तोलता सब चीजको।
तू भव्य-मानस-भूमिमें, बोता धरमके बीजको॥
पालक पशू सब प्राणियोंका, वैश्य वर कहते तुझे।
संपन्न कर, हे धर्म उस, ऐश्वर्य आत्मिकसे मुझे॥
हे दीन-भ्राता, दीन जनका, हृदय तेरा धाम है।
तूने बजायी विश्वकी, सेवा विमल निष्काम है॥
तू पाप धोता, शूद्रसम तू क्यों नहीं है बोल दे।
तेरे चरण-रजकी किरण मम ज्ञान लोचन खोल दे॥
चैतन्य, अज है, देहसे तू, मुक्त है, तू नित्य है।
संसारके सब भेद भावों के परे तू सत्य है॥
ब्राह्मण न क्षत्रिय, वैश्य नहिं, नहिं शूद्र भी तू है सही।
मंजुल निरंजन ज्ञानमय, निज रूप पाऊँ मैं यही॥

ताराचन्द जैन पांड्या।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततां, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वाँ ‖ वीर सम्वत् २४५६, कार्तिक-मगसिर, विक्रम सम्वत् १९८६. अङ्क ३.

कुडची-काण्ड ।

कु—छ कहूं, किन्तु कुछ कहा नहीं जाता है ।
ड—स रहा उर-विषधर, न रहा जाता है ॥
ची—त्कार मचाते सब, बहुतसा खोया ।
में—षोंके जैसा, जब बर्बादरके रोया ॥
जै—नोंने निवेदन किया, एकता करलो ।
नि—ज कष्ट अग्निको, शांति शीघ्र ही करलो ॥
यों—बहुत रोजसे, पुकार करता आया ।
प—र नहीं किसीने, उसपर ध्यान जमाया ॥
र—फ्तार जिंदगी नहीं, जहपर आई ।
घो—षोंने[1] तब तो, अनीति का दिखलाई ॥
र—म प्रतिमाओंकी नमसे, खूब उड़ाई ।
अ—न्याय हुआ यह, कुडची भीतर भाई ॥
न्या—रे पनका फल पाया, हमने जैसा ।
य—ह हाल हुआ, "केशरियाजीका" जैसा ॥
औ—रोंने हमारे ऊपर, जोर जमाया ।
र—ह रह पछिताना रहा, न कुछ भी पाया ॥
उ—र हुआ बहुत ही दुखी, न कुछ बन आवे ।
न—हिं रही वीरता, कायरता ही भावे ॥
का—यरताने ही, स्वत्व हमारे मारे ।
क—र नहीं सके कुछ, कायरतासे हारे ॥
हु—मले यवनोंने, यही हुक्म फ़रमाया ।
ना—मुमकिन है, सुन दिल सबका थर्राया ॥
है—यही हुक्म तुम मुसलमान बन जाओ ।
या—ग्राम छोड़ दो, नहीं सताये जाओ ॥
य—ह हुक्म आपको, हमने ठीक सुनाया ।
ब—द फसीसियोंने उधम खूब मचाया ॥
न—हिं गफ़्लत जरा भी, ध्यान ज्ञात होता है ।
ब—दमाशी सुन यवनोंकी, दुख होता है ॥
नि—ज हालतपर, अब हमें सोचना चहिए ।
ये—फूट सताती, इसे मोचना चहिए ॥
या—वज्जीवनके लिए, एकता चहिए ।
ग्रा—हक अनैक्यताके, नहिं रहना चहिए ॥
म—त कायरताको, पास बुलाना चहिए ।
त—त्काल वीरता, हृदय जगाना चहिए ॥
ज—ल्दी कुडचीका न्याय कराना चहिए ।
दी—नोंकी तरह नहीं, वक्त गमाना चहिए ॥
जि—स वक्त सुनो नहिं होता न्याय हमारा ।
ये—"प्रेम" करो सत्याग्रह, फर्ज तुम्हारा ॥

ब्र० प्रेमसागर-बुढ़ार ।

१—मुसलमानोंने ।

सम्पादकीय-वक्तव्य

आज भारतवर्षके कोने २में संगठनकी आवाज आरही है। बड़े २ देश-

बयाना काण्डमें हमारी सफलता।

नेता भी यही कह रहे हैं कि व्यर्थका पारस्परिक भेदभाव छोड़कर आपसमें बंधुत्वका नाता जोड़ो, भारतीय होनेके कारण हम सब एक हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह संगठनका आदेश इतना उपयोगी है कि संसारकी कोई भी महान् शक्ति या विश्वका कोई भी दमनचक्र हमारे सामने टक्कर नहीं लगा सक्ता। मगर देशके दुर्भाग्य या हमारी कमनसीबीसे आज भारतीय जनता उन छोटी २ बातोंपर झगड़े खड़े कर देती है जो कि लज्जास्पद हैं।

कुछ समयसे हिन्दू मुस्लिम बाजेका प्रश्न बड़ा जोर पकड़ रहा है। इतना ही नहीं, यह प्रश्न तो आज भारतव्यापी होगया है और इसमें सैकड़ोंके सिर फोड़े गये तथा देशकी बरबादी कर दी गई है। जो लोग कुछ समय पूर्व भाई भाईकी भांति गले गला मिलाये थे वे एक दूसरेके शत्रु बन बैठे। इतना तो हुआ सो हुआ, मगर कुछ अविवेकी वैष्णवोंने जैनियोंके साथ भी जबरदस्त झगड़ा खड़ा कर दिया। भरतपुर स्टेटमें बयाना ग्राममें दिगम्बर जैनियोंने श्री जिनेन्द्रदेवकी सवारी (रथ) निकालनेका निश्चय किया था। निश्चय ही नहीं किन्तु हजारों रुपया खर्च करके रथकी पूर्ण तैयारी होचुकी थी तथा सर्वत्र लोगोंके पास आमंत्रण पत्रिकायें भी पहुंच चुकी थी। किन्तु कुछ सनातनधर्मी कहलाने वाले वैष्णव भाइयोंने उसमें रोड़ा अटकाया और वे इसमें इतने प्रयत्नशील होगये कि 'हमारे जीतेजी जैनियोंका रथ आमबाजार या सार्वजनिक मार्गसे न निकलने पावे!' इसके लिये वे लोग सरकारी मोटरके आगे सो गये और सरकारसे इस बातकी प्रार्थना की कि जैनियोंका रथ, नहीं निकलने पावे अन्यथा खून खराबियां होंगी, दुर्भिक्ष फैल जावेगा और सर्वत्र अशांति हो जावेगी!

फल यह हुआ कि रथ रोक दिया गया और शांतिप्रिय जैनियोंकी धार्मिक आकांक्षा कुचल डाली गई! लेकिन "रंग लाती है हिना पत्थर पे घिस जानेके बाद" तदनुसार जैनियोंकी कुचली गई भव्य भावना मरी नहीं प्रत्युत नया रंग लाई, नूतन उत्साह भर गया, नवीन स्फूर्ति जाग्रित होगई और भारतवर्षके मुख्य २ स्थानों पर जबरदस्त विरोध सभायें हुई तथा भरतपुर सरकारसे रथ निकलवाये जानेकी प्रार्थना की गई। इतना ही नहीं किन्तु जैनमित्र, वीर, दिगम्बर जैन आदि जैन पत्रोंमें इसकी बराबर चर्चा होती रही तथा प्रयत्न चालू ही रहा।

सत्यकी विजय होना ही चाहिये, बस हमारा प्रयत्न सफल होगया और वह ऐसा सफल हुआ कि तत्काल अमलमें लाया गया। हमें निश्चित रूपसे मालूम हुआ है कि वहां (भरतपुर) के विद्वान एडमीनिस्ट्रेटर मि० डी० के० मेकेन्जी (जो सब धर्मोंपर समान प्रेम रखते हैं) ने गत ता० १८ जनवरीकी शामको बयानाके

विषयमें फैसला देते हुये जैनियोंको अपनी रथयात्रा बे रोकटोक निकालनेकी परवानगी देदी और डिष्ट्रिक्ट मजिष्ट्रेट मि० रत्नाकर शास्त्री व पुलिस सुपिन्टेण्डेण्ट खानबहादुर मुन्शी नेकीमहमदखानको सूचना दी गई, कि वे जैन रथयात्रा, बयानाके आम बाजारसे नियत स्थानतक निकलवानेकी उचित व्यवस्था करें।

इस हुक्मके अनुसार उचित व्यवस्था की गई, बयाना (भरतपुर) और आसपासके जैनियोंको खबर दी गई तथा ता० १९ जनवरीको जैन रथयात्रा बड़ी शानके साथ निकाली गई। उसमें करीब १००० जैन सम्मिलित थे। किसी प्रकारका कोई उपद्रव नहीं होने पाया जिसकी कि आशंका थी।

हाँ, इसके पूर्व हम यह और लिखना चाहते थे कि अखिल भारतवर्षीय हिन्दूमहासभाने इस आपसी झगड़े या कुछ वैष्णवोंके अनुचित व्यवहारको रोकनेके लिये पूर्ण प्रयत्न किया था। उसके कार्यकर्ताओंकी पूर्ण आकांक्षा थी कि बयानाके हिन्दूभाई शान्त होजावें और जैनियोंका रथ निकाला जावे। मतलब यह है कि हिन्दूमहासभाने इसमें बहुत कुछ प्रयत्न किया है इसके लिये हम उसके आभारी हैं। इस कार्यमें मि० मेकेन्जी सा० एडमीनिष्ट्रेटर, रायबहादुर पं० विनोबनलालजी ज्यूडीशियल सेक्रेटरी, मि० रत्नाकर शास्त्री डिष्ट्रिक्ट मजिष्ट्रेट, खानबहादुर मुन्शी नेकीमहम्मदखान पुलिस सुपि० तथा और भी जिनसभाओं एवं महानुभावोंने सहायता दी है उनका हम सादर आभार मानते हैं।

अब इस विषयमें हमारा अंतिम कहना यह है कि कुछ नासमझ लोग व्यर्थके टंटे खड़े कर देते हैं जिसके निवारणार्थ व्यर्थ ही बड़ी२ शक्तियोंका दुरुपयोग करना पड़ता है। इसलिये सनातनी-हिन्दूभाई जैनियों या अन्य धर्मी भाइयोंके साथ इस ऐक्यके जमानेमें ऐसे झगड़े न उठाकर शांतिपूर्वक वर्तमानमें सामने रक्खे हुये राष्ट्रीय उद्देश्यमें अपनी शक्तिको लगादें ताकि भारतके स्वतंत्रताका प्रश्न हल होनेमें विलम्ब न हो। इन आपसी झगड़ोंमें हम आजतक फंसे रहे हैं, इसका परिणाम यही हुआ कि हम सख्त बंधनोंमें जकड़ गये हैं। इसलिये इन बंधनोंको तोड़नेके लिये हमें पारस्परिक प्रेमकी आवश्यक्ता है। किसीके धार्मिक कार्योंमें बाधा डालना अन्याय है और राष्ट्रीय उद्देश्यका विघात करना है। जो कुछ हुआ सो होगया अब शांतिपूर्वक रहनेकी आवश्यक्ता है।

शिवहारा और कुड़ची।

पाठकोंको यह जानकर प्रसन्नता हुई होगी कि बयानामें आपको अच्छी सफलता मिली है। मगर अभी हमारे सामने शिवहारा तथा कुड़चीके दो प्रश्न और उपस्थित हैं। जिसमें शिवहाराका प्रश्न बयाना जैसा ही समझिये अर्थात् बयानामें हिन्दुओंने जैनियोंका रथ रोका था और यहां मुसलमानोंने। बयानामें सफलता मिल चुकी है और यहांपर सफलताकी संभावना है। जो हो, शिवहाराके विषयमें हमें तबतक पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये जबतक रथ न

निकल जाय। हमारा कर्तव्य है कि इसके लिये सर्कारसे बराबर निवेदन जारी रक्खें।

दूसरा है कुडची कांड, यह कांड मामूली नहीं है, मगर एक धार्मिक हृदयपर महान आघात पहुंचानेवाला एवं कठोर व्यक्तिके भी रोंगटे खड़े कर देनेवाला है। मुसलमानोंद्वारा हमारी ६ जिन मूर्तियां तोडी जाने पर भी अभीतक हमने ऐसा प्रयत्न नहीं किया है कि अपराधी पकड़े जासकें और वे दंडित किये जावें तथा कुड़चीके जैनोंपर होते हुये अत्याचार मिटें। बम्बई दि० जैन नवयुवक मंडलने ही इसमें प्रयत्न किया है और जांच कमीशन कुड़ची भेजाकर जांच करके वापिस आगया है। मगर उसकी रिपोर्ट प्रकाशित करनेके लिये पैसेकी आवश्यकता है, उसके ही कारण मंडल अभी चुपचाप है। जैन समाजसे अपील करनेपर भी ऐसे पुण्य कार्यमें उसे सहायता नहीं मिली यह बड़ी लज्जाकी बात है। हम जैन समाजसे निवेदन करेंगे कि वह इस कार्यमें सिर्फ आर्थिक सहायता ही करे तो कार्यमें सफलता मिलजावे। थोड़ा बहुत जितना भी हो सके, माणिकचंद पानाचंद झवेरी, १५० जवेरीबाजार—बम्बई नं० ३ इस पते पर सहायता भेजनेकी कृपा करें ताकि नवयुवक मंडल उत्साहपूर्वक कार्य करे और कुड़चीकांडमें भी सफलता प्राप्त होजावे।

* *

जैन समाज ही नहीं किन्तु भारतवर्षीय समस्त जातियां या सभी

पहली अप्रैल। धर्मावलम्बी इस बातसे भलीभांति परिचित होगये हैं कि आगामी पहली अप्रैलसे शारदा एक्ट (बालविवाह निषेधक कानून) चालू होजावेगा। अर्थात् बालक बालिकाओंका १८-१४ वर्षसे पहिले विवाह करना-कराना अपराध ठहराया जावेगा। मगर खेद है कि ऐसे हितैषी कानूनके विरोधी कुछ लोग मौजूद हैं। इसमें आश्चर्य तो करना ही नहीं चाहिये, कारण कि प्रत्येक लाभप्रद व्यक्तिको छोटामोटा भी सुधारा खटका ही करता है। फोड़ाका मवाद निकालनेके लिये जब डाक्टर औजार सामने लाता है तब अज्ञानी बालक रोता चिल्लाता और भागता है, मगर बलात् उसको नस्तर लगाकर जब फोड़ा साफ कर दिया जाता है तब वह खुश होजाता है। ठीक यही हालत हमारे विरोधी समाजकी है।

सतीप्रथाको बंद हुये अभी सिर्फ १०० बरस ही हुये हैं, लोग उस राक्षसी प्रथाको सर्वथा भूल गये हैं। लोगोंने इसके बंद होनेके कानून बननेपर विरोध खड़ा किया था और अपना धार्मिक अधिकार बतलाकर जनताको खूब भमाया था, सुधारकोंको गालियां दीजाती थीं, सर्वत्र लोग छाती ठोकते फिरते थे। मगर हितैषी कानूनकी विजय हुई और उस अमानुषी प्रथाका मुंह काला होगया। जो लोग विरोधी थे वे ही उसका नाम सुनकर खुले रूपसे कहने लगे कि यह बहुत अच्छा हुआ, नरहत्यायें मिटीं, ऐसे सुधारकी आवश्यकता थी, इत्यादि।

यही हाल शारदा ऐक्टके विषयमें भी समझना चाहिये। इसके चालू होजानेपर विरोधी लोग स्वयं कहेंगे कि अबोध बालकोंकी हत्या

रोकनेके लिये इस कानूनकी वास्तवमें आवश्यक्ता थी।

फिर भी अभी जो लोग विरोध कर रहे हैं और अप्रैलके बाद चालू होनेपर भी जो लोग इस कानूनके विरुद्ध अबोध बालकोंका विवाह रचें उनकी रोक होना परमावश्यक है। सरकारने इस विषयमें पुलिसको केस चलानेका अधिकार नहीं दिया है, इसलिये संभव है कि जिस मुस्तैदीके साथ बालविवाह बंद होना चाहिये या न हो सके। इसके लिये जगह २ नवयुवक संघकी आवश्यक्ता है। ग्राम२में समाजहितैषी नवयुवक मिलकर संगठन करें और मंडल स्थापित करें। उनका कर्तव्य होना चाहिये कि जहां कहीं भी शारदा एक्टके विरुद्ध विवाहकी तैयारी हो शीघ्र ही सरकारमें इत्तला करें। तब सर्कार आपकी मदद देगी और उसकी सहायतासे इस अनुचित विवाहको रुकवा दें।

एक व्यक्ति ऐसे कार्य करनेमें पारस्परिक वैमनस्यके भयसे संभव है कि हिचकिचाता है, मगर संगठित रूपसे नवयुवक मंडल इस कार्यको करे तो सफलता अवश्य मिलेगी फिर भी वैमनस्य हो, बुराइयां हों, तुम्हारे ऊपर आपत्तियां आवें तो उनकी चिन्ता न करके उन्हें सहन करें और इस समाज एवं देशघातिनी बालविवाहकी प्रथाको रोककर पुण्यके भागी बनें। नवयुवको! प्रारंभमें विरोध होना स्वाभाविक है, इसके लिये तुम निर्भय होकर सरकारकी मददसे इस कार्यमें सफलता प्राप्त करके समाजके अबोध बालकोंकी रक्षा करो।

जैनसमाचारावलि

दिगम्बर जैनके विशेषांकके-विषयमें स्व० तिलक महाराजका सुप्रसिद्ध मराठीपत्र 'केसरी' (पूना)ने ता० २१-१-३०में अंकमें लिखा है कि-दिगम्बर जैन-(सं० मूलचन्द किसनदास कापड़िया, सूरत, वा० व० १) रु० विशेष अंकाची किं० ॥।) दिगम्बर जैन या हिंदी मासिकाचा तेविसाव्या वर्षाचा हा प्रथमांक पवित्र निघाला आहे. या विशेषांकात जैनधर्म व समाज या सम्बधानें लेख चांगल्या विद्वान गृहस्थांनीं दिले आहेत. दिगम्बर जैनसमाजांत जागृति करण्याचें काम हें मासिक चांगलें करीत आहे. या अंकांतील लेखहि वाचनीय असून जैन समाजांतील अनेक प्रमुखांची छायाचित्रेंहि देण्यात आलीं आहेत.

परवारभूषणकी पदवी-नागपुरमें सेठ फतेचन्द दीपचंदजी परवारने [illegible] लगाकर सार्वजनिक "परमानंद धर्मशाला" खोलकर उसका प्रबंध दि० जैन पंचोंको सुपुर्द किया है इससे पंचोंने आपको परवारभूषणकी पदवी दी है। इस मौकेपर सवाई सेठ प्यारेलालजीने भी [illegible] प्रदान किये थे।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा-का १९ वां अधिवेशन श्री० स्तवनिधि (कोल्हापुर) क्षेत्रके वार्षिक मेलेपर ता० १८-१९-२० जनवरी को होगा। सभापतिका स्थान श्रीमान जिन

वारिधि पं० चंपतरायजी बेरिस्टर ग्रहण करेंगे समाके साथ महिला परिषद भी होगी।

गिरनारकी यात्राको स्पेशल गाड़ी—ता० १४ जनवरीको कासगंज (एटा) से आसपासके दि० जैन यात्रियोंकी एक रेलगाडी गिरनार यात्राको रवाना हुई है। वह ट्रेन खास तीर्थों व शहरोंपर दो २ तीन २ दिन ठहरती है व गिरनारजीमें १५ दिन रहेगी। इस प्रकार एक दूसरी स्पेशल ट्रेन इस यात्राके लिये छोड़नेका प्रबंध होरहा है जिसके लिये कमसे कम २०० यात्रियोंकी मंजूरी मिलनेकी आवश्यक्ता है। जो भाई जिस स्टेशनसे बैठेंगे वहां गाडी खड़ी रहेगी व किराया थोड़ा लगेगा। गाड़ीमें ही जैन हलवाईद्वारा भोजन व प्यालका प्रबंध रहेगा। कहीं भी धर्मशालामें ठहरना न होगा परन्तु सब प्रबंध ट्रेनमें ही रहेगा तथा दो आदमियोंकी सीट एकको दी जायगी। ये सब बातें बी० बी० सी० आई० रेल्वेने स्वीकार की हैं। इस विषयका पत्रव्यवहार बा० रघुवीरप्रसाद जैन बिलराम दरवाजा, कासगंज (एटा)से करना चाहिये।

सर सेठ हुकमचन्दजीकी—पारमार्थिक संस्थाओंका १९ वां वार्षिकोत्सव ता० १२ जनवरीको फाइनेन्स मिनिस्टर रा० रा० मोतीलालजीके सभापतित्वमें जवरीबागमें खास मंडपमें सानन्द होगया उसमें छात्रोंके हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी संवाद हुए थे व छात्रोंको ४४६।।।) का तो इनाम बांटा गया था तथा अध्यापकोंको सुवर्ण अंगूठी व शालदुशाल भेट किये गये थे। छात्र संमेलनमें कुश्ती, टेनिस, लीख वक्तृत्व, समस्यापूर्ति आदिकी स्पर्धामें भी पारितोषिक दिये गये थे।

कंचनबाई श्राविकाश्रम—का वार्षिकोत्सव श्री० धर्मपत्नी रा० ब० सेठ हीरालालजीके सभापतित्वमें ता० ११ जनवरीको हुआ था इसमें भी श्राविकाओंके संवाद भाषण आदि हुए थे।

अंग्रेजी जैन गेजट—की २५ वर्षकी सिल्वर जुबिली मनाई जानेवाली है। तब इसके खातर ही सम्पादक श्री० मल्लिनाथजीको मानपत्र व थैली देनेका भी प्रबंध होरहा है।

देहलीमें—आगामी महावीर जयंती (चैत्र सुदी १३) जैनमित्र मंडलकी ओरसे ता० ११-१२-१३ अप्रैलको तीन दिनोंतक मनानेका अभीसे निश्चय होचुका है। दूसरे स्थानोंके भाइयोंको भी अभीसे इसके लिये तैयारी करते रहना चाहिये। यदि महावीरजयंती देहलीकी माफिक हरएक स्थानपर मनाई जावे तो महावीर जयंतीका जाहिर त्यौहार होजानेमें देर न लगेगी।

लाशपुर (टीकमगढ़)—में निकली हुई प्रतिमाओंकी वेदीप्रतिष्ठा माघसुदी ५को होगी।

वार्षिक मेले—श्री पालीताणामें माघ सुदी ५को व पावागढ़ तथा गजपंथाजीमें माघ सुदी १३-१४को वार्षिक मेले धूमधामसे होंगे।

कुड़चीमें जैन राजाका उल्लेख—एक मराठी लेखके आधारसे अभी 'जैनमित्र' में कुडचीका पूर्व इतिहास प्रकट हुआ है जिससे मालूम होता है कि वहांसे दक्षिण दिशामें ५-६ फर्लांगकी दूरीपर ९ फुट लम्बा व ९ फुट चौड़ा

एक शिलालेख मिला था जिसमें पुरानी कनड़ी भाषामें लेख था कि यहां ८०० वर्ष पहिले जैन मंदिर था, जो एक जैन राजाने अपनी माताकी इच्छानुसार बनाया था तथा उस समय बेलगाम, वेणुग्राम, रायबाग व कोल्हापुरमें भी जैन राजा राज्य करते थे। उस शिलालेखको मुसलमानोंने फोड़ डाला है। जैन कुटुम्बोंकी जमीने ३०० वर्षसे चली आती है उसके भी प्रमाण मिलते हैं।

भारत० दि० जैन परिषद्–की ओरसे आजकल पं० रवीन्द्रनाथजी न्यायतीर्थ व पंडित गुलजारीलालजी शास्त्री प्रचार कार्य कररहे हैं।

अन्धेकी शादीपर रज्जूलालजीको सख्त दण्ड–मैनपुरके रज्जूलाल मोदीने अपनी भानेजनकी शादी अन्धे लड़केके साथ करदी थी। उस केसका फैसला पंचोंके सुपुर्द हुआ था। उसका अभी पंचोंने फैसला देकर रज्जूलाल मोदीको (१०००)जुर्माना मंदिरकेतथा (८००) लड़कीके नामसे सिं० भगवानदासजी शास्त्री ललितपुरवालोंको वली बनाकर रजिस्टर्ड करावे तथा मुकद्दमेका पूरा खर्च भी रज्जू मोदी देवे।

मालथौन पाठशालाको–जिनवाणी सेवक ला० मुन्नीलालजीने (१०) मासिक आजन्म देना स्वीकार किया इससे वहां स्थाई कन्या पाठशाला चालू होगई है।

ब्र० गणीलालजी–अभी बड़वानीमें हैं व कुछ दिन वहां ही रहेंगे।

शिवहाराका रथोत्सव–जो मुसलमानोंकी ज्यादतीके कारण बंद रहा था उसके लिये परिषद्के मंत्री खूब प्रयत्न करते है व सफलताकी पूर्ण आशा है अर्थात् बयानाकी तरह यहां भी रथयात्रा शीघ्र ही निकलनेकी उम्मेद है।

वीर विद्यालय–सोनागिरिको आचार्यसंघके समय करीब (१००) सहायता मिली थी।

जल गया–झांसीमें बा० विश्वम्भरदास गार्गीय जैनका आर्टप्रेस सब स्टेशनरी सहित ता० १की रात्रिको अकस्मात जल गया जिससे आपको करीब (१५०००)का नुकसान होनेसे उनकी ९ वर्षकी कमाई धूलमें मिल गई है।

नउगीसराय (पो० खोदागंज, पटना)–में अभी मुन्नमल जैन मुफ्त औषधालय खुला है। जिसमें बाहरगाम भी एक आनेकी टिकट भेजनेपर हरएक दवाई मुफ्त भेजी जाती है।

"वीर"–पाक्षिकपत्र (परिषद्)का होलिकांक निकलनेवाला है। यह पत्र मेरठसे प्रकट होता है।

ब्र० छोटेलालजी–ललितपुरमें क्षेत्रपालमें सख्त बिमार थे। अब तबियत अच्छी है।

मध्य प्रांत–के दि० जैनोंमें अभी ४ अन्तर्जातीयविवाह हुए हैं।

आचार्य संघ–में अब ७ मुनि साथ२ विचरते हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं–

१. श्री १०८ आचार्य श्री शांतिसागरजी
२. " " मुनिश्री वीरसागरजी
३. " " मुनिश्री नेमिसागरजी
४. " " मुनिश्री चन्द्रसागरजी
५. " " मुनिश्री नमिसागरजी
६. " " मुनिश्री पायसागरजी
७. " " मुनिश्री कुन्थुसागरजी

इनके अतिरिक्त ८–१० ऐलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी भी संघमें रहते हैं। यह संघ अभी मथुरा होकर मोरेना पहुंचा है।

कुन्थलगिरि—का वार्षिक मेला मार्गशीर्ष सुदी १५को होगया। उस समय वहां ऐलक धर्मसागरजीने मुनि दीक्षा ले ली है।

मल्लीनाथ विद्यालय—शिरडशाहपुरकी ओरसे ब्र० कन्हैयालालजी सेठी प्रचारक नियुक्त हुए हैं।

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन कान्फरन्स—का १२ वां अधिवेशन जून्नेर (पूना) में ता० ८-९-१० फर्वरीको रा० सा० सेठ रवजी सोजपालके सभापतित्वमें होनेवाला है जिसकी तैयारी बड़े जोरोंके साथ होरही हैं। इस समाजमें भी अभी नये व पुराने विचारके ऐसे दो पक्ष पड़े हुए हैं इसलिये इसवार इस कान्फरन्समें अनेक प्रकारके झगड़े खड़े होनेकी संभावना दिख रही है। प्रेक्षक फीस दो रुपये हैं। पूना या तलेगांव स्टेशनसे मोटरद्वारा आया जा सकता है। स्थान भोजन आदिका उत्तम प्रबंध होरहा है।

"जैन महिलादर्श"—का पोष-माघका संयुक्त अंक दो चित्र व ५० पृष्ठोंके २०-२५ लेखोंसे सुशोभित माघ सुदी १ को प्रकट होगा। यह पत्र "आदर्श निबन्ध" नामक उपहार भी देता है। सम्पादिका पंडिता चंदाबाईजी आरा हैं व सूरतसे हमारे द्वारा ही प्रकट होता है। वार्षिक मूल्य ३) है 'दिगम्बर जैन' के पाठक "दर्श" के ग्राहक भी अवश्य होजावें।

अतिशयक्षेत्र बड़गांव निंबालकर—(पूना) का वार्षिक रथयात्राका मेला ता० २-३ फर्वरी माघ सुदी ४ व ५ को धूमधामसे होगा। यह स्थान नीरा स्टेशनसे १० मील व बारामती स्टेशनसे १५ मील है।

जालंधर छावनी—में जैन बाल सभा पुनः चालू होगई है और इसका सालाना जलसा महावीर जयन्तीके सायर बहुत ही तैयारीके साथ करनेका प्रबन्ध होरहा है।

महाराष्ट्र मारवाड़ी जैन सम्मेलन—ता० ७ फर्वरीको जुन्नेरमें श्वे० मू० जैन कान्फरन्सके पहले२ मिलेगा।

बेरिस्टर चंपतरायजी—साहब ता० ११ फर्वरीको विलायत रवानः होंगे, अभी बम्बईमें हैं। पता—हिराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंग तारदेव—बम्बई।

દાહોદમાં—ઠંડી તો વિરૂદ્ધ છે છતાં યુવકોએ બાલુભળ આયામશાળા સ્વપ્રયત્નથી ચાલુ કરી છે.

અમદાવાદની—શે. મા. દિ. જૈન બોર્ડિંગમાં મકરસંક્રાંતિ (ઉત્તરાયણ) ને દિને વિદ્યાર્થીઓએ સુપ્રી. પંડિત છોટેલાલજીના પ્રમુખપદે સભા કરી પતંગો ઉડાવવાના ગેરફાયદા જણાવી તે ન ઉડાવવાનો ઠરાવ કર્યો હતો તથા તે દિને બોર્ડિંગના કમ્પાઉન્ડની ઉત્તમ સફાઈ કંઈ પણ સંકોચ વગર કરી હતી.

અંકલેશ્વરમાં—સુરત અસહકારી દિ. જૈન આગેવાન શેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધી તથા તેમના પત્ની માણેકબાઈ એ બન્ને જણ ભરૂચ જીલ્લા સ્કુલ બોર્ડમાં સભાસદો તરીકે ચુંટાયા છે. વધાઈ.

સોજીત્રા શ્રાવિકાશ્રમ—ને શ્રી. નાની બ્હેન અને મેના બ્હેનના પ્રયાસ ને ભ્રમણથી રૂ. ૮૭)ત્ર માંડવી, ૭૯) બુહારી, ૨૫ા મઢુબા, ૪૧) સુરત, ૪૪ાા અંકલેશ્વર, ૧૪૯) આમોદ અને ૧૦) સાદરાથી એટલે કુલ્લે ૪૪૧ાાાત્ર ની સહાયતા હાલમાં મળી છે. આ શ્રાવિકાશ્રમ હવે ઉન્નતિપર આવતું જાય છે.

हमारी अवनति कैसे हुई?

(ले०-पं० परमानन्दजी न्यायतीर्थ-दमोह।)

आज वीर धर्मको धारण करनेवाला जैनसमाज क्यों इसप्रकार मुर्दा रूपमें परिणत होगया है? जब हम इस बातपर ध्यान देते हैं तो उसका यही उत्तर ज्ञात होता है कि हम वीर प्रभुके कल्याणमय उपदेशको भूल गये हैं। उनके बताये हुये मार्गका अवलम्बन हमने बिलकुल छोड़ दिया है। यही नहीं, किन्तु अपनी मूर्खताके कारण उसे अन्यथा रूपमें भी धारण करलिया है। हमें प्राणीमात्रसे वात्सल्य रखना चाहिये किन्तु हम अपने एक भाईसे भी घृणा करते हैं। परोपकारकी जगह जरासी बातमें दूसरेका सर्वस्व खोनेको तैयार हैं। आत्मोत्थानकी जगह अपनी खोटी प्रवृत्तियोंसे अवनतिके गर्तमें पड़ रहे हैं। ब्रह्मचर्यकी जगह अधिक भोगाभिलाषी बन रहे हैं। आत्मसंयमी होनेकी जगह इन्द्रियलोलुपी होगये हैं।

भले ही यह समाज धनशाली रहो किन्तु उसी धनके दुरुपयोगसे वह समाज आज दीन है। भलेही इस समाजमें चतुरता अधिक हो किन्तु उस चातुर्यका उपयोग मात्र कषायोंकी पुष्टिमें होनेके कारण मूर्खसे भी मूर्ख है। भले ही यह समाज बड़ा धर्मात्मा है किन्तु अन्तरंगकी कुटिलतासे आज यह बड़े पापोंके फल भोगता हुआ नजर आता है। जैनसिद्धान्तके रहस्य सारमय व अत्यन्त गूढ़ हैं किन्तु हमारे सिद्धान्त (उद्देश) तुच्छ व निस्सार हैं।

परोपकार और आत्मप्रतिष्ठाके लिये कारणभूत धनके द्वारा धनकुबेर होनेपर भी स्वार्थी और प्रतिष्ठाहीन हो रहे हैं। क्योंकि वे धनकुबेर धनको ही आदर्श मानकर मात्र धनकी प्राप्तिसे ही अपनी जीवनयात्रा सफल समझते हैं और प्रत्येक वस्तुकी जांच धनकी कसौटीसे करते हैं। अपने पुत्र व पुत्रीका लग्न वे धनके ही साथ करते हैं, दाम्पत्य यानी पति पत्नीके योग्य संबंध व अवस्था पर ध्यान नहीं देते हैं। मित्रता भी वे धनवानसे ही करते हैं किन्तु ईर्षाके द्वारा अन्तरंग कलुषित होनेसे जरासी बातमें एक दूसरेके प्रतिद्वन्द्वी बन जाते हैं। वे अपना तन और मन धनके ही संचयमें न्योछावर करते हैं इसीलिये वे अन्य योग्य शक्तियोंको अपनेमें व्यक्त करनेके लिये प्रायः अशक्त रहते हैं। उनकी इच्छाओंका अन्त संतोषयुक्त नहीं रहता इसीलिये वे सुखका अनुभव नहीं कर सकते हैं। धनीसे भी धनी पुरुष जिस समय आत्मोत्थान और परोपकारसे चूकता है उसी समय निर्धन होजाता है। क्योंकि मानवीय आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये पूर्ण रूपसे साध्य साधन बन जाना तथा अपने मान्य उद्देशकी पूर्ति सफलता पूर्वक करना यही सम्पत्तिका अर्थ व कार्य है।

हमारे व्यवहार दिन प्रतिदिन नीचे होते चले जा रहे हैं। विवाहके लिये योग्य संबंध जुटानेमें हम जितनी लापरवाही करते हैं उससे भी

अधिक लापरवाही सन्तानके पैदा करनेमें व उससे भी अधिक लापरवाही उसके लालन पालनमें व उससे भी अधिक लापरवाही उसके शिक्षणमें व योग्य बनानेमें करते हैं। जन्मसे लेकर मरण तककी क्रियायें धर्मसे संकलित नहीं होतीं। लोकरूढिकी अधिकताके कारण अनेक व्यर्थके नेग दस्तूर होते हैं किन्तु शिक्षाके अभावसे षोडशसंस्कारोंमेंसे यथासाध्य संस्कार भी नहीं किये जाते। गृहस्थीके जिन नेग-दस्तूरोंमें धर्मकी गन्ध नहीं है उनका होना व षोडशसंस्कारोंका न होना एक स्त्रीजातिके शिक्षित न होनेका भी फल है। विवाहके लिये हजारों आदमीके आदरसत्कार व भोजन-पानकी व्यवस्था कर लेना एक बड़े दरजेकी खटपट है किन्तु जैसे तैसे उसका मिलान मिला लेने पर भी अज्ञानता और धर्मप्रेमके अभावसे जैनविधिपूर्वक लग्न करा लेना उससे भी कई गुनी खटपट समझकर जैनविधिपूर्वक लग्न नहीं कराया जाता है! बरातियोंके व अतिथियोंके सत्कार व ठहरानेके लिये बाग बगीचे फल फूल गाजे बाजे व गमलोंका इन्तजाम करना सुलभ समझा जाता है किन्तु विवाहोत्सवमें इकट्ठे हुये जनसमुदायको १ धर्मोपदेशक द्वारा धर्मका व्याख्यान करा देना, समाजमान्य किसी नये कार्यकी नींव डाल देना, गरीबोंकी अवस्था पर विचार करना, अपनी व समाजकी उन्नतिपर विचार करना, स्थानीय पाठशाला आदि संस्थाओंका निरीक्षण करके उन्हें सचेतन कर देना इत्यादि काम शक्तिसे बाहर समझे जारहे हैं। ऐ जैनसमाज! तुझे ध्यान रहे कि तेरा सर्वस्व इस क्रमसे नाश होगा कि तुझे उसका जरासा भी ध्यान न होगा।

पाठशाला, कन्याशाला, विद्यालय, सभा कमेटी आदिके अधिकारी बननेको हरएक भूखा है। प्रत्येक पुरुष अधिकारी व नेता बनना चाहता है और बन जाता है। किन्तु उस अधिकार या नेतृत्वशक्तिका निर्वाह करनेको वह अपने तन, मन, धन व समयका आवश्यक योग न देनेके कारण या न देसकनेके कारण तथा उस पदकी अयोग्यतासे अपने मंत्रित्व और सभापतित्व आदि अधिकारके साथ उस धार्मिक संस्था या कमेटीको दोषी बना अन्तमें सर्वनाश कर डालता है।

विद्यालयोंमें प्रतिवर्ष नई भर्ती अधिक होती है। किन्तु विद्यालयके उद्देशको सफल करनेवाले विद्वान उस विद्यालयसे नहींके बराबर निकलते हैं। जब उनमें पढ़नेकी योग्यता आती है तब उन्हें पांडित्यकी आफत लग जाती है और वे उस विद्यालय या गुरुकुलसे स्वर्णका अवसर छोड़ अन्यत्र चले जाते हैं। विद्यालयकी ओरसे उन योग्य विद्यार्थियोंको योग्य अवधि तककी रोकके लिये कोई अमल रूप खास नियम नहीं होता जिससे कि वे अपनी मनकी चंचलताके वश हो शीघ्र उस विद्यार्थी अवस्थाको न छोड़ें और किसी खास विषयमें पूर्ण पारंगत बन सकें। प्रतिवर्ष नयेर विद्यार्थियोंकी भरतीसे प्रबन्धमें अधिक अड़चन पड़ती है। खर्चा अधिक बढ़ जानेसे आवश्यक खर्चमें भी कमी कर दी जाती है

इसलिये पढ़ाईमें अड़चन पड़ती है और पुराने व्युत्पन्न बननेवाले योग्य ऊँची कक्षाओंके विद्यार्थियोंकी सुविधा नहीं रह सकती है। इन्हीं घटनाओंके धक्केके मारे बड़ेसे बड़े और पुरानेसे पुराने विद्यालयोंकी नींव हिल गई है और वे उद्देश्य च्युत हो चुके हैं। इस नये विद्यार्थियोंकी अपेक्षा एक पुराने तथा उच्च कक्षाके छात्रकी सुविधा बढ़ाकर उस विद्यार्थीके तन व मनको बलवान बनानेमें अनेक सुविधायें मिलाकर खर्च द्वारा उन्हें कलाकौशल्य सिखाकर काल क्रमानुसार आवश्यक विद्याओंका अभ्यास कराया जाय। कोई ऐसा क्रम बांध दिया जाय जिससे वे अपने पढ़े हुये ग्रन्थोंकी पुनरावृत्ति करके उन ग्रन्थोंके विषयमें सभाचतुर बन सकें। भलेप्रकार उनकी देखरेख की जाय। उनके दोषोंकी छानबीन की जाय। उनको शिक्षा देनेवाले योग्य शिक्षकोंका समावेश किया जाय। और जो योग्य हैं उन्हें समाज आदरकी दृष्टिसे देखे। क्योंकि गुणीका आदर न होना भी हमारा अवनतिका एक गण्य कारण है।

उच्च विद्यार्थी ग्रन्थोंके अध्ययनके साथ प्रतिदिन भिन्न भिन्न व्यापारवाली दुकानों पर नियमसे एक प्रहर या खास२ समय तक उस कार्यको सीखें। दुनियाके लिये आवश्यक नई नई वस्तुओंका निर्माण करना सीखें। ऐसे क्रमसे विद्यालयोंके उद्देश सफल होंगे। समाजकी आवश्यक्तायें पूर्ण होंगी। और विद्याध्ययनका सफल उद्देश इस लोक संबंधी जीवनको सुखमय बनाते हुये अन्तमें आत्मकल्याण करना भी इसी क्रमसे हो सकेगा। उन उच्च कक्षाके विद्यार्थियोंके शिक्षक उनके जीवन निर्वाहके विषयमें व उसमें प्रवृत्ति करनेमें सलाह दें। योग्य विद्यार्थी जब समाजमें काम करने लग जांय और कारणवश जब उनकी आजीविकामें रोड़ा अटक जाय तो नियमित समय तक वे उस विषयमें कमजोर न हो जावें इसलिये व्युत्पन्न बनानेकी गरजसे जिस विद्यालयके हैं उसीमें वे रक्खे जांय। और इस नियमका सम्बन्ध भी इस नियमसे रक्खा जाय कि वे विद्यार्थी अपनी आयका कुछ अंश उस विद्यालयको कर्ज अदा करनेके रूपमें नहीं किन्तु सहायता रूपमें देते रहें। इस क्रमके पालन न होनेसे आज शिक्षाका रूप बिगड़ रहा है।

हम कुटुम्बका निर्वाह करना नहीं जानते। पुत्र और पुत्रीकी उत्पत्तिमें मोर कौड़ीकी तौल लगाते हैं। असहाय विधवा जोकि एक प्रकारके दीक्षित रूपमें है उनका आदर नहीं करते हैं। बालविवाह और वृद्धविवाहको रोक भी जानसे नहीं करते हैं। जैन सिद्धांतका अध्ययन अपनी संतानको नहीं कराते हैं। अपनी आजीविकाके मार्गमें सत्यता और विश्वासका मिलान नहीं करते हैं। नियमित ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम पालन नहीं करते हैं। आत्मीक गुणोंकी मोलकी तौलका अन्दाज अपने हृदयमें नहीं लगाये हुए हैं। इत्यादि कारणोंसे ही हमारी अवनति हुई है। हमें चाहिये कि हम अवनतिके मार्गको छोड़कर उन्नति पथमें अपना कदम रक्खें।

राजयक्ष्मा (तपेदिक) और वर्तमानकी नवयुवक समाज।

(ले०—आयुर्वेदाचार्य पं० सत्यंधरजी जैन वैद्य—छपारा)

पाठको ! वर्तमान संसारमें ऐसा कुछ विपरीत परिणमन होरहा है जो कि नहीं होना चाहिये। जैसे कि भारतवर्षमें ज्यों २ डाक्टर वैद्य हकीमोंकी वृद्धि होरही है त्यों २ अनेक प्रकारके रोगोंकी वृद्धि होरही है। इसके मुख्य कारण हमारे कृत पूर्व अशुभ कर्म तो हैं ही, किन्तु बाह्य कारण उसका हमारे मिथ्या आहार विहार तथा ब्रह्मचर्यव्रतका भंग है तथा कई ऐसे अनुचित तथा अन्यायरूप कार्य हैं कि जिनके कारण ही हमारे शरीरमें नानाप्रकारकी व्याधियां उत्पन्न होरही हैं।

यदि उन कारणोंको हम दूर नहीं करेंगे तो हम संसारमें इस शरीरसे कुछ भी कार्य संपादन नहीं कर सके। अतएव हमको उस बातका परिज्ञान होजाना चाहिये कि वास्तवमें हमारा रोग क्या है और उस रोगका भी निदान क्या है तथा उस रोगके दूर करनेका उपाय क्या है? यदि हम लोगोंने अपने शारीरिक रोगकी परीक्षा करके उनकी चिकित्सा नहीं की तो हम शरीरसे कुछ भी धर्म साधन न कर सकेंगे क्योंकि धर्मका प्रधान साधन यह शरीर ही है "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" इत्यादि।

यहांपर मैं शरीर संबंधी अनेक रोगोंकी गौणता रखकर केवल एक रोगका ही वर्णन करूंगा, जो कि लेखका शीर्षक है। अर्थात् राजयक्ष्मा (तपेदिक) यह रोग पहिले बहुत कम होता था और इस पंचम कलिकालमें अधिकतासे देखा जाता है। इसका कारण यही है कि पहिले हमलोग शारीरिक क्रियाओंके करनेमें दत्तचित्त रहते थे तथा योग्य क्रियाएं ही करते थे। अब इस कालमें ऐसे २ अनुचित कार्य किये जाते हैं जिनको सुनकर कलेजा कांप जाता है। और उन्हीं क्रियाओंके करनेसे ही ऐसे २ दुष्ट रोग उत्पन्न होते हैं। तथा उत्पन्न होकर असाध्य होजाते हैं जिससे कि छुटकारा पाना बहुत ही कठिन होजाता है।

इस समय वास्तविक दृष्टिसे देखा जाय तो वर्तमान समाजमें राजयक्ष्मा रोगकी उत्पत्ति होनेका प्रधान कारण है एक स्पर्श इन्द्रियके विषयकी अधीनता अर्थात् अति मैथुन जैसा कि आयुर्वेद ग्रन्थोंमें बतलाया है—

अति व्यवायिनो वाऽपि क्षीणे रेतस्य नंतराः।
क्षीयन्ते धातवः सर्वे ततः शुष्यति मानवः॥

अर्थात्—मैथुन कर्म करनेसे वीर्य क्षीण होजाता है और वीर्य क्षीण होजानेसे रस—रक्त—मांस—मेद—मज्जा—हड्डी—शुक्र ये सात धातुएं क्षीण होने लगती है और उनके क्षीण होनेसे मनुष्य सूख जाता है अर्थात् तपेदिक होजाता है।

यद्यपि तपेदिक होनेके और भी कारण हैं परंतु यहां केवल अति मैथुनपर ही विचार करूंगा। और वास्तवमें प्रधान कारण है भी यही। कारण कि कोई भी बीमारी जब तक शुक्र—

धातुमें प्रवेश नहीं करती है तब तक वह साध्य रहती है। और जब वह शुक्र गत होजाती है तब वह बीमारी असाध्य होजाती है और नहीं निकल सकती। जैसे कहा है—

"रसरक्तगतः साध्यः मांसमेदोश्च गतयः।
अस्थिमज्जगतः कृच्छः शुक्रस्थस्तु न सिध्यति॥

अर्थात्—जब तक कोईसा भी रोग रसधातु—रक्त धातु—मांस धातु—मेद धातु इन चार धातुओं तक प्रवेश करता है, तब तक तो वह जल्दीसे अच्छा होजाता है। और जब वह हड्डी और मज्जामें प्रवेश करजाता है तब वह रोग थोड़ी कठिनतासे निकलता है। और जब वह रोग ७वीं शुक्र धातुमें प्रवेश करता है तब फिर वह रोग असाध्य होजाता है अर्थात् वह रोग उस शरीरसे नहीं निकल सकता।

इसीको डाक्टर लोग नं० १ तथा नं० २ और नं० ३ कहते हैं। अर्थात्—नम्बर १का साध्य नम्बर २ का कठिनतासे साध्य और नम्बर ३का असाध्य इसप्रकार व्यवहारसे कहते हैं। अब मैं राजयक्ष्माका स्वरूप बताकर उसकी उत्पत्ति तथा उसका निराकरणका उपाय बताऊँगा।

हमारी समाजमें ब्रह्मचर्यका पालन ठीक तौरसे नहीं होता। बहुतसे लड़के तथा बहुतसी लड़कियां कुमारावस्थामें ही शक्तिका नाश, अप्राकृतिक—दुराचार आदि करनेका दुरभ्यास कर लेते हैं जिससे कि उनका वीर्य परिपक्व न होकर कच्ची अवस्थामें ही निकल जाता है तथा वीर्य निकल जानेसे नपुंसक तक होजाते हैं।

जो सज्जन इस दुरभ्याससे बच गये वो विवाह होनेपर अति मैथुन करते हैं। चाहे वह कन्या रजस्वला हुई हो या न हुई हो उसका थोड़ासा भी विचार न करके गर्भाशयकी नलीको बिगाड़ देते हैं।

चाहे स्त्रीको बुखार आता हो, चाहे खांसी हो, चाहे जुखाम हो या कुछ भी हो, अधिकांश जन बिना विषयके नहीं मान सके, क्योंकि उन्होंने तो स्त्रीको एक मात्र विषयका साधन ही समझ रक्खा है। इस प्रकारकी विषयाधिक्यता ही अनेक रोगोंका साधन बन जाती है। यदि भाग्यवश ऐसी ही कच्ची अवस्थामें गर्भाधान होगया तब तो और भी कठिनता होजाती है।

प्रायः ऐसी विषयाधिक्यतासे प्रथम तो वह स्त्री तथा वे महाशयजी दोनों कई रोगोंके घर बन जाते हैं। और यदि नहीं बने तो एक संतान होनेके बाद तो अवश्य ही रोगोंके ग्रास बन जाते हैं। ऐसी हालतमें स्त्रीको प्रसूतज्वर होजाता है या जीर्णज्वर होकर तपेदिक होजाता है या मंदाग्नि होजाती है अथवा जिन्दगी भरके लिये ऐसी निकम्मी और कमजोर होजाती है जिससे कि उस बेचारीको जिन्दगीभर दुख २ में जाती है और अपने जीवनमें सुख कभी भी नहीं देख सकती। तथा महाशयजीको भी प्रमेह या तपेदिक वगैरह ऐसे असाध्य रोग होजाते हैं जिनसे छुटकारा मिलना कठिनसा होजाता है तथा ऐसी बीमारी खाते २ दोनों स्त्री पुरुषोंको

यदि साल छः महिना लग गया तब तो हमारे महाशयजी बहुत ही जल्दी अपने बुढ़े माता पिताको दुखी कर संसारसे चल बसते हैं। तब विचारी वह भी विधवा होकर और दुखिनी हो जाती है। इस प्रकारसे हमारी समाजमें क्या समस्त भारतवर्षमें सैकड़ों हजारों नवयुवकोंकी अकालमृत्युएं होरहीं हैं जिससे विधवाओंकी संख्या बढ़ रही है तथा नवयुवकोंकी संख्या घट रही है और जो नवयुवक हैं उनकी क्रियाएं आचरण दुरुस्त नहीं--ब्रह्मचर्यका पालन नहीं। अतएव कमजोर होते चले जाते हैं। जिससे सन्तान भी प्रतिदिन कमजोर होती चली जाती है। इससे ज्ञात होता है कि समाजके मरणका समय शीघ्र ही है, दौड़कर आरहा है।

अब हमको यदि समाजकी वास्तविक दशा सुधारना है तो हमको चाहिये कि जबतक हमारी कन्या रजस्वला न होजाय तबतक उसका विवाह न करें और जब वह रजस्वला होने लगे तभी उसको एक अच्छे लड़केके साथ सम्बंध करें जो कि शरीरसे स्वस्थ हो। तथा लड़कोंके पिताका वह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चोंको २४ घण्टे अपनी दृष्टिमें रक्खें और खासकर कुमारावस्थामें तो बहुत जरूर ही। ताकि वे बच्चे कुचेष्टाएं न कर सकें--कुसंगतिमें नहीं पड़ सकें। और जब योग्य होजांय तब उनका योग्य कन्याके साथ विवाह करदें। विवाह होनेके बाद नवयुवकोंको चाहिये कि विषयकी आधिक्यता न करें। स्त्री विषयकी सामग्री नहीं है। विवाहका उद्देश कुछ विषयसेवन करना ही नहीं है, किन्तु संतान पैदा करना ही विवाह करनेका प्रधान उद्देश है, सो संतान पैदा करनेके लिये प्रतिदिन मैथुन करनेकी आवश्यक्ता नहीं है। जब स्त्री रजस्वला हो तो ४थे दिन शुद्धि होनेके बाद पहिला दिन छोड़कर स्त्रीसे विषयसेवन करना चाहिये। सो भी १० दिन तक, बाद नहीं। क्योंकि गर्भाशयका मुख १६ दिन तक खुला रहता है सो ४ दिन तक तो रक्तस्राव ही होता रहता है और १ दिन शुद्धि स्थापनके लिये। अब बचे १० दिन सो १० दिन में ही यदि उसका वीर्य परिपक्व है तो गर्भ धारण होजायगा। इसके बाद गर्भाशयका मुख बंद हो जाता है। अतएव बाद विषय सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि उस समयका वीर्य व्यर्थ जाता है। इस प्रकार जो पुरुष तथा स्त्रीके आचरण रहेंगे तो न कभी पुरुष ही रोगसे पीड़ित होगा और न स्त्री ही रोगसे पीड़ित होगी। और संतान भी पुष्ट होगी तथा अकाल मृत्यु भी न होगी। और विधवाओंकी संख्या भी न बढ़ेगी। तथा समाजमें अनेक प्रकारके अनाचार भी न होने पायगे। आशा है हमारी नवयुवक समाज चेतेगी और यदि उसने परिस्थिति संभाल ली तो अवश्य ही समाजकी उन्नति उन्नति होगी अन्यथा नहीं। इतिशम्।

श्री नेमिनाथ और राजुल।

(रचयिता—पं० गुणभद्रजी जैन, कलोल।)

नहीं करेंगे नेमिनाथ पाणिग्रहण।
सब आडम्बर छोड़ गये रैवतक पर ॥
राजुलने यह समाचार ज्यों ही सुना।
औंधे मुख हा गिरी धरा पर कष्टसे ॥

गिरी गगनसे दिव्य हाय सुर अंगना।
अथवा है आश्रय विहीन कोमल लता ॥
घेर लिया तत्काल उसे अति मोहने।
नहिं तो दुखवश वह अनर्थ करती बड़ा ॥

दोनों थे दृग बन्द हस्त मस्तक तले।
खड़े हुये थे गुरुजन भी सब सामने ॥
किया गया उपचार वेग बहु शांतिमें।
उठी बालिका हाय उरस्थल कूटती ॥

थी उसको परवाह न अपने वस्त्रकी।
आंखोंसे अविराम अश्रु थे वह रहे ॥
सुनकर उसका रुदन वज्र भी रो उठे।
होता करुणोत्पादक रमणीका रुदन ॥

हा! हा!! हा!!! छिनगया हृदयका हार मम।
बतलाओ यदुवंशचन्द्रमा है कहां? ॥
आंखोंमें है नीर हृदय पर जल रहा।
बड़वानल क्या आज समाई चित्तमें ॥

आशा थी लवलेश स्वप्नमें भी नहीं।
हृदय अचानक कार्य क्रूर क्यों होगया ॥
चली रैवतक ओर भूमिको सींचती।
गिरपड़ती थी कभी भूमिपर शोकवश ॥

देखा उसने स्वच्छ शिलापर नाथको।
मानों वह साक्षात् पुण्यके स्तम्भ थे ॥
सह न सकी वह सती शोक आवेगको।
छिन्नलता सम शीघ्र चरण-तट गिर पड़ी ॥

राजुल—

नाथ कहूं क्या व्यथा आज निज चित्तकी।
अन्तर्यामी सदा सभी तुम जानते ॥
तो भी करता विवश मुझे अन्तःकरण।
व्यथा सुनाने हुई उपस्थित सामने ॥

निरपराधिनी, नाथ! व्यर्थका कोप है।
अबलाको दुख देना क्या तुमको उचित ॥
तीन लोकके एक तुम्हीं आधार हो।
दे सकते फिर क्यों मुझको आश्रय नहीं ॥

दासीसे अपराध हुआ यदि भूलसे।
क्षमादान दो या प्रचण्ड तुम दण्ड दो ॥
करती हूं करजोड़ नाथ मैं प्रार्थना।
चूर चूर होरहा हृदय हे हृदय धन ॥

पशुओंपरकी दया, दया मुझपर नहीं।
मैं तो हूँ हे नाथ! तुम्हारी संगिनी ॥

नेमिनाथ—

निरपराधिनी सदा, सदा तुम हो प्रिये।
नहीं किसीके भी प्रति मेरा कोप है ॥
सुख दुख दाता नहीं किसीका मैं कभी।
मिलते हैं सुख दुःख कर्म अनुसार ही ॥

क्या मुझको अधिकार तुम्हें मैं दंड दूं।
आश्रय तुमलो आज त्रिलोकी नाथका ॥
यह संसार असार सार कुछ भी नहीं।
रहता इष्ट मिलाप कभी दो चार दिन ॥
पड़कर प्राणी हाय! मोहके जालमें।
पाते अगणित कष्ट बहुत विधि विश्वमें ॥

राजुल—

रोती ठण्डी आह भरे तब किङ्करी।
कर दुखिनी क्यों मुझे सौख्य तुम चाहते ॥
वधु-कुलमें हे नाथ! जन्म मेरा वृथा।
विधिने क्या लिख दिया हाय! इस भालमें ॥
कौन पूर्वके प्रबल-पापका दण्ड यह।
भोग रही हूँ नाथ! अधिक रोती हुई ॥
नाथ! तुम्हारे विपुल विरहसे हूं दुखी।
नलिनी ज्यों रविके वियोगमें म्लान हो ॥
करे प्रार्थना बार बार वायु महा।
होती लेकिन नहीं प्रफुल्लित पद्मिनी ॥
देता है सबको प्रकाश रवि नित्य ही।
अन्धकार है नाथ तुम्हारे बिन यहां ॥
करते हैं स्पर्श-गगन जिसके महल।
धन जनसे जो अतिशय करके व्याप्त है ॥
वही द्वारिका शून्य विपिनवत भासती।
जिसमें प्रभुवर सभी मनुज मूर्च्छित पड़े ॥
बाल वृद्ध क्या और युवा सुकुमारियों।
सभी चाहते तुम्हें स्वजनसे भी अधिक ॥
उनके प्रति यह घोर उपेक्षा भाव क्यों।
नर-पुङ्गवको श्रेष्ठ नहीं जो स्वप्नमें ॥

नेमिनाथ—

भरना ठण्डी आह सुन्दरी व्यर्थ है।
परको दे मैं दुःख सौख्य नहिं चाहता ॥
वधु-कुलको तुम करो धर्म करके सफल।
लिखा लेख मिट जावे जिससे भालका ॥
इष्ट जनोंका विरह विश्वमें है नियत।
उससे होना दुखी जीवकी मूर्खता ॥

राजुल—

मृदु गोदीमें ठौर तुम्हें जिसने दिया।
देख वदन आनन्द मानती थी विपुल ॥
वह जननी हे नाथ! होरही अधमरी।
उठो उठो दो वेग उसे चल सान्त्वना ॥
उसका होना और न होना एकसा।
पुण्यजनोंको जो न धैर्य देते कभी ॥
सोचो अपने चित्त प्रभू उपकारको।
करो अवज्ञा नहीं मात आदेशकी ॥
कहलाओ मत यों कृतघ्न घनश्याम अब।
हार गये श्रीकृष्ण मनाकर भी तुम्हें ॥
सद्वचनोंपर आप लक्ष्य देते नहीं।
जनक तुम्हारे नाथ! अधिक शोकार्त्त हैं ॥
पटक दिया है उन्हें शोकके गर्त्तमें।
रहते भी आराम सौख्य उनको नहीं ॥
तुम बिन भाती नहीं विश्वकी संपदा।
भार रूप वे जान रहे हैं देहको ॥
रोते उनके अरुण नेत्र दोनों हुये।
माग रहे हैं मौत किन्तु आती नहीं ॥
देना उनको कष्ट आपको इष्ट क्या?
अटक रहे अपकीर्ति नाथ कल्पान्त लों ॥

नेमिनाथ—

अक्षरशः सब सत्य कहे बिम्बाधरी।
कर विचार यह इन्द्रजाल संसार है॥
कितनोंकी मृदु गोद मध्य खेला नहीं।
नहीं खेलता रहा किसीकी गोदमें॥
किसकी माता और कौनका पुत्र है।
सघन वृक्षतल बैठे हैं सब पथिकजन॥
पाके अपना समय बिछुड़ते हैं विवश।
करना मेरे लिये शोक सब व्यर्थ है॥
समझो! समझो!! समझ चुकी सब नाथ मैं।

राजुल—

हाय भाग्य ही आज अन्यथा होरहा॥
बंधनसे सब प्राणि मुक्ति हों इष्ट था।
छोड़े जाते क्या न आप आदेशसे॥
होते दोनों कार्य इष्ट क्या हानि थी।
जय रवसे हे नाथ! दिशायें गूंजती॥
छूटे हैं नहिं मंगलीक कंकण अभी।
सारा ही सामान पड़ा तैयार है॥
मुदित करो सबको करके पाणिग्रहण।
नाथ यही बस तुच्छ प्रार्थना मानिये॥

नेमिनाथ—

नहीं तुम्हारी कभी उचित यह प्रार्थना।
होती यदि यह योग्य मान लेता अभी॥
बालकके भी वाक्य सुन्दरी योग्य हों।
सादर उनको नित्य मानते विज्ञजन॥
मुक्ति रमाका शीघ्र करूं पाणिग्रहण।
हृदयेश्वरि! है हृदय मध्य यह भावना॥
कृत्रिम पाणिग्रहण नहीं अब मैं करूं।
जिसका है सम्बन्ध सदा ही देहसे॥
इस बिवाहसे हृदय अधिक भयभीत है।
होता सुख-प्रद कभी अग्नि स्पर्श क्या?॥
एकत्रित पशु किये गये जिसमें अहो।
प्रस्तुत थे हा वधिक हाथ लेके छुरी॥
यह विवाह ही प्रिये! दुःखका हेतु है।
करना जिसमें पड़ा प्रथम आरम्भ यह॥
मध्य और अवसान कौन मुखसे कहूं।
विष वृक्षोंमें नहीं लगेंगे आम्र फल॥

राजुल—

मिलती है प्रभु पूर्व पुण्यसे कामिनी।
विष वल्लरि सम नाथ उसे तुम छोड़ते॥
नहीं जानते आप नारियोंके सुगुण।
करते हो वैराग्य भरी बातें सभी॥
तंत्री सम वे मधुर शब्द नित बोलतीं।
हैं प्रसून सम मृदुल अंग जिनके सदा॥
रतिसे भी वे अधिक सुन्दरी विश्वमें।
भरे हुये हैं सुगुण स्वच्छ सर्वांगमें॥
सुखदायिनि हैं अन्य बहुतसी वस्तुएँ।
ललना सम नहिं सौख्यदायिनी एक भी॥
उनके सारे अंग अधिक शोभा धरें।
होजाता है चलित देख मुनिमन जिन्हें॥
हैं नितम्ब स्थूल जघन जिनके वृहद्।
पतली जिनकी कमर अधिकतर सोहती॥
कुच सुवर्णके कलश विश्वविख्यात हैं।
वदन चंद्रमा सदृश बिम्बफल ओठ हैं॥
हरिणी सम हैं चपलनेत्र जिनके बड़े।
कोमल प्यारे केश नागसे शोभते॥
लक्ष्मी ही साक्षात् मानिये कामिनी।
लखकर जिनके अंग हर्ष होता विपुल॥

शिवने अपने अंग मध्य धारण किया।
ब्रह्मा उसके दास देखलो होगये ॥
जग भी लेता प्रथम नाम उनका यहां।
बोले सीताराम राधिका कृष्ण ही ॥
गृहः कार्योंमें दक्ष अधिक होती प्रभो!
नारी सचमुच एक सदन-श्रृंगार है ॥
मानवको सब काल धैर्य देती वही।
उस बिन सुन्दर गेह प्रेत आवास है ॥
पृथिवीसे भी क्षमाशील वे हैं अधिक।
शशिसे दूनी सदा गात्रकी कांति है ॥
पार्वतीसे बढ़ा हुआ सौभाग्य है।
निज स्वरूपसे जीत रहीं रति रूपको ॥
ऐसी वनिता त्याग बसें जो विपिनमें।
उनसा कोई मूर्ख न होगा लोकमें ॥

नेमिनाथ—

जिनका है आसक्त चित्त बहु फासमें।
उन्हें भले ही योग्य जँचे ये भामिनी ॥
योगीजन तो उसे नागिनी मानते।
रहते हैं नित दूर समझ कल्याण निज ॥
नारीका संसर्ग सर्वदा दुःखदा।
होते सद्गुण नष्ट सभी संसर्गसे ॥
करतीं मायाचार चित्त स्थिर नहीं।
नहीं मानतीं किये हुये उपकारको ॥
काट डालतीं शीघ्र कीर्तिकी वल्लरी।
फंसजाता जो मनुज वल्लभा प्रेममें ॥
धो बैठे वह हाथ सौख्य वैराग्यसे।
लगा बैठतीं ये कलङ्क निज वंशमें ॥
करतीं नहिं विश्वास दूसरोंका कभी।
रहे प्रयोजन उन्हें नित्य निज स्वार्थसे ॥

मरजाना है योग्य घोर संग्राममें।
जलजाना है योग्य प्रज्वलित अग्निमें ॥
तीन कालमें योग्य नहीं तियसे प्रणय।
कामी कैसे करें प्रीति आश्चर्य है ॥
जो मुख है अपवित्र थूक का ठौर है।
कहना उसको चन्द्र मूर्खता है बड़ी ॥
मांस पिन्ड हैं दीर्घ पयोधर देखलो।
कनककुम्भसम कहें उन्हें कामी मनुज ॥
सतत बहाते रहे नेत्र युग अश्रु ही।
कहते उनको कमल बड़ा आश्चर्य है ॥
है उनका सर्वाङ्ग मैलका द्वार ही।
होजाते हैं अङ्ग शिथिल आती जरा ॥
होजाते हैं कृष्ण केश हा! तूल सम।
निज शरीरकी सर्व प्रभा जाती रहे ॥
कहती जो गुणवान सर्वथा भूल है।
अपयशकी हैं मूल पापकी खान हैं ॥
शिवपथमें मैं इन्हें मानता अर्गला।
जो पड़ते हैं मनुज नारिके फन्दमें ॥
कर सकते कल्याण न अपना स्वप्नमें।
लोकोत्तर सुख मिले यही है भावना ॥
इसीलिये निज ध्यान प्रिये अब श्रेष्ठ है।
आकुलता है जहां वहां सुख है कहां ॥
ऐहिक सारे काम कष्टके गेह हैं।
वनमें जो आनन्द नहीं प्रासादमें ॥
कनक पींजड़े मध्य कीर क्या हो सुखी?
फिरता है स्वच्छन्द मृगेन्द्र अरण्यमें ॥
भावेगा क्या कभी उसे कंचन-सदन?
घूम रहा हूं मैं कबका संसारमें ॥

पाये सब ही कष्ट बचा नहिं एक भी ।
आती उनकी याद हृदय यह कांपता ॥
पड़े कौन जन जान बूझ कर गर्त्तमें ।
सुख अभिलाषी सभी केहरी कुन्थु तक ॥
कौन कंटकाकीर्ण पंथमें जायगा ।
विश्व बेलिके लिये तपस्या है छुरी ॥
तपमें ही है सार जान मैंने लिया ।
इससे आग्रह नारी ! तुम्हारा व्यर्थ है ॥

राजुल—

प्रभुवर कोमल अंग आपके फूल सम ।
सह सकते हैं नहीं कठिन आतापको ॥
घोर तपस्या नाथ ! खड्गकी धार है ।
रहो सदनमें यही सोच आराममें ॥
है अरण्य दुख भूमि जन्तुओंसे भरा ।
नाग सिंह गजराज मत्त जिसमें रहें ॥
पग पगपर हैं शूल नाथ पछताओगे ।
यह वय है सुकुमार न तपके योग्य है ॥
दासी अरु सब राजपाट किसके लिये ।
आवेंगे ये उच्च महल किस काममें ॥
गजपर हो आरूढ़ कौन निकला करे ।
किसका लखके वदन लोग होंगे मुदित ॥
तप करना ही नाथ तुम्हें जो इष्ट था ।
योग्य नहीं था आश सूत्रमें बांधना ॥
की थी मैंने हृदय सौख्यकी कल्पना ।
चूर चूर होगई हाय ! वह आज सब ॥
नहीं बांधते आप प्रणयके सूत्रसे ।
आती इस विध कभी दुःख वेला नहीं ॥
खिले हुए हैं यहां पुष्प चारों तरफ ।
सूख रहा है वेग नाथ ! यह मन कुसुम ॥
थोड़े दिन तुम सौख्य भोग फिर तप करो ।
होता यौवन वेग सदा अनिवार्य है ॥
बह जाते जिसमें गजेन्द्र तक भी सहज ।
उसी नदीमें तुच्छ शशक क्या नहिं बहे ॥
कर सकते आधीन मनुज अहिराजको ।
बांधे बन्धन मध्य मत्त गजराजको ॥
जिनका बल अवलोक इन्द्र भी कांपता ।
हो जाते हैं विकल सभी वे मारसे ॥

नेमिनाथ—

मुख फाड़ यमराज प्रिये बैठा हुआ ।
नहीं अघाता बार बार खाकर हमें ॥
सबके प्रति ही सदा एक सा भाव है ।
बाल, वृद्ध या युवा आदि नहिं देखता ॥
कब यह घोंटे गला नहीं इसकी खबर ।
चलता इसका चक्र प्राणियों पर सतत ॥
वैसे रक्षक एक दूसरेके सभी ।
चलता किंचित् जोर न यमके सामने ॥
उत्तम ही है प्रथम न पड़ना पङ्कमें ।
पड़कर कीचड़ मध्य उसे धोते फिरें ॥
आती उनकी घोर मूर्खता पर हँसी ।
खाकरके जो गरल औषधी खोजते ॥
कहता उनको बुद्धिमान कोई नहीं ।
विषय भोग मैं पाप-पोटरी लूं बड़ा ॥
चलना मेरा सहज शीघ्र दुःसाध्य है ।
फँसा अनेकों बार विषयके कीचमें ॥
तृप्त हुई क्या कभी हृदयकी वासना ।
बढ़ती ही वह गई पूर्ण उसको किया ॥
ऐसेमें ही अन्त जीवका हो रहा ।
होती तृणसे तृप्त कभी भी अग्नि क्या ॥

कभी अघाता सरित नीरसे क्या उदधि?
विषयोंमें सुख नहीं कष्ट ही कष्ट है।

राजुल—

प्राणनाथ! दो भीख विपुल करुणा करो।
अकथनीय हो रही हृदयकी वेदना॥
सुनकर मेरी व्यथा वायु भी थम गई।
करते हैं नहिं शब्द देख लो विहगगण॥
तन मन मैं सब सौंप चुकी हूँ आपको।
हे जीवनआधार! आज जाऊँ कहां॥
भमरी तजकर कमल कहांपर जायगी।
उमड़ रहा है शोक-सिंधु इस चित्तमें॥
बरसाते हैं नयन इसीसे अश्रु-जल।
रोते हैं निर्जीव श्रवण करके रुदन॥
सहृदय हो हे नाथ! हृदय न पसीजता।
चलो सदन अब नाथ छोड़ सब रोषको॥
लिपट रहूँगी लता सदृश मैं प्रेमसे।
बस भविष्यमें शीघ्र फलेगी कामना॥

नेमिनाथ—

प्राणप्रिये! सब भांति तुम्हें समझा चुका।
होना मेरे लिये व्यथित सुखकर नहीं॥
सत्य विचारो एकबार इस विश्वके।
सारे ही सुख होते क्रमसे नाश हैं॥
जो कुछ निश्चित किया, करूँगा मैं वही।
होओ यों न अधीर चित्तमें इस समय॥
रोनेसे दुख दर्द दूर होता नहीं।
विदुषी होकर करो न व्यर्थ प्रलाप अब॥

परदा।

(ले०-साहित्यरत्न पं० सिद्धसेनजी जैन गोयलीय-उज्जयिनी)

संसारमें कोई कार्य विना कारणके नहीं होता है इस बातको सभी मानते हैं। परदेका रिवाज कबसे, क्यों चला? तथा यह उचित है अथवा अनुचित? उचित है तो कहां तक? क्या विना परदे हमारा कार्य हो ही नहीं सकता? पुरातन स्त्रियां सती सीता, पद्मिनी आदि क्या सभी परदा रखती थीं? इत्यादि प्रश्न इस विषयमें बराबर उठते हैं। इस विषयमें इन सभी प्रश्नोंका समावेश करते हुए उनका उत्तर देना यह मेरा विचार बहुत दिनोंसे हो रहा था जिसको आज सर्व समाजके सन्मुख प्रस्तुत करता हूं।

भूमंडलमें जितने भी देश सभ्य और उन्नतशाली हैं अथवा रहे हैं उन्होंने कभी भी परदेकी प्रथाका आदर नहीं किया। अबसे दो अढ़ाई हजार वर्ष पहिले तथा उससे बहुत पीछे तक भारतमें परदेका रिवाज नहीं था। स्त्री पुरुष दोनोंको पूर्ण रूपसे खुले मुंह रहनेकी स्वतंत्रता प्राप्त थी। प्राचीन इतिहास तथा शास्त्र इस बातके साक्षी हैं। सीता, अंजना, द्रौपदी, चेलना आदि आदर्श महिलाओंने कभी घूंघट (परदा) नहीं निकाला। सीताजी स्वयम्बरमें मुंह ढ़क कर नहीं गई थी। स्वयंवरमें बाहरसे आये सैकड़ों राजकुमार उनके सामने बैठे हुये थे। वे विना किसी

प्रकारके भय या संकोचके स्वयंवर मंडपमें गई थीं और उन्होंने सबके सामने रामचन्द्रजीके गलेमें फूलमाला डाली थी। उसके बाद भी कहीं किसी भी शास्त्रमें ऐसा देखनेमें नहीं आता कि उन्होंने किसीको देखकर परदा कर लिया हो। बनवासके समय वे रामचन्द्रजीके साथ रही थी।

जबसे परदेकी प्रथा चली है, परदोंमें शादियां होना शुरू हुवा है तबसे यथायोग्य सम्बन्ध नहीं होता। अनमेल विवाहकी जड़ भी यदि परदेको कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

राजा श्रेणिककी रानी चेलना श्रेणिक महाराजके साथ मंदिरोंमें, उद्यानोंमें तथा वनों उपवनोंकी शोभा देखनेके लिये खुले मुंह जाती थी। भगवान महावीरके शमवशरणमें स्त्रियां उसी तरह खुले मुंह गई थीं जिस प्रकार पुरुष गये थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के समयमें सीरया के राजा सेल्यूकसने अपने दूत मेगास्थनीजको भारतमें भेजा था। उसने भारतकी उस समयकी सामाजिक अवस्थाका हाल लिखा है। जिससे प्रगट है कि उस समय स्त्रियोंमें परदेकी प्रथा नहीं थी। सातवीं शताब्दीमें महाराज हर्षकी बहिन राजेश्वरी देवी महाराज हर्षके साथ राजसभामें बैठती थी और सर्व प्रकारसे राजकाजमें सहायता देती थी। वह आज कलकी स्त्रियोंकी भांति घरकी चार दीवारीमें बन्द नहीं रहती थी। बारहवीं शताब्दीमें कन्नौजके राजा जयचन्द्रकी पुत्री संयोगिता खुले मुंह स्वयंवरमें गई थी। उदाहरणोंसे पुराण भरे पड़े हैं।

इसी प्रकारके अनेक दृष्टान्तोंसे यह सिद्ध है कि १२ वीं शताब्दी तक भारतमें परदेका नाम भी किसीको मालूम न था। इसमें संदेह नहीं कि राजमहलोंमें खोजे लोग नौकर रहते थे, परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि स्त्रियां पुरुषोंको देख नहीं सक्ती थी अथवा घरकी चार दीवारीके अन्दर बन्द रहा करती थी।

बारहवीं शताब्दीके पश्चात् भारतमें मुसलमानोंका प्रवेश हुआ। मुसलमानोंमें स्त्रियोंको परदेके भीतर रखना धर्मानुकूल समझा जाता है। अतएव उनकी स्त्रियां परदेके अन्दर रहती थीं। इस परदेके कारण ही आज काबुलमें कैसा घोर संग्राम छिड़ा हुआ है। राजाका प्रजापर प्रभाव पड़ता है। राजाके आचार, व्यवहार, रहनसहन और रीतिरिवाजोंका प्रजा प्रायः अनुकरण किया करती है, जैसे कि आजकल अंगरेजोंका राज्य होनेसे बहुत लोग हैट (Hat), कोट, पतलून आदि पहरने लगे हैं। एक तो भारतवासी अपने मुसलमान राजाओंको परदेमें स्त्रियोंको रखते देखकर स्वयं भी अपनी स्त्रियोंको परदेमें रखने लगे, दूसरे मुसलमान राजा जिस सुन्दर हिन्दू कन्याको देखते थे उससे विवाह कर लेते थे। राजाके सामने प्रजाकी क्या चल सक्ती है! लाचार हिन्दुओंने अपनी कन्याओं और स्त्रियोंको घरके अन्दर बन्द रखना ही उचित और समयानुकूल समझा कि जिससे न उनकी कन्याओंपर यवनोंकी दृष्टि पड़ेगी और न वे अपनी कन्याओंको मुसलमानोंको देनेके लिये बाधित किये जांयगे। इन दोनों कारणोंसे धीरे२ भारतमें परदेकी प्रथा दृढ़रूपसे प्रचलित

होगई। अतएव भारतमें परदेकी प्रथाके कारण मुसलमान लोग ही हैं। इसका एक स्पष्ट प्रमाण और है और वह यह है कि भारतमें भी जिन प्रांतोंमें मुसलमानोंका जोर नहीं हुआ वहां अब भी परदेकी प्रथा नहीं है। ऐसे प्रांत मदरास, गुजरात और महाराष्ट्र हैं। जहां स्त्रियां खुले मुँह रहती हैं और दूसरेको देखकर आध-गज लम्बा घूंघट नहीं निकालतीं। मुसलमानोंका जोर पंजाब व संयुक्त प्रांतमें अधिक रहा, अतएव इन्हीं प्रान्तोंमें परदेकी प्रथा विशेष रूपसे प्रचलित है।

यह नियम है कि जब कोई बात कई पीढ़ियों तक एक रूपमें चली जाती है तो फिर वही उचित और धर्मानुकूल समझी जाती है। लोग उसे छोड़ना नहीं चाहते किन्तु उसके छुड़ानेवालोंको बुरा बताते हैं। यही हाल आज-कलकी परदेकी प्रथाका है। कई सौ वर्ष तक मुसलमानोंके शासनमें रहनेके कारण आज यह हालत होगई है कि परदेकी प्रथा अच्छी ही नहीं किन्तु धर्मानुकूल बताई जाती है। परन्तु अब देखना यह है कि आज कल परदेकी प्रथा लाभदायक है या हानिकर?

आजकलके जमानेमें कोई व्यभिचार सम्बन्धी ऐसा अत्याचार नहीं किया जाता कि जो अच्छी कन्या या स्त्री उनको पसंद आवे वे उससे बलात् शादी करलें अथवा और कोई जबरन कार्यवाही करें। अतएव यह भय कि राजा बलात्कार किसीकी सुन्दर कन्याको लेलेगा किसीके मनमें भी नहीं आसक्ता।

सबसे बड़ा दूषण जो परदेके पक्षपाती परदा उठा देनेके विषयमें उपस्थित करते हैं वह यह है कि परदेके उठ जानेसे शील धर्म उठ जायगा, और स्त्रियां व्यभिचारिणी बन जायेंगी। परन्तु यह दूषण सर्वथा मिथ्या है। प्रथम तो यदि परदेके न रहनेसे शील धर्म भंग होता है तो इसका यह अर्थ हुवा कि जिन देशों और प्रान्तोंमें परदेकी प्रथा नहीं है वहां शीलधर्मका अभाव है। अर्थात् मद्रास महाराष्ट्र और गुज-रातादि प्रान्तोंमें जहां परदेका नाम भी नहीं, व्यभिचारकी वृद्धि है और जिन प्रान्तोंमें परदेकी प्रथा है वहां शील धर्मका सद्भाव है! अथवा पंजाब, संयुक्त प्रान्त, देहली, कलकत्ता आदिमें जहां एक ओरसे दूसरे छोर तक परदेका प्रचार है सदाचार और शील धर्मकी वृद्धि है! इसमें क्या प्रमाण है? कुछ भी नहीं। केवल मनमानी बात है। जिन लोगोंको भिन्न२ प्रान्तोंमें रहनेका अवसर मिला है वे इस बातको कह सकते हैं कि दक्षिणकी स्त्रियां कैसी सुशीला और पति-भक्ता होती हैं।

दूसरे परदे और शीलका कोई सम्बन्ध नहीं है। परदेमें रहते हुये भी हजारों स्त्रियां शील धर्मको भंग कर सकती हैं और कर ही रही हैं और परदेमें न रहते हुए भी लाखों स्त्रियां उत्तमशीलकी रक्षा कर रही हैं। शीलका सम्बन्ध ज्ञान और शिक्षासे है। जिस स्त्रीके ज्ञान और शिक्षा नहीं है चाहे उसे आप हजार तालोंके भीतर भी बंद करके रक्खें तो भी वह शील धर्म पर स्थिर नहीं रह सकती, परन्तु जिस स्त्रीमें ज्ञान है वह खुले मैदानमें रह कर भी शीलसे नहीं डिग सकती।

एक राजकुमार एक सुशील एवं विदुषी स्त्री पर मोहित हो गया था, राजकुमारने उससे अपनी इच्छा पूर्ति करनी चाही–इस पर वह स्त्री कहती है:—

मैं पतिकी झूंठन भई, भोगन योग न आन ।
जो मेरी इच्छा करे, कै कागा कै श्वान ॥

इतना सुनते ही राजकुमारको होश आया और इस कार्यसे उसे घृणा हुई । यदि स्त्री विदुषी न होती तो एक राजकुमारके सम्बंधसे वह अपने शीलको धब्बा लगा लेती इसमें कोई विस्मय नहीं था ।

ऐसे उदाहरणोंसे इतिहास भरपूर है । सीता, द्रौपदी, अंजना आदि विदुषी स्त्रियोंपर कैसी२ आपत्तियां आईं । परन्तु उन्होंने शीलव्रतको भंग नहीं किया । सीताजीको रावणने कितना फुसलाया और लालच दिया । परन्तु वह सर्वथा रावणके अधिकारमें होते हुये भी अपने धर्मसे च्युत नहीं हुई ।

सीता पर्दा नहीं करती थी, इतना होते हुए भी लक्ष्मणने कभी मुंह तो क्या सीताके हस्तादिक भी नहीं देखे: जो निम्नश्लोकसे प्रगट होता है:—

कङ्कणं नैव जानामि, नैव जानामि कुंडलं ।
नूपुरमेव जानामि नित्यं पादाभिवन्दनात ॥

इसे कहते हैं-"शील" धन्य है ऐसे पुरुषोंको !

टाड राजस्थान–के देखनेसे कितनी ही राजपूत रमणियोंके ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि जिन्होंने ऐसी बुद्धिमानीसे अपने धर्मकी रक्षाकी कि जिसे पढ़कर पुरुषोंको भी अपना सिर नीचे करना पड़ता है । चित्तौड़के राजा भीमसिंहकी रानी पद्मिनीका चित्र देखकर दिल्लीका यवन बादशाह अलाउद्दीन मोहित होगया था । उसने भीमसिंहको कैद कर लिया था और कह दिया था कि मैं तुम्हें तभी छोड़ सक्ता हूं कि जब तुम अपनी रानीको मुझे दे दो । यह बात पद्मिनीको भी मालूम होगई ।

उसने तुरत अलाउद्दीनको कहला भेजा कि आप चिंता न करें मैं अभी आती हूं । वह मर्दाना वेश कर और सातसौ डोलों (पालकियों) में ७०० वीर सिपाहियोंको बिठला कर बादशाहके डेरेमें पहुंची और बादशाह व उसके आदमियोंको हराकर अपने पतिको कैसे छुड़ा लाई सो सब जानते हैं । क्या परदेवाली स्त्री ऐसी बहादुरीका कार्य कर सकती है ? खैर !

मुगल बादशाह अकबर मीनाबाजार लगवाया करता था और उसमें राजपूत रमणियोंको सौदा खरीदनेके लिये बुलवाया करता था तथा स्वयं भी जनाने वेषमें वहां जाया करता था और जिसे चाहता था उससे अपनी इच्छा पूरी किया करता था ! एक दिन बीकानेरके राजा पृथिवीसिंहकी रानी रातको सौदा खरीदने बाद गलीमेंसे जल्दी२ अपने घरको जा रही थी कि इतनेमें एक मनुष्यकी आवाज उसे सुनाई दी और क्षणभरके पश्चात् वही मनुष्य सामने आकर रास्ता रोक कर खड़ा हो गया । यह अकबर ही था ! जब रानीने अपने बचावकी कोई सूरत नहीं देखी तो वह अपनी कमरसे कटार निकाल कर शेरकी तरह उस पर कूद पड़ी और उसकी

गर्दन पर कटार रख कर कहने लगी कि यदि तू अपनी जान बचाना चाहता है तो इस बातकी कसम खा कि आजसे मैं किसी राजपूत रमणीसे ऐसा इरादा न करूंगा। देखिये, वह भी स्त्री थी। उसने किस प्रकार अपने तथा अपनी बहिनोंके शीलधर्मकी रक्षा की।

अतएव यह कहना कि परदा शीलधर्मको बचाता है सर्वथा मिथ्या है। परदेसे सिवाय हानि के कोई लाभ प्रतीत नहीं होता। सबसे बड़ी हानि जो परदेसे हो रही है वह यह है कि तंगमकानोंकी चार दीवारीके अन्दर रहनेसे स्त्रियोंका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। शहरोंमें ऐसे छोटे२ मकान होते हैं कि उनमें ताजी हवा और सूर्यके प्रकाशका प्रवेश भी नहीं होता। बाहर कहीं आ जा नहीं सकती। परिणाम यह होता है कि ज्वर, मंदाग्नि, संग्रहणी आदि रोग बेचारियोंको घेर लेते हैं और वे शीघ्र ही मृत्युका ग्रास बन जाती हैं। यदि कुछ दिनों तक जीती भी हैं तो नित्य किसी न किसी रोगमें ग्रसित रहती हैं और जो संतान उत्पन्न करती हैं वह भी दुर्बल और रोगी होती हैं। कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े २ शहरोंमें तो परदेवाली स्त्रियोंकी आफत है यही कारण है कि बहुतसे आदमी अपनी स्त्रियोंको वहां नहीं ले जाते। गांवकी स्त्रियोंका स्वास्थ्य शहरकी स्त्रियोंकी अपेक्षा अच्छा होता है। इसका यही कारण है कि गांवमें एक परदा अधिक नहीं होता दूसरे वहांके मकान लम्बे चौड़े और खुले हुए होते हैं। शहरोंमें मकानोंका किराया इतना अधिक होता है कि साधारण स्थितिके मनुष्य बड़े और खुले मकान नहीं ले सकते। अतएव शरीर रक्षा, स्वास्थ्य रक्षा एवं दीर्घ व उत्तम जीवन बनानेके लिये इस बातकी आवश्यक्ता है कि परदेकी प्रथा उठा दी जाय। ऐसा करनेसे स्त्रियां उद्यानोंमें जाकर स्वच्छ वायुका सेवन कर सकती हैं। ऐसा करनेसे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, उनकी संतान भी स्वस्थ होगी।

घरकी चारदीवारोंके भीतर बंद रहनेसे दूसरी बड़ी हानि यह है कि उनकी शिक्षाका समुचित प्रबंध नहीं हो सकता। शिक्षामें परदा रुकावट डालता है। कारण कि हरएक आदमीके घरमें तो स्कूल हो ही नहीं सकते और बाहर परदेके कारण जाना नहीं हो सकता। यदि परदा उठा दिया जाय तो स्त्रियोंके लिये शिक्षाका मार्ग खुल सकता है और यह विचार कि अब कन्या सियानी (बड़ी) हो गई, अब इसका ब्याह हो गया, अब इसे बाहर नहीं निकालना चाहिये, मनसे निकल जायगा और छोटी बड़ी उम्रकी सभी कन्यायें पाठशालाओंमें पढ़नेके लिये जा सकेंगी।

तीसरे परदेके न रहनेसे स्त्रियोंका ज्ञान बढ़ेगा। आजकलकी स्त्रियोंको सिवाए घरकी बातोंके और किसी भी बातका ज्ञान नहीं होता। उनके विचार संकुचित रहते हैं। जिन प्रांतोंमें परदेकी प्रथा नहीं है वहांकी स्त्रियां परदेवाली स्त्रियोंकी अपेक्षा अधिक चतुर और ज्ञानवान होती हैं यह बात स्पष्ट है। इसके लिये किसी प्रमाणकी आवश्यक्ता नहीं है।

सामाजिक--समस्या।

લેખકઃ-મોહનલાલ મથુરાદાસ-કમ્પાલા (આફ્રિકા)

વ્હાલા વાંચકવૃંદ!!!

પ્રાણી માત્રને સત્ ઉપદેશ આપી જેણે મોક્ષ પંથ મોકળો કરી આપ્યો છે, એવા સર્વગુણ-સંપન્ન શ્રી મહાવીર સ્વામીને નમસ્કાર કરી આપની સેવામાં આપણા સમાજના મહત્વના પ્રશ્નનો ઉકેલ કરતી એક સમસ્યા રજુ કરૂં છું, મને ઉમેદ છે કે-તે સાંપ્રત સમયમાં મારા વાંચકવૃંદને લાભદાઇ નિવડશે.

આ લખાણ એ આપણા દિ. જૈન સમાજના વયોવૃદ્ધ વકીલ બાબુ સુરજભાનુ સાહેબના ભાષણ ઉપરથી ઉપજાવી કાઢેલ હોઇ આપણે તે સમાજરત્નનો આભાર માનવો જોઇએ.

વિષયને અનુકુળ દ્રષ્ટાંત મેં સ્વયં ઉપજાવી કાઢેલ હોઇ તે કોઇ જાતિવાળાએ પોતાને શિર ખેંચી લઇ કલાન્તવદ્ધ થવાની જરૂર નથી.

મનુષ્ય માત્ર પર હું સમાનતાની નજરે નિહાળતો હોઇ મને તે કાંઇ કહેશે તેથી મને જરાપણ હર્ષ શોક નથી.

આટલું સ્પષ્ટીકરણ કર્યા પછી હવે હું વિષય તરફ વળીશ.

મહાનુભાવો ?

આજકાલ દુનિયા પરના બધા ઇતિહાસજ્ઞ પુરૂષોને એ વાત માન્ય થઇ પડી છે કે પૂર્વના સમયમાં આ હિંદુસ્તાન એકજ દેશ દુનિયાના બધા દેશો કરતાં આત્મિક ઉન્નતિ અને સદાચારનું કેન્દ્ર હોઇ જ્ઞાનના ભંડાર સમ હતો. અને તેથીજ તે વખતે હિંદુસ્તાન દુનિયાના બધા દેશોપર શિરોમણી ગણાતું પરંતુ પાછળથી હિંદુસ્તાનમાં એવો અંધકાર છવાયો છે-કે હિંદુસ્તાનના લોકોએ પોતે ગુણવાન થવાનું અનાવશ્યક માની પૂર્વજોની મોટાઇથીજ પોતાની મોટાઇ મનાવવા માંડી છે.

હમારા પૂર્વજો ગુણવાન અને ધર્માત્મા હતા, જેથી તેમના વંશમાં ઉત્પન્ન થએલા હમો પણ પવિત્ર છીએ એ એકજ ખેંચતાણને લઇ દેશભરમાં કલહનું બજાર બહુ ગરમ થઇ ગયું છે અને તેનું ફળ એ નીકળ્યું કે-જ્ઞાન-ધ્યાન-ધર્મ-કર્મ-વિદ્યા-બુદ્ધિ-અને પુરૂષાર્થ એ સર્વ નાશ પામી પ્રાચીન ગૌરવ પણ નાશ પામ્યું છે. સાથેજ હિંદુસ્તાનના લોકોના ઘણાજ વિભાગ પડી ગયા છે. અને તેઓ એક બીજાના હાથનું ખાવું-પીવું ને બેટી વહેવાર પણ કરતા નથી. ને તેમાંજ ધર્મને ગૌરવ માનવા લાગ્યા છે.

કોઇ માણસ પછી તે ગમે તે પાપ-જુઠ-દગાબાજી, અન્યાય, ચોરી, વ્યભિચાર કરે તેથી તેનો ધર્મ જતો નથી. પણ એક જાતીનો આદમી બીજી જાતીના આદમી સાથે રોટી-બેટી વહેવાર કરે તો, તેનાં સંતાન ભ્રષ્ટ થઇ જાય છે સેંકડો પેઢી થયા પછી પણ તે શુદ્ધ થતાં નથી. માનો તેને શુદ્ધ કરવાનો ઉપાયજ નથી, એમ માન્યતા થઇ પડી છે.

શોક, મહાશોક! જે દેશ ગુણોની ખાણ હતો. તેજ દેશ એવા અંધારા કુવામાં પડ્યો છે. એ નકામી આભડછેટનું પરિણામ એ આવ્યું કે હિંદુસ્તાન બહારના લોકો કે જેને આપણા લોકો જુદા ધર્મથી અત્યંત નીચ નજરથી દેખતા હતા. તેઓજ હિંદુસ્તાન પર ચઢી આવ્યા. તેઓ જે લોકો પોતાને શુદ્ધ અને ગૌરવશાળી માનતા હતા તેમના પર રાજ્ય ચલાવવા લાગ્યા. એવી રીતે હિંદુસ્તાનના લોકો અપમાનીત થયા તેમણે તેમનાં

કર્મનું ફળ ભોગવ્યું. તોપણ આપણા લોકોમાંથી એક બીજી જાતીઓને ઉંચી નીચી માનવાનો નિશો ન ઉતર્યો, ને આપસમાંનો વિરોધ દૂર ન થયો. કુટફાટ હતી તેમજ રહી. અરે! તેથી પણ વધી અને તેજ વિરોધ ધર્મનો આધાર થઇ પડયો. ને તે જાતીઓથી પણ કેટલીક ઉપજાતીઓ થઇ. તે પણ એક બીજીથી રોટી-બેટી વહેવાર ન કરવામાંજ ધર્મ માનવા લાગી છે.

હાય! તેનાથી પણ વધારે શોક તેનો થાય છે કે-જૈન ધર્મ મનુષ્ય માત્રની એકજ જાતી માને છે અને સિદ્ધ કરે છે કે-ગાય-ભેંસ આદિ પશુ એક બીજાથી ગર્ભ ધારણ કરી શકતાં નથી. પણ મનુષ્યોમાં તો બ્રાહ્મણ-ક્ષત્રી-વૈસ્ય-શુદ્ર એઓના શરીરમાં જરા પણ ફેર નથી. કે તે જુદી જાતના ઓળખાય, તેઓ તો એક બીજાથી ગર્ભ ધારણ કરી શકે છે તો પછી તેઓને જુદી જુદી જાતના કેમ કરી મનાય? જાતિ તો બધા મનુષ્યોની એક છે. તેમાં વળી જે જૈન ધર્મ. કે-જેમાં બતાવ્યું છે. કે. ચણ્ડાલનો પુત્ર પણ જો ધર્મનો શ્રદ્ધાની થાય, તો તે દેવોથી પૂજાય છે, તેમજ અનુક્રમે મોક્ષ પણ જઈ શકે છે. મહાત્મા રૂષભદેવના ચક્રવર્તી પુત્ર ભરતજીએ ઘણી મ્લેચ્છ કન્યાઓથી વિવાહ કર્યાના દાખલા શાસ્ત્રોમાં મળી આવે છે, છતાં તેમને ધર્મ કે જાતિમાંથી ચ્યુત કર્યાની વાત કોઇપણ ગ્રંથમાંથી મળી આવતી નથી. તેમણે મ્લેચ્છ કન્યાઓથી પુત્રો પણ ઉત્પન્ન કર્યા હતા. છતાં તેમનામાં કે-તેમના વંશજોમાં જરા પણ ફેર પડયો નહોતો.

વળી જૈન શાસ્ત્રોમાં જણાવેલું છે કે-મ્લેચ્છ દેશમાંથી આવેલા મ્લેચ્છો પણ તત્વાર્થના શ્રદ્ધાન પૂર્વક જૈન ધર્મ ધારણ કરવાથી મુની દીક્ષાને લાયક થાય છે. તેની સાથેજ જૈન શાસ્ત્રોમાં એવું સાફ જણાવેલું છે-તમારા દેશમાં જે મૂઢ-અનપઢ-અને લુટફાટ કરનારા, તેમજ પ્રજાને ત્રાસ આપનારા મનુષ્યો હોય તેમને ઉપદેશ આપી તેમની શુદ્ધિ કરી જૈન બનાવો કે જેથી તે ઉચ્ચ ચારિત્રવાળા થઇ જૈન ધર્મનો ફેલાવો કરે.

આપણા પૂજ્ય મહાવીર સ્વામીએ એવી રીતે ઘણી જાતિઓનો ઉદ્ધાર કરી જૈન ધર્મનો ઝંડો ફરકાવ્યો હતો. જેના દરેક ગ્રંથોમાં જાતી અને કુળનો અહંકાર કરનારને નીચ અને પાતકી ગણેલા છે. તેવા જૈનીઓમાં પણ જાતિ મદ અને આપસમાં વિરોધ એવી રીતે ઘુસી ગયાં છે કે-જેથી તેઓ પોતાનોજ ધર્મ પાળતી પોતાનીજ જ્ઞાતીઓ જોડે રોટી-બેટી વહેવાર કરતાં અચકાય છે.

હાલના સમયમાં જૈનો પણ હિંદુસ્તાનની બીજી જ્ઞાતિઓ માફક અગણિત જાતી અને ઉપજાતીમાં વહેંચાઇ ગએલા છે. ને તેઓ અન્યોન્ય રોટી-બેટી વહેવાર કરતા નથી. તેમજ કરનારને જાતી ભ્રષ્ટ થએલા માને છે, જેથી તેમની સંખ્યા દિન પ્રતિદીન ઘટતીજ જાય છે. જે ઘટતાં ઘટતાં હાલ દિગંબર શ્વેતાંબર અને સ્થાનકવાસી ત્રણે મળી ફક્ત ૧૨॥। લાખજ રહી છે. અને તેમાંથી પણ દિન પ્રતિદિન ઘટતીજ જાય છે. જો વર્તમાન કાળની ઘટતી જતી સ્થિતી એવીજ રીતે ચાલુ રહેશે તો સો કે સવાસો વર્ષમાં દુનિયા પરથી જૈન માત્રને લુપ્ત થવા સંભવ છે. કેટલો હૃદયવિદારક બનાવ?

હાય? જે જૈન ધર્મ સંસાર ભરનો ધર્મ હતો, તે ઘટતાં ઘટતાં ફક્ત વાણીયાનોજ ધર્મ છે, એમ જણાવા લાગ્યું ને તે પણ ઘટતાં ઘટતાં એમ લોપ થઇ જાય? હાય, શ્રી મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ ગમનને પુરાં ત્રણ હજાર વર્ષ થયા નથી, તેટલામાંજ તેનો લોપ થાય! ખેદની વાત છે, સંસારમાં દ્રષ્ટિપાત કરતાં આપણી વસ્તીના ઘટાડાનું ખરૂં કારણ જાતી-ઉપજાતી તડ અને પેટાતડમાંના ભેદભાવ સિવાય કાંઇ જણાતું નથી.

આજકાલ સુધરેલો વર્ગ રોટી વહેવાર ત્યાં બેટી વહેવાર દાખલ કરવાની ઝુંબેશ ઉઠાવી રહયો છે. તેને કેટલાક વૃદ્ધો આદરણીય ગણી તે પ્રમાણે

વર્તન કરવા તૈયાર થયા છે, ત્યારે જે સમાજનાં નાણાંથી ધર્મજ્ઞાન મેળવી પંડિત થએલા છે—જે સમાજનાં નાણાંથીજ પોષાય છે, તેજ પંડિતો તેને એટલે રોટી વહેવાર ત્યાં બેટી વહેવારની ઝુંબેશને ધર્મ ભ્રષ્ટ થયો, એમ બતાવવાનો દુષ્ટ ચેષ્ટા કરી રહ્યા છે. તેમને ખબર નથી કે તેમનાજ માન્ય કરેલા આદિપુરાણ આદિ ગ્રંથોમાં સ્પષ્ટ રૂપથી લખેલું છે કે-**બ્રાહ્મણ પણ શુદ્રની કન્યાને પરણી શકે છે.** શાસ્ત્રોમાં સેંકડો દાખલા મળી આવે છે કે-**ત્રણે વર્ણો પરસ્પર અને શુદ્રોની પણ કન્યા વહેવાર** કરતા-પણ આજકાલનો ખંડેલવાલ ને અગ્રવાલ, પોરવાડ ને હુંમડ, મેવાડા ને નૃસિંહપુરા, રાયકવાળ ને બધેરવાળ, ગોલાપુરવ ને પલ્લીવાળ, આદિ જાતીઓ જૈન હોવા છતાં અરસપરસ બેટી વહેવાર કરી શક્તી નથી. તેમજ તેવાં લગ્ન કરનારને પાતકી ગણી તેમનું પ્રાયશ્ચિત પણ થઇ શકે નહિ, એમ માને છે.

મારા તે માનવંતા બંધુઓ હમેશ મંદિરમાં શાસ્ત્ર વાંચતા કે સાંભળતા હશે તો તેમના જાણવામાં આવ્યુંજ હશે કે—આગળના સમયમાં આપણા કેટલાક ધર્માત્મા બંધુઓએ મ્લેચ્છો, શુદ્રો, ભીલો અને વેશ્યાઓની કન્યાઓથી પણ વીવાહ કરેલા છે, છતાં સમાજે તેમને પ્રશંસાની નજરે જોઇ તેમનાં વખાણ કરેલાં છે.

આજકાલ ઘણું કરીને તો છુઆછુત-એટ બીજાના હાથનું જમવું નહિ, પાણી પીવું નહિ, આદિ હાસ્યાસ્પદ નિયમોજ ધર્મ કર્મ ગણાવા લાગ્યા છે. આત્મ કલ્યાણના સ્થાનમાં બચ્ચાંનો ખેલજ ધર્મ મનાવા લાગ્યો છે, દયા ધર્મની જગ્યાએ ઢોંગ અને આભડછેટે ધર્મનું સ્થાન લઇ લીધું છે. અફસોસની વાત છે, કે જે મહાવીર સ્વામીએ દયા ધર્મનો પ્રચાર કરી દુનિયાની જાતિ જૈન બનાવી હતી. જેમણે દરેક જીવ સરખાજ ગણેલા છે. તેમનાજ પુત્રો જૈનો આમનમાલ અને માયકાંગલા થઇ ચોકા ચોકીમાંજ ધર્મ માનવા લાગ્યા છે!

હમે અમુક જાતના આદમીના હાથનું જમતા નથી. અમુકના હાથનું પાણી પીતા નથી. કપડાં બદલી-અબોટ કરીનેજ રસોઇ કરીએ છીએ. જો કોઇ અડકી જાય, તો હમારી રસોઇ અભડાઇ જાય છે. જેને ખાવાથી હમારો ધર્મ નષ્ટ થાય છે, તેથીજ હમો કપડાં બદલી રસોડામાં બેસી જમીએ છીએ. અને એવી બીજી બધી વાતોને ધર્મ માનવો તે ધર્મની મશ્કરી કરવા જેવું છે. બેશક, સફાઇ અને તંદુરસ્તીના નિયમોનું પાલન કરવું, તે સભ્ય ગૃહસ્થોને માટે જરૂરી છે, તેનું તો જરા પણ ધ્યાન રખાતું નથી. પણ જાતિ-ભેદ-અને દ્વેષ પક્ષપાત અને લોક મુઢતાનો ઢોંગ બનાવી ધર્મનું બદનામ કરી દે છે. ધર્મ તો તત્વ શ્રદ્ધાન અને અહિંસાદિ પાંચ વ્રતોના પાળવામાં છે. લૌકિક પ્રવૃતિ ગમે તેમ હોય તેને ધર્મ સાથે કાંઇ સંબંધ નથી.

તત્વાર્થ સુત્રમાં કહ્યું છે કે—

सर्व एव हि जैनानां प्रमाणं लौकिको विधिः।
यत्र सम्यक्त्व हानि र्न यत्र न व्रतदूषणम्॥

પરંતુ તત્વાર્થનું તો જેને જરા પણ જ્ઞાન કે શ્રદ્ધાન નથી. ને નાહક મિથ્યાત્વનું સેવન કરે છે. કુગુરૂ અને કુદેવોને ઘણીજ શ્રદ્ધા અને ભક્તિથી પૂજે છે. અહિંસા આદિ અણુવ્રતોમાંથી એક પણ વ્રત જે પાળતા નથી. તેમજ સાત વ્યસનનો પણ જેણે ત્યાગ કર્યો નથી, એવા કેટલાય જૈનો છે. કે—જે રોટી પાણી અને રસોડાની છુઆ-છુતને બતાવી પોતાને મોટા ધર્માત્મા માને છે. અને બીજા કે જેઓ ધર્મશ્રદ્ધાની હોઇ મનુષ્ય માત્રને સમાન માને છે. તેમને અધર્મી કહી નીચી નજરે નિહાળે છે.

ભાઇઓ, કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયાપછી શ્રીમહાવીર-સ્વામીએ દેશે દેશ ફરી મનુષ્યો અને પશુ પક્ષીઓ સર્વેને ભવસાગરથી પાર ઉતારવાનો કલ્યાણ માર્ગ બતાવ્યો હતો. તમે તેમનાજ અનુયાયી થવા માગતા હો, અગર હો તો તમારી ફરજ છે કે—તમે તેમના ઉપદેશને મનુષ્ય માત્રના હૃદયમાં પહોંચાડો, હિંદુ હોય કે મુસલમાન, ક્રિસ્તી હોય કે બૌદ્ધ, બ્રાહ્મણ હોય કે ચમાર, ભીલ હોય કે ગોંડ, આર્ય

હોય કે, મ્લેચ્છ, હિંદુસ્તાની હોય કે વિદેશી ગમે તે હોય પણ તેને સત્ય સનાતન જૈન માર્ગનો ઉપદેશ આપી જૈન બનાવો.

જ્યારે આપણા આચાર્યોએ ચંડાળોને ઉપદેશ આપી જૈન બનાવ્યા છે, તો પછી તમે કેમ કરી બીજાને જૈન બનાવવામાં સંકોચ રાખો છો ? ભાઇઓ, હૃદયને ઉદાર બનાવશો ત્યારેજ તમારો આત્મા ઉન્નતિ કરી શકશે. હૃદયને સંકુચિત રાખવાથી અને નારકીઓની માફક દ્વેષભાવ રાખવાથી, આ દુઃખ સાગરમાં પછડાવા સિવાય બીજો રસ્તો નથી. માટેજ હે જૈનો, ઉદાર થઇ તમારા ધર્મનો લાભ બીજાને પણ આપો ? ને તે તૈયાર થતા જૈનોને તમે રોટી–બેટી વહેવારથી અપનાવી લ્યો.

જો તમો તેમ નહિ કરો તો તમારા ધર્મને સ્વિકારવાળા જરૂર તેમ કરતાં અચકાશે. કેમકે તેઓ તેમની જાતિ–તેમનો ધર્મ છોડી તમારા ધર્મમાં આવે તો જરૂર તેમને કન્યાની આપ લેમાં વિક્ષેપ પડે. માટે જો તમો તેમને તમારા સહધર્મી ગણી તેમની સાથે ઉભય વહેવારોથી ન જોડાવો. તો જરૂર તેમને થોડા ટાઇમ બાદ અસલ ધર્મમાં જવું પડે. માટે તમારી ફરજ છે કે–તેમને જૈન બનાવી યથાયોગ્ય રોટી–બેટી વહેવારથી અપનાવી લેવા.

શાસ્ત્રોમાં કોઇ જગ્યાએ જુદી જુદી જાતીઓનું વર્ણન જોવામાં આવતું નથી, પણ સૌ પોત પોતના ધંધાથી જુદા જણાય છે. પણ તેથી કાંઇ અંદરો અંદર રાગદ્વેષ રાખી જુદા રહેલા જણાતા નથી. માટે દરેક જૈન માત્રે એકત્ર થઇ જૈન ધર્મને સાચવવાની ખાસ જરૂર છે. ને તે જાતી–ઉપજાતીઓનો નાશ કરેજ બનશે.

વળી તે ઉપરાંત જે જૈની નથી, તેમની સાથે પણ વહાલ કરતાં શીખો. જીવ માત્રની સાથે મૈત્રી ભાવ રાખો, સર્વનું ભલું ઇચ્છો, દુઃખીને મદદ કરો, કોઇથી ઘૃણા કરો નહિ, કોઇથી દુશ્મનાવટ પણ ન બાંધો, જે મૂર્ખ હોય અને ઉલટો ચાલતો હોય તેને ઉપદેશ આપી સુધારો ? એનાથીજ તમારો આત્મા ઉચ્ચ અને પવિત્ર થઇ શકે છે.

હવે રહી છુઆછુતની વાત–તે એક બારેમાં બારે રોગ હિંદુઓને વળગેલો છે. ને તે પ્લેગની માફક જૈનોને પણ ચંટેલો છે તેના છુટકારા માટે હિંદુઓમાં ઘણાં ભારે આંદોલન થઇ રહ્યાં છે. તેવીજ રીતે આપણે જૈનોએ પણ તેને તત્કાળ દૂર કરવા પ્રયાસવંત થવું જોઇએ ?

છુઆછુતની નકામી આભડછેટેજ હિંદુસ્તાનને મનુષ્યત્વહીન કરેલો છે. આત્મીક ધર્મને છોડી લોકો એ જુઠા ઢોંગમાં ફસાયા છે. ચારે તરફ તપાસ કરવાથી જણાઇ આવે છે કે–હંમેશ દરેક ઘરમાં બચ્ચાં પોતાનાં કપડાં મલમુત્રથી ભ્રષ્ટ કરે છે. ને તેને તેની માતા ધોઇ સાફ કરી ખુશીથી કામમાં લે છે. તેવીજ રીતે ગંદકીથી સાફ કરેલાં પશુ પણ અડકવા યોગ્ય છે તો પછી અસ્પર્શ્ય ગણેલી જાતી કે–જે આપણી મનુષ્ય જાતીનાં આદમી છે તેમને નહાઇ સાફ થઇ વસ્ત્ર પવિત્ર કરી પહેર્યા પછી શા માટે અડકવું નહિ જોઇએ ?

એક પુરૂષ પછી તે ગમે તેવો પવિત્ર રહેતો હોય, શરીર અને વસ્ત્રને સાફ રાખતો હોય, ગંદકીની પાસે પણ ન જતો હોય, પરંતુ તે અછુતનું સંતાન છે, તેથી તેને અડકવું એ મહાપાપ છે, અને એવોજ બીજો એક પુરૂષ કે–જે નિત્ય ગંદો રહે છે, પણ બ્રાહ્મણનો બાળક છે જેથી અડકવા યોગ્ય છે એવી ખોટી તરકીબથી આપણે બચવાની જરૂર છે. અને એવો વહેવાર રાખવો જોઇએ, કે–ચાહે કોઇ હમારો મિત્ર હોય, અગર ચાહે તે હોય, પછી તે ગમે તે ધંધો કરતો હોય, પણ જે વખતે તેનું શરીર તથા વસ્ત્ર ગંદકીથી ભરેલાં હોય, તે વખતે તે અપવિત્ર અને અડકવા લાયક નથી. પરંતુ જે વખતે તે સાફ થાય, તે વખતે તે અપવિત્ર અને અડકાવા લાયક નથી પરંતુ જે વખતે તે સાફ થાય, તે વખતે તેને અડકવામાં કોઇ દોષ નથી.

ભાઇઓ, પૂર્વના સમયમાં આપણે શુદ્રો અને કારીગરો ઉપર ભારે જુલમ કરેલા છે તેવીજ રીતે સ્ત્રીઓ ઉપર પણ જુલમ કરવામાં બાકી રાખી નથી. અને જે ઇતીહાસનું જ્ઞાન છે તે ઉપરથી હું સ્પષ્ટ રીતે કહી શકું છું કે– હિંદુસ્તાનની પડતીનું કારણ વિદેશીઓના હાથે ધર્મ સ્થાનોનું લુટાવું, અને આપણને ગુલામ બનાવવા તે બધાં આપણા તે ઘોર અન્યાય અને જુલમનાંજ ફળ છે કે જે આપણે શુદ્રો અને સ્ત્રીઓ ઉપર કરવા લાગ્યા છીએ. હજુ પણ જ્યાંસુધી આપણે તે મહાન અપરાધથી મુક્ત નહિ થઇએ, તેમના પર કરાતા જુલમ બંધ નહિ કરીએ, ત્યાંસુધી આપણે ગુલામીમાંથી છુટવાના નથી.

ક્યાંસુધી કહેવું ? થોડા વખત પહેલાં તો હિંદુસ્તાનમાં એવો જુલમ થવા લાગ્યો. કે–પોતાને ઉંચ જાતી અને ઉંચ કુળના માનનારા કેટલાક પોતાની કન્યાઓને જન્મતાંજ મારવા લાગ્યા હતા. જો કે–તે રિવાજ ધીમે ધીમે નાબુદ થતો જાય છે. પણ હજી એવો રિવાજ જરૂર છે કે– કન્યાનો જન્મ થતાં કુટુંબમાં ઉદાસી છવાઇ જાય છે. તેમજ છોકરી આપનાર માતાની તેમજ જન્મ લેનાર છોકરીની બરદાસ્ત બહુજ બેપરવાઇથી કરવામાં આવે છે. કન્યાને રાંડ અને મરીજા કહી પોતાનું કાળજું ઠંડુ કરવામાં આવે છે. કદી કોઇ પોતાની દશ વર્ષની કન્યા કોઇ સાઠ કે સીત્તર વર્ષના બુઢ્ઢા સાથે પરણાવે અગર તેનાથી એટલે કન્યાથી નાના બાળક સાથે પરણાવે. અગર કન્યાનું લીલામની માફક વેચાણ કરે તો પણ તે દયાધર્મી–જૈની–અગર ઉંચ કુળનો ગણાય છે. તેવીજ રીતે તે પરણનાર બુઢ્ઢાને પણ ઉચા કુળનો માનવામાં વાંધો આવતો નથી !

એક પુરૂષ ગમે તેટલીવાર લગ્ન કરે, પરસ્ત્રી ગમન કરે–વેસ્યા ગમન કરે, તો પણ તે ઉંચ કુળનો મનાય છે. કેટલો અત્યાચાર ?

પ્યારા ભાઇઓ, જ્યાંસુધી તમે આ ઘોર અન્યાયને દૂર નહિ કરો. ત્યાંસુધી તમારો દયામયી ધર્મ જગદ્વ્યાપી થવાનો નથી.

આપણે જૈનોએ ચાલુ સમયમાં કમર કસી વૃદ્ધલગ્ન–બાળલગ્ન–વ્યર્થ વ્યય–અને નકામી જમણવારો બંધ કરવાની ખાસ જરૂર છે. જ્યાંસુધી બાળલગ્ન અને વૃદ્ધલગ્ન બંધ થશે નહિ. ત્યાંસુધી બાળ વિધવાઓની સંખ્યા વધ્યાજ જશે. અને તે સમાજને અપવિત્ર બનાવ્યાજ કરશે. તેમના ગુપ્ત અત્યાચારથી લાખો બાળહત્યાઓ સમાજને શિર ચોંટશે. અને તેથી આપણો સમાજ પ્રતિદીન ક્ષીણ થતોજ જશે. માટે દરેક જણની ફરજ છે. કે બાળલગ્ન–વૃદ્ધલગ્ન બંધ કરવા કટીબદ્ધ થવુંજ જોઇએ,

તમો જ્યાં સુધી વૃદ્ધલગ્ન અને બાળલગ્ન બંધ નહિ કરો ત્યાં સુધી તમે ગમે તે બંધન નાંખશો તો પણ વિધવાઓ દ્રઢ રહી શકવાની નથી. ને ત્યાં સુધી તમારાથી વિધવા વિવાહના હિમાઇતીઓને જડબાતોડ જવાબ પણ આપી શકાવાનો નથી. બાળ–વિધવાઓ કમતી થશે તોજ સમાજની ઘટતી સંખ્યા કાંઇક વધારો પર આવશે. વૃદ્ધ લગ્નેજ આપણા સમાજનું સત્યાનાશ કાઢી નાંખ્યું છે. કામવાસના નાબુદ થએલા વૃદ્ધ ખચ્ચરો બાળ વહુઓને લાવીનેજ બાળ વિધવાનો વધારો કરે છે ને તેથીજ સમાજની હજારો વિધવાઓને અનીતિને રસ્તે જવું પડે છે. ને કેટલીકને તો જૈન ધર્મનો સદાને માટે ત્યાગ કરી મુસલમાન કે વેસ્યાની જાતમાં ભળવું પડે છે.

બાળવિધવા દ્વારા થતા અનર્થોનાં સેંકડો ઉદાહરણ મૌજુદ છે, પણ તે બધાં જાહેર કરવાથી તમારે નીચું જોવું પડે. ને કદાચ મારે પણ તમારા દ્વારા કષ્ટમય ઝગડામાં ઉતરવું પડે જેથી અત્રે એકજ ઉદાહરણ ટાંકી આ લખાણને બંધ કરીશ.

(અપૂર્ણ.)

दशाहुमड जातिमां कुरिवाजो.

(લેખક—કેશવલાલ એન. જૈન, લાકરોડા)

ગુજરાતની દશા હુમડ જ્ઞાતિમાં લગ્ન સંબંધી ઇત્યાદી કુરિવાજોનાં મૂળ ઘણાં ઉંડા ગએલાં જોવામાં આવે છે. અને તે કુરિવાજો આપણું કેટલું અહિત કરી રહ્યા છે, તે આપણે જાણવાની જરૂર છે. અને જો આ કુરિવાજોને આપણી કોમમાંથી નાબુદ નહિ કરવામાં આવે તો તે ભવિષ્યમાં શું નુકશાન કરશે તે આપણાથી કળી શકાતું નથી?

૧-લગ્ન-વિવાહ—આપણી જૈન કોમમાં લગ્નનો ખરો અર્થ સમજવો મુશ્કેલ થઇ પડેલો છે. અત્યારે તો લગ્ન એટલે નાનાં બાળકોને પરણાવવાં. પ્રિય બંધુઓ, આપણા નાના કોમળ બાળકોને પરણાવવાથી ઘણા ખુશી થઇએ છીએ, પણ જો ઘણો ઉંડો વીચાર કરી જોવાથી તે લગ્ન સુખમય નહી પણ એક મોટું દુઃખ છે. કારણ કે નાના બાળકોને નાની વયમાં વિદ્યા પ્રાપ્ત કરવાનો અમુલ્ય સમય છે. તે સમયે તેમને પરણાવવાથી નુકશાન થાય છે. આજકાલનું વાતાવરણ એવું હોય છે કે બાળકો અથવા બાળકીઓને આવા ફંદમા પાડવાથી (લગ્ન કરવાથી) તે બાળકોના મગજ ઉપર ઘણીજ ખરાબ અસર આવે છે. ને તેનું પરિણામ આગળ વ્યભિચાર સિવાય કંઇ નીપજતું નથી, જે આપણી કોમની પડતીનું આ પહેલું પગથીયું છે.

આપણા બાળકોની પુખ્ત ઉંમર સીવાય લગ્ન કરવાથી બાળકોનાં મગજને નુકશાન પહોંચે છે. તથા તે અનેક ભયંકર રોગના ભોગ થઇ પડે છે. અને તેવા બાળકો પોતાની હિંમતથી કોઇપણ કાર્ય કરી શકતા નથી અને તેમને પારકી આશા રાખી બેસી રહેવું પડે છે. વળી આવા બાળલગ્નના પ્રતાપથી આપણી દિ. જૈન કોમમાં ૭૦૦ ઘરની વ્યાવસ્તીમાં ૮ થી તે ૧૩ વર્ષની વિધવાઓની સંખ્યા તેરની છે (૧૩) ને તેથી મોટી ઉમરની સંખ્યા ઓછામાં ઓછી ૫૦-૬૦ ની તો હશેજ. આવી રીતે આપણી કોમની પડતી દશા કરનાર એક બાળલગ્ન છે. તેને દૂર કરવા માટે મારા પ્રિય વીર યુવકોના માથેજ છે. જ્યાં સુધી વીર યુવકો આ કાર્યમાં હાથ રાખશે નહિ ત્યાં સુધી જૈન કોમની આ કંગાલ દશા દીવસે દીવસે વધતીજ જશે.

અત્યારના જમાના પ્રમાણે હાલ લગ્ન થાય છે તે આપણે હવે જોવા તેમ જાણવાની જરૂર છે. અત્યારે કલિયુગ કહોકે અત્યારનું ઝેરી વાતાવરણ કહો? આજકાલ લગ્ન થાય છે, તે લગ્ન વિષે કોઇ તાજા દાખલો તરફ હવે લક્ષ ખેંચીએ. દાખલા તરીકે આ ચાલુ સાલની અંદર આપણી દિ. જૈન કોમમાં લગભગ ૩૫-૪૦ લગ્ન થયા છે. તે લગ્ન પ્રત્યક્ષ જોતાં કંઇ નવાઇ ઉપજે તેવાંજ હતાં. લગ્નના પાસમાં સપડાએલ કેટલાક બાળકો તો એવાજ હતા કે જેઓને પુરતું ધોતીયું પહેરતાં ન આવડે! અરે ખાતાં પણ ન આવડે! આવી સ્થિતીના બાળકોનાં લગ્ન થયાં! અરે આ તે લગ્ન કે મશ્કરી? વળી લગ્નમાં આધુનીક કેળવણી પામેલાં આપણીજ જૈન દિ૦ દશા હુમડ કાંઠાના કોમની સ્ત્રી લગ્ન આવે કે જાણે કોઇ નવી વસ્તુ પ્રાપ્ત થઇ આવી રીતે તે સ્ત્રી લગ્ન પ્રસંગે ધાર્મિક ગીત ગાવાં મુકી પોતાના પિતા ભાઇ સસરા જેઠ ઇત્યાદિ કુટુંબી માણસોની શરમ રાખ્યા સિવાય ફટાણા ગીતો ગાવામાં બહુજ હરખ માને છે. ને ફટાણા ગીતો સાંભળી અરે જૈન કોમના નિર્લજ માણસો (પુરૂષો) ઘણાજ ખુશી થયા છે. અરે આજ ગીતો આપણી જૈન કોમને અધમ દશા ઉપર લાવનાર છે. અરે આજ ગીતો આપણી પવિત્ર જૈન સ્ત્રીઓને માથે કલંક ચઢાવનાર છે! અરે જૈન કોમની સ્ત્રીઓને આવાં નિર્લજ ફટાણાં ગાણાં (ગીત) ગાવાની તદન છુટ! અરે જૈન બંધુઓ જરા ઉંઘમાંથી આંખ ઉઘાડો અને આવા કલંકિત કુરિવાજોને દૂર કરો અને ફટાણા ગીતને

બદલે સારા ધાર્મીક માંગળીક લગ્ન પ્રસંગે ગીતો ગવાય તો જૈન કોમને કંઇ દુઃખ ઉઠાવવું પડે નહિ. અરે તે ફટાણાં ગીતને—તમને એક પ્રત્યક્ષ ગાઇ સંભળાવું છું.

ગીત—૧—એક ટકાનું પાન મંગાવોરે, પેલી વેશ્યાના દાંત રંગાવોરે, દાંત કાળા ઓર ધોળા શેનાર વહુવ મેલો પાતરના ચાળારે.

ગીત—૨—પેલી પાતરે પાણી ભરાવ્યુંરે, પેલી સોનાર દલણુ દરાવ્યુંરે પેલી ગદ્ધીએ પાણી ભરાવ્યુંરે.

ગીત—૩—કાળી કંઠી સવા લાખની સાજનીઆ લોકો પેલુરે નાતરૂં કોણે કર્યું ? સાજનીઆ લોકો ફલાણો દેસે કન્યાદાનરે સાજનીઆ લોકો.

પ્રિય બંધુઓ, જુઓ કેવાં ઉત્તમ ગીત ! અરે કેટલા દાખલા આપું ? આવા ઉત્તમ ગીતોથી આપણી નાની પ્રજા કેમ ન સુધરે ? અરે જરૂર સુધરશે અને આપણી કોમને તેમના મગજ પ્રમાણે ઉત્તમ શીખરે ચઢાવી મુકશે તેમ જરૂર સમજજો ! આ આપણી કોમનું આ બાજુ પગથીયું છે. વળી આપણા જૈન કોમના લોકો લગ્નનું મુહુર્ત જોવરાવી શુભ પ્રસંગે લગ્ન કરવાની ઇચ્છા રાખે છે. પણ તે લગ્નનું મુહુર્ત ક્યાં રહ્યું ? લગ્ન મહા સુદ ૮ નું હોય ને વરગોઆ મહા સુદ ૧૧ સે પરણે આ તે મુહુર્ત કે માણસોને ઠગવાની શર્ત ? નકામા આપણી જ્યોતિષ વિદ્યાને કલંક લગાડીએ છીએ.

કારણ કે આવા લગ્નથી કંઇ અવારનવાર થાય તો આપણા લગ્નની શંકા ધરીએ છીએ પણ તે શંકા તદન ખોટી અને નકામી છે. તે ભુલ આપણી છે. અને આપણુ હાથે કરીને ભુલના ભોગ થઇ પડીએ છીએ. અત્યારે લગ્ન બ્રાહ્મણ લોકો કરાવે છે પણ અરે તે બ્રાહ્મણ નથી પણ એક ઠગારા છે. કારણ કે તે લોકો શું સમજે છે. કે " વર મરો કે કન્યા મરો પણ ગોરનું ટાપું ખરૂં કરો. " અરે આવા વિચારના બ્રાહ્મણો પાસે લગ્ન કરાવવું નહિ, કારણ કે તે બ્રાહ્મણો—

શ્લોકનું તો શાક બનાવ્યું. મંત્રની બનાવી માળા;
ગોળ મહારાજે લગ્ન કરાવ્યું, વિધીમાં ઉઠયા લારા.
સપ્ત પદીનો ચહા બનાવ્યો, યાકુતીના થયા લાડુ;
ધીગોળની ધાર કરાવી, આતે મહારાજ કે ગાંડુ ॥૧॥

કંઇ ભણ્યા તો હોય નહિ અને લગ્ન કેવી રીતે કરાવી શકે, અરે બાઇ શ્લોકમાં તો હવે સમોવરતે સાવધાન રહ્યાં છે અને જ્યાંત્યાં ગોળ મહારાજ જલદી પરણાવી વરકન્યાને ઉઠાડી મુકે કે તુરતજ મહારાજના રૂ. ૧૭) પાકે. કહો ગોળ મહારાજના બાપનું શું ગયું. કહો તે લગ્નકરાવે અગર ના કરાવે તોપણ રૂપીઆ તો પાકે પછી શું ? આવા વિધિ વીનાના લગ્નથી આપણી જૈન કોમનું સત્યાનાશ વળી ગયું. હજી સમજો તો બાજી હાથમાંથી ગઇ નથી. અરે જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવો અને તેજ વિધિ પ્રમાણે થવાથી પછી જુઓ, કે કેટલી જૈન કોમની વધતી થાય છે. અરે જૈન બંધુઓ, જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવવાનો કાયદો અમલમાં લાવશો તો જૈન કોમનો ઉદ્ધાર થવાનું પહેલું પગથીયું ખુલ્લું થશે.

नैसर्गिक उच्च जीवननां सुत्रो.

(લે:-ત્રીભુવન રણછોડદાસ માળવી-કમ્પાલા.)

૧—મન શુદ્ધ, શાંત, સંયમી અને સુપ્રસન્ન રાખો.

૨—વીર્યબળ શક્ય તેટલું સાચવી રાખી વધારો.

૩—શરીર નિરોગી રાખવા લક્ષ પૂર્વક સંભાળ લ્યો,

૪—સ્વચ્છ અને ખુલ્લી હવા તથા પુરા સૂર્ય પ્રકાશમાં હમેશાં રહો.

૫—પહેરવા ઓઢવાનાં વસ્ત્ર શક્ય તેટલાં થોડાં, માફક ને સ્વચ્છ રાખો.

૬—આહાર હલકો ને યોગ્ય પોષણ મળે એવો લેવો. બરોબર ભુખની હાજત સિવાય ખાવું નહિ. થોડી ભુખ રાખીને ખાવું. ફળાહાર ઉત્તમ ખોરાક છે, મસાલા વિગેરે મિશ્ર કરવાથી

રોગ ઉત્પન્ન કરનારો ખોરાક થાય છે, તે ન લ્યો. શુદ્ધ તાજું ઠંડુ પાણી ઉત્તમ પીણું છે. ચહા, કોફી, સોડા, લેમન, દારૂ ને બીલકુલ વાપરશો નહિ.

૭—નિદ્રા શાંત અને ગાઢ લ્યો.

૮—હાજત થતાંજ મલમૂત્ર કરો.

૯—રોજ દિવસે સ્નાન કરી ચામડી સ્વચ્છ રાખો, તેથી કેટલોક મેલ શરીર બહાર નીકળે છે.

૧૦—જરૂર શક્તિ પ્રમાણે નિયમીત કસરત લેવાનું કહિ ભુલશો નહિ. કસરત એ સારૂં રસાયણ છે. માટે કસરત કરો, દીર્ઘાયુષી થાવ ને આદર્શ બનો.

૧૧—તમારૂં વર્તન નિયમીત, સરળ, શાંત, પવિત્ર અને આદર્શ રાખો. આ નિયમો વિરૂદ્ધ વર્તન કરવું એ રોગને આમંત્રણ કરવા જેવું છે.

જમવાની વિધિ.

જે માણસ ભૂખ લાગે ત્યારેજ જમે છે, તેને શારિરીક દુઃખ પ્રાપ્ત થતું નથી. બનતા સુધી પહેલા પહોરમાં જમવું ને નહિ, બીજો પહોર વ્યતિત થવા દેવો નહિ. તરસ લાગી હોય ત્યારે જમવું નહિ, તરસ ટાળ્યા પછી જમવું. ટાળ્યા સિવાય જમવાથી ગોળો ચઢે છે. ટાઢુ અનાજ જમવું નહિ. ટાઢુ અનાજ જમવાથી વાયુ થાય છે.

ઉત્તમ પુરૂષે પાટલા ઉપર બેસી સામા પાટલા ઉપર ભોજન મુકી જમવું. પૂર્વ દિશા અથવા ઉત્તર દિશા સામા મુખ રાખી જમવું. હાથમાં અન્ન લઇને જમવું નહિ, પાત્રમાં અન્ન લઇને જમવું. હાથ ડાબા પગ ઉપર રાખીને જમવું નહિ, તેમજ તડકે અગાસે અંધારામાં અને ઝાડ નીચે બેસી જમવું નહિ. જમતાં ટચલી આંગળી ટાળવી નહિ, પગમાં પગરખાં પહેરીને જમવું નહિ, વળી ડાકણ, માઠી-નજર વાળી સ્ત્રી અને શ્વાનની દૃષ્ટિએ ન જમવું. રૂતુવંતી સ્ત્રીએ પકાવેલો આહાર જમવો નહિ. ભૂખ્યાની કે પાપીની નજરે પડેલું ન જમવું, સર્વ ભોજન પ્રથમ સુંઘીને પછી જમવું કે જેથી કોઇની દૃષ્ટિ લાગે નહિ. ભોજન જમતાં પ્રથમ પાણી પીવું નહિ, પ્રથમ પાણી પીવાથી અગ્નિ મંદ થઇ જાય છે. મધ્યમાં પાણી પીવું અમૃત સમાન કહ્યું છે, જમ્યા પછી પાણી પીવું નહિ કારણ કે પછી પાણી પીધેલું ઝેર સમાન છે. જમ્યા પછી ફક્ત મુખ સાફ કરવા એક કોગળો પાણી પીવું, તે સિવાય પીવું તે હાનિકારક છે.

ભીખાભાઇ એફ. શાહ-વાંચ.

હિંદીઓને દિવ્ય સંદેશો.

સૌ સુણો હિંદીઓ આજ, જાય છે લાજ,
હવે શું કરવું ? ટેક.
બહુ પછાત આપણુ દેશ, ક્યાં જઇ ઠરવું.
જઇ જુઓ દિવ્યના બાળ, બનો ક્યાં શંડ દિવ્ય ઉદ્ધારો,
પછી જાય ખપી સૌ દેશ, દિવ્ય નવ ભાળો.
સહુ થાઓ ખરે તૈયાર, અરે આવાર માતૃના કાજે,
નવ જુઓ હવે તો હાર, હિતાર્થી લાજે.
સહુ વીર બનો ટેકીલા ? નવ રહો અંતરે મેલા ?
સૌ બનો ખરે રણઘેલા ? તો હટે ખરેખર પેલા.
સંપ જંપ નવ થાય, દેશ લુટાય, જગતમાં આજે,
બહુ ખરેખરૂં દુઃખ થાય, ભારતના કાજે. સૌ સુણો. ૧
ઓ વીર વિખ્યાતો શીખ, બતાવો બીક, દેશને તારો,
તો જાય હટી સૌ શત્રુ, કુહિત ધરનારો.
વિર વલ્લભભાઇ સરદાર, જાગી આ વાર, આવશે વ્હારે,
સૌ કરો તેમનો સાથ, ઉતારે પારે,
સહું સતત કરો વિચારો. આવતા આભને ટાળો ?
ભારતના બાળ વિચારો, હવે નથી એક પણ આરો ?
સૌ સુણો૦ ૨.
ભાઇ કરો ગાંધીને સ્હાય, અંતરે લ્હાય દિલમાં દાઝે,
કંઇ કરી વિચારો આજ, વધારો લાજે,
બહુ જાયમાલ વિદેશ, ભાળો નવ ધ્રેંશ, આજ ઘરમાં તો,
તેથી ઉપજે લ્હાય, ખરે તનમાં તો.
બનોને વીર હિંમત ઉર ધીર, હૈયામાં ધરજો,
હવે પછી તમે તો કામ વિચારી કરજો.
ભાઇ ગ્રહણ કરોને ખાદી, તો થશે અરે આબાદી,
પછી જાય ખરે બરબાદી, નવ ભાળો વિદેશી ગાદી ?
સૌ સુણો૦ ૩.

ચંદુલાલ હાંથીચંદ-સોનાસણ.

शरीरोपयोगी नियम।

(ले०-मास्टर पूनमचन्द मंगलजी, छाणी पाठशाला)

शरीरको बलवान और पुष्ट रखनेके लिये अच्छा भोजन आवश्यक है। संसारमें जीते रहने और दैहिक (शरीर सम्बंधी) सुख भोगनेके लिये भोजन ही एक सामग्री है, जो प्रत्येक प्राणीके नित्य काममें आती है। एक दम रखने और एक शब्द कहनेसे हमारे शरीरका कुछ न कुछ भाग कम होजाता है और उसकी कमी भोजनसे पूर्ण होती है। सारे दिनके परिश्रमकी कमी भी भोजनसे पूर्ण हो सक्ती है इसलिये भोजन करना एक आवश्यक कार्य है।

बहुधा देखा जाता है कि कई मनुष्य भोजन करनेसे रोगी होते हैं और कई निरोगी रहते हैं सो ऐसा होनेमें भोजनके नियम ही कारण होते हैं। इसलिये प्रत्येक भोजन करनेवालोंको निरोगी रहनेके लिये नीचे लिखे नियमोंपर ध्यान देना चाहिये।

(१) जो कुछ भोजन सामग्री हो वह प्रासुक (ताजी) और शुद्ध हो। रखी हुई और सड़ी हुई वस्तुओंको खानेसे अनेक प्रकारके रोग हो जाते हैं। कई पदार्थ जैसे आटा, बेसन, मैदा आदि ऐसे हैं कि यदि पांच सात दिन रक्खे रहें तो उनमें कट पड़ जाते हैं और फिर अभक्ष्य होजाते हैं। दूध, घी, आदि पदार्थोंमें बेचनेवाले पानी और आलू वगैरह चीजोंका संयोग कर देते हैं जो अशुद्ध होनेके सिवाय बहुत हानिकारक होते हैं। इसलिये पदार्थोंकी शुद्धतापर विशेष ध्यान रक्खें।

(२) भोजन अच्छी तरहसे पका हुआ होना चाहिये। क्योंकि कच्चे भोजनको हजम करनेमें पेटको बड़ा परिश्रम पड़ता है और जिसकी जठराग्नि मंद होती है उसको हजम न होकर अजीर्णका रोग होजाता है।

(३) पहिलेके खाये हुए भोजनको हजम हो जानेपर दूसरा भोजन करना चाहिये और प्रत्येक भोजनमें कमसेकम ६ घण्टेका अन्तर होना चाहिये।

(४) बिना भूखके कभी न खावे क्योंकि भरे पेटमें दूसरा भोजन जहरका काम करता है। अकसर देखा जाता है कि पाहुनेको प्रसन्न करनेके लिये लोग जबरदस्ती बिना भूखके भोजन कराते हैं और जब बीमार होजाता है तब दुखित होते हैं सो ऐसा करना बड़ी मूर्खता है। पाहुनेके साथ यथार्थमें यह शत्रुताका काम किया जाता है।

(५) परिमाणसे ज्यादा कभी न खाये बल्कि सदा निरालस और निरोगी रहनेके लिये भूखसे कुछ कम खाना चाहिये। प्रायः लोग घरपर तो आधसेर खाते हैं परन्तु जब किसीके यहांसे निमंत्रण आता है तो मिष्ट आदि मिलनेसे डेढ़सेर पर हाथ फेरते हैं। यद्यपि वह शरीरको हृष्टपुष्ट और सुखी रखनेके लिये ऐसा करते हैं परन्तु इसके विरुद्ध वह रोगी होकर दुःख भोग निर्बल

होजाते हैं सो ऐसा कभी न करना चाहिये। प्रतिदिन जितने बार और जितना खाते हो भूखके अनुसार उतना ही खाओ।

(६) दो बार थोड़ा थोड़ा खाना अच्छा परंतु एक बार भूखसे अधिक खाना अच्छा नहीं है।

(७) कन्दमूल आदि पदार्थ रोग पैदा करने वाले होते हैं इसलिये इ[illegible] खाओ। कच्चे और सड़े फलोंसे सदा बचे रहो। अच्छी तरहसे पका हुआ फल खाना लाभकारी होता है।

(८) रात्रिको भोजन करना जैनशास्त्रके विरुद्ध है। जो मनुष्य सदा दिनको भोजन करते हैं वह अधिक निरोगी रहते हैं। जो मनुष्य रात्रिमें भोजन करते हैं वे रोगी रहते हैं। रात्रिमें पानी पीना लोहू बराबर गिना जाता है इसलिये रात्रि भोजनपान अवश्य त्याग करना चाहिये।

(९) जिस घरमें भोजन बनाया जाये वह बहुत साफ और सुथरा होना चाहिये। आसपासमें कूड़े कचरे और दुर्गन्ध दूर होनेका कोई द्वार होना चाहिये।

(१०) रोगी शरीरमें वैद्यकी आज्ञाके अनुसार नीरस और हलका भोजन करना चाहिये। पुष्टीकर भोजन बनानेमें कुछ [illegible] खर्च नहीं पड़ता। चना, [illegible] आदिकी दाल मात्रमें ही पुष्टि[illegible] हैं। इनमें थोड़ा घी अथवा [illegible] खानेसे ही उत्तम आहार हो सकता है। दूधमें सब प्रकारके पुष्टीकारक पदार्थ हैं, इसको महांतक बने अवश्य पीना चाहिये। गेहूं, बाजरी, मग, जौ आदिकी रोटी घृत व हलका सहित खानेसे ही यथेष्ट लाभकारी होसकती है।

(११) भोजन सुस्थिर निश्चिन्त होकर संतोषपूर्वक करना चाहिये। प्रतिदिनकी बेगार समझ जैसे तैसे पेट भर लेनेकी गरजसे नहीं। जो भोजन अच्छी तरह किया जाता है उसका पाक अच्छा होकर शरीरको सुखकारी होता है।

रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्दजीका वियोग !

अतीव खेदके साथ लिखना पड़ता है कि श्रीमान रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्दजी साहब इन्दौरका १५ जनवरीको असमयमें स्वर्गवास होगया! आप बड़े दानी धर्मात्मा सज्जन थे। मोरटक्का (सिद्धवरकूट) में आपकी बनवाई हुई आलीशान धर्मशाला है। अन्त समय भी ५१०००) का दान कर गये हैं। आपकी आत्माको शांतिलाभ हो!

"जैनविजय" प्रिंटिंग प्रेस, खपाटिया चकलासूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

सम्पादकः—मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत।

वर्ष २३वां अङ्क ४.

वीर सं० २४५६ माघ.

विषयानुक्रमणिका.

स्वर्गीय, जैन महिलारत्न मगनब्हेन—
के विषयमें जोर भाई व बहिनें लेख व कवितायें भेजना चाहें ८ दिनमें भेजें, वे सब आगामी अंकमें प्रकट किये जायेंगे। मैनेजर।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।=) विशेषांक मूल्य ॥।)

स्वर्गीय जैनमहिलारत्न—

श्री० मगनब्हेन स्मारकफंडकी योजना।

कमसे कम ५) स्मारकफंडमें भरनेवालेको "दानवीर माणिकचन्द्र" ग्रन्थ भेंट।

स्थान२ पर शोकसभा व स्मारकफंड होनेकी आवश्यक्ता।

स्वर्गीय श्रीमती जैन महिलारत्न मगनबाईजी जे० पी० सारे जैन समाजका जो असीम उपकार कर गई हैं उसका ऋण चुकानेके लिये सारे जैन समाजका कर्तव्य है कि आपके वियोगकी शोक सभाएं हरएक स्थानपर करे तथा "मगनबाई स्मारक फंड" में हरएक स्त्री व पुरुष यथाशक्ति द्रव्य भरके तुर्त भेजें।

स्मारकफंडकी योजना।

जिस प्रकार श्रीमती मगनब्हेन जे० पी० के पिताश्री—स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंदजीके स्मारकमें दो फंड होकर एक फंडसे "दानवीर माणिकचंद्र" नामक बृहत् ग्रंथ (१००० प्रतियां) कागतसे भी कम मूल्यमें प्रकट किया गया था तथा करीब १००००) का फंड एकत्र होकर "माणिकचंदग्रंथमाला" नामक संस्कृत ग्रंथमाला चालू होकर उसके द्वारा आजतक अनेक प्राकृत व अप्राप्य संस्कृत ग्रन्थ आगम मुम्बईसे प्रकट हुए हैं व चिरकालतक प्रकट होते रहेंगे, इसी प्रकार स्वर्गीय श्रीमती मगनब्हेनका स्मारक होनेकी भी आवश्यक्ता है, क्योंकि सारे जैन स्त्रीसमाजकी उन्नतिके लिये आपने भी अपना तन मन धन अर्पण कर दिया था। इसलिये हमने "जैनमित्र" "दिगम्बर जैन" व "जैन महिलादर्श" द्वारा—

मगनबाई स्मारक फंड—

खोलनेका निश्चय किया है। अर्थात् इस फंडमें जो रकमें आवेंगी वह नाम ग्राम सहित इन तीनों पत्रोंमें प्रकट कर दी जायगी।

इस फंडका उद्देश—स्वर्गीय श्रीमती मगनब्हेनका विस्तृत जीवनचरित्र प्रकट करनेका व आपका नाम कायम रखनेके लिये आपके नामकी कोई ग्रन्थमाला, छात्रवृत्ति या इनाम फंड आदि स्थापन करनेका है तथा इसके प्रबन्धके लिये ब्र० ब्र० सीतलप्रसादजी, सेठ ताराचन्द नवलचन्द जौहरी, सेठ ठाकोरदास भगवानदास जौहरी, जैन महिलारत्न श्रीमती ललितब्हेन, सेठ छोटालाल घेलाभाई गांधी अंकलेश्वर,

[शेष टाइटल पृष्ठ तीसरेपर देखो]

स्वर्गीय जैन महिलारत्न—

श्रीमती मगनबहेन जे० पी०

सुपुत्री, स्व० दानवीर सेठ माणिकचंदजी जे० पी०, बम्बई।

जन्म सं० १९३[illegible] पौषवदी १०. **स्वर्गवास**—[illegible]

॥ श्रीवीतरागायनमः ।

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततां, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वाँ | वीर सम्वत् २४५८, माघ, विक्रम सम्वत् १९८८. | अङ्क ४.

वीर-स्तुति ।

(रचयिता-पं० परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ-सूरत ।)

हे वर्द्धमान भगवान अनाथनाथ !
हे वीतराग भवलंघन हेतु नाव !
मैं हूं अनाथ, तुम नाथ अनाथके हो,
कीजे अपार भवसागर पार देव ॥ १ ॥

हे वीतराग पर निष्ठुर है नहीं तू,
हे कर्महीन पर दीनदयालु भी है ।
कीजे कृपाल ! भवजाल विदीर्ण मेरा,
तेरा सहाय जगको बस एक ही है ॥ २ ॥

तारे अनन्त दुखिया क्षणमें दयाल !
निष्पक्ष भी सब तुझे कहते परन्तु ।
मैंने अनन्त दुख देव ! नहीं सहे क्या ?
जो आज भी तुम नहीं मुझपै कृपाल ॥ ३ ॥

जाऊं कहां कुछ नहीं अब है विवेक,
अज्ञान मोह ममता मुझको भ्रमाती ।
हे नाथ ! शीघ्र वह मार्ग मुझे बतादो,
हो "दास" पास जिसपै चल देव तेरे ॥४॥

सम्पादकीय-वक्तव्य

आज हम जिस विषयपर लिखने बैठे हैं वह हृदयको आहत कर देनेवाले वज्राघातसे भी कहीं मर्मभेदी है। यह दुष्ट विकराल काल साधू संत, सज्जन परोपकारी, ज्ञानी विवेकी किसीको भी न देखकर यथेच्छ प्रवृत्ति करता है। कभी२ तो यह इतना अविवेकपूर्ण कार्य कर डालता है कि जिससे एक दो दस पंद्रह नहीं, किन्तु हजारों मनुष्योंको दुखी होना पड़ता है। जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबाईजी जे० पी० से अधिकांश जैनसमाज परिचित है। लुनावला ग्राममें गत ७ फर्वरी (माघ शु०९)की रात्रिको ९॥ बजे निर्दयीकालने उक्त महिलारत्नको उठा लिया! उस चांदनी रात्रिमें भी अंधकार कर दिया! सच बात तो यह है कि विधिका विधान ही विचित्र है, यही सब सोचकर संतोष करना पड़ता है।

जैनमहिलारत्न श्री० मगनबाईजी जे.पी. का वियोग!

आपका जन्म दानवीर सेठ माणिकचन्दजी जे० पी० बम्बईके यहाँ पौष वदी १० सं० १९३६में हुआ था। और संवत १९४८में ही विवाह कर दिया गयाथा तथा कर्मोदय वशात् विवाहके ८ वर्ष बाद सं० १९५६में दो पुत्रियोंको प्रसवकर आप वैधव्य अवस्थाको प्राप्त होगई थीं। किन्तु धन्य है उस महिलारत्नको कि जिसने ऐसी अवस्थामें समाजकी वह सेवा कर दिखाई कि जो अमिट और स्थाई रहेगी। वैधव्य प्राप्तिके बाद आप अपने पिताके घर ही रहीं, और थोड़े समयमें ही संस्कृत और धार्मिक ज्ञान संपादन किया। जैनसमाज और जैनधर्मकी उन्नतिके लिये निरंतर प्रयत्नशील रहनेवाले दानवीर सेठ माणिकचन्दजी ज्यों २ समाज सेवाका कार्य करते थे त्यों त्यों श्रीमती मगनबाईजी भी अपने पिताश्रीके अनुकरण करनेमें पीछे नहीं रहती थीं। आपने जैन स्त्रीसमाजमें शिक्षाप्रचार करनेका बीड़ा उठाया था, और वह उस समय जबकि स्त्रीशिक्षा पाप समझा जाता था, या यों कहिये कि स्त्रियोंको धर्मशास्त्र पढ़नेका अधिकारी ही नहीं माना जाता था। महिलारत्नने जैन स्त्रियोंमें शिक्षाप्रचार करनेके लिये अपूर्व प्रयत्न किये थे जैसे—गांव२ घूमकर उपदेश करना, स्त्रियोंको समझाना, विधवाओंके कल्याणहेतु श्राविकाश्रममें प्रविष्ट होनेके लिये प्रेरणा करना इत्यादि।

वीर संवत २४३९ माघ शुक्ला १४ को तारंगाजीमें बंबई प्रांतिक सभाके समय दि० जैन महिला परिषद्में आपने जोशीला हृदयको पिघला देनेवाला भाषण किया था और एक श्राविकाश्रम खोलनेके लिये फंड एकत्रित किया था। सर्व प्रथम स्वयं ही १००१) की रकम भरी थी, तब बातकी बातमें करीब तीन हजार रुपया एकत्रित होगया और इसी दमपर अहमदाबादमें श्राविकाश्रमकी स्थापना की गई। कुछ समयके बाद आश्रम बंबईमें लाया गया। इसके लिये आपने तन मन धन अर्पण कर दिया और सतत परिश्रम करके अनेक महिलाओंको समाजसेवाके योग्य तैयार किया। आपके ही उद्योग या अनुकरणसे आज दि० जैन समाजमें इन्दौर, आरा,

देहली, गोहाना, सांगली, सोजित्रा, सागवाड़ा आदि अनेक स्थानोंपर श्राविकाश्रम खुल चुके हैं और वे अच्छा कार्य कर रहे हैं। जैन समाजमें सर्व प्रथम मगनबाईजीने ही श्राविकाश्रम खोलनेका अभूतपूर्व कार्य किया था। इसके फंडके लिये आप अन्त समयतक बराबर प्रयत्न करती रहीं। हालां कि करीब ९०-९१ हजारका फंड वर्तमानमें आश्रमका है तथापि आपकी अंतिम इच्छा थी कि कमसेकम पूरे एक लाखका ध्रौव्यफंड होजाना चाहिये। यदि कोई दानी सज्जन उनकी इस अंतिम आकांक्षाकी पूर्ति कर दें तो बहुत ही अच्छा हो।

स्त्री-समाज ही नहीं किन्तु समस्त जैन समाज आपका ऋणी है। इसलिये उसका कर्तव्य होना चाहिये कि वह श्री० मगनबाईजी जे० पी० का कोई स्मारक स्थापित अवश्य करानेकी योजना करे। किसी उपकारीके गुणोंकी कदर करना, उसका अनुकरण करना, एवं उसकी अवशिष्ट आकांक्षाओंकी पूर्ति करना यही एक कृतज्ञ समाजका प्रत्युपकार करना कहा जासक्ता है।

मगनबाईजीने जैन स्त्री-समाजमें आशातीत सुधारे किये हैं, तो भी अनेक कमी पूर्ण करना बाकी हैं। अगर आश्रमकी कुछ महिलायें उनका अनुकरण करें, निस्वार्थ भावसे सेवा कार्यमें लग जावें तो इसमें कोई संदेह नहीं कि जैन स्त्री-समाज भी एक दिन उन्नतिके शिखरपर आरूढ़ होकर धार्मिक एवं सामाजिक जागृति कर स्वपर कल्याण करनेमें समर्थ हो सकेगी। हमारी हार्दिक भावना है कि स्वर्गीय आत्माको शांतिलाभ हो और जैनसमाजमें अनेक महिलारत्न उत्पन्न होकर इसी प्रकार सेवाकर अपना जीवन सफल बनावें।

पाठकोंको मालूम होगा कि शिवहारा (बिजनौर) में दि० जैनियोंका रथ निकलनेवाला था, किन्तु मुसलमानों द्वारा

शिवहारामें हमारी सफलता।

अनुचित विरोध उठाये जानेपर कलेक्टर बाबू सोहनलालजी श्रीवास्तवने हरकर अयोग्यता व अदूरदर्शितासे काम लिया और अन्यायपूर्वक रथयात्राको रोक दिया था! यह अन्यायपूर्ण समाचार समस्त जैन समाजमें वायुकी भांति फैल गये और जगह जगह विरोध सभायें की गई। इधर बिजनौरमें उस प्रान्तके कुछ प्रतिष्ठित जैनियोंने एकत्रित होकर यह निश्चय किया कि कमिश्नर बरेली और गवर्नरके पास डेप्यूटेशन जावे, अगर इसमें सफलता न हो तो समाचारपत्रोंमें आन्दोलन कर युक्तप्रांतकी कौंसिलमें इस मामलेको उठाया जावे। यदि इसमें भी सफलता न मिले तो सत्याग्रहका शंख फूंक कर सफलता देवीकी आराधना की जावे।

निर्णयके अनुसार उस प्रान्तके कुछ मान्य व्यक्तियोंका एक डेप्युटेशन युक्त प्रान्त सरकारके मेम्बर श्री० लेम्बर्टसे मिला। उन्होंने आश्वासन दिया तथा बिजनौर जिलेके कलेक्टर (नेदरसोल जो हालमें आये हैं) को रथयात्रा निकलवानेको लिखा। न्यायप्रिय कलेक्टर सा०ने शिवहारेके खास खास जैन, हिन्दू और मुसलमानोंसे बातचीत की और २८ जनवरीको उन लोगोंसे शांति रखनेके लिये इकरारनामा लिखवा लिया तथा जैनियोंको रथयात्रा निकालने व धर्ममहोत्सव मनानेके लिये ६ से १० मार्च तककी आज्ञा देदी है।

अब ता० ६ से १० मार्चतक रथोत्सव बड़े समारोहके साथ होगा और बीचके दिनोंमें कई धर्मसभायें होंगी। जिसमें व्याख्यानवाचस्पति पं० देवकीनंदनजी शास्त्री पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार ब्र० कुंवर दिग्विजयसिंहजी आदि अनेक जैनधर्मके धुरन्धर विद्वान पधारेंगे। इसी अवसर पर जीवदया प्रचारणी सभा आगराका अधिवेशन होगा तथा कृषिप्रदर्शनी आदि अनेक कार्य होंगे। ऐसे मौकेपर धर्मप्रेमी बंधुओंको इस महोत्सवमें अवश्य सम्मिलित होना चाहिये। इसमें कोई संदेह नहीं कि उक्त सफलताकी प्राप्तिमें भी भा० दि० जैन परिषद्‌ने पूरा प्रयत्न किया है। उसके मंत्री व अन्य कार्यकर्तागण दिन रात इसी कार्यमें लगे रहे, तब कहीं सफलता मिल सकी। हम परिषदके कार्यकर्ताओंको इस उद्योगके लिये बधाई देते हैं। खेद तो इस बातका है कि भा० दि० जैन धर्मरक्षणी महासभा नाम रखानेवाली मनमानी महासभाने ऐसे संकट-निवारणके लिये कुछ भी प्रयत्न नहीं किया! क्या यह सभा अब कोरी नामकी ही सभा रह गई है? अस्तु, कुछ भी हो, जिन्हें लगन है, जिन्हें उत्साह है, जिनकी रगोंमें धर्म और समाजकी रक्षा हेतु खून संचार करता है वे अवश्य ऐसे कार्योंमें जुट जाते हैं। तब सफलता मिलना स्वाभाविक ही है। अभी अनेक कार्य करना हमें बाकी हैं। उनके लिये संगठन, नवयुवक और उत्साहियोंकी आवश्यक्ता है।

विलायत जायेंगे—श्री० विद्यावारिधि बैरिष्टर चम्पतरायजी सा० जैन धर्म प्रचारार्थ २१ फर्वरीको विलायत गये हैं।

जैनसमाचारावलि

गिरनार स्पेशल ट्रेन—एक स्पेशल गिरनारजीके लिये सीकर (राजपूताना)से १५ मार्चको छूटेगी। उसमें प्रायः मारवाड़ प्रान्तके जैन रहेंगे। इसका मुकाम तारंगा, गिरनार, पालीताना, अहमदाबाद, बड़ौदा, अंकलेश्वर, सूरत, कोलाब, बम्बई, नासिक, खण्डवा, इन्दौर, चित्तौरगढ़, उदैपुर, अजमेर आदि स्थानोंपर होगा।

प्रचारक हुये—मल्लिनाथ दि० जैन विद्यालय शिरड-शहापुरकी ओरसे ब्र० कन्हैयालालजी प्रचारक नियुक्त हुये हैं।

गुजरातके दशाहूमड़ जौहरीका खून!

सखेद लिखना पड़ता है कि जौहरी नेमचंद छगनलाल दशाहूमड़ ओराण (प्रांतिज) निवासीका बंबईमें किसी दुष्टने खून करडाला है! और लाश ट्रंकमें बंदकर रेलमें रखदीथी, जो भुसावल पर पकड़ी गई। इसके संदेहमें ३-४ मुसलमान गिरफ्तार किये गये हैं।

कटनी—में सिं० कन्हैयालाल गिरधारीलालजीके लघु भ्राता रतनचंदजीका बसंतपंचमीको स्वर्गवास होगया। आप बड़े धर्मात्मा दानी सज्जन थे। स्थानीय पाठशालाको ९१०००) करीब प्रदान कर चुके हैं। स्वर्गीयकी आत्माको शांतिलाभ हो।

आचार्य संघ—चौरासी मथुरामें १६-१७ फरवरी तक पधारेगा। सब भाइयोंको पधारना चाहिये।

जैन महिलारत्न श्री० मगनबाईजी जे.पी.के वियोगमें शोक सभाएँ।

बम्बई-में वैसे तो अनेक शोक सभायें हो चुकी थी, मगर सर्वसाधारण स्त्रियोंकी एक विराट सभा ११ फरवरीको हुई थी। उसमें शोकप्रदर्शक प्रस्तावके बाद एक 'स्मारक बनाने' का प्रस्ताव भी किया गया था। विद्वानोंके इस विषयपर प्रभावक भाषण हुये थे जिससे उसी समय ३२०) चन्दा स्त्रियोंकी तरफसे होगया। स्मारकके योग्य रकम इकट्ठी करनेके लिये १२ महिलाओंकी एक कमेटी भी बनाई गई। दिगम्बर जैन युवकमण्डल बम्बईकी ओरसे भी एक सभा की गई थी। उसमेंभी 'स्मारक बनाने' का प्रस्ताव किया गया था। इसीप्रकार-प्रे० मो० दि० जैन बोर्डिंग अहमदाबादमें शोकसभा की गई। खड़क प्रांतीय १० पाठशालायें बन्द रही और विजयनगरमें शोकसभा हुई। दाहोद, ईडर, रतलाम, मथुरा, रोहतक इत्यादि अनेक स्थानोंपर शोकसभायें की गई।

मुसारी-में ब्र० गबीलालजी तो कुछ समयसे थे ही, मगर दशमी प्रतिमाधारी त्यागी केशरीमलजी तथा और २ त्यागियोंके पधारनेसे धर्मश्रवणका अच्छा काम रहता है।

जैन विधिसे विवाह-नरसीपुर नि० सेठ भोगीलाल ठगरचन्दजी बरात लेकर आमोद सेठ सोभागचन्द जेठाभाईके यहां गये थे। लग्नक्रिया अंकलेश्वर निवासी छोटालालजी गांधीने कराई वरपक्षसे ७८) और कन्यापक्षके ५७) दान किया गया।

ब्र० आश्रम कुन्थलगिरिको-श्री० बेरिष्टर चम्पतरायजीने 'की आफ नॉलेज' भेट की है। तदर्थ धन्यवाद!

विजयनगरसे-मोड़ासिया फतेचन्दभाई ताराचन्दजी महामंत्री लिखते हैं कि हम नवागाम गये थे। वहां एक सभा की, उस समय नगरजी मेदाचन्दजीने २०४) शास्त्रदानके लिये प्रदान किये तदर्थ धन्यवाद!

विजयनगरसे-मोड़ासिया फतेचंदभाई ताराचन्दजी महामंत्री लिखते हैं कि हम १ फर्वरीको १९-२० धर्मप्रेमी सज्जनोंको लेकर देवल गये थे। वहांपर जलयात्रा होना थी। माघ सुदी ९ को प्रतिमाजी विराजमान की गई। २ दिन जलयात्रा उत्सव सानंद हुआ। हमारे उपदेशसे हमीरचन्द हेमचन्दजी देवलने ११) पूजन फंडमें और दूसरे भाइयोंने ४१) धर्मादा फंडमें प्रदान किये थे। १११) के उपकरण मंदिरमें दिये गये थे। एक दिन समस्त आये हुये भाइयोंको प्रीतिभोज भी दिया गया था। इन धर्मप्रेमी भाईको उपस्थित समाजकी ओरसे धन्यवाद दिया गया था।

मुनिश्री मुनिन्द्रसागरजी-ता० २८ जनवरीको विजयनगर (महीकांठा) में संघ सहित पधारे थे। यहांके नरेशने मुनि महाराजके उपदेशसे यात्री लोगोंका कर माफ कर दिया है। अब महाराज गिरनार तरफ विहार कर गये हैं।

मुनि मुनीन्द्रसागरजी-का संघ आजकल खड़क प्रान्तमें भ्रमण कर रहा है। संघमें २ मुनि २ ऐलक १ क्षुल्लक २ अर्जिका और २ ब्रह्मचारिणी हैं।

हूमड़ जातिकी मनुष्य गणना—भारतवर्षमें आगामी मनुष्यगणना ता. २६ फरवरी १९३१ को होगी। उस समय समस्त हूमड़ भाइयोंका कर्तव्य होगा कि वह "ज्ञाती" के कोष्टक (खाने) में अपनेको "हूमड़" लिखावें न कि "महाजन"।

वीरका विशेषांक—'समाज अंक' चैत्र मासमें प्रगट होगा। उसमें अनेक समाजोपयोगी, जैन जातिको जगानेवाले लेख रहेंगे। ३) भेजकर अवश्य ग्राहक बनिये। पता—वृजवासीलाल जैन। 'वीर' कार्यालय—मेरठ केंट।

स्तीफा दे दिया—विद्वद्वर पं० गणेशप्रसादजी वर्णी न्यायाचार्यने स्याद्वाद महाविद्यालय काशीके अधिष्ठाता पदसे स्तीफा दे दिया है।

पं० मक्खनलालजीने माफी मांगी—गत वर्ष मोरेना विद्यालयके जीने बाबत बड़ा झगड़ा खड़ा हुआ था। उसमें पं० मक्खनलालजीकी गलती थी, जिसकी माफी मुनिमहाराजके सामने मोरेनामें मांगी है।

शिवहारामें सफलता—पाठकोंको मालूम है कि शिवहारा (बिजनौर) में मुसलमानोंकी अनुचित धमकीसे मजिस्ट्रेटने जैनियोंके रथ न निकालनेकी अन्यायपूर्ण घोषणा करदी थी। हर्ष है कि भा० दि० जैन परिषद आदिके प्रयत्नसे रथ निकालनेकी गवर्नमेंटसे आज्ञा मिल गई है। ता० ६ से १० मार्चतक रथयात्रा बड़ी धूमधामसे होगी। इसी समय जीवदया सभा आगराका अधिवेशन भी होगा। समस्त सज्जनोंको पधारना चाहिये।

आपरेशन कराया—सर सेठ हुकुमचन्दजी सा० इन्दौर व उनकी धर्मपत्नी सौ० कंचनबाईने युवान बनने व निरोग रहनेके लिये जर्मनी डाक्टरसे आपरेशन कराके बंदरकी गांठ अपने शरीरमें प्रवेश कर ई है। कहते हैं कि बंदर मरा नहीं और १० मिनिटमें ही कूदने लग गया था।

सोनासणसे शिखरजीका संघ—माघ सुदी ११ को सोनासणसे सेठ जीवाभाई उगरचन्द गांधीकी ओरसे सम्मेदशिखरकी यात्राको संघ निकलनेवाला था जिसमें २०० यात्री होंगे। प्रत्येक यात्रीसे सिर्फ ९१) लिये गये हैं। संघ काशी होकर ईसरी पहुंचेगा। डेढ़ माहका प्रोग्राम है।

ऋषभ ज्ञान जयन्ती—अमरोहामें फाल्गुन कृ० ९-१०-११को समारोहसे मनाई जावेगी।

उत्तीर्ण हुये—महावरा नि० पं० नाथूरामजी जैन (गोलालारे)ने बरमा केमिकमें डाक्टरी और ज्योतिष शास्त्रीकी परीक्षा पास करली है। तथा पं० रामकुँवरबाईने "आयुर्वेद विशारद" परीक्षा पास की है। बधाई!

दशमी प्रतिमा—ब्र० केशरीचन्दजीने माघ वदी ११को बड़वानीमें दशमी प्रतिमा धारण की है।

आगरासे गिरनारको स्पेशल-ट्रेन ता० १५ फरवरीके शामको ७ बजे रवाना होगी। जो जाना चाहें शिवनारायण जैन मानपाड़ा, आगरासे पत्रव्यवहार करें।

पैंडत—(मैनपुरी)के माघके मेलेमें १००००० आदमी आये थे। जीवदया सभाके प्रयत्नसे एक भी प्राणीकी हिंसा नहीं हुई।

सेठ रावजी सखाराम दोशी–का कलकत्तेमें आचार्य संघके समय कीर्तन हुआ था।

प्रतिष्ठा होगी–आशापुर (टीकमगढ़)में जो प्राचीन जिनायतन निकले हैं उनकी प्रतिष्ठा फाल्गुन सुदी ९ को होगी।

अहमदाबाद–की प्रे० मो० दि० जैन बोर्डिंगके विद्यार्थी नेमचन्द केशवलालने ता० २६के राष्ट्रध्वजके दिन आजन्म खादी पहिरनेकी प्रतिज्ञा की। और कुछ विद्यार्थियोंने राष्ट्रहित प्राणार्पण तक करनेकी प्रतिज्ञा की थी।

मोरेना–में आचार्य संघ १६ जनवरीको पहुंचा था। १८ को रथोत्सव हुआ था। संघ समक्ष २०–२५ पण्डितोंने पंचाणुव्रत ग्रहण किये थे।

तारंगाजी–के यात्रियोंसे जो १) मुंडका (कर) लिया जाता था वह मगसिर माससे बंद कर दिया गया है। अब गुजरातके प्रत्येक दिगम्बर जैन गृहसे १) वार्षिक लिया जावेगा।

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि–का वार्षिकोत्सव फाल्गुण शुक्ला २ से ७ तक होगा। न्यायाचार्य पं० गणेशप्रसादजी वर्णी आदि अनेक विद्वानोंका समागम होगा। आनेवालोंको सागर स्टेशनसे आना चाहिये।

देहली जयंती उत्सव–के समय मंडलका १९वां वार्षिकोत्सव, वर्द्धमान पब्लिक लायब्रेरीका १ रा उत्सव, सार्वधर्म सम्मेलन, कवि सम्मेलन आदि अनेक कार्य होंगे।

बम्बई परीक्षालय–की परीक्षा ता० १२ अप्रैलसे होगी। इस वर्ष चौथा भाग, छहढाला और मराठी रत्नकरण्डके सिवाय बाकी सब ग्रन्थोंकी कक्षावार ही परीक्षा होगी।

विदुषी चम्पावतीदेवीका वियोग–खेदके साथ लिखना पड़ता है कि चम्पावतीदेवी (सुपुत्री लाला शिवरामलजी) अम्बालाका असमयमें वियोग होगया। आप कलकत्ताकी न्यायमध्यमा पास कर चुकी थीं और गोम्मटसार, राजवार्तिक आदि ग्रंथराजोंका अध्ययन किया था। द्रव्यसंग्रह, रत्नकरण्डकी भाषाटीका भी की थी। अन्त समय ६०००)का दान किया है। आपके वियोगसे जैन स्त्री–संसारकी बहुत क्षति हुई है।

रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्दजी–इन्दौरके वियोगमें सागर, मथुरा, इन्दौर, बड़नगर सिवनी आदि अनेक स्थानोंपर शोक सभायें की गई हैं। आपने अन्त समय ५१०००) का दान किया है। वास्तवमें जैनसमाजमेंसे एक श्रीमान् धर्मात्माके उठजानेसे भारी हानि हुई है।

भेलसा–निवासी पं० मूलचन्दजीके ज्येष्ठ भ्राता कन्हैयालालजीका माघ कृ० अमावस्याको स्वर्गवास होगया! आपने अन्त समय ५०)का शास्त्र दान किया है।

अन्त समय दान–श्रीमती मगनबाईजी जे० पी०ने अन्त समय ६३२४)का दान किया है। इनसे तो छात्रवृत्तियां, स्त्रियोपयोगी पुस्तक प्रकाशन, संस्थाओंको सहायता और बम्बई परीक्षालयमें उत्तीर्ण स्त्रियोंको पारितोषिक इत्यादि शुभ कार्य होंगे।

गिरनारजी स्पेशल–जो १४ जनवरीको कासगंजसे गिरनारजीको रवाना हुई थी वह

सानंद यात्रा करके १४ फरवरीको कासगंज पहुंच गई है। उसमें १४० जैन थे। किराया दोनों ओरका सिर्फ १९=) लिया गया था। जूनागढ़में संघके समय रथयात्रा भी निकाली गई थी। बाबू बद्रीप्रसादजीको तमाम प्रबंधके उपलक्षमें 'सिंघई' की पदवी प्रदान की गई है।

आचार्य संघ पर उपसर्ग—आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज संघ सहित उत्तर हिन्दुस्तानमें विहार करते हुये राजाखेड़ा (धौलपुर स्टेट) में पहुंचे। वहां पर छोटालाल नामक एक ब्राह्मणने नग्न साधुओंको ग्राममें आनेका विरोध उठाया। जब संघ ग्राममें पधारही चुका था तब उस ब्राह्मणने एक भारी षड्यंत्र रचा और मुनियोंको मारनेके लिये ता० ४-२-३० को पचास साठ आदमियोंको लेकर आया। मगर पुलिसके प्रबन्धसे वह सफल न होसका किन्तु उसे जैनियोंने पकड़ लिया। फिर क्या था, दंगा शुरू होगया और जोर बढ़ने लगा। तब पुलिसने फायर किया जिससे गुंडे भाग गये। फिर छोटालालके दो लड़के अगुआ होकर १०० आदमियोंको लेकर आये और जैनियोंके साथ मारामारी शुरू की जिसकी शान्तिके लिये पुलिसने फिर फायर किया। सब लोग भाग गये।

इतने पर भी इन लोगोंकी मस्ती शांत नहीं हुई और करीब डेढ़ हजार आदमियोंने रात्रिको ९ बजे हमला किया! इस समय तो जबरदस्त दंगा हुआ, कुछ लोगोंकी अंगुलियां तलवारोंसे कट गईं ऐसा सुना जाता है। धौलपुर पुलिस सुपरि० मिस्टरी लेकर आये और दुष्टोंपर फायर करना प्रारम्भ किया। तब कहीं क्षुब्ध वातावरण शान्त हो पाया। संघ सानंद आगरा पहुंच गया है।

गोरोंने जैन मंदिरमें गोली चलाई!

देहली ३ फरवरी—मोठकी मसजिदके करीब एक बहुत प्राचीन जैन मंदिर है जिसमें बगीचा भी लगा हुआ है और उसके अन्दर तकरीबन पचास साठ सालके पालतू मोर रहते हैं। वहां पर ता० १० जनवरीको मिलटरीके दो गोरे शिकार खेलनेकी गरजसे आये। वहांके लोगोंने तथा पुजारियोंने उनको मना किया। उन्होंने कहा कि हम शिकार नहीं खेलेंगे। लेकिन फिर भी मोरोंपर निशाना लगाया, जिससे तीन मोर मर गये। तब गांवके आदमी उनके पास आये और उनसे कहा कि मने करनेपर भी तुमने यह मोर क्यों मारे? उन आदमियोंके झुण्डपर गोरोंने फायर किये जिससे कि कई आदमी जख्मी हुए और एकका सर फट गया! फिर वह उन मोरोंको थेलेमें बंद करके लेजाने लगे। इतने हीमें गांव वालोंने बंदूक छीन ली। इस गरजसे कि निशानी रह जाय और मामलेकी तहकीकात बखूबी होजाय। तब गोरोंने पत्थर उठाकर एक आदमीके सरपर मारा जिससे उसका सिर फट गया। लोगोंने उसी वक्त कुतुबके थानेमें रिपोर्टकी और तीनों मोर, बंदूक, कबूतर और थेला थानेमें पेश कर दिये और रिपोर्ट लिखवा दी। पुलिस मौकेपर आई और तहकीकात की। वे गोरे गिरफ्तार कर नई छावनीमें रक्खे गये हैं। घायल अभी अस्पतालमें हैं।

'श्वेताम्बर जैन' आगरा।

(ले०-पं० सिद्धसेनजी गोयलीय, उजेडिया।)

[गतांकसे आगे]

चौथे-पर्देके कारण गृहसुखकी भी प्राप्ति नहीं होती। जहांतक मान पड़ता है जिन घरोंमें पर्देकी प्रथा है उनमें स्त्रियां केवल बाहरके लोगोंसे ही पर्दा नहीं करतीं-अपने जेठ, श्वसुर आदिसे भी पर्दा करती हैं और दूसरोंके सामने अपने पतिको देखकर भी गजभर लम्बा पटाक्षेप कर लेती हैं। कैसे आश्चर्यकी बात है कि जो श्वसुर पिताके समान होता है उससे भी बहू पर्दा करती हैं। मान लो किसी घरमें अकेली एक स्त्री है और वह बेटेकी बहू है; अब अगर उसका श्वसुर घरपर आता है और उसे कोई बात पूछनी होती है तो बहूसे जवाब तक नहीं मिलता। इसी प्रकार यदि बहूको कुछ कहना होता है तो वह श्वसुरसे बोल नहीं सकती। किसी भी शास्त्रमें ऐसा लेख नहीं है कि स्त्रीको अपने श्वसुर अथवा जेठसे पर्दा करना चाहिये। स्त्रियां यहांतक करती हैं कि अपने पितृ तुल्य श्वसुर आदिसे बोलती नहीं किंतु नौकर आदिसे वे बराबर बोलचाल। संबंध रखती हैं। दूसरे घरमें परदा और बाहर जाकर हरिद्वार, काशी आदि स्थानों-मेलोंमें जहां हजारों गुण्डे बदमाश मुसलमान आदि वस्तुऐं बेचते हैं परदा न कर उनसे बोलती हैं, खरीद करती हैं, हंसी मजाक तक उड़ती है! आश्चर्य!

पांचवें पर्देकी प्रथाके कारण अतिथि सत्कारमें भी बाधा पड़ती है। मान लीजिये कि कोई अतिथि किसीके घरपर आया और घरमें उस समय केवल स्त्रियां ही हैं, पुरुष बाहर व्यापारादिके लिये गये हुए हैं। अब वह बेचारा सिवाय इसके कि घरपर दो चार आवाज देकर चला जाय और क्या करेगा? अन्दरसे एक तो आवाज आएगी ही नहीं और यदि आई भी तो यह आएगी कि हैं नहीं, बाहर गये हैं। अब कभी पुरुष घरपर आवेंगे तब कहीं जाकर बिचारेकी आवभगत (पाहुनगति) की जायगी। जिन प्रांतोंमें पर्देकी प्रथा नहीं है वहां ऐसा नहीं होता, वहां पुरुषोंकी अनुपस्थितिमें स्त्रियां सब काम कर लेती हैं। अभी गुजरातके दौरेमें मुझे पूर्ण अनुभव हुवा कि कितनी ही जगह मुखियाके न होनेपर स्त्रियोंने ही उनकी अनुपस्थितिमें आव भगतके अतिरिक्त चन्दा (टीप) भी करके दिया है। यदि इधर भी परदेवाली स्त्रियां होतीं तो चन्दा बहुतसी जगहोंपर न होता। दूसरे अतिथि सत्कार करना, उन्हें प्रीतिसे भोजन खिलाना यह कार्य स्त्रियोंका ही है। यदि स्त्रियां इस कामको न करें तो वे एक प्रकारसे पुरुषोंके ऊपर बोझा देती हैं। पुरुषोंको इतने काम होते हैं कि वे यह सब नहीं कर सक्ते हैं। यह स्त्रियोंका कर्तव्य है कि वे पुरुषोंके काममें सहायता दें।

बड़े२ घरानों (सेठ, साहूकारों) में देखा जाता है कि उनके यहां रोटी बनानेवाले नौकर लोग होते हैं, वे हर अतिथियोंको भी जिमाते

है। क्या कभी नौकरों द्वारा भी अतिथि सत्कार कराया जाता है? श्री महाशास्त्र तत्वार्थसूत्रजीमें तो दूसरेको अतिथि–सत्कारके लिये कहना अर्थात् मुझे कार्य है मैं बाहर जाता हूं तुम उनको आहार दे देना आदि अतीचार माना गया है।

छट्टे–पर्देके उठा देनेसे स्त्रियां घरकी चीजोंको स्वयं खरीद सक्ती हैं। जिन प्रांतोंमें परदेकी प्रथा नहीं है उनमें सब चीजें स्त्रियां खरीद लाती हैं। इस पर हमारे कुछ पर्देके विरोधी मित्र यह कहे बिना न रहेंगे कि यदि बाजारोंमें स्त्रियां सौदा खरीदने जायगी तो उनका चारित्र खराब होजायगा, सो इसके उत्तरमें मैं यही कहूंगा कि गुजरात–दक्षिणकी स्त्रियां पंजाब देहली व यू० पी० प्रान्तकी स्त्रियोंसे चारित्रमें कम नहीं होतीं।

इसलिये जब बाजारमें सौदा खरीदनेसे उनके चारित्र खराब नहीं होते तो इन प्रांतोंकी स्त्रियोंके भी चारित्र खराब नहीं हो सकते और न किसीकी मजाल है कि उनकी ओर निगाह उठाकर भी देख सके। इन प्रान्तोंमें बाजार अनेक महिलाएं बजारमें सौदा खरीदती हैं, खुले मुंह घूमती हैं, कोई उनकी तरफ आंख भी नहीं उठा सक्ता। इसके विपरीत जो स्त्रियां घूंघट (पर्दा) करके बाहर निकलती हैं उन्हें देखनेकी लोगोंकी इच्छा होती है और उन्हें ही लोग घूर २ कर (तेज दृष्टिसे) देखते हैं, कारण कि यह एक नियम है कि जितना आप जिस चीजको छिपाएंगे उतना ही अधिक लोग उसके देखनेका प्रयत्न करेंगे। क्योंकि छिपी हुई चीज एकदमसे देखनेमें नहीं आती। इस कारण बार२ उसे देखा जाता है परन्तु इसके जो चीज साफ नजर आती है उसे लोग एक बार भी देख लेते हैं, फिर उसकी ओर देखते तक भी नहीं हैं। अतएव यह भय करना कि पर्देके उठ जानेसे लोग स्त्रियोंको बुरी निगाहसे देखेंगे, निर्मूल है।

हां, यहांपर यह बता देना भी आवश्यक है कि जिस प्रकारके चमकीले भड़कीले कपड़े पंजाब, देहली और संयुक्त प्रांतकी स्त्रियां पहनती हैं तथा सिरसे लेकर पैरतक आभूषणोंसे लदी रहती हैं वे हानिकर हैं और सच पूछो तो वे ही बुराईके कारण हैं। उन्हें देखकर अवश्य रास्ता चलतोंकी निगाह स्त्रियोंपर पड़ेगी। गुजरात, महाराष्ट्रकी स्त्रियां सादे कपड़े पहनती हैं, जेवर उनके शरीरपर बहुत कम होते हैं। मथुरा, काशी आदि नगरोंमें तीर्थस्थानके कारण अनेक गुजराती, दक्षिणी स्त्रियें आती हैं और वे खुले मुंह बाजारमें निकलती हैं। उनपर किसीकी भी कुदृष्टि नहीं पड़ती कारण कि वे पंजाब और यू०पी० व देहली प्रान्तकी स्त्रियोंके समान सिरसे पैरतक आभूषणोंसे नहीं लदी होतीं और न उनकी तरह चमकीले भड़कीले कपड़े पहिने होती हैं। अतएव परदेके उठानेके साथ साथ इस बातकी प्रथम आवश्यक्ता है कि आभूषणों और चमकीले भड़कीले कपड़ोंका पहिनना कम किया जाय। हम विश्वास दिलाते हैं कि यदि स्त्रियोंमें शिक्षाका प्रचार किया जावे तथा परदेकी प्रथाको उठाकर उन्हें सादा लिबास पहिननेका उपदेश दिया जावे तो उनपर किसी

प्रकारकी कोई आपत्ति नहीं आसक्ती किन्तु उनका स्वास्थ्य अच्छा रह सक्ता है, वे निरोगी सन्तान उत्पन्न कर सक्ती हैं, अपने ज्ञानको बढ़ा सकती हैं तथा पुरुषोंकी सहायक होसक्ती हैं।

सातवें–मुझे कई बार लग्न (शादी) में फेरे करानेका अवसर प्राप्त हुवा है व होता रहता है। देखा जाता है कि कन्याको बिलकुल चारों तरफसे लपटकर बैठा देते हैं–उसका सांस घुटने लगता है। विवाहकी विधि किसी भी प्रकार ठीक नहीं होती। सप्त वचन जो वर और कन्याके द्वारा परस्परमें कहे जाने चाहिये किन्तु उनमें कोई वर ही अपने मुंहसे कहता होगा परन्तु परदेनशीं कन्या तो कोई भी अपने मुखसे नहीं कहती, दोनों तरफके वचन गृहस्थाचार्य (पंडित) ही कहकर पूर्ण कर देता है। क्या इस प्रकारके धर्मकार्य करनेमें भी शर्म? धार्मिक कार्योंमें तो इतनी शर्म परन्तु जहां गालियोंसे भरे हुए गीत गाये जाते हैं, नृत्य होता है, आपसमें कहती हैं तब वह शर्म, वह पर्दा किधर कूच कर जाता है सो समझमें नहीं आता है। धन्य है ऐसी समझको!

एक पंजाबी स्त्री (परदेकी विरोधिनी) कहती थी कि संसारमें जो अंग शरीरके ढकने चाहिये वे तो ढके नहीं जाते और जो अंग सदैव खुले रहने चाहिये उन्हें ढकती हैं। जैसे–गुह्य अंगोंको मोटेर वस्त्रोंको पहनकर लज्जा ढकनी चाहिये परन्तु रेशमी बारीक (महीन) साड़ियां और मलमली किनारीकी धोतियां पहनकर अपनेको वे धन्य समझती हैं और मुखपर डेढ़ गज लम्बा परदा लटकता है! इसमें सन्देह नहीं कि यदि धोतीके ऊपर पानी पड़ जावे तो उसका पहनना न पहनना बराबर होजाता है!

आठवें–पति पत्नीका अधिक प्रेम परस्पर तभी होता है जब स्त्री पतिको अपने हाथसे बनाए हुये नाना प्रकारके व्यंजनोंसे पूर्ण भोजनको खिलाती हैं। पत्नीने तो पर्दा किया और नौकरने भोजन खिलाया तो फिर स्त्री क्या दर्शन करनेको घरमें आती है?

बुन्देलखंड आदि प्रान्तोंमें तो स्वयं अधिकांश स्त्रियां पानी विधिपूर्वक छानकर लाती हैं, नौकरोंपर पानीका भरोसा नहीं करतीं, नौकर क्या जाने अक गालन विधि क्या होती है? हमने देखा है जो धीवर (मांसाहारी) या और जातिवाले सेठ लोगोंके यहां पानी भरते हैं वे छन्ना नामको ही कूएपर लेजाते हैं, पानी छाना और उसको वैसे ही (बिना जिवानी किए) निचोड़ दिया जिससे वे सारे जीव एकदम मर जाते हैं!

तभी लोग तो यह कहावत कह देते है "पानी पीवे छानके, जीव मारे जानके" जो कि सोलह आना चरितार्थ होती है। तथा अन्नको शोधकर स्वयं पीसना-कल (पेंच) का पीसा नहीं खाना, स्वयं रसोई बनाना, अतिथियोंको परोसना, पूजा--पाठादि करना सभी क्रियायें स्वयं होती हैं। इनका अनुकरण सभी प्रान्तवासी लोगोंको भी करना चाहिये। स्त्रियोंको पढ़ाना कहांतक ठीक है, उनका शीलधर्म कैसा होता है आदि विषयको विशेष फिर कभी लिखूंगा। श्रीयुत

मा० भूरामलजी मुशरफ कृत, माताका बेटीको उपदेश, ससुराल जाते समय देखिये उसमें मां, क्या ? शिक्षा देती है।

आज भई मेरी बेटी पराई सास ससुर घर जाना होगा।
सास ससुर परिजनकी सेवा, पति पुजा नित लाना होगा॥
धर्म कर्मका साधन निशदिन, नारी धर्म निभाना होगा।
पहिले उठना पीछे सोना, दिनभर हाथ हिलाना होगा॥
भोजनकी विधि शोच समझकर, पानी छान बरतना होगा।
लोभ मान अरु माया ममता, क्रोधकी आग बुझाना होगा॥
कुल मर्यादा नहीं बिसरना, लाज शर्म मन माना होगा।
धन दौलतका गर्व गमाकर, अन धन दान दिलाना होगा॥
वस्त्राभूषण, गहना गांठा, इनका हठ नहीं करना होगा।
आमदसे कम खर्च उठाकर, दुःख निवारण करना होगा॥
शीलरतनको यत्नमें रखकर, पंचाणुव्रत धरना होगा।
क्रोधित होय पति जो कदाचित, भाव विनीत बताना होगा॥
विद्या पढ़कर निज हित करना देव, धर्म गुरु लखना होगा।
धर्म नारीका भूषणमें जो तादी घर शिव पाना होगा॥
'बालक'की शिक्षा मन धरकर, घर२ मंगल गाना होगा।
आज भई०... ... ... ॥

क्या उपर्युक्त पद्यमें आई हुई बातें परदेवाली औरतसे होसक्ती हैं? पाठको! धर्मरत्न पं० दीपचंदजी वर्णी कृत "पुत्रीको माताका उपदेश" नामक पुस्तक सूरतसे मंगाकर अवश्य पढ़ें।

नोट—इस लेखमें और भी लेखोंसे सहायता की गई है।

नवीन शास्त्र--सूर्य प्रकाश।

सफल जीवन।

(ले०-पं० किशोरिलालजी शास्त्री-सादूमर)

कीटाणुसे लेकर मनुष्य तक जन्म लेकर मृत्युके दुःखोंको भुगतान करते हैं। जिस प्रकार प्रभात, सायं, दिन, रात्रि, पुण्य, पाप, सुख, दुःख, भलाई, बुराई, सत्य, झूठ, शीत, उष्ण, सज्जन, दुर्जन और उदय, अवसानका जोड़ा विश्वमें पाया जाता है, इसी तरह अनादिकालसे जन्म मरणका सवाल लगातार चला आया है व अनन्तकाल तक चला जावेगा। जिसने जन्म लिया उसका मरण प्रकृतिके नियमानुसार अवश्यंभावी है। तीर्थंकर, बलभद्र, चक्रवर्ती और नारायण सरीखे महाबलशाली शक्तिसम्पन्न आसमुद्रांत पृथ्वीका स्वामित्व पानेवाले भी अगणित इस धरातलपर आये! और आयु बेला आनेपर सभीने धन, जन और शरीर छोड़कर दूसरी गतिके प्रति प्रयाण कर दिया। मृत्यु (काल) आजानेपर इन्द्र धरणेन्द्र यहांतक कि जिनेन्द्र भी मंत्र, तंत्र और औषधिसे किसीको भी नहीं बचा सके हैं। इसीलिए आबाल वृद्ध संसारको क्षणभंगुर और असार कहते हैं। आज सुबह जो बड़े सजधज कर बादशाहतके तख्तपर बैठा हुआ है संभवतः मध्याह्न समय वही पुण्यात्मा परेतभूमिमें दग्ध शरीर देखनेमें आता है। आयु-कायका कोई भरोसा नहीं है कि कब-च्युत होजावे।

इस धरणीपर तिर्यंच, मानव और देव

पर्याय परिणत जीव मृत्युके प्रतीकारमें व ऐहिलौकिकी भौतिक विलासितामें जीवनभर व्यतीत कर देते हैं। हरएक प्राणी यह चाहता है कि शारीरिक विलासिताओंकी कमी न हो और हमको मरण न करना पड़े। प्रातःकालसे शाम तक दुनियामें जितनी दौड़धूप होरही है जितने कारोबार चल रहे हैं, गरीबसे लेकर अमीर तकके जितने प्रयास हैं, उन सबका मुख्य कारण ऐहिलौकिक उत्कर्ष ही है। योगी वियोगी, रोगी–निरोगी। इनमेंसे योगी और निरोगीका जीवन अच्छा माना जाता है।

इसी तरह विचाराधीन विषय है कि जिसका जीवन सफल है उसका जन्म लेना और मरण करना प्रशंसनीय एवं स्तुत्य है। इस दुनियांमें कितने प्राणी नहीं आये और चले गये, किंतु आज सफल जीवन आत्माओंका ही नाम स्मृतिपथ प्रस्थायी बना हुआ है। सफल जीवनवाले व्यक्तियोंकी गुण गाथा विश्वमें गायी जाती है। भारतके प्रत्येक व्यक्तिकी व खासकर जैन जातिके बच्चे बच्चेकी प्रबल धारणा होवे कि सफल जीवन अनन्त दारुण कष्टोंसे बढ़कर है। सिंहनीकी एक संतान वनका अद्वितीय शासन करती है। गर्दभीके कई संतान होनेपर भी उसे जीवनभर भार वहनमें जीवन लीला समाप्त करना पड़ती है। किसी कविने कहा है–या दुनियांमें आयके छोड़ि देय तू ऐंठ। लेना है सो लेय ले उठी जात है पैंठ॥१॥ सबसे मनुष्यको सुध आती है क्रोध, मद मात्सर्य, माया, ईर्षा, द्वेष और लोभ प्रभृति कुसंस्कारोंका उसके मानस मंदिरमें इतना ज्यादा अधिकार होजाता है कि उनके कारण यह प्राणी यथार्थ हितकी तरफ नहीं झुक पाता है। यही कारण है कि आज भारतमें या जैनसमाजमें बहुत कुछ आर्थिक व ज्ञानादि असाधारण शक्ति होनेपर भी तमाम भारत या जैनसमाज फूटका अड्डा बन रही है। "मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना" के सिद्धांतानुसार प्रति व्यक्ति मतभेदके महान चक्रमें पड़ा हुआ है। क्रोधादि कुत्सित वासनाओंके पूर्ण करनेके लिए मानव न जाने कितने२ अनर्थ नहीं करता है। यहांतक "पराये अपशकुनके लिए अपनी नाक कटा लेने" की कहावतके अनुसार अपना सर्वस्व तक खो चुकनेके लिए तुल बैठता है। इन्हीं दुर्वासनाओंकी पूर्तिके लिए लाखोंका दानपुण्य किया जाता है। लोग वर्षों पूजन, स्वाध्याय करते हैं। तीर्थयात्रा गजरथ प्रतिष्ठायें बड़े हावभावसे की जाती हैं। विद्यालय, औषधालय आदि कायम किये जाते हैं। समय पड़नेपर सज्जनोंकी मायापरिपूर्ण असाधारण आतिथ्य एवं सेवा सुश्रूषा की जाती है।

विश्वमें जीवन सफल बनानेके कृत्रिम अगणित उपाय हैं। जबतक लौकिक व पारमार्थिक दोनों उद्देश्योंको लेकर जीवन–प्रणाली निर्माण नहीं की जावेगी तबतक सफल जीवनकी कोई आशा नहीं समझना चाहिए। मनुष्य मात्रके लिए दो प्रकारका मार्ग जीवन सफल बनानेके लिए है। १–गृह परिवारको छोड़कर पारमार्थिक सिद्धिकी तरफ ही अपना लक्ष्य बांधकर जीवन यापन करना। २–चूंकि इस उत्तम मार्गकी नाना उलझनोंके कारण प्राप्ति सहसा मिल ही

नहीं सक्ती है अतः गार्हस्थ्य जीवनमें ही रहकर एक देश पारमार्थिक मार्गका अनुसरण करते हुए जीवनकी पगडण्डियां तय करना है। आज जैन भारतमें दूसरे मार्गका पथिक बननेकी ही सुगमता है। कारण कि लौकिक जीवन पारमार्थिकताके बिना एक प्रकारसे नास्तिक जीवन है। मनुष्य-पर्यायको पाकर पुनः विषयोंमें मदोन्मत होजाता है। पूर्वमें जो पुण्य संपादन किया था; उसके अनुसार इस पर्याय रत्नको पाया। अब कर्तव्य है कि फिरसे अच्छी पारलौकिक कमाई संपादन करें जिससे दूसरे भवमें सुखकी प्राप्ति हो। ये भौतिक धन, स्त्री पुत्र और धन बांधवादिक तो यहीं पड़े रहेंगे, कोई साथमें आनेवाले नहीं है। साथमें अपना किया हुआ पुण्य पापही जाता है। वह किसीके रोके भी नहीं रुक सक्ता है। इसलिए लौकिक जीवनके साथ पारलौकिक उन्नतिकी चेष्टा करनेसे इस जीवनकी सफलता मानी गई है।

पारलौकिक जीवनकी साधक सामग्री आचार्योंने गृहस्थके लिए देवपूजा, गुरूपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये षट्कर्म बतलाये हैं। जिस प्रकार किसान खेती करता है, उसे उत्तम फल स्वरूप गेहूं आदि उत्तम पदार्थोंकी प्राप्ति तो होती ही है, साथमें भूसा वगैरह पदार्थ अनायास ही मिल जाते हैं। इनके लिए खासकर प्रयत्न नहीं करना पड़ता है। इसी तरहके देवपूजादिक षटकर्मोंके करनेसे साक्षात व परम्परासे स्वर्गमोक्षकी प्राप्ति होती है साथमें इस भवमें पुत्र पुत्रादि व धन धान्यादि तो अनायास ही प्राप्त होजाते हैं। इस तरह जैनी मात्रका कर्तव्य है कि उभयसिद्धि विधायक शास्त्रोक्त षट्कर्मको दैनिक करना चाहिए। इसके बिना नरभव शून्य सरीखा समझना चाहिए।

जीवन-संग्राममें लोकव्यवहारकी बहुत भारी जरूरत है। कोई व्यक्ति विशेष धनवान हो या गुणवान, यदि वह व्यवहार ज्ञान शून्य है तो वह अपने जीवन संग्राममें विजयी नहीं बन सक्ता है। लोक व्यवहारमें बहुतसे सद्गुणोंका समावेश पाया जाता है-यथा, विश्वप्रेम, एकता, जातिप्रेम, धर्मप्रेम इत्यादि अपरिमित मानवोचित सुकृत्य, लोक व्यवहारके अतीव उपयोगी हैं। सबसे प्रथम लोक यात्राके निर्वाहके लिए न्यायपूर्वक आजीविका सम्पादन करना चाहिए। जिसप्रकार योगियोंको एक धागा रखना महापाप है, उसी तरह दरिद्रमय जीवन गृहस्थके लिए अत्यन्त हानिकारक है। अतः न्यायपूर्वक आजीविका करना चाहिए। आजीविका हजारों प्रकारसे की जासक्ती है। मगर राजदण्ड व पंचदण्डका दोष जिसमें न आवे ऐसी आजीविका गृहस्थके लिए निर्दोष बतलाई गई है। जब अपने पास यथोचित आमद है, तब ही धार्मिक व अन्य लौकिक सेनाओंमें अग्रसर हो सक्ते हैं, अन्यथा नहीं। अतः धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरुषार्थोंके सेवन करनेके सिद्धांतसे भी गृहस्थको आजीविका आद्योपान्त सोच विचार कर करना चाहिये।

२-प्रेम मनुष्यका प्रकृतिसिद्ध अधिकार है।

जिसके दिलमें प्रेमकी गंध नहीं है वह इस भारतमाताके लिए निर्गन्ध टेसूसे भी घटकर निष्कर्मा भारमात्रकी वस्तु है। प्रेम एक अलौकिक वस्तु है। आज अगर भारतके बच्चे२में विश्वप्रेम या देशप्रेम या जाति और धर्मप्रेमकी भावना होती, रगरगमें प्रेम मिश्रित खूनका संचार होता तो भारत परतंत्र न होता; या जैनसमाज अपनेको सबसे पिछड़ी हुई न देखती। जगह जगह जो आज दलबंदियां देखनेमें आती हैं, उसके स्थानमें भाईसे भाई गले लगाकर मिलते। घर घरमें द्वेष, ईर्षा, कलह व अनैक्यता अपना साम्राज्य न जमा सकी। विश्वप्रेम या प्रेमभावके यथार्थ न पाये जानेसे हमारी अमोघ शक्तियां धूलिधूसरित न होकर प्रचण्ड सूर्य प्रतापके समान आसमानमें जगमगाती नहीं दिखती हैं। हमारा व्यापार प्रेम बंधन न होनेके कारण प्रत्यहं पतित एवं गिरतीपर है। जातीय दशा बिखरती हुई जाती है। इसलिये जीवन सफल बनानेके लिये प्रेम या निस्वार्थ वात्सल्य भावकी अत्यधिक आवश्यक्ता प्रतीत होरही है।

आज कोई विपत्ति ग्रसित बंधुओंके साथ सहानुभूति मात्र भी दिखलानेवाला नहीं दिखता। भाई२ सहानुभूतिकी बजाय एक दूसरेको नीचा दिखानेकी हिरसमें अपने सर्वस्व तकको नष्ट करनेपर उतारू हैं। क्या ऐसी व्यावहारिकता हमारे व पराये जीवनको सफल बना सक्ती है? नहीं।

प्रमाद व अकर्मण्यता भी जीवनक्षेत्रमें खतरनाक अवस्था है। भारतका बहुभाग मानव समाज दासवृत्तिमें पड़कर या भिक्षावृत्ति या परमुखापेक्षित्वसे उदरपूर्ति द्वारा विशिष्ट प्रमादशील व अकर्मण्य होरहा हैं। आबाल, वृद्धको अपने पदस्थ परिस्थितिके अनुसार स्वपर कल्याणार्थ प्रयत्नशील रहना चाहिए।

खर्च बाहुल्य भी जीवनको अशांत बनाये रखता है। विलासिताकी होड़ खर्च बाहुल्यकी ओर अग्रसर बना देती है। ऐसी जगह स्मरण आता है कि आवश्यक्ताओंकी पूर्तिमें शांति नहीं है। बल्कि आवश्यक्ताओंकी निवृत्तिमें सुख शांति है। इसलिये बहु विडम्बनाओंमें न पड़कर सादगी जीवन बिताना नितरां प्रशंसनीय है। पाठको! इसप्रकार इस छोटेसे लेखमें जीवन सफल बनानेके अमोघ एवं अचूक लौकिक व पारमार्थिक सत्प्रयत्न बताये गये हैं। जीवनके उपयोगी बनानेमें ही व्यक्तित्व और वक्तृत्वकी रक्षा होसकती है। अप्रशस्त जीवन मृत्युसे बढ़कर है।

देखा।

(गजल)

दुनियामें हमने सबको, मतलबका यार देखा।
अपना सगा न लेकिन, कोई गम गुसारे देखा॥
सब हैं बनी-बनीके, बिगड़ीका यां न कोई।
ये खूब दिलमें हमने, अपने विचार देखा॥
ये नाते और रिश्ते, सब हैं ठगीके रस्ते।
मतलबके बाद सबको, करते किनार देखा॥
भरते थे दम, जो दमका, आखिर उन्हें भी इकदिन,
बगले ही तकते-तकते, बके शिकार देखा॥
इस थोड़ी जिंदगीमें, ये कर लिया तजुरबा।
झूंठा 'प्रिये' यहांका, सब कारोबार देखा॥

'प्रिय'
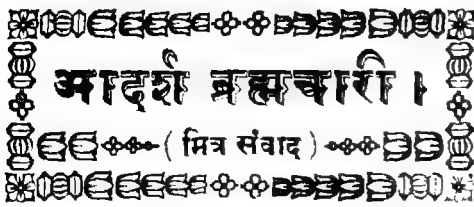
आदर्श ब्रह्मचारी।
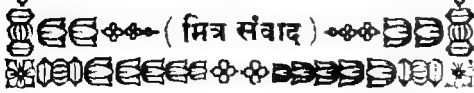
(मित्र संवाद)

(ले:–पं० दीपचन्द्रजी वर्णी, चौरासी ।)

माघका महिना होनेसे सभी जगह ठंड करारी पड़ रही है, आजकल जहां तहां ऊनके वस्त्रों तथा जिन्हें ऊन मयस्सर नहीं वे बिचारे रुईसे भरे हुए गुदड़ोंको पहिरे हुए दिखाई देते हैं। फिर भी दुर्दैवसे करोड़ोंकी संख्यामें यहां हमारे भारतीय नरनारी ऐसे दिखाई देते हैं कि जिनको रेशम व ऊन व रुई भरे गुदड़ोंकी तो बात ही क्या परन्तु अपने तनको ढक कर लज्जा निवारण करनेके लिये भी पर्याप्त फटे टूटे वस्त्र तक नहीं मिलते! यदि कोई भाई दया करके उन्हें कोई टाटका टुकड़ा देदेता तो उसे वे कश्मीरी शाल मानकर अपनेको धन्य गिन लेते हैं।

इन दिनों श्रीमानोंकी दशा ही विचित्र हो जाती है, वे तो मलमूत्र तक त्यागनेको घरोंसे बाहर मैदान तक नहीं जाते। और कतिपय तो ऐसे भी होंगे जो सोनेके कमरेके पास ही कमोड रखवा लिया करते हैं, जब हमारे कृषकगण कंधेपर परैना रक्खे हुए खेतोंमें पानी देते तथा रातर भर शिरपर ओस और पवनके झपाटे सहते हुए रखवाली करते हैं।

यद्यपि हमारे योगीजन भी ऐसे समयोंमें चौहटोंपर नदियों या तालाबके किनारे शीत प्रदेशोंमें जहां पानी भी जमकर बर्फ बन जाता है निश्चल ध्यान धरते हैं इसीको पंडित भुधर-दासजीने कैसा अच्छा चित्रण किया है—

शीतकाल सब ही जन कम्पैं,
खरे जहां बन वृक्ष डहे हैं।
झंझा वायु चले वर्षा ऋतु,
वर्षत बादल झूम रहे हैं॥
तहां धीर तटनी तट चौवट,
ताल पार पर कर्म दहे हैं।
सहैं सम्हाल शीतकी बाधा,
ते मुनि तारणतरण कहे हैं॥
(पार्श्वपुराण)

तथापि बाह्य दृष्टिसे दोनों समान रीत्या शीतसे पीड़ित असहायसे दुखी दिखते हुये भी अन्तरङ्गमें दोनोंके दिन रातका अंतर है। एक (गरीब) जब कि चाहकी दाहमें दहकते हुए दुःखसे समय काटते और आर्तरौद्रभावोंसे सचिक्कण कर्म बांधते हैं, तब दूसरे (दिगम्बर जैन साधु मुनि योगी) चाहकी छाहतकसे हटकर स्वात्मानुभवके सुखमें निमग्न हुए धर्म तथा शुक्ल ध्यानोंसे कर्मोंकी निर्जरा करके शिवपुरके पथिक होते हैं।

यह तो हुई सामान्य बात, अब विशेष सुनिये। संसारमें सभी तरहके जीव होते हैं, ऊपर तो दो तरहके जीव बताये जिन्हें अपने ही विषय कषायोंको पोषणसे या उन्हें शोषणसे ही अवकाश नहीं हैं, वे अपनेर नशेमें चूर हैं। उनकी जान दुनियां रहो या जाओ। अब यहां उन लोगोंको देखिये कि जो परके दुःखोंसे दुःखी और उनके सुखोंमें संतोषी हैं। वे हैं कांग्रेसमेन अर्थात् जो घरोंके सब प्रकारके ऐशो आरामको त्यागकर खुले सिर या गांधी टोपी

कमाये मोटेसे सादे खद्दरके वस्त्र पहिरे हुए कोठी काल जाड़ेमें लाहोर (जहां बहुत शीत पड़ती है) दौड़े जारहे थे इनको दिनरात यही धुन सवार थी कि हमारा भारत-देश स्वाधीन हो, सुखी हो। वे अपने भारती नर नारियोंके आर्तस्वरोंको सुनकर उनकी करुण दशा देखकर और उनके धनसे पुष्ट होनेवाले, उन्हींपर अत्याचार करनेवाले स्वार्थी कुत्सन जीवोंके अत्याचारोंसे ऊबकर अपने तन, मन धनको भी भूलकर देशसेवामें लग रहे हैं। इनकी नीति है—

अयं निजः परो वेत्ति गणना लघुचेतसां,
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।
वाह! वे ही पुरुष धन्य हैं !!

इन्हीं दिनों स्कूल, कालेज, कचहरी आदि समस्त राजकीय संस्थाओंकी छुट्टी होती है। इसीसे सभीको कांग्रेसमें संमिलित होने व तीर्थयात्राका शुभ अवसर मिल जाता है। इसलिये हमारे पाठकोंके चिर परिचित मित्रगण भी यात्रार्थ चल दिये और सहकुटुम्ब श्री १००८ जम्बूस्वामी महाराजके निर्वाणक्षेत्र चौरासी मथुरा आ पहुंचे। प्रातःकालसे सन्ध्या तक सभी नर नारियोंने सिवाय छोटे बच्चोंके इस दिन उपवास किया और सारा दिन सामायिक पूजा स्वाध्यायादि धर्मचर्चामें बिताया। वहां स्थित "श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम" का निरीक्षण करके सन्तोष प्रकट किया। परन्तु 'अर्थाभावसे यथोचित उन्नति नहीं कर सका।' इसपर समाजका ध्यान खींचनेके लिये अपनी सम्मति भी लिखी, रात्रिको आश्रमीय ब्रह्मचारियोंने शास्त्र पढ़ा और १ भजन कहा—"वन मुनिराज परम ब्रह्मचारी" इत्यादि। पश्चात् सब लोग यथास्थान गये।

हमारे मित्र ऐसे नहीं थे कि उपवासके दिन ही थके मांदेकी भांति शीघ्र ही निद्रादेवीके आश्रित होजांय। इसलिये वे धर्मचर्चामें ही समय बितानेके लिये एक कोठरीमें बच्चोंको सुलाकर एकत्र होकर बैठ गये कि इतनेमें अपने सहज स्वभावके अनुसार सिगेनजी बोली—

सिगेनजी—लाला! सुशील अब स्यानो होगयो है, सो कहूं बातचीत लगाई है! का अब अगहन तू सिवाके कौन बहुत दिन हैं, बात कहत चार महिना निकर जैहैं।

जबतक कुछ बोलने ही वाले थे कि इतनेमें सुशील उक्त मजन लिखकर आगया और बोला—पिताजी! यों तो हमने श्री जम्बूस्वामी महाराजकी पूजा की है सो यह तो जाना कि यह श्री १००८ जम्बूस्वामीका निर्वाणक्षेत्र है, परन्तु मेरी इच्छा इनके विषयमें विशेष जाननेकी है।

जब०—बेटा! तुम्हारा प्रश्न मार्मिक है। परन्तु तुम्हारी काकीजीने तो और राग छेड़ दिया है, सो पहिले किसका उत्तर दूं?

सुशील—(दूसरे काकीकी बात सुन चुका था, बोला)—प्रथम मेरा, क्योंकि पिताजी धर्म, अर्थ, काम पुरुषार्थोंमें प्रथम धर्म पुरुषार्थ ही मुख्य है, और हम लोग धर्मतीर्थपर धर्मभावनार्थ आये हैं, तिसपर आज उपवासका दिन है। इसमें अन्यान्य बातें छोड़कर धर्मध्यान ही करना चाहिये, ऐसा मैंने रत्नकरण्डमें पढ़ा है और आपने एकदिन श्रीआदिपुराणसे भरत महाराजकी बात सुनाई थी कि जब आदिनाथ भगवानको केवलज्ञान हुआ तथा भरतजीके पुत्र उत्पन्न हुआ

और आयुधशालामें सुदर्शनचक्र रत्न दिखा। ये तीनों समाचार श्री भरतजीको एक साथ सुननेमें आये तब उन्होंने पिछले दो को गौण करके प्रथम भगवान्‌के केवलज्ञान कल्याणोत्सव मनाना ही मुख्य रक्खा था। इसलिये मेरा उत्तर दे दीं जये। संभव है इसमें काकीजीका भी समाधान होजावे। जय०—(भाभीजीकी ओर देखकर) क्या आज्ञा है ?

सिंगेनजी—सुशील तो पंडत होगयो है (हंसकर) ऐसे सही, येईको कड़वो कर देओ, बात तो ठीक कहत है, जो तो संसारको झगड़ो लगोई है, धर्मको समय मुशकलसें मिलत है।

जय०—भाभीजी वास्तवमें यही है (सुशीलसे) सुशील, श्री० जम्बूस्वामीजीका जीवनचरित्र पहिले तीन बार दिगम्बर जैन पुस्तकालय—सूरतसे छप चुका है सो घर रक्खा है और १ नया संक्षेपमें पूजा व मंदिर और सेठ लखमीचंदके घरानेके हालसहित इसी ऋषभ ब्र० आश्रमकी ओरसे छपा हुआ यहीं मिलता है सो तू पढ़ लेना।

सुशील०—जी वह तो पढ़ ही लूंगा, यह तो पुराण पुरुषोंका चरित्र है सो जितने बार पढ़ा जाय उतना ही अच्छा है, इसके सिवाय यहां काकीजी, भाभीजी, जीजी आदि ऐसे भी हैं कि जिन्हें बाचना नहीं आता सो वे भी तो सुनलेंगी।

जय०—हां यह सत्य है, अच्छा सुनो।

जब राजगृही नगरीमें राजा श्रेणिक राज्य करते थे, उस समय उनके यहां राज्यश्रेष्ठ अर्हद्दासजी रहते थे, उन्हींकी धर्मपत्नी जिनमती सेठानीके पुत्र हमारे पूज्य जम्बूकुमार थे। ये बाल्यावस्थासे ही महापराक्रमी, रूपवान और गुणवान थे। एक दिन जब वे १२–१३ वर्षके ही थे, कि राजाका पट्टबंध हाथी छूट गया और नगरजनोंको त्रासित करते हुए इनके महलकी ओर आया। उस समय ये बालकों सहित क्रीड़ा कर रहे थे, सो बालक तो उसे देखकर भाग गये, परन्तु इन्होंने भागना कायरताका चिह्न जानकर उसका सामना किया और शीघ्रही उसे वश करके उसपर चढ़ गये और राजप्रासादमें जाकर छोड़ आये। इस शिशुवयमें इतने भारी साहसको देखकर इनकी सब ओर बिजलीके समान प्रशंसा फैल गई और उसी नगरीके निवासी चार श्रेष्ठियोंने अपनी २ चार कन्याएं इनको देना निश्चित कर लिया। कुछ दिन पश्चात् राजा मृगांक (श्रेणिक महाराजका आज्ञाकारी, जिसने अपनी कन्या श्रेणिक महाराजको देना निश्चित किया था) के यहांसे राजगृहीमें यह समाचार आया कि रत्नचूल विद्याधर आपकी नियोगनीको हरण करनेके विचारसे हमपर चढ़ आया है, गढ़ घेर लिया है, इससे आप हमारी सहायता करो। महाराज श्रेणिकने दर्बारमें ये वृत्त सामंतोंको सुनाकर कहा कि इस कार्यके लिये कौन अग्रेश्वर होता है वह आकर बीड़ा उठाले। बस इतना कहना था कि श्री जम्बूकुमारने एकदम बीड़ा उठा लिया। कहां बाल्यावस्था और कहां विद्याधरसे युद्ध करना! इस पराक्रम व साहसको देखकर लोग आश्चर्यान्वित होगये और परस्पर मुँह ताकने लगे। तब महाराज बोले—आश्चर्यकी बात नहीं है। "पूतके लक्षण पालनेमें ही दिख जाते हैं।" सो तो तुम हाथीवाले दिन देख ही चुके हो, मुझे विश्वास है कि

कुमार अपने कार्यमें सफल होंगे। बस आज्ञा होगई और ये कुछ सैन्य साथ लेकर केरलपुर आपहुंचे। और युद्धमें रत्नचूलको जीतकर मृगांक से संधी करादी। तथा कन्या सहित उन दोनोंको श्रेणिक महाराजकी शरणमें लादिया।

इस घटनाके कुछ ही दिन बाद श्री सुधर्माचार्य जो कि महावीर प्रभुके पश्चात् दूसरे केवली हुए हैं, संघ सहित वहां पधारे सो उनका धर्मोपदेश सुनकर ये (जम्बूकुमार) विरक्त होगये और दीक्षा लेनेका भाव प्रदर्शित किया। जिस मोहवश स्वजन पुरजन तो दुखी हुए ही परन्तु उन वियोगिनी चारों कन्याओंने कहा कि–यदि जम्बूकुमार हमारा पाणिग्रहण करलें तो फिर छोड़ना दुष्कर होजायगा। अतएव जैसे बने, उनको राजी कर लेओ। यद्यपि कन्याओंके पारिवारिक जनोंने उनको इस दुःसाहसके लिये बहुत रोका, पर वे न मानी। निदान उनके पिताओंने आकर किसी तरह जम्बूकुमारको विवाह मात्र कर लेनेपर राजी कर लिया और जिस दिन विवाह होचुका और वे चारों नववधुएं अपनी उमंगोंको लिये हुए कुमारकी चित्रसारीमें प्रथम ही रात्रिको पहुँची कि उनने अपना स्त्री चरित्र आरम्भ किया। परन्तु जैसे काले कंबलपर दूसरा रङ्ग नहीं चढ़ता, ऐसे ही इस वैरागीके चित्तपर उनका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। किन्तु इसने ही अपनी बुद्धि और वैराग्यके बलसे उन्हें भी रात्रि भरमें सच्ची वैरागनी बना लिया।

इसी समय एक विद्युतचर (राजकुमार) जो कि स्वदेश राज्यको त्याग करके चोरोंमें प्रसिद्ध हुआ, इनके यहां चोरीके लिये आया था, सो भी चोरी करना भूलकर इस विरागीके और उन रागनियोंके सम्वादको सुनने लगा। और जब वैराग्यकी विजय हुई तो उसने जीतकी पालीका डँका बजा दिया-वह भी विरक्त होगया।

इस प्रकार सवेरा होते ही स्वामी जम्बूकुमार, इनकी चारों नववधुएँ और वह विद्युतचर (चोर) इत्यादि और भी बहुत जनोंने श्री जिनदीक्षा ग्रहण की और यथाशक्ति तपश्चरण करके स्व स्व योग्य स्वर्गादि गतियोंको प्राप्त हुए। तथा श्री जम्बूस्वामीको उग्रोग्र तपके प्रभावसे (जब कि सुधर्म केवली मोक्षको प्राप्त हुए तब) केवलज्ञान प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् विहार करते हुए आप इस स्थानको प्राप्त हुए और यहां शेष कर्मोंका नाश करके लगभग ८४ वर्षकी आयु पूर्ण करके मोक्षपद पाया।

सब लोग–धन्य है ऐसे महापुरुषको, धन्य है!

सुशील–पिताजी! इनको ब्रह्मचारियोंमें आदर्श क्यों कहा? क्या और कोई आदर्श नहीं हुए?

जय०–बेटा! हुए क्यों नहीं; श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर ये ५ तो तीर्थंकर ही हुए हैं और इनके सिवाय भीष्मपितामह, अकलंकस्वामी आदि बहुत महात्मा हुए हैं।

सुशील–तब इन्हींकी विशेषता क्यों?

जय०–ठीक है, सुनो, वे पांच तो तीर्थंकर ही थे, क्षत्री कुलोत्पन्न थे और भ० भी क्षत्री थे सो युद्ध करने २ ही संयम बिना [illegible] छोड़ गये। अकलंकस्वामी बड़े हुए, जिन्होंने बौद्धोंको पराजय कर समस्त भारतमें जनधर्मका

झंडा फहरा दिया था, परंतु मोक्ष (कालदोषसे) नहीं गये। किन्तु जम्बूस्वामी वैश्य थे और मोक्ष भी गये हैं। यद्यपि नेमिनाथ प्रभुने राजुलजीको विवाहसे पहिले ही छोड़ा था, परंतु इन्होंने तो और भी गजब कर दिया—विवाह करके छोड़ दिया। अरे भाई! देख, एक तो कांटोंकी ओर ही नहीं जाता, एक निकट जाकर बच जाता है, और एक कांटोंपर पैर रखकर भी उनसे आहत नहीं होता, इसलिये चार तीर्थंकरोंने तो विवाह ही नहीं किया। नेमिप्रभुने विवाह करते करते छोड़ दिया और ये तो विवाह करके भी छोड़ गये और रागमें नहीं फंसे।

सुशील—यह तो सत्य है और ये धन्य हैं, परन्तु पिताजी! पहिले कीच लपेटकर फिर नहानेकी अपेक्षा तो उसे लपेटना ही नहीं कि जिससे फिर धोना न पड़े। अच्छा है जैसे उक्त चार तीर्थंकरोंने किया तथा श्री अकलंकस्वामीने भी किया था।

जय०—सत्य है बेटा, तुम्हारा भी किसी अपेक्षा सत्य ही है।

सुशील—तो क्या अब कोई ऐसा आदर्श ब्रह्मचारी नहीं होसक्ता है? भले ही मोक्ष मत होओ परन्तु धर्म और देशसेवा तो करके पुण्य काम कर परंपरा मोक्ष पा सकेगा।

जय०—निसंदेह होसक्ता है और ऐसे अब भी बहुतसे नरोत्तम हैं भी।

सुशील—(कुछ संकोच लज्जा और भय सहित) तो पिताजी मेरा भी ऐसा ही भाव है! मैंने जबसे अकलंकस्वामीका चरित्र पढ़ा है तबसे मेरे बेड़ी भाव भर रहे हैं और आज श्री जम्बूस्वामी महाराजके निर्वाणकी वंदना पूजा करके मेरे ये भाव और भी दृढ़तम होगये हैं, (नत मस्तक हो) मेरी आप सर्व गुरुवर्गोंसे नम्र प्रार्थना है कि जैसे स्वामी अकलंक व निकलंकके पिताने उनको आदेश देकर अवकाश दे दिया था उसी प्रकार मुझे भी आप............

सब लोग—अरे पागल! इन बातोंमें क्या रखा है, तू बच्चा है, खाने खेलनेके दिन हैं। (जय० से) इसीसे तो कहते थे कि देखो सगाई कर दो, तब न मानी!

जय०—सो हानि क्या हुई? कुछ यह कुमार्गमें तो नहीं जा रहा है?

सब—ऐसा समयकाल कौन है? भोली बातें करते हो, संसारमें वंशबेल भी तो चलती है।

जय०—क्षमा कीजिये, काल अज्ञानी जनोंपर ही असर डालता है, सुशील अब अज्ञानी नहीं है, बालक नहीं, वह स्वपर हिताहित जानता है। मैं उसकी इच्छाके विरुद्ध उसे फंसाकर दुखी नहीं करूंगा। भाभीजीके आदेशानुसार चिरंजीव मिट्ठनकी सगाई तो थोड़ी ही उमरमें होगई, परन्तु क्या भूल गये? मनीराम दादाजी होते, तो शायद आज वह बालक भी न होता।

मि०—काकाजीकी जय हो! निःसंदेह यदि अपनी संतानसे सच्चा प्रेम हो, तो बाल्यावस्थामें उसका विवाह और सगाई तो क्या करना, परन्तु उसे विवाह आदियोंमें भी नहीं जाने देना, न विवाहकी बातें सुनाना, जब तक कि वह योग्य विद्वान तथा स्वस्थ शरीर, गृहभार उठानेमें समर्थ न होजाय! मुझे तो दादाजीने जीवनदान दिया है। काकाजी! सुशील भैयाका

यह विचार बहुत दिनसे और दृढ़ है, वे सदैव मेरे जीवनपर दृष्टि लाते व धैर्य देते रहे हैं, मेरी भी यही प्रार्थना है कि उनकी इच्छा विरुद्ध उन्हें न दबाया जाय।

सिं०–बेठ लड़का ऐसई भागे २ बोलत है।

जय०–भावीजी उसका कहना सत्य है।

सिंगेन–हमारी देवरानीसे भी तो पूछो, का कहती हैं!

जय०–सो तो आपके पास ही हैं पूछलो।

सिंगेन–(पीछे देखकर) काए बोलत काए नइयां।

देवरानी–जीजी! मैं का जानो, तुम जानो तुम्हारे देवर व लड़का जाने, दाऊजी दादाजी सब ही तो बैठे हैं, बहिन! विवाह तो लड़काई को हू है ना? ऊकी राजी विना अपनने काई दमो और ऊने जम्बूस्वामी महाराज जैसो छोड़ दओ तो आजकल कनकश्री जैसी बिटियां तो नइयां जो संगमें जनेका होगई थी!

इस समय मातापिताके विचार सुन २ कर सुशील भीतर ही भीतर मारे हर्षके फूला न समाता था, मन ही मन अपना धन्यभाग्य समझता कि मुझे ऐसे उदार हृदय विवेकी माता पिता मिले, मैं धन्य हूं। इधर जयचन्द्रजीको अपनी धर्मपत्नीकी अनुकूल सम्मति देखकर अपार हर्ष था। वे अपनेको इन्द्रसे भी अधिक सुखी समझ रहे थे, उधर सिंगेनजी व सिंघई (टेक०) जी मन ही मन किसमिसा रहे थे, सो वे मनीराम दादासे बोले।

टेक०–दादाजी! सुन रहे हो बोलत काए नइयां!

दादा–सुन तो रहे हैं, क्या बोलें? अरे भैया! ये विवाह काम कहलाते हैं इनमें पृथक् वंशोंके दो आत्माओंका यावज्जीवनके लिये एकत्व कराया जाता है। सो जब दोनों राजी–अनुरागी होवें तभी तो काम बनेगा? सुशीलकी मांने ठीक ही तो कहा है कि विवाह लड़काका होना है, सो वह राजी होय तो करो। इसमें जबरदस्ती क्या? और वंश किसका? भगवानके वंशमें अभी कौन बैठा है? परन्तु उनका नाम तो चिरकाल रहेगा। (सुशीलको पास बुलाकर व मस्तकपर हाथ रखकर) बेटा! अब तुम स्याने हो, चतुर हो, यह भी सत्य है कि तुम्हारे सुयोग्य मातापिता भी तुम्हारी इच्छा विरुद्ध कुछ न करेंगे। तथापि तुमको स्वयं अपना भविष्य विचारना चाहिये।

सुशील–दादाजी! मैंने खूब विचारा है और मिट्ठनके जीवनसे मुझे बहुत शिक्षा मिली है। मुझे ब्रह्मचारियोंकी ही कथा रुचती है, उपन्यास पढ़ने, नाटक देखने, मेलों ठेलोंमें जाने, शादी विवाहोंमें संमिलित होनेसे मुझे अत्यन्त घृणा होती है। आप इस समय मेरे भाग्यके विधाता हैं, यदि मिट्ठनको जीवनदान दिया है तो मुझे भी अभयदान दीजिये।

दादा–बेटा! चिरंजीव रहो, ऐसा ही होगा। पर ये तो बताओ ब्रह्मचारी बनकर क्या करोगे?

सुशील–दादाजी! मैं समझ गया, मैं निठल्ला न रहूंगा, समाजके पैसोंपर पानी फेरकर देशाटन करता न फिरूंगा, मुझे मिष्टान्नकी लालसा नहीं है, जिससे कि किसीको खटकूं व अपने संयमसे डिग जाऊं। मुझे समाजमें कोई भेष

विन्यास बनाकर पूजा भी नहीं चाहिये ! जैसी कि आजकल अनेक जैनोंकी पद्धतिको देखकर आपको शंका हुई है। सो न करूंगा, किन्तु आज ही सादा खाने और सादा पहिरनेकी प्रतिज्ञा करूँगा, और जबतक शरीरमें शक्ति व धर्म व देश सेवाका अनुराग रहेगा, तबतक परिश्रम करके खाऊँगा, शुद्ध खाऊंगा, भले मजूरी करना पड़े और जब वह शुभ अवसर आवेगा, तो द्रव्य क्षेत्र काल और स्वभावोंका विचार करते हुए आगमोक्त रीत्या संयम मार्गमें बढ़ूंगा अन्यथा नहीं, विश्वास रखिये कि दाससे आपके कुल समाज व धर्मपर आक्षेप होनेका कुअवसर नहीं आने पावेगा।

दादा०—बेटा! द्रव्यक्षेत्र काल क्या किसीको रोकते हैं?

सु०—जी, रोकते हैं, क्योंकि उद्दिष्ट त्यागी महात्माओंका संयम तो जभी पल सक्ता है, जब कि गृहस्थ जन शुद्ध आहारी, सदाचारी, मुनि श्रावककी वृत्तियोंके ज्ञाता, श्रद्धालु, विवेकी, क्रियावान होवें।

दा०—तब क्या इस कालमें उद्दिष्ट त्यागी हो ही नहीं सके?

सु०—हो क्यों नहीं सके? सो तो भगवानने पंचमकालके अंततक होना बताया है, परन्तु यह नहीं कहा कि अक्षुण्ण रीत्या होते रहेगा कचित् कदाचित किसी क्षेत्र व किसी समय होते रहेंगे।

दा०—यदि श्रावक ही वैसे न रहे जैसे तुम कहते हो, तो कैसे होंगे?

सु०—जैसे ब्रह्मचारी जिनेश्वरदासजी कुंडलपुरमें ४ घंटे मरण समयमें मुनि रहे, या पंडित बलदेवदासजी, या अनंतसागरजी आदि महानुभाव हुए हैं वैसे ही। अर्थात् चर्या समय नहीं तो समाधिमरण समय तो हो सके हैं। वहां तो आहार व वस्तिका सम्बंधी दोष नहीं लगेंगे?

दा०—शावास बेटा! तुम सफल मनोरथ होओ। जम्बूस्वामीकी जय! दादाजीका यह अंतिम फैसला था, उन्होंने कतिपय प्रश्नोंद्वारा परीक्षा करके उक्त वचन कह दिये। जिसे सबने स्वीकार किया, और सुशीलकुमार अबसे ब्रह्मचारी सुशीलकुमार होगया। इसीलिये अबसे उसे हम आदर्श ब्रह्मचारी ही कहेंगे। आदर्श ब्रह्मचारीकी जय!

नोट—धन्य है ऐसे मातापिताओंको जो अपने पुत्रोंको ऐसी आदर्श शिक्षा देते हैं। लोग पाश्चात्य विद्याको दोष देते हैं। जिस समय जो भाषा राज्य व राष्ट्रकी होती है उसे जानना परमावश्यक है। परन्तु यह बात जरूरी है कि बालक शिक्षा किसी भाषाकी लेवें और चाहें कहीं विद्योपार्जनार्थ जावें इसमें हानि नहीं। यदि उनमें बाल्यावस्थासे उत्तम धार्मिक संस्कार डाल दिये जांय तो विद्या कोई बुरी नहीं। बुरी तो संगति होती है, जो असंस्कृत बालकोंपर असर कर जाती है। इसलिये उनके संस्कार उत्तम बनाकर चाहे जिस विद्याका अभ्यास करने दीजिये और चाहे जहां देशांतरोंमें छोड़ दीजिये वे सदैव सौ टंचके ही रहेंगे और दिनोंदिन विशेष आभा प्रगट करेंगे।

प्रतिष्ठामुहूर्तपर विचार।

(ले०-पं० शिखरचंद्र जैन, ज्योतिषदिवाकर-फर्रुखनगर,)

श्रीआदीश्वर आदि प्रभु, अन्तिम हैं महावीर।
गौतमस्वामी आदि मुनि, मैं नित नाऊं शीश॥
श्रीगुरु कुशल मुनींद्रपद, ज्योतिषरत्न कहाय।
ते दोनों मम चित वसो, नितप्रति करै सहाय॥
ज्योतिषरत्न हैं तात मुझ, तिनसे सीखा ज्ञान।
अल्पबुद्धि अनजान हूं, त्रुटि सुधारो विद्वान॥

प्रिय पाठकगण!

आज मुझे यह अवसर प्राप्त हुवा है कि आपके सन्मुख कुछ थोड़ासा संक्षिप्त बिम्बप्रतिष्ठा मुहूर्तका वर्णन करूं। मैं सविनय प्रार्थना करता हूं कि यदि कहीं कोई अशुद्धि रह जावे तो विद्वान उसको सुधार लें और मुझे अल्पबुद्धि जानकर क्षमा करें।

प्रतिष्ठा मुहूर्तोंमें नीचे लिखे अनुसार विचार करना चाहिये। प्रतिष्ठा मेष वृष मिथुन वृश्चिक मकर कुम्भके सूर्यमें होनी चाहिये। यदि पुरानी वेदीमें देवाधिदेव विराजमान करना है तो केवल धन व मीनका सूर्य छोड़ बाकी सबमें कर सकते हैं। तिथियोंमें उत्तम तिथि तो शु० १० से कृष्णपक्षकी ५ तक है, बाकी मध्यम कही है।

तिथि जो प्रत्येक पक्षकी लेते हैं यानी शुक्ल पक्ष ०१।०२।०३।०५।०७।१०।१३।१५ और कृष्णपक्षकी ०२।०३।०५।०७।१०।११ लेते हैं।

उत्तम वार तो सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार है, शनिवार व रविवार मध्यम हैं। मंगलवार शुरूमें कदापि नहीं लेना चाहिये। बीचमें या अखीरमें आजावे तो कोई हर्ज नहीं है।

नक्षत्र—अश्वनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, हस्त, श्रवण, मूल, अनुराधा, स्वाति, चित्रा, अभिजित, धनिष्टा, शतभिषा, रेवती, लिये हैं।

कुम्भ स्थापनका विचार इस प्रकारसे है कि सूर्य जिस नक्षत्रपर हो उससे ९ उत्तम फिर १६ त्याज्य फिर ६ लेने योग्य हैं। इस नक्षत्रको सुन्दर देखकर सुन्दर वार तिथि सहित लेकर कुम्भस्थापन करना चाहिये।

प्रतिष्ठा करानेवालाका जन्म नक्षत्र जो हो उस नक्षत्रसे १०।१६।१७।१८।२३।२५ वां नक्षत्र छोड़ना चाहिये।

गुरू भृगुके अस्तमें प्रतिष्ठा करना मना है। चन्द्रमा भी हरएक जगह उदय व बलवान ही उत्तम देखकर लेना चाहिये। अन्यथा मध्यम अवश्य हो। गुरू, शुक्र भी बलवान लेने योग्य हैं।

प्रतिष्ठा करानेवालेकी जन्म राशिसे गुरू १।२।३।५।७।९।११ राशिके हों। प्रतिष्ठा करानेवालेकी जन्म राशिसे सूर्य ०३।०६। १०।११ राशिके लेने योग हैं। प्रतिष्ठा करानेवालेको जन्मराशि या बोलसे चन्द्रमा ०४। ८।१२ न होवें। इसप्रकार प्रतिष्ठा करानेवालेको रवि, चन्द्र, गुरु बलाबल देखना योग्य है। और प्रतिमाजीके लिये चन्द्रबल देखना आवश्यक है।

जो प्रतिष्ठा कृष्णपक्षमें होवे, जन्म नक्षत्रसे प्रतिष्ठा नक्षत्रका तारा देखे। चक्र नीचे दिया है।

तारा	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	
१	१	१०	१९	शुभ
२	२	११	२०	शुभ
३	३	१२	२१	अशुभ
४	४	१३	२२	शुभ
५	५	१४	२३	अशुभ
६	६	१५	२४	शुभ
७	७	१६	२५	अशुभ
८	८	१७	२६	शुभ
९	९	१८	२७	शुभ

शुभ ताराओंमें मुहूर्त करना चाहिये।

इस प्रकार १।१०।१९ नक्षत्र होवे तो १ तारा २।११।२० होवे तो २ तारा है, इसी प्रकार विचार करें।

भद्रा विचार, भद्रा पाताल व स्वर्गके उत्तम वर्णन किये हैं तथा कार्य सिद्धिकारक बताये हैं। मध्य लोकके हानिकारक बताये हैं। चन्द्र नक्षत्र तिथि मास वार बताना चाहिये।

राहु ४-४ घड़ी दिनमें हरएक दिशा विदिशामें रहता है। पूर्वसे दक्षिणको चलता है सो राहुको सन्मुख न लेवे।

राहुका विस्तृत वर्णन फिर किसी समय लिखेंगे।

प्रत्येक लग्नका समय इसप्रकार है—

मेष मीन ३।४, वृष कुम्भ ४।७, मिथुन मकर ५।१, कर्क धन ५।४३, सिंह वृश्चिक ५।५१, कन्या तुला ५।४५।

जहांतक होवे लग्न वेदीप्रतिष्ठामें स्थिर ही लेना चाहिये। यदि नहीं बने तो किसी२ ने द्विस्वभाव भी ले लिया है। परन्तु चर लग्न कभी नहीं लेना चाहिये। मेष, कर्क, तुला, मकर, चर हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ स्थिर है। मिथुन, कन्या, धन, मीन द्विस्वभाव है।

अब लग्नके अंश कहते हैं—

मेष २७, वृष १०, मिथुन १७, कर्क १४, सिंह १८, कन्या १८, तुला १४, वृश्चिक १२, धन १७, मकर २०, कुम्भ १६, मीन १४।

इतने अंशोंतक बलवान बताया है। इसके बाद लग्नोंके स्वामी देखे। लग्नोंके स्वामी बलवान उच्चके उत्तम ग्रहके घरमें होवे तो उत्तम योग कहा है बाकी मध्यम। यदि लग्नोंके स्वामी नीचके हो या शत्रुके घरमें होवें तो छोड़ने चाहिये अर्थात् वर्जित है।

अब लग्न कुंडलीके ग्रहोंको दिखाते हैं—

रवि चन्द्र मंगल एक घर होवे तो अग्नि भय जानना। चन्द्रमा शनि एक घर होंय मृत्यु भय। चन्द्रमा बुध होंय वृद्धि करे।

चन्द्रमा गुरु होवे तो संसारमें महिमा पावे।

चन्द्रमा शुक्र होवे तो सर्व प्रकारका सुख पावे।

यदि ८।१२ घर कोई शुभ ग्रह होवे तो छोड़ देना वर्जित है। चन्द्रमा और पापक ग्रह तीसरे छठे ग्यारवे घर होवे तो अच्छे कहे हैं।

ग्रह शुभ अशुभ शत्रु मित्रता अवश्य विचारनी चाहिये। यदि रवि बुध केन्द्रमें बैठे तो दोषोंको नष्ट करता है। यदि भृगु केन्द्रमें होवे तो उसको कोई भी क्रूर गृह न देखता हो तो अति उत्तम कहा है। यदि गुरु बलवान होकर अकेला केन्द्रमें होवे और शुभ गृहका वह घर होवे और कोई भी क्रूर ग्रह उसको देखता न

શોક !　　શોક !!　　મહાશોક !!!

શ્રીમતી જૈનમહિલારત્ન—મગનબ્હેન જે. પી, સુપુત્રી, દાનવીર શેઠ માણેકચંદજી જે. પી. નો સ્વર્ગવાસ !

જૈન સ્રીસેવિકાશિરોમણિનાં જીવન કાર્ય.

મહા સુદ ૯ ના સાડા નવ વાગાની રાત્રિ જો કે ચંદ્રની ચાંદનીથી શોભાયમાન હતી, પરંતુ જૈન સમાજને માટે ક્ષય પ્રદાન કરવાવાળી રાત્રી હતી. એ રાત્રીએ મુંબઇ અને પુનાની વચ્ચે લોણાવળા નામના સ્થાનમાં કાળના નામથી પ્રસિદ્ધ આયુ કર્મએ એકદમ તે શરીરને નિશ્ચેતન કરી દીધું કે જે શરીરમાં નિવાસ કરીને જૈન મહિલા-રત્નની આત્માએ પોતાના આત્મબલ અને જ્ઞાનના પુરૂષાર્થથી પોતાનું સર્વ જીવન જૈન સ્રી સમાજની ઉન્નતિ માટે અર્પણ કરી દીધું હતું. આ શરીર જે ક્ષણવાર પહેલાં બોલતું, હાલતું, સમજતું અને વિચાર કરતું હતું, આત્માનો સંગ છૂટવાથી કાર્ય-હીન થઇ ગયું. હવે કોઇ બોલાવે તો કોનો જવાબ મળતો નથી, પ્રાણ ઇન્દ્રી સુંઘવાનું કામ કરતી નથી. ચક્ષુઇન્દ્રી કોઇ સામે પદાર્થ આવે તો ઓળખતી નથી. મુખમાં દવા કે દુધ આપવામાં આવે તો તે મુખ ગ્રહણ કરતું નથી. જડ સ્તંભવત્ દશા એ ચેતન શરીરની થઇ ગઇ કે જે આત્માના સંયોગથી પ્રફુલ્લિત હતી હાય ! હવે આ શરીર કરમાઇ ગયું ! હવે એ લલિત મન વચન કાયની રજોથી જૈન સમાજનું હિત થતું અટકી ગયું. હવે એ શરીર ખાખ થઇને માટીમાં મળી ગયું. ચેતન પ્રભુએ ઘરને છોડયું. તન રૂપી ઘર ઉજડ થઇ ગયું. ૫૦ વર્ષ સુધી જે શરીરે પોતાનું કર્તવ્ય પાલન કર્યું હતું, જેણે નાનપણમાં પોતાના યોગ્ય પિતાશ્રી શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદજીના પ્રતાપથી અલ્પ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું હતું, જેણે વિધવા અવસ્થા પોતાના પિતાના સહવાસમાં પુત્રવત્ વ્યતિત કરી હતી, જેણે સંસ્કૃત અને ધાર્મિક જ્ઞાન સંપાદન કરવામાં કેટલાંક વર્ષ પસાર કરીને પોતાની યોગ્યતા વધારી હતી.

જૈન ધર્મના પ્રેમી અને જૈન સમાજના સાચા પિતા શેઠજી જ્યારે સ્રી પુરૂષ સર્વ જૈન સમાજની ઉન્નતિમાં લાગેલાં હતાં ત્યારે એમની આ લાયક પુત્રીએ જૈન સ્રી સમાજની ઉન્નતિનું બીડું હાથમાં લીધું.

જેણે સંવત ૧૯૬૫ વીર સંવત ૨૪૩૫ ના મહા શુદ ૧૪ તા. ૨૬–૧–૧૯૦૯ને દિને મુંબઇ પ્રાંતિક સભાની તારંગા મુકામની કોન્ફરન્સ વખતે મળેલી દિગંબર જૈન મહિલા પરિષદમાં હૃદયને ભેદનાર પીગળાવનાર ઉપદેશથી એક શ્રાવિકાશ્રમ ખોલવા માટે ફંડ એકત્ર કર્યું તેમાં પોતે પ્રથમ ૧૦૦૧) ની રકમ ભરી તથા બીજા પાસે ભરાવી તેમાં રૂ. ૩૦૫૮) ની રકમ ભરાઇ તેમાં ધ્રુવફંડમાં આશરે ૨૫૦૦) ની જુજ રકમ ભરાઇ હતી. આટલી જુજ રકમથીજ પોતાની હિંમતથી સંવત ૧૯૬૫ માંજ અમદાવાદમાં શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ દિગંબર જૈન બોર્ડીંગ સામે એક મકાન ભાડે રાખી શ્રાવિકાશ્રમ ખોલવામાં આવ્યું. આજ ૨૧ વર્ષ થયાં છે કે પોતાનું સર્વ જીવન જૈન

हो तो ऐसे योगको कहा है—रक्षा दोष हरता है। यदि पूर्ण बर चंद्रमा शुक्र, गुरू होवे तो उत्तम कहा है। यदि सब ग्रह शत्रुओंके घरमें होवे तो प्रतिष्ठा नहीं करानी चाहिये। शत्रुके घरमें अधिक ग्रहोंका होना नष्ट है।

વિધવા સધવા અને કુમારીકાઓને સુયોગ્ય મહિલા બનાવવામાં ખર્ચ કરી નાંખ્યું. આ મહિલારત્નેજ સર્વેથી પ્રથમ દિ. જૈન સમાજમાં અથવા શાયદ સર્વ જૈન સમાજમાં પોતાનું શ્રાવિકાશ્રમ ખોલી અને તેને સારી રીતે ચલાવી કેટલીક કાર્ય કરવાવાળી બાઇઓ તૈયાર કરી દેખાડયું કે જેમાં બીજાં પણ આવાં આશ્રમોની જરૂર છે. આપની પોતાની પ્રેરણાથીજ ઇંદોર, આગ્રા, દિલ્લી, ગોહાના, સાંગલી, સોજીત્રા, સાબરવાડા આદિ સ્થાનો પર શ્રાવિકાશ્રમો ખુલ્યાં છે અને તે પોતાનું સંતેષજનક કામ કરી રહ્યા છે. જૈનમહિલારત્ન મગનબ્હેને મુંબઇ શ્રાવિકાશ્રમને પોતે ઘણું ધન આપ્યું અને પોતાના કુટુંબીઓ પાસે પણ અપાવ્યું તથા દેશ પરદેશ ફરીને પોતાના મિષ્ટ વચનથી પ્રભાવશાળી ઉપદેશો આપીને લગભગ ૯૦ કે ૯૧૦૦૦) નું ફંડ એકત્ર કર્યું છે. જૈન મહિલારત્ન આજે દોઢ વર્ષથી માંદા હતાં. માંદગીમાં પણ આશ્રમની બરાબર સેવા કરતાં, બાળાઓની દેખરેખ રાખતાં, કાગળ પત્ર લખીને લોકો પાસે પૈસા કઢાવતાં, એમનો દેશોદેશ એવો પ્રભાવ હતો કે જે કોઇ આવે તેમને બાઇજીના (મગનબ્હેનના) દર્શનની ઇચ્છા થાય.

પોતાને તેમની સાથે વાત કરતાં માંદા શરીરને લીધે થાક લાગે છતાં આગંતુક બ્હેનો યા બંધુઓ સાથે પ્રસન્ન વદને વાત કરતાં. આટલી માંદગી ક્ષીણ શરીર થવા છતાં પણ રાતના દશ વાગ્યા સિવાય સુતાં નહિ! મુંબઇની હવાથી જ્યારે સારૂં ન થયું ત્યારે બે માસ પહેલા લોણાવળા ગયાં ત્યાં પ્રથમ તો આખા શરીરપર સોજા અને જલોદરથી પીડિત હતાં પણ ડા. બી. વલકરની દવાથી જલોદર નિર્મુક્ત થયો. પોતે માઇલભર ચાલી શકે તેવી શક્તિ આવી. અમે લોકો વારાફરતી મળી આવ્યા અને અમને સંતોષ થયો જો કે શરીર તો ઘણુંજ ક્ષીણ હતું છતાં આશ્રમની ધગશ એમના મનમાં લાગેલીજ હતી. સ્વર્ગવાસ થતાં પહેલાં એમણે મારી પાસે ધ્રુવ ફંડનું પુસ્તક મંગાવ્યું અને ત્યાં જે કોઇ મળવા જાય તેમને બતાવીને નવા રૂપીઆ ભરાવી તથા બાકી રૂપીઆ હોય તેમને કાગળ લખી મંગાવી લેવાનો પ્રયત્ન કરવો શરૂ કર્યો. ગત મહા શુદ ૬ ને દિવસે બ્ર. સીતલપ્રસાદજીને આપનો મેળાપ થયો ત્યારે પોતે કહ્યું કે મારી એ હાર્દિક ઇચ્છા છે કે આશ્રમનું ફંડ એક લાખનું થઇ જાય. માત્ર ૯ કે ૧૦ હજાર હવે ખૂટે છે. આપે બ્રહ્મચારીજીને પુસ્તક દેખાડયું તેમાં દિલ્લી, બેલગાંમ અને સાંગલીની પડેલાં લખેલી રકમ વસુલ થઇ નહોતી કે જે ધ્રુવ ફંડમાં લખેલી હતી. અને દિલ્લીની રકમને માટે બ્રહ્મચારીજીને કહ્યું કે આપ આને માટે ઉદ્યોગ કરો. બ્ર. જીએ કહ્યું કે હું જરૂર એ માટે પ્રયત્ન કરીશ.

શ્રી. મગન બ્હેન ૧॥ વર્ષથી માંદા હતાં. તબીયત સુધારવા માટે લોણાવળામાં વિશ્રાંતિ લઇ રહ્યાં હતાં પણ એમનું મન નિરંતર સ્ત્રી સમાજની સેવામાં લીન હતું. એ અપૂર્વ પરોપકાર ભાવ છે! આ સ્વર્ગસ્થ આત્માએજ ઉદ્યમ કરીને ભારતવર્ષીય દિગંબર જૈન મહિલા પરિષદ્ સ્થાપન કરાવી હતી જેથી સ્ત્રી સમાજમાં ઘણી જાગૃતિ ફેલાઇ અને એના ફળરૂપ જૈન મહિલાદર્શ માસિકપત્ર ઘણું ઉપયોગી, લેખમાળાઓને લઇને બરાબર નીકળ્યા કરે છે.

શ્રીમતી મગનબ્હેન પોતે પિતાજી સાથે ભ્રમણ કરતાં હતાં અને જ્યાં ત્યાં પોતે ઉપદેશ દઇને પાઠશાળાઓ કન્યાશાળાઓ સ્થપાવતાં હતાં, સારાંશ કે દિગંબર જૈન સમાજમાં કન્યાશાળા કે શ્રાવિકાશ્રમો સ્થપાવવાનું માન શ્રી. મગનબ્હેનનેજ ઘટે છે.

પિતાજીના સ્વર્ગવાસ થયા પછી પણ પોતે જ્યાં સુધી શરીરમાં શક્તિ રહી ત્યાંસુધી સ્ત્રી કેળવણીના કામમાં પાછી પાની ન કરી. આપે આળસને જીતી લીધું હતું. દરરોજ કેટલાએ પત્રોનાં ઉત્તર આપવા, વળી મુંબઇની પબ્લીક સભાઓમાં ભાગ લેવો, ભાષણો આપવાં અને અસહાયને સહાયતા કરવી એ ગુણો એમનામાં સ્વાભાવિક હતા. આપ ફક્ત પરોપકારીણીજ હતી એટલુંજ નહિ પણ જૈન સિદ્ધાન્તના રહસ્યની જાણકાર, જૈન આગમ

શાસ્ત્રોના મર્મને સમજવાવાળી એક વિદુષી પંડિતા હતી. ગુણસ્થાન માર્ગણાદિની ચર્ચાથી જાણકાર થઇને પણ નિશ્ચય નયના આશ્રયથી સ્વાત્માનુભવ કરવાની ચાવીથી સુશોભિત હતી. સમયસારાદિ ગ્રંથોમાં એમનો સારો પ્રવેશ હતો. અમારી પાસે એવા શબ્દ નથી જે અમે આ જૈન મહિલારત્નનાં લાભદાયક કાર્યોનું વર્ણન કરી શકીયે. સમસ્ત ભારતવાસી જૈન સ્ત્રી સમાજનેજ નહિ પણ સાથે સંપૂર્ણ પુરૂષ સમાજને પણ આવાં પરોપકારી અને આત્મજ્ઞાની આત્માના વિયોગનો શોક થશે. ઉચિત છે કે જૈન સમાજ સ્થાન સ્થાનપર સભા કરીને એમના ગુણાનુવાદ સ્મરણ કરે અને એ મૃતાત્માના કાર્યનો ધડો લઇ તેમની માફક જીવન વીતાડવા પ્રયત્ન કરે !

કોઇ દાની આત્મા એમની ઇચ્છા પૂર્ણ કરી દે તો કેવું સારૂં કે જેથી એમના અન્ત સમયની કામના તૃપ્ત થઇ શ્રાવિકાશ્રમનું ફંડ એક લાખનું થઇ જાય. અમારી આકાંક્ષા છે કે મગનબાઇજીનું જીવન ચરિત્ર પ્રકાશિત થાય. દરેક ગામો ગામમાં સ્ત્રીઓ સભા કરીને સ્મારક એકઠું કરી એમનાં કૃતોપકારનું ચીરસ્થાઇ સ્મરણ કરે. સાથે પુરૂષોએ પણ તેમાં ભાગ લેવો જોઇએ. સ્ત્રી સમાજની તરફ એમનો જેટલો ઉપકાર છે તેને દરેક વ્યક્તિ જો ધ્યાનમાં લઇને સ્મારક સ્થાપન કરે તો એમના દ્વારા કરેલા કામનું ઋણ કંઇક અંશે મુક્ત થાય. અમે મગનબ્હેનની પુત્રી સૌ. કેશરબ્હેન અને પૌત્રી બચુબ્હેનનાં દુઃખમાં સંવેદના કરીયે છીએ અને ભાવના ભાવિયે છીયે કે જૈન મહિલારત્નની આત્માને સુખ શાંતિ મળે! તથા એમના દ્વારા કેળવણી લઇને તૈયાર થનાર શ્રાવિકાઓ જૈન મહિલારત્નના જીવન પ્રમાણે પોતાનું કર્તવ્ય બજાવે અને સ્વપર ઉન્નતિ કરીને પોતાના જીવનને સફળ બનાવે. અને એમના સ્મારક રૂપ આ મુંબઇ શ્રાવિકાશ્રમને વિશેષ ઉન્નતિના શિખરપર ચઢાવે.

લલિતાબ્હેન મુલચંદ.

શ્રીમતી જૈન મહિલારત્ન મગનબ્હેન જે. પી. નો દુઃખદ વિયોગ.

અરર ! હાય ! રે ! કોપ શું થયો,
ગગન માંહિથી વજ્ર ઘા પડયો.
નયન માંહિથી અશ્રુ રે ! વહે,
અરર ! કો જનો દેખી ના શકે.
જગત અંધારમાંહિરે ! ડૂબ્યું,
હૃદય ફાટતું, ચીત્ત બાકતું.
સ્ત્રી સમાજમાં હાય ! શું થયું,
મનુજ જાતનું રત્ન ગુમ થયું.
રત્ન એ હતુ અમૂલ નારી એ,
મગનબ્હેનના નામથી દીપે.
સકલ આશ્રમો-શ્રાવિકાશ્રમો,
દુઃખજ આ બધું સુણીને રડે.
શીતલ છાંયડી શ્રાવિકાતણી,
દીન દુઃખી અને વિધવા તણી.
ધરમ કાર્યમાં ચંદ્રિકા બની,
નિજ પિતા તણું કુલ દીપાવતી.
મહા પરિશ્રમો અતીવ દુઃખદાં,
સહી સહુ થયાં શ્રેષ્ઠ નારીમાં.
ધરમ-ઉન્નતિ કાજ અર્પીને,
જીવન ગાળીયું રત્નસમ ખરે.
કરમના નહિં કાયદા ફરે,
મનુજ બળ નહિ ત્યાં કદી ચળે.
કરમ દુષ્ટને ધૈર્યને ધરી,
રહ્યું હવે સદા લેવું રે સહી.
જગત જૈન જાતિ બની ઋણી,
ઋણ અરે ! બધું કયમ વાળશે.
જગત જૈન આ ઘા નહિ ભુલે,
રડી રડી અને આંસુડાં લ્હુંછે.
કુલ નહિં છતાં કુલ-પાંખડી,
અરપીને સહુ આંજે આંખડી.
અમુલ રત્નના ધર્મ કાર્યમાં,
મદદ દઇ સદા રે'વું ત્યાગમાં.
"અચળ શાંતિ એ આત્મ પામજો!"
નિજ સહુ મળી સિદ્ધિ સાધજો.

ત્રિભુવન રાયચંદ શાહ-ભાવનગર.

શ્રીમતી મગનબ્હેનના સ્વર્ગવાસનો મુંબાઈમાં શોક.

શ્રી દિગંબર જૈન યુવક મંડળ મુંબાઈ તરફથી અમારા વર્તમાન પત્રો તથા હેન્ડબીલ દ્વારા સુચવાયા મુજબ શ્રીમતી મગનબેન જે. પી ના તા. ૭–૨–૩૦ ને શુક્રવારે લોનાવલા ખાતે હૃદય બંધ પડવાથી નિપજેલા અવસાન માટે શોકસભા તા. ૧૦–૨–૩૦ ને સોમવારે રાતના ૭॥ વાગે સી. પી. ટેન્કપર આવેલા **હીરાબાગ**માં શ્રીમાન વિધાવારિધિ જૈનદર્શન દિવાકર બેરીસ્ટર ચંપતરાયજી સાહેબના પ્રમુખપણા નીચે મળી હતી.

સભાનો હોલ પુરૂષોથી અને ઉપરની ગેલેરીઓ સ્ત્રીઓથી ચીકાર ભરાઈ ગયો હતો. બરાબર ૭॥ વાગે પ્રમુખ સાહેબ પધાર્યા હતા. બાદ બાબુશ્રી **હીરાલાલ શાહે** મંગળાચરણ કર્યા બાદ પ્રમુખસ્થાન માટે બેરીસ્ટર સાહેબનું નામ રજુ કર્યું હતું. તેઓની ઓળખાણ કરાવતાં જણાવ્યું કે બેરીસ્ટર ચંપતરાયજી જૈન સમાજના અગ્રગણ્ય નેતા છે અને અંગ્રેજીના જૈન સાહિત્ય લખનાર તેઓ છે. તેઓએ કી ઓફ નોલેજ, વોટ ઇઝ જૈનીઝમ, આદિ ગ્રંથો અંગ્રેજીમાં લખી બહાર પાડયા છે.બાદ તાલીયોના ગડગડાટ વચ્ચે પ્રમુખ સાહેબે પોતાનું સ્થાન ગ્રહણ કર્યું હતું. ત્યારબાદ શ્રીયુત શેઠ ભાઇચંદ રૂપચંદે નીચે મુજબનો ઠરાવ રજુ કર્યો હતો–

ઠરાવ ૧—શ્રી દિગંબર જૈન યુવક મંડળ તરફથી મળેલી મુંબાઇના જૈનોની આ જાહેર સભા 'જૈન મહિલારત્ન'–શ્રીમતી મગનબહેન જે. પી. (સંસ્થાપિકા સ. રૂ. શ્રાવિકાશ્રમ મુંબાઇ) ના તા. ૭–૨–૩૦ ને શુક્રવારે રાતના લોનાવલા ખાતે નિપજેલા અકાળમૃત્યુ અવસાન માટે ખેદ પ્રદર્શીત કરે છે; તેમજ તેમના કુટુંબી જનો પ્રત્યે સમવેદના પ્રગટ કરે છે અને તેમના આત્માને શાંત પ્રાપ્ત થાઓ એમ ઇચ્છે છે.

ઠરાવ પર વિવેચન કરતાં વક્તાએ શ્રીમતી મગનબહેને છેલ્લાં ૩૧ વરસમાં જૈન સ્ત્રી સમાજની બજાવેલી અનુપમ સેવાઓનું સવિસ્તર વર્ણન કર્યું હતું. બાદ બાબુ શ્રી **હીરાલાલ પી. શાહે** ઠરાવને ઘટતા વિવેચન સાથે ટેકો આપ્યો હતો. બાદ પંડિત **દરબારીલાલજી ન્યાયતીર્થે** ઠરાવને વધુ ટેકો આપતાં જણાવ્યું હતું કે મગનબહેને જે સેવાઓ બજાવી તેની કદર જૈન સમાજે તેમને 'મહિલારત્ન' ની પદવી આપીને અને સરકારે તેઓને જે. પી. ની પદવીથી નવાજીને કરી છે. જૈન સ્ત્રી સમાજમાં તેઓ પહેલાંજ જે. પી. હતા. તેઓના પિતાશ્રી શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ જવેરી પણ જે. પી. હતા. અને તેઓએ દિગંબર જૈન સમાજમાં કેળવણીના પ્રચારાર્થે લાખોની સખાવત કરી હતી. આદિ વિવેચન કર્યા બાદ પં. ઉલ્ફતરાયજી રોહતકવાલાએ પણ ઠરાવને ટેકો આપતાં જણાવ્યું હતું કે યુવાન વયમાં વૈધવ્ય પ્રાપ્ત થયા બાદ તેઓએ પોતાનું જીવન, પવિત્ર અને આખા સ્ત્રી સમાજને આદર્શરૂપ નિવડે તેવી રીતે વ્યતિત કર્યું હતું. વૈધવ્ય એ એક અંધારા ખુણામાં બેસી રિબાઈ મરવાનો જીવન કાળ નથી પરંતુ વૈધવ્ય દીક્ષા ધારણ કરી પોતાનું અને બીજી અજ્ઞાન દશામાં સબડતી વિધવા બહેનોનું આત્મ કલ્યાણ કઇ રીતે થઇ શકે તેનો સાક્ષાત્માં સારો દાખલો શ્રીમતી મગનબહેને ભારતવર્ષના આખા સ્ત્રી સમાજને પુરો પાડયો છે. આદિ વિવેચન કર્યા બાદ શ્રીયુત **શીવજી દેવશીભાઇ** મઢડાવાલાએ ઠરાવને અનુમોદન આપતાં જણાવ્યું હતું કે મગનબહેનથી હું છેલ્લા ૧૫ વરસથી પરિચિત છું. તેમના જેવાં વિદુષી બહેન નથી સ્થાનકવાસી જૈનોમાં કે નથી શ્વે. મુ. જૈનોમાં. દિગંબર જૈન સમાજનું નામ તે બહેને પોતાની કૃતિવડે સર્વથી આગળ મુક્યું છે. વળી કેટલાક જે એવું માને છે કે શ્રીમંતાઇ પ્રાપ્ત થાય એટલે લલાટ પર લખાઇ આવેલુંજ કે 'મોજ શોખમાંજ જીવન વ્યતીત કરવું, સેવા કરવાનું કાર્ય ગરીબજ કરે'

એવા વિચારો એ ખાલી ભ્રમણા છે એમાં પામરતા અને પશુતા છે. મનુષ્ય જન્મની સફળતા સેવા અને પરોપકારમાંજ છે એ સુત્રને મગનબ્હેને પોતા જીવન કાળ દરમ્યાન સિદ્ધ કરી બતાવ્યું છે. જે શ્રીમંતાઇ, જે અધિકારમાં પરોપકારરૂપી વાસના નથી તે 'અ-ધિકાર' ને ધિક્કાર છે; મગનબ્હેનનો સ્થુળ દેહ અત્યારે નથી પરંતુ તેમનો આત્મા અજર અમર છે. તેમની પાછળ શોકના ચાર આંસુ પાડી બેસી ન રહેતાં તેમનાં અધુરાં કાર્ય કે જેનો ભાર તેમની સહચારીણી શ્રીમતી લલીતાબ્હેન પર આવી પડયો છે તેમાં યોગ્ય મદદ કરીએ તોજ કંઇ સાર્થકતા છે. આ વિવેચન કર્યા બાદ.—

પ્રમુખ સાહેબે ઠરાવ પર ટુંક વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે—જન્મ લેતી વખતે બાળક રડે છે પરંતુ જે મનુષ્ય મરતી વખતે હસે અને બીજા બધાં રડે એ દશા જીવનની સાર્થકતા છે. મગનબ્હેને શ્રીમંત કુટુંબમાં જન્મ પામી એ પુરૂષાર્થ ફોરવ્યો હતો. તેમનો યશ ને કીર્તિ તેમના આત્માની ઉજવળતામાં જરા પણ ફરક પડવા દેશે નહિ. તેમના મર્હુમ પિતાશ્રી માણેકચંદ શેઠ જેવા ચતુર અને પરોપકારી હતા, તેવાજ આ બ્હેન પણ હતાં, તેઓએ પાંચ અણુવ્રત ધારણ કર્યાને પાંચ વરસ પર કર્યાં હતાં. તેઓએ પોતાનું જીવન ધાર્મિક રીતે ગાળ્યું હતું. વિધવા બ્હેનો અને તે સાથે સ્ત્રી સમાજની જે અનુપમ સેવા તેઓએ બજાવી છે. તે વડે તેમનો યશ રૂપી ધ્રુવનો તારો હમેશાં ચમકતો રહેશે. બાદ સર્વે સભા જનોએ ઉભા થઇ ઠરાવ સર્વાનુમતે પાસ કર્યો હતો.

બાદ નીચેનો ઠરાવ શેઠ **ફુલચંદ શીવચંદે** (ભગવાનદાસ ફ્રેન્ડ ધર્મસત્રાળા) રજુ કર્યો હતો.

ઠરાવ ૨—આ સભા 'મહિલારત્ન' શ્રીમતી મગનબ્હેને સ્ત્રી સમાજની ઉન્નતિ માટે પોતાનું જીવન અર્પણ કરીને જે સેવા બજાવી છે તેના કાયમના સ્મરણ તરીકે શ્રીમતી મગનબ્હેનનું યોગ્ય સ્મારક થાય એમ ઇચ્છે છે.

ઠરાવ પર વિવેચન કરતાં વક્તાએ જણાવ્યું હતું કે પહેલા ઠરાવ પર જુદા જુદા વક્તાઓના વિવેચનથી આપણે જાણી શકયા છીએ કે મગનબ્હેને સમાજની કેવી અનુપમ સેવા બજાવી છે. એવી વ્યક્તિના અવસાન માટે શોકનો ઠરાવ કરીએ તે બસ નથી પરંતુ તેમનું યોગ્ય સ્મારક અવશ્ય થાય તોજ સારૂં કહેવાય. અને એ સ્મારક વડે તેમણે ઉપાડેલું સ્ત્રીઓમાં અને ખાસ કરી વિધવા બ્હેનોમાં ધાર્મિક જ્ઞાન પ્રચારનું કાર્ય હંમેશા ચાલું રહે તેમ કરવું જોઇએ. આ વિવેચન કર્યા બાદ ઠરાવને ટેકો આપતાં શ્રીયુત પં. **રામપ્રશાદજી** શાસ્ત્રીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે મગનબેનનું સ્મારક એટલે સાક્ષાત મગન બ્હેનની યાદગાર. તેનું સ્મારક ચિરસ્થાયી રહે તેવું કરવું જોઇએ. આશા છે સમાજના અગ્રગણ્ય નેતાઓ આ કામ તુરતમાં હાથ ધરશે.

[બાદ ઠરાવને વધુ ટેકો આપતાં શ્રીયુત **જગમોહનદાસ શાહ** વડોદરાવાળાએ જણાવ્યુ કે—આ વખતે મગનબ્હેનના જીવનનો ટુંક ઉલ્લેખ કે જે મારી જાણમાં છે તે આપ સામે રજુ કરીશ તો અસ્થાને નહિ ગણાય—

મગનબ્હેનનો જન્મ જૈનકુળ ભુષણ દાનવીર શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ ઝવેરીને ત્યાં વિક્રમ સં. ૧૯૩૭માં થયો હતો અને સં. ૧૯૪૮ માં તેમનાં લગ્ન થયાં હતાં. લગ્ન થયા બાદ ૮ વર્ષે સં. ૧૯૫૬ માં તેમને વૈધવ્ય દુઃખ પ્રાપ્ત થયું હતું. ઓગણીસ વરસની યુવાન અવસ્થામાં વિધવા થયા બાદ તે બ્હેને કર્મયોગે પ્રાપ્ત થયેલી આ દુઃખદ અવસ્થાને સુખરૂપ બનાવવા આત્મ કલ્યાણનો સર્વોત્કૃષ્ટ માર્ગ લેવો યોગ્ય ધાર્યો. સ્વામી અને પિતાની મહેલાતો તજી પોતાનું અને પોતા જેવી બીજી વિધવા બહેનોનું જીવન પવિત્ર બનાવવા ૫-૭ વરસમાં અમદાવાદમાં શ્રાવિકાશ્રમ સ્થાપ્યું અને બાદ કેટલાક સંજોગોને અનુસરી

તે આશ્રમ મુંબાઇ લાવવામાં આવ્યો. જેમાં ગુજરાત, વાગડ, અને દક્ષિણ પ્રાંતની અનેક વિધવા બહેનો ઉચ્ચ અને પવિત્ર શિક્ષણનો લાભ લઇ દેશના જુદાજુદા વિભાગોમાં સ્ત્રી કેળવણીનો પ્રચાર કરી રહી છે. બેન નાનીબેન સંઘવી, તથા શ્રીમાન પ્રભાવતી બ્હેન સોજીત્રા શ્રાવિકાશ્રમ ચલાવે છે, બેન ચંચળબેન ભાવનગરમાં સ્ત્રીઓની પાઠશાળા ચલાવે છે. શ્રીમાન બેન કલત્રે સાંગલીનો શ્રાવિકાશ્રમ ચલાવે છે, આદિ અનેક બહેનો જુદી જુદી સંસ્થાઓમાં શ્રીસેવાનું કાર્ય બજાવી રહી છે. આ બધો પ્રભાવ મગનબ્હેનની કુશળ કાર્યવાહીનો છે. આશ્રમની નાની મોટી બધી બહેનોને પોતાની સગી બહેન અને પુત્રીવત્ પાળે છે અને શિક્ષણ આપે છે. તારદેવ પરના તેમના આશ્રમમાં કોઇ પણ જાતના ફીરકાના ભેદભાવ વગર દરેક જૈન બહેનોને દાખલ કરવામાં આવે છે. તેમના ત્યાં તેમની સહચારીણી બહેનો લલિતા બહેન અને બ્ર. કંકુબ્હેનના શુભ પ્રયાસથી આશ્રમમાં હાલ ૮૦ થી ૯૦ હજારનું ધ્રુવફંડ થવા પામ્યું છે. મગનબહેનનું જીવન શ્રીમંત બહેનોને એક અનુપમ દ્રષ્ટાંતરૂપ છે કે જેમણે એક લખોપતીને ત્યાં જન્મ લઇ અનેક અશિક્ષીત અને દુઃખીત બહેનોનું જીવન પવિત્ર અને ઉચ્ચ બનાવવાનો અને વૈધવ્ય દિક્ષાના મુળ મંત્રરૂપ આત્મ કલ્યાણનો માર્ગ બતાવી ભારતની સંપૂર્ણ સ્ત્રીજાતિ પર અનહદ ઉપકાર કર્યો છે. ભારતનો સ્ત્રી સમાજ એ બહેનનો હંમેશને માટે ઋણી રહેશે. તેમનું ચિરસ્થાયી સ્મારક કરવું એ યોગ્યજ છે. આશા છે કે જૈન સમાજના નેતાઓ આ વાતપર પુરતું લક્ષ આપશે. મગનબહેનને કેશરબહેન નામની એક ૨૫ વરસની વયની સુશિક્ષિત પુત્રી છે. આદિ વિવેચન કર્યા બાદ ભાઇ મોતીલાલજીએ ઠરાવને વધુ ટેકો આપ્યા બાદ ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયો હતો. બાદ પ્રમુખ તથા સભાજનોનો મંડળ તરફથી ભાઇ જગમોહનદાસે આભાર માન્યા બાદ સભા ૯॥ વાગે વિસર્જન થઇ હતી.
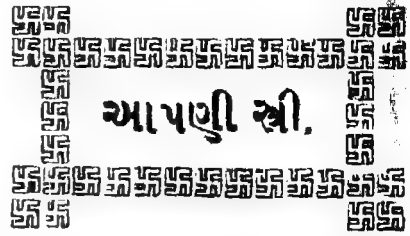
આપણી સ્ત્રી.

(લેખકઃ—રમણીક વી. શાહ. મુંબઇ.)

(મથાળું દેખી રખે કોઇ ગભરાઇ જતા. આપણી સ્ત્રી એટલે આપણા સમાજની વ્યક્તિગત દરેક સ્ત્રી, નહિ કે આપણી પોતાની એકની એક પરણેતર બૈરી!)

૧. જ્યાં લોકો કહે છે કે સ્ત્રીનો જમાનો આવ્યો—જ્યાં એવી પણ વાત થાય છે કે અમુક વર્ષો પછી ગાડીના ડબ્બામાં હાલ જેમ 'Reserved for ladies' રહે છે તેમ 'Reserved for men' રહેશે પુરૂષ જાતને હાલ તે ડબ્બામાં જવાનો હક નથી. ભુલેચુકે પણ જો પુરૂષ તે ડબ્બામાં જઇ ચઢ્યો તો સ્ત્રી (તે ડબ્બામાં બેસનારી) તેને બહાર કાઢી મૂકવાની સત્તા ધરાવે છે. જ્યારે સ્ત્રીના 'Reserved for men' ના જમાનામાં સ્ત્રીઓ તો પુરૂષના ડબ્બામાં ઘણી ખુશીથી બેસી શકશે આવા પ્રગતિમાન્ જમાનામાં આપણી સ્ત્રીની કિંમત્ કેટલી? શ્રીમતિ સરોજીની નાયડુ. શ્રીમતિ કમળાદેવી ચટ્ટોપાધ્યાય, શ્રીમતી મીસીસ હુદ્દીકર, શ્રીમતી જયશ્રી અને હંસા મહેતા, લીલા મુન્શી, શારદા દિવાન, જ્યોત્સના શુક્લ, સરોજિની મહેતા, ઉર્મીલા મહેતા, લક્ષ્મીબ્હેન જેસાણી, બચુબ્હેન લોટવાળા, શાંતિ બરફીવાળા-આવું જ્યાં આખું લશ્કર આજે હિંદુસ્તાનમાં સ્ત્રીઓના હક્કનું રક્ષણ કરવા ઉભું થયું છે, જ્યાં આટલી બધી સારી અને સજ્જડ રીતે સ્ત્રીઓની કિંમત અંકાય છે. સ્ત્રીઓને માન મળે છે ત્યાં આપણા સમાજની સ્ત્રી ક્યાં!

૨. અત્યારે ઘણુંયે ઘરમાં હું લગ્ન સિવાય બીજી કોઇ વાત સાંભળતોજ નથી. લગ્ન અને સોનું-બંને રીતે ખરું છે. લગ્નની સાથે સોનું

બંધાયેલુંજ છે. એ આપણી સ્ત્રીઓની માન્યતા. અને બીજું પરણ્યા પછી પણ ઘરમાં વારંવાર સોનાની બંગડીઓ—લોકેટ—ચુની-વિંટી વિગેરેની વાતો કરી પોતાના પતિને પજવવો એ આપણી સ્ત્રીઓનો જન્મસિદ્ધ હક્ક! દરેક કુમારી કન્યાએ પોતાના વિવાહ થયા પછી એટલું તો સમજવુંજ જોઇએ કે તે કોને પરણવાની છે. ત્હેનું ભવિષ્ય એક લક્ષાધિપતિ સાથે કે એક કરોડપતિ સાથે કે પછી એકસો રૂપીઆના પગારદાર સાથે કે એક ભીખારી સાથે નિર્માણ થયેલું છે. કન્યા જો આટલું સમજી પોતાના હાર્દિક ભાવથી પોતાનું ખરૂં કર્તવ્ય બજાવવાની લાગણીથી માગણી કરે (પરણ્યા પહેલાં અને પછી પણ) તો પતિ પત્નિ ઘણા સુખથી રહે એમ હું ચોક્કસપણે ધારૂં છું.

૩. "આજે મ્હારે એ અમુક તોલા સોનું લાવ્યા," ત્યારે સામેથી બીજી સ્ત્રી જવાબ આપે કે "અલીબાઇ, મ્હારે તો કંઇ ન આવ્યું"—આ સિવાય વધારે પડતી સારી વાતો તો આપણી સ્ત્રીઓના મુખમાં હું જોતોજ નથી. 'કેમ કાંતી? પરણવું છે ને?" ત્યારે ત્રીજી બોલે કે પણ ભા, જો આ ત્હારો વર, ખરૂં ને?—આ સ્ત્રીઓને મળતા કેટલાક નવરાશના વખતનો સાર. "ગોરી રાંડ સશલી તો બહુ ખરાબ છે જુઓને મ્હારી રેવી આવું આવું બોલે છે." ત્યારે ચોથી જવાબ આપે કે "ત્યારે જુઓને પેલી ઘરડી ડોકરી પણ—કેટલી કાંટા રૂપ છે?"—આ પણ તેઓને મળતા વખતમાં કરેલી કુથલીનો સાર આપણા આગેઓને ન હોય તેમની સામે કશો સબંધ ન હોય. કશા ફાયદા ગેરફાયદા છતાં આવી કુથલી કરવાની તેઓને ટેવજ હોય છે. કોઇ દિવસ ઘરકામ કેમ સુધારવું—છોકરાં સારાં કેમ ઉછેરાય—ગામની બહાર શું થાય છે—દેશ એ કઇ વસ્તુ છે—ગાંધી, જવાહર કોણ છે—લીલા-હંસા, સરોજીની, કમળા કોણ છે—આમાંનો એક શબ્દ પણ હું નથી ધારતો કે આપણા સમાજનો કોઇપણ પુરૂષ સ્ત્રીના મુખમાંથી સાંભળવા ભાગ્યશાળી થયો હોય. બંધુઓ સ્ત્રીઓની અવનતિની પણ પરિસિમા હોય!

૪. આપણા સમાજમાં સ્ત્રી કેળવણી કેટલી! ગુજરાતી ચાર કે પાંચ ચોપડીઓ. હું તો હજીયે કહું છું કે ચોપડીઓ રાડવાથી કંઇ વળવાનું નથી છતાં કંઇ પાણી ભરતાં ,અને રાંધતાં આવડયું એટલે કાંઇ બધું શીખાઇ ગયું એમ પણ સ્હમજવાનું નથી. આપણા સમાજમાં (ગુજરાતી બોલતા અને લખતા દરેક ગુજરાતી દિગંબર જૈન બંધુને અને બ્હેનને હું 'સમાજ' શબ્દથી ઉદ્દેશી રહ્યો છું) છપાતાં પેપરો કેટલાં! આપણા સમાજમાં વાંચી શકે તેટલી સ્ત્રીઓ કેટલી? આ જમાનાને અનુસાર એટલે ત્હેના પ્રમાણમાં જો ભણેલી સ્ત્રીઓ ગણીએ તો હું ધારૂં છું કે એક આંગળીના ત્રણજ વેઢે ગણાય. જેટલી ભણેલી છે. તે પોતાની ફરજો બરાબર બજાવતી હોય તો તે જાણે, મ્હને ખબર નથી. આખી દિગંબર જૈન કોમ લઇએ તોપણ ભણેલી સ્ત્રીઓ કેટલી નીકળે? હું નથી ધારતો કે હજારે એકથી વધારે નીકળે. ૭ લાખની વસ્તીમાં છસો સ્ત્રી ભણેલી—એ તે કાંઇ પ્રમાણ છે? એની તે કાંઇ કિંમત છે? સ્ત્રીઓને કેળવણી અપાતી નથી ત્હેનું કારણ જૂના વિચારના ઘરડા પુરૂષો અને ઘરડી સ્ત્રીઓ. તેઓ સ્હમજતાંજ નથી કે પોતાના ડહાપણમાં તેઓ પોતાની છોકરીઓના ભવ બગાડે છે. તેઓ સ્હમજતાં જનથી કે પોતાને ડહાપણ કરતાં આવડતુંજ નથી.

૫. મુંબાઇમાં મ્હને એક મિત્રે કહેલું કે "દિગંબર જૈન"માં ગુજરાતી લેખો પુરતા પ્રમાણમાં આવતા નથી. એટલે આપણા તંત્રી સાહેબ હિંદી લેખોને વધુ પ્રમાણમાં પ્રથમ સ્થાન આપે છે. શું આ વાત ખરી હોય તો કેટલી શોચનીય દશા? ગુજરાતમાં ગુજરાતી દિગંબર જૈનો માટે ફક્ત એકજ પેપર અને તે પેપર પણ ચલાવવાની તે જૈનોની તાકાત નહિ—શક્તિ નહિ, કયો માણસ આ સ્થિતી જોઇ આંસુ ના પાડે? હશુ! આ શું? જૈનોની અવનતિની પણ પરિસીમા હોય! કોઇ વખત સ્ત્રીઓને કદાચ લખતાં શરમ

આવતી હશે ! ('આપણામાં સંસ્કૃતિ બહુ ઉંચીને-તેથી"-આમ મ્હારા મિત્રે ટકોર કરી હતી) આપણી સ્ત્રીઓ પોતાના પાતને કાગળ લખવામાં જેટલી કાળજી લે છે ટેટલીજ કાળજી જો પોતાના વિચારો અમુક અમુક ચર્ચાત્મક વિષયો પર દર્શાવવામાં વાપરે તો મ્હને ખાત્રી છે કે સારાં **અવનવાં પરિણામો જરૂર આવે.**

સ્ત્રીઓને પુછતાં તેઓ કહે કે "અમે ભણેલાં નથી ને શું લખીએ ! નકામી માથાફોડ શા માટે કરીએ ?" હું ત્હેમને પુછું કે 'જો તમે ભણેલાં નથી તો ત્હમને પતિદેવ પર કાગળ લખતાં ક્યાંથી આવડે છે ? ઘરમાં વાત કરતાં તમે 'ધણી' શબ્દ વાપરો જ્યારે કાગળ લખતાં ત્હમે..."પતિદેવ" વાપરો છો-ત્હમને આ ક્યાંથી આવડયું ? કાગળમાં ત્હમે ત્હમારા અક્ષરો પણ કેવા ચીપી ચીપી કાઢો છો !" સ્ત્રીઓ જવાબ આપે કે "તે બધું ખરૂં પણ હમને લેખ લખવા જેટલો વખતજ મળતો નથી" હું ત્હમને કહું કે "ત્હમે કાગળ લખવામાં અર્ધો કલાક કે આખો કલાક ગાળો છો. ત્હમારે સામાજીક વિષયોપર વિચારો દર્શાવવા અર્ધો કલાક બસ છે." બંધુઓ ? આપણે ત્હેમની પાસેથી સારી ભાષાની માંગણી ન કરીએ ફક્ત ત્હેમના વિચારો જાણવા પુરતુંજ લખાણ માંગીએ. હું સ્ત્રીને એવી રહેવાની હા નથીજ પાડતો. પોતે જ્હાર ફરીને કોઇ રચનાત્મક કાર્ય ન કરી શકતાં હોય તો પોતાના સમાગમમાં જેટલી સ્ત્રીઓ આવે તેટલીજ સ્ત્રીઓને જો પોતાના સારા વિચારો દર્શાવી વાદવિવાદ કરી ત્હેમના મનમાં ઉસાવે તો કેટલો સરસ ફાયદો થાય ? સ્ત્રીઓ કહે કે હમને વાંચવાનો વખત મળતો નથી મ્હારા ધારવા મુજબ તે એક ગપજ છે-હડહડતું જુઠાણું છે. ત્હેમને બપોરે વખત મળે છે. રાત્રે પણ મળે છે. તેઓના કહેવા મુજબ તેઓનો બપોરનો વખત ન મળે, જો તેઓ સવારે નવ વાગે ઉઠતાં હોય તો ! રાતનો વખત ન મળે, જો તેઓ સાડા સાત વાગે સુધી રહેતાં હોય તો. આ તદન અસત્ય વાત છે. રાંધવું, કપડાં ધોવાં અને છોકરાંની સારવાર કરવી આ સિવાય બીજું કામ તેઓને હોતુંજ નથી. અને આ કામ તેઓ સોળ કલાક કરતાંજ નથી. અને જો કહે તો વ્હેલાં સ્વર્ગે સીધાવે. ઓછામાં ઓછો તેઓને ચાર કલાકનો આરામ મળે છે. તે દરમિયાન જો તેઓ અભ્યાસ કરતાં હોય સાર વિષયો પર ચર્ચા ચલાવતા હોય અને પોતાની જીંદગી સુધારવાનો પ્રયત્ન કરતાં હોય તો એક વર્ષમાં અણુધાર્યો ફેર પડે. ભાઇઓ અને બ્હેનો ! કંઇક તો કરો નહિ તો પછી પત્થર પર પાણી થવાદો. **'અસ્તુ'**

तीर्थंकर चित्रावलि ।

२४ तीर्थंकरोंके रंगबेरंगी २४ अलग बडे २ चित्र कांचमें जडवाकर मंदिरोंमें रखने योग्य यह चित्रावलि अवश्य मगाइये । मूल्य ३)

और भी बडे२ रंगीन चित्र-शिखरजी ॥), भा० शांतिसागरजी ॥), चम्पापुरी ।=), पावापुरी ।=), गिरनार ।=), सोलह स्वप्न ॥), चन्द्रगुप्तके स्वप्न ॥), संसारवृक्ष ।=), षट्लेश्या स्वरूप ।=), सीताजीकी अग्नि परीक्षा ॥), जन्मकल्याणक ।), आहारदान ।) भ० पार्श्वनाथ =) ये चित्र तथा तीर्थ व त्यागियोंके १५ प्रकारके एक आनेवाले चित्र भी अवश्य मगाइये ।

भगवान पार्श्वनाथ-अतीव आकर्षक मू. २॥)

आत्मानुशासन टीका (फिर तैयार) २)

सूर्यप्रकाश (शास्त्राकार बिल्कुल नवीन) १)

प्रश्नोत्तर श्रावकाचार-

नामक नवीन शास्त्र श्री सकलकीर्ति कृत मूल श्लोक २४८० व पं० लालारामजी कृत हिन्दी भाषा वचनिका भी अवश्य मगाइये । शास्त्राकार मू० ३॥)

मैनेजर-दिगंबर जैन पुस्तकालय-सूरत ।

मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत, व बेलवलाल प्रेमानंददास परीखकी कमेटी (उसमें नाम बढ़ानेकी सत्ता सहित) नियुक्त करते हैं जो फंड पूर्ण होनेपर इसकी योजना निश्चित करके उसको दि० गु० जैन बोर्डिंग टू टकंडको इसकी व्यवस्था भी सुपुर्द करेंगे। (माणिकचंद ग्रंथमालाकी व्यवस्था भी इसी ट्रस्टके आधीन है)

मगनबाई स्मारक फंडमें—

कमसे कम रु० १००००) होनेकी आवश्यकता तो है ही, इसलिये हरएक ग्राम व शहरके भाइयोंको यथाशक्ति रकम स्वयं या सभा द्वारा अथवा चंदा द्वारा एकत्र करके हमको भेज देना चाहिये।

"दानवीर माणिकचंद्र" भेंट देंगे।

"मगनबाई स्मारक फंड" में कमसे कम ५) देनेवाले हरएक दातारको 'दानवीर माणिकचंद्र' नामक बड़ा भारी ग्रंथ जिसमें १००० पृष्ठ व ८० चित्र हैं तथा सुनहरी जिल्द है और जिसमें जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबहेनजी जे० पी० का सौभाग्यावस्थाका व विधवावस्थाका चित्र व कुछ परिचय भी है सिर्फ पोस्टेज मात्र आठ आने लेकर बिलकुल मुफ्त भेज दिया जायेगा। इसलिये स्मारकफंडकी रकम हमें मिलते ही "दानवीर माणिकचन्द्र ग्रंथ" पोस्टेज मात्र आठ आने लेकर भेज देंगे अथवा स्मारक फंडकी रकम मनिओर्डरसे न भेजकर वी०पी०के साथ शामिल करके "दानवीर माणिकचंद्र" मंगवाना हो तो वैसा भी करदेवेंगे अर्थात् फंडकी रकम व पोस्टेजकी वी० पी०से "दानवीर माणिकचंद्र" भेज देंगे।

इस फंडमें अबतक इसप्रकार रकम प्राप्त हुई है—

मगनबाई स्मारक फंड।

१०१)	मूलचंद किसनदास कापड़िया—	सूरत।
११)	श्री० ब्र० सीतलप्रसादजी	"
२५)	छगनलाल उत्तमचन्द सरैया	सूरत
५)	पं० परमेष्ठीदास न्यायतीर्थ	"
१४२)	कुल	

हमने एक पर दो अंक तो बढ़ा दिये हैं अब दो के चार अंक होजाना चाहिये।

इस फण्डको शीघ्र ही पूरा करना है इसलिये हरएक पाठक पाठिका स्थान २ पर परिश्रम करके फंड एकत्र करके भेजनेकी कृपा करें क्योंकि श्रीमती मगनबाईजीके अनन्य उपकारका बदला चुकाना हमारा परमपवित्र फर्ज है।

निवेदक—

मूलचंद किसनदास कापड़िया
चन्दावाड़ी—सूरत।

मिष्टान्न भोजन कराइये।

सम्पूर्ण दि० जैन संस्थाओंके प्रबंधकोंसे निवेदन है कि महां२ संस्थाओंकी तरफसे भोजनका प्रबंध है यहांके बोर्डिंग, अनाथालय, उदासीनाश्रम, विधवाश्रम, श्राविकाश्रम आदिमें मेरी ओरसे फाल्गुण शु० १५ को मिष्टान्न भोज करावें और बिल इस पतेपर भेजकर रुपया मंगा लेवें। प्रेमाला नवलमा जैन पोरवाड़,
बड़वाहा (इन्दौर)।

વિજયનગરથી—મોડાશાવાળા ફતેહચંદભાઇ માહામંત્રી લખી જણાવે છે કે હું વિજયનગર, નવાગામ, જવાસને બાવલવાડના ભાઇઓને તથા ૧૦ પાઠશાળાના માસ્તરોને તેડીને માહા સુદી ૩ દેવલ ગયો હતો. જ્યાં સુદ ૫ ને દિને શા. દલીચંદ દેવચંદ તરફથી જળયાત્રાપૂર્વક વેદી પ્રતિષ્ઠા થઇ હતી અને ખાસ ઉપદેશથી પૂજન ફંડમાં હમીરચંદ હેમચંદ તરફથી ૧૫) તથા બીજા ૪૧) મળ્યા. તેમજ પ્રતિષ્ઠાકારક તરફથી દેરાસર માટે રૂ. ૪૨॥, સ્વયંસેવકોને ૨૦) ઇનામ તથા ૧૨૧) ના ભંડાર ખાતે વગેરે ભર્યાં હતાં. ને જમણ પણ જમાડ્યું હતું.

વળી શ્રીમતી મગનબ્હેન જે. પી. ના સ્વર્ગવાસની ખબર સાંભળી વિજયનગરમાં દશ પાઠશાળાઓ તરફથી શોક સભા કરવામાં આવી હતી તેમજ બધી પાઠશાળાઓમાં રજા પાડી શોક દર્શાવવામાં આવ્યો હતો.

મુનિશ્રી મુનીંદ્રસાગરજી—મુનિ વિજયસાગરજી, એલક દેવેંદ્રસાગરજી, એલક વિનયસાગરજી, ક્ષુલ્લક બુદ્ધિસાગરજી, બ્ર. નાગજીભાઇ અને ધર્મવતી, ગુણવતી, વિમળમતી અને શાનવતી એ ચાર બ્રહ્મચારિણી સહિત પરતાપગઢથી પગ ફરવે ગીરનારજીની યાત્રાએ નીકળ્યા છે તે સંઘ કેશરિયાજી વિજયનગર, ભીલોડા, ચોરીવાડ થઇ તારંગાજીની યાત્રા કરી આગળ વધ્યો છે. આ સંઘ પરતાપગઢવાળા શેઠ જોધકરણ ફુલચંદ અને હીરાલાલ પન્નાલાલ તરફથી કાઢવામાં આવ્યો છે સાથે ૪૦ માણસો છે દરેક સ્થળે ધર્મ પ્રભાવના થતી રહે છે. ચોરીવાડમાં એક ઐલક ને ક્ષુલ્લક નવીન થયા છે.

મગન બ્હેનના વિયોગ માટે ભાવનગરનો શોક—તા. ૧૦-૨-૩૦ ને રોજ સંતોક બ્હેન દિ૦ જૈન પાઠશાળાના હોલમાં રાત્રિએ શ્રીમતી જૈન મહિલારત્ન મગનબ્હેન જે પી. ના દુઃખદ અવસાનનો શોક પ્રદર્શિત કરવા શેઠ ત્રિભોવનદાસ દીપાલજીના પ્રમુખપણા નીચે એક જાહેર સભા મળી હતી, જેમાં શ્રેયુત શેઠ અમરચંદ ચુનીલાલ ઝવેરી (મુંબઇ) વિગેરે સંભવિત ગૃહસ્થો તેમજ મહિલાઓએ હાજરી આપી હતી અને તેમાં શાળાના સેક્રેટરીએ શ્રી. મગન બ્હેનની અમુલ્ય સમાજ સેવાની પ્રશંસા કરી અને તેમના જીવનની રૂપરેખા વર્ણવી જણાવ્યું હતું કે એ મહિલા રત્નના નિધનથી અમારી પાઠશાળાનો એક સબળ આધાર ગયો છે. તેમના પ્રયાસથી શ્રીમતી સુશીલના બ્હેન અમારી પાઠશાળામાં સારી ધાર્મિક ઉન્નતિ કરી રહ્યાં છે અને અહીંયા સર્વ બહેનોને પણ તેમની ધાર્મિક સંસ્થાઓ તથા ધાર્મિક કાર્યમાં સલાહકારની એક કીમતી ખોટ પડી છે. આખા હિંદુસ્તાનમાં પણ તેમની ખોટ રહી જૈન મહિલાઓની ઉન્નતિના કાર્યમાં ભાગ્યેજ પૂરાશે. પછી તેમણે તેમના અવસાન માટે દીલગીરી પ્રદર્શિત કરવાનો ઠરાવ મૂક્યો હતો અને તેમના કુટુંબીઓને આશ્વાસન આપવાની દરખાસ્ત મૂકી હતી અને તે સ્વર્ગસ્થ મહિલા રત્નના આત્માને પ્રભુ શાંતિ આપે એવી પ્રાર્થના કરી હતી. અને શ્રાવિકાશ્રમ અને તેમના કુટુંબીઓને શોકદર્શક તાર મોકલ્યો હતો.

આ પ્રસંગે શ્રીમતી સુશીલના બ્હેને જીવંત પર્યંત ધાર્મિક કાર્યમાં નિઃસ્વાર્થપણે સેવા બજાવવાનું જાહેર કર્યું હતું. પાઠશાળામાં તેમના અવસાનના શોક અર્થે બે દીવસ શાળા બંધ રાખી હતી.

કેશરિયાજી [illegible]માં—જે ગુન્હેગારોને ૪૮૫૦) [illegible] રૂ.ના વરઘોડાની [illegible] ૧૦૦) ઉદયપુર સ્ટેટને, [illegible] દજીના સંતાનોને, ૫૦૦) સ્વ. પૂ[illegible]નાને, ૫૦૦) સ્વ. માણેકચંદજીના સંતાનોને, ૫૦) કસ્તુરીબાઇના દિયરને તથા ૨૦૦૦) સ્વ. પં. ગિરધારીલાલજીની ધર્મપત્નીને.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला-सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

सम्पादकः–मूलचन्द किसनदास कापड़िया–सूरत।

वर्ष २२वाँ अङ्क ५.

वीर सं० २४५६ फाल्गुन.

विषयानुक्रमणिका.

इस वर्षके ग्राहकोंको दिये जानेवाले–

दो उपहार ग्रन्थ–"हिन्दी जैन विवाह विधि" व "नवरत्न" छप चुके हैं व तैयार होकर १९–२० दिनमें सब ग्राहकोंको इस वर्षके मूल्यकी वी० पी०से भेजे जायंगे। मैनेजर।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २॥) विशेषांक मूल्य ॥)

स्वर्गीय जैन महिलारत्न-

मगनबहेन स्मारक फंडकी स्वीकारता।

१३२) गतांकमें प्रकाशित
११) ठाकोरदास जमनादासजी चूडावाला-सूरत
२५) डाह्याभाई रीखवदास गनीवाला ,,
२५) गमनलाल खुशालचंद सुतरवाला ,,
५) मोतीलाल पन्नालाल ,, आगरा
५) वजेचंद मकनदास चूडावाला सूरत
५) कांतीलाल हरगोवनदास ,,
५) नेमचन्द कस्तूरचन्द ,,
५) परभुदास हेमचन्द ,,
१०१) श्री० सर सेठ हुकमचंदजी सा० इंदौर
५) पारसोबा आपाजी महाजन शिवशाहपुर
५) द्वारकाप्रसाद जैन पोस्ट मास्टर जयपुर
५) केशवलाल हीराचंद तलोद
५) अमेचन्द कालीदास जेतपुर
५) ब० प० ला० गुलाबचन्दजी लखनऊ
५) गणपतराय जगन्नाथ जैन मीरा
५) शोभाराम गंभीरमल टोंग्या इन्दौर
५) ब्र० दिग्विजयसिंहजी नागपुर
५) सेवक माणिकलाल जैन सागवाडा
५) दिगंबर जैन पंच नवागाम
५) मोडासिया फतेचंद ताराचंद विजयनगर
५) घासीरामसा रायचंदसा भामगढ़
५) हीरासा भीकासा खंडवा
५) अमरासा फूलचन्दसा ,,
५) केशवसा अमोलखचन्दसा ,,
१) पं० नेमीचन्द सेठी मुडबिद्रि
२५) रा० ब० बाबू नांदमलजीसा० अजमेर
५) ब्र० प्रेमसागरजी सिलोंडी
५) सरदारबहु कडोरेलालजी जगदलपुर
५) छोटीवहु ध०प० सेठ मुन्नालालजी ,,
३) ज.नदीबाई माता रज्जूलालजी ,,
१) मगरानीबहू ध०प० रज्जूलालजी ,,
३) रूपचन्दकी माताजी ,,

४४९) कुल

स्वर्गीय जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबहिनका सारे जैनसमाजपर किया गया उपकार इतना अधिक है कि हम किसी प्रकार भी उससे उऋण नहीं हो सकते तो भी आपके उपकारका यदकिंचित् ऋण चुकानेके लिये आपके इस स्मारकफंडमें यथाशक्ति अच्छी रकम या कमसे कम ५) तो अवश्य ही भेजें। आशा है "दिगंबर जैन" के प्रत्येक पाठक इसके लिये तुर्त ही प्रयत्न करके स्थान २ से अच्छी रकम इकट्ठी करके भिजवावेंगे। जिससे इस फंडमें अच्छी रकम होसके।

कमसेकम ५) इस फंडमें देनेवालेको १००० पृष्ठका 'दानवीर माणिकचंद्र' सचित्र ग्रन्थ जहांतक सिलिकमें होगा भेंटमें दिया जाता है। जिन्होंने कमसे कम ५) भेजे हैं वे पोस्टेज खर्च छह आनेकी टिकिट भेजकर यह ग्रन्थ अनरजिस्टर्ड पार्सलसे मंगालें अन्यथा वी० पी० से मगाना हो तो वैसी सूचना दें परन्तु वी०पी०में पोष्टेज खर्च कुल दश आने देने पड़ेंगे। गुजरातके भाई भी इस फण्डमें अच्छी सहायता अवश्य भेजें।

मूलचन्द किसनदास कापड़िया-सूरत।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ।

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततां, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वाँ | वीर सम्वत् २४५६, फाल्गुन, विक्रम सम्वत् १९८६. | अङ्क ५.

सम्पादकीय-वक्तव्य

महात्मा गांधीजी अहिंसक जंगमें।

यह कौन नहीं जानता कि हमारा हिंद देश १५० वर्षसे पराधीनताकी बेडीमें जकड़ा हुआ है व हमें (भारतको) अंग्रेजी राज्यमें, जैसी स्वतंत्रता दूसरे अंगरेजी राज्य आयर्लेण्ड, आफ्रिका, केनेडा (अमेरिका) को है, नहीं है, अर्थात् भारतके लिये अलग २ कानून हैं इसलिये हमारी राष्ट्रीय महासभा (कौंग्रेस) ३० वर्षोंसे चिल्ला रही है कि हमें संस्थानीक स्वराज्य प्राप्त हो। परन्तु वादे करते २ आजतक अंग्रेज सर्कारने हमको संस्थानिक स्वराज्य भी नहीं दिया जिससे गत ता० ३१ दिसम्बर १९२९ को लाहौरकी राष्ट्रीय महासभाने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करनेके ध्येयका प्रस्ताव पास कर डाला व सारे देशमें ता० २६ जनवरीको स्वतंत्रता दिन मनाया गया। फिर रा० महासभाने हिंदके हृदय-सम्राट महात्मा गांधीजीको पूर्ण अधिकार दिया कि आप जैसा व जिस प्रकार उचित समझें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करनेके शांतिमय अहिंसक प्रयोगोंका अवलम्बन करें।

तब महात्माजीने एक ऐसा प्रयोग ढूंढ़ निकाला जो आजतक किसीके ख्यालमें ही नहीं आया था! यह प्रयोग दूसरा कुछ नहीं परन्तु समुद्रके खारे पानीसे प्राकृतिक नमक बनता है व जो मजदूरी सहित १० पाईका एक मन पड़ता है उसपर हमारी सरकार २०० पाई महसूल वसूल कर ७ करोड़ रुपये प्रतिवर्ष हमसे ले लेती है! इस राक्षसी करको किसी भी प्रकार न देना चाहिये यह है। इसके लिये महात्माजीने जब सूचना निकाली तब लोग हंसते थे कि ऐसा कैसे होसकता है जब नमककी उत्पत्तिका प्रबन्ध सरकारके ही हाथमें है! परन्तु महात्माजीने अपनी स्कीम प्रगट की तब सारे हिंदके तो क्या परन्तु यूरोप व अमेरिकाके लोग भी चकित होगये हैं व महात्माजीकी इस योजनापर सारी दुनिया एक नजरसे देख रही है।

फिर महात्मा गांधीजीने सरकारकी विना परवानगी नमक बनाने न लेनेका सत्याग्रह (सविनय कानूनभंग) करनेको अहमदाबादसे गत ता० १२ मार्चको प्रातःकाल ६॥ बजे ७९

सैनिक (स्वयंसेवक) सहित साबरमती आश्रमसे शहर बाहर तक प्रयाण किया तब लाखों आदमियोंकी भीड़ थी। महात्माजीका कुंकुम, फल, अक्षत, रुपये, नोट आदिसे सत्कार हुआ था। महात्माजीने रेलमें नहीं परन्तु पैदल ही यह कूच प्रारम्भ की है। अहमदाबादसे आप आसपासके ग्रामोंमें होकर खेड़ा जिलेमें पहुंचे। वहां रास ग्राम जहां कि ता० ७ मार्चको सरदार वल्लभभाईको व्याख्यान देनेकी मनाई करनेपर उसका भंग करनेको ३ माहकी सजा हुई है वहां पहुंचे। यहां महात्माजी व्याख्यान देंगे तो पकड़े जावेंगे ऐसी आशंका सर्वत्र थी। परन्तु महात्माजीने तो वहां निःसंकोच व्याख्यान दिया था व वहांसे आपका सैन्य भड़ौंच पधारा है। वहांसे मार्गमें आते हुए ग्रामोंमें प्रचार करते हुए आप व आपके सैनिक ता० १ अप्रैलको सूरत पधारेंगे व सूरतसे फिर ग्रामोंमें प्रचार करते हुए ता० ५ अप्रैलको सूरत जिलेमें जलालपुरके पास डंडी ग्राम (जहां समुद्र किनारा है) पहुंचेंगे। वह ता० ६ अप्रैलको वहां समुद्रके पानीसे नमक बनानेका व ले जानेका सत्याग्रह (सविनय कानून भंग द्वारा) करेंगे।

इस योजनासे सारा देश ऐसा ही सत्याग्रह करनेको तैयार होगया है (क्योंकि हिंदमें १८०० मीलतक समुद्र किनारा है जहां नमक बनाया जा सकता है) परन्तु राष्ट्रीय महासभा समितिने अभी प्रस्ताव किया है कि ता० ६ अप्रैलको यदि महात्माजी पकड़े जांयगे तो फिर सब प्रांतोंको ऐसा सत्याग्रह करनेकी मंजूरी दी जायगी। इससे अभी सब प्रांत शांत बैठे हुए हैं परंतु सत्याग्रह करनेकी तैयारी तो कर रहे हैं अर्थात् स्थान२ पर सैंकड़ों हजारों स्वयंसेवकोंने इस सैन्यमें अपने नाम लिखाये हैं तथा महात्माजीके ग्रामोंमें प्रचारसे वहांके सैंकड़ों तलाटी व पटेलोंने स्तीफे देदिये हैं। महात्माजीकी इस ऐतिहासिक कूचके समाचार हिंद व यूरोप अमेरिकामें नित्य ही सचित्र प्रकट होते रहते हैं क्योंकि महात्माजीके साथमें देश विदेशके अनेक संवाददाता व फोटोग्राफर रहते हैं। महात्माजी इस प्रथम प्रयासमें सफल-मनोरथ हों यही हमारी आन्तरिक भावना है।

* * *

महावीर जयंती आरही है।

भारतवर्ष सदासे गुणग्राही रहा है। इसके प्रति जिनने कोई उपकार किया उनका वह कृतज्ञ रहा है। यह गुण और गुणियोंके मूल्यको जानता है। यही कारण है कि आज यहां अनेक जयंतियां मनाई जाती हैं, पूर्वजोंका स्मरण किया जाता है और उनके गुणगान किये जाते हैं।

महावीर जयंती एक असाधारण जयंती है। यह किसी व्यक्ति, समाज या जातिके महापुरुषकी जयंती नहीं, किन्तु जगद्धितैषी, पतितपावन, प्राणिमात्रके मार्गदर्शक हमारे अंतिम तीर्थंकर महावीरस्वामीकी जयंती है। भगवान महावीरने भारतवर्षके प्रति जो उपकार किया है वह कल्पान्तकालतक भी विस्मरण न होगा।

आजसे करीब ढाई हजार वर्ष पूर्व भारतीय समाजमें भयंकर अत्याचार फैला हुआ था,

जातीय दुरभिमानके वशीभूत होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपनी सत्ताओंका दुरुपयोग करने लगे थे, पापकी प्रबल सत्ता जम चुकी थी, बड़े बड़े तिलकधारी ब्राह्मण नरहत्या, गोवध और अश्वमेध यज्ञको धर्मका प्रधान अंग समझते थे ! ऐसे विकट जमानेमें भगवान महावीरस्वामीका इस भारतवसुंधरा पर कुंडलपुर ग्राममें राजा सिद्धार्थकी रानी त्रिशलादेवीकी कूखसे चैत्रशुक्ला त्रयोदशीके दिन जन्म हुआ था। इसी पवित्र दिनको हम आज महावीरजयंतीका दिन मनाते हैं।

महावीरस्वामीको जगत कल्याणकी आकांक्षा थी इसीलिये गृहस्थीके गर्तमें न फंसकर ३० वर्षकी अवस्थामें ही दिगम्बर दीक्षा धारण करली थी।

दीक्षाके बाद-

उनका जीवन सबके लिये था। केवलज्ञान प्राप्तिके पश्चात् काशी, कौशाम्बी, कौशल, कलिंग, काम्बोज मत्स्य, गांधार, यवनश्रुति, भद्रकार आदि अनेक देशोंमें विहारकर समस्त प्राणियोंके कल्याण हेतु उपदेश दिया था। भगवानके समवशरणमें देवेन्द्र, चक्रवर्तीसे लेकर मनुष्य मात्र ही नहीं किन्तु पशुपक्षी भी उपदेश श्रवण करनेको आते थे और आत्मकल्याण करते थे।

भगवान महावीरस्वामीने अपने उपदेश द्वारा पाखण्डके खण्ड खण्ड कर डाले थे, जातीय दुरभिमान छुड़वाकर विश्वप्रेमका प्रचार किया था और संसारको जैनी होनेके लिये शांतिका मार्ग खोल दिया था। इन्हीं उपकारोंसे उपकृत होकर हम आज महावीर जयंती मनाते हैं।

तत्कालीन परिस्थिति।

चित्तसंभूत जातक ग्रन्थमें लिखा है कि चाण्डालके अकस्मात दर्शन होजानेसे ब्राह्मण, वैश्य स्त्रियां आंखे धोती थीं और उन्हें मरवा तक डालती थीं ! वेदको सुननेवाले शूद्रके कानोंमें कीले ठोक दिये जाते थे ! ऐसे भयंकर पापोंका प्रतीकार भगवान महावीरस्वामीने अपने दिव्योपदेश द्वारा किया था और प्रत्येक जिज्ञासुको धर्म श्रवणका अधिकारी बतलाया था।

उस समय याज्ञिक ब्राह्मणोंके अत्याचारका तो कुछ ठिकाना ही नहीं था। 'यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः' 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' इत्यादि वाक्यों द्वारा भारी हिंसाका प्रचार कर डाला था ! गायको माता माननेवाले ब्राह्मणोंने वार्षिकामेष्टि यज्ञमें अप्रसूता गौ को होम करनेकी खुली आज्ञा दे दी थी !

ऐसी विकट परिस्थितिमें भगवान महावीरस्वामीने अपने उपदेशामृत द्वारा हिंसादि पापोंसे संतप्त भारत-भूको शांतिलाभ कराया था। यही कारण है कि बादमें अनेक राजा महाराजा एवं सम्पूर्ण प्रजा अहिंसाकी उपासक होगई थी और बहुत समय तक अक्षुण्ण अहिंसाका प्रचार रहा। ग्यारहवीं शताब्दीमें पाटन, चम्पापुर, अयोध्या, नागपुर, ज्वालापुर, बनारस, उज्जैन, पटना, मथुरा, विशाला आदि अनेक नगरोंके अहिंसक जैन राजा थे। महाभयंकर एवं प्रतिकूल जमानेमें भगवान महावीरस्वामीने शांतिदायनी अहिंसाका प्रचार कर भारतीय जनताका ही नहीं किन्तु जगतका जो उपकार किया है उसके स्मरणमें हम महावीर जयन्ती मनाते हैं।

हमारा कर्तव्य ।

महावीर जयन्ती (चैत्र सुदी १३)के दिन प्रातःकाल हमें भगवान महावीरस्वामीके गुण-गान करना चाहिये, जिन मंदिरमें जाकर पूजन करना चाहिये और महावीर चरित्र सुनना सुनाना चाहिये तथा यथाशक्ति व्रतोपवास भी करना चाहिये। गरीबोंको दान करना चाहिये और अपनी शक्तिके अनुसार विद्या दानादिमें द्रव्य प्रदान करना चाहिये। रात्रिके समय प्रत्येक ग्राम व शहरोंमें एक सार्वजनिक सभा की जावे। जिस प्रकार जैन मित्रमण्डल देहलीकी तरफसे यह दिवस तीन दिनोंतक मनानेकी विराट् आयोजना होती है, उसीप्रकार प्रत्येक शहरमें होनेकी आवश्यक्ता है। जहां २ सभायें की जावें वहां इस बातका पूर्ण ध्यान रखना चाहिये कि अजैन भाई काफी संख्यामें उपस्थित होसकें। पहिलेसे ही किसी ऐसे विद्वानको बुलानेकी आयोजना कर लेना चाहिये जिसके उपदेशको सुनकर अजैन जनतापर भगवान महावीरस्वामीके जीवन और उनके दिव्योपदेशोंका पूरा असर होसके।

संकुचित दृष्टि ।

अब संकोच या तंगदिलीका जमाना नहीं है और न भगवान महावीरस्वामीमें भी यह बात थी। अब तो प्रत्येक व्यक्तिसे प्रेमपूर्वक वर्ताव करना चाहिये। संसार सत्यकी खोजमें है, इसलिये अपना सिद्धान्त मनुष्यमात्रको बतलानेमें कोई संकोच न होना चाहिये। दानी श्रीमानोंका कर्तव्य है कि उत्तमोत्तम जैन ग्रंथ या तत्संबंधी छोटे२ ट्रेक्ट छपवाकर लाखोंकी संख्यामें मुफ्त वितरण करना चाहिये। अब वह याज्ञिक जमाना नहीं है जिसमें "स्त्रीशूद्रौ नाधीयातां" की अविवेकपूर्ण आज्ञा प्रचलित थी; किन्तु अब तो किसी भी जिज्ञासुको जैनधर्मसे परिचित करानेमें ही महावीरजयंती मनानेकी सफलता समझना चाहिये।

जैन-दीक्षा ।

जिस प्रकार भगवान महावीरस्वामीने प्राणी-मात्रके लिये जैनधर्मका दरवाजा खोल दिया था, तथा अनेक जैनाचार्य उसका अनुकरण करते आये हैं उसी प्रकार अब भी अजैनोंको जैनदीक्षा देने (जैन बनाने) में संकोच न करना चाहिये। मिथ्यामार्गमें फंसे हुए एक ही मनुष्यको जैन-मार्गपर ले आना बड़ा भारी उपकार है। हमारे जैनशास्त्रोंसे स्पष्ट पता चलता है कि महाव्यसनी टढ़सूर्य, अनंगसेना वेश्या, यमपाल चाण्डाल, चौराधिपति सुरदत्त, काणा ढीमरनी, वेश्याशक्त चारुदत्त आदि अनेक व्यसनी दुराचारी और शूद्र भी जैनधर्मके प्रभावसे उत्तम गतिको प्राप्त हुये हैं; तब क्यों न अजैनोंको जैन बनाया जाय? जैन दीक्षाका विरोध करना प्रकाशको अन्धकार कहनेके समान है। क्या ही अच्छा हो यदि महावीर जयंतीके दिन उपदेश द्वारा अनेक अजैनोंको जैनधर्मका श्रद्धानी करके जैन बनाया जावे? यह सबसे बड़ा उपकार है।

महावीर जयंतीके दिन कुछ विशेष कार्य भी अवश्य होना चाहिये। इसमें तो कोई संदेह नहीं कि जबसे यह जयंती मनानेका रिवाज जारी हुआ है तबसे बहुत लाभ हुआ है, अनेक

अजैनोंको जैन सिद्धांतका परिचय हुआ है; किंतु फिर भी इसे आगे बढ़ानेकी जरूरत है। केवल कुछ शहरोंमें ही जयंती मनाई जाती है यह संतोषपद नहीं कही जासक्ती, किन्तु जब ग्राम ग्राममें (जहां एक भी जैन रहता है) जयंती मनाई जावेगी तब कहीं संतोष होगा। इसके लिये पूर्ण प्रयत्न होनेकी आवश्यक्ता है। तब महावीर जयंतीका आम त्यौहार होनेमें देर न लगेगी। जैसे कि देहलीमें महावीर जयंतीकी आम छुट्टी होनेकी सरकारसे गत वर्षसे मंजूरी मिल चुकी है। उसी प्रकार सर्वत्र प्रयत्न करना चाहिये।

मल्लीनाथ विद्यालय—शिरडशहापुर (निजाम) के लिये १० विद्यार्थियोंकी आवश्यक्ता है। अध्यापक पं० सुवर्णकुमारजी नियुक्त हुए हैं।

श्री द्रोणगिरिका—वार्षिक मेला ता० २ से ९ मार्च तक होगया। जनता अधिक थी परन्तु टीकमगढ नरेशके स्व०के कारण शोक छाया हुआ था। ता० ७को गुरुदत्त दि० जैन पाठशालाका अधिवेशन सिंघई कुंदनलालजी सागरके सभापतित्वमें हुआ था तब न्या० पं० गणेशप्रसादजी वर्णीने उपदेश दिया, जिसके असरसे सभापतिजीने पाठशालाको ५०१) दिये व २१२।।।) और भी सहायता मिली थी। फिर सामाजिक कुरीतियोंको मिटानेका भी व्याख्यान हुआ था।

इन्दौरमें—सेठ शोभाराम गंभीरमलजीके पौत्रका विवाह फा० सुदी ८ को होगया, जिसकी खुशीमें इन्दौरके मंदिरोंको ७१९) व १०१) अलग २ संस्थाओंको यत्र तत्र भेजे गये हैं।

परतापगढ़—में सेठ माणिकलालजी जुवा दि० जैन विद्यालय जो ८ वर्षसे चल रहा है उसके लिये निजी मकान आपने (सेठ माणिकलालजीने) ६०००) लगवाकर बनवा दिया व उसका उद्घाटन परतापगढ़ नरेशसे ता० २४ फर्वरीको धूमधामसे करवाया था।

राजाखेडा—में मुनिसंघपर ब्राह्मणों द्वारा उपसर्ग हुआ था जिसकी रक्षा धोलपुर नरेशने की थी इसके लिये धोलपुर नरेशको धन्यवादका प्रस्ताव अनेक स्थानोंसे भेजा जारहा है।

ललितपुर—में गत ता० १० को भ्रातृमंडलका ३२ वां अधिवेशन हुआ था, जिसमें पं० परमेष्ठीदासजी न्यायतीर्थ (सूरत) ने सामाजिक परिस्थितिपर व्याख्यान दिया था।

ब्रा० भागीरथजी वर्णी—अभी अमरोहामें हैं व चैत्र मास तक यहां ही ठहरेंगे।

बडवानीमें उदासीनाश्रम—श्री ब्र० गेंदीलालजी महाराज कई माससे बडवानी (बावनगजाजी) में ठहरे हुए हैं व वहां आपने एक उदासीनाश्रम खोलना निश्चित किया है जिसके लिये एक दानीने ६०) मासिक पांच वर्ष तक देना स्वीकार किया है जिससे अभी २ त्यागी तो रह सकेंगे व अपने खर्चसे विशेष त्यागी भी आसकते हैं। मुहुर्त बैशाख मासमें बडवानीमें ही होगा व मगसिर मासमें आश्रम बडवानी पहाडकी तलहटीपर चला जायगा।

किरतपुर–में अभी श्री० ब्र० सीतलप्रसादजीने पांच भाइयोंको विधिपूर्वक यज्ञोपवीत धारण कराया था उन्होंने कई प्रतिज्ञाएं धारण कीं।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा–लाडनूं (मारवाड) में वैशाख वदी (गुजराती चैत्र वदी) १ से ९तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी। तब वहां मनमानी सभा व खंडेलवाल महासभाके भी अधिवेशन किये जानेवाले हैं।

फिरोजाबादमें–वार्षिक मेला ता० २२ से २६ मार्च तक धूमधामसे होगया। आचार्य १०८ श्री शांतिसागरजीका संघ भी पधारा था। साथमें दि० जैन समिति फिरोजाबादका पंचम अधिवेशन, लमेचू महासभा व पद्मावती परिषदके भी अधिवेशन हुए थे।

वैद्यरत्न–पं० सुन्दरलालजी पछारके ज्ञानसागर औषधालयसे स्तीफा देकर इटारसीके म्यूनिसिपल औषधालयमें नियुक्त हुए हैं। पछारसे विदाईके समय आपको मानपत्र दिया गया था। आपने इटारसीमें ता० १९ मार्चको 'विद्याकी आवश्यकता' पर ऐसा जोशीला व्याख्यान दिया कि उसी समय वहां जैन पाठशाला स्थापनका निश्चय होकर १८॥) मासिक चंदा लिखा गया था।

आभार दर्शन–हमारी स्वर्गवासी बहिन जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबेहेन जे० पी० के असमय परलोकगमनसे अनेकानेक सज्जनों व संस्थाओंसे शोक व समवेदना दर्शक प्रस्ताव व पत्र आये हैं, उन सबको अलग२ उत्तर देनेकी असमर्थताके कारण इस जाहिरपत्र द्वारा उन सबका मैं आभार मानता हूं।

ताराचन्द नवलचंद जौहरी–बम्बई।

साहित्याचार्य व कविरत्न–भारत विद्वत् परिषद व सं० विश्वविद्यालय अजमेरकी साहित्याचार्य व कविरत्नकी परीक्षामें मीड़ा जैन पाठशालासे सुरेन्द्रचंद्र जैन वीर उत्तीर्ण हुए हैं तथा 'हिन्दी साहित्यकोविद' में भी ६ विद्यार्थी पास हुए हैं।

खण्डवा–में अभी सेठ रावजी सखाराम दोशी पधारे थे, तब मगनबाईजीकी शोक सभा आपके सभापतित्वमें हुई थी फिर यहां आपने विष्णुकुमार मुनिपर कीर्तन किया था।

देहलीमें महावीरजयंती उत्सव–इसबार भी चैत्र सुदी १३–१४–१५ तीन दिनों तक बड़ी भारी तैयारीके साथ सार्वजनिक रूपसे होगा। साथमें विद्वानोंसे इनामी निबंध व इनामी कविताएं भी मगाई हैं। यहां 'महावीर जयंती' की सरकारी छुट्टी भी स्वीकृत होचुकी है। इस जयंतीमें अनेक जैन पंडित पधारेंगे तथा तीनों दिनके सभापति क्रमशः–रा० ब० लाला सुलतानसिंहजी देहली, रा० ब० पारसदासजी खजांची देहली व सेठ परमानन्दजी जैन एम० ए० होंगे।

शिवहारामें शानदार रथयात्रा–शिवहारा (बिजनौर) में जैन रथयात्रा मजिस्ट्रेटकी अनुचित रोकके कारण बंद रखनी पड़ी थी, वह फिर आज्ञा मिलजानेपर ता० ६ से ९ मार्च तक सानंद होगई। सभी जैन अजैन हिन्दू मुसलमानोंने रथयात्रामें भाग लिया था, बड़ी ही धर्मप्रभावना हुई थी। श्री० ब्र० सीतलप्रसादजी पं० देवकीनन्दनजी शास्त्री व ब्र० दिग्विजय-

सिंहजी आदि पधारे थे व जीवदया प्र० सभा आगराका ९-१० वां वार्षिक अधिवेशन भी श्री० रा० ब० साहु जुगमंदिरदासजी रईस नजीबाबादके सभापतित्वमें सफलताके साथ हुआ था। जिसमें निम्नलिखित उपयोगी प्रस्ताव पास हुए थे-(१) साहु सलेखचंदजी चवरे वकील, श्री० मगनबाईजी आदिकी मृत्युपर शोक, (२) कार्यकर्ताओंका चुनाव होकर मंत्री दयासागर पं० बाबूरामजी व स० मंत्री पं० सुर्यपालजी शास्त्री नियुक्त हुए, (३) पाकवीरो, कोसाँबी, कारस, विन्देश्वरी, जीवनमाता, कैलादेवी, दशहरा, बांसवाडाकी बलिहिंसा बंद की जावे, (४) चमड़े व रेशमकी वस्तुओंसे घृणा की जावे, (५) नियमावलीमें सुधार, (६) सभाकी रजिस्ट्री कराई जावे, (७) मांसाहारके विरुद्ध देश व विदेशोंमें प्रचार किया जावे। यहां श्री० ब्र० सीतलप्रसादजीका व्याख्यान न होने देवें ऐसा वातावरण व प्रयास होनेपर भी साहुजी आदिके प्रयत्नसे आपके ७ वें प्रस्तावपर तथा जैनधर्मके महत्वपर ऐसे दो व्याख्यान सफलताके साथ हुए थे।

बड़ी धारासभामें नियुक्त-श्री०बाबू निर्मलकुमारजी जैन रईस व बैंकर आरा, बड़ी धारासभामें बिहार व ओरिसाकी ओरसे प्रजाकी ओरसे मेम्बर चुने गये हैं। बधाई!

मुनिसंघ-फिरोजाबादसे जलेसर, हाथरस, अलीगढ़, आदिके ग्रामोंमें विचरता हुआ चैत्र सुदीमें मथुरा पहुंचनेकी संभावना है।

माणिकचन्द दि० जैन परीक्षालय-बंबईकी परीक्षा इस साल ता० २२ अप्रैलसे होगी।

रतलाम-से पांच कोसपर सेमालिया (सैलाना स्टेट) में श्वे० साधु दानविजयजीके व्याख्यानका वहांके राजा महाराजकुमारपर इतना प्रभाव पडा कि आप महाराजगढ़में मुनिश्रीको व्याख्यान देनेके लिये ले गये हैं व वहां ही व्याख्यान होते हैं।

'आदर्श जैन' का-'वीरांक' महावीर जयंती पर प्रकट होनेवाला है। उत्तम लेख व कविताओंपर पदक भी देनेका प्रबंध हुआ है। यह मासिकपत्र पं० मूलचन्दजी जैन वत्सल कवि द्वारा बिजनौर (यू० पी०) से प्रकट होता है।

पोहरी जागीर-(ग्वालियर) में महावीर जयंती उत्सव तीन दिनोंतक मनाया जावेगा। यहां ता० २ मार्चको अकलंक आश्रमकी स्थापना भी हुई है।

वैद्य-मासिकपत्र जो मुरादाबादसे पं० शंकरलाल जैन वैद्य द्वारा १६ वर्षसे प्रकट होता है उसका १७वें वर्षका विशेषांक प्रकट होनेवाला है।

"वीर"-का "समाज अंक" भी महावीर जयन्तीपर सचित्र प्रगट होनेवाला है। परिषदका यह पाक्षिक पत्र मेरठ (यू० पी०)से प्रगट होता है।

मडावरा (झांसी)-में शांतिमतीजी, अनंतमतीजी व चन्द्रमतीजी ये तीन क्षुल्लिकाएं गत मासमें पधारी थीं तब आपके उपदेशसे कन्या पाठशाला खोलनेको २०) मासिकके वचन मिले थे।

जम्बूविद्यालय-सहारनपुर-का पंचम वार्षिकोत्सव फाल्गुन सुदी ९को श्री० ला० प्रद्युम्नकुमारजी रईसके सभापतित्वमें हुआ था। सब

न्या० पं० माणिकचन्द्रजी, जगन्नाथजी शास्त्री आदिके उत्तमोत्तम व्याख्यान हुए थे। यह विद्यालय उत्तरोत्तर उन्नतिपर आरहा है।

स्व० मगनबहिनकी—मासिक शोक सभा ता० ९ मार्चको श्राविकाश्रम बम्बईमें धर्मचंद्रिका ब्र० कंकुबाईजीके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें आश्रमकी वर्तमान व भूतपूर्व श्राविकाएं व अनेक स्नेही संबंधीगण उपस्थित थे। उस समय श्री. ललिताब्हेन, चतुरबाई, राजूबाई व सभापतिजीके प्रयत्नसे श्राविकाश्रममें एक लक्ष रुपयेमें ९०००) कम है उसको मगनब्हेनकी स्मृतिमें पूर्ण करनेका प्रस्ताव पास होकर ९२९७।=) का चंदा स्त्रियोंके स्मारक फन्डमें भरा गया था। जिसमें बड़ी २ रकमें ये हैं—१००१) लीलावतीबहिन पानाचंद जौहरी, ५०१) स्व० ललिताबाई, ५०१) ब्र० कंकुबहिन, ५०१) सौ० केशरबहिन, ३०१) सौ० कमलाबहिन, ५०१) जैन महिलारत्न ललिताबहिन, ५०१) सगुणाबाई रुइया, २०१) श्री० जड़ावबाई, १५१) श्रीमतीबाई गरगट्टे, १०१) माणिकबहिन, १०१) लक्ष्मीबहिन, १२५) पं० चंदाबाईजी, ५१) चंदनबाई, ५१) शांताबाई, ५१) ब्र० राजूबाई, ५१) श्री० कोकिल, ५१) रतनबाई आदि।

अमरोहा—में ऋषभज्ञान जयंती उत्सव ता० २२-२३-२४ फर्वरीको हुआ था तब बा० भागीरथजी वर्णी, पं० देवकीनंदनजी, पं० जुगलकिशोरजी आदि भी पधारे थे।

वैद्यराज पं० कन्हैयालालजी—आयुर्वेद भूषण कानपुर "इन्डियन मेडिसन बोर्ड" की ओरसे यू० पी० भरके वैद्योंकी ओरसे मेम्बर चुने गये हैं। बधाई!

मुनिश्री शांतिसागरजी-(छानी) आजकल इन्दौरमें विराजमान हैं।

बेरिस्टर चम्पतरायजी—साहब ता० २२ फर्वरीको बम्बईसे विलायत रवाना हुए थे। विदाईके लिये कई जैन भाइयोंने बंदरपर जाकर हारतोरे दिये थे। आप एक वर्षतक वहां जैनधर्म प्रचारार्थ ठहरेंगे। आपके पत्रव्यवहारका पता—
The Imperial Bank of India Ltd.
22 Old Broad Steet London E. C. 2

मुनिश्री सूर्यसागरजी—वीरसागरजी, धर्मसागरजी व अजितसागरजी ये चार मुनिगण गत मासमें गोटेगांव पधारे थे तब वीरसागरजीने केशलोंच किया था। अभी आपका विहार जबलपुर प्रांतमें होरहा है।

गिरनारजी—जीमें मुनीन्द्रसागरजी आदिका संघ चैत्र मासमें पहुंच जायगा।

श्री अजरसेन दि० जैन—संपादक 'देशभक्त' मेरठको राजद्रोहके कारण १ वर्षकी सजा हुई थी उसकी अपील करनेपर हाईकोर्टने सजा कम न करके एक वर्षके स्थानपर २ वर्षकी सजा करदी है। दुःख!

સુરત—માં વિક્ટોરિયા બાગમાં શ્વેતાંબર જૈનોનું પ્રાચીન જીર્ણ મંદિર છે તેને એના કાર્યકર્તાઓ તેમાંથી મૂર્તિ ઉઠાવી લઈ વેચી દેવા તૈયાર થયા છે તેની વિરૂદ્ધમાં અત્રે પોકાર થઈ રહ્યો છે ને શ્વે૦ મુનિ માણેકવિજયજી એ મંદિર વેચાવા ન પામે તે માટે તનતોડ પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે.

होली व मित्र-संवाद।

(लेखकः—धर्मरत्न पं० दीपचन्दजी वर्णी, चौरासी)

शिशिरऋतु गई। उसने जो अपने तीव्र झकोरोंसे वृक्षोंके भूषण स्वरूप पत्तोंको झड़ा झड़ाकर सौन्दर्य रहित नग्नसा कर दिया था, सो अब वसंतऋतुके शुभागमनसे वे वृक्ष फिरसे नव-पल्लवों सहित लहलहे पहिले भी सुन्दर दिखाई देने लगे हैं। आकाश चहुं ओर निर्मल होगया है। न तो अब शीतका प्रकोप ही रहा और न अभी गर्मीका आताप ही आया है। जहांतहां मंद २ सुहावनी पवन चलती है, पक्षीगण भी प्रसन्न चित्त हुए चुहकते दिखाई देते हैं। कोयल अपनी निराली तान छेड रही है, जो कि विरही जनोंको तीरका काम करती है, और रसिक जनोंको मोहन करके अपने निकट आकर्षित करके बुलाती है। बगीचों व जंगलोंकी अकथनीय शोभा होरही है तात्पर्य हर तरहसे यह वसंतऋतु सुखद प्रतीत होती है।

इन्हीं दीनोंमें फाल्गुन सुदी ८ से १५ तक हमारा पवित्र अष्टान्हिका (नंदीश्वर) पर्व आता है। इसमें अनेक भव्य जीव व्रत विधानादि उत्सव करके सातिशय पुण्य प्राप्त करते हैं। परन्तु कितनेक अज्ञानी लोग ऐसे पवित्र पर्व दिवसोंमें होलीके नामसे अनेक घृणित कार्य करते हैं। वे लोग जहां तहांसे मांगकर व चोरी कर करके किसी एक जगह लकड़ी कंडे आदि पदार्थ एकत्र करके जलाते हैं। उसका नाम होली रखते हैं। फिर उसकी राख माथेमें लगाते हैं और होली है ऐसा कह कहकर भंड वचन बोलते हैं, जहांतहां चाहे जिसके ऊपर धूल, कीचड आदि पदार्थ फेंकते हैं। तात्पर्य नगर व ग्रामोंको ये लोग अत्यन्त मलिन कर डालते हैं इनके उपद्रवके कारण सभ्य नर नारियोंको तो घरसे बाहिर निकलना ही कठिन होजाता है। इनमें कोई यदि कुछ सभ्य बनते हैं तो वे रंग गुलाल, अबीर लेकर चाहे जिस पर डाल देते हैं। और एक बीभत्स रूप बनाये पागलकी तरह जहां तहां बेकार हुए फिरते हैं। ये इस अनाड़ीपनमें थक न जांय या कि किसीको देखकर लज्जा व संकोच न आजावे। इसलिये ये अज्ञानी अपने इस अज्ञानको व निर्लज्जताको, चरमसीमातक पहुंचानेके लिये मदिरा, चर्स, गांजा, अथवा भंगको पीकर बिल्कुल बेसुध होजाते हैं। इनमेंसे मनुष्यत्व बिल्कुल ही हवा होजाता है। बहुतोंने तो इसे धार्मिक रूप दे रक्खा है और गवर्नमेन्टसे इसे आम तिहवार बताकर छुट्टियां कराली हैं। अस्तु, जो हो—सज्जनोंको तो ऐसे समयमें कोर्ट कालेज आदिसे अवकाश मिलजाता है और वे उसमें बहुत कुछ

धर्म साधन करके पुण्योपार्जन करते हैं। इसी नीतिको लिये हुए हमारे मित्रगण भी अवकाश पाकर नगरोंकी उपाधियोंसे बचकर पुण्य संचयार्थ यात्राको चल दिये और हस्तिनापुर पहुंच गये।

वास्तवमें यह स्थान परम रम्य और निरुपाधि है। हमारे पूज्य १००८ श्रीशांतिनाथ, कुंथुनाथ तथा अर्हनाथ तीर्थंकरोंने अपने गर्भ जन्म तप और ज्ञान कल्याणकोंसे इसे पवित्र किया है। दानेश्वर राजा श्रेयांस भी यहीं प्रसिद्ध हुए हैं, और तभीसे (तृतीयकालके अंतसे) जब भगवान ऋषभनाथको वैशाख सुदी ३को राजा श्रेयांसने इक्षुरसका आहारदान दिया था, तभीसे संसारमें वह तिथि "अक्षयतृतीया" कहलाई क्योंकि उस दिन उनके यहां अक्षयनिधि होगई थी। इसलिये समाजके शुभचिंतकोंने अक्षयतृतियाके दिन उक्त स्थानपर 'एक दिगम्बर जैन गुरुकुल' श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके नामसे खोला था जो आजकल श्री जम्बूस्वामी (अंतिम केवली)के पवित्र निर्वाण क्षेत्र चौरासी मथुरामें सुरक्षित है। तात्पर्य–ऐसे उत्तम व एकांत स्थानको देखकर मित्रगण बहुत हर्षित हुए और ८ दिन यहीं ठहरनेका निश्चय कर लिया। तदनुसार नित्य त्रिकाल सामायिक पूजन स्वाध्यायादि करते हुए यथाशक्ति उपवासादि तप भी करते थे और परस्पर अवकाशानुसार धार्मिक तथा सामाजिक विषयोंपर वार्तालाप भी करते थे उसीका कुछ सारांश पाठकोंको सुनाते हैं।

मिट्ठनलाल–काकाजी, होलीका पर्व सर्व भारतमें मनाया जाता है तथा इसे चारों वर्णके हिंदू तथा जैनी भी मानते हैं और अपना व परका वीभत्स स्वांग बनाकर घृणित तथा अश्लील गाना गाते और नशा करके पागलोंकी भांति मारे २ फिरते हैं, मानापमानका भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता। मेरी समझमें इतना नीच घृणित पर्व तो कोई हो ही नहीं सक्ता, कि जहां बहिन बेटियोंके सामने भी लोग गन्दे माने कुशब्द बोलते और कुचेष्टा करते देखे जाते हैं और कोई भी सभ्य समाज इसका प्रतीकार नहीं करता। इसका क्या कारण?

जय०–बेटा, प्रश्न तो मौकेका है, सुनो! न तो यह धार्मिक पर्व है न इससे सांसारिक लाभ ही कोई है। परन्तु संसारमें रूढ़ियोंका साम्राज्य होनेसे कोई भी भलाई बुराई या असलियतपर विचार नहीं करता। कहावत है "शास्त्राद्रूढ़ी बलीयसी" और यदि कोई कुछ करता भी है, तो लोग उसकी हंसी उड़ाते, बहिष्कार करते और उसपर नाना प्रकारकी आपत्तियां लादनेमें भी कसर नहीं करते। जैसे कि आजकल कुछ लोगोंने बाल्यविवाह निषेध, वृद्धविवाह निषेध, अश्लील गाना और अनावश्यक व्ययोंका निषेध, समान वर्णोंमें परस्पर रोटी बेटी संबंध स्थापनकी चर्चा उठाई है, सो यद्यपि उन लोगोंका कहना शास्त्रविरुद्ध नहीं है, तो भी रूढ़िके भक्त अंधपरंपरा चलानेवाले विवेकहीन जन या उनसे आजीविका पाकर पेट पालनेवाले कतिपय मनुष्य उन लोगोंको सुधारक कहते हुए भी मनमानी गालियां सुनाते हैं, विरोध करते हैं। इसपर जब सुधारकोंने देखा कि ये लोग

समझते हुए भी हठ नहीं छोड़ते। और यहां भारत आरत होकर गारत होता जाता है तब उन्होंने बाल्यविवाह निषेधपर बड़ी धारासभामें बिल पेश करके उसे "शारदा एक्ट" के नामसे पास करवा दिया। जो कि प्रथम अप्रैलसे समस्त बृटिश भारतमें लागू हो जायगा। इसपर भी जैसी उछलकूद मचाई जारही है सो देखते ही हो इत्यादि, इसीप्रकार होलीको भी समझो।

एक राजाकी एक होलिका नामकी कन्या थी जो कि अपने पूर्वले कुसंस्कारों व साम्प्रत कुसंगतिके कारण माता पितादि जनोंसे छिपकर गुप्तरीत्या किसी विषयी मनुष्यसे रमने लगी। यह बात उसकी एक वृद्धा दासीके सिवाय कोई न जानता था। इसलिये होलिकाने " कि कहीं यह मेरा भेद किसीपर प्रगट न कर देवे।" उस निर्दोषिनीको धोखेसे अग्निमें डालकर जला दिया। दासी मरकर व्यन्तरीदेवी हुई और अवधिज्ञानसे अपना पूर्वला सब हाल जानकर होलिकासे वैरका बदला चुकानेके लिये उसने सारे नगरमें फोड़ाफुन्सी, खाज खुजली आदि रोग फैला दिये। और नगर लोगोंको स्वप्नमें सब बात करदी तथा यह भी कहा कि यदि तुम होलिका जैसी एक काष्टकी पुतली बनाकर उसे चौतापर रखकर जलाओगे और होलिकाके नाम लेकर गालीगलौज बोलोगे तो मैं यह रोग समेट लूँगी। इत्यादि, बस वह दिन फाल्गुन सुदी १५ का था, लोगोंने वैसा ही किया और व्यंतरीने अपनी माया संकोच ली, रोग मिट गया। तात्पर्य व्यन्तरीने होलिकाको बदनाम करके उसका पाप प्रगट करके अपना बदला लेलिया। परन्तु बेटा! यह लोक गतानुगतिक है। इसलिये प्रतिवर्ष वैसा ही होलिका दहन करने लगे, बकने बकाने लगे, ये ठहरे संसारके विषयी जीव इन्हें इसीमें आनन्द आगया। ब्राह्मणोंको इसमें भी कुछ पूजापत्री मिलने लगी। इसलिये उन्होंने इसे धार्मिकरूप दे दिया। हिन्दुओंकी संख्या बहुत और उनमें जैनी तो आटेमें नमक जितने थोड़े तिसपर भी इनके दुर्भाग्यसे इनको इन दो तीन सौ वर्षमें महालोभी परिग्रही मिथ्यात्वसे पूर्ण भट्टारक नामके गुरु मिल गये जिन्होंने इनको धर्मके नामपर केवल अपनी पूजा भेट भावना करना मात्र बताया और विश्वास दिलाया कि तुम चाहे सो करो। चाहे सो खाओ, किसी भी रागी द्वेषी देवको मानो, चाहे जिस रूढ़िपर चलो। परन्तु यदि हमारी भावना भेट करते हो तो सब अपराध माफ हैं। ये लोग वैसा ही उपदेश देते। जैसा कि क्रिश्चियन पादरी कहते हैं, ईसापर विश्वास रक्खो तो सब माफ होजायगा। यही कारण है गुजरात जैसा भद्र प्रांत धर्मज्ञान विहीन होरहा है। यही नहीं जहां२ इनकी पैगम्बरी रही वहां२ ज्ञानकी शून्यता ही पाई जाती है। जो हो बस इन लोगोंपर भी उन बहुसंख्य हिन्दुओंका प्रभाव पड़ा और ये भी अष्टान्हिका जैसे पवित्र पर्वमें भी इस अज्ञान चेष्टामें पड़ जाते हैं। कहा है –

"गतानुगतिकाः लोको न लोको परमार्थिकाः।
बालुकापुंजमात्रेण ताम्रपात्र गतोगतः ॥"

अर्थात्–एक साधु तांबेका लुटा लेकर नहाने गया और इस भयसे कि इस कोई ले न जाय

उसे रेतमें छिपाकर ढेर कर दिया। अन्य लोगोंने उसे ढेर करते देखलिया और उसका अनुकरण करके आसपास सैंकडों रेतके ढेर बना दिये। जब साधू नहाकर अपना तूंबा निकालने लगा, तो सैंकडों रेतके ढेर देखकर अपने ढेरको न पहिचान सका और उक्त श्लोक कहकर चला गया अर्थात् लोक गतानुगतिक भेड़िया चालके होते हैं-परमार्थको नहीं समझते, रेतका ढेर करने मात्रसे मेरा ताम्रपात्र खोया गया।

बेटा! यही बात है, अब रूढ़ि पड़ गई है। इसका विरोध भी होरहा है और सुधार भी। अनेक स्थानोंमें अब लोग इस दिन खासे २ तरहके वरघोडे सर्घस (जलूस) रुपांतर करके निकालने लगे हैं। होलीके रागोंमें सुकवियोंने नीति, धर्म और अध्यात्म रस पूर्ण रचनाएं तैयार की हैं। जिनको गाकर अश्लील गीतोंका परिहार करते हैं तथा अब पढ़ेलिखे लोग भी बहुत संभल गये हैं वे इसे निंद्य गिनने लगे हैं। होते २ सब सुधर जायगा।

टेक०-तो भैया क्या इसे मानना ही न चाहिये?

जय०-जी, मेरा मत तो ऐसा ही है और भाभी तो इसी प्रकार जैसा मना रहे हो!

टेक०-भैया जबसे गांधीकी आंधी चली है तबसे तो कपड़ेकी होली होने लगी।

जय०-ठीक है अभी आपने उसका अभिप्राय नहीं समझा, वह कपड़ोंकी नहीं विदेशी कपड़ोंकी होली है, ये वे कपड़े हैं जिनमें लाखों मन चर्बी लगती है और भारतकी कारीगरीको नाशकर गरीबोंके पेट काटकर परदेशसे आते हैं। इसलिये गांधीजीका क्या सभी देशनेताओंका कहना है कि अपने देशी (खद्दर) के ही वस्त्र पहिरो, और स्वयं ही रहटा कांत कर बनवाओ।

टेक०-यह तो ठीक है पर उन्हें जलाकर ही क्या होगा?

जय०-यह केवल उनसे घृणा करानेके लिये है। तात्पर्य जो पासके जला देगा वह नवीन क्यों खरीदेगा? इससे उसकी आती हुई बाढ़ रुकेगी, और देशके लोग अपनी जरूरतकी वस्तु आप बनाने लगेंगे।

टेक०-बाल वृद्ध विवाह, कन्याविक्रय, अनावश्यक व्यय, भंड गीत रुकना तो ठीक है, परन्तु अंतर जातीय विजातीय असवर्णीय विवाह और तिसपर विधवा विवाह ये क्या है? भ्रष्टाचारीपना नहीं हैं?

जय०-विधवा और विवाह यह बात तो अनमेल है, धर्म और लोकके विपरीत है। विवाह कन्याका ही सुना है लिखा बांचा है परन्तु भाइसाहब जहांतक बाल और वृद्ध विवाह सर्वथा बंद नहीं होते, वहां तक लोगोंको यह कहनेका अवसर मिल रहा है। "इसलिये न रहेगा बांस, न बजेगी बंशी, अर्थात न विधवाएं होगी, न लोगोंके मुँह ऐसा कहनेको फटेंगे। इसलिये शीघ्रातिशीघ्र बाल, वृद्धविवाह बंद होना चाहिये और अन्तर्जातीय, विजातीय, असवर्णीय विवाह तो पं० देवकीनंदनजी जैसे सिद्धांतशास्त्री जैसे महान विद्वान् भी आगमविरुद्ध नहीं बताते-लोक विरुद्ध कहते हैं सो लोकमें ऐसी रीतियां सम-

यानुसार बनती बदलती रहती हैं। इसमें लोक अपना सामाजिक निर्वाह जैसा देखते हैं वैसा सुधारा वधारा करते रहते हैं। मात्र धर्मका विरोध बचाना जरूर चाहिये।

टेक०-ठीक है, परन्तु बड़ी उमर १४ वर्ष ही तो शारदाबिलमें है, सो इसके ऊपर कोई निश्चय है कि विधवा न होगी?

जैय०-कर्मगति तो कोई नहीं जानता। परन्तु इतना अवश्य होगा कि एक तो १४ वर्षसे कमकी नवीन विधवा न होगी। दूसरी बात १४ वर्षमें कन्या भी स्वपर हिताहितको समझ लेती है। उसे धार्मिकज्ञान अपने कुल और कर्तव्यका भान भी होजाता है, सो यदि दुर्भाग्यवश वह दिन आया भी तो वे अपने धर्मके बलपर उस दुःखको संयम मार्गमें लगाकर शीलकी ध्वजारोपण कर देवेंगी। इसलिये बाल और वृद्ध लग्न, कन्या व वरविक्रय और भण्डगीत, कुहास्य (खोटी दिल्लगी) अनावश्यक व्यय ये तो जड़मूलसे निकालना चाहिये।

टेक०-यह बिलकुल ठीक है, परन्तु स्वराज्य स्वराज्यका हौआ होरहा है सो क्या?

जय०-भैया! जब अठारह कोडाकोडी सागर भोगभूमिमें बीत गये और मोक्षमार्ग इस क्षेत्रमें बिलकुल ही रुक गया, उस समय उस मिथ्यांधकारका प्रतिकार करके मोक्षमार्ग चलानेवाले हमारे पूज्य १००८ श्री ऋषभदेव तीर्थंकर हुए। इसी प्रकार जब २ धर्मका लोप हुआ, मिथ्यात्व बढ़ा, तभी तब तीर्थंकर हुए और पुनः धर्मतीर्थ चलाया। तात्पर्य यह कि प्रकृतिका यह न्याय है। जब२ जिन बातोंकी आवश्यक्ता बढ़ जाती है तभी तब वैसे उदार चेता जन उत्पन्न होकर उन अन्याय्योंका प्रतिकार करते हैं। इस समय हमारे देशमें विदेशी सत्ता राज कर रही हैं। उसकी नीत्यनुसार हमारा देश दिनों दिन दरिद्र होकर दुखी होता जाता है। इसलिये देशनेता चाहते हैं कि हमारे देशका धन यहीं रहे। हम भी स्वाधीन रहे, हमारा प्रबंध हम ही करें। और इसके लिये वे अहिंसाकी नीतिको आगे रखकर कार्य कर रहे हैं, जो नीति जैनियोंको सर्वथा उपादेय है।

टेक०-बात तो सत्य है। आजसे ३० वर्ष पहिले व आजमें बड़ा अंतर होगया है। लोगोंको रोटियोंके लाले पड़ गये हैं, बड़े २ धर्मात्मा और विद्वान धनियोंकी हां में हां रोटियोंके लिये ही स्व इच्छा विरुद्ध मिलाते हैं, बालबच्चे पालना कठिन होरहा है, मेरे तो खादीका व्रत है ही, लड़के भी खादी पहिरते हैं।

सिंगेन-में का तुम्हारी आज्ञा नई मानो, जो कोई समझैया चाहिए? सिंगेनजीके मुंहसे इतना निकलते ही "जय श्रीशांतिनाथ प्रभुकी" इस ध्वनीसे धर्मशाला गूंज गई। वहां उपस्थित अन्य भी नरनारियोंने स्वदेशी सूती खद्दर पहिरनेका नियम लिया और होलिका दहनके मिथ्यात्वका भी त्याग किया। पश्चात् निम्नप्रकार भजन करके सब निंद्रादेवीकी गोदमें शयन करने लगे।

योगी फाग मचावे, देखो योगी फाग मचावे लाल ॥टेक०॥
समकित रंग रंगो वह जोगी ज्ञान गुलाल उड़ावे ॥ देखो०
चारित्रकी पिचकारी भरके शिव त्रियरे छुड़वावे ॥ ,,
पांच सखा संग पांच सखी ले पांचको नाच नचावे ॥ ,,
ध्यान अगिनमें डार कर्म वसु रिपुकी खाक उड़ावे ॥ ,,
'दीपचन्द्र' स्वतंत्र होय फिर शिव संग रार मचावे ॥ ,,

असमर्थता ।

(ले०-पं० गुणभद्रजी जैन-कलोल)

जब विमल हृदयमें आत्मज्योति अति जागी।
तब आदिनाथने राज्य-सम्पदा त्यागी ॥
झट प्रस्तुत वे प्रभु हुये जगत दुःख हरने ।
प्रिय अद्भुत सुख साम्राज्य हस्तगत करने॥१॥

उन दया-सिंधुके साथ भूपवर कितने ।
बन गये साधु सब त्याग राज्य सुख अपने ॥
कैसे रह सकते थे वे भूप भवनमें ।
जब रहे ईश उनका अति गहन विपिनमें ॥२॥

निज स्वामीके अनुसार सदा ही चलना ।
नित है समीर अनुकूल वृक्षका हिलना ॥
होते हैं प्रभुसे कभी विमुख जो जगमें ।
होजाता उनका पतन सहज ही मगमें ॥३॥

थे सब ही भूपति सरल हृदय अज्ञानी ।
थी नहीं साधुव्रत क्रिया किसीकी जानी ॥
करते थे जैसी क्रिया प्रथम आदिश्वर ।
तदनुसार ही क्रिया करें वे नृपवर ॥४॥

छह मास कठिन उपवास प्रतिज्ञा लेकर ।
निज आत्म-ध्यानमें हुये लीन परमेश्वर ॥
अत्यन्त अलौकिक थी प्रभुवरकी क्षमता ।
वे खड़े हुवे कर रहे मेरुकी समता ॥५॥

वह वस्त्र विहीन शरीर रम्य त्यों भाता ।
निर्मेघ सूर्य ज्यों अतिशय शोभा पाता ॥
थे अर्द्धोन्मीलित नेत्र बड़े ही मनोहर ।
घुटनो तक लटके हुये दीर्घ दोनों कर ॥६॥

वे नाथ ध्यानमें जब इस भांति विराजे ।
तब दुखित हुवे कच्छादिक सारे राजे ॥
वे सह न सके हा ! कठिन परिषह ऐसे ।
तरु भ्रष्ट पुष्प सहता न तापको जैसे ॥७॥

यों कहे परस्पर दुखित सभी निज मुखसे ।
हम दुःखी हुये हैं आज क्षुधाके दुःखसे ॥
हैं प्रभु तो ये अप्रमत्त दुःख सहनेमें ।
आ सकता इनका नहीं धैर्य कहनेमें ॥८॥

हो रहे क्षुधासे हाय व्यथित अतिशय हम ।
पर खड़े रहेंगे कबतक प्रभु पर्वत सम ।
हम यही समझते थे सब निज २ मनमें ॥
प्रभुलेंगे सुधि स्वयमेव चार छह दिनमें ॥९॥

होगये खड़े यों कितने ही दिन इनको ।
क्या भूल गये हैं हाय ! सर्वथा हमको ॥
ये झूठ मूठ ही हमसे तप करवाते ।
हा ! मिलता नहीं है अन्न प्राण अब जाते ॥१०॥

यों करके हम उपवास कहांतक जीवें ।
प्रभु मुखसे भी नहीं कहें आज क्या पीवें ॥
क्यों उदरपूर्तिकी युक्ति न नाथ बताते ।
हा ! व्यर्थ क्षुधासे तनका नाश कराते ॥११॥

यदि रिपुओंका ही नाश इष्ट है उनको ।
तो देते क्यों नहिं नाथ आज्ञा हमको ॥
छह गुणमें यह तो नहीं कोई गुण नृपका ।
है कौन प्रयोजन घोर आज इस तपका ॥१२॥

ये दुःखोंसे आकीर्ण विपिनमें रहते ।
हैं राजनीति अनभिज्ञ नाथ हम कहते ॥
ये ईश चाहते हैं निज तनको तजना ।
अब निश्चय हममें किया सर्व तप तजना ॥१३॥

मर जावेंगे वे मौत भूखके मारे ।
नहिं करते भोज्य प्रबंध आज जग प्यारे ॥
है इन ही पर अवलम्ब हमारा जीवन ।
दुःख हमको सब स्वीकार मिले बस भोजन ॥१४
यह पूर्ण तपस्या हो न प्रभुकी जोंगों ।
खा कन्दमूल निर्वाह करेंगे तोंलों ॥
हम अब तो निज निर्वाह करेंगे जाकर ।
फिर मिलजावेंगे शीघ्र ईशमें आकर ॥१५॥
है पूर्वापर अवज्ञात नाथको सब ही ।
कुछ कर देंगे अधुनैव सहज निर्णय ही ॥
अतएव घेर कर खड़े हुये प्रभुवरको ।
क्या नक्षत्रोंने घेरलिया शशिवरको ॥१६॥
निज भोलापने वे लगे दिखाने ऐसे ।
भगवान होगये रुष्ट आप क्यों ऐसे ॥
जब करते थे जगनाथ राज्यका शासन ।
हम रहे सभी ही नित्य दयाके भाजन ॥१७॥
प्रभुके प्रसन्न लख हम थे प्रमुदित होते ।
जब सोजाते थे ईश तभी हम सोते ॥
नित भोजनके पश्चात् किया था भोजन ।
बस ! प्रभु सेवामें लीन रहा था यह मन ॥१८॥
की जगन्नाथने कठिन तपस्या धारण ।
यह हमने भी तप लिया उन्हींके कारण ॥
अति स्वामि भक्ति ही कष्ट दे रही सम्प्रति ।
हो रही अन्नजल बिना हमारी दुर्गति ॥१९॥
हा ! आये हैं हम लोग यहां जिस दिनसे ।
नहिं ग्रहण किया है अन्न वारि उस दिनसे ॥
अति क्षीण होरही है प्रतिदिन यह काया ।
कुछ समझ न पड़ता इन्हें आज क्या भाया ॥२०

ये नाथ नहीं करते हैं कुछ भी करुणा ।
कर इनकी समता इष्ट हमें क्या मरना ॥
नहिं ज्ञात हमें प्रभु सदन पुनः जावेंगे ।
निष्कम्प खड़े क्या लाभ यहां पावेंगे ॥२१॥
जो करें बड़े नर कार्य न करना हमको ।
है इष्ट यहांपर पेट पूर्ति ही हमको ॥
हाथीका भारी भार न सहता घोड़ा ।
उस काल सभीने धैर्य सेतुको तोड़ा ॥२२॥
क्या मेरे माता पिता अभी जीवित है ।
क्या पुत्र हमारे सभी नीतिमें रत है ॥
क्या करती होगी प्रिया अकेली घरमें ।
यों करें वहां संकल्प त्रिविध वे मनमें ॥२३॥
यदि हुये विमुख हम लोग यहांपर इनसे ।
होंगे क्रोधित ये ध्यान पूर्ण कर हमसे ॥
अपहरण करेंगे राज्य सम्पदा सारी ।
या देंगे हमको दण्ड न्यायसे भारी ॥२४॥
गमनोत्सुक कोई पड़ा ईशके पगमें ।
नहिं तुमसी है सामर्थ्य हमारे तनमें ॥
हा ! बैठा कोई दुखित होरहा था अति ।
स्पष्ट बोल सकते थे नहिं वे प्रभु प्रति ॥२५॥
कितने ही तो नृप खड़े हुये थे सन्मुख ।
कितनोंने लज्जा विवश किया नीचा मुख ॥
वे कितने ही यों लगे वहांसे जाने ।
प्रभुको पीछे अवलोक पुनः वे आने ॥२६॥
कोई कहते थे हुआ क्षीण यह तन है ।
इस वनमें कोई हमें न अवलम्बन है ॥
प्रभु हम सबका अपराध क्षमा तुम करना ।
निज योग पूर्णकर व्यथा हमारी हरना ॥२७॥

वीरजयंती ।

(रचयिता-पं० मूलचन्द जैन वत्सल-बिजनौर)

अवतरण ।

(१)

अनाचार, अत्याचार, विश्वमें बढ़े थे अति ।
अंधश्रद्धा, रूढ़ियोंका गर्म बाजार था ॥
आत्मज्ञान शून्य, क्रियाकांड मग्न मानव थे ।
बढ़ा चहुं ओर घोर, हिंसक व्यापार था ॥
सहस्रों अनाथ, मूक, यज्ञ मध्य जलते थे ।
निर्बलोंके ऊपर शक्तिशालियोंका वार था ॥
विश्वताप हरनेको, शांति सौख्य भरनेको ।
करने उद्धार, हुआ वीर अवतार था ॥

(२)

दिव्यज्ञान सिंधु, अतुलित गुण रत्न खानि ।
जब वीर, धीरवीरका हुआ अवतार था ॥
हुए सुख मग्न, पूर्ण विश्व जीव सुर नर ।
आनंदका स्रोत-हिय-उमड़ा अपार था ॥
इन्द्रासन हिला, दिव्य नाद हुए सुरलोक ।
शचि युत, इन्द्र आया साज ले अपार था ॥
करके सहस्र नेत्र मुख, छवि पान किया ।
हुआ नहीं तृप्त, गया देख १ हार था ॥

महावीरत्व ।

(३)

विश्वमें अखंड, अद्वितीय वीर, वीर ही हैं ।
इन्द्रका संवाद सुन देव एक आया था ॥
करने परीक्षा, महावीर, वीर बालककी ।
महाविकराल रूप अजगर बनाया था ॥
देख भयानक रूप बालक भयवंत हुए ।
वीर पकड़ हाथोंसे, खूब ही नचाया था ॥
भूमिपै पछाड़ा, देव देखि वीर ताकतको ।
कीनी बहुस्तुति "महावीर" नाम गाया था ॥

त्याग ।

(४)

युवति अखंड रूपराशि, देव बालाएं ।
देखि वीर वज्र मन विषयवार व्याप्यो ना ॥
वैभव अनंत, राज्य संपति अटूट, और ।
सहस्रों प्रलोभनोंसे नेक हृदय कांप्यो ना ॥
क्षुद्र तृण सदृश विलोक विश्व वैभवको ।
लिया घोर संयम, शुभ मार्ग उथाप्यो ना ॥
घोर व्रत लीने, अति तीव्र तप कीने शुभ ।
ज्ञानरस भीने, मन नेक परिताप्यो ना ॥

सत्याग्रह ।

(५)

अचल सुमेरुवत ध्यानमग्न देखि रुद्र ।
किये उपसर्ग घोर दया हिय धारी ना ॥
बरसे अंगारे, भरे पन्नग फुंकारे सिंह ।
व्याघ्र हुंकारे, वीर कायरता धारी ना ॥
अचल, अडिग, दृढ़ हुए ध्यानमग्न प्रभु ।
चली वज्र हृदयपर, संकटोंकी आरी ना ।
विश्व तत्व दर्शक, प्रकाश हुआ दिव्यज्ञान ।
कष्ट देखि, धन्यवीर ! हिंमत टुक हारी ना ॥

उपदेशामृत।

(६)

जीव है अखँड, शुद्धबुद्ध ज्ञान शक्ति युक्त।
उसे कर्मवर्गणासे शीघ्रतः निकालो तुम॥
सत्यता, अहिंसा यम दम शम नियमोंसे।
अपना सशीघ्र साज जीवन सजालो तुम॥
दया शील समता संतोष सुधा सागरमें।
आओ विश्व जीवो! जरा डुबकी लगालो तुम॥
यही दिव्य वीर उपदेश पारिजातमाला।
श्रद्धा समेत निज गले मध्य डालो तुम॥
बनो स्वात्मलंबी आत्मशक्तिके उपासक दृढ़।
कर्मवीरताका शस्त्र हाथमें संभालो तुम॥
काट डालो शीघ्र, परतंत्रताकी बेड़ियोंको।
साहस समेत सेवा विश्वकी कर डालो तुम॥
सत्याग्रही वीरव्रत, सत्यकर्म वेदीपर।
स्वार्थ वासनाएं, कामनाएं होम डालो तुम॥
डरो विपत्तियोंसे, हटो नहीं पीछे कभी।
वीर उपदेश माला गले मध्य डालो तुम॥

मिट्टीके गुण व सरल उपाय।

(ले०–पं० जियालाल शिखरचंद जैन वैद्य-फर्रुखनगर)

जब जिस समय मनुष्यके शरीरपरसे बाहर या अन्दरकी ओर शीत वा उष्ण नेम भी लगाया जावे वह शरीरके अन्दर भ्रमण करनेवाली शक्तिमें गई हुई समता लौटाने और रोगको दूर करनेमें परम उपयोगी होता है परंतु सब जगह केवल जल ही काम नहीं कर सकता, हवा भी गरमी सरदीके अलावदा २ हिस्सोंमें और प्रमाणमें काम आती है। हम वायुकी अपेक्षा विना अन्न जल अधिक समय तक रह सकते हैं। उष्णकालमें जब वायु गरमीसे बहुत अधिक पतली होजाती है रोगी वा अरोगी मनुष्य धरतीके नीचे सूखे तहखानेमें उतर जाय और वहां धरतीके अंशोंसे भरी हुई स्वच्छ और ठण्डी वायुमें आधा घण्टा तक स्वास ले और शरीर पर उसका असर होने दे तो इस विधिसे रोगीके निर्बल शरीरको पुष्टता और आरोग्यको दृढ़ता प्राप्त होगी इसको रोगपथी अर्थात् वायु द्वारा रोगोंकी चिकित्सा कहते हैं परंतु सर्व प्रकारके रोगोंको दूर करनेमें यह सामर्थ्य नहीं। दोनों प्रकारकी बिजलीकी शक्ति भी मनुष्यके शरीरके रोगोंको दूर करनेमें परम लाभदायक है। बिजली मन और अदृश्य वस्तुकी शक्तिकी आज्ञानुसार काम करनेवाली है यह मनुष्यके तीनों भागोंमें अलग २ पीड़ा दूर करने, नसोंकी बाधा मिटाने और नसोंके रोग चंगा

करनेके लिये अन्दर प्रवेश कराई जाती है इसको विजली द्वारा रोगोंकी चिकित्सा कहते हैं। इसमें केवल इस विद्याकी जानकारी अवश्य नहीं है किन्तु रोगीके शरीरमें बिजलीको यथावत् शुद्ध रीतिसे लगानेमें पूरी निपुणता और चातुरी भी आवश्यक है परंतु सब स्थानोंमें केवल इससे भी काम नहीं निकल सकता।

पृथ्वीके गुणों और उपकारोंसे भी हमको अनजान न रहना चाहिये। हमारे शरीरमें केवल बिजली वायु और जलके अंश नहीं हैं किन्तु मट्टीका बहुत बड़ा अंश है जिससे कहते हैं कि देह बना है तो रोगीको उचित है कि ग्रीष्म-ऋतुमें वा दूसरे उष्णकालमें किसानके एकान्त खेत वा बागमें चला जावे—मस्तक छोड़ संपूर्ण शरीरमें सूर्यकी किरणे लगने दें, शिरको उस समय ढाका रखना चाहिये। जब शरीर इस-प्रकार कई मिन्ट तक नंगा रखने पर गरम हो जावे तो चाहिये कि ताजी मट्टी उसपर मलकर आधा घण्टा वा अधिक काल तक रहने दे इसके उपरांत मट्टीको धोकर एक मोटे अंगोछेसे रगड़ डाले और धूपमें सूखाकर कपड़े पहन लें।

रोगीको चाहिये कि और२ समय जब२ सुभीता हो हल जोतने वालेके पीछे २ खेतमें चलकर नीचा मुख करके ताजी मट्टीकी वायुको सूंघता जावे जब हलसे वह उलटी जावे। धरतीकी ताजी मट्टीमें आरोग्यता देनेवाली गुणकारी वायु भरी होती है। उसमें वह सब अंश होते हैं जो जीवनके आधार हैं।

यह लाभ उनको ही प्राप्त होता है कि जो देहातमें रहते हैं परन्तु बड़े नगरोंके रहनेवालोंके लिये क्या करना उचित है?

इस परम लाभकारी विधिसे फायदा उठानेके लिये योग है कि घरमें एक कमरा ऐसा रखा जावे जिसमें खिडकीकी राहसे धूप आसके और वहां ही स्नान करनेका स्थान नियत किया जावे। वहां तीन खाने कटहरेकी सकलके बनालो। एकको स्वच्छ उपजाऊ मट्टीसे भरदो। रोगी पहले देहको धूपसे गर्म करके प्रथम २ प्रकारकी मट्टीको खूब शरीरमें मलकर वहां आधा घण्टा तक रहें इससे उपरांत मट्टीको धोकर देहको अंगोछेसे खूब रगडले और धूपमें सुखाकर कपड़े पहनले। कुछ समय तक नित्य इस रीतिसे करे। यदि रोग दीर्घकालसे हो तो चाहिये कि चिकनी मट्टीमें इतना साफ पानी डालकर कि जिसमें वह गारेके समान होजाय रोगी देहको उसमें शान डाले। यदि रोग कोई ऐसा हो जिससे शरीरमें जलन होती हो तो गारेको इतने गरम पानीसे बनावे जितना सहा जाय और फिर ऐसे ही गरम पानीसे धोवे। यदि जलन न होती हो तो खूब ठण्डे पानीसे गारा बनावो और वैसेही ठण्डे पानीसे देहको नियतकाल उपरांत धोवो और मोटे अंगोछेसे शरीरको रगडकर और धूपमें सुखाकर कपड़े पहनलो। इस विधिसे चिकित्सा करनेसे बहुत रोग अच्छे होजाते हैं जब कि और रीतिसे वह असाध्य मानलिये गये हों। इस विधिसे औषधि और इलाज करनेको हम टेरापेथी अर्थात मट्टी द्वारा चिकित्सा करना कहते हैं।

वनस्पति व जीवधारी सम्बंधी सादी औषध

भी खानेकी चिंता नहीं। परन्तु कभी कोई ऐसी औषधिको जो विष हो किसी विधिसे व हेतु करके उदरमें न डालना चाहिये। यहां मुझे यह जतानेकी फिर आवश्यक्ता होती है। अर्थात् बिजलीयुक्त अध्यात्म विद्याकी विधिकी चिकित्सा मन और शरीर दोनोंपर प्रभाव उत्पन्न करके रोगीको आराम करनेवाली है और यह मनपर असर पैदा करके विना किसी औषधिके खिलानेकी आवश्यक्ता होती है तो हम किसी एक मत व रीतिपर निर्भर नहीं रहते। बरन् सृष्टिके विस्मृत खेतकी उपजसे विना रोक टोक काम लेते हैं। हम एलोपेथिक १, होम्योपेथिक २, थोम्पसन नियत नियम ३, हेड्रोपेथी ४, इलक्टोपेथी ५, इगपेथी और टिरापेथीको जुदा २ नहीं समझते। हम बिजलीयुक्त आध्यात्म विद्यामें उन सबोंके गुण और लाभोंको वहांतक मानते हैं जहांतक मनुष्यजातिके दुःख और पीड़ा निवृत्त करनेमें वह कारगर और उपयोगी सिद्ध हो। हम सबको एक मानकर चंगाकरनेकी विधिके नामसे कहते हैं।

हम सोचते हैं कि बहुतोंके चित्तमें यह संदेह उत्पन्न होगा कि जुदे २ प्रकारकी मिट्टीके शरीरपर मलनेसे क्योंकर रोग दूर होते हैं और क्यों उनमें चंगा करनेकी शक्ति है, इस प्रश्नका पूरा उत्तर देना ऐसा ही कठिन है जैसा इसका उत्तर देना कि क्यों जल वायु या किसी औषधिसे मनुष्यके शरीरपर आराम पहोंचाने वाला गुण पैदा होता है। कोई वैद्य हकीम डाक्टर शीघ्र यह न बता सकेगा कि क्या कारण है कि अमुक औषधिसे अमुक असर मनुष्यके शरीर पर पैदा होजाता है। वह केवल यही जानता है कि उस औषधिमें यह गुण है और बस उसके ही अनुसार काम करता है। औषधियोंके गुण बहुधा जानवरोंसे अकस्मात मनुष्योंसे जान लिये गये हैं। जब एक विषधर सर्प (जिसको अंग्रेजीमें रेटिल स्नेक कहते हैं) दूसरेको काट लेता है तब यह दौड़कर एक बूटी खालेता है इस रीतिसे विषके असरसे बच जाता है। एक हबशीने उत्तरके एलीनाके दलदलमें काम करते हुए यह बात देखी कि जब उसको एक रेटिल स्नेकने काट लिया तो उसने भी तुरत वही ही बूटी खाली और अच्छा होगया। सब मजदूरोंमें यह बात प्रगट होगई। अब जब किसीको सर्प काटता तो वह उसी दवाको खाकर अच्छा होजाता जब कि प्रथम इसके यह निश्चय था कि उस सर्पका काटा हुवा मरजाता है।

यथार्थमें प्रायः सब वनस्पति सम्बंधी औषधिया जो अब हकीमों वैद्योंके पास हैं सब जानकारी की हुई हैं। जब कोई नई दवा इस रीतिसे निकाली या खोजी गई तो अवश्य उसके गुणोंको ठीक २ जाननेमें बहुत २ विरोध हुए परन्तु जब अनुभवसे जान लिया गया कि यह ठीक है तो वह ही दवा हकीमों वैद्योंके नित्य काममें आने लगी, इसी रीतिसे सब औषधियां जानी गई हैं। जिसोइट पादरियोंने अमेरिकन लोगोंसे जाना कि सिरूवियन छाल ज्वर दूर करती है। इसपर पुराने हकीम भरोसा न करके हंसने लगे परन्तु जब कुछ दिनके अनुभवसे उसके गुण सिद्ध होगये तो वह ही लोग

उसको नित्य व्यवहारमें लाने लगे। अब ज्वरकी केवल यही दवा प्रसिद्ध है। आप जानते हैं कि कुनैन इसी छालसे बनाई जाती हैं। हम यहां एक अपना अनुभव भी प्रकट करते हैं। एक समय एक नचानेवाले मदारी फरूखनगरमें मांगता आया। उसके साथ एक बूढ़ा बन्दर था जिसको वह नचाता न था; किन्तु बेटेसे भी अधिक रखता था। हमने इसका कारण पूछा तो बताया कि बन्दर मेरा जीवनमूल है। एक समय मुझे ज्वर आया और शनैः २ पुराना होकर चौथैया हो गया। मैंने ३-४ वर्ष तक अनेक उपाय किये परन्तु कोई भी फलीभूत न हुआ। उस समय मेरे पास एक और बन्दर था जो बूढा होकर मर गया था और एक नवीन बन्दरकी आवश्यकता हुई तब सहारनपुरके जंगलमें जाकर बंदर पकड़ा। १९-२० दिन तो यह उखड़ा रहा। जब हिल गया तो मुझसे अधिक प्रेम रखने लगा। इसके सन्मुख मुझे एक दिन ऐसा ज्वर चढ़ा कि सुद्धबुद्ध न रही। अगले दिन मैं सोया पड़ा था कि इस बन्दरने एक हरी घास लाकर मेरे मुंहमें निचोड़ दी। बस उसने ऐसा गुण किया कि मेरा ज्वर उसी दिन जाता रहा। इस कारण मैं इससे अधिक प्रीति रखता हूं। हमने मदारीसे पूछा तुम उस घासको जानते हो? जानता हूं और आजकल आपके जंगलमें बहुत है। हम मदारीको साथ लेकर जंगलमें गये। उसने एक घास हमको बतलाई जिसकी गोलियांसे हमने बहुतों प्राणियोंका चौथैया दूर किया और करते रहते हैं।

अब हम इस विषयको छोड़कर पदार्थोंके गुण किस २ रीतिसे जाने गये हैं कुछ ध्यान देते हैं। हम पूछते हैं कि मट्टीद्वारा रोगोंको दूर करनेका क्या प्रमाण है। हमने अपने लेखमें भलीभांति दिखलाया है कि बिजलीकी शक्ति सब वस्तु और द्रव्योंपर अपना प्रभुत्व रखती है चाहे छोटे कण हो चाहे बड़ा गोला हो। यही कारण है कि सब प्रकारकी शक्ति और इच्छा वा गति मनमें रहती है और वहां हीसे निकलती है। मैंने पहले दिखाया है कि अच्छा अर्थात् रोग मुक्त करनेकी शक्ति मनुष्यके अंदर है और नसोंके अंदर बिजली युक्त द्रव्यसे सम्बंध रखती है। और यह वायुसे सांस लेकर अन्दर जाती है। और स्वाकार करनेवाली शक्ति है। यह दोनों शक्ति मनुष्यमें रहनेसे एक दूसरेसे मिल जाती है। सब कपालके बिजली युक्त नसोंकी स्वीकार करनेवाली शक्तिके तत्व पेटमें आहारकी बिजली वनस्पति अस्वीकारक शक्तिके तत्वके साथ मिल जाते हैं। जिसका फल भोजनका पचाव होता है जो केवल आहारका शरीरके अंशोंमें बदलाना है। शरीर जिसमें यह शक्ति बराबर काम करती रहती है अपने अंशोंको बदलती रहती है। पुराने उड़ते और निकलते रहते हैं और नये भरती होते रहते हैं परन्तु बिजलीके अंश जो फेंफड़े वायुसे खींचते हैं कपालसे निकले हुए अपनी सूरत बदलते हैं, उतने दरजे तक जितनी वनस्पति आहारके कारण आवश्यक होती है। भोजनकी अस्वीकारक शक्तिपर असर करनेके लिये यह

अवश्य है कि वह उसके साथ वैसा ही संबंध रक्खे जैसा वायुके मध्यकी स्वीकार बिजली धरतीके साथ रखती है जिससे वनस्पतिमें धरतीके अंश खिचकर आते हैं। यदि फेफड़ोंसे आकर्षित होकर वायुकी बिजली व बदली हुई तो संभव नहीं कि आहारका पचाव हो जिससे भोजन शरीरके मांस और हड्डीके रूपमें बदल जाता है इसका स्पष्ट कारण यह है कि इस बिजली अहार और जीत हुए शरीर बीचमें पूर्ण मिलनेकी योग्यता नहीं होती। जब वह बिजली कपालसे निकलकर नसोंके अन्दर आकर रूप बदलती है तब मिलने योग्य होती है, वायु और पृथ्वीकी बिजलीके साथ२ काम करनेसे धरतीके काए वनस्पतिमें चढते हैं। अब इनका यथार्थ वर्णन करके हम दिखा सकेंगे कि मिट्टीमें रोगोंको दूर करनेकी शक्ति है और पूर्ण रूपसे है। हम आशा करते हैं कि इस विषयपर पाठकगण ध्यान देंगे। जब शरीरके अंदरकी घूमनेवाली शक्तियां ऐसी सम हों कि वह अपने २ पथपर सुन्दर और मेलसे चलती हो और जब शरीर बाहरसे वायु, जल, वनस्पति, भूमिसे वही सम और सुन्दर संबन्ध रखता हो तो साधारण सृष्टिके नियमानुसार मनुष्य आरोग्य होगा परंतु जब इनमेंसे किसीकी समता कम होगी तो अवश्य रोग उत्पन्न होगा। अब कोन उपाय होसकता है जिसके द्वारा यह कठिनाइयां दूर हों। चित्त स्थिर और शांति बनी रहें। घूमने वाली शक्तियां सम रहें और आरोग्यता और सुख लाभ हो। प्रथम हम इन परमावश्यक प्रश्नोंके उत्तरमें यह कहेंगे कि सब जन जो बिजलीकी विद्याके सिद्धांतोंसे जानकारी रखते हैं मानते हैं कि भूगोलकी वायुमें स्वीकार कारक और पृथ्वीमें अस्वीकार-कारक बिजली विद्यमान हैं। इन दोनोंमें आकर्षण करने और हटानेकी शक्ति है। सब रोगी दोनों प्रकारके होते हैं-स्वीकारक और अस्विकारक और वह ऐसी ही बिजली द्वारा अच्छे होते हैं वा ऐसी वस्तुओंके काममें लानेसे जिनमें ऐसी बिजली होती है। प्रथम हमें बिजलीयुक्त अध्यात्म विद्या द्वारा अच्छा करनेका प्रयत्न करना चाहिये। इसमें साफल्यता प्राप्त होगी वा नहीं यह तुरंत रोगीके चित्तपर कुछ असर पैदा करनेकी परीक्षासे जान लिया जायगा। यदि सफलता होगई तो मनकी सब शक्तियोंमें तुरंत समता आजायेगी अर्थात् वह शान्ति और सन्तोषयुक्त होजायगा और मानसिक बल द्वारा नसोंकी और दूसरी घूमनेवाली शरीरकी शक्तियां उत्तेजित और सम होजायगी। जिसका फल आरोग्यता और सुख होता है परंतु यह चित्तपर असर उत्पन्न करानेसे रोग अच्छा न हो तो हमें औषधियोंके काममें लानेकी आवश्यक्ता होती है जिससे शरीर पर असर पैदा हो और शरीर द्वारा मनपर भी असर पैदा कराया जावे क्योंकि मन और शरीरमें ऐसा सम्बन्ध है कि एकका असर दूसरे पर पड़ता रहता है। (अपूर्ण)

सुधार, सुधारकों द्वारा ही होता है।

(लेखकः-ब्र० प्रेमसागरजी, सिलौंड़ी)

सुधार शब्द बड़े ही गम्भीर भावोंको लिए हुए है। जो उसके भावोंको अनुभवमें लाता है वही उसके शांति एवं मिष्ट रसका पान करता है। भावार्थ—जो सुधार करता है वही सुधारक है। सुधार वही है जो "किसीकी भी बिगड़ी परिस्थितिको सर्वाङ्ग परिवर्तन कर उसे वास्तविक अवस्थामें ला दे।" ऐसे सुधारको जो हाथमें लेता है वही सुधारक है और उसीके द्वारा सुधार होता है।

जो सुधारक है उसे किसी भी सुधारकी आवाज उठानी पड़ती है और उसके सफल होनेकी आशा रखनी पड़ती है। सफल होना व न होना यह उसकी सच्ची आवाजमें ही भरा रहता है जिसे कि उसने अपने सच्चे हृदयसे उठाई है।

सुधारककी सच्ची आवाज वही है। जो स्वार्थसे बहुत दूर हो तथा जिसमें मायाचार एवं असत्यने स्थान न पाया हो, जिसमें सत्यता एवं परोपकारताका निवास हो तथा जो शांतिपूर्वक अपने कर्तव्य पथपर डटे रहनेकी शिक्षा देती हो। जो अहिंसात्मिक वीरता एवं सहनशीलताका जामा पहिनाती हो, जिसको अपनानेसे मनुष्य अपना तन, मन, और धन परोपकारमें अर्पण करनेको तैयार होजाता हो वही सुधारकी सच्ची आवाज है, जो एक सच्चे सुधारककी होसक्ती है।

आज हमारी समाजको ऐसे ही सुधारकोंकी आवश्यकता है; क्योंकि उनके द्वारा ही समाज पनप सक्ती है।

जिनको अपने स्वार्थमें धक्का पहुंचनेका डर है, जिनके अपमान पानेका भूत सदैव भय उपजाता रहता है और जिनको विघ्नबाधाओंकी शंका सदैव सताती रहती है वे स्वप्नमें भी सुधारक नहीं हो सके। सुधारकोंका हृदय बलवान् एवं पाक रहता है। उसमें तनिक भी डरपोकपन एवं अशक्तिको स्थान नहीं रहता। उसमें तो इतनी शक्ति और इतना निर्भयपन रहता है कि—भारीसे भारी विघ्नोंके बाण शांतिपूर्वक सहर्ष सहन करता है जो एक अशक्ति और डरपोक हृदयके लिए महाआपत्तिके भाजन है।

हमारी समाजमें ऐसे सुधारकोंकी कमी नहीं है किन्तु उनके सुकार्यमें, कतिपय पंडित लोग जिनको कि:-स्थितिपालक पद, समझदार समाजकी तरफसे मिल चुका है वे—विघ्न उपस्थित करते हैं जिससे कि:-सुधार नहीं होने पाता।

समाजके वर्तमान सुधारकोंमें अधिकांश सुधारक महानुभाव सच्चे सुधारक हैं। उनके हृदयमें सुधारकी सच्ची एवं निष्कपट ज्योति जागृति होचुकी है। वे चाहते हैं कि:-समाजका सुधार "शास्त्र और युक्तिअनुकूल" हो। किन्तु वह कहने मात्रके रूपमें न रहकर कार्यरूपमें परिणत

हो अर्थात् उसकी असली कार्यवाही की जावे।

जैसा हमारे सच्चे सुधारक चाहते हैं वैसा हो भी सक्ता है। क्योंकि समाज, सन्तोषजनक नहीं तो इतने हिस्सेमें अवश्य जग चुकी है। जो कि स्थितिपालक दलकी हुल्लड़बाजीमय कटु नीतिका मर्दन करनेके लिए काफी है।

समाज समझ चुकी है कि–स्थितिपालक-दलकी कटु नीति मेरे लिए "लाभपद नहीं बल्कि अवनतिके अन्धे कूपमें पटकनेवाली है।" इसलिये वह उसका स्वप्न अवस्थामें भी अवलंबन नहीं कर सकती।

समझदार समाजने सच्चे सुधारकोंकी आवाज़ बड़े ध्यानसे सुनी और उसका मनन कर उसका उपयोग करनेकी तैयारी करनेमें जुट गये; क्योंकि वह समझ चुकी कि–सच्चे सुधारकोंकी आवाज़ दर असल सच्ची आवाज़ है। उसमें मायाचार और स्वार्थकी गंधका अंश नहीं है।

स्थितिपालक दलने बहुत चाहा कि समाज हमारे ही कब्जेमें रहे और जैसा हम कहें उसे वह माने तथा जो रास्ता उसे हम बतावें वह उसपर चले। कहनेका तात्पर्य यह है कि–स्थितिपालकदल चाहता था कि–समाजको जैसा हम नचावें वैसा वह नाचे लेकिन समाज उनकी दमननीतिसे ऊब गयी और सुधारकोंकी सच्ची आवाज़के उपयोग करनेमें दत्तचित्त होगयी।

सच्चे सुधारकोंने अनुभव किया कि समाजका रोग साधारण रोग नहीं है बल्कि असाध्य है। जिसके द्वारा वह मरणासन्न अवस्थाको पहुँच चुकी है। जिसके फलस्वरूप मृत्यु, २१ लाख उसकी गोदसे प्रतिदिन छीनती जारही है। इस हिसाबसे यह बहुत थोड़े समयमें ही अपना अस्तित्व संसारसे उठा लेगी। इसलिए उसकी योग्य चिकित्सा करना आवश्यक है।

उक्त अनुभवका उपयोग सुधारकोंने किया और उसकी निम्नप्रकार चिकित्सा करना शुरू कर दी।

समाज बाल विवाह आदि कुरीतियोंके रोगसे दुखी है जिससे कि:–सन्तानोत्पत्तिका अभाव, असमयमें:– युवक, युवतियोंका मृत्युशय्या पर सो जाना, निर्धन युवकोंका (जो शरीरसे हृष्ट-पुष्ट हैं, शक्तिवान है, सुन्दर है, बुद्धिमान हैं। और व्यापारकुशल हैं तथा जिनके द्वारा योग्य धर्मात्मा, कर्मवीर, सन्तान पैदा होसक्ती है) अविवाहित रह जाना और बाल विधवाओंका उत्पन्न होना इत्यादि हानियां होरहीं हैं जिनको आज तक किसी भी समाज–सेवकने समाजसे बाहर नहीं किया। हर्ष है कि हरविलास शारदाने बालविवाह निषेधक कानून तो बनवा दिया हैं। लोग कहते हैं कि:–कुरीतियोंने समाजके अन्दर ऐसा अधिपत्य जमा लिया है कि–जिससे उसका हटाना मुश्किल हो रहा है; किन्तु मैं इसको नहीं मानता। मेरे अनुभवमें समाजसे कुरीतियोंके हटानेका योग्य प्रयत्न नहीं किया गया। यदि किया गया होता तो समाजको ये दुर्दिन नहीं देखने पड़ते और न हमारे सामने उसके जीवन मरणका प्रश्न उपस्थित होता।

सुधारकी दम भरनेवाले स्थितिपालक लोग

भले ही बहुत दिनोंसे कुरीतियोंके हटानेका प्रयत्न करते चले आये हों; परन्तु उसमें उनको तनिक भी सफलता प्राप्त नहीं हुई। अर्थात् कुरीतियोंने समाजका पीछा नहीं छोड़ा। वे उन स्थितिपालकोंके थोथे प्रयत्नको ठुकराती अपनी अपनी तरक्की करतीं चली गईं। इससे ज्ञात होता है कि–उनके प्रयत्नमें कुछ कमी थी अथवा यों कहिये कि वह नाममात्रका दिखावटी प्रयत्न था।

जब सुधारकोंके हृदयमें यह बात सहसा उत्पन्न हुई कि–"लोग सुधार सुधारका हल्ला (सभाओंमें व्याख्यानोंका देना और प्रस्ताव पास करना) तो मचाते हैं परन्तु सुधारके चिह्न दिखाई नहीं देते।" इस बातका पूर्णांश ज्ञात कर सुधारकोंने सच्चे हृदयसे निर्भीकताको सामने रख, समाजसुधारका कार्य अपने हाथमें लिया। जिसमें वे कुछ अंशोंमें सफल भी हुए। उनकी सफलताके चिह्न देखकर हमको विश्वास होता है कि–वे भविष्यमें अवश्य ही सफलीभूत होंगे।

उन्होंने जो जो सुधार हाथमें लिए हैं वे हैं तो कठिन लेकिन उन वीर सुधारकोंके लिए जिनका की हृदय शुद्ध है, कुछ कठिन नहीं है।

उनका सबसे बड़ा सुधार, समाज सुधार है जो कुरीतियोंकी नेस्त नाबूद करने पर ही सफल हो सकता है। उसके लिए उन्होंने बहुतसे प्रयत्न जारी कर रक्खे हैं। उनमें सबसे बड़ा प्रयत्न "अन्तर्जातीय" विवाहका है। जिसका कि आन्दोलन बहुत दिनोंसे जारी है और जो सफलीभूत हो चला है। श्रीमान् पंडित दरबारीलालजी इसके पुनर्जन्मदाता हैं। पंडितजीके कहनेसे यह भली भांति ज्ञात हो चुका है कि–"अन्तर्जातीय विवाह मरणासन्न समाजके लिए रामबाणकी तरह है। उसके प्रचलित होनेसे समाजमें संगठनका जन्म होगा, प्रेमबलकी वृद्धि होगी, विवाहिक समस्या हल होगी अर्थात् सब प्रकारके अनमेल विवाहोंका अन्त होगा। पुत्र पुत्रियोंकी प्रौढ़ अवस्थामें शादियां होंगी तथा गरीब घरानोंके युवक भी विवाहे जासकेंगे। सबसे बड़ा सुधार यह होगा कि–समाजकी छोटी छोटी जातियां जो वैवाहिक प्रथाके मजबुत बंधनमें बंधी आह! सांसे भर रही हैं, उन्हें छुटकारा मिलेगा अर्थात् वे जो मानिन्द मोतियांकी तरह बिखरी पड़ी हुई हैं, वे एकता सूत्रमें बड़ी ही सरलताके साथ पिरोई जासकेंगी एवं उन्हें भविष्यके लिये फूलने फलनेका श्रेष्ठ साधन प्राप्त होगा।

समाजके समझदार लोगोंने विरोधियोंके हजार बहकाने पर भी उक्त प्रयत्न (अन्तर्जातीय विवाह) को स्वीकार कर उसे सफल बनाया है क्योंकि उसपर उनका विश्वास जम गया है तथा अधिकांश समाजके लोगोंको जमता जारहा है। जमे क्यों नहीं क्योंकि वह शास्त्र सम्मतिसे तथा युक्तियोंसे सिद्ध होचुका है। इसके विषयमें काफी खंडन मंडन व समर्थन होचुका है।

वास्तवमें पंडितोंने शास्त्रसम्मत अन्तर्जातीय विवाहका विरोधकर भारी मुंहकी खाई।

सुधारककी सीमा नहीं है। सुधारक लोग जो उसे जितने अंशोंमें हाथमें ले रहे हैं उतनेमें

ही वे समाजका सुधार भलीभांति कर सकते हैं सिर्फ होना चाहिए निस्वार्थ, साहस एवं वीरतामय सेवा। हमें विश्वास रखना चाहिए कि सुधार सुधारकोंके द्वारा ही होता है। हमारी समाजके जो वर्तमान सुधारक हैं वे समाज सुधारके ठीक मार्गपर गमन कर रहे हैं अतएव उनके द्वारा समाज सुधार होना सम्भव है।

आपने जो जो सुधार समाजके सामने पेश किये हैं उनको अमलमें लानेका प्रयत्न बड़े जोरोंके साथ होना चाहिये। एवं वह सुधार क्रांतिरूप हो। इसी निवेदनके साथ मैं भी सुधारकी कुछ बातें आपके सामने पेश करता हूं मुझे विश्वास है कि आप उसपर कृपया ध्यान देवेंगे।

सबसे प्रथम बात यह है कि एक सुधारस्कीम तैयार कीजावे जिसका सम्पूर्ण अधिकार भारत० दिगम्बर जैन परिषदको रहे। परिषद अपने आगामी वार्षिक अधिवेशनमें उसे प्रस्ताव रूपमें रखकर पास करावे तथा योग्य प्रचारकों द्वारा प्रत्येक स्थानोंमें उसका प्रचार करके उसे अमलमें लानेकी घोषणा करा दे।

उस स्कीमके भीतर निम्न बातोंको स्थान दिया जावे अर्थात्—

१—इन्दौर सरीखी मेल कमेटी एक वक्त पुनः किसी योग्य स्थानमें बैठा कीजाय और उसमें उन दूरदर्शी योग्य महानुभावोंको चुनकर रक्खा जावे जो हृदयके निष्पक्ष एवं मध्यस्थ हों।

२—सुधार स्कीमका उपयोग प्रत्येक शहर, कस्बा एवं गांवकी पंचायतियां करें और वे वैवाहिक कुरीतियोंको हटानेके लिए अपने अपने यहां दंड विधान कायम करें।

३—समाजके निर्धन युवक अविवाहित रह जाते हैं उनका योग्य प्रबन्ध परिषदके द्वारा प्रत्येक पंचायतियोंसे प्रेरणा रूप कराया जावे।

४—समाजके भीतर निर्धनताने बहुत समयसे अपना घर करलिया है इसलिए उसके कारण फिजूलखर्चियोंको बहुत जल्दी हटाया जावे और एक "निर्धन सहायक फंड" की स्थापना कराई जावे। जिसका उद्देश—"फंडके व्याजसे व्याज रहित रुपया पूंजीके वास्ते निर्धन वर्गको दिया जावे और वह रुपया उनसे किस्त रूपसे वसूल किया जावे" ऐसा करनेसे निर्धनोंके पास आगामी पूंजी होजावेगी और फंडका रुपया भी सहजमें चुक जावेगा।

५—बालविधवाओंके लिये प्रत्येक प्रान्तमें विधवाश्रम स्थापित किये जावें जिसमें उनको धार्मिक व लौकिक शिक्षा दी जावे। अमीर व गरीब सभी बालविधवाएं इसमें रखनेका पंचायती प्रबन्ध होना चाहिये।

६—समाजके भीतर उच्च कोटिकी शिक्षाके लिये "जैन कोलेज"की स्थापना यहांतक हो जल्दी की जावें।

—>॥ प्रबोधसार। ॥<—

महापंडित यशकीर्ति विरचित मूल श्लोक व पं० लालारामजी शास्त्रीकृत हिन्दी अर्थ व भावार्थ सहित। मू० १)

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय—सूरत।

"મહાવીર જયંતીની ઉજવણી."

(લેખક—શ્રી મોહનદાસ રાયચંદ શાહ, ભાવનગર)

જે જે મહાન્ પુરૂષો થઇ ગયા છે, તેઓ અમર છે, હજુ જીવતાજ છે. અને તેમની જયંતીઓ આપણને હજુ તેમની જીવંત પ્રેરણા રૂપ છે. તેમની જયંતીઓ આપણે શા માટે ઉજવવી જોઇએ ? તેમના અનંતગુણો તરફના પ્રેમબળની પ્રેરણાથી, તેમણે સ્વપર હિત માટે પોતાનું જીવન ખપાવ્યું હતું તેથી અથવા આપણે તેમના ગુણો ઉપર પ્રેમ સતત વ્હેવડાવવા પ્રેરાઇએ અને તે પ્રેમથી આપણે ગુણવાન બનતા જઇએ. તેથી મહાન્ નીતિ શાસ્ત્રીનું કથન છે કે "તમારા ચારિત્રમાં" સદ્‌ગુણો વધારવા હોય અને દુર્ગુણો કાઢવા હોય તો તેના વિરૂદ્ધ ગુણોનું ચિંતવન કરો, અભિમાન કે લોભને દૂર કરવા માટે નમ્રતા તથા ત્યાગના ગુણના રૂપરેખા તમારા હૃદય ઉપર કલ્પનાની પીંછી વડે ચીતરો અને તેના ચિંતવનમાં લીન થાઓ. જેમ તમારો પ્રેમ તે ગુણ તરફ વધશે તેમ તમે ગુણવાન બનશો; વિચારથીજ ચારિત્ર ઘડાય છે.

તેમણે સ્વપર હિત સાધ્યું તેમ આપણે પ્રેમથી તેમના સ્વપર હિતના માર્ગ ઉપર ચાલવા તેમને યાદ કરી પ્રેરાઇએ અને ચાલતા હોઇએ તો ભુલચુક તપાસતા વધારે ઉત્સાહથી ચાલતાં પ્રેરાઇએ અને તેમણે જગતનું કલ્યાણ કર્યું છે માટે તેમને યાદ કરી તેમની જયંતી ઉજવી તેમના અમર પણાથી આપણે બોધ લઇએ. જયંતીઓ માત્ર સભાઓ ભરી સારા સારા ભાષણો કે વચનોથી માત્ર પ્રેરણા કરી અથવા સાંભળી તેમાંના સદ્‌બોધને આપણે ચારિત્રમાં ન ઉતારીએ, તેમાંની પ્રેરણાને આપણે અમલમાં ન લાવીએ તો જયંતી ઉજવવાનું કાંઇ પ્રયોજન ન રહે.

"વીર"ના અમરપણાની યાદી શુષ્ક વિધિઓ કરી આપણે રાખી શકીયે નહિ; પણ તેમના જીવન ઉપરથી ધડો લઇ તેમના અમરપણાના માર્ગ ઉપર આપણે ચઢી એમ બતાવી આપીએ કે તે "વીર" ના અમરપણાના પ્રતાપે આપણે એ માર્ગ ઉપર ચઢયા છીએ અને તેથી તે "વીર" અમર છે. આપણે ગ્રહસ્થીઓએ તે માર્ગનું આચરણ યથાશક્તિ તો કરવું જોઇએ. અત્યારની આપણી સ્થિતિ જોતાં આપણે એટલું તો અવશ્ય કરી શકીએ કે સ્થાવર તેમજ બની શકે તેટલા ત્રસ જીવોની સંકલ્પી હિંસાથી બચીએ, નકામા ગમ્મતની ખાતર કે ટેવની ખાતર કરાતા પ્રપંચો, છળકપટો, માયાચારો, દ્વેષ અને નિંદાઓ, કષાય આદિ ભાવો જો ધારીએ તો દૂર કરી શકીએ. આપણું જીવન શુભ વિચારોથી ઉજ્વળ કરી શકીએ. કેમકે શુભ વિચારોથી આપણું જીવન શુભ ઘડાઇ શકે, શુભ અસર આપણા જીવન ઉપર જરૂર પડી શકે અને એવા શુભ વિચારો નિરંતર રહ્યા કરે તો તેનું બળ એવું જામે કે અમુક વખતે આપણા આચરણમાં તે શુભ વિચારો મુકાયા વિના રહે નહિ.

એક તત્ત્વજ્ઞાનીનું સુત્ર છે કે "વિચારમાં અદ્‌ભુત શક્તિ ઉત્પન્ન કરવાનું સામર્થ્ય રહેલું છે. આત્મા સત્તાપણે પરમાત્મા છે, અને તેમાંથી આત્મશક્તિ બહાર આવે છે," પણ આપણા સમાજની અધોદશા છે. અજ્ઞાનનું પડ એટલું જામ્યું છે કે તેવા શુભ વિચારોના ચિંતવનને બદલે દ્વેષ, કલેશ, કુસંપ, અને તેથી જામતાં જ્ઞાતિના ફાંટાઓ દીન પ્રતિદીન નજરે પડતા જાય છે. એ અજ્ઞાન દૂર કરવા નેતાઓએ, શ્રીમંતોએ અથાગ પ્રયત્નો સાથે મચ્યા રહેવાની જરૂર છે. શ્રીમંતો અને નેતાઓ મોટા; અને મોટાની

મોટી ફરજો અને જવાબદારીઓ હોય છે. પોતાની શક્તિ છુપાવી તેઓ પોતાની ફરજો અદા ન કરે તો "વીર" પ્રભુના શાસનના તેઓ ગુન્હેગાર છે.

મોટાઓએ ન્હાનાઓને શક્તિ છુપાવ્યા વગર તારવા, તે માટે તે વીર પ્રભુએ જગતના કલ્યાણ અર્થે રાજપાટ, માયા છોડી આદર્શ દાખલો બેસાડયો છે. જીવન સાફલ્યતાનો એ માર્ગ છે. જાણે કે અજાણે પોતાની ફરજો તરફ અથવા પોતાના ધર્મ બંધુઓ તરફની, સમાજ કે દેશ તરફની ફરજો તરફ નેતાઓનું દુર્લક્ષ્ય રહે તો તે એક જાતનો દ્રોહજ છે. સમાજની જીવનરૂપી લત્તા સુષ્ક થયા પછી અથવા મૃત્યુ પામ્યા પછી જલ સીંચન માટે તો લતાનીજ ચૈતન્યમયી હયાતી નથી તેથી શું કરીએ એપણ માત્ર બ્હાનું છે. "સુકાણા મોલ સૃષ્ટિના, પછી વૃષ્ટિ થયાથી શું?" તેના કારણભૂત તેઓજ છે અને તેથી દોષ તેઓનો છે. સમાજ તેઓ તરફ પોતાની નજર માંડી તેમની સહાયની ગેરહાજરી જોતો ટળવળતો હોય તેમાં તેવા દ્રોહથી સમાજ નિંદા, તિરસ્કાર, અપ્રેમ, મનનું જુદાપણું રાખવામાં દેવાતો જાય તે તો સ્વાભાવિક છે અને નેતાઓને કે શ્રીમાનોને તે મુંગા મોઢે એક દોષવાનની માફક જોવું, રહેવું કે સાંભળી રહેવું જોઇએ અને તેમ થતાં સમાજ ઉપર અપ્રેમ કે તિરસ્કાર ન રાખતાં ઉલટા પોતાની ભુલો સુધારવાના ઉપાયો લેવા જોઇએ. માટે શ્રીમાનો અને નેતાઓ જેઓ આવી ભુલોને પાત્ર હોય તેમણે સાવધાન રહેવાની જરૂર છે.

એક કુટુંબ હોય તેમાંના બે ભાઇઓ એક નાનો નિર્બલ અને બીજો મોટો સબળ હોય; તેમાં સબળની સહાયની જરૂર પડયે નિર્બળ આશા રાખે અને તે જ્યારે ન મળે ત્યારે નાનો ભાઇ તેની વિરૂદ્ધ રહે અને રીસાય એ પણ સ્વાભાવિક છે કેમકે તેમાં મોટા ભાઇએ વધારે સમજુ રહેવું જોઇએ અને તેથી પોતે પહેલ કરી નાના ભાઇને પોતાની સાથેની સમાધાનીમાં ઉતારવો જોઇએ. તેવી રીતે સમાજ એક કુટુંબ; તેમાં શ્રીમંતો ને નેતાઓ મોટા ભાઇઓ છે અને સર્વ સાધારણ જન સમુહ તે નાના ભાઇઓ. નેતાઓની અને શ્રીમંતોની બેપરવાઇ સમાજના અજ્ઞાનને દૂર કરવાને બદલે અજ્ઞાનને મજબુત કારણભૂત થાય છે.

આપણા સમાજના મધ્યમ વર્ગની આર્થિક સ્થિતિ પણ ઘણીજ કફોડી છે અને આ હકીકત ગુજરાતને પણ લાગુ પડે છે. તેમાં મધ્યમ વર્ગના વ્યક્તિઓ ઘણાજ છે, કે જે નહિં શ્રીમંત કે નહિં ભીખારી. શ્રીમંત નહિં એટલે પણ આર્થિક વિટંબના અને ભીખારી નહિ હોવાથી ભિક્ષા માટેની વીટંબના—એ પણ આર્થિક વિટંબના; તેમાં બોજારૂપ અને નિરૂપયોગી કેટલાક વ્યવહારિક રીવાજો તેમની મુંઝવણમાં વધારો કરનારા હોય. આ સ્થિતિ ઉપર શ્રીમંતોનું અને નેતાઓનું પણ ખાસ લક્ષ રહેવાની જરૂર છે. નહિં તો હાલમાં આર્ય સમાજના ધર્મના મીશનમાં કે ઇસાઇના મીશનમાં કે મુસલમાનોનાં મીશનમાં તે મધ્યમવર્ગનું પરિવર્તન થઇ વિધર્મીપણું—હજુ આગળ વધતું જાય તેમ છે. કેમકે એક મહાન વિચારક શ્વે૦ જૈનાચાર્ય ન્યાયવિજયજી લખે છે કે હિંદુસ્તાનમાંથી એ ત્રણે મીશનો હાલમાં જોરશોરથી કામ કરી રહેલ છે. તેમના મીશનમાં કેટલાએક જૈનો ભળ્યા છે અને ભળતા જાય છે. અત્યારે મજહબી કટોકટીના દારૂણ સમયમાં હિંદુ નરનારીઓની રક્ષા અને સેવા તેઓ અદ્દભુત જોશથી કરી રહ્યા છે, તેમની સગવડભરેલી સંસ્થાઓમાં દુઃખીયા જૈન નરનારીઓને સ્વતઃ પ્રવેશ કરવાનું મન થઇ આવે છે અને તે વીરોના હૃદયગ્રાહી પ્રયત્નો પણ બીજાઓને તેમની સંસ્થામાં ખેંચીને લાવે છે. એકલા ગુજરાત, કાઠીયાવાડ ઉપર નહિં પણ જ્યાં જ્યાં જૈનોની વસ્તી છે તે બધા પ્રદેશો ઉપર વિચાર દૃષ્ટિ ફેંકવાની જરૂર છે; ત્યારેજ માલુમ પડી શકશે કે જૈનોમાં ભુખમરો અને ગરીબાઇનો ત્રાસ કેટલો પ્રવર્તી રહ્યો છે ને

પેટને માટે ધર્મપરાંગમુખ થવાનું કેટલા પ્રમાણમાં બને છે.

કહ્યું છે કેઃ-"बुभुक्षितः किं न करोति पापम्" ખરી વાત તો એ છે કે પેટમાં રોટલો પડયો તો "નમો અરિહંતાણું" સુઝે. ઓશવાળો જે બધા જૈનીઓ હતા તેમાંથી કેટલાક બીજા ધર્મમાં ગયા, એથી વધારે ઘટાડો પોરવાડોમાંથી થયો છે. ઓશવાલો વૈષ્ણવ થઇ ગયેલા મોજુદ છે, અને બીજા સમાજમાં કેટલાય ભળતા જાય છે. મોઢ જાતિ જૈન હતી તે પણ ધર્માંતરમાં પરિવર્તિત થઇ ગઇ છે. પુના, સતારા, અહમદનગરના જીલ્લાઓમાં "કંસારા" જાતિ એક વખતે જૈન હતી, જે આજે શૈવ ધર્મને માને છે. એમના પૂર્વજોએ બંધાવેલાં જૈન મંદિરો પણ મોજુદ છે. ગુજરાતની કપોળ, મોઢ જ્ઞાતિઓમાં પહેલાં જૈનધર્મનો પ્રચાર હતો તે તેમના પૂર્વજ શ્રાવકોના અનેક મળેલા શિલાલેખોથી જણાય છે."

આ ઉપરાંત, બાલ વિધવાઓની સંખ્યા, અનમેલ વિવાહનો પ્રકોપ તે મધ્યમ વર્ગની કફોડી સ્થિતિને પુષ્ટી આપી રહ્યાં છે-કોંગ્રેસોમાં હજારો ઠરાવો પસાર થયા છતાં. આ બધું જોતાં એ મધ્યમ વર્ગ કયાં ઉભો છે એ વિચાર હૃદયમાં બહુ ખેદ ઉપજાવે છે. જૈનોની દયા લીલોતરી-સુકવણીમાં આવીને સમાણી છે, એવા આક્ષેપો ખેદની સાથે સાંભળવા પડે છે, પણ એટલું તો કહેવું પડશે કે જાતિ બંધુઓને સહાયતા કરવાની ઉદાર ભાવના જૈનોમાં ઓછી દેખાય છે. સાધર્મિક વાત્સલ્યની ઉદાર ભાવના ઓછી દેખાય છે, જ્યારે પારસીઓમાં, મુસલમાનોમાં, ઇસાઇઓમાં અને આર્ય સમાજીઓમાં વધારે પ્રમાણમાં દેખાય છે. તે કોમવાળા પોતાના ધંધા ઉપર પોતાનો ધર્મબંધુ મળે ત્યાં સુધી બીજાની નિમણૂંક નહિં કરવાના, એટલુંજ નહિં પણ પોતાના ભાઇઓને ચાલતાં સુધી પોતાનીજ કોમમાં કોઇ જગ્યા ઉપર ચઢાવી દેવાની કોશિસ કરવાના.

અત્યારે જૈનોનું સાધર્મિક વાત્સલ્ય ઘણા ભાગે એકાદ દિવસ ન્હાનાં-મ્હોટાં જમણ કરી દેવામાં સમાય છે પણ પોતાના ધર્મ-બન્ધુઓની કફોડી સ્થિતિ સુધારવારૂપ જે ખરૂં સાધર્મિક-વાત્સલ્ય છે તે તરફ જૈનો ઘણે અંશે બેદરકાર છે." સાધર્મિક વાત્સલ્ય તો શ્રીમદ્ હેમચંદ્રાચાર્યના કથન મુજબ આપત્તિમાં ફસાયલાઓનો પોતાની લક્ષ્મી ખરચીને પણ ઉદ્ધાર કરવો, અન્તરાય દોષથી પૈસો ચાલ્યો જતાં કંગાળ હાલતમાં આવેલાઓને ફરી પહેલાના સારી હાલત પર પહોંચાડવા અને ધર્મમાં ઢીલા પડતાઓને તે તે ઉપાયે ધર્મમાં સ્થિર કરવા. આજ પ્રમાણે શ્રાવિકા વર્ગની પ્રતિપત્તિ અને તેમના ઉદ્ધાર માટે પણ સમજી લેવું." એક વિદ્વાન સાધુના શબ્દોમાં-" દીન દુઃખીઆં ગરીબ બન્ધુઓને સારી હાલત પર લાવવા જોઇએ કેમકે સાધર્મિક સારી હાલતમાં હોય તોજ ધર્મનાં થાંભલા ટકી શકે.

સમાજની પડતીમાં ધર્મની પડતી થાયજ "न धर्मो धार्मिकैः विना." ધર્મક્ષેત્રોના ચળકાટ સમાજના ચળકાટ ઉપર અવલંબિત છે. શ્રાવક શ્રાવિકાઓ રૂષ્ટ-પુષ્ટ અને સુખસંપન્ન હોય તો ધર્મક્ષેત્રોની પણ ઉન્નતિ થઇ શકે-જો તેઓજ ક્ષય રોગથી રીબાતા લાગે તો મંદિરો વિગેરેની સંભાળ કોણ લેશે? "કુવામાં હોય તો હવાડામાં આવે" સમાજના યુવકોની પણ તેવીજ સંભાળ લેવી ઘટે છે."

યુવકો એટલે ભવિષ્યની પ્રજા, એટલે સમાજના ભવિષ્યની સુધારણા માટે કાળજી અને ખંત રાખવાની ખાસ જરૂર છે. સમાજના યુવકો માટે જરૂરીઆત મુજબ બોર્ડીંગો, પાઠશાળાઓ, વાંચનાલયો, ઉપદેશકોના ઉપદેશો માટે પ્રબંધ, ઉદ્યોગશાળાઓ, અને તંદુરસ્તી માટે ઔષધાલયો અને વ્યાયામશાળાઓ અને ".દિગંબર જૈનમાં" સં. ૧૯૮૫ના ફાગણ માસના અંકમાં પ્રકટ થયેલ શ્રીયુત ભાઇ જીવરાજ ગાંધી બી. એ. સોનાસણવાળાની ગુજરાતમાં ગુરૂકુળની યોજના મુજબના ગુરૂકુળો સ્થાપવાની ખાસ જરૂર છે. અને તે

યુવકો સારી રીતે તયાર થયા પછી તેને યોગ્ય ધંધામાં કે લાઇનમાં શ્રીમંતોના અને નેતાઓના પરિશ્રમથી ગમે તેવા યુવકને તેની યોગ્યતા પ્રમાણે વગની, ધનની, મનની અને તનની સહાયથી જોડાવાની ખાસ જરૂર છે. કેમકે હાલના વગના જમાનામાં કોઇ અપવાદ રૂપ યુવકનેજ તેવી સહાયની જરૂર ન રહે, તે સહાય માટે ખાસ તપાસ લેવાની શ્રીમંતો, નેતાઓની ખાસ ફરજ છે.

યુવકોની સુધારણા માટેનો પ્રશ્ન તો ઘણે સ્થળે ચર્ચાતો જાય છે. એટલે તે વિશે વિશેષ ચર્ચા કરવાની જરૂર રહેતી નથી. સમાજના મધ્યમ વર્ગની ઉન્નતિનો વિષય વિચારવા યોગ્ય છે. સમાજના મધ્યમ વર્ગ કે ગરીબોની ઉન્નતિ કીર્તિદાનોથી થઇ શકે તેમ નથી પણ ગુપ્તદાનોથી થઇ શકે તેમ છે અને હાલના કીર્તિવાદી જમાનાના શ્રીમંત વર્ગમાં તેને સ્થાન નથી. મધ્યવર્ગ કંઇએક ભિક્ષુકની માફક કીર્તિવાનોની યાચના કરવા કોઇ રીતે જઇ શકે તેમ નથી કેમકે તેમને એક માત્ર જીવન નિર્વાહના સુયોગ્ય સાધનો સિવાય બીજું કંઇ યાચવાનું રહેતું ન હોય અને તેવી જાતની યાચના માટે ભિક્ષુક થવામાં કુલ, જાતિની આબરૂ, અરસ્પરસના વ્યવહારીક સંબંધો આડે સ્વાભાવિક રીતેજ આવે માટે શ્રીમંતોએ ગુપ્તદાન અને ગુપ્ત સહાયોની યોજનાઓ હાથ ધરવાની જરૂર છે.

શ્રીમંતોએ એ ભુલવું ન જોઇએ કે કીર્તિદાનો કરતાં વધારે ગુણકારક તેમના આત્મ વિકાશ માટે તેમના ઉન્નત જીવન માટે ગુપ્તદાન છે. કીર્તિની લાલસા કીર્તિદાનથી ઉપજવાનો ભય રહે છે અને લાલસા વિચારોની યોગ્યતા કે સ્વતંત્રતામાં ઘણો ફેર કરી નાખે છે. અને જ્યારે વિચારોની યોગ્યતા કે સ્વતંત્રતા ન રહે ત્યાં આત્મ વિકાસ કે જીવનની ઉન્નતિ અટકી પડે એ સ્વાભાવિક છે. "કીર્તિ તો સદાચરણનો પડછાયોજ છે. ખરી કીર્તિ તો સદાચરણથી પોતાની મેળે એટલે તેને શોધ્યા વિનાજ મળે છે. અને સેવાનો બદલો આપવા યોગ્ય સમયે હાજર થઇ જાય છે. કીર્તિ કીર્તિદાનોથી મેળવવાની ઇચ્છા રાખવી એ તો તેને શોધ્યા બરોબર છે અને તે તો પરતંત્રતા છે.

આવી સમાજની સ્થિતિના ઉદ્ધાર માટે હજારો કટ્ટર ધર્મધુરંધરો, શ્રીમાનોની ખાસ જરૂર છે અને તેવા મહાશયોને સ્વાર્થ-પરાયણતાને જરા વિસરી, ફુરસદ કાઢી તે માટે યોગ્ય તપાસ કરવાની અને યોગ્ય ઉપાયો યોજવાની ખાસ જરૂર છે. અને તે તેમની પવિત્ર ફરજ છે. જો તેઓ એ કાર્ય નહિં કરે તો બીજું કોણ કરી શકશે ? અને નહિ કરે તો તેમનામાં કે મધ્યમ વર્ગમાં શો ફેર રહેશે ? સાધન સંપન્ન જીવન નિર્થક અને સ્વાર્થે પોતાના માટે ગુમાવી દેશે તો પછી બીજીવાર એવા જીવનની પ્રાપ્તિનો શું ભરોસો ! પોતાની મોટાઇનું ઘડીભર ભાન ભૂલી મધ્યમ વર્ગના ટોળામાં હળીમળી તેમના દુઃખોની તપાસ કરી, તેમના પ્રેમ અને વિશ્વાસ મેળવી યથાયોગ્ય ઉપાયો યોજવાની ખાસ જરૂર છે. મધ્યમ વર્ગ એ તો સમાજ શરીરનું એક અંગ છે, અને એક અંગમાં સડો હોય અને તે દૂર ન થાય તો તે આખા શરીરમાં પ્રસરતો જાય છે. પ્રેમ પ્રેમને પોષે છે. પ્રેમ અને વિશ્વાસ એક બીજાને આકર્ષણ કર્યા વિના રહેતા નથી. પ્રેમથી ગમે તે કાર્ય સાધી શકાય છે; અને આ કાર્ય પણ જો સાચો પ્રેમ હોય તો સાધી શકાય છે; સાચો પ્રેમ હજારો મુશ્કેલીઓને પાર પાડે છે. એક સાચો પ્રેમ સૌને વશ કરી શકે છે અને સૌ કાર્યો સાધી શકે છે. સાચો પ્રેમ દૃઢતાથી હૃદયમાં રાખી પ્રયાસો થવા જોઇએ પછી ઉદ્ધાર કે કંઇ પણ અશક્ય જેવું રહેતુંજ નથી. સમાજના મહિલા વર્ગ તરફ દૃષ્ટિ દોરવાની જરૂર છે તે વર્ગ વ્યવહારીક કે ધાર્મિક કેળવણીમાં પછાત છે તેમને તેવી કેળવણી યથા યોગ્ય અપાતી નથી અને તેથી તેઓ પોતાના બાળકોનો ઉછેર યોગ્ય

રીતે કરી શકતો નથી કે જે કાર્યમાં તેમનો ઝાઝો હિસ્સો છે તે વર્ગ ઔદ્યોગિક શિક્ષણ પણ પામી શકતો નથી અને તેના અભાવે વૈધવ્યમાં કે પોતાના પતિની નબળી આર્થિક સ્થિતિમાં ગુજર કરી મુશ્કેલીઓનો અને પરાધીનતાનો, વિધર્મીપણાનો કે દુરાચારપણાનો ભોગ બનવામાં યોગ્ય રીતે બચી શકતો નથી, અર્થાત્ એક પશુ સમાન ગુલામગીરીમાંથી બચી શકતો નથી. મહીલા વર્ગ પણ સમાજનું અર્ધું અંગ છે અને તેમાં તેની આવી સ્થિતિ હોય ત્યારે સમાજની કેવી દશા હોય? સમાજના આ ઉપયોગી અંગની આવી દશા હોય તો પછી તેના સંતાનો પણ કેવા થાય! બાળકો એટલે ભવિષ્યની પ્રજા અને તે જ્યારે નબળી ત્યારે સમાજનું ભવિષ્ય પણ નબળું; માટે—

સમાજના મધ્યમ વર્ગના અંગની માફક આ અંગની આવી સ્થિતિ નાબૂદ કરવા ઉદ્યોગ-શાળાઓ, શ્રાવિકાશ્રમો, મહિલ-વિદ્યાલયો અને કન્યાશાળાઓની જ્યાં જ્યાં જરૂર હોય ત્યાં ત્યાં સ્થાપવાની શ્રીમંતોની નેતાઓની પવિત્ર ફરજ છે.

ઉપર મુજબની માનવ જાતિની ફરજો જેટલા પ્રમાણમાં બજાવાય તેટલા પ્રમાણમાં "મહાવીર"-જયંતીની સાર્થકતા છે. ટુંકમાં, છેવટ આવી જયંતીઓ ગામે ગામ ઉજવાય, આડંબર અને છેતરપીંડી છોડાય, કર્તવ્યપણાને સંભળાય અને એવી રીતે "વીર"પ્રભુના શાસનને ઉજવાળાય એવો આ લેખનો સારાંશ કે આશય છે તે આશય પાર પડે તે માટે આ લેખકની પ્રભુ પાસે પ્રાર્થના છે ૐ શાન્તિ! શાન્તિ!! શાન્તિ!!!

રાયદેશ દશાહુમડ દિ૦ જૈન હિતવર્ધક સભા.

આપણા સમાજમાં અજ્ઞાનતાને લીધે કુરિવાજો વધી જઇ દિવસે દિવસે આપણી પડતી થતી જાય છે. તેવા રિવાજોને અટકાવવા અને ચાલતા સમયને માફક આવે તેવા રિવાજો કરવા સારૂ, અને કેળવણીનો પ્રચાર થાય તે માટે ઉપરના નામથી એક સભા સંવત ૧૯૮૪ના ચૈત્ર સુદ ૧૫ ના રોજ શ્રી. તારંગાજી મુકામે સ્થાપવામાં આવી છે.

શ્રી તારંગાજી મુકામે ફક્ત દશ મેમ્બરો થયા હતા. અને એવું બંધારણ કર્યું હતું કે આપણે જે કંઇ કરીએ તેતો આપણે બધાએ પાળવુંજ જોઇએ. આ મુજબ કંઇક કામ થવાથી બીજી બેઠક વડાલી મુકામે રાખવામાં આવી હતી. ત્યાં પણ કેટલાક ઠરાવો નવીન થયા હતા. ત્યારબાદ શ્રી રાયદેશનું સમગ્ર પંચ મુનાઇ મુકામે રાખવામાં આવી હતી. ત્યાંપણ કેટલાક ઠરાવો-નવીન રિવાજો કરી તેની ચોપડીઓ છપાવવા સારૂ ઉપલી સભાને મંજુરી આપી હતી. તે મુજબ છપાવી દરેકને ત્યાં આપવામાં આવી છે. ચોપડીઓ છપાવવાનું કારણ એટલુંજ કે દરેક માણસ તે મુજબ વર્તે અને કાયદાનું ઉલ્લંઘન થતું અટકે. આ રિવાજોમાં ઘણા ભાગે લગ્નના રિવાજો છે. જે આશરે ૩૧ છે. બીજા કેટલાક સામાજીક સુધારા છે. મુખ્ય સુધારો મરણ પાછળ કુટવાનો છે. આ કુટવાનો રિવાજ મુનિશ્રી ૧૦૮ શ્રી શાન્તિસાગરજી (છાણી) ના હિતોપદેશ દ્વારા બંધ થયેલ છે. અને ત્યારથી મરનારની પછવાડે કુટવાનું સદંતર બંધ થયું છે. આ મુજબ ઠરાવો કર્યા બાદ શ્રી. પંચમાંથી ૩૩ મેમ્બરો ચૂંટાઇ આવેલ છે. જેથી વર્ષમાં એકાદ વખત તેઓશ્રીની બેઠક બોલાવી શકાય. અને તેમ્નોને આમંત્રણ આપવાની ફરજ ઉપલી સભાના સેક્રેટરીને સોંપેલી છે.

ત્યારબાદ બડોલી મુકામે ઉપલી સભા મળી

હતી. અને સંવત ૧૯૮૫ના આસો સુદ ૨ ના રોજ શ્રી વડાલી મુકામે રાયદેશમાંથી ચૂંટાયેલા મેમ્બરોને બોલાવવામાં આવ્યા હતા. તે વખતે પ્રથમ થયેલ ઠરાવો સંબંધી વાટાઘાટ કરવામાં આવી હતી. અને શરૂઆત હોવાથી યોગ્ય ઠપકો જેને તેને આપવામાં આવ્યો હતો. અને આ વખતે આ મેમ્બરોને "મેનેજીંગ કમીટી," એ નામ તેઓશ્રી તરફથી આપવામાં આવ્યું હતું. આ મુકામે કામ પણ શાન્તીપૂર્વક થયું હતું.

હવે ઉપલી સભાની છઠ્ઠી બેઠક જેઠ સુદ બીજ પર મુ. પાલરાખવામાં આવી છે. આ સભાના કુલ મેમ્બરો હાલમાં ૪૫ છે. જેનું ધારા ધોરણ નક્કી કરવામાં આવ્યું છે. જેથી હિ. વ. સભાના દરેક મેમ્બરોને વિનંતી છે કે સેક્રેટરી તરફથી લખવામાં આવે તે મુજબ સદરહુ સ્થળે હાજરી આપવા તસ્દી લેશો.

લી. જ્ઞાતિ સેવક–કે. એન. મીઠાવાલા.
સેક્રેટરી, દ. હું. દિ૦ જૈન હિ. વ. સભા,–ઇડર.

શ્રીમતી મગનબ્હેન સંબંધી

શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજી જૈન બોર્ડિંગના એક જુના વિદ્યાર્થી તરફથી ત્યાંના સુપ્રિન્ટેન્ડન્ટને મળેલો પત્ર.

પુના. તા. ૧૬–૨–૩૦

સાહેબ,

પ્રખર તપસ્વિની–સમાજ સેવિકા શ્રીમતી મગનબ્હેન ગયાં. શોક કોને નહિ થયો હોય! પથ્થર હૃદયનો હૈયાસુનો માનવી પણ અશ્રુ પાડે. મગન બ્હેનનાં સગાં વ્હાલાંને મ્હારાં હૃદયનાં આશ્વાસન. ત્હેમને કહેજો કે મગનબ્હેનની ઇચ્છા મગનબ્હેનની માફક સ્ત્રી રત્નો પાકે અને સમાજ સેવામાં અગ્ર ભાગ લે તેવી જૈન કુમારીકાઓ જૈન માબાપો ઉત્પન્ન કરે તેવી હતી. મગનબ્હેનના આત્માને શાંતિ આપવા માટે જૈન માબાપો હવે કંઇ તે દિશામાં પગલાં ભરશે. અને મગનબ્હેનની માફક સમાજ સેવિકા એક નહિ પણ જૈન સમાજ ઘેરઘેર પકવવા પ્રયત્ન કરશે. ત્હેમને કહેજો કે ખોવાયેલી ચીજ જે પાછી નજ આવી શકે તેવી હોય તો ત્હેનું સાર્થક ત્હેનો બદલો વાળવામાં છે. મગનબ્હેન ગયાં–પાછાં નહિ આવે પણ તે ખોટ પુરી પાડવા માટે ત્હેમના જેવી સ્ત્રીઓ ઉત્પન્ન કરવી તેજ મગનબ્હેનની પાછળ રડતાં સ્ત્રી પુરૂષોની ફરજ છે. આંસુ પાડીએ–ગમે તેટલાં પાડીએ છતાં હૈયાના ગિરીનું તેજ ગૂઢ સરોવર કદી ઓછું થતું નથી.

હૈયાના ગિરીમાં ઉંડું એક ગૂઢ સરોવર;
આંસુડાના અમીથી એ ભર્યું રહેતું નિરન્તર.
ઉંડું સરોવર કદી ઉભરાઇ જાતાં,
એ અશ્રુનાં પ્રગટજો ઝરણાંજ થાતાં.
....
....
તોએ સરોવરતણું જળ નહિ ખૂટે,
જે સ્વર્ગના મધુર કાનનમાંથી ઉઠે.

માટે અશ્રુનો એ ભંડાર ખાલી કરવામાં કે ભરી રાખવામાં કંઇ સાર નથી. અને મરણ પાછળની ખોટી દંભિ ક્રિયાઓ પણ કરવામાં સાર નથી. પણ ત્હેના બદલે સ્ત્રીકેળવણી અપાય અને આપણ જૈન માબાપોનું વલણ કેળવણી પ્રત્યેનું કરાય તેવા પ્રયત્નો કરવામાંજ 'મગનબ્હેન' નું અંતિમ ધ્યેય પૂર્ણ થશે. લી૦

રમણીકના સ્નેહવંદન.

મોહન-માળા.

લે:-મોહનલાલ મ. કાણીસાકર-કંપાલા.

[ખાસ અંકથી ચાલુ.]

૫૮-પ્રેમ છે ત્યાંજ સુખ છે.

૫૯-પ્રેમ એજ સંસાર સાગર પાર ઉતારનાર નૌકા છે.

૬૦-પતિના દુઃખમાં દુખી, પતિના સુખમાં સુખી, પતિના ભાવની ભુખી. પતિવ્રત નાર એ પુરી.

૬૧-પુરૂષો જ્યારે શુદ્ધ પ્રેમી બનશે ત્યારેજ સ્ત્રીઓ પતિવ્રત ગુણથી અલંકૃત થશે.

૬૨-વૃદ્ધ લગ્નથી સ્ત્રીઓ અનીતિવાન બને છે.

૬૩-તે દ્રવ્ય શું કામનું કે જે વિદ્યાદાનમાં વપરાતું નથી?

૬૪-તે મનુષ્ય શાનાં કે જેનામાં ધર્મજ્ઞાન નથી?

૬૫-ધિક્કાર છે તે જ્ઞાતિ બંધનને કે-જે ભાણે ખપતી કોમમાંથી કન્યા લેવાની છુટ આપતાં નથી.

૬૬-નથી ધર્મનું ભાન જેને લગારે-
પડયો માતને પેટ પથર ભારે.

૬૭-જેને પ્રભુ પર પ્રેમ થયો હોય તે મન વચન અને કાયાએ કરી કોઇ પણ જીવને દુઃખ આપી શકે નહિ.

૬૮-અહિંસા વ્રત એ સર્વે ધર્મનું પગથીયું છે.

૬૯-ખરી શાન્તિ તેજ છે-કે-ક્રોધ ન થવા દેવો.

૭૦-સુખી તરફ મિત્ર ભાવ. દુઃખી તરફ દયાભાવ, પુણ્યવાન તરફ હર્ષભાવ, અને પાપીતરફ તેને સુધારવાની અપેક્ષા તેજ અંતર શુદ્ધિ કહેવાય.

૭૧-પાંચેદ્રિને અનુકૂળ સંજોગો હોવા છતાં ચારિત્રભ્રષ્ટ ન થવું તેજ ખરૂં શુરાતન છે.

૭૨-શરીર પરની મમતા છોડયા સિવાય આત્મા ઓળખી શકાતો નથી.

૭૩-નારીજ નરને પેદા કરે છે.

૭૪-બાળ લગ્ને સમાજનું સત્યાનાશ કર્યું છે.

૭૫-જેવી સોબત તેવીજ અસર થાય છે.

૭૬ ભુખ્યા રહેવાથી જેટલાં મર્ણ થાય છે. તેથી હજાર ગણાં મર્ણ વધારે ખાવાથી થાય છે.

૭૭-સ્વચ્છતા એજ આરોગ્યની ચાવી છે.

૭૮-શીલવાનના શીલ કારણે, દેવ હજુરમાં હોય છે,
દુષ્ટને તે યોગ્ય શિક્ષા જલ્દી આપ્યો જાય છે.

૭૯-છે ન્યાય આ અવનિપરે ઇશ્વર તણા દરબારમાં.
સૌ ન્યાય ત્યાં તોળાવશે યમકિંકરોનાં મારમાં.

૮૦-વધારી જ્ઞાન શાસ્ત્રોનું પોતે તો ક્ષુલ્લક બનો.
ખપાવી કર્મના બંધન મુક્તિ નારીને વરો.

૮૧-બગાડે ચિત્ત દર્શનથી. સ્પર્શથી બળને હરે.
સમાગમથી હરે વિર્ય, નારી માનો રાક્ષસી,

૮૨-જેવા આપણે બીજાને ધારીએ તેવાજ પોતે હોવા જોઇએ.

૮૩-કમળો થયો હોય તેજ બધું પીળું દેખે છે.

૮૪-આંધળાને બધુંય સરખું છે. કાળું કે રાતું, પીળું કે લીલું. તેમજ મૂર્ખ માણસને બધુંય સરખું છે. પુન્ય કે પાપ-ધર્મ કે અધર્મ.

૮૫-દયાવાન દીકરીને વેચે નહિ.

૮૬-શ્રદ્ધાવાનજ સાધુ થઇ શકે છે.

૮૭-હિંસાનો પરિત્યાગ કરી મનને ધર્મ તરફ પરોવવું તેજ મોક્ષ જવાની નિસરણી છે.

૮૮-યશ રૂપી જયમાળ મેળવવી તેજ જીંદગીની સાર્થકતા છે.

૮૯-મળેલા ધનનો સદ્ઉપયોગ કરવો એટલે કે તેનો દાન અને ધર્મમાં વ્યય કરવો.

૯૦-હાથે તેજ સાથે એ ચોક્કસ માની પોતાની કમાણીનો પોતેજ ધર્મકાર્યમાં વ્યય કરવો.

૯૧-મનુષ્ય માત્રની એકજ જાતિ માની દરેકના ભલામાં પોતાનું ભલું સમજવું.

૯૨-દુષ્ટ જ્ઞાતિ બંધનોજ સમાજને અધઃપાત કરનાર છે.

૯૩-ભાણે ખપતી કન્યાને ખુશીથી ગ્રહણ કરો.

—❦—

અંકલેશ્વર-ની દિ૦ જૈન પાઠશાલાના ૩૭ વિદ્યાર્થીઓની પરીક્ષા હમણાં લેવાઈ હતી જેમાં જુદા જુદા વિષયોમાં બધાજ વિદ્યાર્થી પાસ થયા હતા. દોલચંદ અમીચંદ માસ્તર સારૂં શિક્ષણ આપે છે.

પાદરા-માં બ્ર૦ શ્રી સુરેંદ્રકીર્તિજી હાલ પાદરામાં એક માસથી છે ને ઠીક ઉપદેશ અપાય છે.

વિજયનગર-થી મોડાસિયા ફતેહચંદભાઈ તારાચંદ મંત્રી લખે છે કે મારા હસ્તકની ખડકની ૧૦ પાઠશાલાઓની પરીક્ષા ચૈત્રમાસે થનાર છે ત્યારે ઇનામમાં પુસ્તક વગેરે વેંચવા માટે ૩૦૦)ની જરૂર છે જેમાં ૨૫૦) તો છે ને ૫૦) ખુટે છે તો આ સહાયતા મારા ઉપર કે લલ્લુભાઇ લખમચંદ ચોકસીને મુંબાઇ મોકલવા દાનીઓને પ્રાર્થના છે.

સેઠ જીવરાજ ઉગરચંદ--સોનાસણવાલાનો શિખરજી યાત્રાનો સંઘ ગયામાસમાં જંબુસ્વામી (મથુરા) પધાર્યો હતો ત્યારે આપે રૂ૦ બ્ર૦ આશ્રમને ૧૨૫) ભેટ આપ્યા હતા.

વ્યારા-ના મંદિરનું અધૂરું કામ બ્ર૦ સુરેંદ્રકીર્તિજીના પ્રયાસથી પુરૂં થયું છે. હવે વેદી પ્રતિષ્ઠાકારકની જરૂર છે.

સોજીત્રા શ્રાવિકાશ્રમ-ને મેનાબ્હેનના પ્રયાસથી ૧૬) ડભકા, ૨૦) વડુ, ૫) ભોજ, ૫) પ્રાયજ, ૩૫) પાદરા, ૧૮॥ દેડચ, ૧૬) છાણી, ૧૬॥ વડોદરા, ૧૦) દાવોલ, ૨૯॥ બોરસદ, ૪॥ ફૂટેલ અને રૂ. ૯॥ બોચાસણથી મળી રૂ. ૧૮૦॥ ની મદદ મળી હતી. મંત્રી.

जयंती जिनराजकी।

ज–ब तक है जीवन ज्योति, जगत माहिं जगमगती,
यं–त्रणायें सहूँ किन्तु, धर्म अरु समाजकी–
ती–न काल मुझसे हो, सेवा यह भावना है,
जि–धर देखूँ उधर होवे, जयंती जिनराजकी ॥ १ ॥
न–हीं द्वेष भाव रहे, मैत्री प्रमोदका हो–
रा–त दिन प्रसार, रही चिन्ता इसी साजकी।
ज–गत जैन शासनकी, शरण प्राप्त करे और,
की–र्ति लह मनावे जग, जयन्ती जिनराजकी ॥२॥

भारत समरमें।

दीनताको दूर करो, नव्य भव्य भाव भरो,
भारतके क्लेश हरो, फँसा जो भँवरमें।
था जो राजाधिराज, देखो यह दृश्य आज,
शृंखला है दासताकी, उसकी कमरमें ॥ १ ॥
दुखिया है जौलों देश, तौलों कहाँ शान्ति लेश,
काटो अब शीघ्र क्लेश, कहो कौन अमर है।
लाखों गये लाल और, जायेंगे करोड़ों ही,
गांधी बन अगुआ, कस बैठे अब कमर है ॥ २ ॥
भीरुता भगाय आज भारतकी रखो लाज,
शक्ति है तुम्हारी वही जितनी एक अमरमें।
वक्त गया हाथ नहीं आवेगा कभी "दास"
नाम शीघ्र लिखा लेना "भारत-समरमें" ॥ ३ ॥

परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ–सूरत।

"जैनविजय" प्रिंटिंग प्रेस, खपाटिया चकलासूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

सम्पादकः—मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत।

वर्ष २३वाँ
अङ्क ६.

वीर सं० २४५६
चैत्र.

विषयानुक्रमणिका.

उपहार ग्रन्थ—

इस वर्षके दो उपहार ग्रन्थ—'नवरत्न व जैन विवाहविधि' तैयार होकर १०—१५ दिनमें सब ग्राहकोंको वी० पी०से भेजे जायगे। प्रकाशक।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।=) विशेषांक मूल्य ॥।)

स्वर्गीय जैन महिलारत्न-

मगनव्हेन स्मारकफंडमें स्वीकारता।

४१९) गतांकमें प्रकाशित

९) चंदूलाल जमनादास बखारिया कठोर

५) महावीर जैन पाठशाला साहूरक

९) जैन कन्याशाला पंचायती सहारनपुर

९) आत्माराम जयरामदास जैन ,,

९) चंद्राबाई रामस्वरूप जालंधर

९) श्राविक पद्मावतीबाई चालीसगाम मैसूर

९) बा० शिवचरणदास जैन जसवंतनगर

९) रघुवरप्रसाद जैन बेतूल

११) सौ० सेठानी हीराबाई इन्दौर

ध० प० सेठ गेंदालाल सूरजमल

१०) बाबकमाता उमरावसिंह जैन पुरकाजी

९) डॉ० भाईलाल कपुरचन्द शाह नार

९) पुतलीदेवी डॉ० शंकरलाल लतौली

९) गुरुचरणदास जैन फरानपाग

११) मोहनलाल मथुरादास काणीसाकर

—कंपाला (युगान्डा आफ्रिका)

१०) ध०प० दीपचन्दजी जैन देहरादून

९) ध०प० निर्मलकाल जैन फोर्टकठान

९) दामोदरदास जैन बिनौवा सागर

२१) पं० अजितप्रसादजी जैन बीकानेर

९) मोतीलालजीकी धर्मपत्नी बाराबंकी

५) सोनादेवी हरीचन्द जैन हरदोई

९) रघुवरदयाल जैन एम.ए.एलएल.बी. लाहौर

९) बिशेश्वरनाथ बाबारामदास जैन देहली

६१७) कुल

श्री० मगनबाईके इस स्मारक फंडमें दिगंबर जैनके भिन्न२ पाठकोंने अपनी ओरसे रकम नहीं भेजी है वे अब तो अवश्य २ भेज दें। कमसे कम पांच रुपये देनेवालेको "दानवीर माणिकचंद्र" नामक १००० पृष्ठका सचित्र ग्रन्थ अवश्य भेंटमें दिया जाता है। स्मारककी रकम जो वी० पी० से देना चाहेंगे तो यह ग्रंथ वी० पी० से भेजकर वसूल कर सकेंगे।

निवेदक-मूलचंद किसनदास कापड़िया-सूरत।

श्रीमान सेठ छोटालाल घेलाभाई गांधी-अंकलेश्वर।

नमक कानून भंग-सत्याग्रह मामलेमें देशसेवार्थ एक वर्षकी जेलयात्राको जानेवाले वीर दिगम्बर जैन बन्धु।

"जैनविजय" प्रेस-सूरत.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ।

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वां	वीर सम्वत् २४५६, चैत्र, विक्रम सम्वत् १९८६.	अङ्क ६.

सम्पादकीय-वक्तव्य

हमारे पाठक इस परम पर्वसे परिचित होंगे। यह वह दिवस है जब कि अक्षय तृतीया । भगवान आदिनाथस्वामीका एक वर्ष पश्चात पुण्यशाली राजा श्रेयांसके यहां आहार हुआ था। उस समयकी परिस्थिति बड़ी विकट थी, लोगोंको यह ज्ञान नहीं था कि आहारदान किस प्रकार दिया जाता है। जब भगवान आदिनाथस्वामी आहारके निमित्तसे पुर, खानि, मटंबे, खर्वट और खेट आदि अनेक छोटे बड़े ग्रामोंमें विहार कर रहे थे तब आहार विधिसे अनभिज्ञ जन हाथी, घोड़ा, रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि वस्तुएं भेट करनेके लिये उपस्थित होते थे। मगर भगवानको इन विभूतियोंसे क्या प्रयोजन ? वे तो चाहते थे कि शरीर स्थितिके लिये आहारदानकी प्रवृत्ति की जावे, अन्यथा नव दीक्षित मुनि व त्यागीगण भूखकी बाधा सहन न करके भ्रष्ट हो चुके हैं और हो जावेंगे।

भगवानको योग धारण किये हुये छह मास और आहार निमित्त विहार करनेके लिये छह महीने अर्थात् कुल एक वर्ष हो चुका तब विहार करते हुये हस्तिनापुर आये। भगवानने विहार करते हुये राजमहलमें प्रवेश किया और श्रेयांस कुमारको भगवानके दर्शन करके जातिस्मरण हो गया। तब सप्तगुणयुक्त श्रेयांसकुमारने नवधाभक्तिपूर्वक श्री ऋषभदेवको इक्षुरसका प्रासुक आहारदान दिया। तबसे दानकी विधि सर्वसाधारणको ज्ञात होगई।

आजकल भी सौभाग्यसे जैन मुनियोंका विहार होरहा है और अनेक जैन भाइयोंको आहारदान देनेका अवसर प्राप्त होता है; किन्तु इसमें संदेह नहीं है कि वर्तमानमें मुनियोंकी आहार चर्यामें आवश्यकतासे भी अधिक आडंबर करना होता है। जिससे गरीब अमीर, छोटे बड़े सभी श्रावक आहारदानके पुण्यका लाभ नहीं ले पाते। यही बात बहुत खटकती है। आजकल आहारदान देनेके लिये श्रावकोंको अनावश्यक एवं मर्यादातीत प्रतिज्ञायें लेना पड़ती हैं। और आश्चर्य तो यह है कि इससे भी नीचे दर्जेकी मोटी मोटी बातोंका चाहे वह व्रती न भी हो।

आहारदान तो अविरतसम्यग्दृष्टि भी दे सक्ता है, जो कि न तो इन्द्रिय विषयोंसे विरक्त होता है और न त्रस एवं स्थावर जीवोंकी हिंसाका ही त्यागी होता है। तब शूद्रजल त्याग आदि अनेक अनुपयोगी तुच्छ प्रतिबंधन डाल देना सर्व साधारण गृहस्थोंको आहार देनेसे वंचित रखना है। यदि इस बातपर पुनः विचार किया जावे तो सर्वसाधारणको आहारदान देनेका सौभाग्य प्राप्त होसक्ता है। अस्तु,

पूर्वाचार्योंने दानके चार प्रकार बतलाये हैं। यदि कोई दानी गृहस्थ विद्यालय, छात्रावास आदिमें अपने द्रव्यको अर्पण करता है तो वह चारों दानका भागी हो जाता है। इस समय ज्ञान दानकी बहुत भारी आवश्यक्ता है। देशकालकी परिस्थिति पर विचार करते हुए आज अपनी समाजको सुशिक्षित बनानेमें ही अधिकांश द्रव्यका उपयोग करना चाहिये। गरीबसे गरीब परिस्थितिवाला गृहस्थ भी यदि निश्चय करे तो एक वर्षमें कमसेकम १०) दान कर सक्ता है। केवल उसको अपनी आमदनीमेंसे दो पैसे प्रतिदिन अलग निकालते जाना चाहिये। प्रत्येक जैन गृहस्थ शास्त्रों एवं पुराणोंको पढ़कर, सुनकर या अन्य प्रकारसे दानकी महिमासे परिचित है। इस लिये यदि अपनी आत्मा एवं समाज, धर्म तथा देशका कल्याण अभीष्ट है तो कुछ न कुछ दान अवश्य करते रहना चाहिये। यह अक्षयतृतीया (वैशाख शुक्ला ३) प्रतिवर्ष हमें दानके लिये सावधान करती है। इस पवित्र दिवसमें कुछ न कुछ दान करना चाहिये। यही धनकी उपयोगिता एवं मनुष्य-जीवनका सार है।

आज भारतवर्षके कोने कोनेमें सत्याग्रह संग्राम चालू होगया है

सत्याग्रह संग्राम। महात्मा गांधीकी अप्रतिहत आज्ञाको भारतीय वर्ष १ने अपने माथेपर टेक लिया। अब और तबमें आसमान पातालका अन्तर है। सन् २१का सत्याग्रह तो हमें केवल सोतेसे जगा ही सका था किन्तु अब हमें वह प्रत्येक कार्यको अमलमें लानेका आदेश करता है। महात्माजीकी आज्ञानुसार भारतमें सर्वत्र नमक करका कानून तोड़ा गया। लाखों स्त्री पुरुषोंने मिलकर खुले रूपमें नमक कानून भंग किया और अभीतक जारी है। इसको दबानेके लिये सरकार भी अपनी शक्तियां अजमा रही है। दमनका दौरदौरा होरहा है। सैकड़ों प्रतिष्ठित नेता जेलोंमें ठूंस दिये गये हैं। अनेक सत्याग्रही सैनिक बुरी तरहसे ठोके पीटे गये हैं। ऐसा भी मालूम हुआ है कि कलकत्तेमें कुछ सैनिक नमक बनानेके लिये एक बड़ी कड़ाईमें पानी पका रहे थे। तब पुलिसने एक सैनिकको उस खौलते हुये पानीकी कड़ाहीमें पटक दिया! उफ्! इस अत्याचारका भी कहीं ठिकाना है?

एक नहीं अनेक प्रकारके अनर्थ भारतीय सत्याग्रही प्रजाके साथ किये जा रहे हैं। मगर शेरदिल सैनिक अपने काममें बराबर टिके हुये हैं। उन्हें सत्यपर भरोसा है, अहिंसाका बल है, पूर्वजन्म पर विश्वास है इसलिये मरनेका भय नहीं है। जेलखाना तो विनोदस्थान समझा जारहा है। हमारा युद्ध अहिंसात्मक एवं सत्य है इसलिये विजय होना अवश्यंभावी है।

नमक कर ।

नमकपर कर लगाना वास्तवमें अनुचित है इसको प्रत्येक सहृदयी व्यक्ति कह सक्ता है। हमारे पुस्तानपुस्तसे चले आये व्यवसायको शासनके बलपर बलात् कुचला गया। पहिले तो लोग समुद्रसे पानी भरकर योंही नमक बना लिया करते थे और हजारों आदमी अपना पेट पालते थे। मगर वह बंद कर दिया गया। जहांपर प्राकृतिक नमक जमता था वहां भी सरकारने एकाधिपत्य जमा लिया।

सरकारको एक मन नमक तैयार करनेमें केवल १० पाई खर्च पड़ता है। उसपर २० आने अर्थात् २४० पाई टैक्स लगाया जाता है। जिससे एक वर्षमें गरीब भारतसे ६ करोड़ ९९ लाख रुपया चूस लिया जाता है। गरीबसे गरीब मनुष्य और सभी छोटे बड़े पशुओं तकको नमककी आवश्यक्ता होती है। अर्थात् नमकपर टैक्स लगाकर सरकार भारतीय प्रत्येक बच्चेसे लेकर वृद्ध और पशुसे भी कुछ न कुछ कर वसूल करती है। यही सब अनर्थ न सहकर महात्माजीने अपने विचारशील मस्तिष्कसे इसपर सत्याग्रह छेड़ा है। महात्मा गांधीजीका यह संग्राम जीवनका अन्तिम संग्राम है। अगर हम उनकी आज्ञाओंको बराबर पालन करते गये तो नमक कर जैसा मृतप्राय होगया है वैसे ही दूसरे अन्यायोंसे भी भारतवर्ष छुटकारा पा जावेगा यह विश्वास रखिये।

* * *

जैनियोंका हाथ।

हर्षका विषय है कि हमारे जैन भाई भी इस संग्राममें पूरा भाग लेरहे हैं। मणिलाल कोठारी, अमृतलाल सेठ, छोटालाल घेलाभाई गांधी आदि सुप्रसिद्ध जैन वीर तो इसी संग्रामके कारण आज जेलोंमें पड़े हुये हैं। सैकड़ों जैन वीर अभी सैनिकके रूपमें काम कररहे हैं व अनेकोंने अपने नाम इस शुभ कार्यमें लिखाये हैं। भा० दि० जैन परिषद्के मंत्री बाबू रतनलालजी वकील बिजनौरमें कांग्रेस कमेटीके मंत्री हैं। वे इस चलवलमें जबरदस्त काम कर रहे हैं। जबतक यह अंक पाठकोंके हाथमें पहुंचेगा तब तक तो शायद यह शेर भी सरकारी मेहमान बनकर जेलखानेमें दहाड़ेगा। इधर भा० दि० जैन परिषद्के सभापति महोदय सुप्रसिद्ध सिंघई पन्नालालजी अमरावतीने तो एम० एल० सी० पदसे स्तीफा देकर अपने १२ वर्षके इकलौते पुत्रको सत्याग्रही सैन्यमें अर्पण करदिया है। तथा वर्तमान सत्याग्रह संग्रामकी सहायतार्थ स्थानीय कांग्रेसकमेटीको १०) माह वार देना भी स्वीकृत किया है। आपका साहस, उदारता एवं देशभक्ति सराहनीय है। आपके इस सत्साहसको बधाई है। श्राविकाश्रम बम्बईकी छात्रायें भी नमक बनाने आदिमें पूरा भाग ले रही हैं। इसी प्रकार अनेक जैन भाई इस अहिंसक संग्राममें भाग ले रहे हैं। यदि हमें नाम मालुम होते रहेंगे तो बराबर प्रकाशित किये जावेंगे।

* * *

दूसरा आंदोलन महात्माजीने मद्य निषेधका उठया है। भारतवर्षका

मद्य निषेध। २५ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष इस मद्यपानमें बिगाड़ा जाता है। इतना ही नहीं किंतु जान बूझकर पागल बनकर अपना सर्वस्व नाश किया जाता है। हमारा जैन धर्म तो सर्व प्रथम इसका निषेध करता है। जैन होनेके पूर्व ही मद्यादि सेवनका त्याग कराया जाता है। हमारे यहां तो बतलाया है कि—

मद्यं मोहयति मनो, मोहितचित्तस्तु विस्मरति धर्मं।
विस्मृतधर्मा जीवो, हिंसामविशंकमाचरति ॥

अर्थात्—मद्य (शराब आदि) से मन मोहित होजाता है और मोहित चित्त होनेसे धर्म भूल जाता है तथा धर्मको भूला हुआ प्राणी निःशंक होकर हिंसामें प्रवृत्ति करने लगता है। महात्मा गांधीजीका सिद्धांत भी अहिंसा पूर्ण है इसलिये उनने भी इस दुर्व्यसनको भारतवर्षसे उखाड़ देनेकी नई स्कीम निकाली है।

उनने केवल स्त्रियोंको ही इस कार्यको रोकनेकी आज्ञा दी है। आज्ञा होते ही अनेक भारतीय वीर ललनाओंने इस पवित्र कार्यको अपने हाथमें लेकर पिकेटिंग प्रारम्भ कर दिया है। वे शराब ताड़ीकी दुकानोंपर जाती हैं, दुकानदारसे निवेदन करती हैं कि भाई! इस दुष्कर्मको छोड़कर कोई अच्छा व्यवसाय करो। भले ही भीख मांगना पड़े, किन्तु इस कामको करके अपने भाइयोंको पागल मत बनाओ। इस उपदेशसे अनेक सहृदयी भाई तुरत दुकान बंद करके इसका व्यापार छोड़ देते हैं। अनेक दुराग्रही उन मां बहिनोंको खोटी खरी सुनाते हैं। उन सत्याग्रही वीरांगनाओंने तो इसके लिये अपना जीवन अर्पण ही किया है, इसलिये वे सब सहन करके अपना कर्तव्य करनेमें नहीं चूकतीं।

इधर वे दुकानोंपर धरना धरके बैठ जाती हैं तब अनेक लज्जाशील एवं मनुष्यतापूर्ण भाई तो दूर हीसे भाग जाते हैं, शराब पीनेको नहीं जाते। और जो जाते भी हैं उन्हें वे समझाती हैं कि भाई इस दुर्गन्धित शराब–ताड़ीको पीकर पागल मत बनो, देश और समाजका नाश मत करो, चलो हम तुम्हें कामधेनुका दूध पिलायेंगी। इस उपदेशसे अनेकों मान भी जाते हैं। जो दुराग्रही होते हैं उनके उपसर्गोंको सहन करनेका भी साहस उन वीरांगनाओंमें है। हमें विश्वास है कि इस आन्दोलनसे शराब आदि नशेली चीजोंका नाश शीघ्र ही हो जावेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि महात्माजीकी प्रत्येक राष्ट्रीय आज्ञाएँ हमारे हितकी हैं, जैनधर्मसे संबंध रखनेवाली या उसके अनुकूल हैं। हमें इसमें पूरा भाग लेना ही चाहिये।

***

महात्माजी भारतीयोंके सुख एवं देशकी स्वतंत्रताके लिये विदेशी

विदेशी वस्त्र बहिष्कार। वस्त्र बहिष्कारको प्रधान कारण बतलाते हैं। भारतवर्ष विदेशी वस्त्रोंका उपयोग करके कंगाल होगया है। लाखों भारतीय तो ऐसे मिलेंगे कि जिनको अपनी लाज बचानेके लिये कपड़ेका टुकड़ा भी नहीं मिलता।

जो महलोंमें आराम करनेवाले हैं, मखमली गद्दोंपर सोनेवाले हैं, चरबीमय विदेशी वस्त्रोंसे अपने शरीरको अपवित्र बनाकर अहिंसा धर्मकी डींग मारते हैं उन्हें क्या खबर है कि भारतवर्षकी कैसी परिस्थिति है ?

महात्माजी आदेश करते हैं कि अगर आप अहिंसा प्रेमी हैं, देश रक्षाके अभिलाषी हैं, दीनोंकी दयावाले हैं तो विदेशी वस्त्रोंका उपयोग मत करो। वास्तवमें खादी प्रचार करना जैनधर्मके अनुकूल है। हमें सखेद लिखना पड़ता है कि पवित्र जैन मंदिरोंमें आज भी विदेशी वस्त्र उपयोगमें आते हैं! मखमली वस्त्र काममें लाये जाते हैं! क्या इनसे मंदिर पवित्र कहा जासक्ता है? जिन वस्त्रोंके निमित्तसे असंख्य प्राणियोंकी हत्या की जाती हो उनको मंदिरके काममें लाना, उनमें जिनेन्द्र भगवानके द्वारा प्रतिपादित शास्त्रोंको बांधना, जिन प्रतिमाका प्रक्षाल करके उन अशुद्ध मलमलके वस्त्रोंसे पोंछना घोर अनर्थ है! कमसेकम इस प्रकाशमय जमानेमें तो जैनियोंको अपने मंदिरोंमें ऐसे वस्त्रोंका उपयोग नहीं करना चाहिये।

हम साथमें यह भी कह देना चाहते हैं कि प्रत्येक स्त्री पुरुष बालक बालिकाको शुद्ध खादी उपयोगमें लाना चाहिये। खादीका उपयोग करना देश, धर्म, समाज एवं पवित्रताका रक्षक है। जैनियोंको तो इन तमाम राष्ट्रीय बातोंमें आगे आना चाहिये। कारण कि इनसे जैन धर्मका घनिष्ट संबंध है। प्रत्येक भारतीय यदि चर्खा और तकली कातना सीख जावे तो सबके लिये सब प्रकारकी खादी सुगमतासे मिल सक्ती है। हम अनुभवसे कह सके हैं कि खादी पहिरनेसे आर्थिक लाभ तो होगा ही—मगर मानसिक पवित्रतामें भी यह प्रधान कारण है। खादीकी उपयोगिताके विषयमें बहुत कुछ लिखा जासक्ता है। हम अपने पाठकोंसे साग्रह अनुरोध करते हैं कि वे आजसे विदेशी वस्त्रोंका परित्याग कर खादी या स्वदेशी वस्त्रोंके ही उपयोग करनेकी प्रतिज्ञा लेवें। और राष्ट्रीय स्वतंत्रताके अहिंसात्मक संग्राममें तन मन धनसे भाग लेवें। जैन धर्मके लिये आधुनिक तमाम राष्ट्रीय बातें अनुकूल हैं। इनमें सहयोग देना मानो जैन धर्मके किन्हीं सिद्धान्तोंका प्रचार करना है।

* * *

श्री १०८ मुनिश्री आनंदसागरजीके वियोग-के शोकको हम नहीं

मुनि चंद्रसागरजीका भूले थे इतनेमें परताब-

वियोग। गढ़में गत ता० ११ मार्चकी रात्रिको १२ बजे श्री १०८ मुनिश्री चंद्रसागरजीका अतीव वृद्धावस्थामें व बहुत दिनोंकी लकवाकी बीमारीके बाद स्वर्गवास होगया! आपका फलटनमें बीसा हूमड़ जातिमें सं० १९१७में जन्म हुआ था तब नाम पद्मशीभाई था। आप साधारण पढ़ेलिखे व सरल परिणामी थे। आपने सं० १९६९में कुरुंदवाड़में क्षुल्लक, सं० १९७०में परंडामें ऐलक व १९७२में झालरापाटनमें मुनि दीक्षा ग्रहण की थी तब गुजरात व उत्तरप्रांतमें आप एक ही मुनि दीख पड़ते थे। पश्चात्तापकी

बीमारीसे आप कई वर्षोंसे बीमार होते हुए भी आहारादिकी क्रिया बराबर पालते थे। आपका सचित्र परिचय हम पिछले "दि० जैन" के किसी विशेषांकमें प्रगट कर चुके हैं। आपकी आत्माको शांतिलाभ हो यही हमारी श्री जिनेन्द्रदेवसे प्रार्थना है।

---

* * *

છોટાલાલ ગાંધીનું બલિદાન!

અમારા ગુજરાતનો દરેકે દરેક ભાઈ બહેન અંકલેશ્વર નિવાસી વીસા મેવાડા જ્ઞાતિ સેઠ છોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધીથી પરિચિત છેજ. આપે ગુજરાતના દિગમ્બર જૈન ભાઈઓની ધાર્મિક તેમજ સામાજિક ઉન્નતિ માટે અનેક પ્રકારના પ્રયત્નો કર્યા હતા પણ તે ઉપરાંત આપે કેટલાંક વર્ષોથી રાજકીય લડતમાં ઝીંપલાવ્યું હતું તે એટલે સુધી કે આપ ૧૦-૧૨ વર્ષોથી તો વ્યાપાર ધંધો કોરે મુકી પ્રજાકીય સુધારણા અને રાજકીય કાર્યોમાંજ રચ્યા પચ્યા રહેતા હતા, અને શુદ્ધ ખાદીધારી બન્યા હતા. આપ એક વખત અંકલેશ્વર મ્યુનીસીપાલીટીના મેમ્બર ચુંટાયા હતા તે ઉપરાંત તાલુકા બોર્ડ અને ભરૂચ જીલ્લા લોકલ બોર્ડના મેમ્બર ઘણાં વર્ષોથી ચુંટાતા આવ્યા છે. તેમજ કેટલાક વખતથી અંકલેશ્વર નાગરિક સહકારી બેંકના ચેરમેન હતા. આપ નાગપુર રાષ્ટ્રીય ઝંડા સત્યાગ્રહ વખતે જેલ પણ ખુશી ખુશીથી ગયા હતા ને તે સમયે દેશની ઉત્તમ સેવા બજાવી હતી તે પછી સત્યાગ્રહ અને અસહકારના કાર્યક્રમ મહાત્મા ગાંધીજીએ મુલતવી રાખવાથી આપ શાંત રહેતા હતા અને કોંગ્રેસના કાર્યથી અલગ રહેતા હતા. પણ ગત લાહોર કોંગ્રેસે પૂર્ણ સ્વતંત્રતાનો ઠરાવ કર્યો ત્યારથી આપ પાછા રાત્રિ દિન રાષ્ટ્રીય કાર્યમાં સંલગ્ન થયા હતા અને મહાત્મા ગાંધીજીએ મીઠાનો સરકારી કાનુન ભંગ કરવાનું બીડું ઝડપ્યું કે તરતજ તેમાં આપે ઝીંપલાવ્યું. મહાત્માજી અમદાવાદથી કુચ કરતા કરતા અંકલેશ્વર પધારેલા ત્યારે આપે ઉત્તમ પ્રકારનું સ્વાગત કર્યું હતું ને સૈનિક તરીકે બહાર પડયા હતા તે પછી તા. ૬ અપ્રેલે મહાત્માજીએ દાંડી (જલાલપુર) માં ૮૧ સૈનિકો સાથે મીઠાના કાયદાનો ભંગ પ્રારંભ કર્યો ને સર્વત્ર એજ પ્રમાણે સામુદાયિક ભંગ કરવાનો મહાત્માજીનો આદેશ મળ્યો કે આપ પણ અંકલેશ્વરની પાસે એક ગામમાં જ્યાં દરિયાઈ મીઠું મળી શકે છે, ત્યાં એક સૈનિકોની ટુકડીને લઈને ગયા હતા ને મીઠાના કાયદાનો ભંગ કર્યો હતો તે ઉપરથી સરકારે આપને પકડયા અને ૧ વર્ષની સાદી કેદની સજા કરી અમદાવાદની સાબરમતી જેલમાં આપને મોકલ્યા છે. અંકલેશ્વરની જનતાએ તો આપનું જે અપાર અભિનંદન કર્યું તેની તો પ્રશંસા અમે શું કરી શકીએ પણ સરકારે તો અંકલેશ્વરથી લઈ જતી વખતે એમને ચોરની માફક બેડી પહેરાવી હાથે દોરડાં બાંધીને રેલ્વેમાં લઈ જવાનો શિષ્ટાચાર! બતાવી પોતાની શાન બતાવી હતી કે જેથી લોકો ડરી જાય પણ આથી તો અંકલેશ્વરમાં ને ભરૂચ જીલ્લામાં અજબ જુસ્સો આવ્યો છે ને ઠેર ઠેર મીઠાના કાયદાનો ભંગ થઈ રહ્યો છે તેમજ આપની સૌ. પત્ની માણેકબહેન પણ અંકલેશ્વરમાં સ્ત્રિયો દ્વારા ઉત્તમોત્તમ જાગૃતિ કરી અંકલેશ્વરને ગજાવી રહ્યાં છે. આજે ગુજરાતમાં ભાઈ છોટાલાલ ગાંધીની ખોટ પડી છે પણ અમને તો આશા છે કે આપ વહેલાંજ જલ્દી છુટા થઈ દેશને પોતાની સેવાનો લાભ ફરી આપી શકશેજ.

सूरत—में प्राथमिक स्कूलोंमें महावीर जयंतीकी आम छुट्टी श्री० गमनलाल सुतरियाके प्रयत्नसे हुई थी। इस प्रकार हरएक स्थानपर प्रयत्न करके महावीर जयंतीकी आम छुट्टी कराना चाहिये।

नरखेड—में सेतवाल समाजका प्रथम अधिवेशन ता० ६ अप्रैलको हीराचन्द आवणेके सभापतित्वमें होगया।

जैन सैनिक—महात्मा गांधीजीके नमक सत्याग्रह सैन्यमें बंबईमें चंदुलाल जमनादास बलारिया (कलोल), मगनलाल केवलदास (मलियाव), गिरधरलाल ईश्वरदास (कलोल) व सौ० हीराबहिन नेमचंद शाह कलोलने अपने नाम प्रविष्ट करा दिये हैं।

श्वे० जैनोंका—करीब १००० यात्रियोंका एक संघ अभी शिखरजीकी यात्रार्थ एरीनपुरासे स्पेशल ट्रेनोंद्वारा गया था जिसमेंसे हैजा चेचक आदिसे करीब १०० आदमी मर गये ! संघपतिके पुत्रका भी वियोग होगया है।

महावीर जयंती उत्सव।

गत चैत्र सुदी १३को महावीर जयंती उत्सव बम्बई, अहमदाबाद, देहली, हिसार, सनावद, ललितपुर, मोरेना, नावां, इटारसी, अजमेर, निसरपुर, लश्कर, अगावरी, हांसी, ब्यावर, सागर, कारंजा, सरधना, साढूमल, पाटन, मालंपर, हरदा आदि ९ स्थानोंपर अपूर्व धूमधामसे मनाया गया था। जिसमें बम्बईमें विदेशी वस्त्र त्याग व खादी ग्रहण करनेका अच्छा उपदेश हुआ तथा नमक कानून तोड़नेके सत्याग्रहमें जेलगये हुए श्री० छोटालाल घेलाभाई गांधीको व बंबईसे सत्याग्रह सैन्यमें प्रविष्ट होनेवाले गीरधरलाल शाह, शांतिलाल शाह व सोमचंद डाह्याभाई व जवेरचंद मगनलालको अभिनंदनका प्रस्ताव पास हुआ था। अहमदाबादमें इस समय दिगंबर जैन युवक मंडल स्थापित होकर उसके २८ मेम्बर बने जिसके मंत्री चिमनलाल वकील व मास्टर छोटेलालजी परवार निर्वाचित हुये व छोटेलाल घेलाभाई गांधी अंकलेश्वरको जेल जानेके लिये अभिनंदन किया गया।

झाबुआ—में पन्नालालजीकी धर्मपत्नी जानीबाईने रविवार व्रत उद्यापन किया तब जलयात्रा निकाली गई व ५०), उपकरण मंदिरमें तथा १००) संस्थाओंको दान किया गया।

उत्तम जैन चित्रकार—बंबईकी हमारी हो० गु० जैन बोर्डिंगके विद्यार्थी एम० एन० नेमिराज जैन (मूडबिद्री) ने चित्रकारीमें अति उत्तम शिक्षा प्राप्त की है। आपने २४ तीर्थंकर, ऋषभदेव, पार्श्वनाथ (तीन प्रकारके), महावीर भगवान, पंचपरमेष्ठी, संसार वृक्ष, आहारदान हुमच पद्मावती, पांडुक शिला व देवेंद्र पूजाके रंगीन चित्र बनाये हैं जिनको जर्मनी में नकल रंगीन छपवाना चाहते हैं जिसके लिये सहायताकी उन्हें आवश्यकता है। पत्र व्यवहार सुपि० बोर्डिंग तारदेव, बंबईसे होसकता है।

बड़वानी—में बावडी बनानेके लिये जानकीबाई कलकत्ताने १०००) प्रदान किये हैं।

डुंगरपुर—में वैशाख बदी १२ को वेदीप्रतिष्ठा होगी।

प्रतापगढ़—में दि० जैन भाइयोंमें बहुतसे कन्न एक ही मुहूर्तको निकालकर करनेका रिवाज होनेसे योग्य संबंध नहीं होने पाता इससे यहां ४० प्रतिशत विधवाएं हैं! दुःख! क्या परतापगढ़ पंचायती इस कुप्रथा पर विचार अब भी नहीं करेगी ?

श्री मगनबहेनके स्मारक फंड–में करीब ६०००) श्रीमती ब० कंकुबहिन व जैन महिलारत्न ललिताबहिनके प्रयत्नसे स्त्रियोंकी ओरसे भरे गये हैं जो श्राविकाश्रम बम्बईके स्थायी फंडमें शामिल होगा। आप दो बहिनें और भी १०००) भराकर आश्रमका स्थायी फंड ठीक२ एक लाख रु०का करना चाहती है। व सूरतमें खोले हुए स्मारक फंडका उपयोग मगनबाईके नामका कोई धार्मिक कार्य करनेमें होगा। इस फंडमें कमसेकम पांच२ रुपये तो हरएक पाठकको सूरत अवश्य२ भिजवाना चाहिये।

लापता–महाडा (इन्दौर) से तुलसी नामकी ६ वर्षकी जैन लड़की कहीं लापता होगई है।

इटारसी–में पं० सुन्दरलाल जैन वैद्यकी चिकित्साप्रणालीसे खुश होकर रा० सा० नंदकिशोरजीने आपको साइकिल भेंट की है।

सोनागिरि–तीर्थको सोनासण वाले संघने २०१) दिये थे। संघपति सेठ जीवाभाई लगरचन्द गांधीने सब १०० यात्रियोंको प्रत्येकको ९१) यात्रार्थ प्रदान किये हैं।

सोजीत्रा–श्राविकाश्रमको श्री० मैनाबहिनके प्रयत्नसे १७) राणापुर, १२) दाहोद, ९) झाबुआ, १०॥) रतलाम, १४) बड़नगर, १९॥) मऊ, २८) बड़वाणी, ९८) इन्दौर, व १६२) फुटकर मिलकर २७०।≡) सहायता चैत्र सुदी ९ तक प्राप्त हुई थी।

करहल व कंपिलाजी–का मेला धूमधामसे होगया।

कुडची अत्याचार–के विषयमें सरकारने जो रिपोर्ट निकाली है उसमें वहां पबलिक जैन मंदिर न होनेकी बात लिखी है वह बिलकुल गलत है। हम हमारी आंखोंसे वहां अलग जैन मंदिर देख आये हैं। दुःख है कि अभी तक इस अत्याचारका न्याय नहीं होता। जांच कमीशनकी रिपोर्ट शीघ्र ही प्रकट होगी।

जगमोहनदास हीरालाल शाह–बंबई।

जारखी–विद्यालयकी परीक्षा ३१ मईको होगी। व विद्यालय १६ जूनको खुलेगा। इसके लिये चौथी कक्षा पास ८ विद्यार्थियोंकी आवश्यकता है।

भावनगर–में गिरनारजीकी यात्रासे लौटते हुए ऐलक चंद्रसागरजी, ब्र० ज्ञानसागरजीने पधारकर संतोकबहिन पाठशालामें अच्छा उपदेश दिया। पाठशालाके कार्यसे भी आप अतीव संतुष्ट हुए। सुलोचनाबहिन अच्छी तरहसे पढ़ाते हैं।

एटा–में ता० ११ अप्रैल तक श्री १०८ आचार्य श्री शांतिसागरजीका संघ पहुंचा होगा।

मुनिश्री सूर्यसागरजी–का संघ कुंडलपुर पहुंच चुका है। यहां एक माहतक ठहरेंगे तथा वैशाख सुदी १को यहां विमानोत्सव भी होगा। दमोह स्टेशनसे कुंडलपुर जाया जाता है।

मुनिश्री चन्द्रसागरजी–के वियोगमें सागर पाठशालामें शोक सभा होगई। विद्यार्थी दयाचंद्रने स्वरचित शोक कविता पढ़ी थी।

सिलोंडी–के तारनपंथी मंदिरमें दूसरी प्रतिमा स्थापित हुई।

कोठिया–(मेवाड़) में वैशाख सुदी १ से ६ तक वेदी प्रतिष्ठा होगी।

પૂજ્ય મગનબહેનને–નિવાપાંજલી !

લખતાં લેખિની સળકી પડે છે, શરીર સ્થિર રહી શકતું નથી, મન કલ્પાંત કરે છે, નયન આંસુ સારે છે ને હૃદય ફાટી જાય છે કે–જૈન ધર્મ રત્ન–જૈનકુલ ભૂષણ ભારત મહિલા ઉદ્ધારક–આદર્શ સ્ત્રીરત્ન–વિદુષી મગનબહેન જે૦ પી૦ ના અકાળે અવસાનની નોંધ લખવી પડે છે.

અત્યારે હું હિંદથી ઘણે દૂર છું, પણ જ્યારે હિંદમાં હતો, ત્યારે બારેક વર્ષ ઉપર પૂજ્ય મગનબહેનને જાતે જોયાં હશે, ત્યારે પણ મેં તેમના મુખારવિંદપર સમાજોદ્ધાર, અબળાઉદ્ધાર, ધર્મોદ્ધારની જે લાગણી જોએલી છે, તેમના મુખથી જે બે શબ્દો સાંભળેલા છે, તે ખરેખર મારી કલ્પના બહારની હતી. તેનું વર્ણન કરવાને મારી લેખિની સામર્થ્યવાન નહોતી.

જૈન સમાજનું નસીબ ફુટેલું હશે કે પછી શ્રાવિકાશ્રમની શિષ્યાઓને પૂજ્ય મગનબહેનના સંસર્ગથી દૂર રહેવાનું નિર્માયું હશે, તેથી મગનબહેનની તબીયત બગડી, તે તેમને સોલાપુર રહેવું પડયું. તે દુષ્ટ કાળે. તેમને ત્યાંજ ઝડપી લીધાં. મરણ દરેકને આવવાનુંજ છે, પણ આવા સમાજોદ્ધારક રત્નોનું મરણ જરૂર દરેકને દુખકર્તાજ નિવડે છે. કહ્યું છે કે—

લાખ મરજો, પણ લાખોનો પાળનાર ન મરશો !

એ કહેવત સત્ય છે, ને તે આજે આપણને મગનબહેનની ગેરહાજરીમાં જણાશે. ભારત જૈન મહિલા પરીષદે, શ્રાવીકાશ્રમ અને સમગ્ર જૈન સમાજને મગનબહેનની ખોટ અચુક લાગશે.

શ્રી ન્યાયી પરમાત્મા પાસે આપણે એજ ઇચ્છીએ કે તેમની જગ્યાએ તેવાંજ વિદુષી બહેન આપણને પ્રાપ્ત થાઓ. અને સમાજને લાભકર્તા નિવડો.

માણેક જેવા વૈભવશાળી પિતાની પુત્રી હોવા છતાં જે બહેને સાદાઇ અને સચ્ચારિત્રનો અમુલ્ય પોષાક ધારણ કરી આખા સ્ત્રી સમાજપર નહિ, પણ આખા માનવ સમાજપર જે ઉચ્ચ સંસ્કારોની ઉંડી છાપ પાડી છે, તે જે માણસ હશે, તે તો ભૂલી નહિ જાય.

ગુજરાતની અજ્ઞાન દિ૦ જૈન સ્ત્રી સમાજને સુવ્યવસ્થિત અને ધર્મને રસ્તે દોરવાનું માન કોઇપણ પાત્રને હોય તો તે સ્વર્ગીય મગનબહેનનેજ છે.

કારણ કે જગત માત્રમાં સંસારને સુધારનાર કે બગાડનાર સ્ત્રીજ છે. ને તે સ્ત્રીઓ રૂપી સંસાર સારથીઓને મગન બહેનેજ ઉપદેશથી સુધારેલાં હોઇ ઉચ્ચ ચારિત્રની પણ તેમણેજ છાપ પાડી છે.

કોઇપણ દેશની ઉન્નતિનો આધાર સ્ત્રી શિક્ષા૦ પર રહેલો છે. ને તેથીજ પ્રખ્યાત સમ્રાટ નેપોલીયનને કહેવું પડયું છે કે—

કહે નેપોલીયન દેશને કરવા આબાદાન.
સરસ રીત તો એજ છે, દ્યો માતાને જ્ઞાન.

એ નેપોલીયનનું વકય પૂજ્ય મગનબહેને યથાર્થ કરી બતાવ્યું છે. મગનબહેને ગુજરાતમાં જૈન શ્રાવીકાશ્રમ ખોલી, જૈન સમાજપર અનહદ ઉપકાર કરેલા છે. તેમનાં કાર્યોની નકલ બીજે ઘણે સ્થળે થએલી હોઇ તેમણે સમગ્ર ભારતવર્ષમાં સ્ત્રી શિક્ષાની નીંવ નાંખેલી છે, એમ કહીશું. તો તે અતિશયોક્તિ ગણાશે નહિ.

નિતાને મળેલો માનવંતો ઇલકાબ પણ સુશીલ સ્વર્ગીય બહેન મેળવવા ભાગ્યશાળી થયાં હતાં. અર્થાત તેમના પરોપકારનાં કાર્યોથી અને સત્ય પરાયણતાથી આકર્ષાઇ મુંબઇની સરકારે તેમને જે૦ પી૦ નો માનવંતો ઇલ્કાબ આપ્યો હતો.

જૈનો માટે એ ઓછા હર્ષની વાત નહોતી. કે જ્યારે બીજા સમાજોમાં પણ જે૦ પી૦ થએલા પુરૂષો મળવા માંડયા હતા, ત્યારે જૈન સમાજમાંથી મગનબહેન જેવાં વિદુષી બહેન જે૦ પી૦ થયાં હતાં.

ભારત જૈન મહિલા પરિષદ સ્થાપવામાં મગનબ્હેનેજ આગેવાની ભર્યો ભાગ લઇ ઘણી મહેનત લીધી હતી. જો કે તે સંસ્થા આપણા ગુજરાત પ્રાંતમાં ઓછી જાણીતી છે, પણ તેણે ઉત્તર હિંદુસ્તાનમાં ઘણીજ પ્રગતિ કરેલી છે.

મગનબ્હેન ગુજરાતમાં જેટલા જાણીતા છે. તેથી પચાસ ઘણાં હિંદુસ્તાનના બીજા ભાગોમાં જાણીતાં છે.

મગનબ્હેન ધર્માત્મા હોવા સાથે વ્યવહારકુશળ પણ હતાં. તેમના સહવાસમાં રહી જે બહેનોએ અભ્યાસ કર્યો છે-ધર્મ લાભ લીધાં છે, તે તેમના વાકચાતુર્યનાં વખાણ કર્યા સિવાય રહેતાં નથી.

મગનબ્હેન ચારિત્રની મૂર્તિ હોઇ. તેમના ઉંચા ચારિત્રની છાપ તેમની શિષ્યાઓ ઉપર એટલી પડતી કે તેમના શિષ્યવર્ગમાંથી ભાગ્યેજ કોઇ અયોગ્ય વર્તનવાળી હશે.

જગતમાં જૈન સમાજને શોભા આપનાર મહિલા માત્રમાં માનવંતા હિંદુસ્તાનમાં શ્રાવીકા શિક્ષણની પહેલ કરનાર મુંબઇ શ્રાવીકાશ્રમ અને ભારત. જૈન મહિલા પરિષદને તન, મન, ધન, અર્પણ કરનાર જૈન મહિલારત્ન વિદુષી મગનબ્હેના અમર આત્માને પ્રભુ શાંતિ આપે એજ ઇચ્છા છે!

હિંદુસ્તાનના જૈન માત્રની ફરજ છે કે મર્હુમના નામની યાદગીરીમાં તેમના નામનું એક સ્મારક ફંડ ખોલવામાં આવ્યું છે તેમાં યથાશક્તિ મદદ કરવી એ આપણી ફરજ છે ને તે ફરજમાંથી ગુજરાત નહીં ચુકશે એમ આશા રાખું છું. ને હું પણ ૫૧) ની તુચ્છ ભેટ અર્પું છું

પ્રભુ મર્હુમના આત્માને શાંતિ આપે એજ ઇચ્છા. લખનાર હું છું દુઃખિત—

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાણીસાકર
કમ્પાલા-(યુગાન્ડા, આફ્રિકા).

—⋙⋘—

जैन महिलारत्न मगनव्हेननो वियोग ।

હરિગીતછંદ.

ઝંડો જરીનો જૈનનો, ઝળકાવતાં જે બ્હેન તે,
થઇ ગ્રાસ યમના મુખમાં, સિધાવીયાં સ્વર્ગીય તે.
જૈનો તણા જગ મંડળે, જે બ્હેન નાવિકસમ હતાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પત્તો નહિ આ લોકમાં.—૧

જે. પી. તણા છલ્લાપથી, માણેક તો શોભિત હતાં,
જૈનો બધાં જેના થકી, જૈનત્વને પામ્યા હતા.
તેની તનય મગન હતી, સત્પાત્ર રૂપે નારમાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પત્તો નહિ આ લોકમાં.—૨

નાની વયે વૈધવ્યથી, જે બ્હેન વિદુષી થયાં,
પાળી અખંડ બ્રહ્મચર્યને, જેણે સુશીલને સાચવ્યાં.
દિગમ્બરો શ્વેતામ્બરોને, બોધ જેણે આપીયો,
રે હાય, આજે તેમનો, પત્તો નહિ આ લોકમાં.—૩

તન-મન અને ધન વાપરી, શ્રાવક સ્ત્રીઓને કારણે,
આશ્રમની નીંવ નાંખીને, આવ્યાં જે ઘરથી બારણે.
શ્રાવક સ્ત્રીઓના ધામમાં જે, આદ્ય સંસ્થાપક હતાં,
રે હાય, આજે તેમનો પત્તો નહિ આ લોકમાં—૪

જે. પી. બની જૈનો મહી, જશ જૈનનો જળકાવીઓ,
જેની કૃતિથી કૃત્ય થઇ, સૌએ સદા વખાણીયાં.
ભારત તણી મહિલા મહી જે, રત્ન અમુલખ હતાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પત્તો નહિ આ લોકમાં.—૫

વૃત્તિ સદા જે બ્હેનની, સુધારવાની નારને,
શ્રાવક છતાં સૌ સાથ રહી સેવા કરે સત્કારણે.
સૌ નારના શિરોમણી સમ, શ્રાવિકા મગન હતાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પત્તો નહિ આ લોકમાં.—૬

જૈનો જરા પણ લાગણી જો, બ્હેનના માટે હશે,
સ્મારક કરોને તેમનું, તમ નામ રૂડું દીપશે.
જેના પ્રતાપે હિંદ મધ્યે ઉન્નતિ છે નારમાં,
રે હાય, મોહન તેમનો, પત્તો નહિ આ લોકમાં.—૭

મોહનલાલ મથુરાદાસ-કંપાલા (આફ્રીકા.)

લગ્નમાં મેવાડા ભાઇયોનું કર્તવ્ય.

(લે૦-રતીલાલ કેશવલાલ શાહ-ધારવાડ)

સુજ્ઞ જ્ઞાતિ બંધુઓ !

આવતા વૈશાખ માસમાં આપણા બંધુઓ લગ્નો કરવા માટે સોજીત્રા ગામે ભેગા મળનાર છે. આપણામાં કોઇપણ કુટુંબ એવું નહિ હોય કે જે વૈશાખ માસમાં સોજીત્રા ગયા સિવાય રહે એટલે કે આપણી બધી જ્ઞાતિ ભેગી મળશે. આપણે બધાએ ભેગા મળીને આપસ આપસના ઝગડાઓ તથા ખોટી મોજમઝામાં વખત ન ગાળતાં આપણી જ્ઞાતિની ઉન્નતિ કરવાનાં પગલાં લેવાં જોઇએ. આપણે ભેગા મળીને જે કરવા લાયક છે તે નીચે જણાવવાની રજા લઉં છું:—

હવે તો શારદાબીલ અમલમાં મુકાશે એટલે દરેક વર્ષની માફક બાળલગ્નો તો આ વખતે નહિ થાય એમ ધારૂં છું. દરેક વખતે તો બાળકોની ઉમ્મરનો વિચાર કર્યા વગર, તેમને સંસારમાં શું શું કર્તવ્ય કરવાના છે તેનું ભાન થયા વગર તેમનું ભરણ-પોષણ કરી શકે, એવી યોગ્યતા પ્રાપ્ત થયા વગર, વિદ્યાભ્યાસ પુરો થયા વગર, ઘણુંખરૂં ઢીંગલા-ઢીંગલીની માફક પરણાવી દેવામાં આવતાં હતાં, અને તેમ થવાથી તેમને આખી જીંદગી દુઃખમાં ગાળવી પડતી. પરંતુ હવે તેવી બધી Fears નુ ચિંતવન કરવું યોગ્ય ન કહેવાય. આશા છે કે બંધુઓ બધા ભેગા મળીને શારદાબીલના પ્રમાણેજ વર્તન કરવાનું યોગ્ય ધારશે.

વળી બાળકોના વિવાહ (સગપણ) અલ્પ વયમાંથીજ-બાળક બે કે ત્રણ વર્ષનું હોય ત્યારથીજ કરી દેવામાં આવે છે. તેવી રીતે વિવાહ કરવાથી બાળકોની ઉમ્મરનો વધાવત રહી શકતો નથી. વળી બાળકની પસંદગી પણ બાળપણથી કરેલી હોય તેમાં પણ મોટપણે ફેર પડી જાય છે. માટે બાળકોનો વિવાહ તો મોટી ઉમ્મરનાં સમજવા લાયક થાય ત્યારેજ કરવો જોઇએ. નાનપણમાં વિવાહ કરેલામાંના પતિ પત્નિ વચ્ચેના બરાબર સંબંધ ન હોવાના ઘણા દાખલા મળી આવે છે. આ માટે ઠપકાને પાત્ર તો તેમનાં મા બાપજ છે. માટે માબાપો કાંઇ સમજે તો સારૂં!

આપણામાં જે લગ્નો કરાવવામાં આવે છે તે બરોબર-વીધી અનુસાર કરાવવામાં આવતાં નથી. ગોર મહારાજને એક રાતમાં દસ પંદર લગ્નો માટે આમંત્રણ હોય એટલે બિચારા બે ચાર જેવા તેવા અશુદ્ધ શ્લોકોના ઉદ્‌ગાર કાઢી, હસ્તમેળાપ કરાવી, ફેરા-ફેરવાવી પોતાનું દાપું ખરૂં કરે છે. બીચારાં પતિ-પત્નિની શું શું ફરજો (Duties) આ સંસારમાં પ્રવેશ કરીને તેમને બજાવવાની હોય છે તેનું પણ જ્ઞાન આપવામાં આવતું નથી. આપણા જૈન શાસ્ત્રોમાં લગ્નની વિધિ જણાવેલ છે જે અત્યારે દરેક બન્ધુના જાણવામાં હશેજ. તો પછી બ્રાહ્મણોની પ્રચલિત કુવિધિથી શામાટે આપણે લગ્ન કરાવવાં જોઇએ? દરેક ત્રીજે વર્ષે આપણો લગ્નગાળો ભરાય છે, જેમાં પચાસ સાઠ લગ્નો થતાં હશે, પરંતુ ખેદની વાત છે કે બે ચાર લગ્નો જૈનવિધિ અનુસાર થતાં હશે, એ આપણી કેટલી અજ્ઞાનાવસ્થા સુચવે છે? તો દરેક જ્ઞાતિ-બંધુની ફરજ છે કે પોતાનાં બાળક-બાલિકાઓનાં લગ્નો જૈનવિધિથીજ કરાવવાં જોઇએ.

આપણી જ્ઞાતિમાં મરણ પાછળ રડવા-કુટવાનો, પ્રેત-ભોજનો, શ્રીમંતોના મોટા વરાઓ, વિગેરે ઘણા ઘણા દુષ્ટ રિવાજો જડમૂળ ઘાલી બેઠેલ છે તે દૂર કરવા માટે મેવાડા ભાઇઓની હજી આંખ ખુલતી નથી. થોડા વખત ઉપર આણંદ મુકામે આપણે બધાએ ભેગા મળીને જુના રિવાજોમાં કેટલાક સુધારાઓ દાખલ કરવા માટેના ઠરાવો પસાર કર્યા હતા, પરંતુ દિલગીરીની વાત એ છે કે તે ઠરાવો તો કાગળોમાંજ રહી ગયા, અને તે વખતે આગળ બેસનારા બધા ભાઇઓ તેનાથી કાંઇ લાભ થાય તેમ નથી તેવું ધારીને તેનું ઉલંઘન કરવા લાગ્યા. આ બધી આપણી નિર્બળતા નહિ તો બીજું શું સુચવે છે?

તો તે ઠરાવો અમલમાં મુકવાનો બધાએ પ્રયત્ન કરવો જોઇએ.

વળી આપણી જ્ઞાતિમાં સંગઠન કે બીજું કોઇ જ્ઞાતિનું મંડળ નથી. હાલમાં આખા ગુજરાતમાં બીજી કોમોમાં દરેકમાં પોતપોતાની વિદ્યાભ્યાસમાં મદદ કરવામાં જુના રિવાજોને દૂર કરી દેવામાં યોગ્ય સુધારો કરવા વિગેરેમાં ભાગ લે છે. પરંતુ આપણા કમનસીબે આપણામાં તેવું કાંઇ છેજ નહિ. વિદ્યાભ્યાસ તરફ તો કોઇની રૂચી છેજ નહિ. Graduates તો જ્ઞાતિમાં ગણ્યાં ગાંઠયા છે, અને થોડું અંગ્રેજી જાણનારા પણ થોડાકજ મળી આવે છે તો ઉપર જણાવેલ બધાં કાર્યો કરવા માટે એક મંડળ સ્થાપવામાં આવે તો જ્ઞાતિની કાંઇ ઉન્નતિ થઇ શકે! આશા છે કે કોઇ ભાઇ બહાર પડશે, અને જરૂરથી કોઇ મંડળની સ્થાપના કરશે.

સ્ત્રી કેળવણીનો પ્રચાર પણ આપણામાં બીલકુલ છેજ નહિ તેમ કહીએ તો કાંઇ વાંધો નથી. કોઇ કોઇ બાળિકાઓ બેચાર ગુજરાતી ચોપડીઓ ભણેલી નીકળી આવે છે તે કાંઇ કેલવણી કહેવાય નહીં. તેઓને ધર્મ શું તેનું ભાનજ હોતું નથી. અભ્યાસ કર્યા વગર ધાર્મિક પુસ્તકો પણ કેમ વાંચી શકાય? અને તેથી તેમની આખી જીંદગી આપોઆપમાં લડવામાં, નિંદા-કુથલી કરવામાં વિગેરેમાં પસાર થાય છે. થોડાં વર્ષથી સોજીત્રામાં શ્રાવિકાશ્રમ સ્થાપવામાં આવેલ છે, પરંતુ તેનો હજુ બરોબર લાભ લેવાતો નથી. તેના મારફત સ્વર્ગસ્થ મહિલારત્ન મગનબ્હેન જેવી મહિલાઓ પેદા થવી જોઇએ. ત્યારેજ તેનું સાર્થક ગણાય. આશા છે કે જ્ઞાતિ-બંધુઓ પોતાની બાલિકાઓને આશ્રમમાં મોકલી ધાર્મિક શિક્ષણ અપાવી તેમનું કાંઇ કલ્યાણ કરશે.

અંતમાં જીનેન્દ્ર પ્રભુ પ્રત્યે પ્રાર્થના છે કે સર્વે જ્ઞાતિ-બંધુઓને ઉપર જણાવેલ વિચારો અમલમાં મુકવાની સદ્‌બુદ્ધિ આપો જેથી જ્ઞાતિનું અને આખરે દિગંબર જૈન સમાજનું કલ્યાણ થઇ શકે! અસ્તુ! કિં બહુના?

ऐक्यताने पंथे ।

(લે૦-રા૦ દેસાઇ)

જૈન સમાજમાં આ ટાઇમે ઐક્યતાની જરૂરીઆત સંબંધી બે મત હોઇ શકેજ નહિ. કારણ ઐક્યતા એ એક એવું મજબુત બળ છે કે તેના સામે દુનિયાનું કોઇપણ બળ ટકી શકતું નથી. એ ઉપરાંત ઐક્યતાના બીજાં અનેક ફાયદાઓ છે. અને જો જૈન સમાજે આ પ્રગતિના જમાનામાં પોતાનું પુર્વવત્ સ્થાન પાછું પ્રાપ્ત કરવું હોય તો સમગ્ર જૈન પ્રજાએ એક થયેજ છુટકો છે. આ સિવાય જૈન પ્રજા પોતાની પુર્વવત્ સ્થિતિ પ્રાપ્ત કરી શકશે નહિ.

અનૈક્યતાથી થયેલાં નુકશાનો.

પ્રિય વાંચકો, હું જે કહેવા માગું છું તે સમગ્ર જૈન પ્રજાને ઉદ્દેશીનેજ કહેવા માગું છું. કારણ ઐક્યતા ન સાચવવાથી જૈન પ્રજાની જેવી અધોગતી થઇ છે, તેવી બીજી કોઇ પ્રજાની ભાગ્યેજ થઇ હશે. જૈનોએ પોતાના કુસંપથીજ રાજ્યકાર્યોનું પોતાનું મહત્વશાળી બીરૂદ ગુમાવ્યું છે. તેમજ આર્થીક નિર્માલ્યતા, તથા ધાર્મીક તત્વ સંશોધકપણું વીસરાતું જાય છે. જે જૈન ફીલોસોફી જગતમાં સર્વ શ્રેષ્ઠ ફીલસોફી ગણાતી, તે હાલ ફક્ત શાસ્ત્રોમાં અને તે ઉપર જીવનારા કેટલાક પંડીતોમાંજ આવી રહી હોય તેમ જણાય છે. તેની કીંમત અત્યારે નથી જૈનોને કે નથી જૈનેતરોને.

જૈનોમાં પડેલા પેટા વીભાગો એજ કુસંપનાં જાગતાં જીવતાં ઉદાહરણો છે કારણ દીગંબર શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી તેમાં પણ વળી દસા-વીસા, નરસિંહપુરા, મેવાડા, હુમડ, ઇત્યાદી વીભાગ જે આપણી સંકુચીત મનોદશાનો તાદ્દશ્ય નમુનો છે. આપણે એકવીરના તત્વોને માનનાર એક બીજાને ભીન્ન ભીન્ન દ્રષ્ટિથી પેખીએ છીએ.

તેટલું બધું અજ્ઞાન આ ભેદો પાડવામાં જે સીદ્ધાંતો આગળ મુકાયા છે, તે ખરા સીદ્ધાન્તો નથી. વીર પ્રભુના વચનોમાં મતભેદ હોઇ શકેજ નહીં, પરંતુ આ ભેદો પડાવનારની મહત્વાકાંક્ષાઓના ભોગ માત્ર થઇ પડેલા મુદ્દાઓને હાલમાં સીદ્ધાંતીક મતભેદનું રૂપ અપાય છે. કારણ હાલમાં જેમ દીક્ષા પ્રકરણને અંગે બે પક્ષો પડયા છે. જેવા કે બાલ દીક્ષા વીરોધી અને બીજો તરફેણ કરનાર, આ ચર્ચાઓમાં દીક્ષા એ મુદ્દ સીદ્ધાંત કે જે બંને પક્ષોને માન્ય છે, તે વસ્તુ વીસરાઇ જઇ રામવીજયવાળો પક્ષ પોતાની ખોટી મહત્તા સાધવા, આ તો ભાગવતી દીક્ષાનો વીરોધી છે એમ કહી ઉતારી પાડવા પ્રયત્ન કરે છે. અને અંતે જેમ ભુતકાળમાં બન્યું છે તેમ કદાચ આ બંને પક્ષો પેટા તડનું રૂપ ધારણ કરશે. અને ભુતકાળમાં બનેલા આપણા ગચ્છાદિ ભેદો તથા પેટા વિભાગોનો આબેહુબ ચિતાર છે. અભ્યાસ કરવા પછી કયો સુજ્ઞ મનુષ્ય પોતાને અમુક પંક્તિભેદનો ગણી અભિમાન ધરે? નહીંજ તો પછી આવા બીન કારણીય એક આગેવાનની અંતરંગ મહેચ્છાઓને અંગે આપણી જૈનસમાજના છુટા પડી ગયેલા ભાગોને શામાટે ફરી ઐક્ય અર્પી જૈન સમાજને એક અને અખંડિત ન બનાવવો? અને હું આપણા આગેવાનોને વિનવું છું કે આપણી સમાજમાં પડેલા આ ભાગલાઓને સાંધવા તેઓએ કટીબદ્ધ થવું આવશ્યક છે.

હવે આપણે વીચારીએ કે સામાન્ય પણ મતભેદોને અંગે પડેલા વાડાઓને સાંધવા લાંબા આંદોલનની જરૂરીયાત છે, છતાં આપણે તો પ્રયત્ન કરેજ છુટકો કારણ પુરુષાર્થ સિવાય સીદ્ધિ નથી. તે ન્યાયે આપણે પુરુષાર્થ તો કરવો જોઇએ અને તેમ કરીશું તો આજ નહિ તો કાલ અગર વર્ષે બે વરસે તેનું શુભ પરિણામ જરૂરથી અવતર્ણીત થવાનુંજ અને કદાચ હાલ તરત માટે આપણે આ વીષય ના ચર્ચીએ છતાં હું આપણી દીગંબર જૈન સમાજમાં બીન કારણીય પડેલા પેટા વીભાગો એકત્રીત કરવા તો કમર કસીને બહાર આવવુંજ જોઇએ કારણ આપણી સમાજમાં અને તેમાં એ ખાસ કરી ગુજરાતમાં આપણા પેટા વીભાગો માત્ર ચારજ છેઃ—

મેવાડા, હુંમડ; નરસિંહપુરા ને રાંકવાળ.

મેવાડા જ્ઞાતિમાં દુઃખદાયક વાત તો એ છે કે, તેમની જ્ઞાતિમાં પણ તડ અગર જેને એકડા એ નામથી ઓળખીએ છીએ તેવાં છે. જેવાંકે અંકલેશ્વરીયા ઇત્યાદિ. હું મારા એ ભાઇઓને પૂછું છું કે, તમારા એ તડોમાં સિદ્ધાન્તિક મતભેદ શું છે? જવાબ હું માનું છું કે નથી. એજ આવશે. તો પછી તમારી મરજી, જ્ઞાતિના બાળકોને તમે જુદાં છો, એમ કહી આપણી જ્ઞાતિની છીન્નભિન્ન દશા કરવાની શું જરૂર? હું માનું છું ત્યાં સુધી તેનાં કારણો પણ મૌલિકજ હશે. એટલે કે તેઓ કન્યા અમારી તરફ નહોતા ઉતારવા અગરતો એવું બીજું કંઇક.

હવે ભાઇઓ, વિચાર કરો કે વસ્તુસ્થિતિ શું છે! આપણે આપણાજ પગ ઉપર કુહાડો નથી મારવા વારુ. અને તેમાં પણ કદાચ હું માનું છું કે (જોકે ચોક્કસ ખબર નથી છતાં) દશા મેવાડા વીસા મેવાડા વીગેરે ભેદો હશે. હું એ જ્ઞાતિના આગેવાનોને વિનંતી કરું છું કે આવા પેટા વિભાગોને ભેગા કરી આખી મેવાડા જ્ઞાતિને [illegible] દીગમ્બર જૈન સમાજની જ્ઞાતિઓ જોડે મેળવી દેવી એ આપણા હીતનો ઉત્તમ ઉપાય છે.

હુંમડ—જ્ઞાતિમાં પણ દશા, વીસા, કોઠવાળા, દેરવાળા વીગેરે ભેદો છે. અને તેમાં પણ ઓછું હોય તેમ કોઇ વિભાગમાં પણ ઓરાણ પ્રાતિજના ભેદોને સ્થાન મળ્યું હતું પરંતુ સદભાગ્યે એમના આગેવાનોએ દુરંદેશીપણું બતાવી તેને મેળવી દેવામાં આવ્યો છે. પરંતુ આટલું કરીને બેસી નહીં રહેતાં દશા—વીસા વીગેરે ભેદો ભુસી જઇ દીગમ્બર જૈન સમાજના ગૌરવવંતા અંગો રૂપે એક થાઓ.

નૃસિંહપુરા—જ્ઞાતિમાં પણ કુભાગ્યે ભેદો પડી

ગયા છે. જો કે આ જ્ઞાતિએ કેટલાંક વર્ષો થયાં સંગપુરા નામની પેટા જ્ઞાતિને પોતામાં ભેલવી દીધેલ છે, છતાં હાલમાં તે જ્ઞાતિમાં કલેશ આદિએ ઘર ઘાલ્યું છે અને મહેર-નરસીપુરમાં તો વળી બે તડો પડી ગયા છે. આવા ભેદો પડવાનું કારણ કંઇ સિદ્ધાંતીક મતભેદો નથી. પરંતુ બન્ને પક્ષના આગેવાનોના ખોટા મમત્વનુંજ પરિણામ છે. આ વસ્તુઓનો નાશ થવો અતિ આવશ્યક છે. કારણ આવા કલેશોથી અને અંગત મહત્વાકાંક્ષાઓથીજ આપણી જ્ઞાતિઓની ખુવારી થાય છે. આ વસ્તુ ધ્યાનમાં લઇને બન્ને પક્ષના આગેવાનોએ એક થઇ જવાની જરૂર છે. કારણ આવા ઝગડાઓથી જ્ઞાતિમા કોઇપણ જાતના સુધારા થઇ શકતા નથી. અને કલેશને પરિણામે તો જ્ઞાતીમાં અર્થહાનિ, ધાર્મીક પતનતા તથા કુરીવાજો દુર ન કરી શકાય તેવી રીતે જડ ઘાલી બેસે છે. આ સ્થિતીમાંથી ઉંચ સ્થીતીપર લઇ જવા માટે તેના આગેવાનોએ એક થઇ જવાની જરૂર છે અને કદાચ, જો આવા વીચારો ધરાવતા આગેવાનો તેમ કરવા તૈયાર ન હોય તો આજના આશાભર્યા યુવાન વર્ગે એક થઇ તેમની એ સંકુચીત મનોદશા તોડી નાખી જ્ઞાતીને એક કરવી આવશ્યક છે, યુવાનો એજ એમની જ્ઞાતીના આગામી ધ્વજધારીઓ છે. ભવીષ્યના ભાવી આગેવાનો છે, તો તેમણે જ્યાં જ્યાં જુલ્મ અને અન્યાય લાગે ત્યાંજ પોતે આગેવાની લઇ તેનો નાશ કરવા તત્પર થવું જોઇએ. શું મહેર નરસીપુરના કેળવાયલા યુવાનો પાસેથી સમાજ આ પક્ષભેદ મીટાવી દે એમ ના ઇચ્છે? જરૂર, યુવાનોએ વડીલાઇના ઓઠા નીચે ન દબાઇ જાવા. મીથ્યા ભેદોને દુર કરવા કમર કસવી જોઇએ અને આથી આગળ વધી આપણી ચારે સમાજોએ એક થઇ અને બધા પેટા વીભાગો તોડી નાખી એક અને અખંડીત દીગમ્બર જૈન સમાજ રચવો જોઇએ. અને આ વસ્તુ તો સમાજના યુવાનો તથા અનુભવી અને જમાનાને ઓળખનાર સુજ્ઞ આગેવાનો ધ્યાનમાં લે તો જરૂરથી આ વસ્તુ સીદ્ધ કરી શકાશે એમ મારૂં ખાત્રી ભર્યું માનવું છે.

સમાજને એક કરવા તાત્કાલીક પગલાં શું ભરવાં જોઇએ તેનો આપણે વીચાર કરીયે જ્ઞાતીના જો આગેવાનો એકઠા થઇ જ્ઞાતીનાં તડો સહજમાં એક કરી શકે, કારણ તેમાં ફક્ત મમતજ રહેલો હોય છે. તો આ જમાનામાં આવો ગેરણપક્ષ સમાજનું અહિત કરતો હોય છતાં આવો ખોટો મમત તો કોઇપણ બુદ્ધીવાન મનુષ્ય ન રાખે. જો તડના બંને આગેવાનો મમત છોડી દે તો એકય થતાં જરા પણ વીલંબ નહીં થાય. આ પ્રમાણે સમગ્ર જ્ઞાતી એક થયા પછી બીજી જ્ઞાતીઓ સાથે સંબંધ કેમ જોડવો તે વીદીત કરી શકાય. કારણ અહીંઆ પણ ધાર્મીક તત્વોનો ભેદ આપણા પેટા જ્ઞાતીઓમાં નથી જેવો કે દીગંબરોમાં અને શ્વેતાંબરોમાં બતાવાય છે. ત્યારે હવે સંબંધ નથી? ક્યાં તો ફક્ત કન્યા આપવા લેવામાં. અને સંબંધની જો છુટ થાય તો જ્ઞાતીઓ પેટા ભેદ ભુલી જઇ એક અખંડીત દી० જૈનસમાજ બને.

હવે આપણે વીચારીએ કે કન્યા નહી આપવાનાં કારણ શાં? ફક્ત જ્ઞાતી ભેદ અને દુરના પ્રદેશોમાં કન્યા આપવી માબાપોને કંઇક વસમું પડતું હોય તેમ લાગે છે. આ બંને બાબતોનો તોડ ઘણીજ સહેલાઇથી થવા ઉપરાંત અને કન્યા આપવા લેવાની છુટ કર્યાથી એકજ સમાજ બનવા ઉપરાંત પણ અનેક ફાયદાઓ છે, જ્ઞાતી ભેદને લીધે કન્યા અપાતી નથી. એવી દલીલના જવાબમાં જણાવવાનું કે તમો (હુમડ, મેવાડા, નરસીંહપુરા, રાંકવાળ) એક બીજા સાથે જમી શકો છો, તમારા દરેક ધાર્મીક ઉત્સવો એક છે તમારાં ધાર્મીક તત્વ એકજ છતાં તમારામાં જ્ઞાતીભેદ રહ્યોજ ક્યાં? તો જવાબ એ આવશે કે કન્યા આપતા નથી માટે તેઓ બીજી જ્ઞાતીના છે. આમ બંને વસ્તુનો જવાબ એકજ આવે છે. એટલે કે કન્યા નથી આપતા માટે જ્ઞાતી ભેદ છે અને બીજું જ્ઞાતીભેદ છે, માટે કન્યા નથી આપતા

હવે આ જવાબ કેટલા સંદીગ્ધ છે. એટલે કે જો કન્યાઓ આપવાની છુટી થાય કે તરતજ આપણા ગ્નાતીભેદો અદ્રશ્ય થઇ જાય. આમ ગ્નાતી ભેદો તોડવાનું એ એક સબળ હથીયાર છે અને આ પ્રમાણે આ હથીયારનો ઉપયોગ કરવાનું કામ જો ગ્નાતીના ખાનદાન ગણાતા આગેવાનો કરે, નહીંકે સામાન્ય જનતાને કહે પણ અમલમાં મુકી બતાવે તો તરતજ આખો સમાજ તેમને અનુસરવા તૈયાર છે. પરંતુ જ્યાં સુધી આગેવાનોને પોતાના ઉચ્ચપણાનું, પોતાની ખાનદાનીનું અભીમાન છે ત્યાં સુધી આ વાત બનવી શક્ય નથી, પણ આ જમાનો ખોટા ખ્યાલો અને અભીમાનનો નથી. એ વસ્તુ વીચારી ગ્નાતી ભેદ ઉંચા મુકી પોતાની કન્યાઓનો જો યોગ્ય પુરૂષ સાથે સંબંધ કરે તો તેનું ફળ દીગમ્બર જૈન સમાજની એકતામાં જરૂર આવવાનું.

આમ કરવાથી સમાજના વાડા નષ્ટ થવા ઉપરાંત બીજા અનેક લાભો થશે. જેવા કે, કન્યા વિક્રય અટકશે, બાળલગ્નો બંધ થશે, વૃદ્ધ વીવાહ, તેમજ બાલ વીધવાઓનું પ્રમાણ ઘટી જશે. અને આને અંગે વીધવા વીવાહનો જે અનુચીત પ્રશ્ન આપણા આંગણે રાહુની માફક આવી રહ્યો છે. તેનો પણ તોડ થઇ જશે. ઉપરાંત કજોડાં નહીં થઇ પડવાથી ભવીષ્યની પ્રજા ઉન્નત વીચારોવાળી અને બળવાન બનશે. આ શબ્દો એ કલ્પનાના તરંગો નથી, પણ નક્કર વસ્તુ સ્થીતી છે. કારણ વાડો વીશાળ થવાથી કન્યા યોગ્ય પુરૂષને જલદી પ્રાપ્ત થઇ શકે. અને તેમ થવાથી કજોડાં અટકે. વળી લાંબી ન્યાત બનવાથી કન્યા મળવાની પુર્ણ સંભાવના છે જેથી કન્યા વિક્રય નહી થાય કારણ પૈસા આપવા કોઇ તૈયાર નહી થાય અને બાળલગ્નો પણ નહી થાય અને જ્યાં બાલ લગ્ન નહી, કન્યા વીક્રય નહી એટલે વૃદ્ધ લગ્નો પણ અટકી જવાનાંજ અને આટલી વસ્તુ એક બીજાને આધારે સિદ્ધ થઇ એટલે દીવા જેટલુંજ સ્પષ્ટ છે કે બાલવિધવાનું પ્રમાણ પણ નહીંજ જેવું રહેવાનું. અને આમ બનવા પામે એટલે વ્યભિચારાદિક દોષો, ગર્ભપાતો વીગેરે પાપો આપોઆપ બંધ થઇ જાય એટલે વિધવાવિવાહનું નામ પણ કોઇ નહીં લે. આમ એક વસ્તુમાંથી અનેક વસ્તુઓ સાધ્ય થઇ શકે છે. અને વળી સમાજને ઉન્નતીના પંથે લઇ જાય, તો પછી શામાટે ગ્નાતી ભેદો છોડી દઇ, અંતર્જાતીય લગ્નો ન યોજાય ! શામાટે નીષ્કારણ આવા લાભો અંતર્જાતીય લગ્નો ના કરી છોડી દેવા ? હું પુચ્છું છું કે આ પ્રશ્નો ઉપર ગુજરાતના આપણા વીદ્વાન લેખકો જરૂરથી પ્રકાશ નાંખશે, અને તેની જરૂરીયાતો બતાવી તે પ્રમાણે આચારમાં ઉતારવાના પ્રયત્નો કરશે. અને આ ઉપરાંત ભાઇ કાણીસાહબની આંતર્જાતીય લગ્નો કરવામાં દરેક યુવાને મદદ કરવી જોઇએ, બાળલગ્ન અગર કન્યાવીક્રય ના થવા દેવા, તે પ્રતીગ્ના પણ વાસ્તવીક છે. અને દરેક જૈન યુવક મંડળોના ઉદ્દેશોમાં આ ઉદ્દેશ પણ હોવો જોઇએ એવું માનવા છે. તો આશા છે કે આપણા યુવક મંડળો તરફથી આવી જાતની પ્રવૃતી કરવામાં આવે અને તેમની મદદથી જો આવાં કેટલાક લગ્નો શક્ય બને તો ખાત્રી છે કે સમગ્ર સમાજ તે પગલાંને અનુસરશે. આમ જો આગેવાનો અને યુવકો એકત્રીતપણે પોતાનો આ ઉદ્દેશ લક્ષમાં રાખી આવા લગ્નો યોજે તો જૈનોની એકપણાના દીવસ નજદીકના ભવીષ્યમાં જરૂર જણાય.

खडकनी पाठशालाओ.

વીજયનગરથી ખડકની દસ પાઠશાળાઓના મહામંત્રી મોડાસીયા ફતેચંદભાઇ તારાચંદ લખી જણાવે છે કે મારા તાબાની ૧૦ પાઠશાળાની વાર્ષિક પરીક્ષા લેવા માટે ગઇ તા. ૨-૪-૩૦ ના રોજ વીજયનગરના સેકંડ મેજીસ્ટ્રેટ સાહેબ મોતીલાલજીને લઇ હું ગયો હતો. પ્રથમ અમે નવાગામની ડાભોડા કસ્તુરચંદ અમથારામની હેડકુલની પરીક્ષા લીધી. ૪૯×૦ પરીક્ષામાં બેસાડયા તેમાંથી ૪૭×૦ પાસ અને ૨×૦ નાપાસ. તેમ શેઠ સા૦ તરફથી માસ્તરોને તેમ છોકરાને ૩૪-૮-૦ નું ઇનામ વહેંચ્યું તેમ તા. ૩ ના રોજ નવાગામ ગાંધી તલકચંદ મોતીચંદની કન્યાશાળાની પરીક્ષા લીધી. છોકરીઓ ૧૫ પરીક્ષામાં બેસાડી દરેક, પાસ થઇ છે. કન્યાશાળાની છોકરીઓને તેમ પાઠશાળાના છોકરાઓને મળી રૂ. ૩૮-૦-૦ નાં પુસ્તકો ધાર્મિક તેમ. વ્યવહારીકનાં વહેંચવામાં આવ્યાં હતાં. શેઠ લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ તરફથી કન્યાશાળામાં રૂ. ૩)નું ઇનામ વહેંચ્યું ત્યાંથી તા. ૪ ભાણુદા ગયા ત્યાં શેઠ કેવળદાસ રાવજીભાઇ ઇડરવાળાની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૨૮×૦ છોકરા પરીક્ષામાં બેસાડયા ૨૫×૦ પાસ અને ૩+૦ નાપાસ. છોકરાંને રૂ. ૨૨-૮-૦ નાં પુસ્તકો વહેંચ્યાં. શેઠ તરફથી તેમ ગામ ભાઇઓ તરફથી મળી રૂ. ૯-૦-૦ નું કાપડ તેમ રોકડ વહેંચ્યું. ત્યાંથી તા. ૫ છાણી રત્નજાતિ ભૂષણ દાનવીર શેઠ લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ મુંબઇવાળાની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૪૪+૨ છોકરા-છોકરી પરીક્ષામાં બેસાડયા, ૪૧×૨ પાસ અને ૩×૦ નાપાસ. શેઠ સાહેબ તરફથી માસ્તરોને તેમ છોકરાંને રૂ. ૧૨-૮-૦ નું ઇનામ તેમ છોકરાંને રૂ. ૪૬-૦-૦ પુસ્તકો મળી કુલે રૂ. ૬૮-૮-૦ નું ઇનામ વહેંચ્યું. તા. ૭ વીંછીવાડા શ્રીયુત મુની મહારાજજી શ્રી૦ શાંતીસાગરજી છાણીવાળાની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૫૪+૧૨ છોકરા-છોકરી પરીક્ષામાં બેસાડયા તેમાંથી ૪૮+૧૨ પાસ અને ૬+૦ નાપાસ. છોકરાંને ચોપડીઓ રૂ. ૪૫-૦-૦ ની વહેંચ્યા. માસ્તરોને રૂ. ૭-૦-૦ નું ઇનામ મહામંત્રી સાહેબ તરફથી વહેંચ્યું. ત્યાંથી તા૦ ના રોજ દેવળ ગયાં. ત્યાં બાવલવાડાવાળા સંઘવી વીરચંદભાઇ દેવચંદ પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૨૬+૧ પરીક્ષામાં બેસાડયા. ૨૨+૧ પાસ ૪+૦ નાપાસ. છોકરાંને રૂ. ૩૧-૪-૦ ના પુસ્તકો તેમ શેઠ તરફથી છોકરાંને તેમ માસ્તરોને કાપડ રૂ. ૧૫-૦-૦ નું ઇનામ વહેંચ્યું. ત્યાંથી તા. ૧૩ ના રોજ ભુધર ગયા. ત્યાં જવાસવાળા શેઠ ખેમચંદભાઇ લાલજી પુંછડીની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૨૨×૬ પરીક્ષામાં બેસાડયા. ૧૯+૬ પાસ અને ૩×૦ નાપાસ મહામંત્રી ફતેચંદભાઇ તરફથી માસ્તરોને તેમ છોકરાંને ૩૪-૦-૦ નું ઇનામ તેમ ધર્માદા રકમમાંથી રૂ. ૨૭)નાં પુસ્તકો તેમ કાપડ વહેંચ્યું. ત્યાંથી તા૦ ૧૫ બાવલવાડા-માં તાસવાળા શા. તલકચંદ જેઠાભાઇ પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૨૫×૩ પરીક્ષામાં બેસાડયા ૨૧+૩ પાસ ૪+૦ નાપાસ તેમ રૂ. ૫૪-૦-૦ નું ઇનામ છોકરાંને કાપડ તેમ પુસ્તકો વહેંચ્યાં. તેમ શેઠ તરફથી અને ગામ ભાઇઓ તરફથી રૂ. ૧૪-૦-૦ નું માસ્તરોને વહેંચ્યું. હવે આ વરસે પ્રથમ છાણી પછી નવાગામ, વીંછીવાડા, ભૂધર, બાવલવાડા, દેવળ, ભાંણુદા અને કન્યાશાળા આઠમે નંબરે આવી છે. આ ખડક દેશમાં છોકરાંને સુધારનાર તેમ વીદ્યાદાન આપનાર શ્રી તીર્થક્ષેત્ર કમેટી તેમ રત્નજાતીભૂષણ શેઠ લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ ચોકસી છે તો તેઓનો અમે જેટલો આભાર માનીએ તેટલો ઓછો છે.

તા. ૪. મુની શ્રી ૧૦૮ શ્રી શાંતીસાગરજી (છાણી)ના ઉપદેશથી રૂ. ૧૨૦) આવેલા અને રૂ. ૬૦) અડક પંચ તરફથી આવેલા તેમ રૂ. ૧૨૦) બહારગામથી મારા હસ્તક આવેલા કુલ રૂપયા ૩૦૦)ના ધાર્મિક તેમ વ્યવહારીક પુસ્તકો ઇનામમાં આપવામાં આવ્યા હતા.

લી૦ ફતેચંદભાઇ મહામંત્રી.

मिट्टीके गुण व सरल उपाय।

(गतांकसे आगे)

(ले०–पं० जियालाल शिखरचंद्र जैन वैद्य–फर्रुखनगर)

मान लीजिये कि रोग स्वीकारक है और इसी प्रकारके बिजलीके असर होनेसे उत्पन्न हुवा है। इस प्रकारके सब रोगोंमें कठिन पीड़ा होती है, परन्तु जलन नहीं होती। इनको अच्छा करनेके लिये ठंडी दवाका लेप करना चाहिये इसमें स्वीकारक बिजलीके अंश रहते हैं। इसके विरुद्ध कोई औषधि काममें न लानी चाहिये– अथवा मान लीजिये कि रोग अस्वीकारक है और इसी प्रकारकी बिजलीके असरसे उत्पन्न हुवा है इस प्रकारके सब रोगोंमें केवल पीड़ा नहीं होती, किंतु जलन भी होती है। इनके अच्छा करनेमें अस्वीकार शक्तियां काममें लाना योग्य हैं और वह विशेषकर पृथ्वीसे ही सम्बंध रखती हैं।

इस लाभकारी विषयपर अब हम निश्चित और क्रमसहित रीतिपर लिखेंगे जिसमें सरलतासे समझ लिया जाय। यह आप जानते हैं कि रोगकी भांति (किस्म)के अनुसार हम लोग बिजली- गेल्वनिजम (दूसरे प्रकारकी बिजली) चुम्बक शक्ति वा वायुको अत्यन्त ठन्डीसे उष्ण तक जितना सहन होसके काममें लाते हैं। यह भी आप जानते हैं कि जब रोगमें आवश्यकता होती है तो हम जलको ठन्डा अथवा उष्ण जैसी आवश्यकता हो भीतर वा बाहर काममें लाते हैं और यह भी आप नित्य देखते हैं कि नाना प्रकारकी जड़ी बूटियां अलग २ वा मिलाकर उबालकर वा भिगोकर जैसी रोगमें आवश्यकता मानी जाय खिलाई जाती हैं वा बाहर लगाई जाती हैं, जिसमें उपकारी फल निकले। अब हम बिजलीसे लेकर जो सबसे सूक्ष्म पृथ्वी जायक पदार्थ है और सब वनस्पतिके पदार्थों तक उतर आये।

अब प्रश्न यह है कि हम यहीं ठहर जावें और पृथ्वी तक और लाभ उठावें, क्या हम जड़ीबूटियों तक सन्तोष करें जो पृथ्वीमें सबसे प्रथम उत्पन्न हुई सन्तान हैं। और सदा उस (पृथ्वी) की छातीसे लगी रहती हैं व आगे उत्पन्न करनेवाले निकास तक बढ़े जहांसे वह सब निकली हैं और पुष्ट होनेके लिये आहार पाती हैं। पृथ्वीसे अस्वीकारक बिजली है इस कारण उसका बहुत बड़ा प्रभाव उन रोगोंपर होता है जिनमें जलन होती हैं। मिट्टी ठन्डी वा गर्म पुल्टिसकी सूरतमें अकेली वा और औषधिके साथ मिलाकर जैसी आवश्यक्ता हो शरीरके पीड़ित अंगपर लगाई जासकती है अथवा जब आवश्यकता हो तो सब देहपर साधारण रीतिपर वनस्पति उगानेवाली मिट्टी मलको। यदि रोग बहुत दिनोंका हो तो सब देहको मट्टीके गारेमें सान दो। वह ठंडा वा गरम वा चिकनी वा भुर्भई मिट्टीका एकला वा दूसरी वस्तुके साथ मिला हुवा रोगकी किस्मके अनुसार होना योग्य है। केवल इतना जानना आवश्यक है कि मिट्टी किस प्रकारकी है और उसका फल और किसरीति करके एक प्रकारकी बिमारीमें लगाना योग्य है।

यद्यपि मिट्टीद्वारा चिकित्सा करनेका फल प्रत्यक्ष है तो भी यही प्रश्न किया जाता है कि तुम मिट्टीमें अच्छे करनेवाली शक्तिका क्या प्रमाण दिखा सकते हैं ? यथार्थमें इसके सहस्रो प्रमाण हैं। बाइबिलमें इसका एक दृष्टांत मौजूद है—एक अंधा जब ईसूमसीहके पास आया और विश्वास लाकर कहने लगा कि हे स्वामी ! मेरे नेत्र खोल दो तो ईसूने मिट्टीको थूकसे भिगोकर उसकी आंखोंपर रख दिया और आज्ञा दी कि जा सिलोनके तालमें जाकर इनको धो, अन्धा गया और धोनेपर उसके नेत्र खुल गये। बहुतसे ईसाई कहते हैं कि ईसूका यह सब करना व्यर्थ था, उसने अपनी दैवी शक्तिसे आंखे अच्छी कर दीं परन्तु यह विवाद करना व्यर्थ है कि ईसूने छल किया कि दिखानेको तो अन्धेकी आंखोंपर मिट्टी रक्खी और किसी दूसरी शक्तिसे उसे खोल दिया। यथार्थमें उसने मिट्टी और जल ही द्वारा उस अंधेकी आंखे खोलीं। जो उसने प्रकाश रूपसे लगाया और बिना किसी मनुष्यका भय किये हुए उसने शुद्ध भावसे प्रगट किया कि इन्हीं वस्तुओंसे वह दुःखी अच्छा हुआ। यह मिट्टी और जलकी मिली शक्ति और उसके पूर्ण विश्वास और भरोसेसे हुआ जो ईसूने भलीभांति उसके चित्तपर बैठा दिया था।

ईसूके इस दृष्टांतको छोड़कर मैं संक्षेप रूपसे वर्णन करूँगा कि नाना प्रकारकी मिट्टियोंमें मनुष्यके शरीरसे विष और जलन खींचनेकी पूर्ण शक्ति रहती है और वह इतनी अधिक कि कोई और गानी हुई औषधि वा वस्तु इस गुणमें उसके बराबर नहीं है। तनिकसा असर बड़ी शक्ति प्रगट कर सकता है और बड़े भारी उपकारी फल निकालता है। बड़ी अथाह नदियोंकी धाराकी दशाको एक फूसका तिनका बता देता है।

इसका दृष्टांत लीजिए—जब मधु मक्खी वा दूसरा जहरीला कीड़ा डंक मारदे जिससे पीड़ा सूजन और जलन पैदा हो, जिस समय वह काटे तुरंत ऐसी मिट्टी उठाकर जिसमें वनस्पति उग सकती हो थूक वा गुनगुने पानीसे भिगोकर घाव पर लगादो, उसका फल यह होगा कि तुरन्त विष खिंच आवेगा और पीड़ा बंद हो जावेगी। नीली वा सफेद प्रकारकी मिट्टी गरम पानी वा थूकसे गीली करके लगानेमें अधिक काम होता है, यदि वह तुरत काटते ही मिल जाय।

चिकनी वा सदे प्रकारकी मिट्टियोंकी आकर्षण शक्तिके विषयमें थोड़े सत्य सादे उदाहरण यह है कि एक वस्त्रपर तेल वा चर्बी डाल दो और रहने दो जब कि नीचेकी वस्तु तक भीग जाय, कितने ही साबुन व पानीसे उसे धोवो परन्तु उसकी चिकनाई दूर न होगी, और जब ठीक तैयार की हुई चिकनी मिट्टी उसपर फैला दोगे तो वह उसको खींच लेगी। जब रेशमके कपड़े पर तेल वा चर्बीका दाग लग जावे तो पिसी हुई मंगनेसया उजली मिट्टीको कपड़ेकी उल्टी ओर मलदो और सीधी दूसरी ओर गर्म लोहा रगड़ दो तो सब चिकनाई तुरंत मिट जायगी और रेशम अपने स्वाभाविक रूपका चमकीला और चिकना होजावेगा। फ्रेंच खड़ियाको पीसकर ऊनी कप-

ढोंपर मल देनेसे भी तेलके दाग मिट जाते हैं यह फल निकालना सर्वथा असम्भव होता यदि मिट्टीमें बिजलीकी खेंचनेवाली शक्ति न होती। किसी कपड़ेको किसी ऐसी वस्तुसे भिगोदो जिसकी गंध बड़ी तेज और कड़ी हो और किसी रीतिसे पानीसे धोने और वायु देनेसे दूर नहीं होती हो, उसको किसी ऐसी मिट्टीमें जिसमें वनस्पति उग सकती हो गाड़ दो तो तीन चार दिन उपरांत निकालनेपर उसकी सब गंध दूर होजावेगी।

फिर यह प्रश्न होता है कि इसका क्या कारण है? मैं उसका यह उत्तर देता हूं मनुष्य वा किसी जीवके पेटमें कोई जीव जो जीवित हो निगल लिया गया पच नहीं सकता, जबतक उसमें जीव है। जब मर जायगा तब पेटमें पचकर शरीरके अंशोंमें पहुंचेगा, परन्तु जबतक जीवित रहेगा अपनी शरीरकी शक्तिसे आहार खींचकर प्राण बचाये रहेगा। इसी रीति करके मिट्टी किसी वस्तुको नहीं पचा सकती जबतक कि उस वस्तुमें वनस्पति वा जीवधारी सम्बंधी कुछ जान हो। यह दोनों मिट्टीसे ही अपनी शक्ति आहार खींचते हैं परन्तु जब यह बेजान होकर सूख जाते हैं वा मर जाते हैं, पृथ्वी उसके अङ्गको अपने अंशोंमें मिलाकर आप पुष्ट होती है। बस इसीसे सिद्ध है कि मिट्टीमें जज्ब करनेकी शक्ति है।

मनुष्यके शरीरमें वे सब वस्तुएं जो जीवधारीकी जानकी बाधक हैं मिट्टी चूस लेती है और अपनेमें मिला लेती हैं जिसका फल पूर्ण आरोग्यता है। बस यही कारण है कि मिट्टीद्वारा चिकित्साको उत्तम मानते हैं।

क्या पर्दा सर्वथा-हानिकर है?

(ले०—श्री० पं० दीपचन्दजी वर्णी)

दिगम्बर जैन पौष २४५६में एक लेख पर्दा शीर्षक पं० सिद्धसेन गोयलीयका पढ़ा, उसीसे कुछ विचार उत्पन्न हुआ, वही नीचे लिख रहा हूं—

पर्दासे केवल मुंह ढककर घरोंके भीतर छिपे रहना, किसी सम्बंधीसे नहीं बोलना, आवश्यक्ता पड़नेपर भी अपना या घरवालोंका नाम नहीं बताना चाहे आपत्ति विपत्ति भोगना पड़े, या कि धर्मबंधन भी सर्वस्व खोना पड़े तौभी मौन रखना इत्यादिको ही पर्दा कहा जाता है या यही पर्दाका अर्थ है तब तो मैं भी ऐसे पर्दाको कर्दा समझता हूं और वह निःसंदेह छोड़ देनेके लायक है। जैसा कि मैंने भी बहुत स्थानोंमें देखा है कि बहुएं अपने श्वसुर व जेठसे तो नहीं बोलती परन्तु अपनी सास व जेठानी आदि सबसे नहीं बोलतीं।

घरमें चोर घुस गया, बहूने जागते हुए देख लिया, परन्तु स्वयं प्रतिकार करनेमें असमर्थ होनेसे तो कुछ कर नहीं सकती। पति पास नहीं है, सासुसे पर्दाके कारण बोलती नहीं। तब चोर धन भी हर सक्ता है और धर्मपर भी आघात कर सक्ता है। निकट एक घरमें रहकर भी दोनों असहाय रहती हैं। श्वसुर व जेठ आदि बीमार पड़ा है, परन्तु पर्दाके कारण उनको वह पानी भी नहीं देसकती। रेलपर

सामान सहित पति बैठा ही था कि गाड़ी चलती हुई । अब पत्नीजी नहीं बताती कि वे किसकी पत्नी हैं। वे पति श्वसुर आदिका नाम लेना पाप समझती हैं। तब नाम गाम जाने विना किसको तार किया जाय? तलाश किसे किया जाय? इत्यादि ऐसे अनेकों मामले नित्य प्रति होते ही रहते हैं। फिर भी वही झूठा पर्दाका भूत लगा ही चला जाता है। इन बातोंका सुधार नहीं किया जाता।

एक तो यह बात है, और दूसरे इस पर्दामें और भी बात है, वह यह कि घरके सम्बंधी पिता समान श्वसुर जेठ व पुत्र समान देवर, मातावत सासू बहिनवत ननद व देवरानी जेठानी, इनसे तो न बोलेंगी, परन्तु नौकर कहार माली आदिसे खूब बातें करेंगी, मेले ठेलोंमें धक्के धूमोंमें जाकर बाजारोंमें दुकानदारोंसे सामान खरीदती फिरेंगी, वहां न मुह ढंकेगा न मौन रहेगा यह सब पर्दाका दुरुपयोग करना मात्र है। वास्तवमें इसे पर्दा कहना, पर्देकी हंसी उड़ाना है। और इसे जितने जल्दी होवे बदल देना चाहिये।

और भी एक पर्दा ऐसा होरहा है कि धर्म स्थलोंमें न जाना, धार्मिक प्रश्न न पूछना, धर्मशास्त्र न पढ़ना, धर्मोपदेश न देना, धार्मिक पद भजन न बोलना परन्तु देवर नंदोई विवाई (समधी) बहनोई आदिसे कुत्सित हास्य हंसना, उन पर रंग गुलाल अबीर छोड़ना, तथा अपने ऊपर छुड़वाना। इतना ही नहीं लग्नादि अवसरोंमें तो बड़े२ घरोंकी स्त्रियोंपर सन्मुख पक्षके नाई आदि भी रंग गुलाल पतासा फेंकते और बदलेमें स्त्रियां भी उनपर फेंक२कर मुंह ढंक लेती व मुंह फेर लेती हैं। इत्यादि अनेकों अनर्थके कारण कुरीतियां फैल रही हैं। यदि इसे भी पर्दा कहा जाता है, तो इसको कर्दा जानकर तुरत झाड़ डालना चाहिये।

संभव है पंडितजीने ऐसे ही पर्देका निषेध किया होगा। परन्तु भेलके धोखे कथरी न चली जाय, इसी विचारसे कुछ अक्षर लिख रहा हूं। सज्जनो! वास्तवमें ऊपर बताया पर्दा पर्दा ही नहीं है, यह तो मुसलमानी बादशाहतके जुल्मी जमानेमें, नारियोंकी रक्षाके लिये ही अनेक स्थानोंकी भारतीय जनताने स्वीकार कर लिया था, यही क्यों बाल्यविवाहादि और भी अनेकों कुरीतियां स्वीकार करना पड़ीं, यहां तक कि धर्मायतनोंकी रक्षार्थ, मंदिरोंके साम्हने छतोंपर महातोंमें मसजिदोंके चिन्ह तक बनाना पड़े, इत्यादि बहुत ही बातें करना पड़ीं। परन्तु यह आपद्धर्म कहाता है, वह उतने ही कालके लिये होता है जहांतक आपत्ति शेष है। दवा तभीतक खाना गुणकारी है जबतक रोग है, परन्तु यदि निरोग होकर भी खाता रहेगा, तब तो वह दवा भी कुपथ्य होकर उल्टा रोग पैदा करेगी इसलिये फिर दवा भी छोड़ना पड़ती है।

मान लिया जाय उस समय इसे स्वीकार किया था, और यह लाभकारी सिद्ध हुआ, तो उत्तम बात क्यों छोड़ दीजाय? यदि यह कहोगे तो कहना पड़ेगा कि निःसंदेह उत्तम बात नई हो व पुरानी कभी छोड़ना नहीं

चाहिये और न बुरी बात नई हो व पुरानी उसे भी पकड़े रहना चाहिये। परंतु गुण दोषोंपर विचार करके अवश्य ही त्याग ग्रहण करना चाहिये।

जुल्मी जमानेमें पर्दा चला, परंतु उस समय उसका वह रूप नहीं था जो हालमें है। उस समय तो केवल रक्षाके भावोंसे इतना ही किया गया था कि यथासंभव जुल्मी लोगोंको प्रथम पता ही न लगने पावे कि अमुक जगह स्त्रियां हैं। दूसरे कारणवश निकलना पड़े तो उनका मुखादि रूप न दिखाई देने पावे कि जिससे विषयी जीव जुल्म करनेका अवसर पासके। बस इसी हेतुसे घरोंमें रहती और बाहर निकलती तो मुँह आदि सब शरीर ढंककर निकलती थी, जो कि उस समय तो बहुत जरूरी था।

पश्चात्—उसमें अत्याचार बढ़ गया, घरोंमें भी मुँह ढंका रहने लगा और गुरुजनोंसे भी बोलना बंद होगया। इतना ही नहीं रहा, फिर मुंह मात्र ढंकना रह गया और हाथ पग पेट गला आदि अंग खुलने लगे। क्योंकि दिनों दिन जेवर पहिरनेका रिवाज बढ़ता गया और तब उसे दिखानेका भाव भी बढ़ गया। पश्चात् पाश्चात्य सभ्यता आई, विदेशी महीन कपड़े आने लगे। तब उन पतले कपड़ोंको पहिरना ओढ़ना आरम्भित होगया, जिससे शरीरके सम्पूर्ण अवयव दिखाई देने लगे। परन्तु मुंह-पर जरूर ढक्कन रहा। वह पतला हो व मोटा, फिर उसमें भी यह हुआ कि दो उंगलियोंसे आंख उघाड़कर देखना आरम्भ होगया और तब पुरुषोंको भी उनके रूप देखनेकी आकांक्षा बढ़ गई और पर्दा रहते हुए भी पाप वासनाएं बढ़ने लगीं।

कालकी कुटिल गति है। जीवोंमें पुरुषार्थ घट रहा है परन्तु कषाय विषय बढ़ रहे हैं। इसका फल यह हुआ कि अनेक स्थलोंमें घर ही में जुल्मी देखे जाने लगे और तब वह रिवाज और पकड़ गया, क्योंकि बाहिरवाला तो कभी देखेगा, और दाव घात लगेगा तब अनर्थ होगा, परन्तु यहां तो निरंतर देखना, एक घरमें रहना, अकेले दुकेले, समय बे समय मिलना, तब कारण कार्यका संयोग न होजाय इसपर दिनोंदिन अधिक अधिक जोर लगता गया। भिन्न भिन्न प्रांतोंमें इसके भिन्न भिन्न तरीके हैं। वे सर्वत्र समान नहीं है। कहीं कम कहीं अधिक, कहीं कैसा कहीं कैसा, परन्तु पाया सभी जगह जाता है।

तब इसको मर्यादित करना, इसमें सुधार करना या सर्वथा हटा देना? बस इतना विचार करना है। परन्तु इसके पहिले पर्दाका अर्थ भी जान लेवें। मैं कह चुका हूं कि ऊपर बताया हुआ ढंग पर्दा नहीं है। किन्तु पर्दाका अर्थ है लिहाज लाज, शरम, स्वात्मगौरव कुल व धर्मकी मर्यादा और लज्जा गुण जो नरनारियोंका भूषण है। श्रावकके २१ गुणोंमें लज्जा भी है। जिसके लज्जा नहीं वह वास्तवमें मनुष्य ही नहीं है। इस लिये इसकी रक्षा जैसे बने वैसे करना परम कर्तव्य है।

और तब इसके लिये हमको नरनारियोंमें धार्मिक शिक्षाका प्रचार जोरोंके साथ करना

होगा। हमको बताना होगा कि घरोंमें घुसे रहने व मुंह ढंककर रखनेका मूल हेतु क्या है? और जब वह बात समस्त स्त्री व पुरुषोंके समझमें आजावेगी तब पर्दा रखो तो पर्दा है और न रखो तो पर्दा है। यह बात, हमारी पौराणिक महिलाएं तथा पुरुष भले प्रकार जानते थे, और तभी उस समय केवल मुंह ढंकनेको ही पर्दा नहीं कहा जाता था।

सीता पर्दा रखती थीं, रावणकी हजार चेष्टाएं करनेपर भी उसका पर्दा न छूटा। द्रौपदीका पर्दा दुःशासन न हटा सका। रयनमंजूषाका पर्दा धवल सेठसे न निकल सका। इत्यादि अनेकों दृष्टांत प्राचीन व अर्वाचीन मौजूद हैं। इस प्रकार प्रथम नरनारियोंमें पर्देका भाव भर देना चाहिये पश्चात् पर्दा हटा देना चाहिए, और हटा क्या देना वह हट ही जायगा। दीपकका उजेला सूर्य ऊगनेसे पहिले ही रहता है बाद मंद होजाता है। नकल वहीं तक मानी जाती है जहांतक असलका दर्शन नहीं हुआ। आज भी ऐसी सुशील शिक्षित महिलाओंके लिये कोई भी पर्देकी कैद नहीं है। और पर्दा न रखनेसे उन्हें कोई बुरा भी नहीं कहता, क्योंकि पर्देका जो भाव है वह उनमें पूर्णतया है। उन्होंने अपनेसे बड़ोंको पिता, समवयस्कको भाई और लघु वयस्कोंको पुत्र मान लिया है। यांकि वे सर्व प्राणी मात्रको द्रव्य दृष्टिसे अपना समान आत्माएं समझती हैं। और जीवात्मा स्त्रीपुरुष व नपुंसकादि लिंग रहित अलिंग हैं। तब समानमें काहेका पर्दा! क्या जीव जीवसे पर्दा करता है? पुरुष पुरुषका स्त्री स्त्रीका पर्दा करता है? नहीं कभी नहीं। क्या पूज्य अर्यिकाएं पर्दा रखतीं या मुंह ढक कर चलती थीं?

तब पर्दा कौन करता है? क्यों करता है? कहना होगा कि जिसके भीतर रागादि भावोंकी तीव्रता है या जो निर्बल है, अपनी व अपने धर्मकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है, या असहाय है। तब ऐसी निर्बल अवस्थामें पर्दा सर्वथा छोड़ देना सहसा हानिकर होगा। इसलिये उन्हें मर्यादित पर्दा रखना चाहिये अर्थात् उन्हें घरसे बाहर सुपरिचित विश्वस्त नरनारियोंके साथ निकलना चाहिये। और सौभाग्यके चिन्ह मात्र कुछ आभूषण पहिरकर मोटे कपड़ोंसे अपना सब शरीर यथायोग्य ढांककर तथा मुख इतना खुला रखकर कि जिससे मार्ग बराबर दिख सके तथा मार्गमें चलते हुए नर पशु व गाड़ी मोटारादिसे टकरा न जावें, अपने साथवालोंसे संग न छूट जाय इसप्रकार मर्यादासे रहना चाहिये।

घर हो व बाहर स्वच्छ हवा श्वासोच्छ्वास लेनेके लिये नाक खुली रखना चाहिये। आवश्यकतानुसार श्वसुर जेठ देवर आदि जनोंको पिता पुत्र मानकर अवश्य ही बोलना चाहिये और सासु आदिसे बोलना तो सदैव रहना चाहिये। घरके अंदर मुँह ढंककर न रहना चाहिये। परन्तु ऐरे गैरे लोगोंके सन्मुख मुँह खोले फिरना, चाहे जिससे बातें करना यह अवश्य निंद्य है। किसी पर पुरुषसे एकांतमें बात करना भयंकर है। नाटक थियेटरोंमें

सर्कस सीनेमा आदि अयग्य स्थानोंमें जाना, व मेलों ठेलोंमें धक्के धूमीमें जाना हानिकर है। पंडितजीने घूमने बाबत लिखा है, सो अपने पतिके साथ यदि वे ऐसे स्थानोंमें जावें जहां उत्तम कुलीन लोग जाते आते हैं हानि नहीं है। धर्मस्थानमें जानेकी रोक नहीं है, शास्त्र पढ़ने सुननेकी मनाई नहीं है। धर्म कृत्य पूजा प्रक्षाल, स्वाध्याय, दान, तप, संयमादि करना उनको उतना ही जरूरी है कि जितना पुरुषोंको इसमें स्वतंत्र होना चाहिये।

परन्तु मैं उनको हाकीटेनिस सिखाने व पार्कमें घुमानेके पक्षमें अवश्य नहीं हूं। स्वास्थ्यरक्षा केवल पार्कोंमें घूमने या टेनिस बिलियार्ड बेडमिंटन खेलनेसे नहीं होगी। किंतु वह होगी घरका काम काज करने, कूटने पीसने, दलने खांडने, बासन मांजने, रोटी बनाने, पानी भरने, लीपने पोतने, घरके पशु गौ आदिको दुहने, सारवार करने, बच्चोंकी टहल करने, पति आदि गुरुजनोंकी सेवा करने, ताजा और सादा खुराक खाने, शीलव्रत पालने, ब्रह्मचर्य रखने आदिसे। मोटे वस्त्र पहिरने व धोने आदि कार्योंसे खासा व्यायाम होगा, स्वच्छता व शुद्धता रहेगी, अतिथि सेवा सधेगी, पैसा भी बचेगा, खाली समय बचे तब चर्खा चलावें, कपड़े सिएं, बाल बच्चों व आस पासकी बाई बहिनोंको पढ़ावें, आलसी न रहें, तब देखो कैसे स्वास्थ्य बिगड़ता है?

हम लोगोंके यहां मंदिर जाना तो अनिवार्य है ही, और हमारे मंदिर औरोंसे बहुत स्वच्छ साफ रहते हैं। इसके सिवाय तीर्थ यात्राओंमें पति पिता पुत्रादिके साथ जानेमें कौन रोकता है? रोकनेवाला केवल अज्ञान है। अज्ञान गया और रोक मिटी, नाहक किसीपर दोष रखनेसे क्या काम? श्री० महिलारत्न मगनबहेन जे० पी०, ब्रह्मचारिणी कंकूबहेन, ललिताबहेन, चंदाबाई, चिरौंजाबाई आदिको क्या पर्दा है? जिन्होंने महिला समाजको जगा दिया है।

तात्पर्य यह है कि पहिले हमको सब अनर्थोंका मूल अज्ञान ही क्या पुरुषों व क्या स्त्रियोंमेंसे हटा देना चाहिये और उनको योग्य कर्तव्योंका ज्ञान करा देना चाहिये, उत्तम भावनाएं भर देना चाहिये। बस पर्दा हट गया समझो। पर्दा उनपर पुरुषोंने नहीं डाला है किन्तु उनके अज्ञानने पकड़ रक्खा है और उसे वे ही तब छोड़ सकेंगी जब ज्ञान होगा। दूसरा कौन छुड़ा सक्ता है?

'अति सर्वत्र वर्जयेत्'के अनुसार सुधार करना चाहिये। समझना चाहिये कि आपत्तिकालमें व कहीं संग छूट जानेपर पति आदिका नाम बताना पाप नहीं है। सीता तो रामरे रहती थी, सुवृद्ध जनोंका नाम तो स्मरण रखना ठीक परन्तु कोई भी कार्य हो, यदि मर्यादित होगा तो लाभप्रद होगा और अमर्यादित होनेसे हानिकर होगा। बस इसी बातपर लक्ष्य रखकर सुधार किया जाय और झूठा पर्दा हटाकर शील (ब्रह्मचर्य) का पर्दा रक्खा जाय यही अंतिम वक्तव्य है।　　　　इति शम्।

हमारा-कर्तव्य।

(ले०—पं० किशोरीलालजी शास्त्री सद्गुनक)

कोऽहं कीदृग्गुणः क्वत्यः किंप्राप्यः किंनिमित्तकः।
इत्यूहः प्रत्यहं नोचेदस्थाने हि मतिर्भवेत् ॥ १ ॥
वादीभसिंहसूरि।

अर्थ—मैं कौन हूं? मेरेमें कौनसा गुण है? कहां मेरा निवास है? मुझे क्या प्राप्त करना है? मेरी प्राप्तव्य दशा किस निमित्तसे मिलेगी? इस प्रकार विचार अगर प्रतिदिन न किया जाय तो बुद्धि अयोग्य स्थानमें प्रवृत्त होजाती है। भावार्थ—प्रतिदिन सुबह शाम तथा बन सके तो मध्यान्हमें सामायिक करना गृहस्थका कर्तव्योंमेंसे प्रथम कर्तव्य है। उस समय मंत्र विधिपूर्वक जाप करके ऊपर लिखे प्रश्नोंको अच्छी तरह विचारना चाहिए, इन प्रश्नोंमें बहुत भारी रहस्य भरा हुआ है। जिस दिन विवेकशील प्राणीने शुद्ध हृदयसे इन प्रश्नोंका समुचित उत्तर अन्तरात्मासे पा लिया उसी दिन उसने अपने असली ध्येयको पा लिया। प्रकृतिके नियमानुसार किसी भी विवक्षित कार्यके प्रारम्भ करनेके तीन प्रकार हैं। समरंभ, समारंभ, आरंभ। मनमें ही विवक्षित कार्यके करनेका पक्का इरादा किया जाना व आद्योपान्त उसके निर्वाह व आनेवाले विघ्नों एवं कष्टोंकी सहिष्णुता आदिका पक्का विचार कर लिया जाता है, वह समरंभ कहलाता है। तथा विचार स्थिर होनेपर उस कार्यके योग्य सामग्री जुटाई जाती है वह समारंभ समझना चाहिए। तत्पश्चात् कार्य प्रारम्भ किया जाता है। इसी तरह संसार दशामें कार्य-प्रणालीके तीन उपक्रम हैं। इसी प्रकार हमें हमारे धार्मिक कर्तव्य स्थिर करनेके लिए मनमें बारम्बार चिन्तवन कर कर्तव्य मार्गका अव धारण करना चाहिए।

इसके लिए आचार्योंने तीन समय (प्रातः, मध्याह्न व शाम) सामायिक ध्यानके लिए निश्चित कर दिये हैं। हमें उक्त समयोंमें अवश्य कर्तव्य मार्गपर ध्यान द्वारा प्रकाश डालना चाहिए। तथा कर्तव्य निश्चित कर लेनेपर उसके अनुसार चलना चाहिए। ऐसा करनेसे हमें सहजमें मोक्षमार्गकी तरफ रुचि होगी। उसके जाननेकी हृदयमें सच्ची लगन होगी। तथा हेयोपादेय ज्ञानका होनेपर अवश्यमेव चारित्रकी तरफ हम झुक पड़ेंगे। यही प्राणी मात्रका कर्तव्य है। अतः हमेशा वा सामायिकके समय उपर्युक्त श्लोकमें दिये गये प्रश्नोंपर मनन करना चाहिए।

जबतक जिसको जिस पदार्थकी जिज्ञासा मनमें पैदा नहीं होती है तबतक उसे उस विषयक यथार्थ ज्ञान नहीं होता है। जैसे कि एक पुरुष शास्त्र स्वाध्याय कर रहा है। आंख मींचकर शास्त्रके पत्र पलटते जानेसे काम नहीं होता है। बल्कि लगनपूर्वक मनन करते हुए पढ़नेसे फायदा होता है। उसे ही जिज्ञासा कहते हैं। अथवा प्रश्न करनेवाला प्रश्न करके उत्तर पाये हुए विषयको बजाय साधारण शास्त्र श्रवण व स्वाध्यायके विशेष रूपसे जानता है।

इसी तरह शीर्षकके श्लोकमें दिये गये प्रश्नोंको जो जिज्ञासाके सिद्धान्त अनुसार जानता है, मनन करता है वह आत्मज्ञान एवं मोक्षमार्गकी तरफ मुड़ जाता है। अनंतानंत पर्यायें संसारिक वासनाओंमें ही व्यतीत हुईं। कहीं भी समुचितरीत्या जैन धर्मका यथार्थ समागम नहीं मिला। यही कारण है कि अद्यावधि भवभ्रमणमें जन्म मरणके दुःख सह के यह आत्मा उठा रहा है। श्री जिनेन्द्र देवकी पुनीत आज्ञा है कि एकबार जैन धर्मकी सेवामें अपना जीवन व्यतीत करो। सतत स्वर्गादि सुखोंकी व परम्परासे मोक्ष सुखकी प्राप्ति होगी। अर्थात जिज्ञासापूर्वक लगनसे धर्मासाधनमें जुट जाओ तो अपने लक्ष्यबिंदुको प्राप्त करनेमें फिर कोई कठिनाई नहीं रह जावेगी। कार्य करनेकी शैली मन, वचन, काय और कृतकारित अनुमोदना इस नव कोटिसे होती है। प्राकृतमें आशय यह है कि शीर्षकके श्लोकमें दिये गये मन्तव्योंको नवकोटीसे सतत चिन्तवन करते रहना चाहिये।

प्रथम प्रश्नमें पूछा गया है कि मैं कौन हूं? इस प्रश्नके सुनते ही बहिरात्मा बोल उठता है—मैं मनुष्य हूं, मैं जैन हूं, मैं सेठ हूं मैं विद्वान या मूर्ख हूं। इत्यादि पर्यायाश्रित उत्तरोंको ही समुचित जान कह बैठता है। परन्तु स्वस्थ अन्तरात्मा कह देती है कि हे पर्यायमूढ़! तुम अनादिकालसे मोह मदिराको पीकर पर्यायोंमें मूढ़ रहे हो। निश्चयनयसे आत्मा न मनुष्य है, न तिर्यंच, न नारकी है, न देव है। न जैन न वैष्णव, न ब्राह्मण, न क्षत्रिय, न वैश्य है न सेठ न विद्वान् और न मूर्ख है। न छोटा है, न बड़ा है, न ऊँच कुलवाला है और न नीच कुलवाला है। न पुत्र है न पिता है न स्त्री है न स्वामी है। न वृद्ध है न युवा है और न बालक है। अपितु अनन्त चतुष्टय स्वरूप, राग द्वेष रहित, जन्म मरण रहित, अजर, अमर, सतत सुखी, बाह्य धन जन, ऐश्वर्यादिसे रहित बाह्याभ्यंतर परिग्रह विहीन महान् शक्तिशाली ज्ञाताद्रष्टा आत्मा है। कर्मावृत होनेके कारण मनुष्यादि पर्याय मूढ़ होरहा है।

द्वितीय प्रश्नका आशय यह है कि संसारमें जितने द्रव्य हैं वे गुण और पर्याय सहित होते हैं। इसीको सामान्य विशेषात्मक होनेसे पदार्थ ऐसा निरूपण किया है। इन हीको विषय करनेवाले द्रव्यार्थिक नय और पर्यायार्थिक नय हैं। इसलिए प्रश्न होता है कि मैं आत्मा द्रव्य हूं, मुझमें क्या गुण होना चाहिए है? बाह्य ऐश्वर्यादिसे मदोन्मत्त प्राणी अपनेको विद्वान्, गणितज्ञ, इतिहासज्ञ आदि नाना गुण विशिष्ट मानकर पर्यायमें मस्त होजाता है। संपत्तिको भी अपना बहुत भारी मदोन्मत्तताका कारण मान बैठता है। यह सब मोक्षमार्गानभिज्ञ जीवात्माओंकी चेष्टायें हैं। इनमें परतंत्र होजानेके कारण आत्माकी आत्मसिद्धिकी तरफ रुचि, प्रज्ञा, श्रद्धा नहीं होती है। आत्मश्रद्धावान् व्यक्तियोंको विचारना चाहिए कि मेरी आत्मामें अनन्त गुण विद्यमान हैं। मुख्य गुण अमूर्तत्व, दृष्टापना, सुखवीर्य, सम्यग्दर्शन, ज्ञान आदिक मेरेमें

है। इन अष्ट कर्मोने मेरे नैसर्गिक गुणोंपर पर्दा डाल रखा है अतः मेरा स्वभाव विभावरूपमें परिणत होरहा है।

तीसरा प्रश्न है कि मैं कहांका रहनेवाला हूं। व्यवहार नयसे अनादिकालसे कर्मबंधके कारण अनन्तानंत काल निगोदराशिमें रहा व अल्प समयके लिए त्रसपर्यायमें समय व्यतीत करता रहा। इसी संस्कार वश यह अज्ञ प्राणी जिसर पर्यायमें जाता है, वहीं विषके कीड़के मानिंद गर्क होजाता है। और वहींका बसनेवाला अपनेको मानने लगता है। दर असलमें देखा जावे तो जिस प्रकारसे कोई मनुष्य सिंहके चर्मको ओढ़ लेता है और सिंह सरीखा मानने लगता है, परन्तु वास्तवमें सिंह नहीं है। इसीतरह यह प्राणी नाना गतियोंके नाना वेषोंमें कतिपय समयके लिए जा बसता है। इसीलिए इसका चतुर्गतिका निवास वास्तविक नहीं है। जहां आत्म स्वभावकी जागृति है वही इस चेतनका निवास है। निश्चयनयसे सभी द्रव्य अपने २ प्रदेशोंमें स्थित हैं। कोई किसीका आधारभूत नहीं है। जिनका ऐसा ख्याल है कि लोकके शिखराग्रमें मुक्तावस्था है, यह भ्रम है। लोकके शिखराग्रमें तो निगोदियातक निवास करते हैं। अतः हे आत्मन्! अपना रहनेका ठिकाना शुद्ध चिद्रूपप्रदेश मय आत्मा ही है।

चतुर्थ प्रश्नमें यह दिखलाया गया है कि मैं जन्म जरा मरण व्याधि कर ग्रसित हूं। अब मुझे क्या प्राप्त करना चाहिये। जहां मेरा संकट दूर हो। सरागी प्राणी क्रमशः एकसे लेकर लाखों रुपया कमानेमें जुटे हुए हैं। कोई विवाहकी फिक्रमें हैं। कोई पुत्रकी चाहमें हैं। कोई मकानादिकी तलाशमें मर्यादातीत संलग्न है। कहांतक कहा जाय? भौतिक जुटावको ही या किंचित् देवपूजादिको सर्वेसर्वा मान उसकी आयोजना मात्रको किंप्राप्य? इस सवालका उत्तर समझ बैठते हैं। निश्चयनयसे यह सब क्षण नश्वर व ऐन्द्रियक हैं। इनसे आत्माका कोई संबन्ध नहीं है। असली प्राप्तव्य है मोक्ष व सम्यक्त। सम्यग्दर्शन मोक्षमन्दिरका प्रथम सोपान है। जिसको सम्यक्तकी प्राप्ति होगई, जिसका आत्मस्वरूप अवभासन होगया वह नियमसे अर्द्धपुद्गलपरिवर्तनकालमें मोक्ष प्राप्त करलेगा। बिना सम्यग्दर्शनके जप तप पूजने स्वाध्याय, धन, स्त्री, पुत्रादि जीर्ण तृणवत् निस्सार है। सम्यग्दर्शन सहित नरकका वास भला और सम्यग्दर्शन रहित नवग्रैवेयक तककी महाविभूति निःसार है। अतः सम्यग्दर्शन और परंपरासे मोक्षमार्ग द्वारा मोक्ष प्राप्तव्य है।

इस तरह विचार कर चुकनेपर अन्तमें प्रश्न उठता है कि मुझे मेरा प्राप्तव्य किस निमित्तसे प्राप्त होगा? अर्थात् जितने कार्य संसारमें होते हैं बिना कारणके नहीं हैं। शीतकी बाधा मेटनेके लिए उष्णस्पर्शकी जरूरत पड़ती है। और उष्ण वेदनाके निवारण करनेके लिए शीतलोपचार करना पड़ते हैं। क्षुधाके लिए अन्न, मैथुनके लिए स्त्री, इत्यादि सांसारिक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए नाना प्रकारके कारण कलाप जुटाने पड़ते हैं। इसी तरह संसा-

रकी बाधा मेटनेके लिए या प्राप्त कर्मसे मुक्त होनेके लिए निमित्त मिलाना ही हमारा पांचवें प्रश्नका असली ध्येय है।

यों तो लोग शारीरिक विलासिताकी परिवृद्धिके लिए रातदिन ऐड़ीसे लेकर चोटी तक पसीना बहाते हैं। न्याय अन्यायका विचार नहीं करते हैं। भक्ष्य अभक्षका विचार नहीं रहता है। शूकरकी तरह सुबहसे शामतक उदरपूर्णा और काम पुरुषार्थका प्रधान लक्ष्य ही रक्खा जाता है। आचार्योंका कहना है कि गृहस्थको धर्म, अर्थ और काम ये तीन पुरुषार्थ अविरोध पूर्वक पालन करना चाहिए, मगर प्राणियोंपर कलिकालने इतने जल्दी असर डाल दिया है कि धर्म पुरुषार्थको बातूनी जमाखर्च सरीखा बनाते हुए अर्थ और काम पुरुषार्थपर सोलह आना ध्यानकर लिया है। प्रदेशर में व्यक्ति व्यक्तिमें अर्थ और कामके सिवा अन्य गंध भी नहीं है। दर असलमें इनकी मुख्यतासे हमें हमारा प्राप्तव्य नहीं मिल सकता है। मोक्षकी प्राप्ति संवर और निर्जरासे होगी। प्रति समय कर्म बन्ध होरहा है। जबतक आमदनीमें पाप-आश्रवको नहीं रोकेंगे तबतक हमारी सर्व क्रियायें गजस्नानवत होजाया करती हैं। अतएव संवरकी अत्यधिक आवश्यक्ता है। व मोक्षप्राप्तिको एकोदेश निर्जरा ही कार्यकारी है। मोक्षकी प्रथम सीढ़ी सम्यग्दर्शन दर्शनमोहके उपशम क्षय क्षयोपशमसे ही मिलेगी। व्यवहारमें प्रशम, संवेग अनुकंपा और आस्तिक्य ये चार भावनाएं निश्चय सम्यक्तको प्राप्त कराती हैं। इसके अतिरिक्त देवशास्त्र गुरुका श्रद्धान, सप्ततत्व, नव पदार्थ, पंचास्तिकायका श्रद्धान् व्यवहार सम्यक्तके लिए अनिवार्य है। अगर आज पंचमकालमें यह भी न बन पड़ा तो फिर हममें व तिर्यंचोंमें कोई भेद नहीं रह जावेगा।

आज वर्तमान जैन भारतमें आत्मस्वरूपकी प्राप्तिका मुख्य साधन व्यवहार सम्यक्त ही है। अतएव प्राणीमात्रका इसकी तरफ प्रधान लक्ष्य होना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्तरात्माकी ज्योतिकी जागृतिमें सप्त व्यसनका त्याग व अन्यायका त्याग व अभक्ष सेवनका त्याग व अष्ट मूलगुण परिपालन यह रूप इसके सहचारित्वकी तरह साधन है।

पाठकों! इसके विषयमें कहना तो बहुत कुछ था किन्तु पुनः यथावसर कहूंगा। मेरा ध्येय यही है "भावना भवनाशिनी" के सिद्धान्त अनुसार हमें अपनी कर्तव्य गाथाको निरंतर रटते रहना चाहिए। और उसके मुजब यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिए। अन्यथा आयुकाल थोड़ा है, कालका परवाना आनेपर हमें दूसरी पर्यायके लिए अनिच्छा रहनेपर भी जाना पड़ेगा। अतः सतत शास्त्राध्ययन करते हुए सम्यक्तकी चाहमें सप्तव्यसन त्याग, अष्टमूलगुण धारण करना हमारा कर्तव्य है। कर्तव्य पालनसे ही हम भगवान महावीरकी संतान कहलावेंगे।

राजस्थानमें जैनियोंकी प्राचीन कीर्ति ।

(ले०-रामकुमार सेठी, रतनपुरकलां)

संसार परिवर्तनशील है । एक समय वह था कि जैन धर्मकी ध्वजा समस्त भूमण्डल पर फहराती थी और जैन साम्राज्यकी छायामें मनुष्य आनन्द करते थे। महाराज चंद्रगुप्त और अशोकके समय तक जैन राज्यकी नीव स्थिर थी, पश्चात् इसका अधःपात प्रारम्भ हुआ। राजस्थानमें अनेकों बार यवन राजाओंकी चढ़ाइयां हुईं। जिस प्रदेशको उन्होंने हस्तगत किया उसका विनाश ही करते गये। मंदिरोंके स्थानमें मसजिद तथा धर्मशालाओंको अन्य रूपमें परिणत कर दिया। असंख्य जन तलवारके जोरसे मुसलमान बनाये गये। आजकल यदि कोई व्यक्ति राजस्थानका दर्शन करे तो उसका हृदय धकधक करने लगता है, हृदयमें करुणारसका आवेग उठ आता है। अब भी उन भग्न प्राचीन स्थलोंको देखकर बहुतसी पुरानी कथायें याद आजाती हैं। चितौड़में जैनियोंके ५-६ मंदिर अब भी विद्यमान हैं। उनमें दिव्य जिन प्रतिमायें देखकर प्राचीन शिल्पकलाकी याद आजाती है। जैसलमेर, बूंदी, उदयपुरके अन्तर्गत ग्रामोंमें अनेक प्राचीन जैन मंदिर हैं जो अब भग्न दशामें हैं। केशरियानाथजीका मंदिर अब भी राजस्थानकी शोभा बढ़ा रहा है। राजा रायमल जैन थे जिनके कई बनवाये हुए मंदिर अबतक विद्यमान हैं। हम लोगोंको एक ऐसी संस्था बनानी चाहिये जो कि प्राचीन वस्तुओंकी खोज करनेवाली हो; क्योंकि किसी भी जातिका पूर्व इतिहास उसकी उन्नतिका सहायक होता है।

जैनियों ! अब भी सावधान होजाओ, तुम्हारी प्राचीन कीर्ति अक्षय है। आधुनिक लोग तुम्हें बौद्धके समकालीन बता रहे हैं, उनके अज्ञान कपाट खोल दो। उन्हें समझाओ और यह प्रमाणित करदो कि जैनधर्म अनादिसे है और अनादि कालतक रहेगा, यही सनातनधर्म है। राजस्थानका इतिहास इस बातका साक्षी है कि प्राचीनकालसे ही जैनधर्म चला आ रहा है। २१६ नं० एक लेख जो अभी हाल ही मिला है इस बातकी साक्षी है। आधुनिक इतिहास वेत्ताओंके लिये राजस्थानका इतिहास प्रमाण स्वरूप है, अस्तु। अब शीघ्र ही जैन भाइयोंको अपनी लुप्तप्रायः अक्षय कीर्तिको प्रकटित करना चाहिये नहीं तो विश्वमें तुम्हारा नाम लेनेवाला कोई भी नहीं रहेगा। बड़े २ विद्वान् लोगोंसे हमारा अनुरोध है कि वे एक ऐसी संस्था स्थापित करें जो कि पत्रोंमें जैन कीर्ति सम्बंधी लेख माधुरी तथा सरस्वती आदि पत्रिकाओंमें छपाती रहे।

गीता छंद ।

है कीर्ति अक्षय यह हमारी लोकमें विख्यात है।
विद्वज्जनोंको यह सदा इतिहास हीसे ज्ञात है॥
अतएव अबतो जैनियों कुछ ध्यान निज हियमें धरो।
अब लुप्तप्रायः कीर्ति है जो तुम उसे प्रकटित करो॥

यदि वृद्धतासे भय है तो दांतोंकी रक्षा करो।

(ले०-पं० मनोहरलाल जैन वैद्य-शिवपुरकलां)

संसारके प्रत्येक व्यक्ति सुख और शांतिपूर्वक जीवन बितानेकी अभिलाषा रखते हैं। परन्तु जबतक वे तदनुकूल योग्य आचरणोंको ग्रहण नहीं करेंगे तबतक सुख और शांति कोसों दूर है। बहुतसे द्रव्यलोलुपी मनुष्य शरीरकी कुछ भी परवा न करके केवल द्रव्योपार्जनमें ही सुख और शांति समझते हैं। अनेकों जिह्वा इंद्रियके लोलुपी नानाप्रकारके अभक्ष पदार्थोंका आस्वादन कर क्षणिक सुखके वास्ते इसीको ही अपूर्व आनन्द मानते हैं। चाहे कालांतरमें नानाप्रकारके दन्त मुख रोगादि व शरीरकी अस्वस्थता क्यों न हो और यह बहुमतसे सिद्ध है कि जितने रोग होते हैं वे कुभोजन तथा कुआचरणोंसे हुआ करते हैं। तो भला सोचनेकी बात है कि जो दाहकी पीड़ासे व्यग्र होरहा है वह क्या सूर्यकी तापसे शांतिलाभ करसकता है? कदापि नहीं। उसी प्रकार जिसको शरीरकी रक्षा करनेमें लापरवाही है वह भी शांतिलाभ नहीं कर सकता। लक्षाधिपति भले ही होजाओ, परन्तु शरीर स्वस्थ (निरोग) नहीं है तो कुछ भी नहीं। अतएव निश्चयसे सिद्ध है कि द्रव्यादि भोगोपभोग सामग्रीका अभाव होते हुये निर्धन स्वस्थ (निरोग) मनुष्य लक्षाधीशसे सहस्र गुणा सुखी है।

यहां हमारा उद्देश "दंतरक्षा" से है। वर्तमानमें हमको बहुतसे ऐसे मनुष्य देखनेमें आते हैं जिनकी अवस्था ४० वर्षसे कम है तथापि १०० वर्षके बूढ़ेकी तरह दांत रहित पोपले बनकर दुखी बन जाते हैं। इसका यही कारण है कि हम लोगोंका योग्य खानपान और शरीरकी रक्षापर रञ्च मात्र ध्यान नहीं। यदि आप बहुत कालतक स्वादपूर्वक भोजनका आनन्द और सुखसे जीवन बिताना चाहते हो तो अभक्ष भक्षण दांतोंको हानिकारक पदार्थोंका भक्षण मत करो। प्रतिदिन अच्छी तरहसे दांतोंका मंजन करो। ऋतुके अनुसार किंचित् स्वच्छ शीतल व उष्ण जलसे बार बार कुल्ला कर मुखको शुद्ध रक्खो।

बहुतसे स्त्री पुरुष व उनकी अनुकरणशील पुत्र पुत्रियां दतौन करना कोई योग्य क्रिया ही नहीं समझतीं, प्रत्युत दतौन करना बुरा समझते हैं। यह उनकी और उनके वयोवृद्धोंकी नितान्त भूल है। हमलोग साधु नहीं हैं ये गुण साधुओंके हैं। अनुभवसे ज्ञात है कि बहुतसे स्त्री पुरुष व उनकी सन्तान भोजनको आते हैं, थोड़ासा जल मुखमें लिया और कुल्ला कर सभ्युकी तरह भोजन करने लगे। याद रखनेकी बात है कि यही आलस्य प्रतिदिनका दन्त मल एकत्रित कर कीट व दुर्गंधादि नाना प्रकारके दन्त रोगोंको उत्पन्न कर दन्त नष्ट करदेता है और असमयमें ही दन्तहीन पोपले बुड्ढे बन बैठते हैं। ऐसा होनेसे मुखकी शोभा और भोजनका स्वाद जाता

रहता है। साथमें अच्छी तरह भोजन न चबनेके कारण अधचबा भोजन खाया जाता है, जो अधिक समयमें भी ठीक तौरसे हजम नहीं होता। जिससे अजीर्ण तथा आमादि रोग होकर मुख व्रण वगैरह नाना असाध्य रोग होजाते है और जीवन पर्यंन्त अनेक दुःखोंका सामना करना पड़ता है। यदि कदाचित कभी सभा सोसायटीमें जानेका सौभाग्य हुआ तो उस वक्त मुँहकी दुर्गन्धतासे जनसमूहमें बैठना कठिन होजाता है। साथमें समिपस्थ लोग उसको बुरी तरह घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं और कहते हैं कि ये मनुष्य क्या दरिद्री और मूर्ख है कि इसको दांतोंकी शुद्धिका कुछ भी ख्याल नहीं, मूर्खकी तरह बैठा हुआ है। इत्यादि अयोग्य रीतिसे अनादरकी दृष्टिसे देखा जाता है। अस्तु!

मेरे प्यारे शिक्षाभिलाषी भविष्य उन्नतिके भाजन छात्रगण? इस विषयपर आप लोगोंको विशेष रीतिसे अवश्य ही ध्यान देना चाहिये। दन्तशुद्धि व जिह्वाशुद्धि जबतक ठीक न होगी तबतक बोलनेकी शाब्दिक शुद्धि होना कठिन है। शब्दके उच्चारणसे ही अनुमान किया जाता है कि ये विशेष ज्ञानी पुरुष है। दन्तशुद्धिके साथ साथ आप लोगोंको और भी शरीर संबंधी विषय पर ख्याल रखना चाहिये। जैसे यथासमय योग्य खाना पीना, ब्रह्मचर्यसे रहना व्यायाम वगैरह करना, स्वच्छ वायुका दोनोंवक्त सेवन करना, समयानुकूल पढ़ना, संध्या समय बिना दीपकके तथा चांदनीमें व लेट कर आंखोंसे पुस्तक लगाकर इत्यादि अयोग रीतिसे नहीं पढ़ना चाहिये। उसवक्त आप लोगोंको ऐसा करनेसे नुकसान नहीं मालूम पडता किन्तु कालान्तरमें दृष्टिकी हीनता, मस्तकको कमजोरी आदि अनेक नुकसान होजाते हैं जो मुझे अनुभवसे ज्ञात हैं। यहांतर प्रकरण वश संक्षेपसे मैंने दोचार बातें लिखी हैं। आशा है अवश्य ही योग्य समझकर ध्यान देंगे।

वर्तमानके स्त्री पुरुषोंमें जो मिस्सी आदि अनेक मसालोंको दांतोंपर लगानेकी परपाटी प्रचलित है यह प्रथा वास्तवमें बहुत ही अयोग्य और निन्दनीय है। कृष्णतासे दांतोंकी व मुखकी शोभा नहीं होती; किन्तु दन्तावलीका वर्णन हरएक स्थानपर स्फटिकके सदृश श्वेत ही किया गया है न कि कृष्ण। और कहांतक लिखें, बहुतसे अज्ञानी मूर्ख लोगोंकी देखा देखीसे स्त्रियोंकी रसना इंद्रियमें भी कीड़ोंकी खलबलाहट होने लगी वे तंबाखु खाने, सूँघने आदि नशेबाजीमें रात्रि दिन अग्रसर होनेकी कोशिश कर रही हैं। बड़े २ अनुभवी डाक्टरोंने सिद्ध कर दिया है कि तम्बाखू बहुत बुरी नशेकी चीज हैं इससे कलेजा दग्ध होता जाता है दांत खराब होजाते हैं और तो क्या इसके विषसे अकाल मृत्यु भी होजाती है।

अब हम दांतोंकी शुद्धिके लिये यह बताना चाहते हैं कि दतौन किस वृक्षकी होनी चाहिये और कब करना अथवा जो दतौन करनेसे पाप समझते हैं उन्हें क्या करना चाहिये इत्यादि सप्रमाण लिखते हैं, जैसा कि सुश्रुतादि ऋषियोंने लिखा है—

उत्थायोत्थाय सततं स्वस्थेनारोग्यमिच्छता।
धीमता यदनुष्ठेयं तत्सर्वं संप्रवक्ष्यते॥

अर्थ—हम उन बातोंको बतलाते हैं जो नित्य प्रति उठकर स्वस्थ और आरोग्यकी इच्छा करनेवाले बुद्धिमान पुरुषोंको करने योग्य हैं।

तत्रादौ दन्तपवनं द्वादशांगुलमायतम्।
कनिष्ठकापरिणाहमृज्वग्रंथितमव्रणम्॥
अयुग्मग्रंथियच्चापि प्रत्यग्रं शस्तभूमिजम्।
अवेक्ष्यर्तुञ्च दोषं चरसं वीर्यञ्च योजयेत्॥
कषायं मधुरं तिक्तं कटुकं प्रातरुत्थितः।

अर्थ—प्रत्येक मानवको प्रातःकाल सूर्योदयके प्रथम ही शौच क्रियासे निवृत्त होकर बारह अंगुल लम्बी कनिष्ठ अंगुलीके समान स्थूल सीधी बिना गांठकी छिद्र रहित जिसमें दो गांठे न हों उत्तम भूमिमें उत्पन्न हुए वृक्षकी होनी चाहिये ऋतु दोष रस और वीर्यके अनुसार देखकर कसैली मीठी चरपरी कड़वी दतुन होनी चाहिये।

यथा—निम्बश्च तिक्तके श्रेष्ठः कषाये खदिरस्तथा।
मधूको मधुरश्रेष्ठः करञ्जः कटुके तथा॥

अर्थ—चरपरे वृक्षोंमें नीम, कसैलेमें खैर, मीठेमें महुआ और कड़वेमें कंजकी दतौन श्रेष्ठ है।

अब रही यह बात कि जिनको दतौनसे परहेज है वे निम्नस्थ औषधियोंके चूर्णसे दांतोंपर मंजन करें। और साथमें दतौनवाले भी कोमल कूचीसे लगाकर शनै२ दांतोंपर रगड़े। दंतमंजन त्रिकुटा (सौंठ मिर्च पीपल) त्रिफल (हरड़ बहेड़ा आंवला) तेल और सेंधा नमक मिला अथवा तेजोवतीके चूर्णसे नित्य प्रति दांतोंका मंजन करें। साथमें ये ध्यान रहे कि कूचीको मसूड़ों पर न रगड़े क्योंकि रगड़से क्षतादि होकर रक्त निकलनेकी संभावना है। प्रत्येक कार्यके अनंतर फल प्राप्ति होनी चाहिये सो कहते हैं। यथा—

तद्दौर्गंध्योपदेहौ तु श्लेष्माणं चापकर्षति।
वैशद्यमन्नाभिरुचिं सौमनस्यं करोति च॥ सुश्रुत

अर्थ—दातन करनेसे मुखकी दुर्गंध और चिकनापना दूर होजाता है, कफ निकल जाता है, मुखमें विशदता अन्नमें रुचि और चित्तमें प्रसन्नता होजाती है।

अब यहां यह बतलाना जरूरी है कि कौन२ रोगवाले दतौन न करें। जिस मनुष्यके गले, तालु, ओष्ठ, जिह्वा आदिमें रोग होगया हो, मुखपाकमें श्वासमें, खांसी, हिचकी, मूर्च्छार्त, मदपीड़ित, शिर रोगी, तृषार्त, थका हुआ, अर्दित रोग, कर्णशूल, दन्त रोगी, इसप्रकार ऊपर लिखे रोगोंमें और इन रोगियोंको दतौन करना वर्जनीय है।

बादमें जीभके मलको भी जिभी द्वारा शनैः२ साफ करना चाहिये। इससे जिह्वाकी शुद्धि मुखकी विरसता जीभका मलदुर्गंधता और जड़ता दूर होजाती है। वैद्यशास्त्रानुसार जिभी निम्नप्रकार बतलाई गई हैं। यथा—

जिह्वानिर्लेखनं रौप्यं सौवर्णं वार्क्षमेव च।
तन्मलापहरं शस्तं मृदुश्लक्ष्णं दशांगुलम्॥ सुश्रुत

जिह्वा मल दूर करनेके लिये अच्छी कोमल चिकनी दश अंगुल लम्बी चांदी सोने अथवा वृक्षकी होनी चाहिये।

आशा है हरएक व्यक्ति इस साधारण लेखको पढ़कर सार ग्रहण करेंगे। साथमें दन्त मंजनके १—४ अनुभूत नुसखे और देता हूं, जिनको जो अनुकूल पड़े अवश्य ही काम उठावेंगे।

१—बादामके छिलकेकी राख १ तोला, मस्तगी ६ माशे, काली मिर्च ६ माशे, सेंधा नमक ६ माशे, कपूर ६ माशे उपरोक्त सब चीजोंको कूट पीसकर कपड़छान करके प्रतिदिन मंजन करें।

२—दालचीनीका चूर्ण ४ तोला, रीठेका चूर्ण १ तोला, फिटकरी ६ माशा, कत्था २ तोला, पिपरमेण्ट १० रत्ती, इलायची १ तोला, दालचीनीका तेल ४ माशा इन सबको कूट पीस छानकर चूर्ण बनाले। फिर इस चूर्णसे चौगुनी सेलखड़ीका चूर्ण मिलाकर दांतोंपर मंजन करें। यह चूर्ण बहुत ही उत्तम है मल शुद्ध करता है कीटोंको भी नष्ट करता है।

३—खट्टे अनारके छिलके १ तो० फिटकरी २ तो० अकरकरा ७ मा० गुलाबके फूल ७ मा० माजूफल ७ मा० इनको कूटपीस छानकर दांतोंपर मलनेसे दांत मजबूत और शुद्ध होते हैं।

तीर्थंकर चित्रावलि।

ध्यानमें रखनेयोग्य बातें।

१—प्रत्येक मनुष्यको प्रतिदिन इस बातके लिए तैयार रहना चाहिए कि कोई न कोई मनुष्य हमारी बातें अवश्य काटेगा और हमें निराश भी करेगा।

२—संसारमें कोई निर्दोष नहीं है। इसलिए किसीसे भी निर्दोष व्यवहारकी आशा मत रक्खो।

३—प्रत्येक मनुष्यके स्वभावका मनन करो। जिससे उसकी प्रसन्नता और अनुकूलता मालूम पड़े।

४—यदि किसीपर आपत्ति आवे तो सहानुभूति प्रगट करो और आनन्द होनेपर आनन्द मनाओ।

५—यदि तुम्हारा स्वभाव चिड़चिड़ा है तो शीघ्रतासे मत बोलो और क्रोध आनेपर सहसा कोई काम मत करो।

६—अवसर बन पड़े दूसरेको अच्छी सलाह देनेसे मत चूको।

७—अपने बड़ोंसे नम्रतापूर्वक और छोटोंसे सम्मानपूर्वक व्यवहार करो।

८—किसीकी प्रशंसा करनी हो तो दस आदमियोंमें करो और दोष कहना तो एकान्तमें कहो। प्रशंसा तो सदैव करो। पर निन्दा समय पर करो।

९—स्वयं उन्नत न बनो किन्तु औरोंको भी उन्नत बनाओ। कंछेदीलाल जैन न्यायतीर्थ।

परिषद्के सभापतिका त्याग—हमारी भारत० दि० जैन परिषद्के सभापति श्री० सिं० पन्नालालजी-अमरावतीने धारासभाकी सभासदी त्याग दी, अपने १२ वर्षके पुत्रको सत्याग्रह संग्रामके लिये दे दिया व १०) मासिक सहायता सत्याग्रह संग्राम सहायक फंडमें देते रहना स्वीकार किया है। धन्य है आपके इस आदर्श त्यागको!

अमरावती—के देशभक्त मंगलजी, प्रेमचंदजी, बाबूलालजी, मोतीलालजी आदि परवार भाई-बाइयोंने सत्याग्रह सैनिकोंमें अपने नाम लिखाये हैं तथा पन्नालाल गांधी दि०, रतनलाल काले (श्वा० श्वे०) जैन भी स्वयंसेवकोंमें भरती हुए हैं।

अंतरीक्षजीमें श्वे० जैनोंका जुल्म—सिरपुर (अकोला) से श्रावणेजी द्वारा मालूम हुआ है कि अंतरीक्षजीमें श्वे० जैनोंद्वारा बहुत जुल्म व अनुचित बर्ताव होरहा है। मूल मंदिरको ये लोग ताला लगाकर दर्शन पूजामें अंतराय करते हैं। व धर्मशाला नं० १ की दीवाल तुड़वाने लग गये हैं व मंदिरके पासकी खुली जमीनपर भी अपना हक करनेकी कार्रवाई कर रहे हैं। हमारे पार्वती बगीचासे ९०० वृक्ष (आम, सीताफल आदिके) कटवा डाले हैं व पार्वती मंदिरका दरवाजा व मार्ग बंद करनेको १० मजदूर लगाये हैं। ये लोग मूल मंदिरके आसपासकी दीवाल भी गिराने लगे तब पुलिस बुलाकर बंद कराया, थोड़े समय बाद फिर गिराने लगे तब फिर पुलिस आई तब बंद किया। एक वृद्ध दि० जैन स्त्रीने इस समय सत्याग्रह भी किया था। श्वे० जैनोंने अपने आदमियोंको लाठी सहित खड़े रखे थे। अभी तो यह अत्याचार पुलिसने रुकवाया है परंतु आगे ये ऐसे अत्याचार नहीं करेंगे ऐसा कैसे कहा जासकता है? हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटीको इस मामलेपर पूर्ण ध्यान देना चाहिये। प्रिवी कौंसिलके फैसलेके अनुसार दर्शन, पूजन आदिके सब हक हमें बराबर मिलने चाहिये।

देवगढ़—जीर्णोद्धारके लिये १०००) बा० मथुरादास पद्मचंद (आगरा) ने देना स्वीकार किया है। अब कार्य प्रारंभ होगा। और बहुत सहायताकी आवश्यकता है।

नाथूराम सिंघई—ललितपुर।

मुनि श्री पायसागरजी—ने स्वास्थ्य ठीक होनेसे अब आगरासे दक्षिणकी तरफ विहार किया है।

दुधनी—में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगई। कारंजासे ब्र० देवचंदजी व पं० देवकीनंदनजी सिद्धान्तशास्त्री भी पधारे थे व तीन कीर्तनकारोंके असरकारक कीर्तन हुए थे। मंदिरमें १९००) की आय हुई थी।

पंचकोला—में "जैन युवक संघ" स्थापित हुआ है।

दशाहुमड भाई जेलमें—सोलापुरमें भाई शिवलाल मोतीचंद वेगमणीकर दशाहुमड तथा परशोतम राठो मारवाड़ी ये दोनों जैन बन्धु नमक कानून सत्याग्रह संग्राममें ढाई२ वर्षकी कैदको खुशी २ गये हैं। बधाई !!!

परिषद्‌के महामंत्री—हमारे भारत० दि० जैन परिषद्‌के महामंत्री बा० रतनलालजी जैन वकील बिजनौर, जिला कौंग्रेस कमेटीके भी मंत्री होनेसे आपने सत्याग्रह संग्राममें अपना पदार्पण किया है जिससे आपके जेल जानेकी पूर्ण संभावना होनेसे आपने अपनी अनुपस्थितिमें परिषद्‌के मंत्रीका कार्यभार बा० राजेन्द्रकुमार जैन बिजनौरको सुपुर्द किया है।

बंबई श्राविकाश्रम—में ता० २९-४-३० से ता० ५-६-३० तक गर्मीकी छुट्टियां रहेंगी इसलिये नवीन प्रवेश होनेवाली श्राविकाओंको छुट्टीके बाद प्रवेशफार्म भेजने चाहिये।

अक्षयतृतीयाका फर्ज—बम्बईसे जगमोहनदास हीरालाल लिखते हैं कि गत तीसरे वर्ष इसी दिन केशरियाजीके मंदिरमें हत्याकांड होकर हमारे कई दिगम्बरी भाई मारे गये व जख्मी किये गये थे उसीका पूर्ण फैसला अभीतक नहीं हुआ है न ध्वजादंड केसका चुकादा हुआ है। दूसरे कुड़ची अत्याचार कांडका न्याय भी अभीतक नहीं हुआ है इसलिये हरएक स्थान इस अक्षयतृतीयाको सभा करके शोक मनाना चाहिये व शीघ्र न्याय मिले ऐसी कार्रवाई करनी चाहिये। केशरियाजी हत्याकांड कमेटी अजमेर क्या सोगई है कि कुछ भी सुधारा नहीं प्रकट करती? कुड़ची जांच कमीशनकी रिपोर्ट भी अभीतक प्रकट नहीं हुई है ऐसा क्यों!

भूल सुधार—इस अंकमें पृ० २६९ से २७० को २३३ से २४८ तक समझें।

फूल!

नवल छटा दिखला इठलाते,
पंकज करते हो क्यों भूल!
तनिक देरमें गिर पृथ्वीपर,
हो जावोगे—नष्ट समूल!
जिन करकमलोंने रक्षा की है,
तेरी नित्य निरन्तर! फूल!
मदमें फूला देख तुझे वह,
बन जायेंगे तत्‌! त्रिशूल!
जिसने मोद सहित सींचा है,
तुमको मान मनोहर! फूल!
होकर कुपित नष्ट कर देगा,
देख तुम्हारी भारी भूल!
उपमा रहित समझ अपनेको,
करते महा भयंकर भूल!
पतित पद दलित होजानेपर,
सभी हसेंगे तुमपर फूल!
अहङ्कार कर कभी न फूला,
वह रहता नित प्रति! भरपूर!
फूल गया होकर मदान्ध जो,
होता है वह चकना चूर!
चाहो कीर्ति जगतमें अपनी,
नम्र बनो तब डाली! सम!
जगमें उत्तम कहलावोगे,
बनकर अनुपम स्वयम् कुसुम!

—कल्याण।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकलासूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

दिगम्बर जैन

सम्पादकः—मूलचन्द किसनदास कापड़िया–सूरत।

वर्ष २३वाँ
अङ्क ७

वीर सं० २४५६
वैशाख.

विषयानुक्रमणिका.

उपहारग्रन्थ वी० पी० से।

"दिगम्बर जैन" के इस २३वें वर्षके दो उपहार ग्रन्थ-**नवरत्न** और **हिन्दी जैन विवाहविधि** तैयार हैं व ८ दिनमें सब ग्राहकोंको २।=) वी० पी० से क्रमशः भेजे जायेंगे।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।=) विशेषांक मूल्य ॥)

સ્વર્ગીય જૈન મહિલારત્ન—

મગનબ્હેન સ્મારક-

ફંડમાં મળેલી સ્વીકારતા.

૬૩૭)	ગયા અંકમાં પ્રકાશિત	
૫)	નેમીચંદ વકીલ	જયપુર
૨૫)	જ્ઞાનવતીબાઇ	ગોહાના
૧૦ાા)	દિ૦ જૈન પંચ	કટક
૫)	મહાદેવી મહાવીરપ્રસાદ	ખતૌલી
૫)	પ્યારેલાલ કન્હૈયાલાલ	કાનપુર
૫)	નાથુરામ ચુનીલાલ	અંજડ
૫)	પં. ગુલાબચંદજી	બડવાની
૫)	બ્ર૦ ફતેહસાગજી	ભીલોડા
૭૦૨ાા)		

"દિગંબર જૈન" ના જે જે વાંચકોએ આ સ્મારક ફંડમાં હજી સુધી પોતાનો ફાળો મોકલાવ્યો નથી તેમને છેવટમાં આગ્રહ પૂર્વક નિવેદન કરીએ છિએ કે સ્વર્ગવાસી જૈન મહિલારત્ન બ્હેન મગનબ્હેન માણેકચંદ જે. પી. નો આખી જૈન સ્ત્રીસમાજ પ્રત્યેનો અનહદ ઉપકાર ધ્યાનમાં લાવી તેના યત્-કિંચિત્ બદલા તરીકે આ સ્મારક ફંડમાં તમારો યથાશક્તિ ફાળો તરતજ જરૂર મોકલાવી આપો. ઓછામાં ઓછા ૫) મોકલનારને "દાનવીર માણેકચંદ નામનો ઘણો મોટો ગ્રન્થ જેમાં ૪૦ ચિત્ર છે તથા ૧૦૦૦ પૃ. છે તે માત્ર આઠ આના. પોસ્ટેજના લઈ ભેટ અપાય છે. હવે આઠ દિવસમાં આ ફંડ બંધ કરવામાં આવશે માટે બ્હેન મગનબ્હેનનું નામ કાયમ રાખવા માટે ખોલવામાં આવેલા આ સ્મારક ફંડમાં યથાશક્તિ રકમ તરતજ મોકલો. નિવેદક—

મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા-સુરત.

આંકલાવ—ના એક ભાઇએ પોતાની ૧૩ વર્ષની પુત્રીની સગાઇ બોધાના ૫૦ વર્ષના એક વૃદ્ધ ભાઇ સાથે કરી છે, તે વિવાહ ન થાય એ માટે મુંબાઇ દિ૦ જૈન યુવકમંડળ પ્રયત્નશીલ છે.

ઉંઝેડિયા—માં પં. દીપચંદજી વર્ણી તથા માસ્તર લલ્લુભાઇના ઉપદેશથી નિર્માલ્ય દ્રવ્ય વેચવું નહીં, લગ્નાદિમાં ભદ્દા ગીતો ગાવા નહીં, આખા ગામમાં ચાહનો બહિષ્કાર, સ્વદેશી વસ્ત્રનો અનેક નિયમ લીધો, ૨૫ ક્ષત્રિયોએ માંસ દારૂ છોડયા, સ્ત્રીઓનું રડવા કુટવાનું બંધ થયું, ને જૈન પાઠશાલામાં રેંટિયો ચાલુ થયો છે.

અમદાવાદ—માં પતાસાની પોળવાળા નૃસિંહપુરા દિ. જૈન મંદિરની વેદી પ્રતિષ્ઠા પં. દીપચંદજી વર્ણીએ સામાન્ય વિધિથી ઘણાજ ઓછા ખર્ચે વૈશાખ સુદ ૩ ને દિને કરાવી હતી જે પ્રસંગે ૩૬) રૂ. બ્ર. આશ્રમને દાન મળ્યું હતું.

"दिगम्बर जैन"

श्री० सेठ छगनलाल उत्तमचंद संगवा जैनी—सूरत।

(देशसेवा करते हुए आपको सवा वर्ष सख्त कैदकी सजा हुई है।)

"जैनविजय" प्रेस—सूरत।

॥ श्रीवीतरागायनमः ।

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम ॥

वर्ष २३वां | वीर सम्वत् २४५६, वैशाख, विक्रम सम्वत् १९८६. | अङ्क ७.

जिनवाणीकी पुकार ।

(१)

शास्त्रोंकी रक्षा नहिं होती, भंडारोंमें सड़े हुये ।
जयधवलादिक ग्रंथ अनूपम, टीका बिन हैं पड़े हुये ॥
हा समाज! भीषण भविष्य अब, तेरा होता जाता है ।
पतितावस्था तेरी लखकर, दुखी हुई जिनमाता है ॥

(२)

दो हजार चारसौ छप्पन वर्ष अभी बीते भाई ।
वर्द्धमान स्वामीने, जब थी मुक्तितिया को परणाई ॥
इन्द्रनारि सुर असुरलोककी जनता, मिलकर सब भाई ।
दीपमालिका करी मनोहर, सब जीवोंको सुखदाई ॥

(३)

भगवन भाषित शास्त्रोंकी गति बुरी हुई है आज यहां ।
मगर अधर्मी जर्मन रखते हैं ग्रंथोंका स्टाक महा ॥
बहु संख्यामें शास्त्र हमारे उनके पास मिलेंगे आज ।
संस्कृत प्रेम उन्हें अनुपम है, हमें नहीं है किंचित लाज ॥

(४)

अब तो यवन राज्य नहिं भाई शास्त्रोंका परचार करो ।
ऐसा अवसर मिलन कठिन है जिनमतका विस्तार करो ॥
जैन बंधुओ अब भी चेतो, समय सु निकला जाता है ।
दुष्ट कृत्य यह देख हमारे, दुखी हुई जिन माता है ॥

रामकुमार सेठी–रतनपुर ।

सम्पादकीय-वक्तव्य

देशकी परिस्थिति। आज भारतवर्षकी परिस्थितिसे संसार परिचित होचुका है। वर्तमानका युद्ध संसारमें एक अनुपम युद्ध है। आजतक किसी देशको स्वाधीनता बिना हिंसा, मारामार या शस्त्र अस्त्रके नहीं मिली। मगर हमारा धर्मप्राण भारतवर्ष मनुष्यतामय युद्धके द्वारा स्वतंत्र होना चाहता है, अहिंसासे स्वराज्य प्राप्त करना चाहता है और दुनियांमें यह सिद्ध कर देना चाहता है कि अहिंसाके अप्रतिहत शस्त्रोंके सामने तमाम भौतिक शस्त्र व्यर्थ हैं। अहिंसाके द्वारा जिस दिन भारतवर्ष हिंसा और अत्याचारोंपर विजय प्राप्त करेगा उस दिन न केवल हिन्दुस्तानको ही शांति मिलेगी किन्तु समस्त संसार सुख और निराकुलताकी गोदमें अपार शांतिका अनुभव करेगा।

संसारके महापुरुष महात्मा गांधीजीने यह अहिंसक युद्ध प्रारम्भ करके भारतवर्षको अहिंसा और वीरताका पाठ पढ़ाया। तथा प्रतियोगितामें बन्दूक तलवार मशीनगनें होते हुए भी निहत्थे देशको निर्भीक और साहसी बनाया।

परन्तु जैसे हिरण्यकशिपुको प्रल्हादकी विष्णुभक्ति भयकारी लगी थी, रोमन साम्राज्यके सत्ताधारियोंको ईशुकी सत्य घोषणामें राजद्रोहकी गंध आई थी, ग्रीसके पुराण पंथियोंको सेक्रेटिसकी प्रवृत्ति भयकारी लगी थी, उसीप्रकार बृटिश सरकारको महात्मा गांधीकी प्रवृत्ति भय-भरी मालूम हुई और उन्हें ४ मईकी रात्रिको १ बजे (!) सोतेसे जगाकर कराडी (नवसारी) ग्राममें सन् १८२७के २५ वें एक्टके अनुसार गिरफ्तार करके यरोडा (पूना) जेलमें अनिश्चित समयके लिये भेज दिया।

* * *

गिरफ्तारीके बाद। उस वृद्ध तपस्वीकी गिरफ्तारीके बाद तो सर्वत्र यही काम चालू होगया! आज भारतवर्षमें प्रत्येक प्रान्तकी जेलें भरी हुई हैं। उनमें अब सभी तपस्वी निवास करते हैं, बड़े२ श्रीमान्, धीमान्, नेता और देशहितैषी वीर उन जेलोंको सुशोभित कर रहे हैं। यहां तक कि अबला कहलानेवाली भारतीय वीर ललनायें भी आज कारावासमें पड़ी हुई स्वतंत्रताका मंत्र जप रही हैं। उनमें श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय, भारतकोकिला सरोजनी नायडू तथा स्वामी श्रद्धानन्दकी प्रपौत्री सत्यवतीदेवीके नाम उल्लेखनीय हैं। जहां ऐसी पवित्र आत्माओंका निवास हो उसे जेलखाना कहनेको हमारा मन स्वीकार नहीं करता!

इसमें कोई संदेह नहीं कि महात्माजी शांति और अहिंसाकी साक्षात् मूर्ति हैं। आपकी गिरफ्तारीके बाद कोई इतना बड़ा शांतिका अधिष्ठाता न रहा। जिसके फलस्वरूप अमुक स्थानोंमें कुछ लोगोंने बलवा प्रारम्भ कर दिया! इधर सरकारने भी अपनी पूरी शक्तिसे दमन करना प्रारम्भ कर दिया है। जिससे लोगोंमें उपसर्ग सहन करनेकी शक्ति आगई, और अहिंसाका भान होगया है। हमारों वीर आज

प्राणोंपर बाजी लगाकर पुलिसकी लाठियोंके बीचमें घसे चले जाते हैं और अपने अहिंसा एवं सत्यके नामपर आंख उठाकर भी नहीं देखते।

***

भारतवर्षको भिखारी बनानेमें मुख्य कारण यही है कि हमारा देश

विदेशी वस्त्र। एक वर्षमें ६०-७० करोड़ रुपयाका वस्त्र विदेशसे मगाता है। हमारे यहां रुई उत्पन्न होती है, सूत काता जासकता है और उत्तमसे उत्तम वस्त्र बनाये जासक्ते हैं, फिर भी विदेशोंमें ६० करोड़ रुपया व्यर्थ भेजना भारी मूर्खता है। इससे आर्थिक हानि तो है ही, मगर धार्मिक हानि भी कम नहीं है। हमारा धर्म अहिंसा है, हमें हर प्रकारसे अहिंसाकी रक्षा करना चाहिये। याद रहे कि विदेशी वस्त्रोंका उपयोग करने वाला एक भारी हिंसाका भागी होता है। विदेशी वस्त्रोंमें चरबीका उपयोग होता है, जिसके लिये जबरदस्त हिंसा करना पड़ती है। अगर आप स्वदेशी वस्त्रोंका उपयोग करने लगे तो यह हिंसा न हो और देशका द्रव्य भी देशमें ही रहे।

यदि आप देश हितैषी हैं, अगर आपको अहिंसासे प्रेम है तो आपको इन बातोंपर पूर्ण ध्यान देना चाहियेः-

(१) हम हाथके द्वारा काते गये और हाथसे बुने हुये वस्त्रका उपयोग करेंगे। अगर हाथकी शुद्ध स्वदेशी खादी नहीं मिलेगी तो मजबूरन देशी मीलमें देशी सूतसे बना हुआ ही वस्त्र उपयोगमें लावेंगे। (२) विदेशी वस्त्रका व्यापार नहीं करेंगे। (३) देव मंदिरोंमें विदेशी कपड़ेका एक टुकड़ा भी काममें नहीं लेने देंगे और कमसे कम वहां तो विशुद्ध खादीका ही उपयोग करेंगे। (४) नित्यप्रति थोड़ा बहुत सूत स्वयं कातेंगे और घर घर चरखा तथा तकलीका प्रचार करेंगे। (५) दूसरोंको देशीवस्त्रसे प्रेम करावेंगे, इत्यादि। हमारी समझसे तो गांव२ की पंचायतें मिलकर विदेशी वस्त्र उपयोगमें न लानेकी आज्ञा करदें तो सबसे अच्छा हो।

अब भारतवर्षके बड़े२ महापुरुष हमारी खातिर या देशके लिये जेलोंकी यातनायें सहन कर रहे हैं तब क्या हमारा कर्तव्य इतना भी नहीं है कि हम कमसेकम अहिंसा धर्मके नामपर या देश हितकी दृष्टिसे शुद्ध स्वदेशी वस्त्र पहिनें? आज निकाभिताका समय नहीं है, मौजशौकका जमाना गया। हमारे भाइयोंको रोटियोंके लाले पड़े हुये हैं, ऐसे समयमें हमारी आंखें खुलना चाहिये। हमारा कर्तव्य है कि अब व्यर्थकी धूमधाम छोड़कर सादा पहिनें, सादा खावें और सादगीके साथ रहें। भड़कीले चटकीले वस्त्रोंको पहिनकर ही बड़े नहीं कहलाते, किन्तु जीवनमें जितनी सादगी आवेगी उतना ही महत्व कहा जावेगा। यही तो हमारा जैनधर्म बतलाता है।

विदेशी वस्त्रोंके साथ ही साथ हमें यह बात भी ध्यानमें लाना चाहिये कि हम जितनी वस्तु भी उपयोग करें वे स्वदेशी ही हों, अपने भारतवर्षकी बनी हुई हों। जो वस्तु देशमें न बनती हों वह विवश होकर विदेशकी ले किन्तु इंग्लैंडकी बनी हुई वस्तु तो उपयोगमें न लाई जावे।

जब हम इन बातोंका दृढ़ संकल्प कर लेंगे तो हमारा देश सुखी बनेगा, उसे भरपेट रोटियां मिलने लगेंगी और हमारे अहिंसाधर्मकी रक्षा होकर देशमें पवित्रता और सादगीका संचार होगा। अगर आप देशद्रोही नहीं हैं और अहिंसाधर्मके उपासक हैं तो इन बातोंपर पूरा ध्यान रखना चाहिये।

* * *

સુરતના સરૈયા જૈની જેલમાં.

આખા હિંદુસ્તાનમાં હિન્દને સ્વતંત્ર કરવાની જે હિલચાલ હિંદના હૃદય-સમ્રાટ્ મહાત્મા ગાંધીજીની આજ્ઞાનુસાર ચાલી રહેલી છે. તેમાં જૈનોનો ફાળો પણ છેજ અને આજ સુધી ઘણા જૈન બંધુઓ જેવા કે—છોટાલાલ ગાંધી, બા. રતનલાલ વકીલ, અયોધ્યાપ્રસાદ ગોયલીય, બા. નેમીશરણજી, અમૃતલાલ શેઠ, મણીલાલ કોઠારી, આદિ જેલ મહેલના મહેમાન બન્યા છે ને અનેકો પકડાયા છે તેવીજ રીતે સુરતના નૃસિંહપુરા જ્ઞાતિના એક અગ્રેસર તેમજ સુરતના જાહેર કાર્યોમાં આશરે ૨૦ વર્ષથી અગ્રગણ્ય ભાગ લેનાર એક નિર્ભીક કાર્યકર્તા તેમજ અમારા અંગત મિત્ર ભાઇ છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા જૈની પણ આજે સાબરમતી જેલમાં સરકારના મહેમાન બન્યા છે. ભાઇ સરૈયાની દેશ અને સમાજ સેવા પ્રત્યેની ધગસ અપૂર્વ છે. એઓ સુરત મ્યુનિસીપાલીટીના એક સભ્ય પણ છે. આપને ઉશ્કેરણીભર્યા બે ભાષણ કરવા માટે સરકારે પકડી સવા વર્ષની સખ્ત કેદની સજા તા. ૧૩-૫-૩૦ ને દિને કરી છે જે તેમણે હસતે મુખડે ગ્રહણ કરી છે. પકડાતી વખતે ભાઇ સરૈયા દેશ પ્રત્યે ને સમાજ પ્રત્યે જે "સ્વદેશી વ્રત લેવાનો સંદેશો આપી ગયા છે તે દરેકે દરેક વાચકે હૃદયમાં કોતરી રાખવાનો છે.

* * *

અભિનંદન.

ભાઇ સરૈયાને અભિનંદન આપવાને સુરતમાં જે જાહેર સભા મળી હતી તેમાં એવો ઠરાવ થયો હતો કે "ભાઇ સરૈયાને સુરત શહેર અભિનંદન આપે છે, અને ઠરાવે છે કે જ્યાં સુધી સંપૂર્ણ સ્વરાજ્ય નહિ મળે ત્યાં સુધી અમે જંપીને બેસવાના નથી ને સરકારને જંપીને બેસવા દેવાના નથી." તથા સુરતના દિગમ્બર જૈનોની એક સભા નવાપરામાં ગુજરાતીને દહેરે તા. ૧૪ મીએ રાત્રે શેઠ ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી (મુંબઇ)ના પ્રમુખપણા નીચે મળી હતી, જેમાં ભાઇ સરૈયાનો સમાજ પ્રત્યેનો સંદેશો વાંચી સંભળાવવામાં આવ્યો હતો તે નીચે મુજબ છે—" આજે અહિંસક યુદ્ધમાં એક પણ જૈન પછાત ન રહેવો જોઇએ. સાચો જૈન જો કોઇ હોય તો તે મહાત્મા ગાંધીજી છે...દુનિયા અત્યારે જે હિંદુસ્તાનના આ અહિંસક યુદ્ધપર દૃષ્ટિ રાખી રહી છે તેમાં સરળતા મેળવી દુનિયામાં અહિંસાના વિજયનો ડંકો વગડાવશો. જે જૈન ભાઇઓ સક્રિય ભાગ લેવા અસમર્થ હોય તેઓ પરદેશી કાપડનો સંપૂર્ણ બહિષ્કાર કરવાનું કોઇ પણ વિસરી જાય નહિ."

એ પછી અનેક વિવેચનો પૂર્વક ભાઇ સરૈયાને અભિનંદન આપવાનો જે ઠરાવ થયો હતો તે નીચે મુજબ છેઃ—

" સુરતના દિગમ્બર જૈનોની આ સભા ભાઇ છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા જૈનીને દેશસેવા કરતાં કરતાં થયેલી સવા વર્ષની સખ્ત કેદ માટે તેમના આ આત્મ ભોગનું અભિનંદન કરે છે. અને એમના આદેશાનુસાર દિગંબર જૈનોને દેશને પગલે ચાલવા તથા કંઇ નહિ તો વિદેશી કાપડનો અને બ્રિટિશ વસ્તુનો બહિષ્કાર કરી બની શકે તો ખાદીજ, નહિ તો મીલનું શુદ્ધ કાપડ અને યથાશક્ય દરેક વસ્તુ સ્વદેશીજ વાપરવાને આગ્રહ પૂર્વક નિવેદન કરે છે." આ ઠરાવ થતાંજ કેટલાક ભાઇ બ્હેનોએ સ્વદેશી વસ્ત્રજ

जैनसमाचारावलि

शोकजनक वियोग—एक निर्भीक, शांत परिणामी, लेखक-वक्ता व सच्चे सुधारक तथा विद्वान पं० ब्रजवासीलालजी-मेरठ जो 'वीर' के प्रकाशनका कार्य अतीव परिश्रम पूर्वक करते थे उनका गत ता० १९ मईको स्वर्गवास हो-गया! आपकी कमी जैन समाजको बहुत खट-केगी। आपकी आत्माको शांति प्राप्त हो यही हमारी भावना है। आपके वियोगके कारण 'वीर' के प्रकाशनमें भी विलंब होगा।

पछार—में पन्नालालजीकी पुत्रीकी शादीमें तेरहद्वीप पूजन विधान व समवसरण विधान धूमधामसे कराया गया था जिससे धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई थी।

कुंथलगिरि—के ब्र० आश्रमको १००) कल-कत्ता पंचायतने प्रदान किये हैं।

अनेकांत—पत्रकी छट्ठी व सातवीं किरण कारणवशात संयुक्त प्रकट होगी।

હવે પછી લેવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી હતી. ભાઇ સરૈયાના સ્મરણમાં જે સ્વદેશી વ્રતનો ઠરાવ થયો છે તેનો અમલ સુરતના તેમજ ગુજરાતના જૈનોએ કરી ભાઇ સરૈયાના સંદેશને સફળ કરવો જોઇએ. દેશના ઉદ્ધારનો માર્ગ વિદેશી બહિષ્કાર અને સ્વદેશી સ્વીકાર સિવાય બીજો એક પણ નથી તે તરફ અમારા પાઠકો દુર્લક્ષ નહિ રાખશે એમ પૂર્ણ આશા છે. ભાઇ સરૈયા જલ્દીથી છુટા થઇ આવી દેશ તથા સમાજ સેવાનાં વિશેષ કાર્ય કરે એજ અમારી આંતરિક ભાવના છે.

मनुष्य गणनामें जैनोंका खाना अलग—हिंदमें प्रति दश २ वर्षमें मनुष्य गणना होती है, उसी प्रकार आगामी ई० सन् १९३१ में मनुष्य गणना होगी। गणनाके फॉरममेंसे जैनोंका खाना जो अलग रहता है कुछ भाइयोंने उसे निकाल देनेकी चर्चा उपस्थित की थी, इससे स्पष्ट खुलासेकी आवश्यक्ता होनेसे जैन सुमति मित्रमंडल रावलपिण्डीने सरकारको खास पत्र लिखकर इस बातका खुलासा पूछा था जिसका उत्तर इंडिया गवर्नमेंटके उपमंत्री ए० व्हीटकरने ता० १९ मईको शिमलासे दिया है कि सेन्सस (मनुष्य गणना) के फार-मोंमें जैनोंकी संख्या अलग बतानेवाला खाना रहता है उसको निकाल देनेका इंडिया गवर्न-मेंटका इरादा नहीं है (अर्थात जैनोंका खाना अलग ही रहेगा)

आदर्श विद्यादान—इन्दौरमें स्व० सेठ गंभी-रमलजी टोंग्याके स्मरणमें ७००) विद्यादानके लिये निकाले गये हैं जिनमेंसे ९०१) तो अलग२ संस्थाओंको भेजे गये हैं, शेषके लिये जहां २ बोर्डिंग व पाठशाला हों वहांके भाई सहायताके लिये सेठ ओमाराम गंभीरमलजी टोंग्या इतवारा बाजार-इन्दौरसे पत्रव्यवहार करें।

देहलीमें—सौभाग्यमल जैन सत्याग्रहीको १ मासकी सजा हुई है।

हिन्द व महात्माजी—के विषयमें 'वर्तमान' देहलीमें ता० ७ अप्रेलको एक ज्योतिषीकी भविष्यवाणी प्रकट हुई थी। वह आज तक बहुत अंशोंमें सच्ची पड़ती आई है। उसमें लिखा

है कि ८ जून तक गवर्नमेंट घनघोर दमन करेगी जिससे लाखों आदमी जेल जांयगे। ८ जूनसे १ जुलाई तक दमनकी तेजी कम होगी। १ जुलाईसे १ सितंबर तक महात्माजीका काम तेजीसे चलेगा व सरकार एक कौनेमें बैठी रहेगी। अंतमें लाचार होकर १ सितम्बरसे ११ सितम्बर तक उसे फिर गिरफ्तारियां करनी पड़ेंगी। जिसमें गवर्नमेंटको जबर्दस्त हानि उठानी होगी तथा वह २१ अक्टूबर और ११ नवम्बरके बीचमें महात्माजीकी शर्तोंको मंजूर कर लेगी। जिसपर १ जनवरीसे १० फर्वरी १९११ के अंदर अमन (चैन) होजायगा।

सदर, झांसीके—जैनियोंने निश्चय किया है कि ता० ६ जूनके बाद जो जैनी भाई स्वदेशी व खद्दरके पकड़े पहने हुए नहीं होगा वह मंदिरके अंदर नहीं जाने पायगा व मंदिरके संपूर्ण कार्योंमें खद्दरका व्यवहार किया जायगा।

जैन शिक्षा मंदिर जबलपुर—के लिये संस्कृत अध्ययन करने वाले छात्रोंकी आवश्यकता है।

अनेकांत पत्र (देहली)—अब विद्यार्थी, लायब्रेरी, स्त्री वर्ग, तीर्थक्षेत्र, पाठशाला, बोर्डिंग आदिको ४) के स्थानमें ३) मूल्यमें दिया जाता है।

विदेशी वस्त्र त्याग—ब्र० सीतलप्रसादजीके उपदेशसे जालंधर छावनीके मंदिरमें १९ स्त्रियोंने यह प्रतिज्ञा की कि हम एक वर्ष तक विदेशी वस्त्र नहीं पहिनेंगे व अब जो खरीदेंगे स्वदेशी ही खरीदेंगे।

सोलापुर—में सेठ माणिकचन्द रामचन्द शाह जैन—सभापति म्यूनिसिपालिटीको सरकारने ६ माह कैद व १००००) का जुर्माना किया है।

धुलिया—के सेठ गुलाबचन्दजी हीरालालने ऑनरेरी मजिस्ट्रेटका व रायसाहिबका पद छोड़ दिया है।

वीर विद्यालय—पपौरा (टीकमगढ़) के लिये १० छात्रोंकी आवश्यकता है।

सूरतमें—भाई छगनलाल उत्तमचन्द सरैया जैनीको १॥ वर्ष सख्त कैदकी सजा हुई है। आप साबरमती जेलमें ब वर्गमें रखे गये हैं।

नागपुरमें—महात्मा भगवानदीनजी भी जेल गये हैं।

बिजनौरमें—हमारी भारत० दि० जैन परिषदके मंत्री बाबू रतनलालजी वकील व बा० नेमिसागरजी वकील भी जेल गये हैं।

अमरावतीमें—सिं० पन्नालालजी पातार व उनकी पत्नी जोरशोरसे सत्याग्रहका कार्य कर रहे हैं। एक दो बार आपके पकड़े जानेकी अफवाह भी उड़ी थी।

दि० जैन युवक मंडल—बम्बई—की एक सभा ता० १८ मईको मंगलदास शाहके सभापतित्वमें हुई थी, जिसमें छगनलाल सरैया जैनी-सूरत जेल गये हैं उनका तथा गिरफ्तार होने वाले चन्दूलाल बलारिया व शेठ बालचन्द हीराचन्दसाका सी० आई० ई० का पद छोड़ देनेके लिये अभिनन्दनका प्रस्ताव पास किया गया था। स्वदेशी वस्तु प्रचारके लिये मंडलमें दो प्रस्ताव पास हुए थे।

१८ सिद्धि—नामक उपयोगी पुस्तक दो पैसेकी टिकिट भेजनेपर सिद्धि जैन कार्यालय ललितपुरसे मुफ्त मिलती है।

नग्न श्यामलाल मुनि नहीं था—छिंदवाड़ामें एक श्यामलाल नामका पागलसा एक दि० जैन चरनागरे भाई रहता है। उसने मूर्खतासे ऐसा नियम लेलिया कि जहांतक मैं जंगलका कानून न तोड़ लूंगा तबतक मैं नंगा रहूंगा। इसी कारणसे उसको सरकारसे तीन माहकी सजा हुई है। परन्तु 'लोकमत' आदि पत्रोंमें जैन मुनिको सजा, ऐसा हाल छप जानेसे दि० जैनोंको अनेक पत्रोंमें इसका खुलासा प्रगट करना पड़ा है कि श्यामलाल दि० जैन मुनि नहीं था। दि० जैन मुनिको नग्न विचरनेकी कहीं भी रोकटोक नहीं है।

आगरामें—कई जैन स्त्रियां स्वयंसेविकायें हुई हैं व उन्होंने अपने विदेशी कपड़े जला दिये हैं।

कपुर्थला—में एक ब्राह्मणने विधिपूर्वक जैन-धर्म ग्रहण किया है।

आचार्य श्री शांतिसागरजी—का संघ अब-तक मथुरा पहुंच गया होगा। संघपति भी मथुरा पधारे हैं।

देहलीमें—अयोध्याप्रसादजी गोयलीय जैनको १ माहकी सख्त सजा हुई है।

अंबालाल साराभाई—अमदावादने कैसरेहिंदका सोनेका चांद सरकारको वापिस कर दिया है।

अंतर्जातीय विवाह—ता० १४ मईको निंग-नूर (दक्षिण)में पंचम व चतुर्थ जातिके बीचमें एक अंतर्जातीय विवाह होगया।

ब्र० प्रेमसागरजी—जबलपुर प्रांतमें भ्रमण करके खादी व स्वदेशीका व्रत लोगोंसे लिवा रहे हैं।

पं० जिनेश्वरदासजी—माथुर जैन कविका ४ मईको देहलीमें देहांत होगया।

राघोगढ़ (ग्वालियर)—में देशसेवक शुद्ध खादी भण्डार १२ माससे चालू है, जिसमें सब प्रकारके शुद्ध खादीके वस्त्र मिलते हैं।

सत्याग्रह प्रेमी—सेठ हीरालाल जैन राघोगढ़ सूचित करते हैं कि जो स्थानीय भाई सत्या-ग्रहमें सम्मिलित होंगे उनके बालबच्चोंको हमारे पास भेजदें, उनके वस्त्र भोजन पढ़ने आदिकी व्यवस्था हम कर देंगे। उनको चर्खा भी सिखायंगे।

स्याद्वाद महाविद्यालय काशी—का २४ वां वार्षिकोत्सव गत २७ अप्रैलको पं० इंद्रदेवजी तिवारी रजीस्ट्रारके सभापतित्वमें होगया। आगामी सालके लिये ४००) का बजट पास हुआ है। छुट्टीके बाद विद्यालय आषाढ़ वदी ९ को खुलेगा। अब औद्योगिक शिक्षाका वर्ग भी चालू होनेवाला है जिसमें वैद्यक व मुनी-मीकी शिक्षा दी अथवा दिलाई जायगी।

कुमारी राजुबाई—(उमडीकर वृषाहूमड़ जैन) खेतीवाड़ी कालेजकी अंतिम बड़ी परीक्षामें पास हुई है।

सूरत—में छगनलाल सरैया जैनने जेल जाते१ अपनी मोटर कांग्रेसको दानमें दे दी थी।

इन्दौरमें—में सेठ गंभीरमलजी टोंग्याका ८८ वर्षकी आयुमें ता० ६ मईको आबूमें स्वर्गवास होगया। ९००००)का दान निकाला गया।

बेरिष्टर चंपतरायजी साहब-के प्रयत्नसे लंडनमें 'ऋषभ जैन फ्री लायब्रेरी' स्थापित हुई है, जिसके मंत्री ऐलेक्झांडर गॉर्डन नियुक्त हुए हैं। बारिस्टर साहब साप्ताहिक सभा करके जैन धर्मके सिद्धांतों पर चर्चा करते हैं।

माहात्मा गांधीजीको-गत ता० ५ मईको सरकारने कराड़ी (जलालपुर)में रात्रिको १ बजे जाकर सोतेसे जगाये थे व तुर्तही वहांसे मोटर व रेलमें बिठाकर येरोडा (पूना)की जेलमें लेगये। महात्माको १८२७का २५वां ऐक्ट लगाकर कैद पकडे हैं व सरकार आपको जबतक चाहें तबतक कैदमें डाल रखेगी!

जैन बालाविश्राम आरा-जो श्री० पं० चंदाबाईजी द्वारा स्थापित है उसका नववां वार्षिकोत्सव अभिषेक पूजनपूर्वक ता० २० मईको श्री० धर्मपत्नी बा० नंदकिशोरजी जैन डिप्टी कलेक्टरके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें छात्राओंके संवाद, खेल व व्याख्यान हुए थे। स्वदेशी वस्त्रके संवादसे तो सभापति व अन्य महिलाओंने स्वदेशी वस्त्र पहिनने व विदेशी न मंगानेका नियम लिया। फिर पारतोषिक बांटा गया व संगीत भजनादि हुए। फिर सबको मिष्टान्न भोज दिया गया व अंतमें श्री० बा० निर्मलकुमारजीकी ओरसे सब (करीब ६०) छात्राओंको एक२ साडी दीगई व सभापतिने १६) आश्रमको भेंट किये। सरस्वतीबाई।

मुनि मुनींद्रसागरजी-नो संघ गिरनार यात्रा करी अमदावाद आवी जइ हाल सोनासण पहोंची जवानी तैयारी छे. चोमासुं सोनासणमां थवा संभव छे.

प्रांतज-मां गांधी नेमचंद उमरचंदे पोतानी पत्नीना स्वर्गवासना स्मरणमां १००) शास्त्रदान माटे काढ्या छे.

साणोदा-मां शेठ कालीदास सांकळचंद तरफथी वेदी प्रतिष्ठा गया मासमां थइ हती जेमां पं. दीपचंदजी, मास्तर लल्लुभाई वगेरेना उपदेशथी १०० स्त्री पुरुषोए मृत्यु पाछळ परगाम रडवा न जवानी ने कोइ संजोगोमां जवुं पडे तो ते गाममां कोइने त्यां न जमवानी प्रतिज्ञा लीधी हती.

टाकाटुका-मां शा. तलकचंद कुबेरदास तरफथी गडिया पानाचंद गुलाबचंदना हस्ते १२३४ व्रतनुं उद्यापन चैत्र वदी ४ थी ११ सुधी थयुं हतुं जे समये ब्र. ज्ञानसागरजी, ब्र. लक्ष्मीचंदजी, मेनाब्हेन वगेरेए पधारी उपदेश आप्यो हतो. मंदिरमां १५००)नी उपज थइ हती. एक दिवस भीलोडाना मेजीस्ट्रेट साहेबना प्रमुखपणा नीचे जाहेर सभा थई हती तेमां आपे विद्यापर उत्तम भाषण आप्युं हतुं. उपदेशथी अत्रे ५० युवक स्त्री पुरुषोए स्वदेशी वस्त्र पहेरवानो अने चाह न पीवानो नियम लीधो हतो.

खडकनी आठ पाठशालाओ-ना विद्यार्थिओने पण बडवाह नि. सेठ नवलचंदजी प्रेमचंदजीनी तरफथी जमण अपायुं हतुं.

पिता जेलमां, पुत्रीना लग्न-अंकलेश्वरना महान नेता श्री. छोटालाल घेलाभाइ गांधी तो येरोडानी जेलमां छे पण तेमनी १५ वर्षनी पुत्री उर्मिलाना लग्न तेमना सगांओए जेलमांथी तेमनी परवानगी मंगावीने कोल्हापुरमां ऑफिसरनी जग्या धरावनार साकरलाल शाह (उमर वर्ष २८) जेओ एमनीज वीसा मेवाडा ज्ञातिना छे:तेमनी साथे अत्यंत सादाइथी खादीमय वैशाख वद ११ ने दिने अंकलेश्वरमां कर्या हता. लग्नमां ढोल तासां के वाजांनो खर्च पण कर्यो नहोतो.

श्राविकाश्रम सोजीत्रा-मां ता. ३० जुन सुधी गरमीनी रजा पडी छे.

श्रुतपंचमी।

(ले०-पं० दीपचन्द्रजी वर्णी-चौरासी, मथुरा)

ज्येष्ठका महिना है, धूप करारी पड़ने लगी है, प्रातःकाल आठ बजेसे ही धूप तेज होनेसे भूमि तप जाती है, जब बजते२ तो लू चलना भी प्रारम्भ होजाता है। श्रीमान् लोग तो नव बजे भोजन पान कर भूवरोंमें (लू के डरसे) जा छिपते हैं और रोशनदानोंमें खसकी टट्टियां लगवाकर जलका छिड़काव कराते व पंखा खिंचवाते हैं। इन दिनों इनकी हालत मोमके पुतलोंके समान हो जाती है। मानों कि धूप लगी और ये पिघले। ठंडाई सोडावाटर लेमन बर्फ आदिसे तर रहते हैं, खाने पीनेमें इनके नखरे देखते ही बनते हैं। भला ऐसे सुकुमारों (कायरों) से कोई देशकी रक्षाका विश्वास कर सक्ता है? कभी नहीं। क्योंकि ये बिचारे जब अपनी ही रक्षा नहीं करसक्ते तब स्वाश्रितजनों, जाति समाज व देशकी बात तो योजनों दूर है।

एक ओरकी तो हुई यह बात, अब दूसरी ओर देखिये कि हमारे कितने भाई इसी कड़ी धूप व लूको सहते हुए, पंखा खींचते हैं पानी छिड़कते हैं, खेतोंमें पसेना किये घूम रहे हैं, ईंट गारा ढो रहे हैं, बोझा उठा रहे हैं, कोई खोनचा फिरा रहे हैं, (वंजी चौरी कर रहे हैं) बिचारे मनुष्योंकी जब यह बात है तो पशु पक्षियोंकी तो कहना ही क्या है? जलाशय सूख जानेसे दूर२ तक पानीका पता नहीं मिलता। घास और वृक्षोंके पत्ते धूपसे सूखकर जल जाते हैं जिससे खानेको नहीं मिलता। फिर भी भार तो ढोना ही पड़ता है और रुकने पर चाबुकोंकी मार खाना पड़ती है। मुंहसे फसूकर गिरता जाता है पर भूखे प्यासे गरम भूमि व रेतीके मैदानोंमेंसे हांकते २ चले जाते हैं। शेर जैसे बली पशु जंगल छोड़कर भाग जाते हैं और पक्षी देशांतरोंमें चले जाते हैं।

जब कि संसारी दीन (कायर) जन इस प्रकार दुखी हुए कर्मोंके भोगोंको भोगते हैं, तब हमारे परम दिगम्बर साधु महात्मा स्वाधीन हुए कायसे ममत्व छोड़कर गिरिके शिखिरोंपर खड़े२ या पद्मासन अचल ध्यान लगाकर उन कर्मोंको जलाकर निर्मूल कर देते हैं, वे ही धन्य हैं। नरजन्मका सच्चा लाहा (लाभ) उन्होंने लिया है।

अथवा जो प्राणी ऐसा तीव्र तपश्चरण करनेमें असमर्थ हैं वे अपने पुत्र-कलत्रादिकोंके साथ रहकर साधुपद पानेकी भावनासे घरमें ही एक देश संयम व्रत व तपका साधन करते रहते हैं। देवपूजा, गुरु (अतिथि) सेवा, स्वाध्याय, रसत्याग, इच्छा निरोध, चतुर्विधि दान, तीर्थयात्रा, विद्वज्जनसम्मेलन आदि कार्योंमें स्वशक्ति अनुसार प्रवृत्त रहते हैं।

इन दिनोंमें स्कूल, कालेज, कचहरियां प्रायः बन्द होजाती हैं; और राजकर्मचारी बड़े२ ओहदेदार आबू मंसूरी पंचमढ़ी शिमला आदि स्थानोंमें चले जाते हैं, जब कि छोटे दर्जेके कम वेतनवाले अपने२ ग्रामोंमें जाकर चित्तकी उमंगोंको मिटा लिया करते हैं। परन्तु जो मुमुक्षुजन हैं, वे तो जो भी समय संसारी झंझटोंसे बचा हुआ पाते हैं, उसे दुर्लभ जानकर धर्मसेवनमें ही बिताते हैं। हमारे पाठकोंके चिरपरिचित "मित्रगण" का भी यही हाल है।

अबकी बार उन्होंने अंकलेश्वर (अतिशय) क्षेत्रकी वंदनाका निश्चय कर रक्खा है। यह क्षेत्र सूरत और भरूचके बीचके स्टेशन बम्बई-अहमदाबाद लाइनपर है। यहां अति प्राचीन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथस्वामीकी अतिशय युक्त प्रतिमा विराजमान है। तथा यहांसे ३ मीलपर सजोद स्थानमें ऐसी ही श्री शीतलनाथस्वामीकी सातिशय युक्त प्राचीन प्रतिमा प्रतिष्ठित है। "इस लाइनसे आनेजानेवाले भाइयोंको तो अवश्य वहां उतर कर दर्शन करना चाहिये।" इसके सिवाय जब कि पूज्य ऋषिजी श्री १०८ भूतबली पुष्पदंतने सिद्धांत ग्रन्थ रचकर तैयार किये थे, तब गिरनारसे लाकर प्रथम यही विराजमान किये थे, और उस दिन श्रावकोंने उनका पूजन विधान करके महोत्सव मनाया था। तभीसे श्रुतपंचमी (जेठ सुदी ५) जगतमें प्रसिद्ध हुई, और शास्त्रोंके लिखने व रचनेकी परम्परा विशेष रीत्या प्रचलित हुई। (जैसा कि विबुध श्रीधर विरचित पंचाधिकार शास्त्रके श्रुतावतार नाम चतुर्थ परिच्छेदसे विदित होता है)।

अपने निश्चयके अनुसार सभी लोग आकर श्री जम्बूस्वामी महाराजकी पवित्र निर्वाण भूमि चौरासी (मथुरा)पर इकत्र होगए और १ दिन यहां पूजन वन्दन किया। तथा यहां स्थित श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम (दि० जैन गुरुकुल)का निरीक्षण परीक्षण करके संतोष प्रगट किया। इसके ध्रौव्यफंड कर देनेकी अपनी सम्मति प्रगट की। १ दिन भोजन भी ब्रह्मचारियोंको कराया, और सहायताका वचन देकर जेपुर, अजमेर, आबू होते हुए अंकलेश्वर आपहुंचे।

अंकलेश्वरमें प्रसिद्ध देशभक्त गांधी छोटालाल घेलाभाई जो १ धर्मात्मा दिगम्बर जैन गृहस्थ (जो अभी सत्याग्रहमें १ वर्ष जेल गये) हैं उनसे मिलकर हर्ष प्रगट किया और यथाविधि श्रुतपंचमी महोत्सव पूजन विधान व्रतादि करके मनाया। रात्रिको दोपहरतक गान भजन होता रहा। बादमें शेष रात्रिजागरण पूर्वक बितानेकी गर्जसे जैन धर्मशालामें सभी मित्र नरनारी सावधान होकर बैठ गए।

इतनेमें आदर्श ब्रह्मचारी श्रीयुक्त सुशीलकुमार भी इस सम्मेलनमें सम्मिलित होनेको, उदासीन, खादीके मोटे वस्त्र पहिने, हाथमें पानीका पीतलका कमंडलु और बगलमें पुस्तक व चटाई लिये हुए आये। सबने उनका खड़े होकर स्वागत वंदन किया। आपने "दर्शनविशुद्धिर्भवतु" कहकर आशीर्वाद दिया पश्चात् बैठकर इस प्रकार संवाद प्रारम्भ हुआ।

आ० ब्र०—पिता माताओ! आप मेरे जन्मदाता व पालन करनेवाले परमोपकारी हैं। मुझ बालकके लिये इतना सत्कार पुरस्कार आपके

द्वारा पाना इष्ट प्रतीत नहीं होता।

मथ—ब्रह्मचारीजी! यह सत्य है कि आपके कर्मोदयसे प्राप्त इस आपके शरीरके उत्पादक व पालक पोषक हम दम्पति किसी अपेक्षासे कहे जाते हैं। परन्तु आपके आत्माका तो कोई उत्पादक निमित्त नहीं है? वह तो स्वयंसिद्ध अनादि निधन है। इसके सिवाय जबतक आपने अपने आत्माको पहिचानकर उसकी प्राप्तिके लिये संयम मार्गमें पग नहीं रखा था, तबतक व्यवहारसे हमलोग भी बड़े (गुरुजन) कहाते थे। परन्तु हम तो जहां थे, वहीं रहे और आप हम लोगोंको पीछे छोड़कर आगे निकल गये हैं। इसलिये आप संयमवृद्ध हैं, हमारे चारित्र-गुरु हैं। वास्तवमें कोई उमरमें बड़ा होने मात्रसे बड़ा नहीं होसक्ता किन्तु ज्ञान संयमादि गुणोंमें बड़ा होनेसे ही बड़ा गिना जाता है अतएव संयम की विनय करना हमारा धर्म है।

आ० ब्र०—नतमस्तक हो चुप हो रहा। पश्चात् मिट्ठनलालने पूछा क्यों ब्रह्मचारीजी! यह श्रुतपंचमी पूर्व कब, कैसे और क्यों प्रसिद्ध हुआ? सो कृपा करके बताइये।

आ० ब्र०—जी माईसा०! प्रश्न तो सामायिक है, अच्छा सुनिये, मैंने जैसा सुना व बांचा है तदनुसार संक्षेपसे कहूंगा—(सब सुनने लगे)

सुनिये! इसी भरतक्षेत्रमें वामदेशमें एक वसुन्धरा नामकी सुन्दर नगरी थी, वहां नरवाहन नामका राजा अपनी सुरूपा नामकी रानी सहित राज्य करता था। परन्तु पुत्र न होनेसे चिंतित रहा करता था। उसी नगरमें १ सुबुद्धि नामका राजश्रेष्टि रहता था। उसने राजाको उपदेश दिया कि यदि आप पद्मावतीकी आराधना करें और जैनधर्मकी सेवा करें तो पुत्र होगा।

राजाने सेठके कहे अनुसार किया और पूर्व पुण्यके योगसे उनको पुत्ररत्नकी प्राप्ति हुई। जिसका नाम पद्म रक्खा। पश्चात् राजाने दश-हजार स्तंभों और चार शालाओंसे मंडित एक सहस्रकूट चैत्यालय कराया, जिसकी प्रतिवर्ष यात्रा महोत्सव करता था।

तदनुसार वसंत ऋतुका समय आगया। और राजाने पूजामहोत्सव पूर्वक रथयात्रा करके श्रीजीको सिंहासनपर विराजमान किया। इसी अवसरपर श्री परम दिगम्बर मुनिमहाराजोंका संघ भी उनके पुण्योदयसे वहां आगया। सो राजा प्रजा सहित वंदनार्थ गया। और वहां अपने मित्र मगधाधिपतिको मुनिस्वरूपमें देखकर विरक्तचित्त होकर सुबुद्धि श्रेष्टि सहित मुनि होगया। इनका दीक्षा नाम क्रमशः भूतबलि और पुष्पदंत रक्खा गया। इसी अवसरमें गिरनार पर्वतकी ओरसे १ पत्रवाहक वहां आया, वंदना करके श्री धरसेनाचार्य मुनिराजका पत्र दिया। जिसमें लिखा था कि मुझको अग्रायणी पूर्वके पंचम वस्तुका ज्ञान प्राप्त है और मेरी आयु अल्प है, अतएव कोई दो तीक्ष्णबुद्धि मुनि मेरे सन्निकट आकर इस व्याख्यानको सुन लेवें तो अच्छा हो, और इसकी परम्परा चलती रहे।

तब उक्त दोनों मुनिराज भूतबलि और पुष्पदंत गिरनारिकी ओर विहार कर गये और वहां पहुंचकर श्रीधरसेनाचार्यके निकट रहकर उक्त व्याख्यान सुना। यह व्याख्यान अषाढ़ शुक्ल

एकादशीको पूर्ण हुआ पश्चात् श्रीवीरसेन स्वामीने इनको विदा करके सन्यास धारण करलिया और ये दोनों मुनिपुंगव विहार करके क्रमशः अंकलेश्वर नगरमें पधारे। वहां ठहरकर इन्होंने उसकी षडंग रचना करके शास्त्ररूपसे लिखाकर लेखकोंको संतोषित कराया, और इसी ज्येष्ठ शुक्ला पंचमीको उस शास्त्रका संघसहित श्रावक जनोंने पूजामहोत्सव किया, तथा स्वशक्ति अनुसार व्रतोपवास भी धारण किये। तभीसे यह महान पुण्योत्पादक श्रुतपंचमी महोत्सव संसारमें विख्यात हुआ।

हम लोगोंको भी इस दिन यथाशक्ति व्रत विधान, उपवास तथा श्री वीरप्रभुकी वाणीका सर्व साधारण जनतामें प्रचार करनेके लिये यत्न सोचना चाहिये और उन उपायोंको कार्यमें परिणत करनेके लिये तन मन और धन लगाकर जुट जाना चाहिये।

मिट्ठन–महाराज! यह तो जाना, अब दो एक बातोंकी शंकाका निराकरण और कर दीजिये।

आ० ब्र०–कहिये २।

मिट्ठन–नीच और ऊंच किसे कहते हैं?

आ० ब्र०–जिसका आत्मा मिथ्यात्व और विषयकषायोंसे लिप्त होरहा है, जो सदा जुआ आदि व्यसनासक्त है। जो हिंसादि पापोंमें पतित होगया है, वही नीच है। और जिसने मिथ्यात्वको त्यागकर व्यसन और पापोंको छोड़ा है, अपने आत्मासे विषय और कषायभावोंको ढूंढकर निकाल रहा है, वह ऊंच है और कर्मरहित सिद्ध तथा सर्वोच्च है।

मि०–तब जाति वर्णसे ऊंच नीच न ठहरा?

आ० ब्र०–नहीं, देखो सम्यक्त्वसे शुद्ध चांडाल शरीरधारी आत्माकी देव पूजा करते हैं। परन्तु मिथ्यात्वी ब्राह्मण क्षत्री वैश्यको निम्न स्थान बताया है। और भी सुनो, पूज्यपादाचार्य क्या कहते हैं–

जातिलिंगविकल्पेन येषां च समयाग्रहः।
तेऽपि न प्राप्नुवन्त्येव परमं पदमात्मनः॥

अर्थात्–जो जाति व भेष आदिके दुराग्रहमें पड़े रहते हैं वे परमात्मपदको प्राप्त नहीं होते। व्यवहारमें ब्राह्मण, क्षत्रियादि वर्ण जातिवाले उच्च व शूद्र नीच माने जाते हैं। इसका अर्थ भी यही है। सुनो कविवर बनारसीदासजी वर्णोंकी क्या व्याख्या करते हैं?

जो निश्चय मारग गहे, रहे ब्रह्म गुण लीन।
ब्रह्म दृष्टि सुख अनुभवे, सो ब्राह्मण परवीन॥१॥
जो निश्चय गुण जानके, करे शुद्ध व्यवहार।
जीते सेना मोहकी, सो क्षत्री भुज भार॥२॥
जो जाने व्यवहार नय, दृढ़ व्यवहारी होय।
शुभ करणी सो रम रहे, वैश्य कहावे सोय॥३॥
जो मिथ्यामत आदरे, रागद्वेषकी खान।
बिन विवेक करनी करे, शूद्र वर्ण सो जान॥४॥
चार भेद करतूति सो, ऊंच नीच कुल नाम।
और वर्णसंकर सबे, जे मिश्रित परिणाम॥५॥

क्या आप नहीं जानते है कि ऊंच वर्णोंमें जन्म लेनेवाले व्यसनासक्त जुआदी सट्टाबाज आदि मनुष्योंकी प्रतीत नहीं रहती? वे पतित और आदर रहित होजाते हैं। परन्तु सदाचारी सच्चा एक शूद्र भी आदरकी दृष्टिसे देखा जाता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्यको उच्च बननेके लिये (जैसा कि उसका जन्मसिद्ध अधिकार है) मिथ्यात्व, व्यसन, पाप, तथा विषय कषायोंको अपने आत्मासे हटाना चाहिये।

मि०—तो क्या शूद्र भी ऊंच होसक्ता है ?

आ० ब्र०—हां ! अवश्य होसक्ता है, हमारे पूर्वाचार्योंने पशुओं तकको व्रत देकर श्रावक बनाया है। इसके अलावा यदि यह कह दिया जाय कि तुम शूद्र हो कुछ नहीं कर सकते, ऊपर नहीं चढ़ सकते, तो वे विचारे कायर होकर अपने आपको सुधारनेका प्रयत्न करनेसे वंचित रह जाते हैं। इसलिये उनकी शक्तिको विकसित न होने देनेका महापातक भी उन्हीं लोगोंको लगता है, जो कि उनको उठनेसे रोकते है। और भैया ! धर्म मार्ग तो सबके लिये सदैव खुला हैं, उस ऊँच-नीच ही क्या ? धर्म सेवन करनेसे कुत्ता भी देव और अधर्मसे देव भी कुत्ता होजाता है। इसलिये व्यर्थका जाति या वर्णका मद करके किसी आत्माके श्रेय मार्गको रोकना पाप है।

सब—वाह ! क्या अच्छी बात कही !

आ० ब्र०—और कुछ पूछिये।

मि०—ये वर्ण और जातियां क्यों चलीं ?

आ० ब्र०—वर्ण तो कर्मसे चला, और जाति व्यवहारमें निर्वाहार्थ कल्पना करली गई। वास्तवमें संपूर्ण मनुष्य मात्र एक मनुष्य जातिके जीव हैं।

मि०—आजकल विवाह विषयक बड़ा वादविवाद चल रहा है, सो उसमें आपका क्या मत हैं ?

आ० ब्र०—भाई ! मुझे इस विषयसे कोई सम्बंध नहीं। मैं तो कृतकारित और अनुमोदनासे इस पर्याय भरको इसका त्याग कर चुका। अब जिसे विवाह करना कराना हो, वह जाने। मुझसे और धर्म वार्ता कीजिये।

मि०—पारस्परिक विवाद (कषाय) मिटाना भी तो धर्म है।

आ० ब्र०—अवश्य है, परन्तु मेरी रुचि इस विषयमें चर्चा करनेकी नहीं है। जो मत जिनसेनादि आचार्योंका है, मैं उसमें सहमत हूं। आप इसके लिये आदिनाथपुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराण, पांडवपुराण, आदि ग्रन्थ देखिये। और पं० दौलतरामजी आदि प्राचीन भाषाकार विद्वानोंने जो अर्थ किया है, उसीकी श्रद्धा कीजिये। आजकलके पंडितोंकी तू तू मैं मैं में न पड़िये, इसीमें श्रेय है। अच्छा अब तो मैं जाता हूं, थोड़ी देर प्रमाद दूर करूँगा। पश्चात सामायिकका काल आनेवाला है। दर्शनविशुद्धिः।

ब्रह्म०के जानेके बाद टेकचंदने कहा कि पिछले प्रश्नका उत्तर खुलासा नहीं हुआ। तब जैचंद बोले—

जै०—भैया खुलासा ही है, पिसेको पीसना ही क्या ? विजातीय अन्तर्जातीय और असवर्ण आगम विरुद्ध नहीं है, लोकविरुद्ध अवश्य माना जाता है, और विधवाविवाह तो बेजोडसी ही बात है। विवाह कन्याका ही होता है, ऐसा ही ग्रन्थोंमें बांचा सुना है। और ब्रह्मचारियोंको इस वादविवादमें काल लगानेसे कुछ काम नहीं। हमें भी उनसे ऐसे प्रश्न न करना चाहिए। उनके उपदेश सुननेके लिये और बहुत विषय हैं। इन विवाहादि संसारिक विषयोंमें हमलोग स्वयं निर्णय आगमके अनुसार कर सके हैं। जो आचार्य लिख गये और प्राचीन पंडित अर्थ कर गये हैं वही प्रमाण है। अच्छा अब कुछ देर आराम करलो। जय जिनेन्द्रदेवकी।

राजा खारवेल और उसका वंश।

(लेखक-श्री० बाबू कामताप्रसादजी-अलीगंज।)

कलिङ्ग—चक्रवर्ती राजा खारवेल ईस्वी पूर्व दूसरी शताब्दिके लगभग हुये हैं। सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्यकी तरह वह भी एक पक्के जैन राजा थे। वह जितने ही वीर थे, उतने ही धर्मात्मा थे। उनका पता अभीतक किसी जैन ग्रंथमें तो चला नहीं है। पर हाँ, उन्हींके समयका उकेरा हुआ उनका शिलालेख उनके जीवनचरित्रको प्रकट करनेमें आज एकमात्र हमारा सहायक है। अभाग्यसे वह भी समयकी कृपासे इतना अस्पष्ट होगया है कि सुगमतासे उसको ठीक २ पढ़ लेना कठिन है। विद्वानोंने वर्षों कोशिश करके उसे तरह तरहसे पढ़ा है। खैर उस सबसे इस समय हमें मतलब नहीं है। हमें देखना है कि उनका वंश क्या था?

शिलालेखमें उन्हें चेदिवंशज महामेघवाहन ऐल खारवेल लिखा है और इससे स्पष्ट है कि वह चेदिवंशके नररत्न थे। महामेघवाहन और ऐल उनके विरुद थे। यह क्यों थे? इसका उत्तर मि० जायसवालने हिन्दू पुराणोंके आधारसे यह दिया है कि वह कौशलके राजा ऐलसे सम्बन्धित थे और कौशल (दक्षिण) में एक राजवंश था जो 'मेघ' नामसे परिचित था। उसीका अधिकार कलिङ्गमें हुआ। अतएव उसके कारण ही खारवेलकी 'महामेघवाहन' उपाधि समझना ठीक है। हमने जैन हरिवंशपुराणसे इस मतकी पुष्टि की; क्योंकि राजा ऐलेयके वंशज अभिचंन्द्रको विन्ध्याचलके पृष्ठ भागमें चेदिराष्ट्रकी स्थापना करते वहां लिखा है।

इसके विपरीत एक श्वेतांबर मुनि किसी संदिग्ध थेरावलीके आधारसे खारवेलका वंश चेट बताते हैं और उन्हें वैशालीके राजा चेटकसे सम्बन्धित करते हैं। श्वे० थेरावलीके इस मतका खण्डन हमने 'अनेकान्त'की किरण ९ में किया और अपने उक्त मतको भी प्रकट किया। किंतु 'अनेकान्त'के प्रवीण संपादकने हमारे लेखपर कई आपत्तियां की हैं। उनका उत्तर उसी पत्रमें छपता तो ठीक था; परन्तु उक्त संपादक महोदयका अपनी संपादकीय टिप्पणियोंके विरुद्ध लिख छाप देना मुझे अशक्य जंचा; क्योंकि पिछले सायकेसे मैं इस ही नतीजेको पहुंचा हूं। 'अनेकान्त'की ४ थी किरणमें मेरा एक नोट खारवेलके लेखकी १४वीं पंक्तिके सम्बंधमें प्रकट करके मान्य संपादकने एक उपहास सा किया है और यह जाहिर किया है कि मानो उस पंक्तिका विशेष सम्बन्ध श्वेतांबरीय सिद्धांतसे है और इस सम्बन्धमें उन्होंने मि० जायसवालका वह अर्थ भी पेश किया है जिसमें 'यापज्ञापक' शब्दका अर्थ जैन साधु करके, उन साधुओंको सवस्त्र प्रकट किया गया है।

मैंने इसपर उनको लिखा कि पूर्वोक्त नोटको उस हालतमें ही प्रकट करनेको मैंने आपको लिखा था जब कि आप सन् १९१८ में जो इस पंक्तिका नया रूप प्रकट हुआ है, उसे देखकर इसे ठीक करलें। अतः आप इस बातका संशोधन प्रकट करदें और आप जो जायसवालजीके अनुसार यापज्ञापक शब्दसे जैन साधुओंको सवस्त्र प्रकट

करते हैं सो ठीक नहीं; क्योंकि बाण्ड्रायक शब्दके अर्थ जैन साधु काल्पनिक हैं—किसी प्रमाणाधार पर अवलम्बित नहीं है। किन्तु सम्पादक महोदयने इस संशोधनको प्रकट करनेकी कृपा नहीं की। इसीमें प्रस्तुत लेख "दिगम्बर जैन" में भेजनेको बाध्य हुआ हूं। मुझे विश्वास है कि मुख्तार सा० मुझे इस धृष्टताके लिये क्षमा करेंगे।

खारवेलके वंशको श्वे० थेरावलीके अनुसार चेट न माननेके लिये मैंने नौ कारण बताये थे; किंतु उनमेंसे सिर्फ ८ व ९ नं० के कारणोंपर ही आपत्ति की गई है और कहा गया है कि सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध नामक स्थविरोंका खारवेलकी बुलाई हुई सभामें 'मौजूद होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।' तथापि देवाचार्य, बुद्धिलिंगाचार्य, धर्मसेनाचार्य व नक्षत्राचार्य (दिगम्बर)का भी उस सभामें मौजूद रहना उचित समझते हैं। मुख्तार सा०के इस मतको स्वीकार कर लेनेपर भी, थेरावलीका इस सम्बन्धमें आपत्तिजनक होना निःशेष नहीं होजाता; क्योंकि उसमें उन आचार्योंका उल्लेख है जो दिगम्बरोंमें मिलते हैं और किसी श्वेतांबरी पट्टावलीमें जिनका नाम नहीं है। अतएव इस थेरावलीको नई कृति मानना उचित है। साथ ही यह मानना होगा कि खारवेलने अपनी सभा अपनी मृत्युसे पहले बुलाई थी और वी० नि० सं० ३३० में थेरावली उनकी मृत्यु बताती है। इस दशामें न धर्मसेनाचार्य और न नक्षत्राचार्य अंगज्ञानके धारक होने रूपमें उसमें सम्मिलित होसके हैं, और चूंकि वह सभा अंगज्ञानके उद्धारके लिये एकत्र की गई थी; इसलिये उसमें अंग ज्ञानियोंका पहुंचना विशेषतः उचित जानकर ही श्वे० थेरावलीकारने उनका उल्लेख किया कहना ठीक है। तब साधारण रूपमें उनका पहुंचना न पहुंचना बराबर है। अतः थेरावलीको जाली मानना अनुचित नहीं है और जब श्वे० उसे मूलरूपमें दिखानेको तैयार नहीं हैं, तब हमारा उसे जाली कहना बिल्कुल ठीक है।

अब रही बात 'हरिवंशपुराण' के उक्त उल्लेखके अनुसार खारवेलका सम्बंध ऐलेयसे बतानेकी; सो इस संबंधमें आपत्तिकरण फिजूल हैं। यह ग्यारह लाख वर्षकी पुरानी बात है तो कुछ हर्ज नहीं। राजघरानेमें तो इससे भी पुरानी२ बातोंका उल्लेख मिलता है। स्वयं भगवान ऋषभनाथके वंशसे संबंध बतानेवाले क्षत्री आज मौजूद हैं और इतिहासज्ञ विद्वान भी इस बातको प्रकट करते हैं। इसीलिये यह उल्लेख बहुत प्राचीन होनेके कारण ही अमान्य नहीं ठहराया जासक्ता।

मुख्तार सा० हरिवंशमें 'ऐलवंश' के उल्लेख न होने मात्रसे हमारे कथनको शकट छल ठहराते हैं—परन्तु खारवेल तो अपनेको 'ऐल' प्रकट करते ही हैं। और हमने अपने लेखमें किसी 'ऐलवंश' का उल्लेख नहीं किया है। हरिवंशपुराणमें 'हरिवंश' का वर्णन करनेकी प्रधानता है—उसमें अन्य वंशोंका सामान्य परिचय होना भी कठिन है। तो भी सामान्यतः ऐलेयके वंशज अभिचन्द्र द्वारा चेदिवंशकी स्थापनाका उल्लेख उसमें है ही और खारवेल अपनेको चेदिवंशका लिखते ही हैं—फिर उन्हें

ऐलेयकी सन्तानमें न मानना कैसे ठीक है ? भले ही किसी 'ऐलवंश' का नाम न मिले—वह मिले भी कैसे ? जब कि उसके उत्तराधिकारियोंने एक दूसरे वंश चेदिकी स्थापना करली थी। तिसपर ऐलेयकी सन्तान उस हरिवंशका उल्लेख अपने लिये क्यों करती; जिसमें उनके पूर्वज ऐलेयके पिता दक्षने कन्याको पत्नी बनानेका दुष्कर्म किया था और ऐलेयको उनसे अलग होकर अपने बाहुबलसे स्वाधीन राज्य स्थापित करना पड़ा था। इस दशामें हरिवंशसे अपनेको अलग बतानेके लिये एवं अपने बहादुर पूर्वज ऐलेयका नाम कायम रखनेके लिये चेदिवंशजोंका अपने नामके साथ 'ऐल' विरुद धारण करना ठीक है। इस दशामें उन्हें ऐलवंशज कहना ही ठीक है। अतः खारवेलको राजा ऐलेयसे सम्बन्धित बताना कोरा छलछल नहीं है—बल्कि यथार्थ बात है।

हमें सांप्रदायिकताकी रक्षाका जरा भी ख्याल नहीं है; बल्कि जो बात सत्य है उसीको पुष्टि देनेका हमारा प्रयास है। मुख्तार सा० न माने क्यों दिगम्बर संप्रदायके ग्रंथोंकी सत्य बातसे भी हिचकते हैं और उसके सम्बन्धके महत्व वाली साहित्यको 'अनेकान्त' में पुष्टित्वान देनेसे झिझकते हैं। खेद है, मुख्तार सा० हमारे संप्रदायिक पक्षपातका एक भी उदाहरण न देकर वृथा ही हमपर आक्षेप करते हैं। इस कृपाके लिये हमारे पास सिवाय धन्यवादके और कुछ नहीं है। इति

अभिमान।

कहा एक चींटीने मुझसे,
देखो मैं कैसी गुणवान।
लेती खोज अन्नके कणको,
मेरा बिल है महल महान॥
वेश कीमती अन्न कणोंसे,
मेरा खजाना मेरा जान।
मुझसा होगा कौन यशस्वी,
निपुण, भाग्यशाली धनवान॥१॥

तुच्छ घमण्डी चींटीकी ये,
बातें सुन मैं खूब हँसा।
पर सोचा फिर ज्ञानी नरको,
भी है ऐसा गर्व नशा॥
पा कुछ टुकड़े तुच्छ धातुके,
खुदको मानें वह गुणवान।
विनाशीक निज तुच्छ घरोंसे,
जगमें निजको गिने महान॥२॥

× × ×

चक्रवर्तिके वैभवकी भी,
नहीं लोकमें महिमा है।
विश्व बीच इस वसुन्धराकी,
सिन्धु-बिन्दु समसीमा है॥
क्षुद्र बुद्धि पश क्षणिक वस्तुका,
रे मानव! घमण्ड कर मत।
वर्तमान ना सदा काल है,
नहीं देश है निखिल जगत॥३॥

"चन्द्र" झालरापाटन शहर।

जंगलमें मंगल।

[लेखक-नथमल पी० जैन सुप्रिन्टेन्डेन्ट दि० जैन बोर्डिङ्ग-उदयपुर]

महाराणा प्रतापसिंहने, जो वीरता दिखाई।
आखिर है कुल जहांमें, कैसे छिपे छिपाई॥

प्रिय सज्जनो! इस मेवाड़ भूमिकी अखण्ड कीर्तिरूपी ज्योति यहांके वीर और वीराङ्गनाओंसे संसारमें देदीप्यमान है, परन्तु महाराणा प्रतापसिंहसे ज्यादा गौरववाला शायद ही कोई हुआ होगा कि जिनके कीर्तिरूपी सूर्यसे उनके पिता उदयसिंहकी कलंकरूपी रात्रि भाग गई। संवत १६१७ में पिताका स्वर्गवास होनेपर अपने चरण कमलोंसे राज्यगद्दीको पवित्र किया। राज्यारोहणके समय मेवाड़ भूमि यवनोंकी परतंत्रताकी बेड़ीमें जकड़ी हुई थी। महाराणाजीने मातृभूमिका उद्धार करनेके लिये ये कड़ी प्रतिज्ञाएं की थीं कि:—मैं सोनेके पात्रमें भोजन नहीं करूंगा, बिछोनेपर न सोऊंगा, डाढ़ी न रखूंगा और जंगलोंमें वास करूंगा इत्यादि।

प्रिय सज्जनो! इस प्रतिज्ञासे पुराने जमानेके राजा और प्रजाका अपूर्व प्रेम, देशाभिमान, मातृभूमिका प्रेम इत्यादि प्रत्यक्ष रूपसे झलकते हैं। क्या राणाजी चाहते तो प्रजाको नष्टभ्रष्ट नहीं कर सकते थे? अवश्य कर सकते थे। परन्तु उस वीरवरने प्रजाके दुखको अपना ही दुःख समझा। वे पूर्णरूपसे जानते थे कि राजा और प्रजाका प्रेम, पिता पुत्रके समान, गाय बछड़ेके समान है। जिस प्रकार पिता पुत्रका पालन करता है, उसी प्रकार राजा प्रजाको पालन करे। महाराजा रामचन्द्रजीने भी अपने पुत्रोंको समझाया था कि:—

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवश नरक अधिकारी॥"

ऐसी नीति मनमें विचार कर राणाजीने प्रजा व देशके रक्षणार्थ अपने तन, मन, धनको तिलाञ्जलि देदी। इस विकट समयमें हमारी भारत माताका उद्धार करनेके लिये उन्हीं जैसे वीर आत्माकी जरूरत है। क्या वे फिर भी इसमें पदार्पण करेंगे और इस उजड़े हुए भारतको फिरसे हरा भरा बनायेंगे? ऐसे वीर रत्नको पाकर मेवाड़के गौरवका तो पूछना ही क्या है परन्तु सारमें भारतने ऐसे वीरवरको पाकर संपूर्ण भूमण्डलको नीचा दिखा दिया था।

महाराणाजी इस प्रतिज्ञापर दृढ़ रहते हुए; २५ वर्षतक मेवाड़ उद्धारके लिये हजारों दुःखोंका सामना करते हुए वनमें रहे। वनमें महाराणाका भोजन इस प्रकार बनता था—

"कन्दमूल (!) फल खट्टे मीठे कडुवे जैसे पाते थे।
देते सबको बांट बचे बाकी पीछे खुद खाते थे॥
कभी कन्द फलफूल मूल जंगलमें नजर न आते थे।
सुत, रानी, सामंत सहित लंघन कर तब रह जाते थे॥१॥

धन्य है ऐसे उस वीरको जिसने अपनी प्रजाके लिये इतना कष्ट उठाया। आज कल भी उद-

यपुरके महाराणा साहबमें बड़ी प्रेम प्रजाकी तरफ देखनेमें आया है। विगत वर्ष वर्षा अधिक होनेके कारणसे "पिछोला" नामक तालाबमें बेहद पानी भर जानेके कारण प्रजाके कुछ लोगोंके होसहवास गायब होगये थे परन्तु महाराणा फतेसिंहजी अपने महलोंको छोड़कर अपने बापदादोंकी रीतिके अनुसार प्रजारक्षणार्थ तालाब पर अन्नजल छोड़कर रक्षाका उपाय सोचने लगे। आपने यह दृढ़ प्रतिज्ञा की थी कि जबतक प्रजाकी रक्षाका उपाय न होगा तबतक मैं अन्नजल ग्रहण नहीं करूंगा। धन्य है इन महाराणा साहबको जिन्होंने अपने दादाओंके प्रणके समान प्रण कर दिखाया। आखिर अपना लाखों रुपयोंके बगीचे बिगड़नेका विचार न करके प्रजाके रक्षार्थ बगीचेमें पानी निकलनेका रास्ता बनवाया। यह क्या ही अच्छा प्रजाप्रेमका ताजा उदाहरण है?

महाराणाजीके ऊपर यवनोंका घनमण्डल उमड़ २ कर आता था। परन्तु वीरवरकी भुजाओंके बलरूपी वायुसे छिन्नभिन्न होजाते थे। जब मेवाड़पर यवनोंका टिड्डीदल बराबर आता ही रहा तब राणाजीने अपनी प्रजाको यह हुक्म दिया कि पहाड़ोंमें जाकर बसो, खेत जोतना छोड़दो और उनमें गायें भेड़ें भी मत चराओ। राणाजीका इससे यह मतलब था कि इस पवित्र भूमिकी चीजोंसे दुष्ट यवनोंका भरणपोषण न हो। महाराणाजीने केवल प्रजाहीको जंगलोंमें दुःख उठानेको नहीं भेजा था, परन्तु आप भी उस दुःखके साथी हुए थे। यह क्या ही अच्छा प्रजाप्रेमका आदर्श है। राणाजी यवनोंको बराबर हराते गये।

जयपुरके राजा बिहारीमलने अकबरको अपनी लड़की १६१० ई०में ब्याहकर मित्रता करली। यहींसे हिन्दू मुसलमानोंका खून मिलना शुरू होगया। इनका पोता मानसिंह अकबरका बड़ा भारी सेनापति हुआ। सब राजा महाराजाओंने मुगलोंके सामने शिर झुका दिया परन्तु इन दो देशोंके वीरोंने अपना शिर न झुकाया अर्थात् बून्दी और मेवाड़के राणाओंने हिन्दुओंका गौरव रक्खा। उस समय किसी कविने कहा है कि:—

> "बड़े बड़े भूपाल, हिम्मत अपनी हारके।
> बेटी बहन विशाल, यवननको ब्याहन लगे॥
> केवल राना एक, निज भुजदंडन जोरसे।
> राखी अपनी टेक, हमि यवनन नहि दुखपने॥

एक समय राजा मानसिंहजी शोलापुरसे जीतकर लौट रहे थे उस समय वे मेवाड़में आये और राणाजीसे यह कहा कि:—

> समाचार भेजा तुरत, नृप प्रतापके तीर।
> करहु अतिथिसत्कार वर, धीर वीर गंभीर॥

राणाजीने अपने पुत्र अमरसिंहसे कहा कि बेटा! इनके लिये भोजन इत्यादि तैयार कराओ। अमरसिंहने उदयसागर पर भोजन तैयार कराया। भोजनके समय राणाजीने यह बहाना बना लिया कि मेरे शिरमें दर्द है। मानसिंह अपने मनमें समझ गया कि राणाजी मेरे साथ भोजन करना नहीं चाहते, गुस्सेसे भरकर यह कहते हुए चला गया;—

मान औ मर्याद गर ना चूर करदूं आपकी ।
तो नहीं मैं मानसिंह हूं और कुछ दिन रक्खो धीर ॥

राजा मानसिंहने अकबरको मेवाड़ जीतनेकी लालसामें फंसाकर मेवाड़पर चढ़ाई करवा दी। सलीमके सेनापतित्वमें यवनोंने मेवाड़पर बड़े जोरशोरसे धावा मारा। इसमें महाराणा भी अपने परमप्रिय चेतक नामक घोड़ेपर बैठकर कुछ सामंतोंके साथ यवनोंका दमन करनेके लिये संवत १६३२में हल्दीघाटीके रणक्षेत्रमें उतरे, घनघोर युद्ध प्रारम्भ हो गया। महाराणाने अपने घोड़ेके सलीमके हाथीके मस्तकपर दो पांव रखवा दिये और भाला मारनेको उठाया तो हाथी भाग गया। इस समय राणाजीको शत्रुओंसे घिरा देखकर "झाला" के राजाने अपने ऊपर मेवाड़का छत्र धारणकर राणाजीको बचाया। राणाजीका चेतक उनको तेजीके साथ वहांसे भगा लेगया। राणाजीके पीछे दो यवनोंने अपने घोड़े दौड़ाये। उनके पीछे और भी बहुतसे दौड़े परन्तु सब लौट गये। वे दोनों सवार आगे बढ़ते ही गये। राणाजीके भाई शक्तिसिंहने भाईके प्रेममें आकर इन दोनोंका काम तमाम कर डाला। फिर यह चिल्लाते हुए कि ऐ घुड़सवार! ठहरो! राणाजीके पीछे चला। राणाजी भाईको आते हुए देखकर क्रोधित होगये। क्योंकि ये मुगलोंकी सेनामें नौकरी करते थे। राणाजीने समझा कि यह दुष्ट मुझे अकेला पाकर मारनेको आरहा है। परन्तु उन दोनों यवनोंकी लाशोंको देखकर आपसमें प्रेमसे मिले। यहां राणाजीका प्राणप्यारा चेतक नामक घोड़ा असार संसारको छोड़कर चला गया। राणाजी नाना प्रकारसे विलाप करते हुए ऐसा कहने लगे—

'चेतकको मुख गोदमें, धरि चूंम परताप ।
फेर कर व्याकुल वदन, रह २ करें विलाप ॥
चेतकको लखिके मृतक, नृप प्रताप रणधीर ।
करि विलाप रोवन लगे, धरहिं न रंचक धीर ॥

इससे राणाजीका सेवकके प्रति कितना प्रेम होता था यह जाहिर होता है। हरएक मालिकका यह कर्तव्य है कि वह अपने नौकरके प्रति हमेशा प्रीति रक्खे, चाहे वह पशु हो या आदमी। शक्तिसिंहने अपना घोड़ा राणाजीको देकर विदा मांगी। फिर वे मुगल सेनामें गये तो वहांसे भी निकाले गये, तब देश जीतते हुए राणाजीसे आ मिले।

प्रातःस्मरणीय राणा प्रतापसिंहजीका नाम किस अभागेने न सुना होगा? वे कैसे वीर थे इस बातको उनके शत्रुओंसे भी जाहिर होता है। वे गाया करते थे कि—पुत्त (प्रताप) ने अपने राज्य व सुखको तिलांजली देदी परन्तु यवनोंके सामने अपने उन्नत शिरको न झुकाया। एक इसी ही वीरवरने हिन्दुओंके गौरवको अखण्ड रक्खा। धन्य है ऐसे वीर पुत्र पैदा करनेवाली जननिको! इत्यादि शब्दोंसे तारीफ किया करते थे।

प्रजाप्रेमी राणाने बनमें किसप्रकार दुःख उठाये हैं उनको सुननेसे किस कठोर हृदयवालेका हृदय न पिघल आवेगा? सुनिये—

इक दिन राणाकी सुता, तृणकी रोटी खाय ।
वन बिलाव तेहि छीन लै, भग्यो अचानक आय ॥

तब कन्या रोवन लगी, राना ताहि निहार ।
मन ही मन सोचन लगे, हा हा ! कष्ट अपार ॥

इस प्रकार राणाजीने अपनी पुत्रीकी दशा देखकर संधिपत्र अकबरके पास भेजा। पत्र पहुंचते ही अकबरकी खुशीका तो पूछना ही क्या था। वह पत्र लेकर बीकानेर नरेश पृथ्वि-राजके पास पहुंचा जो कि दिल्लीमें थे। राजाने कहा कि यह पत्र राणाजीने नहीं लिखा है। तीन कालमें भी राणाजी अपना शिर आपके सामने नहीं झुका सकते हैं। फिर बादशाह अपनासा मुंह लेकर चला गया। राजा पृथ्वि-राजने गुप्त पत्र राणाजीके पास यह भेजा कि—

" राजपूत अकृत अकबरने किये रागी सभी ।
थे बचे इक आप ही निज देश अनुरागी अभी ॥
सो भी संधी करनेको तैयार इकदम होगये ।
हा ! अभागे देश भारत, वीर तव कहं सोगये ॥
क्या करूं किससे कहूं, कुछ भी नहीं चलता उपाय ।
फट जायगी पृथ्वी तो बस, इकबारगी जाऊं समाय ॥
क्षत्रियोंमें आपहीने, धर्मकी रक्षा करी ।
पर आप अब करते हो क्या, सोचोतो ऐ नरकेशरी" ॥
" चिट्ठीको पढ़वाय, गये बदल इक बारगी ।
गई वीरता आय, पहिले सी परतापमें " ॥

इस पत्रके जवाबमें राणाजीने लिख दिया कि मैंने संधिपत्र नहीं भेजा है। इस प्रकार मेवाड़ जीतनेका कोई उपाय न सूझनेके कारणसे राणाजीने पंजाबमें जाकर नया राज्य जमानेका विचार किया। तब अमरसिंहने अपनी मांसे यह कहा कि मां भूख लगी है। तब महाराणी पद्मावतीने कहा, बेटा—

" आटो है कम घासको, कुंवर बताऊं तोय ।
जीमने वाले हैं बहुत, पूरो कैसे होय ॥
सुन रानीके वचन नृप, कहन लगे बिलखाय ।
धूळ मिला प्रिय आजु तो, लीजे काम चलाय ॥
धूळ मिलाकर घासके, आटेमें इकबार ।
महारानीने तुरत ही, रोटी करी तैयार ॥
रानाजी जीमन लगे, संग सबै सरदार ।
खात सराहत स्वादको, अति हित सहित उदार ॥

हे प्रभु ! धन्य है ऐसे देश व प्रजाप्रेमवाले वीरको कि जिसने अपने गृहकुटुम्ब घास व धूळकी रोटी खाई! वह भी बड़े ही प्रेमसे। क्या आजकल भी भारतका भाग्य फिर ऐसा उदय होगा कि ऐसे वीर रत्न उत्पन्न हों ? जब राणाजी मेवाड़ छोड़कर चलने लगे तब भामाशाह जैनने अटूट धन राणाके पांवोंमें रखकर कहा कि आप इससे मेवाड़की रक्षा करें और अन्यत्र न पधारें। वह धन इतना था कि १२ वर्षतक २५००० मनुष्योंकी सेना पाली जा सकती थी। धन पाकर राणाजी वापिस लौट पड़े और बिजलीकी तरह मुगलोंपर जा चढ़े। उनको छिन्नभिन्न कर दिया। मेवाड़के राणाओंको चाहिये कि उनके पितामहोंको मदद करनेवाले जैनियोंपर हमेशा कृपादृष्टि रक्खा करें।

राणाजीने पहले पहल कुंभामेरको जीतनेके बाद एकके बाद एक किले जीतते ही गये। इस प्रकार कई वर्ष कठिन तपश्चरण करनेके पश्चात् मेवाड़में धर्मराज्य स्थापित किया जो आजतक अमनचैनसे चल रहा है। राणाजी संवत् १६४२ (ई० १५८६) तक यवनोंकी चढ़ाईकी राह देखते रहे, परन्तु कोई चढ़ाई नहीं हुई।

उस वीरवरकी आत्मा इस प्रकार देश रक्षा करते हुए अकबरकी कीर्तिको मीटते हुए यवनोंका मान दलन करते हुए इस असार संसारसे सम्वत् १६९१ ई० सन् १५९७में चल बसी। उस वीर आत्माने अपना नाम अमर कर हम लोगोंके लिये आदर्श जीवन छोड़ दिया। अंतमें मरण समय महाराणाजी अपने पुत्र अमरको सामंतोंकी गोदमें सौंपकर इस प्रकार कहने लगे:—

प्यारे वीरधीर क्षत्री सब, सुनो हमारे वचन प्रमान।
भारत भारत परम सहायक, धर्मनिष्ठ यशशील निधान॥
मैं तो एक निमित्त मात्र हूं, कौन बड़ा उपकार किया।
जो कुछ करा धरा तुमने ही, हुवा देश उद्धार किया॥
हा! प्यारे चेतकका भी, उपकार कहा नहीं जाता है।
आती है जब याद कलेजा, रह रह मुंहको आता है॥
भामाशाह जैन मंत्रीने, देखो कैसा काम किया।
दे प्रमुदित मन निज संचित धन, जगतीतलमें नाम किया॥
होसक्ता हूं उऋण नहीं मैं, इन सबके ऋणसे भाई।
धन्यवाद देता हूं सबको, बार बार हिय हर्षाई॥

देवगढ़ क्षेत्र।

जी० आई० पी० लाइन जो देहलीसे बम्बईको गई है उसीपर ललितपुर है और ललितपुरसे दक्षिणकी ओर दूसरा स्टेशन जाखलौन है। यहांसे बैलगाड़ी देवगढ़को जाती है जो करीब ९ मील है। पैदल मार्ग ७ मील है। देवगढ़ ग्राम बहुत छोटासा ऊजड़ ग्राम समान है। यहांपर अभी एक भी घर जैनियोंका नहीं है। यहांकी आबादी करीब डेढ़सौकी है जिनमें सब सहारिया और अहीर हैं। दो चार घर ब्राह्मणोंके भी हैं। देवगढ़ ग्राम वेतवा नदीके मुहाने पर बसा हुआ है। यहांसे १०० फीटकी ऊँचाई पर करनालीका दुर्ग है जिसको कीर्तिवर्मा चंदेलने बनवाया था। इस पर्वतकी चढ़ाई सोनागिरके पर्वतके समान अति सरल तथा सीधी है। पहाड़की चढ़ाई ते करनेपर एक खंडहर द्वार मिलता है। यह द्वार पर्वतकी परिधिको घेरे हुए कोटका द्वार है इसको तोरणद्वार कहते हैं। इस द्वारको पार करते हुए दो कोट और मिलते हैं। दूसरा और तीसरा कोट मंदिरोंको घेरे हुए है। इन कोटोंके भीतर अनेक देवालय होनेसे ही संभवतः इसका नाम देवगढ़ पड़ा होगा।

इनके भीतर सैकड़ों जैन मंदिरोंके भग्नावशेष पाए जाते हैं। हजारों जैन मूर्तियां देवालयोंके बाहर यत्रतत्र औंधी सीधी पड़ी हुई हैं। निवपर वर्षाका जल पड़नेसे और काई जमनेसे

उसके रंग रूपमें भी अन्तर पड़ रहा है और पड़ गया है।

बहुतसे छोटे २ मंदिरोंको छोड़कर बाकीके जैन मंदिर तीस हैं जिनमें अनुपम कारीगरी पाई जाती है। ऐसी उत्तम कारीगरीके देवालय अन्यत्र मिलना कठिन है। ये मंदिर ८वीं से १२ वीं सदीके बने हुए पाए जाते हैं। इन मंदिरोंमें तीन मंदिर विशेष उल्लेखनीय हैं। मंदिर नं० ११ सबसे बड़ा मंदिर है। जिसके पूर्वमें कई मंदिर भिन्न २ समयके हैं। इसमें शांतिनाथ भगवानकी खड्गासन प्रतिमाजी हैं जिसकी ऊंचाई १२ फुटके है। ४, ५ फुटकी तो अनेक मूर्तिएं हैं। इस मूर्तिके समयका पता नहीं लगता—यह मूर्ति अतिशयवान हैं।

इस मंदिरके उत्तरी दालानमें एक विचित्र शिलालेख है जिसमें "ज्ञानशिला" खुदा हुआ है। १८ भाषाओं और १८ लिपियोंके नमूने लिखे हुए हैं। इसको सा खानामदीने लिखाया था। इस मंदिरके आगे खुला हुआ बरामदा जो ४२ फीट ६ इंच वर्ग है जिसमें ६, ६ खम्भोंकी छह कतारें हैं। इसके बीचमें एक चबूतरा है जिसपर जैन मूर्तियां विराजमान हैं। वहांपर ही पुजारी नित्यप्रति पूजा करता है। इसके सामने १६½ फीट दूरीपर एक मंडप चार खम्भोंपर स्थित है। इन खम्भोंमेंसे एक खम्भेपर राजा भोजदेवका शिलालेख पाया जाता है जो सम्वत् ९१९ या शाका सं० ७८४ का है। मंदिर नं० १२ के मंडपमें तीर्थंकर ऋषभदेवके द्वितीय पुत्र गोम्मटेश्वर या बाहुबलिकी मूर्ति है जिसका सं० ११ सदीका दिया हुआ है। एक पाषाणका सहस्रकूट चैत्यालय है जिसमें एक हजार आठ मूर्तियां उकीरी हुई हैं, सब साबित हैं। इन मंदिरोंमें और इनके बाहर पर्वत पर सैकड़ों क्या हजारों जैन मूर्तियां खंडित, अखंडित अवस्थामें पड़ी हुई हैं।

मूर्तियां ऐसी सुन्दर तथा मनोज्ञ हैं कि जिनके अवयव वाली मूर्तियां अन्यत्र कहीं नहीं पाई जातीं। पर्वतके दक्षिणकी ओर दो सीढ़ियां हैं जिनको राजघाटी और नहरघाटी कहते हैं। बसातका पानी इन्हीं घाटियोंमें होकर नदीमें चला जाता है। ये घाटी चट्टानसे खोदी हुई हैं जिनपर खुदाईकी कारीगरी पाई जाती है। राजघाटीके किनारे एक आठ लाइनोंका छोटासा शिलालेख है जो संवत ११५४का है। इसको राजा वत्सने खुदवाया था। जो कीर्तिवर्मा चंदेलका वजीर आजम था उसीके नामसे कीर्तिगिर दुर्ग कहलाता है। यह सं० ११५४की बात है। यहांपर एक सिद्धकी गुफा है। यह पहाड़में खुदी हुई हैं जिसका मार्ग पहाड़ीके ऊपरसे सीढ़ीद्वारा नीचेको है। इसके तीन द्वार हैं। दो खम्भोंपर छत सुरक्षित है। इस चट्टानके बहार एक छोटासा शिलालेख है जो गुप्त समयका है। एक दूसरा शिलालेख है जो राजा वीरने सं० १३४२ में कुरारको जीता था।

देवगढ़में पहले सहरियोंका आधिपत्य था। इनपर गोंड़ोंने विजय पाई। इनको पराहतकर गुप्त वंशीय राजाओंके हाथमें देवगढ़

आया। स्कन्धगुप्त आदि इस वंशके कई शि-
लालेख देवगढ़में अब तक पाए जाते हैं। गुप्त
वंशके अनन्तर कन्नौजके भोजवंशी राजाओंने
इस प्रान्तको जीता। इनके बाद चंदेलवंशी
राजाओंके हाथमें देवगढ़ आया। इन्हींके बापदादे
धुरमंगदसिंहने यहां आकर विश्राम किया था।
इनका स्वर्गवास ई०सन् ११९४में हुआ था। उस
समय देवगढ़ एक विशाल तथा सुन्दर नगर
था। इसी कुटुम्बने दतियाका किला बनवाया
था। ललितपुरके आसपास इस वंशके अनेक
शिलालेख अबतक पाए जाते हैं। इस वंशकी
राजधानी महोबा थी। सन् १८११ ई० में
महाराजा सिंधियाकी ओरसे जो कर्नल बैन-
टिस्टी फिलोज देवगढ़के ऊपर चढ़कर आये थे
उन्होंने तीन दिन बराबर लड़कर बादको देव-
गढ़पर कब्जा कर पाया था। चंदेरीके बदलेमें
सरकार हिंदको मिला था, अभीसे सरकारके
कब्जेमें देवगढ़ है।

किलेकी दीवाल चाहे चंदेल राजाओंने बन-
वाई हो या पूर्वकी बनी हो यह हम नहीं कह
सकते, परन्तु इसकी मोटाई १९ फीट है और
बिना सिमेंट गारेकी बनी है। इसमें गोला
चलानेके लिए सूराख हैं। हदबंदीकी दीवाल
नदीकी ओर यातो बनाई ही नहीं गई हो या
गिर गई हो परन्तु उसकी मोटाई २० फीटसे
कहीं अधिक नहीं। बड़े अचम्भेकी बात तो
यह है कि किलेके उत्तरी पश्चिमी कोनेसे एक
पत्थरकी दीवाल ११ फीट मोटी है जो ६००
फीट दूर तक पहाड़ीके किनारे तक चली गई
है। शायद यह दीवाल दूसरे किलेकी हो, जो
नष्टप्राय होगई हो।

देवगढ़के बड़े मंदिर सब खड़े हुए हैं जिनमें
जीर्णोद्धारकी सख्त जरूरत है। पहले इनमें
किवाड़ोंकी जोड़ियां भी नहीं थीं परंतु धर्म-
परायण श्रीमान् सेठ पदमचंदजी आगरावालोंने
लोहेकी जोड़ियां लगवादी हैं। बाकी सब
मरम्मत पड़ी हुई है इसके लिए हमारे
उदार चेता, धर्मात्मा सज्जनोंको ध्यान देना
चाहिए।

दो मंदिर दुमंजिल भी हैं जिनमें पुरातत्व
कारीगरीके विचित्र नमूने देखनेमें आते हैं।
मंदिरोंके छज्जे नालदार चद्दरके समान हैं।
सब मंदिर करीब ९-१० सौ वर्षके पुराने हैं।
इनके समूचे रहनेका कारण केवल यही है कि
यह केवल पाषाण २ के बने हुए हैं। इनमें
चूने गारेका नाम भी नहीं है।

देवगढ़में करीब २०० के शिलालेख हैं
जिनको पुरातत्व विभागने संकलन किया है
और वे बहुत ही शीघ्र प्रकाशमें आनेवाले हैं।

अन्तमें समाजके श्रीमानोंसे मेरा यही निवेदन
है कि इस अतिशय क्षेत्रकी ओर ध्यान दीजिए
और दिल खोलकर इसके जीर्णोद्धारमें द्रव्य
दीजिए। यदि इस क्षेत्रकी ओर जैनसमाजकी
कुछ समयके लिए पूर्ववत् उपेक्षा दृष्टि रही तो
यह प्राचीन क्षेत्र नष्ट हो जायगा। इससे इसकी
रक्षाके लिए सभी भाइयोंको द्रव्यसे सहायता
पहुंचानी चाहिये। समाजसेवक—

नाथूराम सिंघई जैन, ललितपुर।
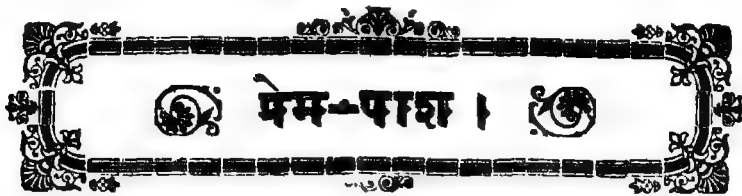
(श्री० लेखक—ब्रह्मचारी प्रेमसागरजी)

प्रेम प्रेम सब कोई कहे, प्रेम न जाने कोय।
प्रेम तत्व जाने बिना, कैसे प्रेमी होय॥
प्रेम पंथ अति कठिन है, बिरले पावें पार।
जो पावें सो शीघ्र ही, करें आत्म-उद्धार॥

लोग भले ही कहें कि प्रेममें आनन्द है लेकिन मुझे उनके कहने पर तनिक भी विश्वास नहीं होता क्योंकि मैंने जहांतक समझा है यही समझा है कि प्रेम सुखमय नहीं बल्कि दुःखमय है। अगर प्रेम सुखमय होता तो उसके भीतर दुःखका अंश क्यों दिखाई देता! क्या शुद्ध सम्यक्त्वके भीतर भी मिथ्यात्वकी कालिमा छिपी रहती है? नहीं, नहीं कदापि नहीं। मिथ्यात्वके अभावमें ही शुद्ध सम्य-क्त्वका उदय होता है ऐसा मानना पड़ेगा। यदि फिर भी उसमें मिथ्यात्वकी कालिमाका अंश रहा माना जाय तो उसे सम्यक्त्वका पूर्ण रूप देना हो नहीं सक्ता।

इसी प्रकार जिस प्रेमके भीतर दुःखके अंश अंकुरित होरहे हैं उस प्रेमको प्रेम कहना हमारी अज्ञानताका परिचायक है। वह प्रेम सार्थक प्रेमके पदको न पाकर प्रेमाभासके ही रूपमें रहता है। प्रेम वही है जिसके भीतर सुखका लबालब सरोवर भरा हो और जिसमें श्रद्धाके कंज खिले हों। इस प्रेमको ही प्रेम कहना चाहिये और यही सार्थक प्रेम कहा जा सकता है। तात्पर्य यह है कि सार्थक प्रेम वही है जो श्रद्धा एवं सुख और शांतिसे संयुक्त हो। सार्थक प्रेमके भीतर साम्यभावोंका सद्भाव एवं आत्मोद्धारकी लगनकी अपूर्व छटा रहती है। राग, द्वेष, मोह, क्रोध, मान, माया, मत्सर आदि विपर्यय भावोंका समावेश नहीं रहता।

सत्य प्रेम सुखमय है एवं सुख देनेवाला है किन्तु उसका स्वरूप एक प्रेमीके सिवाय अन्यके लिये समझना कठिन है।

सार्थक प्रेमके अलावा एक वह प्रेम है जिसके भीतर सर्वांश मोहका साम्राज्य स्थापित है। और उसके अनुचर—राग, द्वेष, काम, मोह, माया, मत्सर, क्रोधादि, उसके साथमें हैं। उस प्रेमको हम सार्थक प्रेम नहीं कहकर असार्थक, असत्य और मिथ्या प्रेम कहेंगे; क्योंकि सार्थक प्रेमके भीतर उक्त विपरीत भाव नहीं होता।

असार्थक प्रेमके भीतर मोहकी अत्यन्त गह-नता होती है। जिसके हृदयमें वह प्रवेश कर जाता है उसको पागल बना देता है। बस, इसी प्रेमको हम प्रेमपाश कहते हैं और वह असल है भी।

बड़े २ समझदार मानव इस असार्थक प्रेमके व्यापारमें घाटा खा जाते हैं और इतना खो ते

श्राविकाश्रम सोजित्रानो वार्षिकोत्सव.

શ્રી સોજીત્રા દિ. જૈન શ્રાવિકાશ્રમનો ચતુર્થ વાર્ષિકોત્સવ ગત વૈશાખ સુદ ૧૪ ને દીને ડભોઉવાળી ભાગોળે શ્રી વીસા મેવાડા જ્ઞાતિની વાડીમાં ઉજવવામાં આવ્યો હતો. શરૂઆતમાં મંગલાચરણ કર્યાબાદ સ્વાગતનું ગીત ગવાયા બાદ કરમસદના પણ હાલ ગીરેડી (બંગાલ) રહેતા શેઠ **ડાહ્યાભાઇ શીવલાલ**ની પ્રમુખ તરીકે ચૂંટણી થઇ હતી. ત્યારપછી આશ્રમના મંત્રી શા. રતીલાલ જગજીવનદાસે આશ્રમનો સંવત ૧૯૮૪-૧૯૮૫ ના વર્ષનો આવક જાવકનો રીપોર્ટ વાંચી સંભળાવ્યો હતો. રીપોર્ટ વાંચી રહ્યા બાદ આશ્રમની બાળાઓએ ગરબો ગાઇ જ્ઞાન પ્રચારની જરૂરીઆત દેખાડી હતી. ત્યારબાદ સ્ત્રીઓને ભણતરની જરૂર એ સંબંધી આશ્રમની બાળાઓએ સંવાદ કરી દેખાડ્યો હતો, સંવાદ થઇ રહ્યાબાદ 'ભારત ગીત' આશ્રમની બાળાઓએ ગાયું હતું. ત્યારબાદ અન્ય અન્ય વક્તાઓએ પ્રસંગને અનુસરતા વિષય પર નીચે મુજબ ભાષણ (વિવેચન) કર્યું હતું:-

મોહનલાલ કાળીદાસ સોલીસીટરના ભાષણનો સાર-"બહેરશો અને બ્હેનો, દેશને માટે સ્ત્રીઓની ફરજ એ વિષયપર મેનાબેને ધ્યાન ખેંચ્યું છે એ પ્રશંસનીય છે. બાળાઓએ 'સારી જહાંસે હિંદુસ્તાન' એ ગીત ગાયું પણ અફસોસની વાત છે કે એક બાજુ પુરૂષ વર્ગમાં ખાદી ટોપી તથા સ્વદેશી પોશાક જોવામાં આવે છે, જ્યારે બાળાઓપર વિદેશી સાડીઓ જોવામાં આવે છે. તેત્રીસ કરોડપર (હિંદુસ્તાનમાં) એક લાખ માણુસ રાજ્ય કરી રહ્યા છે તેનું કારણ આપણામાં કેળવણીનો અભાવ તેજ છે હાલ અપાતી કેળવણી એ જાણે કે પૈસા પેદા કરવાનેજ અપતી હોય એમ જણાય છે. પુત્રોની જેટલી દરકાર રાખવામાં આવે છે તેનો એકસોમો ભાગ આપણી સમાજમાં પુત્રીઓ માટે અપાતો નથી. સ્ત્રી કેળવણી સ્કુલમાં અપાતી કેળવણીમાં સમાતી નથી, પણ તે પોતાના બાળકો-પુત્રીઓ, પતિને તથા અન્ય વર્ગને સંતોષ આપવામાં રહેલી છે.

તુર્કસ્તાન દેશમાં પડદાનો રિવાજ સ્ત્રી વર્ગમાં પ્રચલિત હતો. ઇરાનદેશમાં પણ તેજ પૃથા ચાલુ હતી. હવે પાંચ વર્ષથી તુર્કસ્તાનમાંથી પડદા રિવાજનો નાશ થયો છે અને સ્ત્રી વર્ગ સ્વતંત્ર બન્યો છે મુસ્તફાકમાલ પાશાના હાથ નીચે સ્વતંત્રતાનો વાવટો ઘર તુર્કોએ સ્વતંત્રતા મેળવી છે. અને તે મેળવવામાં તુર્ક રમણીઓએ સહાનુભૂતિ આપી હતી. પહેલાં તુર્કસ્તાન યુરોપનો માંદો માણુસ ગણાતો તે અત્યારે યુરોપને ડરરૂપ બની રહ્યો છે. અફગાનિસ્તાનમાં શાહનો અમલ શરૂ થયો. તેણે સ્ત્રી વર્ગ માટે સ્વતંત્રતા જાહેર કરી પણ મુલ્લાંએ લોકપર ખોટી અસર કરી અને શાહને નાશભાગ કરી યુરોપમાં જઈ રહેવું પડ્યું છે! મહાત્મા ગાંધીની ચળવળ સારાયે દેશમાં ચાલી રહી છે. આપણી કોમની સ્ત્રીઓ ભાગ્યેજ તે જાણતી હશે. દેશની રમણીઓનું હાલનું કાર્ય વિદેશી કપડાંના ત્યાગ વિષે જનસમાજને દોરવાનું છે. આપણી કોમની સ્ત્રીઓએ દેશની ચળવળને અનુસરતું કંઇ કર્યું નથી. ફક્ત અંકલેશ્વરના છોટાલાલ ઘેલાભાઇનાં ધર્મપત્નિ માણેકગવરીએ કંઇક કર્યું

है कि एक दिन दिखाविया टी बनकर रहते हैं। हमारी समझमें तो इनका हममें तनिक भी द्वेष नहीं है, क्योंकि अयथार्थ प्रेम ही एक ऐसा प्रेम है जो मेरु ए-मृ-मनसे भरा हुआ है। मोही मानव समझदार होता हुआ भी मूर्खों कैसी क्रियाओंको करता हुआ दुःखके समुद्रमें गोते खाने लगता है। जहाँ जहाँ मैं मूल तथा यहां तो ऐसा समझना चाहिये कि वह मोही मानव अपने लिये दुःखोंको निमंत्रण करके ही बुलाता है।

છે. આશ્રમને સુધારવાના પ્રયાસ કરવાની જરૂર- છે. મુંબાઇમાં નાનીબેન ગજ્જરે સ્થાપેલો મુંબાઇ વનિતા વિશ્રામ છે ને મગનબ્હેને સ્થાપેલું શ્રાવિકાશ્રમ છે. તેમણે પોતાની જીંદગી શ્રાવિકાશ્રમના હિતાર્થે અર્પણ કરી હતી. સોજીત્રા આશ્રમને સ્થપાયાંને ચાર વર્ષ થયાં છતાં હજુ તેમાંથી કોઇ તૈયાર થયું નથી, આશ્રમની આર્થિક સ્થિતિ નરમ છે. આશ્રમમાંથી તૈયાર થઈ સેવિકાઓ આવી કાર્ય કરે તો કામ ઘણું સંગીન થાય." ઉપર પ્રમાણે વિવેચન કર્યાબાદ ડૉકટર ભાઈલાલ કપુરચંદે બીજી કોમની માફક આપણી કોમમાં સ્ત્રી કેળવણીનો પ્રચાર વધુ થાય એવી ભલામણ કરી હતી.

ત્યારબાદ વડુના શા. સેવકલાલ પૂંજાભાઇએ વિવેચન કરતાં કહ્યું હતું કે સ્ત્રી પુરૂષ એ એક ગાડાનાં બે પૈડાં સમાન છે, જો એક બરાબર અને બીજું નબળું હોય તો તે ગાડું ચાલે નહિ. સ્ત્રી કેળવણી વિના આપણો ઉદ્ધાર નથી. આવા આશ્રમને દરેકની સહાનુભૂતિની જરૂર છે. ત્યાર- બાદ શા. કાળીદાસ ફૂલચંદભાઇએ વિવેચન કરતાં કહ્યું હતું કે નામાનો હિસાબ તપાસતાં માલુમ પડે છે કે કેટલીક રકમોનું વ્યાજ તેમજ મુદલ પણ આવતું નથી, આવક બીજી કમતી થાય છે અને વ્યાજ તથા મુદલ આવતું ન રહે તો આશ્ર- મની પ્રગતી અટકી પડે માટે તેવી લ્હેણી રકમો નિયમસર આશ્રમને પહોંચાડવાની ભલામણ કરી હતી. ત્યારબાદ દાવોલના શા. ભોગીલાલ અંબા- લાલે કસરતની જરૂરીઆત તથા રેંટીઆથી કાંતતાં વણતાં શીખી તેનાં કપડાં તૈયાર કરી પહેરવાનું સૂચવ્યું હતું. ત્યારબાદ આમોદના શા. ચીમનલાલ કસ્તુરચંદે વાણીઆમાં રહેલી આત્મ- શક્તિ, મહાત્મા ગાંધીનું દ્રષ્ટાંત આપી દેખાડી હતી. તેમણે વધારામાં કહ્યું હતું કે આપણી કોમ પછાત છે. સ્ત્રીઓ પણ તેટલીજ પછાત છે. મરદ કમાઈ જાણે પણ તેનો યોગ્ય વ્યય કરનાર પ્રધા- નરૂપ સ્ત્રીજ છે.

ત્યારબાદ ભોજના અંબાલાલ ત્રિભોવનદાસે પ્રસંગને અનુસરતું વિવેચન કરતાં કોમના બાળક- બાળકીઓને યોગ્ય તાલીમ લેવાની જરૂરીઆત દેખાડી હતી. આશ્રમ માટે ટીકા ન કરતાં કાર્ય કરવું જોઇએ. ગૃહઉદ્યોગ તથા રેંટીઆનું શિક્ષણ વીગેરેની જરૂરીઆત સૂચવવામાં આવી હતી. 'બાળ- કોને સારાં કરવાં હોય તો માતાઓને કેળવણી આપો.' સંસારનો એક સાથી નબળો તો સંસાર નબળો સ્ત્રી સુધરે તો ફાયદો. આશ્રમને મ્હોઢાની સહાનુ- ભૂતિ તે ખરી સહાનુભૂતિ નથી પણ તન, મન, અને ધનથી થવી જોઇએ, જમાનો બદલાયો છે. સ્ત્રીઓને કેળવણીની જરૂર છે. દેશની સ્ત્રીઓ જાગૃત થઈ છે, સ્ત્રી-યુવક સંઘ સ્થપાયા છે અને તે દારૂની દુકાન તથા વિદેશી કાપડની દુકાન પર પીકેટીંગ કરી રહ્યા છે. ત્યારપછી પ્રભાવતી- બેને વિવેચન કરતાં કોમની સ્ત્રીઓને આશ્રમમાં રાખેલા શીવવાના સંચાનો વધુ ને વધુ લાભ લેવાની ભલામણ કરી હતી, ત્યારબાદ પ્રમુખશ્રીએ નીચે મુજબ વિવેચન કર્યું હતું–

પ્રમુખશ્રીના ભાષણનો ટુંક સાર.

"ભાઇઓ, શ્રાવિકાશ્રમ પ્રત્યે કોમે પુરી ફરજ અદા કરી નથી. સ્ત્રી અને પુરૂષ એક ગાડાનાં બે પૈડાં છે. સ્ત્રીના સુધારા વિના સમાજની ઉન્નતિ નથી. મારા સાંભળવામાં આવ્યું છે કે ઇર્ષાને લીધે આશ્રમની પ્રગતિને કંઇક કંઇક નુકશાન પહોંચી રહ્યું છે. ભાઇઓ અને બ્હેનો, આશ્રમ સોજીત્રામાં એટલે આપણને ઘેર બેઠે ગંગા છે; એટલે જેટલો લાભ ન લઈએ તેટલો ઓછો છે. હમારા તરફ આનો લાભ મળતો નથી. આવા આશ્રમને ફૂલ નહિ ને ફૂલની પાંખડી સમાન બની શકે તે પ્રમાણે મદદ કરવી. આશ્રમને ખર્ચ ઓછો આવે તે માટે શ્રીમતી પ્રભાવતીબેને પ્રમો- શન હાલ જતું કરેલું છે તે પ્રશંસનીય છે. આપણામાં નાતો થાય છે, લગ્નો થાય છે, વરાઓ થાય છે, અને તેવી રીતે પૈસા વપરાય છે. પૈસા વાપરવાનો ઠીક રસ્તો આવા આશ્રમને બનતી મદદ કરવામાં છે. પોતાને ત્યાં લગ્ન, અગર ન્યાત-

વરાના પ્રસંગે આવા આશ્રમને પાંચ દશની કમમાં કમ ભેટ કરવી એ આવશ્યક છે." ત્યારબાદ પ્રમુખશ્રીએ પોતાની પુત્રીના લગ્નની ખુશાલી બદલ આશ્રમને રૂ. ૨૧) એકવીસ ભેટ આપ્યા હતા. તથા અન્ય સદ્‌ગ્રહસ્થો તરફથી મેળાવડા પ્રસંગે લગ્નની ખુશાલીમાં તથા ચાલુ મદદ તરીકે આવેલી રકમો રૂ. ૧૫૭ા આભાર સાથે સ્વીકારવામાં આવી. ત્યારબાદ પ્રમુખશ્રીના હાથથી બાળાઓને ઇનામ વહેંચવામાં આવ્યાં હતાં. ઇનામ વહેંચાયા બાદ આશ્રમના મંત્રી તરફથી મેળાવડા પ્રસંગે પધારેલા સદ્‌ગ્રહસ્થો તથા સન્નારીઓનો આભાર માની બાળાઓ તરફથી અંત મંગળ ગવાયા બાદ સભા વિસર્જન થઇ હતી.

મંત્રી-શા. રતીલાલ જગજીવનદાસ.

—⊱⊰—

"सोजित्रानो लग्नगाळो."

હંમેશના રિવાજ મુજબ ચાલુ સાલે મેવાડા બંધુઓ સોજીત્રા મુકામે ભેગા મળ્યા હતા. સમયને અનુસરીને આ વખતે વધુ માણસોએ હાજરી આપી નહોતી. કુલ લગ્નો આશરે ત્રીસ થયાં હતાં, જેમાં ફક્ત છ લગ્નો જૈન **વિધિ અનુસાર** કરાવવામાં આવ્યાં હતા. આ હજુ આપણી કેટલી અજ્ઞાનદશા સુચવે છે? આખા દેશભરમાં જ્યારે ધર્મના નામે અસંખ્ય ભોગો અન્ય મતાવલંબીઓ તરફથી અપાય છે, અને દરેક વ્યક્તિ મરવાને માટે ધર્મના નામે આગળ આવે છે ત્યારે આપણી જ્ઞાતિમાં લગ્ન જેવી અત્યંત ઉપયોગી ક્રિયાઓ પણ હજુ ધાર્મિક વિધિ અનુસાર કરવામાં આવતી નથી, એ દિલગીરી ભરેલી વાત છે. આ ઠેકાણે કોઇ બંધુ પ્રશ્ન પૂછશે કે જૈન વિધિ અનુસાર લગ્નોની વિધિ કરાવનાર કોણ છે? તો તે ભાઇને મ્હારે નિવેદન કરવાનું કે તેવી વિધિ અનુસાર લગ્નો કરાવનાર ઉત્સાહી બંધુઓ તો ઘણા મળી શકે છે, પરંતુ તેવા લગ્નો પોતાનાં બાળક બાલિકાઓનાં કરાવનાર કોઇ ઉત્સાહી અને ધર્મના ઝનુનવાળા ભાઇ મળવા મુશ્કેલ છે. જ્યારે આખો દેશ પ્રગતિને પંથે આગળ ધસી રહ્યો છે, ત્યારે હજુ આપણા મેવાડા બંધુઓ ઘોર નિદ્રામાં પડી રહ્યા છે. આશા છે કે હવે પછીના લગ્નગાળામાં આ વખત કરતાં વધુ લગ્નો જૈન વિધિ અનુસાર કરાવવાનો ઉત્સાહ વધશે !

ચાલુ સાલે ત્રીસ લગ્નો થયાં, તેમાં કેટલાંક બાળલગ્નો પણ થયાં હશે, પરંતુ આ માટે કોઇપણ ભાઇને દોષ દેવો અઘટિત ગણાય, કેમકે બાલ્ય વયમાંથી વિવાહો કરવામાં આવેલા તે વખતે ઉંમરનો ભેદ રાખવામાં આવેલો નહિ. તેથી તેજ બાળિકાઓ પુખ્ત ઉંમરે આવવાથી તેમની સમાન વયના અથવા એક બે વર્ષ વધુ ઉંમરવાળા યુવકોને લગ્નોની ગ્રંથીમાં જોડાવું પડ્યું. પરંતુ ઘણીજ દીલગીરીની વાત એ છે કે આ વખતે કેટલાક વિવાહ નવા કરવામાં આવ્યા તેમાં પણ ઉંમરનો તફાવત કાયદા પ્રમાણે જોવો જોઇએ તેવો રાખવામાં આવેલ નથી. આણંદ મુકામે આપણા જ્ઞાતિ પંચે ચાર વર્ષનો તફાવત રાખવાનો ઠરાવ કરેલો તે કાયદાને પણ જ્ઞાતિ બંધુઓ માન આપતા નથી. આપણામાં કહેવત છે કે "જેનો સરદાર આંધળો હોય તેનું લશ્કર અવશ્ય કુવામાં પડે." તે મુજબજ આપણી જ્ઞાતિના આગેવાનો અને કાયદા કરનારાઓ પોતેજ જો તે કાયદાઓનો ભંગ કરી રહ્યા હોય તો પછી બીજાઓને માટે શું કહેવાનું? દરેક મેવાડા બંધુને મારી નમ્ર વિનંતી છે કે તેઓ વિવાહની બાબતમાં ઉંમરનો તફાવત રાખી પોતાનાં બાળકોને સુખી કરવાની ઇચ્છા રાખશે !

આ વખતે બીજી હર્ષની વાત એ બની કે જ્ઞાતિના કેટલાક ઉત્સાહી અને ખંતીલા યુવકોએ ભેગા મલી એક યુવક સંઘની સ્થાપના કરી. તેનું નામ "શ્રી વીશામેવાડા દિ. જૈન યુવક સંઘ" રાખવામાં આવ્યું છે. તે સ્થાપવા માટે મ્હારી ખાસ ઇચ્છા હતી તેમાં મને પ્રોત્સા-

હન મળ્યું તે માટે હું સર્વે જ્ઞાતિ બંધુઓનો અત્યંત આભારી છું. સદર સંઘમાં લગ્નગાળામાં લગભગ ૧૪૦ યુવકોએ સભાસદ તરીકે પોતાનાં નામ નોંધાવ્યાં છે, તેમાંથી ૨૧ સભાસદોની એક કારોબારી કમીટી ચુંટી કાઢવામાં આવી છે.

આ યુવક સંઘે પોતાની પ્રથમની સામાન્ય સભામાં કેટલાક સુધારાના ઠરાવો જેવા કે પરદેશી કાપડનો બહીષ્કાર, ૩૭ વર્ષની ઉમરની નીચેના બંધુના બારમામાં ભાગ નહિ લેવાનું, રડવા કુટવાના રિવાજનો બહિષ્કાર, વિગેરે ઠરાવો કર્યા છે તે મુજબ દરેક યુવક સભાસદને વર્તન કરવાની ફરજ છે. આશા છે કે સર્વે યુવક બંધુઓ તે મુજબ ચાલશેજ, અને જેઓ સભાસદ નહિ હોય તેઓને તે પ્રમાણે કરવાને અને સંઘના સભાસદોમાં પોતાનું નામ નોંધાવવાને પ્રેરશે. કારોબારી કમીટી હવે ઉંઘમાં નહિ ઉંઘતાં વખતસર બેઠકો બોલાવી પોતાનું કાર્ય ચાલુ રાખશેજ, અને સંઘના સેક્રેટરી સાહેબ પણ પોતાના ધંધામાંથી થોડો share વખત કાઢી સંઘના કાર્યને આગળ ધપાવશે. મ્હારી પણ જિનેન્દ્ર પ્રભુ પ્રત્યે પ્રાર્થના છે કે આ યુવક સંઘને ચિરસ્થાયી રાખો ! વધુમાં સેક્રેટરી સાહેબને એટલુંજ નિવેદન કરવાનું કે સામાન્ય ઠરાવ થયા મુજબ જે જે બંધારણો તથા ઠરાવો પસાર કરવામાં આવ્યા છે તે. તે તથા સભાસદો તથા કારોબારી મંડળના સભાસદોનાં નામો, વિગેરેની યાદી પત્રિકા રૂપે સત્વર તેમના તરફથી પ્રગટ કરવામાં આવશે !

વૈશાખ સુદી ૧૪ના દિવસે આપણા સોજીત્રા શ્રાવિકાશ્રમનો દ્વિવાર્ષિકોત્સવ ઉજવવામાં આવ્યો હતો. તેમાં સંવાદો, ભાષણો વિગેરે થઇ બાલિકાઓને ઇનામો વહેંચવામાં આવ્યાં હતાં. મેવાડા બંધુઓએ ઉત્સવ પ્રસંગે ઠીક સંખ્યામાં હાજરી આપી હતી. ભાષણોમાં જ્ઞાતિની બ્હેનોના પરદેશી કાપડના મોહ માટે ખાસ ટીકા થઇ હતી.

ઉપરના બનાવો શિવાય બીજું કાંઇ ખાસ કાર્ય બન્યું નહોતું. આ વર્ષે શ્રીયુત ભટ્ટારક સુરેન્દ્રકીર્તિજી તથા બીજા એક બ્રહ્મચારી મોતીલાલજી સોજીત્રામાં હતા. આશા છે કે મેવાડા ભાઇઓ યુવક સંઘને પોતાનાથી બનતી મદદ આપી તેને યોગ્ય સુધારા કરવા દઇ જ્ઞાતિને ઉન્નતિના શિખરે ચઢાવવા પોતાના તન, મન, અને ધનથી મદદ કરવા ચૂકશે નહિ. अस्तु ।

જ્ઞાતિ સેવક.

રતિલાલ કેશવલાલ વડોદરા હાલ ભરૂચ.

— ❧ —

महावीरनी विचार-घोषणा
અને
आपणुं कर्तव्य.

"માનવ હૃદયના ઉચ્ચ અભિલાષો વડે દુનીયામાં પૂજાતા અને મહાન ગણાતા મહાપુરૂષોના વિચારિક આંન્દલનો વડે ઉત્પત્તિ પામેલા ધર્મમતોની તુલના કરતાં, વિશ્વનાં તમામ પ્રાણી પ્રત્યે 'દયા અને ક્ષમા" ની પવિત્ર ભાવના નિર્મળ પ્રવાહથી વિલુપિત કરનાર મનજ સર્વોપરી મનનીય અને વંદનીય થઇ શકે એ નિર્વિવાદજ છે.

મહાત્મા ક્રાઇષ્ટના વિચારો વિલોકતાં માત્ર મનુષ્ય જીવનની રક્ષા અને મનુષ્ય પ્રેમના પરિસીમા પ્રદિપ્ત થાય છે. વળી સ્વધર્મ ચુસ્ત પેગંબરના પવિત્ર ફરમાનોનું પ્રતિપાદન કરતાં સ્વધર્માંગે ભ્રાતૃભાવ પ્રગટાવતી માનવ વ્યક્તિઓનેજ ચહાવું એ સત્કાર્ય મનાતું પ્રત્યક્ષ થાય છે. તેમજ વિશ્વના અન્ય ધર્મમતોનું નિરીક્ષણ કરતાં 'દયા અને ક્ષમા" ની પવિત્ર ભાવના કેવળ સંકુચીત ભાવે વિરમેલી જણાય છે. જ્યારે કર્મવીર શ્રી. મહાવીરના વિચારોની ઘોષણા કેવળ દયા અને ક્ષમામાંજ તદાકાર થએલી આપણને જ્ઞાત થાય છે. તેઓશ્રીના પુનિત ને પ્રેમમય હૃદયમાંથી સમગ્ર સૃષ્ટિના જીવાત્માઓને શાન્તિ આપવા 'દયા અને ક્ષમાની" શીતકર ધારા

અવિકૃત પ્રવાહથી વહી રહી હતી. એમની જીવન દીક્ષા જીવન રક્ષામાં સમાએલી હતી. તેઓશ્રીના પ્રેમમય મનોરાજ્યના સામ્રાજ્યનો દિગ્વિજય क्षमा वीरस्य भूषणं એ સુત્રમાંજ સમાએલો હતો. મતલબ કે શ્રી મહાવીર દયાનીજ મૂર્તિ હતા. એવા દયાળુ, માયાળુ, પવિત્ર, ક્ષમાધારી પ્રેમાળ, અને સર્વગુણ સંપન્ન મહા સમર્થ પિતાના આપણે પુત્રો કહેવાઇએ એ ખરેખર આપણા ભાગ્યનીજ સીમા છે. શ્રી વીર તુલ્ય તો થવું દૂર રહ્યું, પણ શ્રી વીર પ્રભુના પુત્ર તરીકે ઓળખાવું એ પણ આપણા સદ્ભાગ્યની વાત છે, અને તે સદ્ભાગ્ય આપણને પ્રાપ્ત થયું છે.

સકળ શાસ્ત્રમાં પારંગત સર્વગુણ સંપન્ન મહાવીરના જીવનની પ્રતિભા आत्मवत् सर्वभूतेषु એ મહામંત્રનેજ અવલંબેલી છે. આપણે શ્રી વીરપ્રભુના પુત્રો હોવાથી તેવી પવિત્ર ભાવના આપણામાં સર્વદા વધારવી જોઇએ. અને તે વડે તેમાંજ આપણું શ્રેય છે. આપણે સર્વે બંધુઓ છીએ, એકજ પિતાના પુત્રો છીએ, ભેદાભેદની ઝેરીલી હવા આપણા નિવાસોથી સદાને માટે દૂર થવી જોઇએ. સંપના મધુરા સુખકર સદ્ગુણો આપણામાં પ્રવેશવા જોઇએ. અન્યોન્ય સહાય કરવાની વૃત્તિ સત્વર પ્રગટવી જોઇએ. વીરપ્રભુના વિચારો સમાન આપણા વિચારો થવા જોઇએ. એમના પવિત્ર વર્તનની શુભ નકલ આપણે કરવી જોઇએ. સ્વધર્મ ઉપર આસ્થા, જીતેંદ્રિયપણું, શાન્તિ, સંતોષ, મહાત્મા ઔદાર્ય, સત્ય, પ્રમાણિકપણું, દયા, પરોપકાર, ગુણજ્ઞપણું એવા ઉચ્ચ સદ્ગુણો આપણામાં પ્રવેશવા જોઇએ, હાલની પ્રણાલી તરફ દ્રષ્ટિ કરતાં સંસારી સ્વાર્થ, સંશય, ભ્રમ, જુઠ, કપટ, અપ્રમાણિકપણું, અસંતોષ, આશા, તૃષ્ણા, સ્વાશ્રયનો વિચાર નહિ—બીજાનું સારૂં ખમાય નહિ, સ્ત્રી વિષયમાં લલુતા, કામ ચોરી, વચન ચોરી, ધન ચોરી, એ દુર્ગુણોની ઝાંખી થાય છે એ ખરેખર શોચનીય છે.

દીલગીરીની વાત એ છે, કે આપણે વીર પ્રભુના સદ્ગુણોથી વિશ્લેષ થઇ, સ્વાર્થી અને એકલપેટા બની ગયા છીએ. નહિતો સત્ય રીતે નિરીક્ષતાં પિતાની સંપત્તિમાં પિતાની સર્વ સંતતીનો સરખો હિસ્સો છે, પિતાની સંપત્તિ પુત્રોના ઉદ્ધાર કાજે કામે લાગે એજ પિતાની મોટાઇ છે. અને પિતાની મોટાઇના પ્રભાવનો પ્રસાર કરવો એ પુત્રોનો ધર્મ છે. તેઓ શ્રીએ સૃષ્ટિ વ્યવહાર આપણા હાથમાં સોંપેલો છે, તે નિર્મલ શુદ્ધ ભાવે ચલાવવો એ આપણું કર્તવ્ય છે. સમયના પરીવર્તન સાથે વ્યવહારમાં પરીવર્તન થવું જોઇએ. કાર્યની દિશા સમયાધીન બનવી જોઇએ તદપિ અમારી વર્તમાન દશા પ્રત્યે નિહાલતાં તેમાંનું લેશ પણ જણાતું નથી.

અર્વાચીન સમયમાં પિતાને નામે મંદિરની પેઢીઓદ્વારા પિતાના અમુક પુત્રોના હસ્તે ચાલતો ધર્મનો વ્યાપાર પ્રતિ વર્ષે લાખો રૂપીઆ નફો કરે છે. અને એવી રીતે એકઠી કરેલી કરોડોની મિલ્કતો પ્રભુના ભંડારમાં દેવ દ્રવ્યની છાપ લઇને પડેલી છે. ત્યારે બિચારા રંક સેંકડો જીવાત્માઓ અન્ન વિના દુઃખી થતા દ્રષ્ટિપાત થાય છે. હજારો વીરપુત્રો ગરીબીનાં અસહ્ય દુઃખથી પીડિત થતા દુઃખી દરિદ્રીદશામાં દ્રષ્ટિગોચર થાય છે. બિચારા ઘરબાર વિનાના અનેક મનુષ્ય દેવો સંજોગોની પ્રતિકુળતાથી શિયાળા ઉનાળાની શીતોષ્ણુતા પોતાના દુઃખી દેહપર ઝીલે છે. આજે આપણા સેંકડો બંધુઓ પંદર કે વીસ રૂપીઆની નોકરીમાં પોતાની જીંદગી વ્યતિત કરે છે. સવારના ૭ થી રાતના બાર વાગ્યા પર્યંત ઘાંચીના બળદની માફક વૈતરૂં કરતા ઘસડાયા કરે છે.

ભાડુતી વીશીઓમાં હલકાં ખાણાં ખાવાં, ધર્મની ધર્મશાળાઓ, ઓળખીતાની પેઢીઓ, કે મ્યુનીસીપાલીટીના જાહેર રસ્તા પર સુવું અને દેવ મંદિરોમાં નહાવું એ દશા આજ સેંકડો મનુષ્યો અનુભવે છે. બિચારા રંક લાચારો લગ્ન કે કુટુંબનું સુખ તો સ્વપ્ને પણ જોઇ શકતા નથી. ભારતવર્ષની ૩૩ કરોડની વસ્તીમાં તો ત્રણ

કરોડથી વધારે ભાગ તો કેવળ અન્ન વિનાજ દુઃખી થાય છે. બીજી તરફ જોતાં ઘણા ધર્મ-શ્રદ્ધાળુ ભાઇઓ જેની જરૂર નથી તેવાં કામમાં ફક્ત વાહવાહ કહેવડાવવાના લાભાર્થેજ હજારો રૂપીઆનું પાણી કરે છે. તેઓ નિરાશ્રીત બંધુઓ તરફ દ્રષ્ટિ પણ કરતા નથી. **"જે અમીરી પ્રભુતા અન્ન વસ્ત્ર વિના ટળવળતા ભાઈ-ઓના કલ્યાણાર્થે કામ લાગતી નથી તે અમીરી શું કામની છે? નષ્ટ થજો તે પ્રભુતા જે રંક પામર પ્રાણીઓનાં કષ્ટ કાપવા માટે કામ આવતી નથી."** આજ દેવ મંદિરોમાં કરોડો રૂપીઆ સડે છે. અને તેજ પિતાના સેંકડો પુત્રો અન્ન વસ્ત્ર વિના ટળવળે છે.

આ વ્યવહાર-આ પ્રથા દયાળુ પિતાના કાર્ય-વાહક પુત્રોથી ચાલે છે, એ નવાઇની વાત છે. પિતાની સંપત્તિમાં સરખા હિસ્સાવાળા પુત્રોમાં એકને ત્યાં લીલા લહેર ત્યારે બીજા ભાઇને ત્યાં અન્નના પણ સાંસા. એક ભાઇ ગજસ્વાર ત્યારે બીજા ભાઇને રસ્તે ચાલતાં પણ અડચણ, એક લાખો રૂપીઆની સખાવતો કરે ત્યારે બીજો ભાઇ લાંબો હાથ કરીને તે લેછે. અરેરે ? ! ? કેટલી દીલગીરીની વાત, સમજો કે કોઇ માણસનો જ્યેષ્ટ પુત્ર પિતાના નામથી ધંધો કરી લાખો રૂપીઆ કમાય એ અરસામાં તેનો લઘુ ભ્રાતા અવનતિની પરિસીમાને માપતો હોય, તો શું તે વડીલ બંધુની ફરજ નથી, કે પોતાના લઘુ બંધુને પિતાની સંપત્તિમાંથી સહાય કરે ? અલ-બત સહાય કરવી એ તેની ફરજ છે. અને તેમ ન કરનાર ધિક્કારને પાત્ર છે. **"જે પિતાનું કીંમતી જીવન દુનીયાના ભલા ખાતર કુરબાન હતું તે પિતાનાં નામની જે સંપત્તિ-રૂપીઆ તે દુનીયાના ખાતર કામ ન લાગે ?** નહિ નહિ, એમ બનેજ કેમ ! દયાળુ પિતાની પ્રેમાળ આજ્ઞા સર્વને સુખી કરવાની છે, એમની અંતર ઇચ્છા સર્વનું ભલું કરવું એજ છે. તે ઇચ્છાને આધિન થવું એ આપણી ફરજ છે.

ગરીબોનાં ગળાં રેંસનાર, રંકને માંકડાની માફક નચાવનાર શ્રીમંત મહારીઓ દેવ દ્રવ્યરૂપે મનાતી લાખો રૂપીઆની મિલ્કતો જેને જરૂર નથી તેવાં પરદેશી અને પરધર્મી ખાતામાં સાડા ત્રણથી ચાર ટકાનું વ્યાજ ઉપજાવવા રોકે છે. તેવી રીતે એકત્ર કરેલી દેવ મંદિરોની હજારોની મિલ્કતો, કાયદાની મારામારી પાછળ ફના થાય છે. વીર પ્રભુના પુત્રોમાં વેર અને વિરોધ જગાડવામાં કામે લાગે છે, હજારોનું પાણી વરઘોડાઓ પાછળ થાય છે. અને સેંકડોનો ધુમાડો પર્વોના પ્રભાવ પ્રદિપાર્થે થાય છે. પરંતુ નિરાધાર રંક પ્રાણીઓના ઉદ્ધારાર્થે, કેળવણી પ્રચારાર્થે, સમાજ સુધારણાર્થે તેમજ સત્ય ધર્મના પાલનાર્થે એક પાઇ પણ ખર-ચવામાં આવતી નથી, તેવે વખતે તો તેને દેવદ્રવ્યની છાપ મારી અલગ રાખવામાં આવે છે, આથી સ્પષ્ટ જણાય છે, કે જૈન સમાજ સત્યથી કેટલી વિમુખ છે.

કદિ જો જૈન મંદિરોની લાખો બલકે કરો-ડોની મિલકતોથી એક જૈન બેંક સ્થાપવામાં આવે તો જૈન સમાજની વ્યાપારિક ઉન્નતિ કેટલી સરસ અને સુંદર થાય ? કોઇપણ દેશ કે સમાજની ઉન્નતિનું મૂળ સ્થાન તપાસીશું તો આપણને સ્પષ્ટ જણાશે, કે વ્યાપારિક ઉન્નતિ થતાંજ તેઓની ઉન્નતિનું આરોહણ થયું છે. આપણા પ્રતાપી રાજકર્તા અંગ્રેજો અને કાર્યકુશળ જાપાનનાં દ્રષ્ટાંતો આપણી આંખો આગળ તરવરી રહ્યાં છે; છતાં આપણે જોવાની તસ્દી ન લેતાં લાખોની મિલકતો પ્રતિ વર્ષે વિદેશી બેંકને ભેટ ધરાવીએ છીએ, એ શું સુચવે છે ?

કોઇપણ દેશની ચડતી પડતીનો આધાર તેના નેતાઓ ઉપર રહેલો છે. નેતાઓ સમાજને જ્યાં દોરવા માગે ત્યાં દોરી શકે છે. સમાજ દોરવાનું કામ શ્રીમંતો કરતાં જૈન મુની મહારાજો ઉપર વધારે મજબુતી ધરાવે છે. જે કાર્ય પચીસ ધનવાનો, કે દસબાર વક્તાઓ હાલ કરી શકતા નથી તે કાર્ય આપણા મુનમિહારાજો ધારે તો ન ધારેલા સમયમાં સાધી શકે.

હું તો આપની આગળ એટલે સુધી કહેવાના હિંમત ધરાવું છું, કે આપણે આપણી ઉન્નતિનો ઉદય ત્યારેજ જોઇશું, કે જ્યારે દેવ મંદિરોની કરોડોની મિલ્કતો કેળવણીનો પ્રચાર કરવાના કામે લાગશે. જૈન સાધુઓ વ્રત નિયમ આપવાના કાર્યથી વિશ્લેષ થઈ સમાજની કોન્ફરંસોમાં ભાગ લેશે, સમાજમાં વિદ્યા, વીર્ય અને ઐક્ય વધારવા પ્રયાસ કરશે તેમજ ગચ્છાગચ્છના મતમતાંતરોના ભેદ ભાવોને તોડી જૈન બાળકોમાં ઐક્ય પેદા કરશે, અને એથી પણ આગળ જ્યારે મંદિરો હાઇસ્કૂલો અને કોલેજો થશે અને તેમાં આપણા જૈન ત્યાગીઓ શિક્ષકો અને પ્રોફેસરો તરીકે કામ કરશે ત્યારેજ જૈન સમાજ ઉન્નતિનો ઉદય જોશે.'' શાન્તિ ! શાન્તિ ! ! શાન્તિ ! !

—— o ——

(લે:-ચંદુલાલ પીતાંબરદાસ શાહ-ઝહેર)

મહીકાંઠા એજન્સીમાં મોરાર પટેલ નામે એક ગરીબ ખેડૂત રહેતો હતો. વાત્રક નદીના એક રમ્ય તટ ઉપર પટેલની પાંચેક વિંઘા જમીન હતી, જે ઉપર પટેલના આખાય કુટુંબનો નિર્વાહ થતો. પટેલને એક ત્રિભોવન નામક પુત્ર હતો જેણે નજીકના ગામમાં આવેલ એક સરકારી ગુજરાતી શાળામાં સાત ધોરણ સુધી વિદ્યાભ્યાસ કર્યો હતો. મોરાર પટેલ પાસે વડિલોપાર્જિત અન્ય માલમિલ્કત નહીં હોવાથી, જમીન એજ તેમનું સર્વસ્વ હતું. આજ ગામમાં અતિ ધનાઢ્ય એવા એક શેઠ વસતા હતા; તેમના વૈભવમાં સંતતિના અભાવે થોડીક ન્યુનતા રહી ગઈ હતી. ઇશ્વર કૃપાએ પચાસ વર્ષની પાકી વયે શેઠને ઘેર પુત્ર અવતર્યો, એટલે પ્રભુ ભક્તિ કરવાનું કોરે મૂકી "મારકણો સાંઢ .ચોમાસુ મ્હાલે" ના જેવું કંઇક શેઠને વિષે થયું.

નદિના રમ્ય તટે આવેલી મોરાર પટેલની જમીન થોડીક હોવા છતાં મકાન બાંધવાના કામમાં ઘણીજ સગવડમય હતી, એટલે એ જમીન ઉપર શેઠની આંખ ઠરી. એક દિવસે પટેલને ઘેર બોલાવી શેઠે જમીનની યોગ્ય કિંમતે માંગણી કરી. વાત સાંભળતાજ પટેલના આંતરડાંમાં તેલ રેડાયું. બાપદાદાના વખતની એ જમીન સોના સાટે પણ વેચવી પટેલને ન પરવડે એ વાત સ્હેજે સમજાય તેમ છે, પરંતુ શેઠને તો ગમે તે ઉપાયે એ જમીન પડાવવી હતી, એટલે એકી સાથે શામ, દામ, દંડ અને ભેદના સામટા પ્રયોગો ખેડૂતને દબાવવા કરી નાખ્યા. છતાંય જ્યારે પટેલ મક્કમ રહ્યા, ત્યારે શેઠે સરકારી માણસો મોકલાવી નજીવી કિંમતે જમીન ખરીદી લીધી. જમીન જતાં પટેલની સ્થિતિ કફોડી થઇ ગઇ, અને શેઠને માથે શાપની વર્ષા વરસવા લાગી. ત્રીજેજ દિવસે પટેલની જમીનમાં શેઠની હવેલીનો પાયો નંખાયો, અને એ મકાનના મુહૂર્તના દિવસથીજ શેઠની પડતીનો પણ પાયો રચાયો. મોરાર પટેલ વહાણુંય ન વાય અને ખેતર તરફ જાય, ખેતરનાં નષ્ટ ભ્રષ્ટ અવશેષો નિહાળી તેમની આંખમાંથી શ્રાવણ ભાદરવાની વૃષ્ટિ સમી અશ્રુધારા વહે. આમ કેટલાંક વર્ષો વહી ગયાં; દુઃખ અને વખાના માર્યા પટેલ દેવલોક પામ્યા, અને અન્નનાય વાંધા એવા સંકટના સમયે સંસારની અધાર્ય ધુંસરી અનુભવવિહોણા ત્રિભોવન ઉપર આવી પડી. આજીવિકાનો નોકરી સિવાય અન્ય કોઇ માર્ગ નહીં હોવાથી ત્રીભોવન પોતાની પત્નિ, તથા રતન નામક દીકરી સહીત અમદાવાદ આવ્યો. અહીં તેના ગામના કોઇ ભલા વણિક પુત્રની સ્હાયથી એક મીલમાં મહીનાના પચીસ રૂપીઆના પગારે નોકરી રહ્યો.

(૨)

અમદાવાદ આવ્યા પછી એક બનાવથી ત્રિભોવનનો ભાગ્ય સિતારો ચમકયો. સાબરમતી તટે આવેલા બંગલામાં સુતા ત્રિભોવનના શેઠનો

એક દિવસ અચાનક કો શત્રુ હાથે ઘાત થતો ત્રિભોવને અટકાવ્યો. શેઠની જીંદગી જોખમમાંથી બચી, અને આ અનહદ ઉપકારની કદર કરી શેઠે તેને રૂપીઆ પચાસનો પગાર કરી આપ્યો. જેમ જેમ કાળ માર્ગ પ્રતિક્ષા કરતો ગયો તેમ તેમ શેઠની તેની પ્રત્યેની મ્હેરમાં અભિવૃદ્ધિ થતી ગઇ. અને ત્રિભોવન શેઠની અનેક અંગત ખાનગી બાબતોનો જાણકાર થયો. ત્રિભોવનની પુત્રી રતન આ સમયે કન્યાશાળામાં ગુજરાતી ત્રીજા ધોરણમાં ભણતી હતી. શેઠને ન્હેની તરફ ઘણોજ સ્નેહ હતો, અને કોક સમયે તો તેને જમવાને પણ પોતાને ઘરે બોલાવતા અને આનો બે આનો ખાવાનું લેવા આપતા.

(૩)

રતન ચાર ધોરણ પુરાં કરી રહી એટલે ત્રિભોવન પટેલને વિચાર તેનો અભ્યાસ બંધ કરાવવાનો હતો. રતને આ વાત પોતાનીજ સાથે ભણતી શેઠની પુત્રીને કહી હતી તેણે તે વાત પોતાના પિતાને કહી અને રતનને પોતાની સાથે અંગ્રેજી ભણવા આવવા દેવા પટેલને કહેવાને પિતાને આગ્રહ કર્યો. એક દિવસ ત્રિભોવન પટેલ શેઠને બંગલે ગયા, ત્યારે શેઠે રતનની વાત કહી. ભણેલી ગણેલી પુત્રીને યોગ્ય વર નહીં મળે એવી બીતિથી પટેલે રતનને અંગ્રેજી ભણાવવાની ના કહી. શેઠે પટેલને સમજાવ્યું કે પટેલો તો વિદ્યાભ્યાસમાં ઘણાય આગળ વધ્યા છે, એટલે વરની ચિંતા નહીં કરતા ખુશીથી રતનને ભણવા મોકલો. ભણતરનું સઘળું ખરચ હુંજ પુરું પાડીશ. મરજી ન્હોતી છતાય, શેઠના આગ્રહથી રતનનો અભ્યાસ ચાલુ રાખવાનું કહી પટેલ ઘેર ગયા. પંદર વરસની યુવાવયે પહોંચતાંજ રતને છઠ્ઠા ધોરણમાં પ્રવેશ કર્યો. છોકરી યૌવન કાળમાં આવેલી ચુકેલી હોવાથી તેના લગ્નની ચિંતા પટેલને થવા લાગી. વરની શોધમાં ને શોધમાં એક વરસ વિતી ગયું, અને તે દરમિયાન રતને મેટ્રીકની પરિક્ષા પણ પસાર કીધી. હવે પટેલને તાલાવેલી થવા લાગી, અને અહર્નિશ પુત્રીના વિચારમાજ રહેવા લાગ્યા.

(૪)

એક દિવસ સાયંકાળે અસ્વસ્થ ચિત્તને સ્વસ્થ કરવાને મોરાર પટેલ 'એલીસબ્રિજ' તરફ વાયુસેવનાર્થે જતા હતા. માર્ગમાંજ 'વિકટોરિયા ગાર્ડન' આવેલ હોવાથી સહસાજ તે તરફ વળ્યા. વાટિકાની મધ્યમાં પડેલા બાંકડા નજીક આવતાં અચાનક એક મિત્રનો ભેટો થયો. ઉભય મિત્રતાની પવિત્ર સાંકળથી સંગઠિત થએલ હતા. ત્રિભોવને તેને દિલની વાત કહી, અને મિત્રે એક બી. એ. માં અભ્યાસ કરતા પોતાના ઓળખીતા યુવાનને રતનને લાયક મુરતિઆ તરીકે સુચન કીધું. ઉભયે એમ ઠરાવ્યું કે તેઓએ બીજે દીવસે મંત્રણાર્થે ત્રિભોવનને ત્યા મળવું, અને વેવીશાળ નક્કી કરવો.

ઠરાવ્યા પ્રમાણે પુરૂષોત્તમ પટેલ રસિકલાલને લઇ બીજે દીવસે સંધ્યાકાળે હાજર થયો. યુવાન સ્ત્રી સ્વાતંત્ર્યનો હિમાયતી હતો, તથા સ્ત્રીઓને માટે ઉચ્ચ માન ધરાવતો હતો, એ વાત પુરૂષોત્તમથી અજાણી ન્હોતી. રસિકલાલને જોતાં જોનારનો તેના પ્રતિ ઉચ્ચ અભિપ્રાય બંધાતો, અને આજ કંઇ ત્રિભોવનની બાબતમાં બન્યું. આવો ભણેલો મરતીઓ મળે તો ખરેજ સુખી થશે એમ બેઉ જણ માનવા લાગ્યા. સંકેત પ્રમાણે પુરૂષોત્તમે રસિકને રતનના દર્શન કરાવ્યા અને ધીમે રહીને વિવાહની વાત ઉપાડી. રસિકલાલે કહ્યું, 'વિવાહ કરવો એ મારા હાથમાં નથી, તમે કહેતા હો તો મારા માતુશ્રીને તેડાવું." ત્રિભોવને વાત કબુલ કીધી અને ત્રીજે દિવસે રસિકલાલ પોતાની માતા સાથે ફરી ત્યાં આવ્યો. વિવાહની વાત કહી એટલે રસિકની મા બોલી, "જુઓ ભાઇ મ્હારે પુત્ર ભણેલો તેમજ કિંમતી છે, અને આપણી ન્યાતમાં આવા મરતીઆ કંઇ સામે ફરી મુકતા છે જે કંઇ હરવ્યા વિના વિવાહ કરીએ. તમારી દીકરીને મ્હારા દેવકુમાર જેવા પુત્રરત્ન સાથે પરણાવવી હોય તો રૂપીઆ પાંચ હજાર જોઇશે. શક્તિ હોય તો વાત કરજો. નહીંતર એટલેથીજ વાતને દાબી દેજો" સુધરેલા

પુત્રોની માતાઓ પણ આવી હશે એ વાત તો ત્રિભોવને આજેજ જાણી. પોતાની પાસે ફક્ત એક હજાર રૂપીઆજ હતા, અને છતાંય કોઈ પણ ઉપાયે કેળવાયલા વર સાથેજ રતનને લગ્નગાંઠે જોડવાનો પટેલનો વિચાર હતો. એટલે કેટલીક વાટઘાટ અને રકઝકને અંતે રૂપીઆ બે હઝાર આપવાનાં ઠરાવી વેવીશાળ નક્કી કર્યો, અને વિવાહની વેદી ઉપર નિર્દોષ બાળા હોમાઇ.

(૫)

દિવાળીની રજાઓમાં રસિકલાલ અને રતનનાં લગ્ન થઇ ગયાં. વિવાહ અથવા વર વિક્રયના ઠરાવેલ રૂપીઆ દયાળુ શેઠ પાસેથી ઉછીના આણી, રસિકની માને અર્પણ કરી, જાન વળાવી. પૈસાનું પાણી થવા સાટે પુત્રી સુખમાં પડી એ વિચારે ત્રિભોવન પટેલનું મન પ્રસન્નતા પામ્યું. જમાઇ કેળવાએલ હોવાથી, કપાતર માતાની જહાંગીરી શાસનનીતિનો કોઇ સમયે પણ ધ્વંસ થશે, અને દીકરી સુખના દિવસો જોશે એમ તે ધારતા. અહીં, રસિકલાલ ઘરે આવ્યા પછી મુંબાઇ પોતાના અભ્યાસાર્થે જવાનો હતો, કારણકે એમ. એ. નો ક્લાસ શરૂ થઇ ગયો હતો. વસ્તુસ્થિતિ આવી હોવાથી પૈસાની જરૂર હતી, પરંતુ તેની સ્થિતિ ગરીબ હોવાથી હાલ તુરત તો રૂ. પાંચસો ઉપરાંતની રકમ મેળવવી એ મુશ્કેલીની વાત હતી. કિન્તુ આનો તોડ તેની જમાનાને ધોઇને પીગએલ માતાને લાવવો એ સ્હેજ વાત હતી. તેણે રસિકને આટલી રકમ સસરા પાસે કઢાવવાને બંભેર્યો, અને વ્હેવારૂ જ્ઞાન તથા અક્કલના બારદાન રસિકે ત્રિભોવન ઉપર રૂ. ૬૦૦) મોકલવાને પત્ર પાઠવ્યો!

પટેલના હસ્તમાં પત્ર આવતાંજ તેમના હાલ બેહાલ થઇ ગયા. સ્વાર્થતાની પરાકાષ્ટાએ પહોંચેલ કૃતઘ્ની જમાઇ ઉપર તીરસ્કાર છૂટયો, છતાંય પુત્રીના હીતાર્થે આ કામ કરવાની તેને ફરજ પડી. રતનના વેવિશાળ અને લગ્ન પ્રસંગે થએલ ખરચને પરિણામે પટેલને લગભગ રૂ. ૪૦૦૦) ની કાણ ઊંડી હતી. એટલે આટલી મોટી રકમ મેળવતાં પટેલના આંતરડાં ઉંચાં થઇ ગયાં. શેઠ સિવાય અન્ય કોઇ તેનો આધાર નહીં હોવાથી, પત્ર લઇ અણુજીની આંખે તે તેમની પાસે ગયા. દયાહીન અને સ્વાર્થાંધ રસિકલાલની આપખુદી વર્તણુંક તરફ શેઠને પણ રીસ તો ભારી ચઢી કિન્તુ પટેલની વિનવણીથી રૂ. ૬૦૦) ગણી આપ્યા, બાકી આ વખતે તો શેઠ નક્કી રસિકલાલને સ્વાદ ચખાડતે.

(૬)

કલદાર હાથમાં આવતાં વેંતજ રસિક મુંબાપુરી ઉપડયો. એમ. એ. ની પરિક્ષા પાસ કરી અને નડિયાદની નિશાળનો હેડમાસ્તર તરીકે નિમાયો. નાગરવાડામાં એક ઘર ભાડે રાખી માતા તથા પત્નિ સાથે ગૃહસંસાર શરૂ કીધો. હવે સાસુની દમનનીતિ શરૂ થઇ. ડગલે અને પગલે ડોસી રતનનો વાંક કાઢયા કરતી. કુકે અને ભૂભકે શ્રીમતિના મુખમાંથી ગાલિકાની શ્રાવણ ભાદરવા સમી અતિ વૃષ્ટિ થવા લાગી. "તને આ નથી આવડતું અને કાંઇયું નથી આવડતું; કુંવો આખોય દહાડો ચોપડો લઇને ચોંટી રહે છે. કેડ તો નમાવતીજ નથી." વગેરેની પુષ્પાંજલિ પ્રતિદિન આવે.

આમ રામયણ અને મહાભારતની રમતોમાં રતનનું શરીર સુકઇ જઇ તેનું જીવન શુષ્ક અને નિરસ થઇ ગયું. બિચારીને પતિ તરફથીય ક્યાં યતકિંચિત સુખ હતું તો પણ ડોકરીનુંજ ઉપરાણું લેતો, અને તે પાપણીની શીખામણે ચઢી સુશીલ અને શાન્ત સ્વભાવની રતનને નિર્દય માર મારતો. ખરેજ આ વિસમી સદીના જમાઇ અને સાસુનાં કરપીણ તાંડવ નૃત્ય હતાં.

પતિપરાયણા રતન મુંગે મોઢે માર સહી લેતી. અને આત્મ શરીરે ગુજરતા આવા સીતમગાર જુલ્મનો કોઇની સમીપ ઉચ્ચાર કે ઉલ્લેખ સરખોય કરતી નહીં, રતનને સંતાપવામાં રસિકની માતાનો એક ગુપ્ત આશય હતો. તે પોતાના પુત્રને કુલીન કુટુંબની કોઇ અન્ય કન્યકા સાથે પરણાવી, તે માર્ગે બીજા બે ચાર હજારની ધાપ મારવા ઇચ્છતી હતી, કાળ ચક્રની ગતિ વધતાં આ વાત રતનનાં સમજવામાં આવી ગઇ, અને પોતાને સંતાપવાનું કારણ પણ એજ હોવું જોઇએ એમ તેને સ્પષ્ટ સમજાયું. પિતાને પત્ર લખવાને મન થયું કિન્તુ પતિભક્તિએ વિક્ષેપ નાખ્યો.

અને બીજી બાજુએ ત્રિભોવનને પણ દીકરી

તરફથી બે ત્રણ માસના લાંબા સમયથી પત્ર નહીં આવવાથી ચિંતા થવા લાગી, સમાચારની આશાએ તે કાળ વ્યતિત કરવા લાગ્યો.

અહીં રતન એકવાર અચાનક ચાહ બનાવી સાસુને આપતી હતી. તેવામાં અચાનક ચ્હાનું પ્યાલું છટકી ગયું. અને ડોસીના હાથ ઉપર પડ્યું ડોસી થોડુંક દાઝયાં પણ ખરાં; અને આ કાળે ડોસીએ ન લખાય અને વંચાય એવી ગાળોની વૃષ્ટિ રતન ઉપર વર્ષાવી, માતુશ્રીને દાઝવાથી થતી અસહ્ય વેદના શ્રવણ સમા પિતૃભક્ત રસિકથી નહીં સહેવાતાં, તેણે રતનને લત્તા પ્રહાર અને હસ્તથી ખૂબ બાખરી કરી. અગ્નિજ્વાળામાં ઘૃત હોમવાનું જાણે બાકી રહ્યું હોય તેમ અધુરામાં પુરૂં બીચારીને ગૃહ બ્હાર ધકેલી મૂકી તે એટલે સુધી કે રાત્રીએ રતનને ભૂખે તરસે પીડાઇ ઓટલા ઉપર જો પડોશમાં રહેતા એક ભાઇએ જૈન ભાવે ભોજન ન આપ્યું હોત તો સુવું પડત.

(૭)

આમ દુઃખમાં એક બે દિવસ મળ્યા છતાં રસિક કે તેની મ. કોઇને રતનની દયા પણ ન આવી. આ ક્રૂરતા પાડોશીથી દેખી ન જવાથી તેણે દુઃખ–સાગરમાં ડુબતી બાળાને બચાવી ઘેર લઇ જવા. તેના પિતાને પત્ર લખ્યો. ત્રિભોવન પત્ર વાંચતાંજ મલિન થઇ ગયા, અને કાગ વળતાંજ સુખ દુઃખના ભાગીય, શેઠ પાસે ગયો શેઠ એજ એનું સર્વસ્વ હતું એમ કહેવામાં કાંઇ અતિશયોક્તિ નહીં ગણાય. શેઠે પત્ર વાંચ્યો, અને અત્યંત ક્રોધ ચઢયો; પટેલને દિલાસો આપ્યો, અને નિર્દય રસિક તથા તેની કપાતર માતાના આ વખતે તો બરાબર ખબર લઇ નાંખવાનો શેઠે નિશ્ચય કર્યો, પરંતુ પટેલે તેમ કરવાની ના પાડી. ત્યાંથી વિદાય થઇ પટેલ સાડાચાર વાગે ઉપડતી લોકલ ટ્રેનમાં નડિઆદ આવ્યા. રસિકલાલને ઘેર ગયા. રતન નીચેજ સુતી હતી. પિતાને દેખ્યા. દેખતાંજ કોટે વળગી પડી, અને ધ્રુસકે ધ્રુસકે નયન આભમાંથી ચોધાર અશ્રુ વહન કરવા લાગી. મસ્તકે હાથ ફેરવી, શાન્તવન–જળ સિંચન કરી, ત્રિભોવન પટેલ ઉપર ગયા. ન છુટકે જાણે બોલવું પડતું હોય તેમ ડોસી 'આવો' એમ વદ્યાં. પાણી પીના પટેલ બેઠા એવામાં રસિકલાલ પણ આવી પહોંચ્યો. શ્રીમાન પણ શિષ્ટાચારની વશીકરણ વિદ્યાને વશ થએલ હોવાથી સસરા સાથે થોડોક સમય વાર્તાલાપમાં વિતાવ્યો. વાળુ કરી સઘળાં નિદ્રાધિન થયાં. પ્રાતઃકાળે નાસ્તો લીધા પછી પટેલે રતનને પિયર મોકલવા તેની સાસુને કહ્યું. એટલે શ્રીમતીએ કહ્યું: 'એ તમારી દીકરી રહી, ક્યાં આપણું કહ્યું ચાલે છે જે હા ના કહીએ.

"ઠીક તમારે જે કહેવું હોય તે કહો. બાકી મારી રતન એવી ન હોય." એમ કહી ત્રિભોવને રતનને તૈયાર થવા કહ્યું. રતન તૈયાર થઇ. એટલે પટેલ પુત્રીને લઇ અમદાવાદ આવ્યા. રતન પાસે ઘરેણાં ન્હોતાં. કવંદર ડોસીએ ક્યારનાંએ તે છીનવી લીધાં હતા. અને પલ્લું? અરે, તે પણ રાવસાહેબ રસિકલાલે વેડફી નાંખ્યું હતું, એટલે રતનનો સઘળો આધાર પિતા ઉપરજ હતો. ધીરે ધીરે ત્રિભોવને આ વાત સાંભળી. અને હૃદયમાં વજ્ર સમો ઘા થયો. અને જ્યારે તેણે સાંભળ્યું કે રસિકલાલે બીજવરની ઉપાધી ધારણ કરી, રતનનો ભવ બગાડયો છે, ત્યારે તો તે નાના બાળકની માફક રડી પડ્યો. અને આ અમંગળકારી વાત નિત્ર આઘાતથી બાળકપ્રેમી અને વાત્સલ્યમય પિતા મૃત્યુશરણ થયો.

ત્રિભોવનના મરણથી કુટુંબી જનોની સ્થિતિ અતિ કરુણાજનક થઇ ગઇ. રતનને ઉપર આભ અને નીચે ધરતી સિવાય અન્ય આધાર ન રહ્યો. બિચારી અત્યંત પીડાવા લાગી અને રસિકલાલના ઠર નખરાનો ભોગ થઇ પડી.

(૮)

સાસુ અને પતિથી ત્યજાયલી રતન તેના બાપુના શેઠની મદદથી એક કન્યાશાળાની મુખ્ય શિક્ષિકા તરીકે નીમાઇ. આમ ત્યજાયલી તરૂણીએ અવશેષ જીવન સમાજ અને સ્ત્રીઓની સેવામાં સંયમ નિયમનાં શિક્ષણ ભણતાં અને ભણાવતા ગાળ્યું.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

दिगम्बर जैन

सम्पादकः–मूलचन्द किसनदास कापड़िया–सूरत।

वर्ष २३वाँ
अङ्क ८

[illegible]
ज्येष्ठ

विषयानुक्रमणिका.

उपहारग्रन्थकी वी० पी० होगी।

इस वर्षके दो उपहार ग्रन्थ–**नवरत्न** और **हिन्दी जैन विवाहविधि** नये पुराने सभी ग्राहकोंको उपहारमें व० पी० पोस्टेज सहित ...) की वी० पी० से ८–१० दिनमें क्रमशः भेजना प्रारम्भ होगा। आशा है कि हरएक ग्राहक वी० पी० मिलते ही छुड़ा लेंगे। **प्रकाशक।**

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।=) विशेषांक मूल्य ।।।)

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

नाना कथाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततां, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वां	वीर सम्वत् २४५६, ज्येष्ठ, विक्रम सम्वत् १९८६.	अङ्क ८.

सम्पादकीय-वक्तव्य

चातुर्मास।

अब चातुर्मास प्रारम्भ होगया है, प्रत्येक जैन साधु गमनागमनकी प्रवृत्तिको रोककर एक स्थान पर आत्मध्यान करते हैं। ब्रह्मचारी, त्यागी भी यथाशक्ति एक जगह रहकर ज्ञान एवं चारित्रकी वृद्धि किया करते हैं। अजैनोंमें भी चातुर्मासके समय अनेक साधु एक स्थानपर ही निवास किया करते हैं। आज कल वर्षा होनेके कारण जीव जन्तुओंकी विशेष उत्पत्ति होजाती है, यही गमनागमन परित्यागका एक मुख्य कारण है। साथमें और भी अनेक कारण पाये जाते हैं। जाने आनेमें कादव-कीचड़की बाधा होती है, शास्त्र स्वाध्याय नहीं हो सकते, संयम पालन और आत्मध्यान भी नहीं किया जासकता; जब कि एक स्थानपर रहकर यह सब बाधक कारण नहीं रहते।

यदि सच पूछा जावे तो क्या मुनि और क्या श्रावक, सभीके लिये लाभ लेनेका यह अपूर्व अवसर प्राप्त होता है। गृहस्थ इस समय व्यापार, व्यवसाय, विवाह, शादी और तमाम झंझटोंसे निवृत्त होजाते हैं। इधर [illegible] होता है। ऐसे समयमें बहुत कुछ कार्य किया जासकता है। दुःख तो इस बातका है कि ऐसे अपूर्व समयका हम बराबर उपयोग करना नहीं जानते, अथवा करते ही नहीं। इसी चातुर्मासमें अनेक धार्मिक त्यौहार आते हैं, रक्षाबंधन आता है, पर्यूषण जैसा महापर्व इसी समय होता है। कहनेका तात्पर्य यह है कि तमाम वातावरण हमारे अनुकूल होजाता है। अगर इतने पर भी हम इसका लाभ न लेसके तो दुर्भाग्य समझना चाहिये!

* * *

मुनिराजोंके प्रति।

सौभाग्यसे वर्तमानमें मुनियोंका समागम हुआ है। जहां२ उनका चातुर्मास हुआ हो वहांकी जनता तो बहु भाग धार्मिक होजानी चाहिये। मुनि महाराज उपदेश करें, अपूर्व शास्त्रोंका श्रवण करावें उपयोगी प्रतिज्ञायें दिलावें, गृहस्थोंको कल्याणका मार्ग बतलावें, उनकी तमाम प्रवृत्तियोंको धर्मानुकूल बनानेका प्रयत्न करें। यदि यह सब कार्य मुनिराज करें। और गृहस्थ उसपर ध्यान दें तो

समझना चाहिये कि मुनियोंका चातुर्मास करना और श्रावकोंके शहर या ग्राममें इस सत्समागमका मिलना सब सार्थक होगया। और यदि उक्त बातोंका प्रचार न हुआ तो कहना होगा कि पूर्ण कर्तव्यका पालन ही नहीं किया गया।

मुनि महाराजका प्रभाव गृहस्थोंपर जितना पड़ना चाहिये, उतना और किसीका नहीं पड़ सकता। जब बात यही है तब जहांपर मुनिराजका चातुर्मास हुआ हो, चार महीनेमें वहांकी जनता धर्मिष्ट हो जाना चाहिये। साथमें यह भी सिख देना उचित है कि मात्र जैनोंको ही नहीं, किन्तु प्रत्येक अजैनको भी उपदेश लाभका मौका देना चाहिये। जहां परम निस्वार्थी दिगम्बर वीतरागी साधु चार चार माह तक उपदेश करें वहां अजैनोंके हृदयपर कुछ भी असर न हो यह हो नहीं सक्ता। इसलिये उदार भावसे किसीके भुलावेमें न आकर शास्त्रानुकूल अजैनोंको जैन बनानेका प्रयत्न यदि मुनिमहाराज करें तो बहुत कुछ सफलता हो सक्ती है। चातुर्मासमें एक एक मुनि यदि १९-२९ ही नये जैन बनावें तो प्रतिवर्ष सैकड़ों अजैन जैन धर्मानुयायी हो सके हैं। मगर दुःख तो यह है कि कुछ अदूरदर्शी पंडितोंके झमेलेके कारण इस बातका प्रयत्न ही नहीं किया जाता! अगर मुनिसंघ इस बातपर ध्यान देवें तो उनके कर्तव्यका पालन तो होगा ही, साथमें अनेक जीवोंका कल्याण भी होगा।

***

त्यागी और ब्रह्मचारियोंसे।

अब कुछ निवेदन त्यागी और ब्रह्मचारियोंसे भी करना है। एक तो यही है कि आप उन ग्रामोंके गृहस्थोंको सच्चा गृहस्थ बना दें जहांपर आपका चार मास तक निवास हो। वहांका प्रत्येक स्त्रीपुरुष क्रियावान होजावे। सभी स्वाध्याय करने लगें और बालकोंका भी शिक्षाक्रम जारी होजाय। लोगोंमेंसे कुरीतियोंका निकास होकर विवेक और सत्यका विकाश होजावे। आपका कर्तव्य होना चाहिये कि धार्मिक उपदेशके साथ ही साथ लोगोंको देशसेवा और समाजसेवाकी ओर भी उत्सुक करें। पहिली बात तो यह है कि त्यागी स्वयं ही इन कार्योंमें प्रवृत्त होवे।

किसी भी त्यागीके शरीरपर अपवित्र विदेशी वस्त्र न हो। सभी खादीका उपयोग करें। समय मिलनेपर (एक घंटा अवश्य ही निकालकर) तकली या चर्खा कातें और अपने कपड़े अपने काते हुये सूतसे ही बनवावें। तमाम स्वदेशी वस्तुयें ही उपयोगमें लावें। इतना होते हुये ही आपका जनतापर पूरा प्रभाव पड़ सक्ता है।

धार्मिक उपदेशके साथ ही साथ गृहस्थोंको चर्खा और तकली द्वारा सूत कातनेका भी उपदेश करें। लोगोंको शुद्ध खादी ही पहिननेका उपदेश करें। देव मंदिरोंमें एक भी अपवित्र विदेशी वस्त्र न रहे। उसके स्थानमें खादीका उपयोग कराया जावे। चरबीयुक्त वस्त्रोंसे भगवानकी

प्रतिमाका प्रक्षाल करना, शास्त्र बांचना महान् घृणित कार्य है, यह सब लोगोंके गले उतार देना चाहिये। इसके साथ ही साथ देशसेवा करनेके अन्य२ उपाय भी बतलाये जावें। कारण कि जैनोंका देश सेवामें पीछे रहना ठीक नहीं होगा। जैनियोंके अलावा सर्व साधारणको भी धार्मिक उपदेश दिया जावे, उन्हें खोटे २ व्यसनोंसे बचनेका आदेश किया जावे और धर्मका मर्म समझकर जैन धर्ममें दीक्षित किया जावे।

त्यागियों व ब्रह्मचारियोंसे एक यह भी निवेदन है कि जहाँ समाजमें फूटफाट हो वह आपके उपदेश से निकल ही जाना चाहिये। दूसरे—गृहस्थोंके खानपान, पहिनाव उढ़ाव, और रहनसहनमें जितनी होसके उतनी सादगी लानेका प्रयत्न करना चाहिये। उनके प्रति अपना व्यवहार भी ऐसा होना चाहिये जिससे उन्हें अपने कारण किसी प्रकारकी आकुलता न होने पावे।

धर्मरत्न पं० दीपचन्दजी वर्णी अभी हमारे यहां पधारे थे। आपके सीधे सादे खानपान व रहनसहनकी हम क्या तारीफ करें? आपका कहना था कि "प्रत्येक मुनि या त्यागीको यह सोचलेना चाहिये कि जब हम स्वयं गृहस्थ थे तब प्रतिदिन मिष्टान्न नहीं बनाते थे। अगर अब हमें गृहस्थ प्रतिदिन मिष्टान्न या हलुआ पूरी देता है तो समझना चाहिये कि इस हमारे निमित्तसे ही ऐसा करना पड़ता है इसलिये उस विशिष्ट आहारको न लेवे, और गृहस्थोंकी इस प्रणालीको मिटादे। जिससे अपनको और गृहस्थको किसी प्रकारकी भी आकुलता न होने पावे।"

वास्तवमें यह बात ध्यानमें रखने योग्य है। अगर मुनि या त्यागी इसको स्वीकार करेंगे तो बहुत ही अच्छा होगा। उदासीनोंका मार्ग तो इन बातोंमें बहुत सीधा सादा और साधारण होना चाहिये।

* * *

मुनियों या त्यागी ब्रह्मचारियोंको तो सर्वदाही आत्मकल्याणका अवसर रहता है, मगर हमारे लिये तो यह चातुर्मास

गृहस्थोंसे।

ही एक अपूर्व अवसर प्राप्त होता है। आठ महीने गृहस्थ नाना प्रकारकी गार्हस्थ्य झंझटोंमें फंसा रहता है, मगर आत्मकल्याणका यह प्राकृतिक अवसर मिलता है। इस समय कहीं तो मुनिराजोंका समागम होता है, कहीं त्यागी ब्रह्मचारी विराजते हैं, तो कहीं विद्वानोंका साथ होता है। उनसे हमें नित्य उपदेश ग्रहण करना चाहिये। और विवेकपूर्वक सन्मार्गपर आरूढ़ होना चाहिये।

छोटे२ ग्रामोंमें जहांकी जनता अज्ञान है, जहां त्यागी व उपदेशकोंकी सच्ची आवश्यकता है वहां मुनियों या त्यागियोंका पधारना बहुत कम होता है! इसलिये वहांकी जनताको शास्त्रस्वाध्याय करके अपना कल्याण करना चाहिये। प्रत्येक पढ़ा लिखा स्त्रीपुरुष यह प्रतिज्ञा करले कि हमें तो चातुर्मासमें अमुक शास्त्रकी स्वाध्याय करना ही है। बस, चार मासमें उसे पूरा करले। जो पढ़े लिखे नहीं हों उन्हें शास्त्र सुनाकर स्वपर कल्याण करें। स्वाध्यायके उपयोगी तमाम जैन ग्रंथ "दिगंबर

जैन पुस्तकालय-सूरत" के पतेसे मिल सके हैं।

जहां मुनियों या त्यागियोंका समागम है वहां की तो कहना ही क्या है ? चार मासके उपदेशसे महामूढ़ पुरुष भी विवेकी होसक्ता है। दूर दूरसे लोग दर्शनोंको भागे हुये आते हैं। मगर मात्र मुनि दर्शनसे आत्मकल्याण नहीं होगा। वे चारित्रकी आदर्शमूर्ति हैं। उनके दर्शन करके अपनको भी संयमी होना चाहिये। उपदेश सुनकर तदनुसार प्रवृत्ति करना चाहिये। अहिंसा और सत्यपूर्ण व्यवहार होजाना चाहिये। यही मुनिदर्शनका फल है।

दूसरी एक बात और भी ध्यानमें लेने योग्य है। वह यह है कि मुनियोंका बहुत संयम श्रावकोंके आधार पर रहता है। अगर हम विशेष आडंबर करें, खोटी भक्ति या व्यर्थकी भीड़भाड़ करें तो उनका संयम पूर्णरीत्या नहीं पल सक्ता। इसलिये तमाम कार्य विवेक पूर्वक होना चाहिये। यदि आप मुनियोंके संयमकी रक्षा करना चाहते हैं तो आहारादिकमें विशेषता न करके जिस प्रकार अपन निरंतर भोजन करते हैं उसीप्रकार साधारण आहार देना चाहिये। मुनियोंकी तो गोचरीवृत्ति होती है, उसमें अपनेको विशेष आडम्बर बढ़ाकर आकुलित न होना चाहिये। इसके अलावा मुनियों या त्यागियोंकी वैयावृत्ति करना अपना कर्तव्य है। मगर इसमें भी अति कर देना ठीक नहीं है। मोहवश या अविवेकसे ... मुनियोंके निवासस्थानोंमें मर्यादातीत साधनोंका एकत्रित कर देना वैयावृत्ति नहीं, किंतु महान अज्ञान है। हमारी तो यह आन्तरिक भावना रहती है कि मुनिवर्ग व्यवस्थित रहकर गृहस्थोंका कल्याण करे और गृहस्थोंका व्यवहार भी मुनिराजोंके प्रति ऐसा रहे कि जिससे किसी भी पक्षविशेषको कोई टीका टिप्पणी या समालोचनाका अवसर न मिले। मुनियों या गृहस्थोंकी तमाम प्रवृत्तियां शास्त्रानुकूल मर्यादित हों।

प्रत्येक गृहस्थका दैनिक कार्यक्रम होना परमावश्यक है। यथासमय पूजा, स्वाध्याय, दान आदि करे, आत्मध्यानका समय निकाले और तमाम प्रवृत्तियोंको भी समयानुसार व्यवस्थित बनाले। यदि वर्तमान समयको देखा जाय तो व्यर्थ समय गंवाना घोर अनर्थ है। जिस समय मनुष्य निठल्ला होता है उस समय उसका उपयोग खोटी बातोंमें जाता है। इसलिये ऐसा न करके उस समय प्रत्येक स्त्री पुरुष धर्मचर्चा करे, समाज और देश सेवाके विषयमें विचार करे तथा चरखा काते, तकली द्वारा सूत निकाले और अपने तनके लिये अपने द्वारा काते हुये सूतसे ही वस्त्र बनवावे। जब आप ऐसा करेंगे तो आपका उपयोग उत्तम तो रहेगा ही, साथ ही साथ देश सेवामें भी कुछ भाग दिया हुआ कहला सकेगा।

ऐसी सुपरिस्थितिके होते हुये भी अगर जैनसमाज अपनी उन्नति न कर सका तो फिर कौनसा अवसर प्राप्त होगा ? इसलिये मुनियों, त्यागियों, विद्वानों और सामान्य गृहस्थोंको अपना२ कर्तव्य समझकर चलना चाहिये। यही धर्म व समाज व देशके कल्याणका उपाय है। व्यवस्थित होनेका सबसे अच्छा अवसर तो चातुर्मासमें ही मिलता है। इसे व्यर्थ नहीं गंवा देना चाहिये।

—⋙⋘—

आचार्य संघ मथुरामें—श्री १०८ आचार्य श्री शांतिसागरजीका संघ आषाढ़ वदी १३को सकुशल चौरासी (मथुरा) पहुंच गया है व चातुर्मास वहां ही होगा। मुनि वंदना व श्री जंबुस्वामी क्षेत्रके दर्शनार्थ सबको पधारना चाहिये।

कुंडलपुरमें मुनि श्री सूर्यसागरजी—मुनि श्री सूर्यसागरजी, श्री वीरसागरजी, श्री धर्मसागरजी व श्री अजितसागरजीका चातुर्मास कुंडलपुर (दमोह) में होगा। वहां इन्दौरसे पं० पन्नालाल गोधा आदि ४ उदासीन आये हैं व न्यायाचार्य पं० गणेशप्रसादजी वर्णी भी वहां ही चातुर्मास करेंगे।

सरसेठ हुकमचंदजी—की ५७ वीं वर्षगांठ जंवरीबाग इन्दौरमें मास्टर मूलचंदजी बी० ए०के सभापतित्वमें गत ता० १७ जूनको बड़े भारी समारोहके साथ हुई थी। तब सेठजीकी दानशीलता व गुणानुवादपर प्रो० श्रीनिवासजी, पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी, पं० बंशीधरजी शास्त्री आदिके व्याख्यान हुए थे।

कुंथलगिरि—आश्रमका ता० १७ जूनको सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुरने निरीक्षण कर अतीव सन्तोष प्रकट करके सबको मिष्टान्न भोजन कराया व १००)के टीनके पत्रे दिये।

दिवली (मानभूमि)—में जीवदया सभा आगराके प्रयत्नसे ज्येष्ठके मेलेमें एक भी प्राणीकी हिंसा नहीं हुई थी।

कारंजा—के महावीर ब्र० आश्रमको प्रसिद्ध लेखक बा० कृष्णलाल वर्मा बंबईने २०००)की पुस्तकें भेंट की हैं।

देशसेवामें जैनोंका हिस्सा।

सूरत—के सरैया जैनी व अंकलेश्वरके छोटालालजी गांधी नासिक व यरोडाकी जेलमें सकुशल हैं। रोहतक—से हरफूलसिंह जैन व फूलदेवसिंह जैन जेल गये हैं। कलकत्ते—में सेठ पद्मराजजी जैन रानीवालेको ६ मासकी सजा व उनकी १६ वर्षकी पुत्री इन्दुमतीको ९ मासकी सजा हुई है। ललितपुर—में वैद्यभूषण पं० मथुराप्रसादजी शराब पिकेटिंगके लिये गिरफ्तार किये गये हैं। कटनी—में कई जैन स्वयंसेवक कार्य करते हैं। हुकमचंद जैन जेल गये हैं। पन्नालाल गांधेलीय भी खूब कार्य कर रहे हैं।

जबलपुर—में ३२-३३ दि० जैन स्वयंसेवक व स्वयंसेविका कार्य कर रही हैं। जैन व्यापारियोंने विदेशी कपड़ा न मगानेकी प्रतिज्ञा की है। दमोह—में १५ जैन स्वयंसेवक कार्य करते हैं। विदेशी वस्त्र मंगाना व बेचना बंद हुआ है, विदेशी पहिनकर मंदिरमें न आने देनेका पिकेटिंग जारी है। इटावा—में जैन बालबुद्धि विकाशिनी सभाके प्रयत्नसे सारी पंचायतने विदेशी वस्त्र त्यागका व मंदिरमें स्वदेशी वस्त्र पहिनकर ही आनेका नियमसे निश्चय किया है। जिससे धरना बंद हुआ है। लखनऊ—में दि० जैन समाके प्रयत्नसे एक वर्षतक दि० जैन मंदिरोंमें विदेशीवस्त्र नहीं प्रदान करेंगे। देहली—के मंदिरोंमें धरना देनेपर विदेशी वस्त्र पहिन-

कर कोई नहीं जाते व अनेकोंने विदेशी वस्त्र त्याग किया है। धरना देते समय एक मंदिरमें एक पंडितजी ऐसे बिगड़े कि विदेशी वस्त्र पहिनकर स्वयंसेवकके ऊपरसे निकल गये व कहा कि मैं मर जाऊँगा, परन्तु विदेशी वस्त्र नहीं छोड़ूंगा! वाहरे पंडितजी !! बंबई–में २१ जूनको १० जैन स्वयंसेवकोंको मार पड़ी थी। पटना–में जैन व्यापारियोंने विदेशी कपड़ा वेचना बंद कर दिया है। जो है उसको सोल करके कॉम्प्रेसमें रख दिये हैं। अलीगंज–में भी विदेशी कपड़ा जैन बजाजोंने बेचना बंद कर दिया है। बडाला–(मुंबई) में गिरधरलाल नरोतम शाहको मार पड़ी थी व चन्दुलाल बलारियाको तीन मासकी सजा हुई है। महात्मा–भगवानदीनजीको जबलपुरमें २ वर्षकी सजा और हिसारके ला० जगदीशरायको ४ मासकी सजा हुई है। बिजनौर–में श्री० भारत० दि० जैन परिषदके मंत्री बा० रतनलाल जैन वकील व बा० नेमिशरण वकीलको १–१ वर्षकी सजा हुई है। सोनीपतमें–रामचन्द्रजी सिंहल जैन जेल गये हैं। इत्यादि।

लाडनूं–में मनमानी महासभाने लंडनमें होनेवाली राउन्ड टेबल कान्फरंसमें जैन प्रतिनिधि भेजनेका प्रस्ताव किया था जब कि देशमें इसी कान्फरंसका पूर्ण बहिष्कार होरहा है। क्या ऐसा प्रस्ताव करके मनमानी महासभाने विलायत गमन निषेधका अपना हठ छोड़ दिया है !!! बेचारे कूपमंडूक पंडितोंको यह भी मालूम नहीं होगा कि राउन्ड टेबल कोन्फरंस हिंदमें होगी या विलायतमें !

ला० हजारीलालजी–मंत्रीकी सुपुत्रीका विवाह इन्दौरमें जैनविधिसे होकर ९१) संस्थाओंको दान किया गया था।

नये ढंगपर वेदी प्रतिष्ठा–बड़ौत (मेरठ)में ज्येष्ठ सुदी ९को बा० मूलचंदजी व पं० तुलसीरामजी काव्यतीर्थके द्वारा अतीव कम खर्चमें वेदी प्रतिष्ठा होगई। प्रतिष्ठाकारक श्री झुमकीबाईने २२९) विद्या दान किया था।

महावीर ब्र० आश्रम–कारंजाके छात्रोंने मांगीतुंगी व गजपंथाकी यात्रा १ मास प्रवास करके की थी तब ११४) दान मिला था।

सर्वोच्च डिग्री–रा० ब० नांदमलजी अजमेरके भतीजे बा० सोभागमलजी दो वर्ष हुए विलायत गये थे उन्होंने वहां विज्ञानकी सर्वोच्च डिग्री Ph. D. पी० एच० डी० पास की है।

परिषद–की ओरसे चलते हुए परीक्षालयमें इस साल बोर्डिंगोंके ४७३ छात्रोंने धार्मिक परीक्षा दी थी जिनमेंसे ३७७ पास हुये थे।

पावापुरी केस–बराबर पांच माह तक पटनामें चलकर ता० ७ जूनको पूर्ण हुआ था। अब १०–१५ दिनमें फैसला मिलनेकी आशा है।

सर हुए–रा० ब० डॉ० मोतीसागरजी दि० जैन बाईस चांसलर देहली यूनिवर्सिटीको सरनाईटका पद प्राप्त हुआ है।

जसवन्तनगर–में ला० प्यारेलाल बुंदेलेका विवाह प्राचीन पद्मावतीपुरवाल कन्याके साथ हुआ है।

ब्र० गंगाप्रसादजी–ने मनीपुर (आसाम)में चातुर्मास किया है।

श्रुतपंचमी उत्सव—पालेज, उदयपुर, बड़वाह, बुढ़ार, पनागर, कारंजा, सागर, शिरडशहापुर, कुन्थलगिरि, किरतपुर, आरा, बोधेगांव, बंबई, आदि२ में मनाया गया था।

दो असह्य वियोग—देहलीमें रा० बा० ला० सुलतानसिंहजी जैन रईसका ता० ३ जूनको स्वर्गवास होगया! आप कई दफे धारासभाके मेम्बर होचुके थे व विलायत कई दफे गये थे। देहलीके खास जैन अगुए थे। तथा मेरठमें सच्चे सुधारक व अंग्रेजी पढ़ेलिखे धार्मिक जैन विद्वान बा० रिषभदासजी जैन वकीलका भी अचानक स्वर्गवास होगया। आप अंग्रेजी जैन साहित्यके अच्छे लेखक थे। व कई ग्रंथ अंग्रेजीमें अनुवाद कर प्रकट किये हैं। आप दोनोंकी आत्माओंकी शांति व कुटुंबीजनोंको धैर्य प्राप्त हो।

साहित्याचार्य—काशीकी उच्च परीक्षामें स्या० महाविद्यालय काशीसे पं० परमानन्दजीने साहित्याचार्य व वंशीधरजीने व्याकरणाचार्यकी परीक्षा पास की है।

रायबहादुर—सेठ रतनलालजी जैन गंची रायबहादुर हुए हैं।

दीक्षाजाल—बम्बईमें श्वे० जैन मुनि रामविजयजीने एक परतापगढ़के दि० जैन भाईको जालसे दीक्षा देना चाही थी परन्तु दि० जैन युवकमंडलके प्रयत्नसे यह चाल पकड़ी गई और दीक्षा न हो सकी!

दि० जैन युवक मंडल बम्बई—की एक सभा ता० ८ जूनको हुई थी जिसमें जेल जानेवाले जैन सत्याग्रहियोंका व कुचची गांव कमीशनके समासद वामन मुकादमका जेल जानेपर अभिनन्दन किया गया था व काउन्सिल महासभाके राउन्डटेबल कान्फरंस सम्बंधी प्रस्तावका विरोध किया गया था।

ब्र० सीतलप्रसादजी—चातुर्मासमें अमरोहा ठहरेंगे।

मजिस्ट्रेट हुए—ला० हजारीलालजी वकील बड़वानीमें व बा० तोलाराजी वकील अंबरसिटी मजिस्ट्रेट नियुक्त हुए हैं।

कूपमंडूकताका फल—कालारबोरीमें एक सेतवाल जैनको जातिसे अलगकर उसका मंदिरमें दर्शन करनेका भी बंद कर दिया गया जिससे वह मुसलमान होगया है।

धुलिया—में सेठ गुलाबचंदजी हीरालालजीने वर्तमान राजकीय परिस्थितिके कारण रायसाहबकी व आ० मजिस्ट्रेटकी पदवी छोड़ दी है।

સુરતના હૂમડ—દિ૦ જૈન ભાઇઓએ પંચ મેળવી અષાડ સુદી ૭ નો થનારો ઓચ્છવ દેશની નાજુક પરિસ્થિતિ લીધે બંધ રાખી તેના ૧૬૧) કોંગ્રેસમાં દાન કર્યા છે તથા દેશમાં સ્વરાજ્યની ચળવળ ચાલે ત્યાં સુધી વિદેશી વસ્ત્ર નહીં ખરીદવાનો તથા કોઇપણ ન્યાતી જમણ ન કરવાનો પંચાયતીએ ઠરાવ કર્યો છે જે અનુકરણીય છે.

છાનામાના વૃદ્ધવિવાહ-દિ૦ જૈન યુવક મંડળ મુંબાઇના તીવ્ર પ્રયાસ છતાં ભાવનગરવાળો વૃદ્ધવિવાહ સુરત પાસે નવસારીમાં છાનામાના થઇ ગયો હતો. જેથી બિચારા યુવક મંડળના બે સભાસદ તેઓ નડિયાદથી મનાઇ હુકમ પણ લાવ્યા હતા, તે વડોદરા અને સુરતમાં તપાસ કરી પાછા ગયા હતા.

મેટ્રીક પાસને ઇનામ—શેઠ મનોરદાસ પરશોત્તમદાસ પંડોલીવાળાએ આ સાલ વીસામેવાડા કોમમાંથી મેટ્રીકમાં પાસ થનાર વિદ્યાર્થીઓને ૧૦) ઇનામ વહેંચી આપ્યું હતું.

अपने ही हाथों मरते हैं।

(ले०-व्याकरण भूषण पं० मुन्नालालजी-बांदीकुई।)

जो जन नर जीवन पाकरके, कर्तव्योंमें हैं लीन नहीं।
पर दुःख हरा नहिं ज्ञान लहा सत्कृत्योंको कुछ कीन नहीं ॥
सम्यग्दर्शन अरु ज्ञानचरित, जिनके हिरदे ये तीन नहीं।
वे मूर्ख निपट अज्ञानी हैं उनके सम कोई दीन नहीं ॥
जो स्वारथसे अन्धे होकर, परपंच पाप अति करते हैं।
धिक्कार योग्य वे पुरुष आप अपने ही हाथों मरते हैं ॥ १ ॥
संसार है मायाजाल बड़ा, इसमें सुखका लवलेश नहीं।
आना जाना मरना जीना इसके समान कुछ क्लेश नहीं ॥
इससे मानव पर्याय पाय, निज जीवनका उद्धार करो।
मंझधार पड़ी यह जंजर पंजर नैया जल्दी पार करो ॥
इस चार दिनाके जीवनमें जो पाप किया नित करते हैं।
धिक्कार योग्य वे पुरुष आप अपने ही हाथों मरते हैं ॥ २ ॥
जो दुखियोंको दुखसे निकालनेका नहिं मार्ग सुझाते हैं।
केवल ताना तूनीसे ही बस निज पाण्डित्य दिखाते हैं ॥
या धर्म मार्गको मिटा जातिमें, पाप प्रवृत्ति कराते हैं।
मूछोंपर देते ताव, नहीं कुछ भी मनमें शर्माते हैं ॥
निज स्वारथ हित ही धर्म जातिको, पतित हाय! जो करते हैं।
धिक्कार योग्य वे पुरुष आप अपने ही हाथों मरते हैं ॥ ३ ॥
जो निज स्वारथसे गिरा, औरको खुद भी नीचे गिरते हैं।
या जो समाजमें आग लगा पानीको दोड़े फिरते हैं ॥
अब गया धर्म अरु चली जाति, जो ऐसा कहते रहते हैं।
पर वे उसके उद्धार हेतु कुछ करते हैं ना धरते हैं ॥
अरु पक्ष प्रबल रखनेको ही नित, धर्म त्याग जो करते हैं।
धिक्कार योग्य वे पुरुष आप अपने ही हाथों मरते हैं ॥ ४ ॥

नैसर्गिक प्रेम, भक्ति और जैन धर्म।

(लेखक–वि० शिखरचंदजी जैन–हरदा।)

प्रायः देखा जाता है कि जब वर्षा ऋतुमें अथवा अन्यान्य अवसरोंपर सर्पादि किंवा उसके ही समान कोई और जीव-जन्तु इस प्रकृतिदेवीके पटलपर स्वच्छन्दतापूर्वक विचरण करता पाया जाता है और उस समय उसके अहोभाग्यसे किसी महाशयकी दृष्टि उसपर पतन हो जाती है तो उनका ध्यान तुरंत उस तुच्छ प्राणीके ओर आकर्षित होजाता है, जैसे वह कहींका बड़ा भारी भूत प्रेत हो। उनकी आंखोंमें मृत्युका दृश्य दिखने लगता है, मानो वह साक्षात यमराज ही हो। उसे देखते ही मार ढिंढोरा पीट देते हैं, जैसे कोई बड़े धर्मात्मा व्यक्ति लोगोंको सचेत कररहे हों। समीपस्थ सज्जन एकत्रित होजाता है उस समय हमें यह वक्रवर्षा हमारे श्रवणोंको टकराती है। 'मारो २", "जाने न पावे नीच", "लकड़ी लाओ, लकड़ी लाओ" इत्यादि वाक्योंसे वायुमंडल घोषित हो जाता है।

किंतु यहां क्षणभरके लिये एकतापेमियोंके विरुद्ध जातीय रीतिसे विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि वे सज्जन जैनेतर ही होंगे। यदि कोई जैन होता तो वह क्या करता? वह कहता "अरे! नहीं भाई, जानेदो उस प्राणीको" "क्यो सताते हो, गरीबको"। ऐसा क्यों? एक अजैन और एक जैनमें इतना अंतर क्यों? क्या वे दोनों मनुष्य नहीं हैं? क्या उन दोनोंके सदृश-हृदय नहीं है? क्या उन्हें वही जलवायु नहीं लगा? कुछ देरके लिये विदेशोंको छोड़ दीजिये पर हमारे भारतवासियों–यवनोंको भी समझ लीजिये–पर सोचिये।

विशद रूपसे विचार करनेसे विदित होता है कि यह धार्मिक भाव ही हैं जो उन पुरुषोंके आत्माओंमें अपना निवास स्थान बनाये हुए है। फलतः यह सिद्धान्त स्थिर होता है कि प्रत्येक धर्मका प्रभाव उसके अनुयायियोंपर पूर्ण रूपेण नहीं तोभी अधिकांश पड़ता ही है। आगे इसीलिये हम धर्मगत विचारों सहित जातिगत विचारोंका भी किन्हीं स्थानोंमें समावेश कर देवेंगे।

पृथ्वी–मंडलमें ही नहीं इस विशद् विस्तृत ब्रह्मांडमें जैनधर्म मात्र ही एक ऐसा धर्म है जो प्राणी मात्रपर पूर्ण दया चाहता है तथा अहिंसाका अटक अनुयायी है। दूसरे धर्म भी विश्व–प्रेम–प्रचारका बीड़ा उठानेका दावा करते हैं। अहिंसाको माननेवाले कहते हैं। दयाका पाठ पढ़ाते हैं। परोपकारकी पुकार मचाते हैं। ईसाई धर्म कहता है "प्रेम करो" स्वयं प्रभु क्राइस्टने कहा है "यदि कोई एक तुम्हारे गाल-

पर चपत जमावे तो तुम उसके सन्मुख द्वितीय भी करदो।" किन्तु क्या हमारे ईसाई भ्रातृगण इसका शतांश भी पालन करते हैं? इसमें उनका क्या दोष? उनका धर्म ही उनके विचारोंको परिमित करता है। उनके मस्तिष्ककी शक्ति या उनकी बुद्धि मानव समाजसे आगे नहीं बढ़ती। फिर ईसाई राष्ट्रोंकी वर्तमान प्रगति ही की ओर देखिये। ये प्रभु ईसाके प्यारे दुलारे विजित राष्ट्रोंसे कैसा व्यवहार करते हैं। औंड़का भी जबर मार लेते हैं।

हिंदू-धर्म भी कुछ अहिंसाका पक्का प्रचारक न हो ऐसा नहीं है। पर उसके विचारोंकी विशालता भी देखिये। अहिंसा रखता है किंतु हिंसा न करनेको कितने अंशोंमें मानता है? महाभारत एवं मनुस्मृतिने स्पष्ट रूपमें मांसभक्षण ग्राह्य बतलाया है। खटमल जूंआदि कृमियोंकी हिंसासे निवृत्त होनेका उपाय आराम बतलाकर चुप्पी साधली है। परिणाम स्वरूप हम देखते हैं कि हिंदूलोग छोटे प्राणियोंपर दया नहीं रखते। और पश्चाताप पूछनेपर, केवल एक छोटा सा हास्य या 'ये हमें सताते हैं इसलिये हम मारते हैं।" कहते हैं। कितना अच्छा फार्मोला (गुरु सिद्धांत) है?

अब इस्लाम धर्मपर विचार कीजिये। यह तो बड़े ही संकुचित विचारका है। यह तो किसीकी भी नहीं सुनता। यह हिंदु सिंदु, ईसाई-बीसाई किसीको भी कुछ नहीं समझता है। समझता है तो मुसलमानी धर्मको ही—स्वतःको उच्च और खुदाके और इंसानके बीचका मध्यस्थका रास्ता समझता है। जैसे इस्लाम नहीं होता तो यह मानवमंडल पृथ्वीमंडलमें मंडलित होकर रह जाता! भला ताराका चश्मेदीद भला इसे मुनस्सर नहीं होता।

अब बौद्ध धर्मको लीजिये। यह धर्म जैन धर्मसे अवश्य टक्कर लगानेवाला है। पर वास्तवमें क्या ऐसा ही है जैसा कि प्रकट किया जाता है? इतिहासके पृष्ठ उलटिये और वहां निकालिये जहां महात्मा बुद्ध आजीवन अहिंसाका अलौकिक (!) उपदेश देते हुए मृत्युकी राह देखरहे थे। इतिहास परिचित व्यक्तियोंसे अपरिचित नहीं है कि उन्होंने उस समय एक मनुष्यके द्वारा लाया हुआ शूकरका मांसभक्षण किया था! संसारके एक बड़े महात्माने जिनने अपना संपूर्ण समय राज त्यागकर प्राणियोंकी दयामें दिया। आश्चर्य! भला फिर उसके अनुयायी मांस, मछली, मदिरा न उड़ावें तो क्या करें? मिसालमें हम जापान, चीन और लंकाको जहां कि बौद्धधर्म सीमित होगया है, पेश कर सकते हैं।

बात यह है कि जिस प्रकार तमके होनेसे हमें चंद्रिकाकी आवश्यकता प्रतीत होती है या सूर्यका मूल्य मालूम होता है। या जैसे दुर्गुणी गणसे सुगणी और दुर्गुणसे सद्गुणको हम जान सकते हैं। या जिस प्रकार अधर्मके मध्य धर्म आसित हो सकता है या जैसे मूर्खोंके होनेसे हम बुद्धिमानका आदर करते हैं। उसी भांति इन संसारके चार बड़े२ धर्मोंसे जैन धर्मकी जो एक छोटी सम्प्रदायका धर्म माना जाता है जिसका हम आगे कथन करेंगे। उसकी महत्ता

प्रदर्शित करनेको हमने तुलना दिखलाई है कि उसमें कुछ तथ्य, नैसर्गिक प्रेम और भक्ति है या नहीं। हमारा उद्देश किसी विशेष धर्मका अपमान करनेका कभी नहीं है।

अब जैन धर्मपर दृष्टि डालिये। कितना शांत, सरल, सच्चा और सीधा है। उसकी नजरमें यह सारा नजारा एक ही तरह दिखाई देता है। वह सर्व प्राणियोंको एक समान समझता है, किसीको शत्रु नहीं समझता। यदि मैं कहूं कि प्रेम, सहृदयता एवं सौहार्द्रताकी इति श्री जैन धर्महीमें होती है तो कुछ अत्युक्ति न होगी। जातीय हो विजातीय हो, कृमि हो या मस्त गज हो, मनुष्य हो या देव हो, कोई भी प्राणी क्यों न हो; यह जैन धर्म ही सदृश उदार प्रकृतिस्थ धर्मका कार्य है जो किसीसे द्वेष नहीं किसीसे शत्रुता नहीं। अपने मार्ग जाना और आने मार्ग आना। एक चिंटी ही क्यों, वह तो किसीको कष्ट नहीं पहुंचाती परन्तु एक खटमल, जूं या इतर हिंसक या दुःखदायक जीवके प्रति भी कितना क्षम्य एवं सौम्य भाव रखना यह इसी महान उदार धर्मका सिद्धान्त है। जैनियोंके प्राथमिक पाठ—सामायिक पाठ—के प्रथम श्लोक—

> सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं,
> क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
> माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ,
> सदा ममात्मा विदधातु देव ॥

—का क्या तात्पर्य है ? ऐसा कौन कहनेका साहस कर सकता है ? यहां भी हम जैन धर्महीको खड़ा पाते हैं। आप प्रशंसा तो सभी करते हैं; परन्तु यह तो बिना प्रशंसा किये आपही प्रशंसनीय कहलाने योग्य है। जो दूसरा शत्रुता रखे तो यह मित्रताके व्यवहारकी सम्मति देता है।

यह नहीं कहता कि अमुक धर्महीसे स्वर्ग मिलता है। पूर्ण अहिंसाका पालन कीजिये अथवा उसके कुछ अंश हीका पालन कीजिये, आपको यथायोग्य फल प्राप्त होगा। कोई जातिका या किसी देशका जीव हो। कसाईकी कथासे प्रत्येक जैनी परिचित ही है। चारुदत्तके बकरोंका देव वस्थमें परिणत होना किसी जैनीसे छिपा नहीं है। पर हां, एक बात है, यह इतना उदार नहीं है कि केवल अपनी प्रसन्नतासे स्वर्गसुख या मोक्षमोदक लुटादे। थोड़ा भी प्रसन्न हुआ और किसीको स्वर्ग दे दिया, किसीको अपवर्ग। भाई, यहां तो रुपयेके सोलह आने हैं। जितना और जैसा करो उतना ही फल-प्राप्ति करो। इस स्थानपर यह आपको अवश्यमेव निराशा निर्जन वनमें भ्रमा दे; परन्तु यदि हम एक चतुर न्यायाधीशके कर्त्तव्यकी ओर दृष्टिपात करें तो यह प्रश्न बड़ी सरलतासे हल हो सकता है। कर्तव्य करो। आत्माका कल्याण केवल प्राणी प्रेम है। यह तो इसका प्रधान उद्देश है।

आजकल प्रायः ऐसे "पूर्ण प्रबल प्रेम प्रचारक" धर्मपर यह आक्षेप किया जाता है कि भारतका पतन बौद्धधर्म और जैनधर्मके सिद्धांतोंके कारण ही हुआ है। देशमान्य नेता लालाजीने भी इसी तरहका कथन किया है। यह कलंक यथार्थमें अवलोकनीय है। हम देखेंगे कि यह कहांतक जैन धर्मपर आरोपित होसकता

है ? विशेष वर्णन न करके हम कुछ प्रमाण देना चाहते हैं । देखिये:-

[भारतपतनके कतिपय कारण मेरी बुद्धि अनुसार ये होसकते हैं—प्रथमतः आर्य लोगोंको भारतभूमिपर आये लगभग ७००० वर्ष होचुके थे । इससे उनका वह पौराणिक उत्साह, क्षमता, दृढ़ता, साहस और शक्ति घट गई थी जो कि इन नये उत्तरीय लोगों (सैनिकों) में थी । द्वितीय सैनिक व्यवसाय केवल क्षत्रियोंका है, धंधा समझा जाने लगा था । तीसरे उननी स्वतंत्रतासे विचरण और साहसी कार्य अब इन समय बहुत कम रह गये थे। कारण कि प्रथम प्रथम जब वे आये तब विलासी नहीं थे और उनका केवल एक वही कार्य—युद्ध था जैसा कि इन यवनगणका था । पश्चात् भागमें वे ज्यों२ साम्य होते गये विलासप्रियता आती गई और उनकी शक्ति कई कार्योंमें विभाजित होगई । जैसे यदि कोई विद्यार्थी इतिहासके एक विषयको पढे तो वह उस विषयमें अधिक चालाक एवं निपुण होसकता है । किन्तु कई विषयोंका परिणाम ? विदेशियोंको ये सुविधायें थीं । इस समय हममें अनैक्यका निवास था और रणकला भूल गये थे । सेनापतिके साथ ही हम साहस खोदेते थे । ये राजनैतिक कारण हैं । सामाजिक कारण यही है कि हम लोगोंकी अनेक जाति—उपजातियां स्थापित होगई थीं । इनके धार्मिक या बुद्धिमान लोगोंका बहुतसा समय खंडन मंडन वादविवादमें व्यतीत होता था। एक दूसरेकी प्रतिद्वंद्विता करनेमें ये अपनी संपूर्ण शक्तियोंसे मुस्तैद होगये थे । यह विभिन्नता ही एक बड़ी भारी भारत—समर्पणका कारण हुआ । अन्ततः महाभारतकी निर्बलता और उस समयसे प्रचलित कुरीतियोंने दबी हुई अग्निके सम अपना बल इस समय दिखाया । इत्यादि और भी अनेक कारण हैं]

मेरी सम्मतिसे तो भारतवर्षके विनाशका कारण जैनधर्मका ह्रास होना था । तथा यदि जैनधर्म पुनः प्रचलित होजावे तो समझ लीजिये कि संसारके कष्टोंका अंत आगया । जगतभरमें जितनी बुराइयें और झगड़े हैं वे आप ही आप समूल नष्ट होजावेंगे । एक समय वह आजायगा जिस समय संसारके ये सारे राष्ट्र अपने राजनीतिक हथकंडे (कौतुक) त्याग देवेंगे । वे द्वैत या अद्वैतताका अभिमान छोड़ देंगे । छोटे२ राष्ट्रोंको हड़पना छोड़ देवेंगे । न कहीं लड़ाई होगी न युद्धका नाम सुनाई देगा । लड़ाई या युद्धादि होंगे तो इतनी प्राण हानि नहीं होगी । इतने मनुष्य एक साथ पृथ्वीपर नहीं लोटाये जांयगे । ये युद्ध या लड़ाई होगी तो केवल निर्बलोंकी रक्षारक्षाके लिये; संसारको उनके किसी भागको नहीं—सुख पहुंचानेके लिये परोपकारके हेतु संसारके सैनिक लड़ेंगे । सब लोग (प्राणी) स्वच्छन्दतासे विचरण करेंगे, कोई किसीका शत्रु नहीं होवेगा । समयपर आपसमें एक दूसरोंको सहायता देनेको तत्पर रहेंगे । बुराईके समर्थन करनेको कोई उद्यत् नहीं होगा । स्वार्थ अपना विस्तार बांध कूच कर जायेगा । मनुष्य और ये सब प्राणी उसी रूपमें होंगे जिसमें अभी हम हैं । परन्तु वे स्पष्ट वक्ता होंगे । अपने विचार निर्भयतासे प्रकट करेंगे, पहिले दूसरेका कल्याण

सोचेंगे फिर अपनी भलाईका ध्यान देंगे। कभी कोई मिथ्या भाषण नहीं करेगा। उस समय न चोर होंगे न डाकू। सब विद्वान होंगे पर प्रतिभामें नहीं फूलेंगे। अविद्वानोंका और तुच्छ जीवोंका संहार नहीं करेंगे प्रत्युत उनकी रक्षामें अपने प्राण अर्पण करेंगे।

तो यदि हम संसारमें स्वर्ग लाना चाहते हैं तो हमें जैनधर्मके सिद्धान्तोंका प्रचार करना होगा। पूज्यो! संसार आज किस स्थितिमें है? अमेरिका क्यों अपना सैनिक बल बढ़ा रहा है? उसकी देखादेखी सबसे और ब्रिटेनकी जलसेनाका बहुत अधिक संख्यामें सिंगापुरमें रखनेसे, क्या तात्पर्य सोचकर जापान चिंतित है एवं अपना सैनिकबल वृद्धि कर रहा है? वायुयान बनवा रहा है। "लीग ओफ नेशन्स" से भूमंडलको क्या लाभ हुआ? उसमें भी काले कैसे समझे जाते हैं? ये चिंताएं लोगोंको एक ऐसे युगमें दबा रही हैं जब हम समाचार पत्रोंमें नित्य ही नूतन२ आविष्कारों और अन्वेषणाओंके विषयमें सुनते हैं। जब कि लोग पूर्वकालसे बहुत अधिक सभ्य, सुशील एवं बुद्धिशील, उन्नतिशील समझते हैं। इन कारणोंसे ज्ञात होता है कि संसार किस ओर जारहा है? इसकी एक दवा है "जैनधर्म"। उसके पास कोई जादू नहीं है, किन्तु केवल उसका यह नैसर्गिक प्रेम है। जो इन संसार व्याप्त रोगोंकी एक मात्र रामबाण औषधि है। ये उपरिलिखित विचार मेरे नहीं, जैनधर्मके हैं और हरएक जैनियोंमें स्वभावतः कार्य करते हैं। जैनियोंके बालकोंको कोई कहने नहीं जाता कि तुम ऐसा करो, ऐसा मत करो, अहिंसा महाव्रत पालो, हिंसासे दूर रहो। जैन धर्मके प्रकाश होते ही उनके हृदयसे अज्ञानतम चुपकेसे निकल भागता है और उनकी ज्ञानकली स्वभावतः ही स्फुटित होजाती है और उसमें नैसर्गिक प्रेम घुस जाता है। यह वरदान किंवा मधुर सुस्वादु अमृत फल कौन देता है? वही स्वभाविक प्रेमवाला पूर्ण-पृथ्वी-प्रेम-प्रचारक "जैन धर्म" हम कह सकते हैं कि जैन धर्ममें नैसर्गिक प्रेम नहीं हैं? कदापि नहीं। जैनियोंमें ये इच्छाएं स्वभावसे ही व्याप्त रहती हैं।

इसी कारण (जैन) लोग पर्यूषण-पर्व और अन्यान्य धार्मिक अवसरोंपर लाखों रुपया व्यय कर पशु, पक्षियोंको छुड़वा देते हैं। किसी दराहते प्राणीके शब्दसे प्राण व्यथितसे होजाते हैं और सदैव यह कामना करते रहते हैं कि उसके हृदयको शांति मिले, उसे सुख मिले। मानापमान सहनेकी क्षमता, उदार विचार, स्वभावसे ही सद्गुणी होना, मांस, मदिरा आदि अभक्ष्य भक्षणसे दूर रहना। इनका त्याग मनुःस्मृतिमें भी बतलाया है। ये सब विचार जैनधर्मके ही फलाफल हैं। पर हाय! (लिखे बिना नहीं रह सकता) हमारे जैन समाजकी क्या दशा होगई? कहां गया हमारा वह "विश्वप्रेम" का जन्मदायक जैन धर्म? इसकी अवस्थापर अब अश्रुश्रवित करनेके और कोई उपाय नहीं सूझता। हम लोग कितने क्रियाहीन होगये। कितने अनेक्य-देवीकी शरणमें मग्न हो अपनेको सुखी समझ रहे हैं। उसे चारों ओरसे खींच२ कर अस्तव्यस्त कर रहे

हैं ? हमारा दुर्भाग्य ! किंतु हमारे दोषोंसे हमारे धर्ममें कोई लांच्छन नहीं लग सकता । वह अपना कार्य अभीतक करता चला आता है । हम कायर उससे लाभ उठाएँ या नहीं, यह हमपर निर्भर है । जैनियो ! यदि अब भी आपमें स्वधर्म प्रेम है तो उठो और विश्वप्रेम, सच्चे स्वाभाविक प्रेमकी विगुल बजादो ।

अब हम इसे भक्तिके कांटेपर चढ़ाते हैं और देखते हैं कि वह कितना भारी है । प्रथम हम इसकी भक्तिको " आदर्श पुरुषों " के फिर "साहित्य"के फिर "जैनधर्ममें उपास भावों"के एवं अंततः "जैनियोंके धार्मिक दैनिक कार्यों"के बड़ोंपर रख अन्य मतोंकी बातोंसे तोलेंगे और देखेंगे कि इस भक्तिकी कितनी मात्रा है ।

इसके आदर्श पुरुष तीर्थंकर भगवान मुनिगण आदि हैं । जो प्रथम-पूज्य एवं प्रातःस्मरणीय हैं । इनकी चारित्राकोपमा ? इनके चारित्रमें वह भक्ति उत्पादक भाव है जो अपनी ओर आकर्षित कर लेता है । उनका महान् चारित्र उनकी कष्ट, विघ्न-बाधाकी सहनशक्ति बड़ी ही अनोखी है । उनका अपूर्व आत्मत्याग । इनपर विचार कर जैसे एक पल भी उनके परार्थ भावोंको नेत्रोंसे अवलोकन करनेपर हृदयमें तो भक्तिस्रोत उमड़ पड़ता है । ऐसे देवाधिदेव हमें किस मतमें मिल सते हैं । त्रुटि रहित, परि-षह सहनशील, ज्ञान और चारित्र उनका ऐसा है जिससे भक्ति सहस्रों धाराओंसे प्रवाहित हो निकल पड़ती है । दे व, महादेव, इन्द्रादिसे उनकी तुलना उन " अनुपम " की कैसे कर सकते हैं ? ।

हमारे देशमें ही नहीं संसार भरमें सहस्रों नेता हैं । सभी कुछ न कुछ देश कार्य करते हैं, किया है तथा करेंगे, परन्तु महात्मा गांधीका शुभ नाम स्मरण करते ही क्यों उनसे विद्युतसी स्फूर्ति होने लगती है ? इस नाममें ऐसा क्या चमत्कार है ? कुछ हड्डी और मांसा-दिके संग्रहमें कहांका जादू भरा है ? बात यह है कि यह उनका अपूर्व आत्मत्याग है जो लोगोंको उनके नाम स्मरणसे गद्गद् कर भक्ति कुण्डमें स्नान करा देता है । निष्कर्ष यह निकलता है कि जैन साधुओंमें अन्यान्य साधु-ओंसे और अधिक पर-स्वार्थ कामना है । तब फिर इस बांटसे भी जैनधर्ममें भक्तिकी मात्रा अधिक है और बहुत अधिक है ।

अब साहित्यके बांटसे तौलिये । साहित्य उसके कवियों और लेखकोंपर निर्भर है और उनके विचार उनके धर्मपर अवलंबित हैं । अन्य मतावलंबी कवियोंने भी अच्छी भक्तिकी महिमा उनकी कृतिसे प्रकट की है । पर उनमेंसे बहुत ऐसे हैं जिनने " श्रृंगार " हीको अधिक अप-नाया है । उन लोगोंने भ्रू-विक्षेप, कटाक्षादि, हावभावमें ही अपनी प्रतिमा प्रदर्शित की है । यद्यपि जैन कवियोंने गो० तुलसीदासजी सदृश उपमा और रूपकों व उच्च भावमें; केशवदास सदृश उत्प्रेक्षालंकार आदि अलंकृत भाषामें, देव सदृश मधुर भाषामें, अपने भाव प्रकट नहीं किये हैं । उनने सरल व सीधी भाषामें अपने विचार प्रकट किये हैं । जिसमें सर्व साधारण समझ सकें और लाभ उठा सकें । तथापि ये साहित्यिक

प्रतिमा एवं प्रखर बुद्धि विषयक विषय और भाषा इन कवियोंमें भी आगई है।

कविवर वृन्दावनदासजी, बनारसीदासजी तथा भूधरदासजी आदि जैन विद्वानोंकी कविता देखके क्या हम कह सकते हैं कि इनकी भाषा अति अलंकृत न होनेपर गोस्वामीजी सदृश करुणापूर्ण या भक्ति उत्पादक नहीं है?' उनके ग्रन्थ अन्यान्य जैनेतर कवियोंसे किसी दशामें भी हीन नहीं समझे जाते। हां उनमें कई कवियोंने अच्छी भक्ति प्रदर्शित की है जो सराहनीय है। तुलसीदासजीके पद और कवित्त सूरदासजीके पद, रसखानके सवैये, मीराबाईके पद अवश्य भक्तिमें सरबोर हैं। किंतु उदाहरण स्वरूप, 'हे दीनबंधु श्रीपति करुणानिधानजी, अब मेरी व्यथा क्यों न हरो बार क्यों लगी।" वाला छंद (विन्ती) क्या उनकी समता नहीं कर सकता? कितना अद्भुत पूर्ण भाव है। कितनी हृदय-स्पर्शी मार्मिकता है? मन कितना भक्ति रससे उमड़ पड़ता है? "प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरण आयो शरणजी" वाला पद कितना हृदयको छूता है? करुणा-रस शरीरसे बाहिर निकलना चाहता है। जब भगवानके सम्मुख खड़े होकर एक चित्तसे, भगवानमें मन लगाकर इसी विन्तीको पढ़ते हैं, ऐसा मालूम होता है उसके एक२ शब्दमें जादूकासा असर भरा हुआ है।

जब यह उच्च स्वरसे पढ़ते हैं तब तनकी सुध नहीं रहती। वह श्री जिनेन्द्र देवमें इस प्रकार तल्लीन होजाता है जैसे साधारण लोग विषय वासना राग रंगोंके कार्योंमें मग्न होजाते हैं। "श्रीपति जिनवर करुणायतनं दुखहरण तुम्हारा बाना है। मत मेरी बार अबार करो मोहि देहु सकल कल्याणा है।" यह क्या किसीसे कम है? मुख इसके भावोंको समझानेमें असमर्थता दिखलाता है। गद्यमें तो जैन साहित्य भक्तिमें बहुत ही आगे बढ़ गया है। जहां देखो जिनेन्द्र भगवानकी भक्ति ही भक्ति दिखाई देती है।

तीसरे—जैन धर्म भी ऐसे उच्च, उदार विचारों एवं सिद्धान्तोंकी नीवपर स्थिर है कि भक्ति आप ही आप स्फुरित होजाती है।

उनके विशद विचार केवल कह कर नहीं प्रकाशित किये जासकते। जैसाका तैसा स्वरूप कहना जैन धर्मका भाव है। समानताका व्यवहार इसी धर्म-मालिककी संपदा है। लेखके अग्र भागमें इस विषयपर प्रचुरतासे लिख दिया गया है। अन्य२ धर्मोंमें इतना दयाभाव, प्रति-प्राणी पर नहीं जितना जैन धर्ममें है। वे "पूर्ण" को नहीं मानते जैसा जैन धर्म। वे उसके कुछ अंशको ही मानते हैं। इसलिये जैनधर्म सब जीवोंको प्रिय है। निष्कर्षतः उसकी सर्वप्रियताके कारण उसमें भक्ति उत्पन्न होती, समवेदनात्मक विचारोंके कारण वृद्धि पाती और उसकी महत्ता एवं गहनताके कारण अपने उच्च स्थान तक पहुंच जाती है।

अब जैनियोंके धार्मिक दैनिक कार्योंमें दृष्टिपात कीजिये जैसा कि जैनधर्म उन्हें करनेको प्रेरित करता है। सूर्योदयके कुछ समय पहिले

शैय्या परित्याग करना। पीछे सामायिक करना। आत्म चिंतवन कर उसमें जैनी लोग या सामायिक कर्ता ऐसा विचार करता है ? हे प्रभु ! मेरा सब जीवोंमें समभाव हो। मेरा कोई शत्रु न हो। मैं किसीसे शत्रुता न रखूं। मेरे भाव विचार शत्रुमें भी उसके कामके हों।" अहा ! ऐसे विचारदातामें भी भक्ति न उत्पन्न हो ? कभी संभव है ? पश्चात् शौचादि क्रियासे निवृत्त हो स्नान कर भगवानकी पूजा तथा दर्शन निमित्त गृहसे प्रस्थान करना। उस समय शरीरकी संपूर्ण इंद्रियां एकत्रित हों। मन केवल भगवानके चरणारविंदोंमें लगा हो। तत्पश्चात् बड़े भक्तिभावसे दर्शन करना। पूजा करना। फिर दिनभर सत्य पूर्वक अपना व्यवसाय कार्य करना। साधारण वस्त्र, पवित्र सादगीयुक्त जीवन, शांत परिणाम, मित्रभाव रहना।

यह निश्चित है कि जो मनुष्य जैसा सुनेगा, जैसे व्यक्तिका चरित्र पढ़ेगा या जैसी वस्तु देखेगा उसका प्रभाव उसपर अवश्य पड़ेगा। जैसे यदि कोई मनुष्य नेपोलियनका जीवन-चरित्र पढ़ेगा तो उसमें वीरताका संचार होगा। म० टाल्सटायका जीवनचरित्र पढ़ेगा तो दया भावका, या यदि किसी डाकूका चरित्र पढ़ेगा तो उसकी प्रवृत्ति उसीकी ओर दौड़ेगी। इसी प्रकार यदि कोई मूल या किसी अन्य पशुका चित्र देखेगा तो उसका हृदय भयसे कांप उठेगा और वहां मनुष्य यदि किसी गायका चित्र देखेगा तो उसमें भक्तिभाव विस्फुरित होगा। यही कारण है कि जैन मुनियोंमें और जैन प्रतिमाओंके देखनेसे उनमें भक्तिका संचार होता है। त्याग हृदय सम्मुख आ उपस्थित होजाता है और यही इच्छा रहती है कि भक्त बन सदैव सेवा किया करें। पर और २ कुरूप मूर्तियों और देवोंको देखनेसे घृणासी उत्पन्न होती है। उनमें श्रद्धा हट जाती है। पूज्य-भावका विस्मरण होजाता है। इन्हीं कारणोंसे जैनधर्मियोंमें बहुत अधिक भक्ति उत्पन्न होती हैं, अपेक्षा अन्य मूर्तियों और साधुओंके। कोई २ यह कहते हैं कि जैनीलोग नास्तिक हैं, वे ईश्वरको नहीं मानते। जो किसीको मानते ही नहीं उनमें श्रद्धा कैसे होसकती है ? यहां मैं उन्हें यह दिखला देना चाहता हूं कि जैनी नास्तिक नहीं हैं, वे ईश्वरको जगका कर्ता हर्ता नहीं मानते जिससे कि उसपर अनेक दोष आरोपित होजाते हैं। तात्पर्य यह है कि जैनधर्ममें भक्ति व प्रेमके उत्पन्न करनेके अनेक कारण मौजूद हैं और सच्चे जैनमें नैसर्गिक प्रेम व भक्ति होती है।

देशकी परिस्थिति और जैन समाज।

(लेखक—पं० परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ-सूरत।)

भारतवर्षकी परिस्थिति आज भयानक है। गत तीन महीनोंमें जो जागृति आई है वह अभूतपूर्व एवं वर्णनातीत है। इस थोड़ेसे समयमें भारतीयोंने वह काम कर दिखाया है जिसकी स्वप्नमें भी आशा नहीं थी। महात्माजीके महामंत्रसे प्रभावित होकर लाखों वीर हथेलीपर जान लेकर देशकी स्वतंत्रताके लिये बाहर निकल पड़े और सरे आम अपने आत्मबलका परिचय दिया। सरकारने भी दमन करनेमें कसर नहीं रखी। इन निहत्थे सत्याग्रही वीरोंपर लाठियां चलाई गई, घोड़े दौड़ाये गये, गोलीबार किया गया, धोतियां खोल खोलकर गुह्य भागोंपर अश्लील आक्रमण किये गये, उन्हें घसीटा गया, पीटा गया और बुरी तरह ठोका गया। मगर देशके लिये मर मिटनेको तैयार हुये वीर दीवाने इस दमनसे कहां पीछे हटनेवाले थे? वे तो अहिंसाके भरोसे और सत्यके आधारपर डटे रहे। सैकड़ोंके माथे फूटे, हजारों घायल हुये और कितनेक वीर इस नश्वर शरीरको छोड़कर अमर हो गये।

जहां अपने देशके लिये ऐसा बलिदान, इतनी भक्ति और अतुल त्याग होसकता हो, जहां ऐसे २ उपसर्गसहिष्णु वीर मौजूद हों, वहां स्वतंत्रता प्राप्तिमें फिर विलम्बकी कहां संभावना है?

इधर तो देशके बुजुर्गोंका तैयार होना और उधरसे सरकारका आवेशमें आकर अपने सच्चे स्वरूपमें आजाना, बस यही तो स्वातन्त्र्यके चिह्न हैं। कौन कल्पना कर सक्ता था कि एक सभ्य सरकार यह सब कर सक्ती है? सरकारी पुलिस जो हमारी रक्षक कही जाती है, प्रजाका जिसपर भरोसा है (सुना है कि) उसने सोलापुरमें स्त्रियोंपर अमानुषिक अत्याचार किये उनपर बलात्कार (!) किया। और उन्हींके सामने उनके पुरुषोंको नंगाकर करके मारा। ऐसा समाचार ११ जूनकी सत्याग्रह पत्रिका सूरतमें निकला था। अब बताइये कि ऐसी गोरी अत्याचारी पुलिसको प्रजाकी रक्षक कहा जावे या क्या?

इतनेपर भी वायसराय सा०ने एक नया फरमान निकाला है कि जो कोई पुलिस या सरकारी अमलदारोंका बहिष्कार करे या करावे, अथवा उन्हें रहनेको मकान, खानेपीनेका सामान देनेमें आनाकानी करे, अथवा किसी काम करनेमें टालमटूल करे तो उसे ६ माहकी सजा होगी। अब यहांपर विचार यह करना है कि जो पुलिस हमारी मां बहिनोंकी लाज लूटे और ऐसे राक्षसी वर्तन करे, क्या हम उसकी पूजा करें? स्त्री जातिके सन्मानका दावा रखनेवाली अंग्रेज सरकार सोलापुर आदिकी इन नीच घटनाओंपर

विचार करके देखले कि ऐसे समयपर निहत्थी, अहिंसक एवं शान्तमना क्या करे ?

समाचारपत्रोंसे मालूम हुआ है कि राजपुरमें नदीके जिस घाटपर स्त्रियां पानी भरती हैं उसी घाटपर बेशरम पुलिस नंगी होकर नहाने लगती है ! वहांके नेता स्त्रियोंको यह कह कर शान्त करदेते हैं कि तुम इन्हें अपना लड़का समझकर चुप रहो ।

सच पूछा जावे तो महात्माजीके अहिंसक मंत्रके प्रभावसे ही प्रजा इन तमाम बदमाशियों-को शान्तिसे सहन कर रही है, अन्यथा इसका क्या परिणाम आता सो कुछ कहा नहीं जासक्ता ! मगर अपनी सच्ची विजय तो क्षमा, शान्ति और अहिंसामें ही है । इसी लिये लोगोंको इसपर डटे रहना चाहिये ।

प्रजाको इस बातका पूरा भरोसा है कि ज्यों ज्यों अत्याचार या दमन बढ़ता जावेगा त्यों त्यों हमारी स्वतंत्रताके दिन पास आते जावेंगे। ठोकर लगनेपर लोगोंको कुछ भान आता है । भारतकी प्रजा सैकड़ों वर्षोंसे सोई हुई है, उसके जगानेके लिये इतने ही दमनकी आवश्यक्ता थी । अब देशवासी होशमें आये हैं, उन्हें अपनी दशाका भान हुआ है । हिताहितका विचार और हेयोपादेयका ज्ञान हुआ है । इसीलिये स्थान२ पर परदेशी वस्त्र बहिष्कार और मद्यपान निषेध होरहा है । फल यह हुआ है कि जिन दुकानों पर हजारोंकी शराब बिकती थी उनपर अब दस पांच रुपया आना ही कठिन होगया है । अहमदाबाद जैसे भारी शहरमें तो मद्यकी प्राय: तमाम दुकानें बंद होगई हैं । सरकारने तो इसपर भी अपना अंकुश लगाया है और जाहिर कर दिया है कि जो कोई शराब ताड़ी बेचने या खरीदनेवालोंको रोकेगा उसे ६ मासकी सजा होगी ! मगर स्थान२पर महिलायें इस कार्यमें जुटी हुई हैं । उनपर अनेक आपत्तियां आईं, जेल गई, अपमान सहन किया फिर भी वे इस काममें लगी हुई हैं । वे चाहती हैं कि हमारे भाई इस मद्यपानके महापापसे मुक्त हो जावें, जिससे हमारे देशका २१ करोड़ रुपया बचे और धर्मकी भी रक्षा हो । इसमें कोई संदेह नहीं कि स्त्रियोंके इस प्रयत्नसे थोड़े ही समयमें शराब आदिकी एक भी दुकान नहीं रहने पावेगी । और भारतवर्ष मद्यपानके पापसे मुक्त हो जावेगा ।

दूसरा काम स्त्रियोंने परदेशी वस्त्र बहिष्कारका अपने हाथमें लिया है । अब तो पुरुष भी इसमें पूरा भाग लेरहे हैं । स्थान२ पर जबरदस्त पिकेटिंग चालू है । हालां कि सरकारने इसपर भी ६ मासकी सजा रखी है, मगर यह काम बड़े जोरोंपर चालू है । कितने ही स्थानोंपर तो गिरफ्तारियां हुई हैं, सजामें हो रही हैं, मगर कार्य प्रगतिपर है । इसका जबरदस्त असर हुआ है । गत वर्षके अप्रैल मासमें मान्चेस्टरसे जितना कपड़ा भारतवर्षमें आया था उससे बहुत कम कपड़ा इस वर्षके अप्रैलमें आया है । यह नीचेके आंकड़ेसे स्पष्ट होजाता है:—

	१९२९	१९३०
बम्बई....	१७०२९१००)	१८८५१६००)
मद्रास....	९९६८७००)	९६४५८००)
कलकत्ता....	८८१३१४००)	४२०४०१००)

इतनी कमी तो मात्र अप्रैल मासमें ही हुई है। जबकि यह कार्य प्रारम्भ हुआ ही था। मगर गत २ मासमें तो जबरदस्त कमी होचुकी है। भले ही विदेशी वस्त्रके निषेध करनेवालोंको सजायें होरही हैं। मगर लोगोंने तो अब विचार लिया है कि हमें कपड़ोंके पीछे परदेशमें जाता हुआ भूखे भारतका ६० करोड़ रुपया किसी तरह भी बचाना है। जिन दुकानोंपर सौ दौसौ रुपयाकी रोज बिक्री होती थी उनपर आज १०-१५ रुपयाकी भी नहीं होती। बाजारके बजार और दुकानें बंद पड़ी हैं। कितनी ही दुकानोंपर तो कांग्रेसकी सील बंद करके विदेशी कपड़े रख दिये गये हैं। अगर आप पूछें कि लोगोंको एकदम इतने बहिष्कारकी कैसे सूझी? तो कहना होगा कि सरकारी दमनने जानबूझकर सुझाया। और ज्यों२ अभी दमन होगा त्यों२ लोगोंको अपने हिताहितकी बातें मालूम होती जावेंगी।

अच्छा, तो देशकी आज ऐसी परिस्थिति है। इस विषयमें कुछ जैनियोंसे भी कहनेकी इच्छा है। वह मात्र यही कि इस महायुद्धमें जैनियोंने भी काफी बलिदान दिया है। कितने ही जेल गये और अनेकों सत्याग्रहियोंमें काम भी कर रहे हैं। मगर अभी अपनी आन्तरिक परिस्थिति जैसी चाहिये वैसी नहीं सुधरी है। प्रत्येक अहिंसा प्रेमी जैनका कर्तव्य होना चाहिये कि कमसे कम धार्मिक दृष्टिसे ही वह महा अपवित्र चरबी और अंडेके चेपसे संयुक्त किसी भी परदेशी वस्त्रको हाथसे स्पर्श न करे। अपने जिनालयोंसे ऐसे अशुद्ध विदेशी वस्त्रोंको निकाल दें। और उस स्थान पर शुद्ध स्वदेशी खादीका उपयोग किया जावे। अपना सारा कुटुम्ब खादीमय होजावे। यदि इतना न हो सके तो अपनी देशी मील (जिनमें कि सूत काता और बुना जाता हो तथा जिनकी मालकियत भारतवासीके हाथमें हो) का ही वस्त्र उपयोगमें लावें। घर घर चर्खा और तकली द्वारा सूत काता जावे। अगर विशेष कुछ देश सेवा आप नहीं कर सकें तो इतना काम अवश्य करना चाहिये। एक सच्चा देशभक्त स्वदेशके बने चिथड़ेसे जितना प्रेम करता है उतना विदेशके बढ़ियासे बढ़िया वस्त्रोंसे भी नहीं कर सकता।

जरमनीके एक स्टेम नामक देशभक्तको जब फ्रांसके सम्राट् नैपोलियन बोनापार्टने गिरफ्तार करके जेलमें रख और जेलरने उसे फ्रांसके बने कपड़े पहिरनेको दिये तब स्टेमने साफ इन्कार कर दिया और जोरदार शब्दोंमें कहा कि जिस देशके लोगोंने हमारे देशकी प्रजाका खून चूस लिया हो, जिसने हमारे ऊपर अत्याचार किये हों, हम उस देशकी प्रजाके हाथके बने कपड़ेको स्पर्श भी नहीं कर सकते। मुझे जरमनीसे कपड़े मंगाये जावें तो ठीक, वरना मैं विदेशी वस्त्र पहिरनेकी अपेक्षा नंगा रहना पसंद करता हूं। वह स्वदेशाभिमानी कितने दिनतक नग्न रहा, आखिरकार उसे इसी हठके कारण फांसीका हुकुम सुनाया गया! उस वीरने हंसते२ इसे स्वीकार किया और फांसीपर लटकते हुये बोला कि जरमनी! जरमनी!! मेरा प्यारा देश जरमनी!!! आज

मैं जाता हूं, अपने देशके लिये प्राण समर्पण करता हूं, मगर मरनेपर मेरा कफन मेरे प्यारे देश जरमनीका ही मगाया जावे। मेरे मुर्दा शरीरको भी परदेशी वस्त्र स्पर्शित न कराया जावे। अन्तमें यही हुआ। जरमनसे कफन मगाया गया और देशभक्तिकी कदर करनेवाले सम्राट् नेपोलियनने स्वयं उसका अंतिम संस्कार किया। यह है स्वदेशाभिमान। इसे कहते हैं देशभक्ति !!

क्या इस आख्यानसे हमें कुछ शिक्षा लेना चाहिये? जब एक देशभक्त अपने देशी वस्त्रके लिये सत्याग्रह करनेके अपराधमें फांसीपर लटकाया जाता है, और फिर भी वह मरते२ अपने कफनके लिये देशी कपड़ेकी मांग करता है, तब क्या हमें अपने देशके ही बने कपड़े उपयोग करनेमें महत्व न समझना चाहिये? आपको मालूम है कि परदेशी कपड़ोंकी दुकानोंपर पिकेटिंग करनेवाले अनेक स्त्री पुरुष जेल जारहे हैं। यदि आप स्वयं विदेशी वस्त्रोंका बेचना और पहिरना छोड़दें तो अपने भाई बहनोंको न पिकेटिंग करना पड़े और न कारावासके कष्टोंको सहन करना पड़े।

हर्षका विषय है कि अनेक स्थानोंपर बजाजोंने विदेशी कपड़े न मगाने और न बेचनेका नियम लिया है, दर्जियोंने न सीनेकी प्रतिज्ञा की है और रंगरेजोंने न रंगनेका विचार कर लिया है। ऐसे समयमें भारतवर्षके तमाम जैनियोंको भी इन अपवित्र वस्त्रोंसे मोह छोड़कर देशके बने हुये शुद्ध वस्त्रोंका उपयोग करना चाहिये। ग्राम ग्रामकी पंचायतें मिलकर इस देश व धर्मरक्षक कार्यमें यदि भाग लेवें तो दुखिया भारतकी स्वतंत्रतामें बहुत कुछ सहायता मिले। अपने देव मंदिरोंमें विदेशी वस्त्रोंका होना और उनको पहिनकर दर्शन पूजन करना एक पाप समझना चाहिये। इसी लिये देहलीके जैन मंदिरोंमें सत्याग्रहियोंने धरना दिया है और देशी वस्त्र पहिनकर ही अन्दर आने देते हैं। इससे सबको शिक्षा लेना चाहिये, जिससे कि अपने भाई व्यर्थ दुखी न हों।

जिसके लिये देशके लाखों वीर मरनेको तैयार हुये हैं उसके लिये क्या आप इतना भी नहीं कर सकेंगे?

वाइसरोय महोदयने भी इस बातको प्रगट किया है कि स्वदेशी उद्योगको उत्तेजन दिया जावे, लोग स्वदेशी चीजें ही उपयोगमें लावें और उसके लिये दूसरोंको भी शान्तिके साथ प्रेरित करें तो कोई अपराध नहीं कहलावेगा। जब ऐसा ही है, तब तो आपको इसके अनुसार कार्य करना चाहिये। मात्र स्वदेशी वस्त्र नहीं, किन्तु जो वस्तु भी देशी मिलसकी हो वह विदेशी न खरीदी जावे। यही सच्ची देशभक्ति है। जो भाई इस व्रतको लेवें या जो पंचायत इसका निश्चय करे, यदि वह "दि० जैन आफिस सूरत" के पते पर लिखकर भेजें तो दिगम्बर जैनमें प्रगट किया जावेगा।

शिक्षा कैसी होना चाहिये ?

(लेखक—पं० रविन्द्रनाथ जैन न्यायतीर्थ ।)

संसारमें गिरना और उठना अर्थात् पतन और उत्थान सदैव हुवा करता है। मनुष्य अपनी समुन्नति प्राप्त करनेके लिये भरसक प्रयत्न करता है पर फिर भी उसमें त्रुटि रहनेके कारण सफलता प्राप्त नहीं करपाता है। यदि उस त्रुटिको समझकर निकाल दिया जाय तो संभव है कि मनुष्य अपने कार्यमें सफल होवे। किसी कविका वाक्य है:—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।
दैवेन देयमिति कापुरुषाः वदन्ति ॥
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या ।
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः ॥

जैसे पशुओंमें सिंह राजा होता है वैसे ही जो उद्योगी है वही पुरुष सिंह (पुरुष श्रेष्ठ) है और उसके ही लक्ष्मी प्राप्त होती है और 'भाग्यके बलपर जो होना होता है वही मिलता है।' ऐसा कहनेवाले कायर पुरुष होते हैं। आवश्यक यह है कि दैवपर लात मारकर शक्तिके मुताबिक कोशिश करो। यदि फिर भी कामयाबी न हो तो सोचो कि इसमें क्या त्रुटि मौजूद है। बस उसको निकालकर फेंकदो। अवश्य ही अपने कार्यमें सफलता मिलेगी।

कुछ काल पूर्व अर्थात् इस्वी० १८वीं शताब्दीके मध्य हमारे भारतके नरपुंगवोंने अपने देशको समुन्नत बनानेके लिये शिक्षाका अनिवार्य होना आवश्यक समझ मनसे हमारे देशमें पाश्चात्य विद्याको मुख्य स्थान दिलानेका प्रयत्न किया है, तबसे यह तो जरूर हुवा कि हमारे देशमें स्वाधीनता प्राप्त करनेकी आकाश गंगा दिनोंदिन बढ़ने लगी है। हम भी भाईको भाईकी दृष्टिसे देखने लगे हैं, पर जिससे कि करीब ९०० वर्षसे गुलाम देशको स्वाधीन होनेकी धुन सवार हुई है, पर इस देशने जिन देशोंसे स्वाधीनता पानेकी शिक्षा पाई है उनका अभी इसने बहुत ही थोड़ा अनुकरण किया है या यों कहिये कि हमारे पूर्वजोंका अनुकरण तो वह बहुतसा कर चुके और थोड़ेही समयमें अपने देशको बलबल विद्या बुद्धिसे परिपूर्ण अपना सिर ऊंचा कर रहे हैं पर हमारे भारतमें ज्यों ज्यों शिक्षा बढ़ती जाती है त्यों त्यों दासताके फंदेमें फस रहा है।

जहां हमारे पूर्वज अपनी आजीविकासे निश्चिंत हो धर्म साधन कर मुक्तिका उपाय ढूंढ़ते थे वहांपर आज शिक्षित लोग जीविकाकी चिंतामें फंस धर्म कर्मको छुवा दीन बनकर नौकरी खोज करते हैं परन्तु उसमें भी निराशाकी झलक देखकर जीवन विसर्जन कर देते हैं। कारण इसका सिर्फ यही है कि हम आर्य बननेके उसूलोंको भूल बैठे हैं।

श्री पूज्य गुरुवर्य पं० बंशीधरजी न्यायालंकार इन्दौरने एकबार कर्तव्योपदेश देते समय बताया था कि "मनुष्यको आवश्यकीय षट् कार्योंमेंसे किसी एकका आलंबन कर प्रयत्न करना चाहिये, व्यर्थ चिंता न करना चाहिये।"

हमारे पूर्वाचार्योंने भी आर्यकी व्याख्या करते समय बताया है कि जो असि मसि कृषि सेवा शिल्प वाणिज्य इन षट्कर्मोंको करें वह आर्य हैं।

अत: यदि हम पूर्वोक्त वाक्यको ध्यानमें लाकर कार्यरूपमें इसे परिणत करें तो अवश्य मनुष्य जीवन सुखी हो जावे पर इसपर लोगोंका ध्यान जाता कहां है? केवल षट् कार्योंको मूल सच्ची झूठी सिद्ध कर धन कमानेका ही सिलसिला जारी कर रक्खा है। गरीब जनता भले ही भाड़में जाय उसकी सुनता ही कौन है? कुछ महापुरुषोंका ध्यान इस ओर गया भी है और वे गरीब जनताको आदर्श बनानेमें लगे हुवे हैं। देखें कैसी सफलता मिलती है।

वर्तमान जमानेके पुरुषोंके चेहरेपर वीरताका भाव तो कोसों दूर रहा पर चिन्ताके कारण सूखकर कांटे होरहे हैं। अगर एक धक्का जोरसे दिया जाय तो जमीनपर जा गिरें।

(१) इसलिये सर्व प्रथम चिंताको दूर कर शरीर ठीक बनाना चाहिये।

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं।"

अर्थात् धर्मका भी मूल कारण शरीर है। अत: शरीरको ब्रह्मचर्य पूर्वक हृष्टपुष्ट बनानेकी शिक्षा प्रत्येक प्राणीको देनी चाहिये।

(२) किसी भी कार्यमें प्रयत्न करनेपर ही सफलता मिलती है, व्यर्थ चिन्ता करनेसे कार्य बिगड़ जाता है।

किसी कविका वाक्य है कि:-

यह चिन्ता चितासे बढ़कर है,
घुनके समान लग जाती है।
मुरदेको चिता जलाती है,
चिन्ता जीतेको खाती है॥

आर्यशिक्षा।

आर्यशिक्षा ६ प्रकारकी है-

१ असि (शस्त्रविद्या), २ मसि (लेखनविद्या), ३ कृषि (खेती करनेकी शिक्षा), ४ सेवा (नौकरीवृत्ति), ५ शिल्प (नाना प्रकारकी आवश्यक चीजें तय्यार करना), ६ वाणिज्य (स्वदेश और विदेशसे नाना प्रकारका व्यापार करना)। मनुष्यका शैशवकाल ५ वर्षतक रहता है। छठे वर्षमें बालकको असि शिक्षाका प्रारम्भ करना चाहिये। बाल्यावस्थामें शरीर कोमल होनेसे नाना प्रकारसे आसन लगाकर असि शिक्षा अवश्य देनी चाहिये। असि शिक्षाके लिये प्रारम्भसे सेना आदिमें न भेज द्रोणाचार्य सदृश गुरुओंके पास शस्त्रशिक्षा देनी चाहिये।

आदौ शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे विद्ये प्रतिपत्तये।
आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीया द्रियते सदा॥

शिक्षाके प्रारम्भमें मनुष्यको शस्त्रविद्या और शास्त्रविद्या जानना चाहिये शस्त्रविद्या वृद्धावस्थामें हास्यास्पद होती है और शास्त्रविद्या सदैव आदरणीय होती है। यहांपर सर्व प्रथम शस्त्रविद्या पढ़ना बताया है, बादमें शास्त्र विद्या। यदि शस्त्र विद्या पहिले अभीष्ट नहीं होती तो

" आदौ शास्त्रस्य शस्त्रस्य " ऐसा कह देनेपर नीतिकारोंको तो शस्त्रविद्या ही अभीष्ट थी। यद्यपि वृद्धावस्थामें वह हास्यास्पद होती है, अर्थात् जिस समय शस्त्र उठानेकी शक्ति नहीं उस समय शस्त्रविद्यासे कार्य नहीं चलता।

कहनेका तात्पर्य यह है कि षट्कार्योंमें शस्त्रविद्या ही मुख्य है। यदि शस्त्र चलाना जानते होंगे तो आततायियोंसे अपने स्त्री पुत्रादि तथा देव गुरु शास्त्र धर्मकी रक्षा कर पावेंगे अन्यथा नहीं। देखिये भारतवर्षका इतिहास काला काल पतराय कृतः—

"पांड्य देशके राजाने रामानुजाचार्यकी आज्ञासे ८००० जैनियोंको वैष्णव न होनेके कारण मरवाया था !!!"

महमूद गजनीने जब सोमनाथकी मूर्तिको तोड़ा तो उस समय देवकी रक्षा क्यों न हो पाई ? कारण सिर्फ नातफकी अथवा शस्त्रविद्याका न जानना ही है।

महमूद गजनवी मथुरा और कन्नौजसे आदमी पकड़कर लेगया और कन्नौजमें जाकर २) रु० फी आदमीको बेचा, इसका क्या कारण था ? औरङ्गजेबने इतनी देवमूर्ति तोड़ी इसका क्या कारण था ?

जर्मनीके सामने तमाम राष्ट्रोंके संधिपत्र रखे रहे पर उसने अपनी इच्छानुसार बेलजियम आदिपर धावा किया, इसका क्या कारण था ? क्यों बेलजियम अपनी रक्षा न कर सका ? कारण एक अच्छी तरहसे शस्त्रविद्याका न जानना। अब दूसरी ओर भी दृष्टि डालिये—वीर नैपोलियनने कैसे फ्रांसका नाम पाया ? केवल शस्त्रविद्याके बलपर ही न ? अर्जुनादिने कैसे कौरवोंको जीता ? शस्त्रके बल पर ही न ? राम जंगलमें अकेले थे पर रावण खरदूषणको कैसे मारा ? केवल शस्त्रविद्याके बलपर ही।

प्रताप शिवाजी कौन थे जिन्होंने अकेले होकर भारतके सम्राटोंकी नाकमें दम कर दिया था ? कहनेका मतलब यही है कि रामको वशिष्ठके पास पांडवोंको द्रोणाचार्यके पास इत्यादि गुरुओंके पास शिक्षा दीगई थी जिससे कि वह भावी जीवनमें निश्चित हो स्वच्छन्दतासे कार्य कर सके। इधर हमारे जैनियोंमें अन्य धर्मवालोंके आघातके भयसे उनमें मिले रहनेके लिये त्रिवर्णाचारादि ग्रन्थोंमें उनके ही धार्मिक सिद्धान्तोंको भर लिया। यद्यपि उस समयकी अपेक्षा यह ठीक था, क्योंकि बनिये शस्त्रविद्या जानते नहीं थे तब करते ही क्या ? उनके मुंहसे तोः—

"बनिये की नीची और फिर नीची" वाली कहावत चरितार्थ होरही थी। अस्तु, यदि हमें अपने जीवनको सुखमय बनाकर रखना है तो अपने बचावके लिये अवश्य प्रयत्न करना होगा और वह शस्त्रविद्याके द्वारा ही होगा।

शस्त्रविद्यासे कोई खास शस्त्रविद्यासे अभिप्राय नहीं है किन्तु अवस्थाके अनुसार लाठी, तलवार, धनुष, बंदूक, चक्र, बरछा, व्यूह प्रवेश आदि अवश्य सीखा जाय। साथहीमें शास्त्रविद्याका भी अभ्यास कराना चाहिये। यद्यपि लोग कहेंगे कि दो काम एक साथ कैसे होवेंगे ? इसके लिये यही कहना पर्याप्त होगा कि—

दिन रातके २४ घंटेमेंसे सुबह ५ से ८ और शाम ६॥ से ९॥ तक ६ घंटा प्राथमिक

शास्त्राभ्यासके पठन और अध्ययनके लिये पर्याप्त होंगे।

९ वर्ष उपरान्त बालकोंको नगर बाहर स्थापित गुरुकुलमें भेजकर ब्रह्मचर्य पूर्वक उत्साह बढ़ाते हुये योग्य शिक्षकों द्वारा विद्याभ्यास कराया जावे तो संभव है ६ वर्षमें बालक शास्त्र विद्या और शस्त्रविद्या दोनोंमें निपुण होजावे।

शस्त्रविद्याके लिये प्रातःकाल ८ से सायंकाल ६॥ तकमें किसी भी समय ४ घंटा समय निकाला जासकता है और उसमें बालकोंको कोई अड़चन भी उपस्थित न होगी।

उनको राम अर्जुनकी तरह जंगलमें लेजाकर प्रकृतिका निरीक्षण कराते हुये भली भांति शिक्षा दीजानी चाहिये। वर्तमानके टेनिस आदि नाजुक मिजाजी खेलोंमें समय बितानेसे कोई अपने बचावके लिये शिक्षा नहीं मिलती अतः इनमें समय न बिताकर शस्त्र और शास्त्र-विद्या दोनों प्रारंभसे ही पढ़ाना चाहिये।

शास्त्र विद्यासे तात्पर्य किसी खास विद्यासे नहीं है किन्तु कोई भी विद्या अथवा १ या २ विद्याओंका भी अभ्यास एकसाथ होसकता है।

वर्तमान समयमें १९ सालकी उमरतक यदि फैल न हुवा तो बालक हिन्दी पढ़ता है, बादमें संस्कृतमें आचार्य और अंग्रेजीमें एम० ए० आदि होते होते १० वर्ष और व्यतीत होजाते हैं। इसप्रकार २९ सालके करीब अवस्था हो जाती है। यदि फैल होगये तो पूछना ही क्या है ? न जाने कितनी अवस्था पूरी होने तक पढ़ना होता है। गरज यह कि पढ़ते२ जीवन यौवनभाग व्यतीत होजाता है, क्योंकि वर्तमान समयमें अधिकांश ६० से ऊपर नहीं जाते। बाद पढ़नेके आजीविका जमानेमें कुछ समय लगता है, बस जीवन योंही बरबाद होजाता है।

और यदि जीविका न लगी तो रेलों आदिके तले दबकर आत्मघात किया जाता है। अतः यदि सचमुचमें हमें आर्य बनना होतो सर्व प्रथम शास्त्र विद्याके साथ शस्त्रविद्या अवश्य सीखना चाहिये। साथ ही साथ प्रत्येक शाला-ओंमें औद्योगिक शिक्षा भी अनिवार्य रखी जाना चाहिये। अन्यथा शिक्षा प्राप्त करनेके बाद बुरी तरह जीवन व्यतीत होता है।

युवकोंके प्रति।

अय नौजवानो चेतो किस नींद सोरहे हो।
खो करके सारी इज्जत किस ओर जारहे हो॥
संख्या तुम्हारी देखो दिन दिनमें घट रही है।
लेते खबर नहीं तुम किस पन्थ जारहे हो॥
देखो तो रूढ़ियोंने किस भांति घर बनाया।
नीचे गिरा दिया है क्यों गिरते जारहे हो॥
भाई मरें या जीवें तुमको फिकर नहीं है।
आपसमें फूट करके सबको हसा रहे हो॥
यह पक्षपात देखो भूतो सा चढ़ रहा है।
पड़ करके फन्दे इसके विपदाको पारहे हो॥
सोते रहेंगे अब भी अय जैन जाति वीरो।
यह जैनधर्म उज्वल नाहक लजा रहे हो॥
आओ हे भाई देखो चेतो जरा तो समझलो।
ये 'चन्द्र' सम सुकीरत नाहक लजा रहे हो॥

लक्ष्मीचन्द्र जैन,
सतर्क विद्यालय-सागर।

આપણી સ્ત્રી (૨)

(લેખકઃ-રમણીક વી૦ શાહ-મુંબઇ)

શરૂઆત તો કરી, પરિણામનું તો મ્હને ભાનજ હતું. લોકો શું કહેશે અને શું બોલશે તે મ્હને ખબરજ હતી. અરે ભાઇ-દરેકને ખબર પડે, કારણ આપણા લોકોનું પાણી કંઇ ઉંડું નથી, છીછરૂં છે. પગથી ઓળંગી શકાય, તરવાની જરૂરજ નહિ. 'આપણી સ્ત્રી' ના મથાળા નીચે મ્હેં લખવા માંડયું. પ્રથમાંક છપાયો ત્યાર પછી તો-" એમાં એણે શું લખ્યું છે! નવરાં બેઠાં કંઇ સુઝે નહિ એટલે ચીતરી કાઢયું-આ તે કંઇ લખવાની રીતી છે? જેટલું બોલતાં આવડે છે તેટલું લખતાં આવડતું નથી. હવે ભાઇને પરણવાનું આવ્યુંને? એટલે પહેલેથી તૈયારી કરવા માંડી નહિતો લગ્ન અને સોનું ઉચ્ચારવાની પણ શી જરૂરાત હતી?" આવાં આવાં વાકયોનો ધ્વની મ્હારા કાને પડયો. વાકયો બોલનાર મ્હારી પાસે તો બોલેજ નહિ. કારણ બે, એક તો એ કે કોઇના વિષે કંઇપણ બોલવું હોય તો તે હેની ગેરહાજરીમાં ત્રીજા માણસની આગળ બોલવું એ આપણા લોકોનો જન્મસિદ્ધ હક્ક અને રિવાજ. જ્યારે બીજું કારણ એ કે હું બહુ નાનો છું.

મ્હને કોઇ કહે નહિ કારણ બુદ્ધિ ઉદ્ધત કહેવાય. મગજ પાકેલું (વિચારોથી પરિપૂર્ણ-પરિપકવ) નહિ-મ્હેં સંસારની લીલીસુકી જોયેલી નહિ. ખરી વાત છે. બન્ને ખરી વાત છે. મ્હેં કાંઇ અનુભવ્યું નથી. અરે પણ ભલા! હેનો અર્થ એમ થતો હશે કે મ્હારા લેખ બાબતની બીજાએ કહેલી મ્હારી ભુલો-બીજાને કરવી પડતી ટીકાઓ બીજાને બોલવાં પડતાં આવા બકવાટો મ્હને ન કહેવાય? "હું બહુ નાનો છું" એનો અર્થ એમ થતો હશે કે કોઇના વિષે બીજાએ ત્રીજા સાથે વાત કરી આનંદ માનવો! હું નથી ધારતો. અને વાંચકો! તમેજ શું ધારો છો? તમારી પોતાનીજ વિવેક બુદ્ધિથી (By the real sense of descrimination) મ્હને કહો કે તે માણસો, જે આવો બીન પાયેદાર નકામો છતાં ડહાપણનો-પણ લવારો કરે (કારણ કે તેઓ હેને ડહાપણ ગણે છે) કોણ કહેવાય? હેમની બુદ્ધિનું માપ કેટલું? મ્હેં કહ્યું તેમ આપણા લોકોનું પાણી છીછરૂંજને!

મિત્રો અને મ્હારો આશયઃ-મ્હેં સાંભળ્યું કે કેટલાક તો લેખ વાંચીને-અરે વાંચતાં વાચતાં પણ હસ્યા. આ પણ મ્હેં ધાર્યું હતું તેમજ. સ્હેજજ ઉંડો વિચાર કર્યો હોત તો માલમ પડતે કે મ્હારો લેખ ફક્ત આજકાલની પરિસ્થિતિનો ચિતારજ છે. મ્હારો લેખ એકલાં ભણેલાંજ વાંચે એવી મરજી નહોતી, ('ભણેલાં' નો અર્થ અહિંયા હું શહેરમાં વસતાં દિગંબર જૈનો અને વધારામાં તેઓ કે જે પોતાની જાતને ભણેલા, આગળ પડતા હોવાનું કહેડાવી અભિમાન લે છે) મ્હારો આશય આપણી ગુજરાતી જનતાની એકેએક સ્ત્રી વાંચે તેવો હતો. દરેક સ્ત્રી પોતાનુંજ ચિત્ર છે એમ બે ઘડી કલ્પી શકતે અને જો પોતાનું મન શુદ્ધ હોત તો પોતાના વિચાર મ્હેં કહ્યું તેમ સુધરી શકત.

હજી પણ વખત ગયો નથી સુધરી શકાય તેમ છે. મિત્ર તરફથી મ્હને સવાલ પુછવામાં આવ્યો કે લેખની ભાષા આવી કેમ? મ્હેં કહ્યું-એવીજ હોય. મ્હારા શબ્દો નથી પણ અમુક બૈરાંઓનાજ છે. મ્હારી ભાષામાં લખું તો બૈરાંઓને મઝા ન પડે. મ્હારો તો બૈરાંઓને લેખ વંચાવવો હતો. તે ન વાંચે તો પરાણે વંચાવવો હતો. મ્હને મ્હારા મિત્રોપર સંપૂર્ણ વિશ્વાસ છે. જેજે મિત્રોએ તે લેખ વાંચ્યો હશે અને આ બીજા લેખો વાંચશે તે સર્વેને હું વિનંતી કરીશ કે મ્હારા પ્રચાર કાર્યમાં તેઓએ ભાગ પડાવવો. બૈરાંઓને ખાસ જણાવવું કે આ તમારૂં દિગ્દર્શન! કંઇ સુધરવાનું મન થાય છે? થતું હોય તો સુર્ય ઉગવાની દિશા બદલતો જાય છે. મ્હારા કામના બહોળાવા માટે હું કોઇની મદદ ન માગું

તો છેવટે મિત્રોની તો ખરુંજ. અલબત્ત જે મ્હારા મતને મળતા હોય અને મ્હારી સાથે રાજી હોય.

સ્ત્રી કેળવણીઃ—આપણા સમાજની હાલની પરિસ્થિતિમાં જો કોઇ સવાલ સૌથી અગત્યનો હોય તો તે 'સ્ત્રી કેળવણી.' આપણા સમાજની આ અધોગતિ અને આ ગર્તા પતનમાંથી જો આપણે બચવું હોય ને બહાર નીકળવું હોય તો સૌથી પ્રથમ ફરજ 'સ્ત્રી કેળવણી.' અંધારા ભોંયરામાં ધુસી ગયેલા આપણા સમાજને બહાર પ્રકાશમાં આવવું હોય તો ભોંયરાની સીડીનું પ્રથમ પગથીઉં 'સ્ત્રી કેળવણી.' અરે ભાઇ! બધાયે આમ કહે છે. પણ તે 'સ્ત્રી કેળવણી.' છે શું? લોકો કહે કે સ્ત્રીને ભણાવવી જોઇએ, પણ શું ભણાવવું જોઇએ તે કોઇએ કહ્યું નહિ. આટ આટલા લેખો 'સ્ત્રી કેળવણી' પર આવ્યા. અંદર શું હતું? સ્ત્રી કેળવણીના અભાવથી થતા ગેરફાયદા અને પ્રભાવથી થતા ફાયદા (ખરેખર—મ્હેં તો આજ વાંચ્યું છે. બનવા જોગ છે કે બીજા લેખો મ્હેં વાંચ્યા પણ ન હોય.) પણ કોઇએ ન કહ્યું કે 'સ્ત્રી કેળવણી' કેવા પ્રકારની જોઇએ? સ્ત્રી કેળવણી એટલે મેટ્રીક કે બી. એ.?

સ્ત્રી કેળવણી એટલે ગુજરાતી પાંચ ચોપડીઓ કે રાંધવું અને પાણી ભરવું? આપણા સમાજમાંથી કેટલાયે માણસો એવા નીકળશે કે જેને છેલ્લો અર્થ બાકીનાં ત્રણ કરતાં વધારે પસંદ પડે. કારણ? સ્ત્રી જો ભણેલી ન હોય તો નોકરી તરીકે રાખી શકાય—ગમે તેટલો માર મારી શકાય અને ગમે તેવા કામ કરાવી શકાય, પણ જો તે ભણેલી હોય તો તે પોતાના હક્ક બરાબર સ્હમજે. આર્ય લલના આર્ય સંસ્કૃતિને લીધે માર તો સહન કરે પણ પાછળથી પતિને પોતાનાં કોમળ વાક્યોથી રડાવી શકે. કામ તો કરે પણ પાછળથી પતિની આ ગદ્ધાશાહી અક્કલ માટે ટકોર કરી શકે.

આપણા આ સુરત સમાજને એવું કાંઇ ન ગમે, સ્ત્રી પતિના સામું બોલેજ કેમ? અરે પણ ભલા! તે સામું બોલ્યું કહેવાયજ નહિ. આ ત્હેમને ખબર ન પડે. આર્ય લલનાને આર્ય સંસ્કૃતિને છાજે તેવી કેળવણી અપાવી હોય તો 'સાચું બોલવું' એટલે શું તે ત્હેમને ખબરજ ન પડે. ધાર્મીક અને વ્યવહારીક આપવી પણ ધાર્મીકમાં શું આવે? દહેરાસરમાં દર્શન કરવાં એટલુંજ નહિ પણ તે ઉપરાંત લૌકિક ધર્મ સ્હમજવો પડે છે. દહેરાસરમાં જતાં જતાં આપણા બૈરાંને કેવી હાશપાશ થાય છે તે આપણે જાણીએ છીએ. છોકરૂં રડતું હોય કે ભાત ચુલાપર મૂકયો હોય! દહેરાસરમાં ત્રણ મિનીટ કયાંથી લાગે! આવાં અધુરાં દર્શન કરી પાપ બાંધવા ત્હેનાં કરતાં દર્શનજ ન કરવાં તે વધારે સારૂં છે. પતિને ઉતાવળ ન હોય તો નાહી કરીને દર્શન નિરાંતના કર્યા પછીજ ચુલો સળગાવે અથવા જો પતિને ઉતાવળ હોય તો પ્રથમ રાંધીનેજ ફરી ન્હાઇ દહેરાસર જાય તો વધારે સારૂં. અલબત રાંધવાં પહેલાં પવિત્ર તો થવુંજ પડે.

ધાર્મિક શિક્ષણમાં સામાયિક—વૈયાવૃત્ય અને જૈન ધર્મનાં સાધારણ તત્વો તો આવડવાંજ જોઇએ. જૈન ધર્મની ચોપડીઓ ગોખી એટલે કે ધર્મનાં તત્વો હૃદયમાં ઉતર્યાં એમ ન કહી શકાય. આચરણ આચરવું જોઇએ. અને વખત આવે નાસ્તીક પુરૂષો અથવા પર ધર્મનાં બૈરાં સાથે વાદવિવાદ કરી જૈન ધર્મનું રક્ષણ કરવા પુરતું જ્ઞાન દરેક સ્ત્રીમાં હોવુંજ જોઇએ.

હવે વ્યવહારીક શિક્ષણમાં શું આવે? એકલું રાંધવું અને પાણી ભરવું નહિ. બીજું ઘણુંયે છે. વાંચવું, લખવું અને કેટલીક કળાઓ જેવી કે સંગીત અને ચિત્રામણ આ દરેકની ઉપયોગીતા છે. દરેક સ્ત્રી ફક્ત એક મિનીટ વિચાર કરશે તો માલમ પડશે કે સંગીત અને ચિત્રામણ ત્હેમના શા કામમાં આવે એટલું હું નહિ કહું. વળી આ બધું કોલેજમાં જવાથીજ આવડે છે તે તદ્દન ખોટું અને હડહડતું જુઠું. કેટલાક કહેશે કે સ્ત્રીઓને ચોપડી વાંચવાનું શું કામ? ત્હેમને

ખબર નથી કે સાહિત્ય અથવા સારૂં વાંચન તે જીવનથી સહેલાઇમાં જુદાં ન પડી શકે. સાહીત્ય અને જીવન ઓતપ્રોત છે. સાહીત્ય વિના જીવન નથી અને જીવન વિના સાહીત્ય નથી. સ્ત્રીઓમાં ખરાબ પરિણામ ઉત્પન્ન થાય છે તે વાત તદ્દન ખોટી. સાહીત્યથી સ્ત્રીઓ પોતાના જીવનમાં ઉત્તમોત્તમ સામગ્રી ભેગી કરી શકે છે. પોતાનું જીવન સુધારી શકે છે.

સારા લેખો લખવા અને વાંચવા તે પણ એક જાતનું ઉત્તમ સાહીત્યજ કહેવાય. 'આપણી સ્ત્રી' નું આપણા સમાજમાં સ્થાન–કેટલું છે ? એક છચનુંયે નહિ. સ્થાનનો અર્થ કિંમત કરીયે તો એક કોડીનુંયે નહિ. કારણ કોણ ? આપણે પોતેજ. આપણી સ્ત્રીને આપણેજ નીચી પાડી, આપણી સ્ત્રીને આપણેજ ઉંચી ન આવવા દીધા. હિંદુસ્તાનમાં જે જે સ્ત્રીઓનાં નામ છાપામાં બોલાય છે, તેમાંથી ગુજરાતી દિગંબર સ્ત્રીઓ કેટલી ! અરે જૈન સ્ત્રીઓ કેટલી ! એકપણ નહિ. અંગ્રેજી ભણે એટલીજ છાપાઓમાં પ્રસિદ્ધ થાય તેવું કાંઇ નહિ તેવીજ રીતે અંગ્રેજી ન ભણે તે છાપાઓમાં પ્રસિદ્ધ નજ થાય તેમ પણ નહિ. એ તો ઠીક એવો સમય છે તેથી જો સ્ત્રીઓ થોડું અંગ્રેજી જાણે તો ઠીક–ત્હેમને ઉપયોગી નીવડે જ્યારે ત્હેમના પતિને ત્યાં અંગ્રેજ માણસોજ આવતા રહેતા હોય.

આપણી સ્ત્રીના આ અધમ અને ગરીબ દશા–કારણ આપણે ત્હેમના વાલી આપણનેજ ખબર નહિ કે આપણે કેવા છીએ. પછી આપણી સ્ત્રી કેવી છે તે જાણવાની આપણને પરવા ક્યાંથી હોય ! સ્ત્રીઓ માટે કેટલી પાઠશાળાઓ ખુલી ? કેટલા આશ્રમો ખુલ્યા ? શું સમાજને ગરીબ તરીકે, હિંદ કબુલે છે ? ના. ત્યારે આશ્રમો કે પાઠશાળાઓ કેમ ખુલતાં નથી ? અને જે ખુલ્યાં છે ત્યાં કેમ કોઇ સ્ત્રીઓ કે છોકરીઓ ઠીક ભાગ લેતા નથી ! કેમ મદદ લેતાં નથી ? કારણ આપણે પોતેજ આપણી છોકરીઓને જવા દેતા નથી. બહાનું શું કાઢીયે છીયે ?–"તે કેવી રીતે મ્હારાથી એટલે માબાપથી અળગી રહે ! છોકરી બાર વર્ષે મ્હોટી થઇ જાય–પરણાવવી જોઇએને?"

અરે ભાઇ ! આતે કાંઇ બહાનાં હોય ! આવાં વાક્યો કંઇ પોતાની પુત્રી પ્રત્યેનો પ્રેમ બતાવે છે ? ના ઉલ્ટું ગયા જન્મનો તેણીની સાથેનો કંઇ દ્વેષ બતાવે છે કે જેથી છોકરીને ત્હેની ઉન્નતિ ન કરવા દઇયે. પુત્રીને ઘેર રાખ્યાનેયે કંઇ કેળવણી આપતા હોઇયે તો ઠીક. આ તો "પાણી ભરી આવ અને કચરા કાઢ" સીવાય સુગુણ દુર્ગુણની તો વાતજ નથી. કળા જ્ઞાનનું તો નામજ નહિ. આપણી સ્ત્રીનું સ્થાન–આપણા સમાજમાં એક ગરીબડી ગાય કરતાં પણ વધુ ગરીબ. આપણી સ્ત્રી પર–આપણી પુત્રીપર આપણે ધારીયે તે કરી શકીયે. શાથી ? સ્ત્રી જાત બનીને ? જાણે પ્રભુએ સ્ત્રીને આપણા કરતા જન્મથીજ નીચી ન બનાવી હોય ?

આપણે સમજતાંજ નથી કે પ્રભુએ કયું બનાવ્યુંજ નથી. કોઇ કોઇનાથી ઉતરતું કે ચઢતું કહી શકાયજ નહિ. સ્ત્રી અને પુરૂષ બન્ને એક બીજાને સરખાં મદદગાર. કોઇ કોઇનાથી ચઢતું ઉતરતું કહેનાર મૂર્ખો અને અક્ષર વિહોણો. ભલે સ્ત્રી પોતાની જાતે માને કે તે ત્હેના પતિ કરતાં નીચી અને હલકી પણ પતિની ફરજ નથી કે સ્ત્રીને તે સમજાવે કે "તું મ્હારા કરતાં હલકી અને નીચી" આપણી આર્ય સંસ્કૃતિને લીધે આપણી આર્ય લલનાઓ ભલે ગમે તે માને પણ આપણે તેમ કરવાની ફરજ નહિ પાડવી જોઇએ. ફરજીયાત કામ લાંબો વખત સુધી અને લાંબી ઉચ્ચ ભાવના સાથે ટકી રહે છે. આપણા લોકોને આ તો ખબરજ છે. મરજીયાત સારી ચાલચલગત અને વર્તણુક માટે ઉચ્ચ અને શીષ્ટ સાહીત્યની જરૂર છે.

૫. ઉપસંહાર–સરવું–પણ બધામાંનું થોડું હું કહી ચૂક્યો. આંખ આડા કાન કરવાનો આ

વખત નથી. હિંદુસ્તાનના ઢેડ અને ભંગીઓ પણ સુધરવાનો પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે. હક સ્થાપિત કરવા તનતોડ જર અને જહેમત ઉઠાવી રહ્યા છે. આપણે જૈનો કંઇ નહિ કરીયે. જૈન સ્ત્રીઓ માટે જૈન પુરૂષો હવે પાછા પડશે? આપણે પારસી કોમનો દાખલો લઇયે તો તરત ખબર પડે. નાનામાં નાની કોમ છતાં હિંદમાં ત્હેમનો સંપૂર્ણ હક. જૈનોની વસ્તી ત્હેમના કરતાં વધારે પણ કાંઇ હક! નહિ. ઉલ્ટાં તેઓ અંદર અંદર લઢે, પૈસા ખરચે ને પાયમાલ થાય. જૈન બંધુઓ અને બ્હેનો-મ્હારાં જેવાં કેટલાંયે લખાણો આવશે. કંઇક તો કરો, નહિ તો પછી પત્થર પર પાણી સવાદો. એજ. અસ્તુ.

—⊱⊰—

"युवक मंडलोनी नबळाई."

આજકાલ યુવક મંડલો ઉત્સાહ ઘેલા યુવકો સ્થાપે છે ખરા પરંતુ મંડલો કેમ ચલાવવા તેનું વ્યવહારિક ડહાપણ તે ઉત્સાહઘેલા યુવક મંડલના સંચાલકોને ઘણીવાર હોતું નથી અને તેમ છતાં સદ્ભાગ્યે કોઇ દૃઢ અને કૃત નિશ્ચયી સંચાલક મળે છે, તો તેને વ્યવહારમાં ઉતારી શકતા નથી. આ નબળાઇઓનું કારણ શું છે તે વિષે તેમણે કદીએ વિચાર કર્યો છે ખરો? પુરૂષાર્થ મંડળો સ્થાપવામાં નથી પણ મંડળોના ઉદ્દેશને વ્યવહારમાં ઉતારવામાં છે. તેનો વિચાર મંડલના સંચાલકોએ ભાગ્યેજ કર્યો હોય તેમ લાગે છે.

આવીજ નબળાઇનું ભોગ હાલમાં મુંબાઇનું દિ. જૈન યુવક મંડલ હાલમાં થઇ પડ્યું હોય તેમ લાગે છે. કારણ જો આ વસ્તુ સ્થીતિ ન હોય તો આજ બબે વર્ષ થયાં મંડલના ઉદ્દેશો મૂર્ત સ્વરૂપ લેતા જણાતા નથી તેનું શું કારણ? મને ખબર છે ત્યાં સુધી તો મંડલોનાં પ્રમુખ મંત્રીઓ ઉત્સાહી અને કામ કરી શકે તેવા છે. છતાં તેમના માથે આ કલંક કેમ? તેઓ કેમ આ નબળાઇનો ભોગ થઇ પડયા છે. મંડલના માથે હાલમાંજ એક જવાબદારી ભર્યું કામ પણ આવી પડ્યું છતાં તે પાર ઉતારવામાં મંડલ નિષ્ફળ ગયું હોય તેમ લાગે છે. જો કે મને વિશ્વાસ છે કે મંત્રીઓએ તેને માટે પુરતી જહેમત ઉઠાવી હતી પરંતુ પુરતા પ્રચાર કાર્યને અભાવે અને સામાન્ય જનતાનું પીઠબળ નહી હોવાથી તેમના હાથ હેઠા પડયા હોય તેમ સ્પષ્ટ રીતે જોતાં જણાય છે. પરંતુ આ જગ્યાએ હું મંડલના કાર્યકરોને એક સુચના કરી લઉં કે કોઇ કાર્ય પાર ઉતારવા માટે પહેલાથી ક્ષેત્ર તૈયાર કરવું જોઇએ જે મંડળ તરફથી છાપાઓ યા પ્લેટફોર્મ દ્વારા થયું નહોતું. અમુક વસ્તુ ખોટી છે માટે અટકાવવી જોઇએ એમ આપણને લાગે તો આપણે આપણી પાછળ દોરવવા માગતા સમાજને દાખલા દલીલો દ્વારા તે સિદ્ધ કરી આપવુંજ જોઇએ અને એવા કૃત્યો તરફ સમાજને રોષ ભરી આંખે જોતા કરીએ તોજ અપકૃત્ય કરતો માણસ સમાજની રોષભરી આંખ જોઇ પાછો ફરે, તે સિવાય નહી. મંડલ ખુદ તે સિવાય બીજી રીતે સામા માણસને અપકૃત્ય કરતો અટકાવી શકતું નથી તે મંડલના કાર્યકરોએ ભૂલવું જોઇતું નથી અને જ્યારે દરેક મંડલ આ રહસ્ય સમજી જશે તો તે કદિ નિષ્ફળ જવા સરજાયેલુ નથી જોકે આજની નિષ્ફળતાની જવાબદારી હું એકલા મંડલ ઉપરજ છોડી દેવા માંગતો નથીજ. બલ્કે સમાજની નિષ્ક્રીયતા પણ તેને આભારી છે અને સમાજની આ નિષ્ક્રીયતા ઉડાડવાનો એક ખરો રસ્તો પ્રચાર કાર્યનો છે તે મંડલે સત્વર ઉપાડી લેવો જોઇએ, એમ મારૂં માનવું છે. ઇચ્છું છું કે મંડલના સંચાલકો આ નિષ્ફળતાથી કંટાળી જઇ પોતાની પ્રવૃત્તિ અટકાવશે નહી પરંતુ ઉલટા વેગથી જારી રાખશે તો આખરે મંડલની સમાજ સુધારાની નેમ ફાવશે એમ કહેવામાં હું જરાયે અતિશયોક્તી કરતો નથીજ અને સમાજે પણ પોતાની હિત વસ્તુ ધ્યાનમાં રાખી તેમને અપનાવી લેવા ઘટે છે.

શા. દેસાઇ.

आरोग्यता विषे मारो अनुभव.

(લે:-ડા. ચીમનલાલ કસ્તુરચંદ વૈદ્ય. વડોદરા.)

રાત્રે વે'લા જે સુઇ, વે'લા ઉઠે વીર;
બળ, બુદ્ધિ, ધન બહુ વધે, સુખીયું થાય શરીર.

ઘણાજ લોકો દવા વગેરેનાં આજકાલ ગજા ઉપરાંત પૈસા ખર્ચે છે. અને કહે છે કે તેમ કર્યા વગર ચાલે નહિ. કારણ કે:—

શરીરે સુખી તો, સુખી સર્વ વાતે,
શરીરે દુઃખી તો, દુઃખી છે સદા તે.

મારો તેમોને ફક્ત એકજ જવાબ કે જો કુદરતના નિયમોનું યથાયોગ્ય પાલન પોષણ કરવામાં આવે તો હું નથી ધારતો કે પૈસાનો આટલો બધો ભોગ આપવો પડે? આશ્ચર્યની વાત છે કે આજ કાલ સમાજમાં આમ કેમ ચાલે છે! કારણ એજ કે કુદરતના નીતિ નિયમોનું હદ બહાર પોષણ કરવાથી અર્થાત આરોગ્ય શાસ્ત્રોના નિયમો વિરૂદ્ધ વર્તન થવાથી આ બધું તેમને શોષવું પડે છે નહિ વારૂ?

જો તમે મરચું હદ ઉપરાંત ખાશો તો તમને સ્વાદમાં સુમધુર લાગશે. પરંતુ પાછળથી તમને તેની યોગ્ય શિક્ષા થવીજ જોઇશે. તમને શિક્ષામાં ખાંસી થશે એટલુંજ નહિ પણ ઝાડા તથા પેશાબે નકકી બળતરા થશે. આ હદ ઉપરાંત સેવન કરનારનું પ્રત્યક્ષ ફળ ખરૂં કેની?

માટે સૌ સમજીને દરરોજના કુદરતી નીતિ નિયમોનું યથા યોગ્ય પાલન કરો. પૈસાની તેમાં બીલકુલ જરૂર પડતી નથી, અને એવું કહેવું એ બીજાને પોતાની સાથે દોષમાં નાખ્યા બરાબર છે.

દરરોજ સવારમાં ચાર વાગે ઉઠી ઇષ્ટદેવનું સ્મરણ કરી ૦।। શેર ઠંડુ જળ પી લેવું. તાંબાના લોટામાં ભરી મુકેલું હોય તો વધારે સારૂં. જેથી શરીર પ્રફુલ્લીત થાય છે. હૃદય પવિત્ર બને છે, અને દેહક્રિયા કરતી વખતે ઝાડો નિર્મળ આવે છે. તથા હરસ! સોજો, કબજીઆત વિગેરે દર્દો નાબુદ થાય છે. મળમૂત્રનો ત્યાગ કરતી વખતે મનુષ્યે કરાંજવું નહિ. તથા મળને રોકવો નહિ. જો તે રોકવામાં આવે તો તેમાંથી કેટલીક વાર લોહી મુકાવે નવાનવા વ્યાધિના ઉપદ્રવો પેદા થાય છે. ખાસ કરીને અત્યારે એપેન્ડીસાઇટીસ નામનો જીવલેણ વ્યાધિ વિશેષ માલમ પડી આવે છે.

મળનો ત્યાગ કરી રહ્યા પછી તે ભાગ સારી રીતે ધોઇ નાખવો, તથા હાથ પગ, દુર્ગંધ દૂર થવા સુધી પાણી અને માટીથી ધોઇ નાખવા. સાબુની કોઇ જરૂર નથી.

દાતણ:—આપણા લોકો દાતણ કરવામાં ઘણીજ નિષ્કાળજી રાખે છે. અને ઘેરાં તેનાથીએ વધારે કાળજી લેનારાં હોય છે. આ તરફ ઘણુંજ દુર્લક્ષ અપાય છે. તે નાબુદ કરવું એ વાંચકની ફરજ છે. દાતણ ખાસ કરીને બાવળ તથા લીમડાનું સૌથી ઉત્તમ ગણાએલું છે. બ્રશનો ઉપયોગ કરવાની વિશેષતા જણાતી નથી, પરંતુ દાતણ સાધારણ જાડું લઇ તેનો કુચો જડબાના ખોશમાં સારી પેઠે ફરી વળે તે પ્રમાણે જોઇએ. દાંત બરોબર ચોકખા અને સફેદ રાખવા પ્રયત્ન કરવો. જેઓ બરોબર સાફ રાખતા નથી તેઓનેજ શોષવું પડે છે. તેમાંથી પરૂ થઇ પેટમાં જાય છે, અને પાયેરીઆ, ઝાડા, સંગ્રહણી તથા અપચાના દર્દી બાળકોનો જન્મ થાય છે, જે પછી પોતાનેજ પાલવવાં પડે છે. દંતમંજન અને ત્યાં સુધી દેશી વાપરવું વધુ ઉત્તમ છે. વિદેશી કેટલીક વખત ભ્રષ્ટાચાર કરી મુકે છે.

ઉત્તમ.	મધ્યમ.	[illegible].
ચાક સોપારી અથવા ફ્રેડેથી બદામનો કોલસો	કોલસો ને જીરૂં મીઠું સ્હેજ	ભીકણી બાણુંની રાખ.

અત્યારે જે બજારૂ ચા વેચાય છે તે સુગંધીવાળો ચાકનો ભૂકો પરંતુ જેણે રાખના પૈસા ઉપજાવવા હોય અને ધંધો કરવો હોય, તેણે ડબ્બામાં પેક કરતી વખતે સુગંધીત વસ્તુ સાથે રાખનું મીશ્રણ કરી રંગ બદલી નાંખવા પ્રયત્ન કરવો.

કેટલાક ખરાબ ટેવોથી દાંતની વિશેષ ખરાબી કરી મુકી યુવાવસ્થા પસંદ નહી પડવાથી ઘડપણ અવસ્થા પસંદ કરે છે.

અતીશય પાન ખાવાથી પોપડા બાજી સડો પેદા થાય છે. દાંત રંગીને દાડમી શોભા વધારવા બનાવટી પ્રયાસ થાય છે. પરંતુ કુદરતથી કોઇ ડાહ્યું નથી. લગ્નમાં પોથા જેવા આભડ છેટ વસ્તુ મુકી આમલીની ખટાશ ચાખી મુખાકૃતિની કુદરતી શોભામાં વધારે કરવા માણસ શું આ દોષને સુધારી શકતો નથી? તદુપરાંત બીજી અનેક અનિષ્ટ ખાદ્યપાન વસ્તુઓ જેવી કે ચા, પાન, બીડી, તમાકુ, એ સર્વ આરોગ્યને હાનિ-કર્તા છે, તો પછી શા માટે વિશેષ ઉત્તેજન આપવું ઘટે?

ન્હાવું—ન્હાવામાં ઉતાવળ કરવી એ શિષ્ટાચાર ઘણેખરે ઠેકાણે જોવામાં આવે છે. શરીર ચોળીને નાવું એ તો કુદરતી કાયદાને માન આપનાર માટે? પણ ખબર નથી કે ચોળીને ન્હાવાથી મન શુદ્ધિ સાથે વિશેષ પવિત્ર બને છે, શરીર હલકું તથા સ્ફુર્તિવાળું જણાય છે, અને નવી હોંશ પેદા થતાંની સાથે બધી ઉત્પન્ન થયેલી ગ્લાનિનું નિકંદન થાય છે; તથા સાથે સાથે ખસ, દરાજ, ખરજવું વિગેરે ચામડીનાં દર્દોનો નાશ થાય છે. એ આ પૂજારીઓને કાંઇ ખબર હોય છે ખરી? સેવા પૂજા કરવા માટે નહાવું જોઇએ એ પ્રમાણે દરરોજનું ઠરેલું કામ હોવાથી જલદી સ્નાન ક્રિયામાંથી પરવારી ધંધાવશ થઇ ઉતાવળે ઘર બહાર નીકળી પડે એ.

કસરતઃ—કસરતના હિમાયતીઓ સારી પેઠે જાણે છે છતાં ટુંક વિવેચન કરવું એ મારી લેખક તરીકે ફરજ છે, એમ સમજી થોડોક ચીતાર આપ સમક્ષ રજુ કરું છું, તે ધ્યાનમાં લઇ પ્રયત્ન કરશો તો સારી વાત છે. તો હું સમજીશ કે આ લીધેલી મહેનત સફળ થઇ છે. નહીતર મેં, મનુષ્ય જીવન તરીકે, મારી ફરજ બજાવી છે એમ સમજવા માટે હિતકર માનીશ.

વ્યાયામ કરવાથી શરીરમાં વિશેષ જોમ પેદા થાય છે. હાડકાં મજબુત થાય છે, અને તેનો ઉપયોગ જરૂર પડે ત્યારે નિડરતાથી આત્મ રક્ષક તરીકે થઇ શકે છે. સ્નાયુઓને કેળવવાથી થયેલી બદહજમી દૂર થાય છે, ખોરાક પચે છે. આયુષ્યની વૃદ્ધિ થાય છે, અને ઝાડો અથવા પેટ સાફ આવે છે. ચુંક આવતી હોય, પેટમાં દુઃખાવો થતો હોય તો પણ તે દવા લીધા વગર નાબુદ થઇ જાય છે.

ઉંઘઃ—સારી ઉંઘ લાવવી હોય તો દરેક મનુષ્યે સારી રીતે ઉદ્યમ કરવો અને વખતનો સદુપયોગ કરવો. સ્વપ્ન એમ દર્શાવે છે કે મગજ અવ્યવસ્થામાં છે. સુતી વખતે મનઃ શુદ્ધિ માટે હાથપગ ધોઇ ઇષ્ટ દેવનું સ્મરણ કરી સુઇ જવું. મગજ પ્રફુલ્લીત થાય તે માટે ઉંઘની ખાસ જરૂર છે. ઓછામાં ઓછી નિદાન ૭ કલાક ઉંઘ લેવી જોઇએ. ઓછી લેવાથી કેટલીક વખતે શરીરની આરોગ્યતાને નુકશાન પહોંચે છે.

દિવસે સુવાથી શરીરમાં ગ્લાનિ પેદા થાય છે. સાથે સાથે હાડકાં હરામ થઇ આળસની ખોટી આદત થાય છે. ખરૂ જોતાં તે ઉન્નતિનો કટ્ટો શત્રુ છે.

સદાચાર યાને સદ્વર્તનઃ—નીતિને રસ્તે ચાલનાર માણસ સુખી થાય છે એ અસંભવીત નથી. સદ્વર્તનથી કેટલીકવાર કીર્તિસ્થંભો રોપાય છે અને પ્રતિષ્ઠા વધે છે. દુરાચારથી શરીરની પાયમાલી થાય છે.

કુટેવો શરીરને નુકશાન કર્તા હોવાથી ધ્યરા-ધાન થવું પડે છે. કેટલાક વિષયાંધ થઇને અને બુરા કર્મમાં સપડાઇને પોતાને હાથે શરીરની ખુવારી કરે છે. હસ્ત દોષ જેવી કુટેવોથી જીંદગીની પાયમાલી કરનાર આજે આ દુનીયામાં ઘણા નીકળે છે. તેનાથી તાકાત ઘટે છે, આંખોનું તેજ કમી થાય છે, કાનોમાં બહેરાશ આવે છે સ્મરણ-શક્તિમાં મોટો ફેરફાર થાય છે. એટલાજ માટે બ્રહ્મચર્ય પાળવું એ વધારે ઉચિત જણાયું

છે. વિદ્યાર્થી જીવનમાં તો તે અવશ્ય પાળવુંજ જોઇએ. વળી બાળલગ્ન જેવા દુષ્ટ જીવલેણ કુરીવાજોનું નીકંદન કરવાનો હક્ક દરેકે હોરી લેવો એ "મહાવીર" અને "કર્મવીર ગાંધી"ના દરેકે દરેક અનુયાયીની ફરજ છે. માટે પ્રાણી પર દયા રાખી મન, વચન અને કાયનું નૈતિક વર્તન રાખવું. ટુંકામાં જણાવવાનું એજ કેઃ– "હું કેવા કામમાં મારો સમય ગુજારૂં છું," એ વાતનું નિત્ય ચિંતવન કરનાર પુરૂષ દુઃખી થતો નથી. अलम् अतिविस्तरेण।

ભક્તિ થકી ભવપાર.

(ધન્યાશ્રી)

ભક્તિ થકી ભવપાર,
પામીશું અમે ભક્તિ થકી ભવપાર. ટેક
રાગ દ્વેષથી રહીત જે જ્ઞાની,
સમતા સદા ધરનાર. પામીશું૦
ગુરૂ એવાએ માર્ગ બતાવ્યો,
જેથી પમાશે પાર. પામીશું૦
સર્વજ્ઞ એવા અરિહંત દેવે,
ભાખ્યું જે કેવળ જ્ઞાન. પામીશું૦
દયા કરો પ્રાણી પર સર્વે,
ધર્મ તણો એ સાર. પામીશું૦
સત્ય ધરી હિંસાને ત્યાગો,
ધારી હૃદે કરૂણાય. પામીશું૦
પર ધન ને પર નારને ત્યાગો,
સદા સંતોષી થાવ. પામીશું૦
અનીતીને આભડ છેટ જાણી,
ચાલો નીતિ અનુસાર. પામીશું૦
જ્ઞાન થશે આત્માનું જ્યારે,
મોહન પામે પાર. પામીશું૦

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ-કમ્પાળા.

आत्मिक-प्रेम.

(લે.–હરગોવનચંદ નેમચંદ વખારિયા-મુંબઇ)

બધા સદ્ગુણોનું મૂળ પ્રેમ છે. આ પ્રેમ દેહની સુંદરતા કે ધનની અધિકતાને લીધે નહી, અધિકાર કે સારી લાગવગ ધરાવનારા ઉપર નહી, ભવિષ્યમાં ઉપયોગી કે મદદગાર થશે તે માટે નહી પણ કેવળ સત્તાગત અનંત શક્તિવાન આત્મા છે અને આત્મા એ પરમાત્મા છે એમ જાણી આત્મ દૃષ્ટિએ આત્મા ઉપર પ્રેમ કરવાનો છે. તે સિવાયનો પ્રેમ તે પ્રેમ નથી પણ મોહ છે, રાગ છે, સ્નેહ છે, બીજાને શાંતિ આપી પોતાને સુખ માનવું તે પ્રેમ છે. પ્રેમ છે ત્યાં આત્મભાન છે. પ્રેમના પ્રમાણમાં શુદ્ધ આત્માનો અનુભવ થાય છે. જે સત્તા રાજ્યમાં, ધનમાં, અધિકારમાં નથી તે સત્તા પ્રેમી ઉપદેશ કર્તાના વચનમાં રહેલી છે. જો તે ઉપદેશકમાં પ્રેમ નહી હોય તો તેનો ઉપદેશ ભલે તેટલો મોહક કે પંડિતાઇ ભર્યો હશે છતાં ખાલી કાંસાના રણકારાથી તેમાં વિશેષ અધિકતા અનુભવાશે નહી. તે ઉપદેશ લાગણી, આત્મભાન, અને આંતરના પ્રેમ વિનાનો હોવાથી વદન લુખો અને અસર વીનાનો નીવડશે. અને તેની અસર તરતમાં ભુસાઇ જશે. શ્રદ્ધા સાધન જેવી છે. પ્રેમ જે સાધ્ય હોવાથી સાધનના ફળરૂપે છે. પ્રેમને બહાર કાઢવાનો પ્રગટ કરવાનો એકજ માર્ગ છે કે બીજાને આપવું. દાન એ પ્રેમની નીક છે. તે દ્વારા પ્રેમનું પાણી બહાર આવી બીજાને શાંતિ કરે છે.

માગવા આવેલા યાચકને એક પૈસો કે ટુકડો આપવો કહ્યુ કામ નથી પણ પ્રેમ તો ગરીબાઇનાં મુળ કારણો દુઃખીઆનાં દુઃખ અને અજ્ઞાનીઓનાં અજ્ઞાન દુર કરવામાં રહેલો છે. શ્રી પાર્શ્વનાથ પ્રભુએ અમર્ષથી વરસાદ વરસાવી નાસીકા સુધી પાણીમાં ડુબાડનાર કમઠ તાપસના જીવને બોધી-બીજ આપી પોતાના માર્ગનો પથીક બનાવ્યો. અહીં અપરાધીને પણ

અમૂલ્ય મદદ આપવામાં તે પ્રભુમાં પ્રેમનીજ મુખ્યતા હતી. શ્રી નેમીનાથ સ્વામીએ ગૃહસ્થાશ્રમમાં પોતાના વિવાહ પ્રસંગે ગોરવ (ભોજન) કરવાને એકઠાં કરેલા પશુઓને છોડી મુકાવવા ખાતર વિવાહનો ત્યાગ કરવા પર્યંતનું બળીદાન આપી જીવો પ્રત્યેના અપૂર્વ પ્રેમનો પાઠ વિશ્વને શીખવ્યો છે.

ગૃહસ્થાશ્રમમાં પણ ત્યાગી જીવનને શોભાવે તેવું ધાર્મિક જીવન ગુજારનાર સુદર્શન શેઠીએ અભયા રાણીને બચાવવા ખાતર મૌન ધારણ કરી આત્મીક પ્રેમને લીધે શુળીએ ચઢવાનું સ્વીકાર્યું હતું આ સર્વ આત્મીકપ્રેમનીજ છાયા છે. આ જગત દયા કરનારના અભાવેજ દુઃખી છે. પ્રેમ કદી નીષ્ફળ થતો નથી. પ્રેમ જેવો બેવડું દેવું પાછો આપનારો જગતમાં કોઇ ઉત્તમ સદ્ગુણ નથી.

પ્રેમી આત્મામાં ઇર્ષા ન હોય, ઇર્ષાનો દોષ બીજાની મહત્વતા જોઇ શકે છે. તે મહત્વતાની કદર કરી જાણે છે ને ભવિષ્યમાં મહાન પુરૂષ થવાને લાયક બને છે. પ્રેમી આત્મા ગુણાનુરાગી હોય છે. પ્રેમી જીવનમાં અભિમાન ન હોય. તે પોતાના ઉત્તમ કાર્યો બીજાને કહી ન બતાવે, એ ગુપ્ત અભિમાન છે. સારાં કર્તવ્યનો બદલો તે ન ઇચ્છે. પ્રેમીજીવમાં સ્વાર્થ ન હોવાથી તેના ઉપદેશની અસર સારી થાય છે. સ્વાર્થ ત્યાગની ખરી મૂર્તિઓજ વિશ્વના નાયક બને છે. પ્રેમ કરવાથી આત્માની મહાન શક્તિઓનો વિકાસ થાય છે. ત્યાગમાંજ આત્માની ઉન્નતિ રહેલી છે. જેને મહાન થવાનું હોય તેણે સર્વસ્વનો ભોગ આપવો જોઇએ. ક્રોધ અને પ્રેમને આપસમાં વિરોધ છે. મનુષ્ય સ્વભાવની નબળાઇ અને કર્મના સિદ્ધાંતનું અજ્ઞાન એ ક્રોધ કરનારમાં રહેલાં સુચવે છે. શારીરીક પાપ કરતાં ક્રોધનું પાપ ઉતરતું નથી પણ વધારે છે. ક્રોધી મનુષ્યમાં ઇર્ષા, અભિમાન, અનુદારતા, ઘાતકીપણું, નિર્દયતા, એકલપેટાપણું આદિ અનેક દુર્ગુણો વસે છે તે ભગાવવા માટે પ્રેમ મુખ્ય સાધન છે. પ્રેમથીજ તેની વૃત્તિઓ બદલાઇ જાય છે. ખરા પ્રેમાળુ અંતઃકરણના મનુષ્યોનો ઉપદેશ ઘણે ભાગે નીરર્થક જતો નથી લોકો તેને હૃદયથી ઇચ્છે છે. તેનાં વચનો અમોઘ છે તેથી જીવોના હૃદયમાં સદાને માટે તેની ઉંડી અસર સન્માન સાથે કોતરાઇ રહે છે. તમારામાં જો પ્રેમ હોય તો વિશ્વના તમામ જીવો તરફ ભેદભાવ રાખ્યા વિના પ્રેમનો વરસાદ વરસાવો. પ્રેમમાં ભેદભાવ કે વિલંબ ન શોભે. નમ્ર વાણી એ સ્વર્ગમાંથી ઝરતો દિવ્ય રસ છે. પ્રેમની મધુરવાણી અને દીલસોજી ભરી આંખોથી વિશ્વના જીવો તરફ દૃષ્ટિ કરો. વિચારોને નિર્મળ બનાવો. તેમાં અદ્ભુત સામર્થ્ય રહેલું છે કેમકે તમારા શબ્દોમાં તમારા વિચારોના ભાવ જણાઇ આવે છે. સારા વીચારો શરીરને આરોગ્ય બનાવે છે.

કરમની એજ કહાણી છે.

ગઝલ.

કરે તગદીરમાં જેવું, થશે તકદીરમાં તેવું,
નહિ જાણે કશું લેવું, કરમની એજ કહાણી છે—૧

થશો જઇ ડુંગરો કે ઘર, પછી જાઓ સમુદ્રે પણ,
મેળવશો ભાગ્ય તમ જેવું, કરમની એજ કહાણી છે—૨

કદી કોઇ લાખ મેળવશે, કદી કોઇ પાઇમાં પડશે,
રહેશે કરમના જેવું, કરમની એજ કહાણી છે—૩

તમો જો પાપ આદરશો, વળી જો સત્ય પરહરશો,
જશો તમ નીચના પંથે, કરમની એજ કહાણી છે—૪

વિચારો કર્મની રીતો, અધર્મી ક્રોધને જીતો,
તરત તમ માન મેળવશો, કરમની એજ કહાણી છે—૫

કરમથી રામજી વનમાં, રોળાયો રાવણો પળમાં,
હરાયે પાંડવો ઘરમાં, કરમની એજ કહાણી છે—૬

રૂષભને વિર જીણંદે, સહ્યા ઉપસર્ગ આનંદે,
ખપાવ્યાં કર્મ મોહનના, કરમની એજ કહાણી છે—૭

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ-કમ્પાલા (યુગાન્ડા)

चूनेकी उपयोगिता ।

कितना सीधासा नाम, कितनी उपयोगी वस्तु, परन्तु कितने ऐसे मनुष्य हैं जो इसका उपयोग भलीभांति जानते हैं ! अधिकांश तो इसका उपयोग पान तमाखू तथा घरकी सफेदीके लिये ही है ।

आज पाठकोंके सामने इसी साधारण चूनेके सम्बंधमें मैंने कुछ लिखनेका निश्चय किया है। इसे संस्कृतमें चूर्ण, सुधा, हिन्दीमें चूना, कली, गुजरातीमें चुना, बंगालीमें च्यून कहते हैं । पानी पड़ते ही यह चूरा बन जाता है । यह तेज और क्षार द्रव्य है। शरीरकी बनावटमें जो द्रव्य भाग लेते हैं उनमें चूनेका भी एक मुख्य स्थान है । इस मात्रामें कमी वेशी होनेसे शरीरमें भी इसका परिणाम होता है। जब इसकी कमी हो जाती है तो अस्थिक्षय, अम्लपित्त इत्यादि नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होने लगते हैं । अब हम इसके उपयोगपर विचार करें। सबसे अधिक इसका उपयोग घरकी सफाईमें किया जाता है । जब आप किसी जगह रहना चाहते हैं तब सबसे प्रथम आप उस घरमें सफेदी करवाते हैं । यह किस लिये ? क्या केवल झकमक देखनेके लिये ही ? नहीं। परन्तु इस सफेदीके करवानेसे उस जगहसे कीड़ोंका नाश होता है । उनकी वृद्धि रुकती है । इसीलिये रहना आरम्भ करनेके पहिले आप मकानमें सफेदी इत्यादि करवाते हैं। इसी प्रकार जिस मकानमें क्षयके रोगीने निवास किया हो उसमें भी सफेदी की जाती है। इससे भी कीट नाश करनेका ही अभिप्राय है। हैजेसे आक्रान्त रोगीके मलको भी चूनेसे ही ढका जाता है। कहनेका अभिप्राय यह है कि सफाई तथा कीटनाश करनेमें भी इस चुनेका स्थान बहुत ऊँचा है। पानमें जो यह प्रयोग किया जाता है उसे तो सभी जानते हैं। इस चूनेका मानव शरीरमें दो प्रकारसे उपयोग किया जासकता है।

एक अन्तः दूसरा बाह्य प्रक्षेपसे । उपयोग करनेके पहले इसे निम्नलिखित प्रकारसे तैयार कर लेना चाहिये। साधारण तरीकेसे आध एक पाव चूनेके डलेको लगभग तीन सेर पानीमें भिगोदें, चूना घुल जायगा । कुछ समय उप-रान्त जो पानी ऊपर रहेगा उसे शनैः शनैः दूसरे पात्रमें डाल लें और फिर एक बार उसे निथारकर एक हरे रंगके कांचकी कुप्पिकामें भरकर रख ले। यही चूर्णोदक या लाइम वाटर (Lime water) है । इसका प्रयोग निम्न प्रकारसे भिन्न रोगोंमें करना चाहिये:—

प्रायः देखनेमें आता है कि कभी कभी बालक माताका दूध दूषित होनेसे उसे पचानेमें असमर्थ होते हैं। बाहरी अर्थात् गाय इत्यादिका दूध भी नहीं पचा सकते । फल यह होता है कि बालकको जो दूध पिलाया जाता है, वह वमन कर देता है और दिन-दिन बलहीन होता जाता है। अस्थियोंकी वृद्धि होना भी बन्द हो जाता है, टट्टी फटी हुई, पतली, दूषित, गन्ध-वाली आने लगती है। ऐसी अवस्थामें बालक मुरझाने लगते हैं, बदनपर भी झुरियांसी पड़ जाती हैं। ऐसी अवस्थामें बालकको यह चूर्णो-

तक उमरके हिसाबसे यानी साधारण तौरसे जितने महीनेका बालक हो उतने ही बूँद दूधमें डालकर दिनमें दो समय देना चाहिये। बालककी अवस्थानुसार इसकी मात्रामें कमीवेशी की जासकती है। इसके सात दिनके प्रयोगसे ही आप देखेंगे कि बालकको अब दूध पचने लगा है। उसकी कायामें भी परिवर्तन होना आरम्भ होगया है। इस प्रकार यह प्रयोग कुछ समय तक जारी रखनेसे बालक सम्पूर्ण रूपसे स्वास्थ्य लाभ कर सकेगा।

अम्लताके आधिक्यसे जब के आना आरंभ होजाता है तब इस चूर्णोदकको सेवन कराना चाहिये। इससे वमन बंद होकर पेटमें स्थित अपक्व अन्न पच जाता है तथा उसकी अम्लता भी दूर होजाती है। इसी प्रकार अजीर्णसे जुलाब होने लगते हैं उसमें भी यह चूर्णोदक फलप्रद है। पेटकी खराबीसे जब मुखमें छाले पड़ जाते हैं उस समय इसको मुखमें धारण करना चाहिये। इससे छाले दूर होजाते हैं। जब कोई अंग जल जाय उस अवस्थाके लिये इस चूर्णोदकमें बराबरकी मात्रासे अलसीका तेल मिलाकर रखले उसे अग्निदग्ध स्थानपर लगावे या उसपर इसमें भिगोयी हुई कपड़ेकी गद्दी रखे। परन्तु स्मरण रहे यह अग्निदग्धकी प्रथम अवस्थामें ही उपयोगी है।

मलमें चुनचुने पड़नेपर विधान पूर्वक इसकी बस्ती करनेसे कृमियोंका शीघ्र ही नाश होता है। बिच्छूके काटनेपर दंशित स्थानपर चूर्णोदकमें नौसादर मिलाकर लेप करे या कपड़ेकी गद्दी इसमें भिगोकर रखें।

अब इसका बाह्य प्रयोग भी देखिये—

चूर्णोदक बननेके बाद जो बुझा हुआ चूना रह गया है उसे सुखा कर, पीस कर कपड़छन करके रख लीजिये। शरीरमें जहां कहीं भी फुंसी फोड़ा, स्थानिक सूजन, बदका निकलना, बाह्य ग्रन्थियोंकी सूजन, गलगंड इत्यादि पर इस चूर्णको पानी या घीके साथ मिलाकर गरम करके लेप करे। इस प्रकार दिनमें दो तीन समय लेप करना चाहिये। इससे उक्त फोड़ा फुन्सी दब जाती हैं या पककर फूट जाती हैं। मैं कह सकता हूं कि जो कार्य Anti Phlogistin (एन्टीफलाजिस्टीन) से लिया जाता है वह सब कार्य इस मामूली चूनेसे भली प्रकार पूर्ण होता है। परन्तु सर्वसाधारण इसकी उपयोगितासे अभिज्ञ नहीं है। मधुमेहमें जो पीड़िका (कारबंकल) होती है उसमें भी इसका उपयोग बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

जब फुन्सी आरम्भ होती है तभीसे इसका लेप करना आरम्भ करे। जब फूटकर वह जख्म बन जावे तब जख्ममें आयुर्वेदकी प्रसिद्ध औषधि "दशांगलेप" का प्रयोग तथा आसपास चूनेके चूर्णका लेप करे।

अन्तमें निवेदन है कि पाठक इसे मामूली चीज न समझें, अपितु इसके यथार्थ गुणसे लाभ उठावें। इस सम्बंधमें किसी सज्जनको कुछ और भी पूछतांछ करनी हो तो वह पत्रद्वारा या समक्ष मिलकर कर सकते हैं। "वैद्य" मासिकपत्र मुरादाबादसे उद्धृत।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला-सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

दिगम्बर जैन

सम्पादकः—मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत।

वर्ष २३वाँ
अङ्क ९.

वीर सं० २४५६
आषाढ़.

विषयानुक्रमणिका.

दोनों उपहार ग्रन्थ शीघ्र ही सभी ग्राहकोंको
वी० पी० से भेजे जांयगे।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।-) विशेषांक मूल्य ॥)

सुभाषित रत्नसंदोह।

(अनुवादक—मूलचन्द्र जैन "वत्सल" सं० "आदर्श जैन")

रुचिर सद्विद्या प्रभासे भव्य कमल विकाशनी।
स्याद्वाद नय किरणें प्रखर युत निखिल तत्व प्रकाशती॥
उदित रवि सदृश तिमिर हर विमल बोध प्रसारती।
भव्य मानव हृदयमें जयवंत हो वह भारती॥१॥

× × × ×

सांसारिक सुख दुखकर वर्णन।

मत्त गजेन्द्र, उद्दंड केशरी, अथवा क्रोधित हुआ नरेश।
उग्र राहु, हालाहल तीक्ष्ण, हो यदि कष्ट भयङ्कर केश॥
प्रज्वलित अनल कुपित यम भी हैं एक जन्म दुखदा होते।
इंद्रिय विषय किंतु मानवको सतत अमित दुख हैं देते॥२॥
वैभवशालि चक्रपति, हरिकी होतीं विषयेच्छाएं न पूर्ण।
किंचित विषय प्राप्त मानव कैसे हो सक्ते हैं परिपूर्ण॥
प्रबल सरितकी तीव्र धारमें मत्त-गज बह जाते हैं।
शक्तिहीन अति क्षुद्रशशक क्या? कहीं ठिकाना पाते हैं॥३॥
कल्प काल सुख भुक्त सुरोंको, देते इंद्रिय सौख्य अतृप्ति।
साधारण मनुजोंको कैसे? कब दे सक्ते हैं वह तृप्ति॥
मत्त गजेन्द्रोंका जो सहसा क्षणिक मात्रमें वध करता।
उस मृगेन्द्रके तीक्ष्ण नखोंसे, मृग क्या रक्षित रह सकता॥४॥
सरित नीरसे तृप्त हुआ यदि रत्नाकर दे सीमा तोड़।
काष्ठ संचयसे प्रबल अनल संतोषित होकर दे यदि छोड़॥
हो सकता विश्वास, विषय भोगोंसे मानव होंगे तृप्त।
किंतु असंभव प्रतिक्षण द्विगुणित होता हृदय व्यथित संतप्त॥५॥
चक्रवर्ति, सुर वैभवसे भी अभिलाषाएं हुईं न शान्त।
क्षणिक मनुज भवभोगोंसे तब कैसे मिटती प्रबल अशांति॥
अनल उदधिके अमित वारिसे तृषा हुई जब शांत नहीं।
कहो! भला क्या? ओसबिंदुसे होसकती उपशांत कहीं॥६॥
भ्रातृ, पुत्र, कामिनको मोहा-सक्त मनुज अपनाता है।
इच्छा तृप्ति हेतु संतत अतिशय अघराशि बढ़ाता है॥
किंतु पापके फल स्वरूप नर अपथ यातनाएं सहता।
कोई साथ न देता नर दुख भार अकेला ही वहता॥७॥

॥ श्रीवीतरागायनमः ।

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तनाम, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वाँ | वीर सम्वत् २४५६, आषाढ़, विक्रम सम्वत् १९८६. | अङ्क ९.

शोक ! शोक !! महाशोक !!!

संसारकी अनित्यताका प्रखर उदाहरण !

कापड़ियाजीकी सौ० धर्मपत्नीका असमयमें स्वर्गवास!

अतीव शोक व संतप्त हृदयसे लिखना पड़ता है कि माननीय श्री० सेठ मूलचंद किसनदासजी कापड़िया संपादक जैनमित्रकी सौ० धर्मपत्नी श्री० सविताबाईका मात्र २२ वर्षकी अवस्थामें ही श्रावण बदी ९ ता० २१ जुलाई सोमवारको शामको ९। बजे कापड़िया भवनमें कमला (पीलिया)की सिर्फ दो तीन दिनकी बीमारीमें ही अकस्मात् स्वर्गवास होगया !

आप अति सरलहृदया, पतिपरायणा, चतुर, विदुषी महिला थीं। आपको अन्त समय तक समाधिमरण—मृत्युमहोत्सव, मिच्छामि दुक्कडं, सामायिकपाठ, भक्तामर, विषापहार, मेरी भावना, संकटहरण, दुःखहरण, वैराग्य भावना, प्रतिक्रमण, सामायिक, कल्याण मंदिर आदि स्तोत्र हम व कापड़ियाजी बराबर सुनाते रहे। तथा अन्नजलका परित्याग कराके समाधिमरण कराया। कौन जानता था कि कापड़ियाजीको द्वितीय धर्मपत्नीका इस अवस्थामें वियोग सहन करना पड़ेगा! वास्तवमें यह तो एक स्वप्नसा होगया है! इससे स्पष्ट होता है कि कल क्या होनेवाला है, इसकी किसीको भी खबर नहीं है।

आप करीब ५ वर्षका एक पुत्र बाबूभाई तथा करीब डेढ़ वर्षकी पुत्री दमयंतीको विलखती छोड़ गई हैं। आप नित्य स्वाध्याय करती थी और धर्ममें पूर्ण श्रद्धा रखती थीं। हिन्दी और गुजराती भाषाका अच्छा ज्ञान था। जैनसमाज और देशके समाचार पढ़नेका पूरा शौक था। विदेशी वस्त्र न लेनेकी आजन्म प्रतिज्ञा की थी। समय व समय कांग्रेसको दान भी किया करती थीं। मतलब यह है कि आपको धर्मप्रेमके साथ ही साथ देशभक्ति भी अपूर्व थी।

कापड़ियाजीने आपके स्वर्गवासके पश्चात् रोना कूटना (जो कि इधर एक बुरी रूढ़ि है) बिलकुल बंद कराया और मंगलवारकी शामको सान्त्वना देनेके लिये आनेवाली स्त्रियोंको समाधिमरण व मृत्यु महोत्सव पुस्तक बांटी। आप बड़े साहसके

साथ कहते थे कि यह संसार है, इसमें इष्ट वियोग और अनिष्ट संयोग होना स्वाभाविक है ! इस प्रकार रोने कूटनेकी प्रथाको बंद करनेका कापड़ियाजीका यह विवेक प्रशंसनीय व अनुकरणीय है। कापड़ियाजीने श्रीमतीजीके स्मरणार्थ २१११) तथा आपके ससुर श्री० गुलाबचंद लालचंदजी पटवा बंबईने १०१) का दान किया है तथा दिगम्बर जैन व महिलादर्शके ग्राहकोंको एक २ ग्रंथ भेटमें बांटनेका तथा 'जैन महिलादर्श' जहांतक चालू रहे संरक्षिकाके वार्षिक २१) देते रहनेका भी कापड़ियाजीने संकल्प किया है तथा आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया है। आपके वियोगमें मंगलवारको जैन विजय प्रेस व जैनमित्र, दि० जैन, जैन महिलादर्श, दि० जैन पुस्तकालय आदि सभी कार्यालय बंद रखे गये थे। स्वर्गीयकी आत्माको शांति व कुटुम्बीगणको धैर्य प्राप्त हो यही मेरी श्री जिनेन्द्रदेवसे प्रार्थना है।　　परमेष्ठीदास जैन-मैनेजर।

गांधी टोपी भी खटकी—कहते हैं कि मोरेना विद्यालयके अधिकारियोंने विद्यार्थियोंको गांधी टोपी लगानेकी मनाई की है ! वाह पं० खूबचंदजी व पं० मक्खनलालजी खूब करी !!!

गुरुपूर्णिमा—का उत्सव अषाढ़ सुद १५ को प्रे० मो० दि० जैन बोर्डिंग अमदावादमें प्रो० आबल्लेके सभापतित्वमें हुआ था, सुबह विद्यार्थियोंने विधिपूर्वक गुरुपूजा की थी।

मंत्रसिद्धि—आष्टा (भोपाल) में मोतीलाल जैनने ऐसा जैन मंत्र सिद्ध किया है कि जिससे जालसे भी बंसीमें मछली नहीं फंस सकती।

सम्पादकीय-वक्तव्य

रक्षाबंधन।

भारतवर्षमें रक्षाबंधन एक महान पर्व है। इसको अमुक २ समाजें भिन्न २ रूपसे मानती हैं। मगर हमारा जैनधर्म क्या मानता है, इस विषयसे जैन समाजका प्रायः बच्चा २ परिचित है। इसीलिये हम यहां उस कथाको लिखना तो उपयोगी नहीं समझते हैं, मगर उसपर कुछ विचार करना आवश्यक है। पाठको! रक्षाबंधन कथासे यह बात तो स्पष्ट है कि सत्ताके मदमें मत्त होकर एक अविवेकी शासक क्या नहीं कर सकता है? कारण कि अविवेकी बलि आदि मंत्रियोंने मात्र सात दिनकी राज्य सत्ता पाकर सातसौ मुनियोंके होम करनेकी ठानी थी! साथ ही यह भी इस कथासे मालूम होता है कि धर्म या धर्मात्माओंके संकटको दूर करनेके लिये एक निस्पृह निर्ग्रन्थ मुनि भी कितना त्याग कर सकता है, फिर श्रावकोंकी तो क्या बात? बलिराजाकी मांस चरबीमय धूम भट्टीमें पड़े हुये मुनियोंका श्री अकम्पनाचार्य द्वारा छल करके निकाला जाना, मले वात्सल्यका परिचायक है। यदि आचार्य महाराजने अपने तप और वेषका परित्याग करके कालानुसार छलसे काम नहीं लिया होता तो ७०० मुनियोंका बलिदान हो जाता!

इसी प्रकार रक्षाबंधन कथाकी एक २ बातमें तत्त्व है, प्रत्येक बातमें शिक्षा भरी हुई है! उसको कोरा बांचकर या सुनकर हमारा कल्याण

या धर्मरक्षा नहीं होसकती, किन्तु कथा ग्रंथोंके लिखे जानेका मूल उद्देश्य लोगोंको शिक्षा देनेका है। इसलिये हमें यहांपर यह विचारना चाहिये कि जब तपोधन श्री अकम्पनाचार्यने परम कल्याणकारी तपका परित्याग कर धर्मकी रक्षा की तब हमारे देखते हुये धर्मका अपमान कैसे हो? जहां विधर्मियों या किसी व्यक्ति द्वारा हमारे धर्मपर आघात हो वहां हमें अपना तन, मन, और धन अर्पण करदेना चाहिये।

यह जानकर अपार दुःख होता है कि धौलपुर राज्यके राजाखेड़ा ग्राममें आचार्य श्री शांतिसागरजीके संघपर विधर्मियों द्वारा किये गये दुष्ट आक्रमणका जैन समाज अभी तक निराकरण न करा सकी! चाहिये तो यह था कि जब तक न्याय न मिल जाता तब तक समाज चैन न लेती, मगर सब चुप बैठ गये। फल यह हुआ कि बिचारे वहांके जैन भाई ही उल्टे सताये जाते हैं। क्या यही हमारे रक्षाबंधनका आदर्श है?

याद रहे कि रक्षाबंधन बांधकर मनुष्य इस प्रतिज्ञा सूत्रसे बद्ध होजाता है कि मैं अपने धर्म देश और समाजकी रक्षा करूंगा, अपनी मां बहिन बेटियोंको किसी प्रकार अपमानित न होने दूंगा और साधर्मियोंसे प्रेम पूर्वक व्यवहार करूंगा। अब आप सच्चे दिलसे तो विचार कीजिये कि इन बातोंमेंसे आप किन २ कार्योंमें लगे रहते हैं? अगर हम इनमेंसे कुछ भी नहीं करते हैं तो रक्षा बंधन बांधनेका हमें अधिकार ही नहीं है। सलूनापूजन व विष्णुकुमार महामुनि पूजा इस दिन अवश्य करना चाहिये।

***

मौज शौक। रक्षाबंधन पर्वके समय बहिनों द्वारा लाई गई मिठाई खाकर और बिलाऊ धागा हाथमें बांध कर उसके उपलक्षमें दो चार रुपया देनेसे अपना कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता, किन्तु उसमें क्या तत्व छिपा हुआ है इसको देखकर तदनुसार चलना ही सच्चा रक्षाबंधन है। इस पर्वमें अधिकांश लोगोंको मौजशौक भी सूझती है। अच्छे २ वस्त्राभूषण पहिने जाते हैं, विविध प्रकारके पकवान खाये जाते हैं और नानाप्रकारसे मौज की जाती है, मगर सरदार वल्लभभाईके कथनानुसार आजकल इस देश-संकटके समय व्यंजनोंका खाना धूल खानेके बराबर है और मौज शौक या कोई व्यवसाय करना हराम है, घोर पाप है तथा देश द्रोह है! इन वाक्योंका ध्यान रख कर ही हमें इस वर्षका रक्षाबंधन पर्व मनाना चाहिये। रक्षाबंधन एक बड़ी जिम्मेदारीका पर्व है। अबकी बार योंही कच्चा सूत बंधवाकर व्यर्थ ही लड्डू न खाये जावें, किन्तु रक्षाबंधन बंधवाते समय बहिनोंके समक्ष प्रतिज्ञाबद्ध होना कि हम और तुम आजसे अपने धर्म और देशकी रक्षा करेंगे, प्राण जाते जाते भी तुम्हारा अपमान न होने देंगे तथा भारत माताके सन्मानको रक्षित रखेंगे।

***

विदेशी राखी। यह याद रहे कि विदेशी सूत या रेशमकी बनी हुई राखी न तो बहिनें अपने भाइयोंको बांधे और न भाई उसे बंधवावें, किन्तु वह शुद्ध स्वदेशी सूतकी बनी

हुई हो। सबसे अच्छा तो यह है कि बहिनें अपने हाथसे ही सूत कातकर स्वयं रक्षाबंधन तैयार करें। और उसे बांधती हुई अपने भाइयोंसे धर्म और देशकी रक्षा करनेकी प्रतिज्ञा करावें। साथमें यह भी स्मरण रहे कि उपहार स्वरूप कोई भी खिलौना या वस्त्र विदेशी न लिया दिया जावे। जब ऐसी पवित्रता पूर्वक रक्षाबंधन पर्व मनाया जावेगा तब देशभक्ति बढ़ेगी, धार्मिक प्रेम जागृत होगा और रक्षाबंधनका सच्चा आदर्श उपस्थित होगा।

* * *

विदेशी वस्तुओंका प्रभाव। जो देश एक दिन समस्त जगतको अन्न और वस्त्रोंसे परिपूर्ण करता था, जिसकी कारीगरी संसारमें सुप्रसिद्ध थी, जो ज्ञान और विवेकमें बढ़ा चढ़ा था, वही हमारा देश भारतवर्ष आज भूखा है, नग्न है, व्यवसायहीन है और थोथी शिक्षाको लेकर ज्ञानहीन बन गया है। विदेशी मशीनोंसे हमारी कारीगरीका नाश होगया और देशकी शिल्पकला नष्टभ्रष्ट होगई! अब हम बात बातमें विदेशके आधीन होगये। सुई और धागासे लेकर बड़ी२ चीजें हमें विदेशसे मंगाना पड़ती हैं। अपनी मूर्खतासे लोग बालकोंको विदेशी खिलौने देते हैं, विदेशी पोषाक पहिनाते हैं, और विदेशी बिस्कुट आदि खिलाते हैं! फल यह होता है कि उनपर प्रारम्भ कालसे ही विदेशी वस्तु, विदेशी खानपान और विदेशी ही पहिनाव उढ़ावका प्रभाव पड़ जाता है, जिससे वे आगे जाकर फैशनमें पड़कर दुखी होजाते हैं। इसलिये इन बातोंपर हमारा पूरा ध्यान होना चाहिये। यदि बालकोंको विदेशी वस्तुओंसे प्रारंभसे ही प्रेम होगा तो वह आगे चलकर अमिट हो जावेगा और जो पहिलेसे ही घृणा होकर देशी वस्तुओंसे प्रेम होगा तो इससे उनका हृदय भी स्वदेशाभिमानी बन सकेगा। और हमारे देशका करोड़ों रुपया जो विदेशमें अनावश्यक विदेशी खरीदनेमें चला जाता है वह बच सकेगा।

* * *

हमारा वस्त्र व्यवसाय। यदि सच पूछा जावे तो हमारा व्यवसाय संसारमें सबसे बढ़ा चढ़ा था। ढाकाकी मलमल तो जगत प्रसिद्ध है। चीन और जापानमें भारतवर्षसे लाखों और करोड़ोंके वस्त्र जाते थे। मगर सन् १८९६ ई० से विलायती कपड़ोंका महसूल सैकड़े १॥) घटाकर देशी कपड़ोंपर सैकड़े ३॥) नया महसूल लगाया गया! ऐसा करनेसे देशी कपड़ोंकी लागत बहुत कम होगई। इस देशमें भी विलायती कपड़ोंकी अपेक्षा देशी कपड़े इतने महंगे होगये कि खरीदना कठिन होगया। लार्ड बेंटिंगके समयके अनुसंधानसे मालूम हुआ है कि भारतमें विलायती कपड़े २॥) महसूल देकर बेचे जाते थे, किन्तु भारतवासी अपने देशमें अपने ही व्यवहारके लिये जो कपड़े बनाते थे उन्हें फी सैकड़े १७॥) महसूल देना पड़ता था। इत्यादि कारणोंसे हमारा वस्त्र व्यवसाय एकदम घट गया और विदेशी वस्त्रोंकी इतनी आवक बढ़ी कि आज ६९ करोड़ रुपया वार्षिकका वस्त्र हमारे यहां आने लगा है। मात्र वस्त्र व्यवसाय

ही नहीं, किन्तु २३९ प्रकारके अच्छे२ व्यव-साय जबरदस्त महसूल लगानेके कारण भारत-वर्षसे नष्टप्राय होगये और हमारा देश भिखारी बन गया। अस्तु !

***

जब हमारा देश व्यवसायहीन बन गया और आवश्यकताएँ उत्त-

वर्तमान आन्दोलन। रोत्तर बढ़ती गईं तब विदेशी वस्तुओंका समा-

वेश होना और देशका कङ्काल होजाना स्वाभा-विक ही था। बहुत समयतक यह सब देखते२ महात्मा गांधीजीने आन्दोलन खड़ा किया, वह क्रमशः बढ़ता गया और आखिरकार इस दर्जे तक आपहुँचा कि जिसकी महात्माजीको स्वयं सम्भावना नहीं होगी ! म० गांधीजीने देशके सामने वह प्रबल सत्य एवं अहिंसक कार्यक्रम रखा कि जिसमें सफलता मिलना अवश्यं भावी है। साथ ही इस स्कीमने अस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित एक बलशाली सरकारको भी कम्पित कर दिया है। वर्तमान आन्दोलनका मात्र गत ४ मासमें ही वह कातिल असर हुआ कि लेंके-शायरकी कपड़ेकी मिलें धड़ाधड़ बंद होने लगी और लाखों आदमी बेकार घूमने लगे।

अब हम अपने सूरत शहरको ही देखते हैं तो आश्चर्यमें पड़ जाते हैं। तमाम विदेशी वस्त्रोंकी दुकानें बंद पड़ी हैं। जिनके घरोंमें हजारों रुपयोंकी विदेशी साड़ियां पड़ी हैं वे महिलायें आज शुद्ध स्वदेशी वस्त्रोंको पहिनकर प्रातःकाल हजारोंकी संख्यामें विदेशी वस्त्र बहि-ष्कारका आन्दोलन करती हुई और राष्ट्रीय गीत गाती हुई निकलती हैं। बालक, वृद्ध, युवान और विद्यार्थी, व्यापारी और मजदूर सभी अपने अपने संघ निकालकर British Goods Boycott "ब्रिटिश मालका बहिष्कार करो" की आवाजोंसे समस्त शहरको गुंजायमान कर देते हैं। इसका जो अपूर्व असर होरहा है वह लिखा नहीं जासकता। सच बात तो यह है कि लोग ठोकर खानेपर ही सावधान होते हैं। भारतवर्षको भी कम ठोकरें नहीं लगी हैं। अब वह सावधान होगया है और विदेशी वस्तु बहि-ष्कारकी ऐसी पुख्ता नींव जमा रहा है कि उस-पर स्वराज्यका सुखमई भव्य भवन निर्माण होकर ही रहेगा।

× × ×

देश सेवामें यथाशक्ति भाग देना प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है। हम

हमारा कर्तव्य। अपने जैन बंधुओंसे नि-वेदन करते हैं कि वे

स्वदेशी वस्त्रों और अन्य देशी वस्तुओंका ही व्यवसाय करें। अपने मंदिरोंमें तमाम वस्त्र शुद्ध खादीके ही हों। किसी अहिंसक जैनके शरीर-पर अपवित्र विदेशी वस्त्र न हो। अपनी मां बहिनें स्वदेशी वस्त्र ही उपयोगमें लावें। इसीमें शोभा है, यही देश सेवा है. इसीसे अहिंसा धर्मके पालनमें अच्छी सहायता मिल सकती है, यही अपने देशके गरीबोंका पालन कर सकता है। इसके साथ ही साथ यह भी लिख देना उचित है कि प्रत्येक गृहस्थके घरमें चरखा और तकलीका होना आवश्यक है। जहांतक हो अपने द्वारा काते हुये सूतका ही पवित्र वस्त्र

पहिना जाय। ऐसा करनेसे आपकी सादगी बढ़ेगी, विलासिता कम होगी और बाह्य शुद्धि या पवित्रताका रक्षण होगा। हर्षका विषय है कि अनेक स्थानोंपर पंचायतियों द्वारा मंदिरमें विदेशी वस्त्र न पहिरने और न उपयोग करनेका निश्चय होगया है। अनेक स्थानोंपर स्वदेशी वस्त्र ही पहिरनेका नियम किया गया है। हमें आशा है कि और भी पंचायतियाँ इसका अनुकरण करेंगी। और यदि हमें सूचित करेंगी तो हम समाचार भी प्रगट करेंगे।

—⋙⋘—

मुनियों व त्यागियोंका चातुर्मास।

हमारे मुनियों व त्यागियोंके चातुर्मासके समाचार अभीतक इस प्रकार मिले हैं—

१—आ० १०८ श्री शांतिसागरजी, ७ मुनिगण तथा ऐलक, क्षुल्लक, अर्जिका चौरासी (मथुरा)

२—मुनिश्री सूर्यसागरजी, वीरसागरजी, धर्मसागरजी व अजितसागरजी—कुण्डलपुर।

३—मुनिश्री मुनींद्रसागरजी, विजयसागरजी व देवेंद्रसागरजी ३—मुनिगण—पेथापुर (गुजरात)

४—मुनिश्री नेमिसागरजी, मुनि पायसागरजी व मुनि आदिसागरजी तथा एक ऐलक व दो क्षुल्लक निमशिरगांव (कोल्हापुर)

५—ऐलक चन्द्रसागरजी भिंड (ग्वालियर)

६—क्षुल्लिका विमलमती व शांतिमती मांदणी

७— ,, चन्द्रमतीबाई ढहगांव (सतारा)

८—क्षुल्लिका अजितमती व अनंतमती दुधगांव

९—ब्र० सीतलप्रसादजी अमरोहा (मुरादाबाद)

१०— ,, चुन्नीलालजी बांसवाड़ा (डूंगरपुर)

११—ब्र० गंगाप्रसादजी मनीपुर (आसाम)

१२— ,, भगवानसागरजी नजीबाबाद

१३— ,, मोतीलालजी इन्दौर

१४— ,, आदिसागरजी पानीपत

१५— ,, दीपचन्दजी वर्णी दाहोद (पंचमहल)

१६— ,, नेमचन्दजी नरखेड़, मानवत (दक्षिण)

१७— ,, गेबीलालजी बड़वानी

१८—भ० सुरेन्द्रकीर्तिजी सोजित्रा (पेटलाद)

१९—ब्र० मूलचन्दजी फिरोजपुर छावनी

२०— ,, प्रेमसागरजी बुढ़ार (रीवांराज्य)

२१— ,, जयंतीप्रसादजी मरसना

२२—भ० जशकीर्तिजी रामगढ़ (डूंगरपुर)

शेष त्यागी ब्रह्मचारियोंके चातुर्मासके समाचार आगामी अंकमें मिलनेपर प्रगट करेंगे।

जम्बूस्वामी (मथुरा)—में मुनिसंघका चातुर्मास है इसके प्रबंधके लिये चातुर्मास प्रबंधक कमेटी नियुक्त हुई है, जिसके मंत्री बा० गुलाबचन्दजी टोंग्या हैं। दर्शनार्थ व आहारदानार्थ आनेवालोंके लिये ठहरनेका उत्तम प्रबंध होचुका है। आचार्यश्रीने अष्टाह्निकाके ८ उपवास किये थे।

महेश्वर—में दि० जैन पोरवाड़ पंचायतकी बैठक होकर उसमें इन्दौर स्टेटके नुक्तानाशक बिलका समर्थन किया गया।

अन्तरीक्षजी—में श्वेतांबरी भाई मंदिरकी पूर्व अवस्था बदलनेकी अयोग्य कार्रवाई कररहे हैं। इसपर दिगम्बरी भाई कोर्टमें गये हैं व श्वेतांबरीभाई दि० को बहुत परेशान कररहे हैं। १००००) विलायत खर्चके हमें देने पड़ेंगे, उसके लिये द्रव्यकी आवश्यकता है।

सत्याग्रह संग्राममें जैनी।

गोटेगांवमें पंचायतीसे विदेशी कपड़े पहनकर मंदिर जाना बंद हुआ है। पानीपतके जैनोंमें खादीका पूरा प्रचार होगया है। दाहोदमें कचरा मूलचंद, जयंतीलाल व नगीनलाल जेल गये हैं। चार मासतक विदेशी वस्त्रका लेनदेन बंद हुआ है। झांसीमें बाबू विश्वम्भरदास गार्गीय व लक्ष्मीचंद्रजीको १-१ सालकी कैद हुई। ललितपुरमें वैद्य मथुराप्रसादजी ९ महिने जेल गये। सहारनपुरमें बा० अजितप्रसादजी वकील १॥ वर्ष व पं० झम्मनलाल जैन ६ माह जेल गये। आगरामें सब मंदिरोंमें विदेशी वस्त्र पहनकर जाना कतई बंद होगया। महेंद्रजीके मकानकी तलाशी १५० पुलीसने आकर ली, कुछ नहीं मिला। आपने दैनिक हिन्दुस्तान पत्र निकाला है। इटारसीमें जैन महिलाएं चरखा चलाती हैं व प्रभात फेरी खूब करती हैं। चिरगांवमें जैनोंने विदेशी कपड़े पर सील लगा दिये हैं। अजमेरकी जैसवाल सभाने विदेशी वस्त्र बंद कर दिये। देहलीके अयोध्याप्रसाद गोयलीय मोन्टगोमरी जेलमें भेज दिये गये हैं। नरेला (देहली) में श्री जैनेन्द्रकुमारजी, ला० नन्हेमलजी, मदनलालजी, वैद्यराज दामोदरजी, दौलतरामजी व मोहनलालजी जेल गये हैं। सुलतानपुरमें श्री० रामदेवीबाई देहलीके पधारनेसे खद्दरका प्रचार हुआ।

५०००)का गुप्त दान, ग्राहक चाहिये- एक भाईने ५०००) गुप्तदानार्थ निकाले हैं। इसलिये जिन२ संस्था व क्षेत्रोंको सहायताकी आवश्यकता हो हमसे पत्रव्यवहार करें-

के० एम० भिसीकर, गवर्नमेंट हाईस्कूल, अमरावती (बरार)।

यरोड़ा जेल-में हमने महात्मा गांधीजी व छोटालाल गांधीको तत्त्वभावना ग्रंथ भेट भेजे थे जो साभार स्वीकार हुये हैं।

खंडवा-में अष्टानिका पर्वमें रथयात्रा निकली गई थी। पं० मुन्नालालजी काव्यतीर्थ उपदेशार्थ पधारे थे। चंदरबाईजीने सोनाकी रकाबी मंदिरमें भेट की।

झालरापाटन-में अष्टानिका पर्वमें अति रमणीक मंडप पूजनार्थ बना था। रथयात्रा निकाली थी। पं० आनंदकुमार, पं० हीरालालजी आदिके उपदेश व विद्यार्थियोंके संवाद हुए तथा तीन सभाएं भी हुई थीं।

सरैया जैनी सूरत-जो प्रथम साबरमती जेलमें थे व अब नासिक जेलमें सकुशल हैं, उनके विषयमें राष्ट्रपति सरदार वल्लभभाईने सूरतमें गत ता० २१को कहा था कि मैंने साबरमतीकी जेलमें सबसे दुबला पतला और कमबजनी वीर सूरतके सरैया जैनीको देखा है। जब ऐसे २ आदमी जेलमें हैं तब नवयुवकोंका घरमें बैठना हराम है।

इन्दौर-में मृत भोज अथवा नुक्ता बंद करनेका बिल स्टेटमें विचाराधीन है, इसके विरोधमें पं० धन्नालालजी आगे आये हैं!! वाहरे पंडितजी !!!

ऋ० ब्र०आश्रम–चौरासी (मथुरा)के प्रचारके लिये पं० रामलालजी व पं० मुरलीलालजी नियुक्त हुए हैं।

श्वे० जैन व जैन पथ प्रदर्शक–आगराके इन दोनों श्वे०जैन साप्ताहिक पत्रोंसे सरकारने जमानत मांगी, इससे बंद कर दिये गये हैं।

'वीर' का समाज अंक–१० चित्र २१ विषय व ९६ पृष्ठका अतीव आकर्षक मेरठसे प्रकट होगया है। अब बा० जिनदत्तप्रसादजी–मेरठ प्रकाशक नियुक्त हुए हैं।

२०००) की पुस्तकें भेंट कर दीं–बा० कृष्णलाल वर्मा (बंबई) ने कारंजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रमको १०१७॥)॥ की पुस्तकें भेंट कर दी हैं। धन्य !

પં. દીપચંદજી વર્ણીનો પ્રયાસ–આમોદમાં સર્વે ભાઇ બ્હેનોએ મંદિરમાં સ્વદેશી વસ્ત્ર પહેરીનેજ આવવા ઠરાવ કર્યો. પાદરામાં બદામ, શ્રીફળ વગેરે ચઢેલું દ્રવ્ય વેચવાનું બંધ કરાવ્યું. તથા પરદેશી અને રેશમી વસ્ત્ર પહેરી મંદિરમાં જવાનું બંધ થયું. પાઠશાળા ફરી ચાલુ થઇ. પં. ભુપેન્દ્રકુમારજી ભણાવે છે. વડોદરામાં શાસ્ત્ર સભા કરી શંકા સમાધાન કર્યું.

છાણી (મુનિ શાંતિસાગરજીનું જન્મ સ્થાન) માં મહાવીર સ્વામીનું પ્રખ્યાત મંદિર છે જેના જીર્ણોદ્ધાર માટે અત્યંત જરૂર હોવાથી છાણીના ગરીબ ભાઇઓએ ૫૭૧) ની રકમ કરી છે (જેમાં ૧૦૧) સવજીભાઈ દાદમચંદના છે) અને બે ભાઇઓને ટીપ ભરાવવાને બહારગામ મોકલવામાં આવનાર છે.

વડોદરા–માં ગુમાનીલાલ શ્રીલાલજીએ પોતાની પુત્રીના લગ્ન પ્રસંગે ૯૦૦) મંદિરોમાં દાન કર્યાં હતા તથા કન્યાવાળા (મુરાર નિવાસી)એ ૨૬૦) મંદિરમાં આપ્યા હતા. આ સમયમાં તો સંસ્થાઓમાં દાન કરવાની જરૂર છે.

પ્રાંતિજ બોર્ડિંગ–ને માટે ૩૦) માસિક (અને ભોજન પ્રબંધ) સુધીના જૈન પંડિતની આવશ્યકતા છે. સેઠ ફુલચંદ શીવચંદ મંત્રી–પ્રાંતિજને લખવું.

પેથાપુર–(સાદરા) માં મુનિ મુનીંદ્રસાગરજી આદિ ૩ મુનિ અને ત્યાગીઓનો ચાતુર્માસ થયો છે. મુનિશ્રી શ્રાવણ સુદ ૩ ને દિને કેશલોચ કરનાર છે તે પ્રસંગનો લાભ લેવા પધારવાને પેથાપુરની દિ૦ જૈન પંચ સર્વેને આમંત્રણ કરે છે. શ્રાવણ સુદી ૨–૩–૪ એ ત્રણ દિનોએ કુલ ૪ ટંક જમણ કોઠારી નાનચંદ નાગરદાસ, અમથાલાલ સાંકળચંદ ને છગનલાલ તથા ચુનીલાલ સાંકળચંદ તરફથી થનાર છે. મંત્રી સેઠ છગનલાલ સાંકળચંદ નીમાયા છે.

निराशा ।

(लेखक-श्री० ब्रह्मचारी प्रेमसागरजी)

(१)

मन्नूकी मां आंगनमें बुहारी देरही थी। उसी समय मन्नूने जोरसे रोना शुरू कर दिया। मन्नूकी मां समझती थी कि मन्नू मेरे विना चुप नहीं होसकता इसलिए वह बड़ी ही शीघ्रतासे आंगनको बुहारकर मन्नूके पास पहुंच गई और उसे दुग्धपान कराकर देवकीके निकट सुला दिया। क्योंकि समय सवेरेका था और घरमें अकेली होनेसे सारा कामकाज उसीपर ही निर्भर था। इसलिए मन्नूको सुलाकर शीघ्र वह अपना कार्य सम्पादन करने लगी।

मन्नूकी मांने प्रथम ही अंगीठीमें आगी की और फिर जुवांरके दाने चक्कीमें पीसने लगी। कुछ देरके पीछे मन्नू फिर उठा और रोने लगा। तब उसने देवकीसे कहा—"बाई देवकी उठो, भैयाको रमाओ जबतक मैं जुवांरके दाने पीस लेऊं।" मांकी बातको सुन देवकी उठी और मन्नूको गोदीमें लेकर उसे खिलाने लगी।

चक्की पीसते पीसते मन्नूकी मांको सहसा यह गाना याद आगया—

कबतक नाथ दया धारोगे ॥ टेक ॥
नाव हमारी डूब रही है।
कबतक नाथ उसे तारोगे ॥ १ ॥
तन नहीं वसन असन नहि पूरा।
यह दुख यों कबतक टारोगे ॥२॥
प्लेग रोग, दुष्काल सतावत।
कबतक आप इन्हें मारोगे ॥३॥
सेवक "प्रेम" यही नित भावत।
भारत दुख कबतक टारोगे ॥४॥

मन्नूकी माने उक्त गानेको बड़ी करुणाजनक धुनमें गाया। सचमुच ही वृद्ध भारतकी नैया डगमगा रही है उसपर प्लेग जैसे प्राणघातक रोगोंका आक्रमण होरहा है तथा दुष्कालोंका दौड़ादौड़ होरहा है। अनावृष्टीसे भारत विपत्तियोंका घर बनता जारहा है, उसके अधिकांश निवासी उदर भर भोजन नहीं पाते और न शरीर ढकनेको वस्त्र ही मिलता है।

मन्नूका पिता रामसेवक अभी बिस्तरोंपर ही लेटा सूर्यदेवका आगमन देख रहा था, क्योंकि वह जाड़ेके कारण ठिठुर रहा था एवं उसका शरीर कांप रहा था। दूसरी बात यह थी कि वह ३५ वर्षका ही होकर शरीरसे कमजोर था क्योंकि उसे बालबच्चोंके भरणपोषणकी तथा साहूकारोंके कर्जकी चिन्ताने बीमार बना दिया था।

चिन्ता एक अग्नि है जो मानवके अंतरंगको जलाती और शरीरको निःशक्ति बना देती है। इसपर कवि कहते हैं कि—

चिन्ता ज्वाल शरीर बन, दावा लगि लगि जाय।
प्रकट धुवां नहि देखिये, उर अन्तर धुंधवाय ॥

उर अन्तर धुंधवाय, जले ज्यों कांच कि भट्टी।
जल गयो लोहू मांस, रही बस, हाड़की टट्टी॥

कहनेका मतलब यह है कि चिन्ता मनुष्यकी सारी शक्तियोंका नाश कर देती है। मन्नूका बाप चिन्ताओंसे ग्रस्त था इसलिये वह जवान होकर भी वृद्धसा होरहा था।

सूर्यदेवको दया आई और वे मन्नूके बाप रामसेवककी प्रार्थनाको स्वीकार कर अपनी किरणोंको पसारते हुये आकाशमंडलपर आगये। मन्नूका बाप "सि सी, हूं हूं" करता उठा और एक १२ थिगरावाली छइकलीवाली मिरजांई-पहिन सिरपर एक अतिपुराना एवं जीर्ण चोथड़ा बांधकर तथा एक पुरानी मलीन चादर ओढ़ कांपता हुआ आंगनमें आया और सूर्यकिरणकी धूपको तापने लगा। देवकी भी मन्नूको लेकर पिताके पास आबैठी।

मन्नूकी मांने जुआर पीसली और चक्की बंद कर वह भी आंगनमें आकर धूप तापने लगी।

कर्मकी गति विचित्र है, उसने किसीको राजा किसीको रंक बनाया है तथा किसीको धनिक और किसीको निर्धन बनाया है। शीत ऋतुका समय धनिकोंको नहीं अखरता, क्योंकि वे गरम ऊनी व रुईके कपड़ोंसे उसे पराजय करते हैं किन्तु निर्धनोंके लिए वह अति दुखप्रद होता है। निर्धन तो अग्नि और सूर्यकी किरणोंको ताप कर ही उससे बचनेका उपाय करते हैं।

विस्मय है कि धनिक लोगोंका दिल दयासे द्रवित नहीं होता, तभी तो रामसेवक सरीखे हजारों निर्धन भारत–भूमिपर अपनी जिंदगीके दिन गिन रहे हैं!

(२)

"आसोंकी जाड़ो तो नहीं सहो जात है। सब रात दुखमें बीतत है। मन्नूतो तनक देरखों नईं सोऊत आय, जाड़ेमें सब रात तड़फत है" मन्नूकी मांने कहा।

अपनी पत्नीकी दुःखभरी बातोंको सुनकर रामसेवक बोला—जो हम का करें, कांसें कपड़ा ल्यावें। पेट भरवेकी तो दोदो पड़ी हैं। तुमने बेइ कहावत करी है कै—"घरमें नईंयां दाने, दुइरो चली भुनाने" तुमें तो कछू खबरई नईंयां। चौधरी रामपरसादके २१९) रु० देने हैं और मोदी मुन्नालालके कपड़ाके २६॥।) देने हैं। इनमें चौधरीजू तो कछू गम्मसी खाएं बैठे हैं पै मोदीजू तो नालिस करवेकी कत हैं। अब तुमई बताओ कै मैं कौनके घरसे तुम्रा कपड़ा ल्याऊं?

मन्नूकी मां—तुमने जो कई सो तौ सबई सांची है। मैंने एक बात सोची है और कै चौधरीजीसें ही १९) और लिआओ और गोऊं देवी लिखा आओ।

रामसेवक—तुम तो गेहूंओंके बलपे नाच नचन चाउतीं हो, जचो हमें क्या करने। देखत नईंयां बादल नई तराके होरहे हैं। आकाश गड़-गड़ात है। रातमें तो ऐसो लगत है कि वर्षनईं चाहत है।

रामसेवक और उनकी पत्नीकी बड़ी देरतक बातोंकी लड़ाई होती रही, लेकिन अंतमें उनकी पत्नीकी ही जीत हुई। तब तो रामसेवक चुप-केसे उठकर चौधरी रामप्रसादजीके घर गये।

चौधरीजीने रामसेवकजीको आदरके साथ बैठाया और बोले "कहिये क्या आज्ञा है"?

रामसेवक—आज्ञा जो है सो आपसें छिपी नईयां, मैं आपसे कहवे सकुचाता हों।

चौधरी—नहीं नहीं, इसमें संकोच करनेकी कोई बात नहीं हैं, जो आज्ञा आपकी हो उसे प्रकट करें। मैं उसे सादर पालन करूंगा।

रामसेवक—आपकों मेरी दशाकी हाल मालुमई है और जो कहत हो तो मैं सुनाऊं—आज २० दिनासे ऐसा कर्मोंने सताओ है के भरपेट भोजन नहीं मिलत, और सबसें बड़ी दुःख जाड़ेको है। सब रात शरीर ठटुरत है। ईसें आप मोरी कछू और सहायता करदें तो मोरो जो दुख कछू हलको पड़े।

चौधरीजी—आप घबड़ावें नहीं और न दुखी हों। कर्मानुसार विपत्ति सभीपर आती है, लेकिन मनुष्य उसे समतापूर्वक सहन नहीं करता। अगर करले तो भविष्यमें उसको सुख शांतिका लाभ बिना मिले न रहे। आप तो स्याने हैं, समझदार हैं, घबड़ावें नहीं। मेरी बातें सुनें—४ महिनेके लिये मुझसे खानेको अनाज लेजावें और कपड़ोंके लिए जितने रुपया चाहिये, लेजावें, घबड़ावें नहीं।

रामसेवक—अच्छी बात है, अनाज और ११) रु० कपड़नखों देदो।

चौधरी रामप्रशादजी बड़े ही परोपकारी धर्मात्मा थे। उन्होंने समझ लिया था कि द्रव्यका मिलना पुण्यसे होता है। मैंने परभवमें पुण्य किया था जिसका यह फल है। इसलिए द्रव्यको परोपकारमें लगाना पुण्यका संचय करना है क्योंकि यह द्रव्य पुण्य क्षीण होनेपर नष्ट हो जाता है।

दूसरे धनिकोंके समान चौधरीजी धनमत्त एवं कृपण नहीं थे। इसीसे चौधरीजीने रामसेवकपर रुपया जाते भी उन्हें ४ महिनेके खानेको अनाज और ११) देना स्वीकार कर लिया। रुपया तो रामप्रशादजीके हाथ दिये और अनाज नौकरोंके द्वारा उनके घर पहुंचवा दिया।

रामसेवकजी घर गये और सारा हाल पत्निसे कहा। पत्नी सुनकर सन्तोषित हुई और उन्होंने ४ महिनेकी चिन्ता छोड़ दी।

(३)

आधी रातका समय था, संसार निद्रादेवीकी गोदमें सोरहा था। स्वान समूहोंने अपनी "भूं-भूं" की आवाजसे आकाश गुंजा दिया था। ऐसे समयमें ही आकाश मेघोंसे आच्छादित होगया, और वे जोरोंसे गर्जने लगे तथा बिजली चमकने लगी और थोड़ी देरके बाद मेघोंका बर्षना शुरू होगया।

रामसेवक पेशाबको उठा। और पानीको बर्षते देख सोचने लगा कि—"का होनहार है, का आई अवाई फसल चलीगे है?" भगवान् रक्षा करो! रक्षा करो!! इसप्रकार तीनबार कह मन्नूकी मांको उठाया। वह उठी और बोली का भुसारो होआओ?

रामसेवक—भुंसारो तो अबे नई भओ पर अपनों नाश होगओ। इतना सुनकर मन्नूकी मां शीघ्रतासे उठी और पतिके पास दौड़ी

आई, बोली—कैसो नाश ? रामसेवकने कहा—देखौ नई कितनों पानी वर्ष रओ है और न-जानें अबै कबतक बर्षनें है। कायसें, आकाशमें बादरनने अपनों डेरा जमा लओ है। तुमने तो और कर्मा बदवा दओ और गोंहु आवत नहीं दिखात। रामसेवक और उनकी पत्नीकी बातचीत होही रही थी कि ओलोंका सर्राटा आया और उनकी पड़पड़ाहट होने लगी। मन्नूकी मांने किवाड़ खोलकर देखा तो पानीके साथ ओले भी वर्ष रहे हैं। अब तो और भी रामसेवक घबड़ाने और उनकी पत्नी रोने लगी।

रामसेवकजीका घबड़ाना और उनकी पत्नी-का रोना ठीक ही था। क्योंकि उनकी आर्थिक अवस्था बहुत ही सोचनीय थी। कभी २ आधा पेट भोजन मिलता था और कभी २ वह भी प्राप्त नहीं होता था। वे बड़ी कठिनतासे बाल-बच्चोंका पोषण कर रहे थे। रामसेवकने अपनी पत्नीकी प्रेरणासे मोतीराम मालगुजार साहेबके यहांसे ५ मन गेहूं बाढ़ी लेकर बोदिये थे। गेहूंओंकी बाल निकल पड़ी थी। रामसेवकको आशा थी कि गेहूं अच्छा पकेगा, किंतु वह न फली। पानी और ओलोंका बर्षना २ बजे तक रहा। बिचारे रामसेवक कर ही क्या सकते थे। क्योंकि "देव (कर्म) से किसीका कुछ नहीं बसाता।"

सबेरा होगया लेकिन पानीने पीछा नहीं छोड़ा। वह २॥ घंटे बंद रह फिरसे बर्षने लगा। रामसेवक घबड़ाकर उठा और एक अतिपुरानी, जीर्ण कमरी सिरपर डाल कांपता हुआ खेत पर गया। खेतको देखते ही रोने लगा क्योंकि उसमें इतना पानी भर गया था कि गेहूंओंकी बाल ही केवल दिखाई पड़ती थी।

(४)

रामसेवकने खेतकी मेढ़को फावड़ेसे झीलके स्थानसे काट दिया किंतु उससे कुछ फायदा नहीं हुआ, कारण और किसान भी इसी प्रकार करने लगे। रामसेवकके खेतसे लगा हुआ ऊपरको प्यारेलाल कुरमीका खेत था, इसलिए उसका पानी रामसेवकके खेतमें आना अनिवार्य था। रामसेवक ऐसी दशामें कर ही क्या सकता था? बेचारा कांपता हुआ घर लौटा।

पानीका बर्षना बंद नहीं हुआ और वह लगातार सात दिन तक बर्षा! काश्तकारोंमें हाहाकार मच गया, जिधर सुनो उधरसे ही यही आवाज सुनाई देने लगी कि "गेहूं सड़ गये, गेहूं सड़ गये—दुष्काल पड़ गया।" सर असल गेहूं सड़ गये, आखरी बीज भी काश्त-कारोंके घर नहीं आया।

जो दशा तमाम काश्तकारोंकी हुई वही रामसेवककी हुई। रामसेवक तो अत्यन्त घब-ड़ाया और सिरपीटकर रोने लगा, उनकी स्त्री भी रोरोकर दैव (कर्म)को कोसने लगी। लेकिन कोसनेसे कुछ नहीं होता। होता वही है जो कुछ होना है। कहा भी है—"कर्म करे सो करे नहिं कोई।"

(५)

पानीका प्रकोप अधिक हुआ, उसने गेहूं सड़ा दिये और ओलोंने उनको जिनमें दाना उत्पन्न होगया था, धराशायी बना दिया—कुचल दिया।

सात दिनके बाद बादल नष्ट हुए। आकाश मंजकर साफ हुआ और भास्कर (सूर्यदेव)ने मानवोंको दर्शन दिये। काश्तकार लोग आठवें दिन उदास चित्त खेतोंको गये और फसलकी ओर दृष्टी मार घरको चले आये।

कस्बा कंचन नगरकी तहसीलके तहसीलदार साहब आदि आफीसर लोग फसलको देखनेके लिए खेतोंपर गये और उसकी हालत देखकर दंग रह गये। तहसीलदार साहब दूरदर्शी थे उन्होंने फरमाया कि–गेहुंओंकी फसल तो नष्ट होगई, विचारे काश्तकार खराब होगये, अच्छा हो यदि राज्यकी तरफसे इस वर्षकी तिहाई माफ करदी जावे।

तहसीलदार साहबकी बातोंकी प्रशंसा सभी आफीसर लोग करने लगे और कानूनगो साहबने कहा कि इसकी शीघ्र ही रिपोर्ट राज्य दरबारमें भेजना चाहिये।

तहसीलदार साहबने कुछ रिपोर्ट बनाकर दरबारको दी, जिसका उत्तर भी ८ वें दिन सन्तोषजनक आगया। उत्तर था–'इस बातको दरबार भी भलीभांति जानता है कि पानीके कोपसे गेहूंकी फसल नष्ट होगई और काश्तकारोंपर आपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा, ऐसी अवस्थामें दरबार इस वर्षकी तिहाई काश्तकारोंको माफ करता है और प्रजाके लिए किसी कामको खोलनेका इरादा रखता है!"

रिपोर्टका उत्तम उत्तर पाकर तहसीलदार साहब दिलमें खुश हुए और कानूनगो आदि आफिसरोंको उसे सुना दिया तथा उसकी सूचना सारी तहसीलमें प्रत्येक गांवोंके अन्दर पटवारी लोगोंके मार्फत पहुंचवा दी। दरबारकी उदारतापूर्ण सूचनाको पाकर काश्तकार लोगोंको आनंद हुआ और वे अपने महाराजको बड़े हर्षसे धन्यवाद देने लगे।

(६)

दरबारने तिहाईकी माफी देदी। काश्तकार लोग खुश हुए लेकिन गरीबोंके पेटका सवाल साम्हने आ उपस्थित हुआ। पेटके सवालने देशमें त्राहि त्राहि मचादी, लोग अपने पुराने जमानेकी अमोलिक और आवश्यकीय वस्तुओंको निकाल निकाल सस्ते दामोंमें बेचने लगे। बहुतोंने सोने चांदीके जेवर बेचना शुरू किये, बहुतोंने गाय भैंसादि पालतू पशुओंको बहुत ही सस्ते दामोंमें बेच दिया। मतलब यह कि पेटके सवालने लोगोंसे सभी कुछ छिनवा दिया।

गिरानीके दुःखसे जनता बहुत दुखी हुई। यह खबर भी प्रजापालक महाराजको लग गई। तब उन्होंने उस वक्त दरबारको हुक्म दिया कि–"गिरानीमें दीन एवं भूखे लोगोंकी सहायतार्थ कोई काम खोलना अच्छा है" महाराजके हुक्मको दरबारने पूरा किया अर्थात नहर और तालाब खोदनेका काम दरबारने जारी कर दिया, जिससे गरीबोंकी उदरपूर्ति होने लगी।

इस गिरानीमें अनाजके व्यवसाइओंका खूब व्यापार चला। दूसरे प्रान्तोंसे रेलवे द्वारा अनाज आने लगा और धड़ाधड़ बिकने लगा। बेचनेवालोंको मनमानी मुनाफा होने लगी लेकिन दुःख और आश्चर्यके साथ लिखना पड़ता है कि

अनाजके व्यवसाइयोंने अपनी ठगयायी आदतको तबदील नहीं किया।

नापने तौलनेके—बरहिया कुड़ा एवं सेर पंसेरी आदिको दुरुस्त नहीं किया और तराजूका मटकाना तथा कुड़े बरहियाका ममाना न छोड़ा। दीन-गरीब लोग नहिर और तालाबमें बहुसंख्यामें काम करने लगे, तब तो ठग व्यापारियोंकी खूब बन आई। उन्होंने उनको भी औनकापौन देना नहीं छोड़ा लेकिन "कभी भी एकसे दिन किसीके नहीं जाते" इस कहावतके अनुसार व्यवसाइयायोंके व्यवसायने पी पल्टा खाया अर्थात् अषाढ़में अकस्मात तीन दिन अपूर्व जलकी वर्षा हुई तब तो एकदमसे अनाजका भाव मद्दा होगया। दिसावरोंसे खरीदकी चिट्ठियां आने लगी। तब क्या हुआ, जो होना था वही हुआ—अनाजका मद्दा भाव होजानेसे व्यापारियोंको लेनेके देने पड़ गये अर्थात् खरीदे चांवल और जुवांरमें बारह आना होने लगे। व्यापारियोंने बहुत उपाय किया परंतु दामके भी दाम खड़े न होनेकी आशा जान बेचारोंको बारह आना ही खड़े करने पड़े। हिसाब लगाने पर मालूम हुआ कि किसीको २ हजार, किसीको १ हजार और किसीको १००) तथा किसी किसीको २ सौका घाटा रहा है। पाठको! इसीको कहते हैं—

"मोटी हाय गरीबकी, कभी न निष्फल जाय।
मुए चामकी श्वांससे, लोह भस्म होजाय॥"

(७)

राज्यकी तरफसे नहिर और तालाबका काम चालू था। मजदूर काफी संख्यामें जमा होने लगे। यह खबर रामसेवकको पड़ी तब उन्होंने पत्नीसे कहा कि—"राज्यकी दयासे गरीबोंके पालनेखों नहिर और तालाबको काम खुलो है, चलो अपनऊं कामखों चलें और ई पापी पेटको पालें" स्वामीकी ऐसी बातको सुनकर उनकी पत्नी श्यामा, आंखोंमें आंसु भर कातर स्वरमें बोली—" कामखों मैंई जैहों तुमतौं मन्नू और देवकीको खिलाओ, जितनी जो कछु सेवा बन आहै मैं करहों पर तुमकों ई हालतमें घरसे बाहर न जान देहों।"

रामसेवक अपनी पत्नीसे अपनी आपत्तियोंकी कथा कर ही रहे थे कि उसी समय चौ० रामप्रशादजी रामसेवकके दरवाजेके साम्हनेसे कहीं जाते निकल पडे। उन्होंने रामसेवककी विपत्ति कथा कुछ कुछ कर्णगोचर की। तब चौधरीजीसे न रहा गया और रामसेवकके मकानके आंगनमें अकस्मात आकर खड़े होगये। रामसेवकने देवकीको बुलानेके लिए दर्वाजेकी ओर मुखकर " देवकी मन्नूको ल " आवाज दी—(क्योंकि देवकी उस समय मन्नूको लिए दर्वाजेके बाहर खेल रही थी) दर्वाजेकी तरफ दृष्टि डालते रामसेवकने चौ० रामप्रशादजीको देखा, देखते ही उठ खड़ा हुआ। स्त्री घरके भीतर चली गई। रामसेवकने चौधरीजीको बैठाया और आप जमीनपर बैठ गया। रामसेवक चौधरीजीका खाटपर बैठालनेके सिवाय और क्या आदर कर सकते थे? हमारे चौधरीजीकी भी सज्जनता सीमापर पहुंच गई थी। वे खाटपर बैठकर तबतक खुशी नहीं हुए जबतक उन्होंने रामसेवकको खाटपर नहीं बैठा लिया।

आधुनिक जमानेके लक्ष्मी (चौधरी सेठ आदि) पुत्रोंमें चौधरी रामप्रसाद जैसी समझ और सज्जनताका किंचित अंश भी नहीं है। अगर होता तो वे अपने आश्रित गरीबोंपर चौधरीजीके समान सज्जनता प्रगट करते। खेर ! इस विषयको जाने दीजिये और चौ०जीकी तथा रामसेवककी जो बातचीत हुई उसे सुनिये।

रामसेवक–मालिक आज आपकों मो दीनके घर आवेकों कैसो कष्ट उठानू पड़ो ?

चौधरीजी–मैं सेठ धर्मचन्द्रजीके घर गया था और वापसीमें तुम्हारे घर चला आया।

रामसेवक–आपको सेठजूसों कछू जरूरी काम काज हुइये हैंसों आज इतनों कष्ट उठाओ है नईं तो आप कायेकों ऐसे घाम धूरमें घरसों बाहर आवते।

चौधरीजी–अब तो घाम ज्यादे नहीं है। क्योंकि इस समय ९॥ बज चुके हैं और मैं घरसे पौनेसात बजे चला था। जिस जगह आपने बैठाला है वहां घामका जरा भी अंश नहीं है। सेठजीसे मेरा केवल यही काम था कि–सेठजीका और मेरा शिखरजी जानेका विचार है इसलिए उनसे पक्की बात पूछनेको गया था।

रामसेवक–मालिक ! आप क्यों तो पूष मावके दिननमें शिखरजी जावेको विचार कर्‌यो का-असें के उन दिनोंमें जाड़ो खूब होत है, ए धूपके दिनोंमें पहाड़ कैसें चढ़ पाहो और कैसे सातासों बंदना कर पाहो। मैं सोई बद्रीनारायण गओ सो जाड़ेके दिनोंमें गओ हतो, कायेसोंके जाड़ोंमें पहारकी चढ़वी अलारत नईंयां।

चौधरीजी–तुम्हारा कहना तो ठीक है परन्तु इस समय "एक पंथ दो काम" वाली कहावत सार्थक है। एक तीर्थवंदना और दूसरे श्री मुनिसंघकी वन्दना। इससे इस समय अवश्य ही शिखरजी जानेका विचार है।

रामसेवक–मालिक ! आपको विचार बड़ो अच्छो है, सेवकलायक हुक्म है सो कहो ?

चौधरीजी–हुक्म क्या है, आपकी वर्तमान दशाको देखकर मुझसे नहीं रहा जाता, सचमुचमें आपकी दशा शोचनीय है, इसलिए आप अपने दिलके भीतरकी दुःख कहानी न कहकर केवल यही कहो कि आप क्या चाहते हो ? कौन सूरतसे अपनी व अपने बालबच्चोंकी गुजर करना चाहते हो ?

रामसेवक–अवस्था जो है सो उसों तो जानई गये हो और पानी, ओलोंने गेहूंओंकी फसल नाश कराई दई है। ईके अलावा आपके और मोदी मुन्नालालके रुपैया देनें हैं सो आपके रुपैयोंकी फिकर तो नईंयापर मोदीजी स्वों नहीं मानने, कालमें एक दिन वे कतेके "हम नालिश करके रुपया वसूल करेंगे"। मालिक एक और बड़ो झगड़ा जो है के मौजीलाल मालगुजार सालके ९ मन गेंहूं वेवेलों लये थे सो बाढ़ी लगाकर वेदेंने हैं। ऐसी आफतमें तो येइ सूझत है के महाराजके नहिरके काममें मट्टी डारन लगें तो पेट पलन लगे।

चौधरीजी–तुम्हारी हालत तो नहिरमें काम करने लायक नहीं है, कारण कि तुम शरीरसे बहुत कमजोर हो। मेरी समझमें नहीं आता कि

आप किस प्रकारसे मट्टी डालकर अपना और बालबच्चोंका भरण पोषण करेंगे ?

रामसेवक मालिक, आपको पूछनी भीतई अच्छी है। सुनिये–मेरो शरीर तो भौत कमजोर है, ईसें मैं कामपर नहीं जासकों। हां, मन्नूकी मां जात है और जो कछू मजदूरीमें ऊखों पैसा मिलेंसो उनईसे काम चले।

चौधरीजी रामसेवककी बातोंको सुनकर एक बारगी चुप होगये और सोचने लगे कि "हाय, जिस पुरुषने कभी बाहर जाकर किसीकी नौकरी नहीं की तथा जो कास्तकार होकर खुद अपने खेतपर मट्टी डालने नहीं गया, उसकी आज ये दशा कि इसकी स्त्री नहिरपर काम करनेको जावे ! धिक्कार पापी पेटको धिक्कार ! कि जिसके लिए मनुष्य इतना हलका बन जावे। क्या ऐसे दीनोंकी खबर भगवानको भूलजाना चाहिये? और क्या उनकी कृपासे तैयार हुए धनिकोंको भी दीनोंकी खबर न लेनी चाहिये ? अवश्य लेना चाहिये। अगर मैं अपने धनको सफल करना चाहिता हूं तो मेरा यह पहिला फर्ज होगा कि " मैं रामसेवककी सहायता करूं।" इतना सोचकर चौधरीजी रामसेवकसे बोले–भाई तुम घबड़ाओ नहीं, धैर्य धारन करो। यह तो अशुभोदय है, सबके ऊपर आता है और चलाजाता है। समझ लीजिये, आपका इस समय अशुभोदय है। समय २ पर रुपया पैसा या अनाजकी जरूरत हो सो हमसे कहना। जहांतक होगा हम आपकी सहायता करनेमें ना नहीं करेंगे।

फूट।

फूट ! फूट !! तुम परम धन्य हो धन्य तुम्हारी माया !
नष्ट नष्ट वह हुवा जहां पर गई तुम्हारी छाया !
दृष्टि तुम्हारी जहां पड़ी तत्क्षण मतभेद कराया !
बढ़ा परस्पर भेदभाव सब गौरव मान नशाया !
विज्ञ जनोंने भी हे कुटिले ! तुझसे पार न पाया !
बुद्धिवरोंको भी दुर्बुद्ध तूने ! खूब छकाया !
गुण जाने ही बिना तुम्हारे जिसने भी अपनाया !
उसी मूढ़मतिका तुरन्त ही तूने नाश कराया !
जिस सुबुद्धि पर भी कर रक्खा बुद्धू उसे बनाया !
पाठ तुम्हारा पढ़ कर उसको अपना हुवा पराया !
उसकी तो तुम परम प्रिया हो अन्त है जिसका आया !
जैन जातिने देखो तुमको है कैसा अपनाया !
किन्तु फूट आदर पाना भी खूब तुम्हे है आया !
इसी लिये हे फूट ! धन्य हो धन्य तुम्हारी माया !
तेरी कुटिलता बिन जाने ही जिसने शीश चढ़ाया !
त्याग चला कल्याण उसे बस दुर्दिन उसका आया !

भारत संतान !

पतित और पददलित हुई है हाय ! आज भारत संतान !
लाञ्छित नत अरु घृणित हुई है हाय आज भारत संतान !
बल बुधि वैभव हीन हुई है खोकर हाय परम स्वभिमान !
कीर्ति प्रतिष्ठा नष्ट हुई सब हुई सभी हा ! अधम समान !
पराधीन परतंत्र हुवे हैं हिला न सकते किञ्चित कान !
पड़ी विकट संकटमें हैं ये हाय आज भारत संतान !
विजय हुई है दूर अनीतिको नष्ट हुवा हा ! सब सन्मान !
प्रलय हुई है धर्म रीतिकी भ्रष्ट हुवा हा ! सब सद्ज्ञान !
चला रसातलको स्वदेश अब हुवा न हमको तो भी-
ज्ञान !
नहीं धरोगे इधर ध्यान यदि भूरि पाओगे कष्ट निदान !
अभी समय है बन्धु परस्पर मिलकर हरो सकल संताप !
किन्तु समय फिर टल जानेपर शेष रहेगा पश्चाताप !
भेदभावको दूर भगा अब सब मिलकर गावो ये गान !
दीन दशा निज भक्तोंकी लख कृपा करो अब हे भगवान !

कल्याणकुमार जैन, कविभूषण।

रक्षाबंधन कथा।

(रचियता-ब्र० प्रेमसागरजी-बुढार)

मन वच काय सम्हालकर, महावीरके पाय।
वन्दत हूं अति हर्षयुत, आठों अंग नमाय॥
विष्णुकुमार महामुनी, जिनके युग पद सार।
विघ्न हरण मंगल करन, बन्दू बारम्बार॥
आज वही मुनिराजका, सुन्दर सरल चरित्र।
मति माफिक बरनन करूं, भाऊं भाव पवित्र॥
रक्षाबंधनकी कथा, रची दमोदरदास।
तिसे देख कविता करूं, मनमें धार हुलास॥
मैं मतिहीन महान हूं, ज्ञान गम्य नहिं मोहि।
तम अज्ञान विनासनी, नमूं शारदा तोहि॥
कर करुणा मोपर तनिक, कर उर अंतर वास।
जिससे रक्षा बंधनी, करूं कथा परकाश॥

रोला छन्द।

महावीरका समवसरण, विपुलाचल आया।
प्रकृति नाचने लगी, हर्ष नहिं अंग समाया॥
स्वागतको फल फूल, छहों ऋतुके ले आई।
काया दीनी पलट, न फूली अंग समाई॥१॥
षटऋतुके फल फूल, देख करके बनमाली।
विस्मय मनमें किया, अहो ऐसी फुलवारी॥
मैंने देखी नहीं, स्वप्न क्या यह आया है।
अथवा मौसम यहां, नया कोई आया है॥२॥
किंचित पीछे मुड़ा, शब्द जयकार सुनाया।
"वीर प्रभूकी जय" यही था, शब्द सुहाया॥
दिलमें निश्चय किया, वीरके ही प्रभावसे।
मौसम आई नया, प्रकृति अतिही उछाहसे॥३॥
जाति विरोधक जीव, सभी मिलकर बैठे हैं।
शांत चित्त हैं सभी, नहीं मनमें ऐंठे हैं॥
आज पलटने भाग्य, सभी जीवोंका आया।
कहता "जय हो नाथ" दरशनोंके हित आया॥४॥
षट ऋतुके फल फूल, तोड़ता अति हर्षाता।
करता यही विचार, तोड़ कब घरको जाता॥
शीघ्र तोड़कर उन्हें, सजाई प्यारी डाली।
चला भूप दरबार, शीघ्र ही वह बनमाली॥५॥
श्री श्रेणिक महाराज, विराजे सिंहासनपर।
लगा भव्य दरबार, सभी बैठे मंत्रीवर॥
उसी समय मुस्कात, शीघ्र आया बनमाली।
कर प्रणाम पुन, भूप साम्हने रख दी डाली॥६॥
विस्मय होकर भूप, निरखते हैं डालीको।
हर्षित होकर शीघ, पूछते हैं मालीको॥
"ये सब ऋतुके फूल, कहांसे लाया है तू?
शंका उठती मुझे, और हर्षाया है तू"॥७॥
तब बनमाली कहे, सुनो महाराज सुनाऊं।
आये वीर जिनेन्द्र, हर्षमें नहीं समाऊँ॥
विपुलाचलके मध्य, महा आनँद छाया है।
देव करें जयकार, प्रकृति मन हर्षाया है॥८॥
षट ऋतुके फल फूल, भेंटमें वह लाई है।
स्वागत करने हेतु, नया मौसम लाई है॥
और कहूं क्या नाथ! विरोधक जीव मिले हैं।
द्वेष भगा है दूर "प्रेम" के पुष्प खिले हैं॥९॥

सुनकर सुख सम्वाद, भूप तजके सिंहासन।
आगे आकर सप्त कदम, कीनी परोक्ष नम॥
वस्त्राभूषण, दान आदि मालीको देकर।
जिनदर्शनका भाव, हृदयमें निश्चय लेकर॥१०॥
तब नृप नगरी मांहि, उक्त सम्वाद पढ़ाया।
सह कुटुम्ब जिन, समवशरणकी ओर सिधाया॥
थे नगरीके लोग, साथमें अति प्रसन्नचित।
जय हो जय, यह शब्द उचरते जाते थे सब॥११॥
समवशरणमें भूप, शीघ्र ही पहुंचे जाकर।
वन्दे वीर जिनेश, करी पूजा हर्षाकर॥
कर गणधरको नमन, भूप निज कोठे बैठे।
उपदेशामृत पान, करत अति मनमें हर्षे॥१२॥
समय पाय नृप, प्रश्न किया गौतमसे ऐसा।
"रक्षाबंधन कथन, सुनाओ स्वामी कैसा॥"
ब्राह्मण था वह कौन, छका जिसने बलिराजा।
किस प्रकार यह चला पर्व, कहिये मुनिराजा॥१३॥

× × ×

तब गणधरने कहा, इसी भारतके अन्दर।
कुरुजाङ्गल है देश, सभी देशोंमें सुन्दर॥
तहां हस्तिनापुरी, शोभती थी अति प्यारी।
इन्द्रपुरीसी, सुन्दरतामें खूब हजारी॥१४॥
महा पद्मनृप करते शासन, न्याय नीति युत।
विदुषि लक्ष्मीवती, शील गुणसे थी भूषित॥
पद्मराय श्री विष्णु, पुत्र युग थे सुखकारी।
पाकर समय नरेश, जिनेश्वरि दीक्षा धारी॥१५॥
लघु सुत विष्णुकुमार, साथ ही मुनि व्रत धारा।
जेष्ट पुत्रने राजकाजका, भार सम्हारा॥
यह तो कथा अनूप, यहां ही रह जाती है।
तथा अन्य नगरी, उज्जैनीको जाती है॥१६॥
नृप श्री वर्मा राज्य, न्याय संयुत करते थे।
प्रजा नहीं थी दुखी, प्रेम सुतवत रखते थे॥
नमुचि, बृहस्पति, बलि प्रहलाद मंत्री थे बोधक।
मिथ्यामति युत, जैन धर्मके प्रबल विरोधक॥१७॥
बेर बेरका संग, भूपका बना हुआ था।
हा! अमृतके बीच, ज़हर तो घुला हुआ था॥
एक समय आचार्य, अकम्पन विचरण संयुत।
आये थे उद्यान मध्य, मुनिगणसे भूषित॥१८॥
ज्ञात हुआ यह, नृपति यहांका है साधर्मी।
किंतु चाहिज, मंत्री हैं वे महा अधर्मी॥
अतः गुरुने फिर, शिष्योंको पास बुलाया।
निम्न भांतिका उन्हें, विमल उपदेश सुनाया॥१९॥
"राजा, मंत्री, अगर, यहां पर आवे कोई।
गहो मौनव्रत सुनो, न उनसे बोलो कोई॥
मिथ्याती हैं महा, भूपके मंत्री चारों।
अभिमानी हैं बड़े, इसीसे मौन सु धारो" ॥२०॥
सुनकर गुरु आदेश, सभीने उसको माना।
आगे फिर क्या हुआ, सुनो इसको करि ध्याना॥
गुरुका यह आदेश, नहीं श्रुतमुनिको अवगत-
हुआ गए थे, वह नगरीको चर्याके हित॥२१॥
पुर लोगोंने सुनी, मुनी वनमें हैं आए।
दर्शन करने चले, हर्ष मनमें भर लाए॥
जाते इन्हें विलोक, नृपति मन संशय आया।
मंत्रीगणने भेद सर्व, इनका बतलाया॥२२॥
राजन! वनमें आज, दिगम्बर मुनि आये हैं।
उनको वन्दन जांय, लोग ये हर्षाये हैं॥
यह मूरख हैं महा, न इतना अनुभव करते।
देवें क्या वह साधु, सदा जो नग्न विचरते॥२३॥
दर्शन योग्य न किन्तु, साधु ये अदर्शनीय हैं।
किसी शास्त्रमें नहीं, दिगम्बर वन्दनीय हैं॥

तब नृप बोले, नहीं पाप लगता दर्शनसे ।
मरे न कोई केवल, दर्शन कर विषधरके ॥२४॥
मैं अवश्य उनके, दर्शन करनेको जाऊं ।
यदि हैं तुम्हें अटितकर, मत आओ समझाऊं ॥
ऐसा कहकर नृपति, चले मुनियोंको वन्दन ।
हृदय बढ़ा उत्साह, उचारें धन्य धन्य दिन ॥२५॥
नृपको जाते देख, विचारें मंत्री ऐसे ।
अगर न जावें साथ, बुरा माने नृप, इससे ॥
चारों होकर विवश, चले भूपतिके पीछे ।
महा मानके भरे, विचारोंसे ये मूंछे ॥२६॥
नृपको आता देख, साधुओंने जब जाना ।
हुए ध्यान आरूढ़, आत्म-अनुभव रस छाना ॥
ध्यानारूढ़ विलोक, वंदना क्रमसे कीन्हीं ।
किन्तु भूपको नहीं, साधु 'वृष वृद्धी' दीन्हीं ॥२७॥
हृदय समझ यह भूप, साधु पर मौन लिया है ।
इस कारणसे मुझे, न आशीर्वाद दिया है ॥
चले नगरको लौट, भूप तब मंत्री कहने ।
राजन् ! देखे साधु, न मुखसे कुछ भी कहने ॥
ज्यों पत्थरका खंभ, खड़ा ही रहता देखो ।
त्योंही ये शठ साधु ढोंग रच बैठे पेखो ॥

× × ×

मुनियोंकी यों हंसी, युक्त आते इधरसे ।
लखे सामने श्रुत, कीरति मुनि पुरसे आते ॥२९॥
जब मुनि आये निकट, इन्होंने हंसी उड़ाई ।
लक्क पीत कर पान, आए ये देखो भाई ॥
तब मुनि बोले, लक्क पीत तुम कहां देखते ।
पीत गायका मूत्र, जिसे तुम रोज पीवते ॥३०॥
वाद किया मुनि साथ, हार चारोंने पाई ।
इसका बदला लेवें, यही मनमें ठहराई ॥
नरपति हंसकर कहें, लाज अब क्योंकर आई ।
उत्तर दीजे सोच, यही तो है पंडिताई ॥३१॥
हो पराजय घर चले, नहीं कुछ उत्तर आया ।
मुनि भी गुरुके निकट, पहुंच सब हाल सुनाया ॥
बोले गुरु महाराज, आप अच्छा नहिं कीना ।
जाय लगाओ ध्यान, जहां पर वाद जु कीना ॥३२॥
गुरु आज्ञा-अनुसार, वाद स्थान सिधारा ।
निश्चल करके ध्यान, आतम अनुभव रस धारा ॥
निशिमें चारों दुष्ट, आये बदला लेनेको ।
मुनिको लखने कहें, यही रिपु हनिए इसको ॥३३॥
निश्चय करके एक साथ, तलवार उठाई ।
तब वनरक्षक देव, इन्होंको कीला आई ॥
खड़े खंभसे रहे, अन्तमें हुआ सवेरा ।
राजाने सुन शीघ्र, आय सब कौतुक हेरा ॥३४॥
मुनिको शीश नवाय, मंत्रियोंको धिक्कारा ।
शूलीकी दें सजा, यही नृप हृदय विचारा ॥
कहें मुनी महाराज, भूप शूली मत दीजे ।
कोई दूसरा दंड उचित, इनको दे दीजे ॥३५॥
मुनिने सुरसे, शीघ्र ब्राह्मणोंको छुड़वाया ।
"देशनिकाला" दंड, भूपने इन्हें दिवाया ॥
काला मुंह करवाय, गधोंपर बैठलवाया ।
सारे नगर फिराय, ढोल पीछे बजवाया ॥३६॥
अपमानित हो महा, विदेशोंमें भरमाये ।
करते इत उत भ्रमण, हस्तिनापुरको आये ॥
न्यायवंत नृप पद्मरायके, ढिंग जब पहुंचे ।
ऊंचे स्वरसे दी अशीश, तब भूपति पूछे ॥
कौन लोग हैं आप, कहांसे यहां पधारे ?-
"करें नौकरी कहीं" यही, सब तबहि उचारे ॥
तब नृप इनको योग्य, कार्यमें शीघ्र लगाया ।
बलिको मंत्री किया, नहीं कुछ संशय लाया ॥३८॥

फिर कुछ दिनके बाद, नृपसे बोले चारों ।
तुम दुबले क्यों नाथ! कृपा कर हमें उचारो ॥
जो कुछ होगा कार्य, उसे हम कर लावेंगे ।
संशय इसमें नहीं, करें, जो फरमावेंगे ॥३९॥

तब नृप बोले, नृपति सिंहबल, कुंभ नगरका ।
आज्ञा माने नहीं, यही है सोच जिगरका ॥
तब बलि बोला मुझे, फौज़ थोड़ी दे दीजे ।
लाऊंगा मैं बांध, न इसमें संशय कीजे ॥४०॥

नृपने सेना दई, चला बलि कुंभ नगरको ।
सेना बनमें रखी, हृदयमें रखकर छलको ॥
गयो भूप दरबार, खुब धनवाद सुनाया ।
भूपति भयो प्रसन्न, पासमें ही बैठाया ॥४१॥

नृपको जान प्रसन्न, कहे बलि इम भूपतिसे ।
करनी है प्राइवेट बात, कुछ मुझको तुमसे ॥
कृपा करें यदि आप, पधारें डेरे पर ही ।
तो सब कहूं सुनाय, जमी जो मेरे उर ही ॥४२॥

नृपने की स्वीकार, बात बलि द्विजकी सारी ।
डेरों पहुंचे जाय, किया छल बलिने भारी ॥
मुश्कें दईं चढ़ाय, शीघ्र राजा पर लाया ।
गहो पद्मकी शरण, वचन ऐसा फरमाया ॥४३॥

पद्मरायकी 'सिंह, सहन, सेवा स्वीकारी ।
किया खुब सत्कार, पद्मने शीघ्र बिदा की ॥
बलि पर होकर खुशी, भूप बोले मुस्काते ।
मांगो जो वरदान, अभी मैं देहूं मनाके ॥४४॥

तब बलि बोला नाथ! जरूरत पर दे दीजे ।
अभी नहीं दरकार, निवेदन चितमें दीजे ॥
अब कुछ दिनके बाद, वही मुनि गजपुर आये ।
बलिको मालूम हुआ, तभी चारों घबड़ाये ॥४५॥

ये तो हैं मुनि वही, विघ्न जिनपर हम कीना ।
सो आये हैं यहां, हो गया कैसे जीना ॥
इससे अच्छा यही, अभी नृपके ढिग जावें ।
लेवें मांग वरदान, तभी कुछ कार्य बनावें ॥४६॥

कर विचार इस भांति, शीघ्र बलि नृपपर आया ।
सात दिवसके लिये, भूपसे राज्य मंगाया ॥
होकर भूप प्रसन्न, राज दीन्हा बलि द्विजको ।
सोचा कुछ भी नहीं, दिया जब वर बलिद्विजको ॥

बलि पाकरके राज, भया अति निर्भय मनमें ।
पहुंचा जल्दी वहां, जहां ठहरे मुनि बनमें ॥
ठीक मध्यमें एक बड़ी, धूनी सुलगाई ।
कंटक वृक्षोंकी बारी, चौतरफ लगाई ॥४८॥

उस धूनीका नाम, रखा नरमेध यज्ञ था ।
मुनि नाशनके लिए किया बलि यह कुकृत्य था ॥
उसने उसमें हाड़, मांस, चमड़ा डाला था ।
क्रोध-अग्निसे जला, हृदय जिसका काला था ॥४९

फैली अति दुर्गन्ध, हुआ उपसर्ग बड़ा था ॥
"विघ्न टले तो असन, किया यह नियम कड़ा था।"
मुनियोंका लख कष्ट, नग्रजन अति घबड़ाये ।
यह बलि राजा दुष्ट, बनत कुछ नहीं बनाए ॥५०॥

तृणहि जलावे मेघ, खेतको बाड़हि खावे ।
नृपति करे अन्याय, न्याय फिर किस ढिंग जावे ॥
रक्षक भक्षक बने, शरण फिर किसकी कीजे ।
इस अनिष्टको हाय! दूर अब कैसे कीजे ॥५१॥

फिर दृढ़ निश्चय किया, विघ्न यह रहे जभी तक;
खान पानका त्याग, हमारे रहे तभी तक ॥

× × ×

बीती आधी रात, तभी मिथलापुर बनमें ।
सागरचन्द्र आचार्य, जहां तप करते तिनने ॥५२॥
कम्पत श्रवण नक्षत्र, देखकर अवधि विचारी ।
"हा! मुनियोंपर कष्ट पड़ा है आकर भारी"—
पुष्पदंत मुनि कही, नाथ! क्या कष्ट कहांपर,
बोले अवधि मुनि कही, सुनो तुम ध्यान लगाकर ॥

"गजपुर बनके बीच, नीच बलि बह्मारंभी ।
मुनि नाशनके हेतु, किया उद्यम यह दम्भी ॥
सात शतक मुनि संघ, गुरु आचार्य अकम्पन।
तिनपर क्रोधित हुआ, महा निर्दयी बलि ब्राह्मण ॥

पुष्पदंत मुनी कही, नाथ ! कुछ यत्न बताओ।
कही मुनि तुम शीघ्र, धरनिभूषणगिरि जाओ॥
वहां विष्णु मुनि तिन्हे, विक्रिया ऋद्धि भई है।
उनसे होवे कार्य, और कुछ यत्न नहीं है ॥१९॥

अम्बरगामी पुष्पदंत, मुनि गये वहां ही ।
नमस्कार कर बैठ गये, मुनिके पग-तल ही ॥
फिर गुरु द्वारा कहा, सभी वृतान्त सुनाया ।
भई विक्रिया ऋद्धि, तुम्हें, यह भी बतलाया ॥१६

परिचय पाने हेतु, हाथको शीघ्र पसारा ।
सो समुद्र तक गया, तभी मुनि निश्चय धारा ॥
गजपुर पहुंचे शीघ्र, नृपको पास बुलाया ।
कहा, मूर्ख तू महां, कहां यह ज्ञान कमाया ॥१७

उज्वल यह कुरुवंश, बनाया तूने काला ।
मुनि नाशनका पाप, हाथ तूने सिर धारा ॥
दानी नृप श्रेयान्स, भये थे इसी वंशमें ।
शांति कुन्थ जिन अरह, भये थे इसी वंशमें॥१८॥

लेकिन ऐसा नहीं, किसीने पाप कमाया ।
जैसा तूने हाय ! आज करके दिखलाया ॥
पद्मराय कर जोड़, हाल सारा समझाया ।
तब मुनि बावन, अंगुलका तन शीघ्र बनाया॥१९

धर ब्राह्मणका वेश, यज्ञ भूमी पर आया ।
बलिने आदर सहित, बचन ऐसा फरमाया ॥
"इच्छा क्या है विप्र, कहो मुझसे समझाकर ।
हाज़िर करदूं अभी, कहें जो आप कृपाकर"॥६०

तब मुनि बोले सुनो, तीन डग भूमि दिलावो।
अपनी डगसे नाप लेऊं, यह भी समझावो ॥
तब बलि बोला विप्र, और कुछ करो याचना ।
मुनिवर कहते मुझे, और कुछ नहीं चाहना ॥६१

"मैं इतनी पा जगह, झोंपड़ी बना-रहूंगा ।
बार बार अब नहीं, आपसे वचन कहूंगा ॥
बलिने भू डग तीन, संकल्प करके दीन्हीं ।
तब मुनि 'स्वस्ति' उचार, शीघ्र ही स्वीकृत कीन्हीं ॥

भू पानेके हेतु, विक्रिया ऋद्धि पसारी ।
दीर्घ बनाई देह, हुआ बलि संशय भारी ॥
पहिली डगको बढ़ा, जमाई थी सुमेरु पर ।
तथा दूसरी मानुषोत्तर पर्वत ऊपर ॥६३॥

नहीं भूम कुछ रही, तीसरी डगके खातिर ।
तब बलि बोला नाथ ! धरो डग मेरे ऊपर ॥
तब बलि द्विजकी पीठ, रखो डग विष्णुकुमारा।
सुर-आसन डिग गये, तभी यों करी पुकारा॥६४

हे करुणानिधि नाथ ! क्षमा अब बलिपर कीजे।
चरण खेंचिये शीघ्र, रूप यत प्रकट कीजिये ॥
यह सुन, मुनि निज रूप, प्रकट करके दिखलाया।
चौतरफासे धन्य, धन्य हो शब्द सुनाया ॥६५॥

बलिको दीना छोड़, यज्ञका नाश कराया ।
मुनियोंका उपसर्ग, विष्णु मुनिने विघटाया ॥
सुनकर भूपति शीघ्र, विष्णु मुनिके ढिग आया ।
आठों अंग नवाय, साधुको शीश नवाया ॥६६॥

श्रावक सुन यह हाल, शीघ्र वह भी चल आये।
मुनियोंका उपचार, किया मनमें हर्षाये ॥
भूपतिने यों कहा, दंड बलिको दूं ऐसा ।
जिससे कोई करे नहीं, फिर दुष्कृत ऐसा ॥६७

कहें गुरु महाराज, दया बलिपर नृप कीजे।
दया धर्मका मूल, इसे अब मनमें दीजे॥
इनने जैसा किया, पाएंगे खुद ही फलको।
आप व्यर्थ ही पाप, बांधते हैं परभवको॥६८॥
फिर मुनिने उपदेश, अहिंसामयी सुनाया।
द्विज चारों सुन जिसे, अधम निजको ठहराया॥
दुष्कार्योंपर खूब, सुपश्चात्ताप कराया।
तजे सभी दुष्कर्म, अहिंसा धर्म सुहाया॥६९॥
मुनिको करके नमस्कार, यों बोले चारों।
"नाथ! कृपाकर हमें शीघ्र भव जलसे तारो॥
तब श्रावक व्रत दिये, गुरुने उन चारोंको।
पतित हुओंको कहो, साधुओं बिन तारेको॥७०
स्वस्थ चित्त हो साधु, नगरको किया विहारा।
खीर आदिका किया, श्रावकोंने आहारा॥
जन्म सफल होगया, हर्षमें नहीं समाये।
भई प्रतिज्ञा पूर्ण, आप तब भोजन पाये॥७१॥

सुगीतिका-छन्द।

दिन था वही श्रावण सुदी, पूनम नक्षत्र श्रवण सही।
इक सातसौ मुनियोंकी तब, मुनि विष्णुने रक्षा करी॥
तबसे पवित्र दिवस यही, माना सभी संसारने।
अति प्रेम प्रकटाया परस्पर, तब सभी संतारने॥
अरु याद रखनेके लिये, कर सूत्र डोरा बांधिये।
यह चिह्न रक्षाका सही, इसमें न संशय मानिये॥
तबसे हुआ यह पर्व प्रचलित, आजतक आता चला।
यह 'प्रेम' का है चिह्न, इसको धारकर पाओ भला ७३

दोहा।

रक्षाबंधनकी कथा, लिखी स्वपर मति धार।
पढ़ो पढ़ाओ सकल जन, भरो पुण्य भंडार॥७४

—※—

रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके बाद।

(लेखक-परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ-सूरत।)

किसी कविका यह कथन बिल्कुल सत्य है कि "रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके बाद"। भारत वर्ष जब तक पीसा नहीं गया तब तक इसे अपनी परतन्त्रताका अनुभव नहीं होपाया। और ज्यों २ इसके साथ दमनवृत्तिसे काम लिया गया त्यों २ इसे भान आया। महात्माजीने भी देशके सामने ऐसा कार्यक्रम रखा जिससे भारतवर्ष पर खुला दमन हो। दमन होनेसे ही रंग आयेगा। अन्तमें हुआ भी ऐसा ही। अगर कुछ दूरकी बात याद करें तो मालूम होगा कि जलयानवाले हत्याकाण्डके बाद देशको कुछ होश आया और यदि बिल्कुल पासकी बात देखें तो बरसे धरासणा, वीरमगांव आदिमें माथाफूट हुई तभीसे भारतवर्षमें रंग आया है।

अब तो दिनोंदिन रंग बढ़ता ही आ रहा है। कल जो हमारे देशमें जागृति थी आज कुछ दूसरे ही रूपमें है, और आज जो रूप है कल कुछ और ही होजावेगा। अथवा यों कहिये कि रंग पक्का पर पक्का होता आ रहा है। मैं नहीं कह सकता कि सरकारको या महात्माजीको भी इतनी आशा होगी जितना रंग आज भारतवर्षपर चढ़ गया है। मैं इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि अगर सरकारने ऐसी दमन-नीतिसे काम न लिया होता तो संभवतः देशमें इतने जल्दी मात्र ४ माहमें ऐसा रंग नहीं आ

पाता। मगर "होनहार होतव्यता तैसी मिले सहाय" वाली बात तो झूठ नहीं है! देश हितैषियोंने भारतवर्षकी पापमाको दूर करनेके लिये लोगोंको शराब पीनेसे रोकना प्रारंभ किया विदेशी वस्त्र न खरीदनेका आदेश या उपदेश किया तो सरकारने इसे अपराध बतलाकर ६ महीनेकी सजाका नया फरमान निकाल दिया! आखिरकार इन्हीं दो चीजोंके बहिष्कारने जोर पकड़ा और हजारों सत्याग्रही जेल गये। फल यह हुआ कि शराब और ताड़ीके पीठे तड़ातड़ बंद होने लगे और लेंकेशायरमें कपड़ेकी ४०० मिलोंके भोंपू बंद होगये! अभी तो बहिष्कार का प्रारंभ काल ही है, मगर भविष्यमें क्या होगा यह सर्वज्ञ जाने!

जिस तरह सरकारने शस्त्रास्त्रोंसे दमन किया उसीप्रकार यदि उसके प्रतीकार करनेके लिये भारतवर्ष मूक करता तो वह अपना नाश कर बैठता! मगर हमारा नेता तो एक लोकोत्तर महापुरुष महात्मा है, उसने सलाह दी कि तुम नीचा सिर करके तमाम वारोंको झेलो और ऊँचा सिर करके सत्य और अहिंसाके मार्गपर चलो। लोगोंने यह बात स्वीकार की, यही कारण है कि अपना सत्याग्रह रंग ला रहा है। अगर हम सत्य और अहिंसाके अचूक चक्रको लेकर शांतिपूर्वक कार्य करते रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं है कि जब भारतवर्ष स्वतंत्र होकर दुनियांको भी शांतिका मार्ग बतलावेगा!

वर्तमान युद्धमें अमुक मान्य जाति या व्यक्ति नहीं, किन्तु समस्त भारतवर्ष, तमाम जातियाँ वृद्ध युवान तथा बालक बालिका भी बड़ी लग-नके साथ कार्य कर रहे हैं। शहरमें ५ वर्षोंकी ही जब हजारोंकी संख्यामें छोटे२ बालक बालिका यह गीत गाते हुए निकलते हैं कि "माता न रह सकेगा हरगिज गुलाम खाना, होगा स्वतंत्र होगा आता है वह जमाना" तब अन्तरात्मा कहता है कि इन निर्दोष कोमल हृदयोंसे निकले हुए यह वाक्य बिलकुल सत्य है।

जब लोगोंको भान हुआ कि यह युद्ध किसीके व्यक्तिगत स्वार्थके लिये नहीं है, बड़े२ नेता जेलमें पड़े हुए हैं, यह सब हमारे ही लिये तो दुख सहन कर रहे हैं तब तमाम व्यापारी वर्गसे लेकर मजूर तक इसमें जुट गये। व्यापारके प्रधान हेतु जिन बंबई शहरके विषयमें महात्माजीको भी कुछ आशा नहीं थी वही आज पूरे जोशमें धधक उठा है! विदेशकी दलाली स्वरूप व्यापारापापको छोड़कर सभी सच्चे स्वतंत्रताके व्यापारमें जुट गये हैं। देशके कोने२में यह युद्ध एक ही रूपमें चल रहा है। बालकसे लेकर वृद्ध तक सभी यह समझते हैं कि हमारा युद्ध अहिंसक है, हम सत्यके मार्ग पर चल रहे हैं इसलिये हरतरह विजय हमारी ही है। सत्य और अहिंसाके पुजारी महात्माजीसे लेकर हजारों वीरोंकी तपस्या निष्फल नहीं होसक्ती। यही कारण है कि जिनके ऊपर सरकारको पूरा विश्वास था वे भी आज पुकार२ कर कह रहे हैं कि महात्माजी तथा सभी सत्याग्रहियोंको छोड़कर उनकी शर्तें मंजूर करो। देखिये अभी रंग जम रहा है!

—>>₹<<—

जैन जाति और उसके युवक।

(लेखक-श्री० प्रभूलाल जैन-पोद्दरी ।)

जैन जाति वह जाति है, जिसका सिर हमेशासे ऊंचा रहा है। इसकी सभ्यता प्राचीन ही नहीं, बल्कि दुनियांकी दृष्टिमें प्रतिष्ठास्पद भी है। इसकी प्रतिष्ठाका कारण अगर आंखोंमे देखा जाय, या बदरना दृष्टि द्वारा उसका अनुभव किया जाय, तो पता लगेगा कि इसकी प्रतिष्ठामें सबसे बड़े हिस्सेदार इस जातिके नवयुवक ही थे। यह नवयुवकोंकी ही शक्तिका कारण था कि दुनियांमें जैन धर्मका सितारा चमक गया। नवयुवकोंका ही काम था, कि अपने वर्तमान सुखोंको तिलांजलि देकर भावी सुख प्राप्त करनेके लिये अनेक बाधायें सहन कीं। नवयुवकोंका ही काम था कि वे अपने जवानीके खूनके जोशमें जैनधर्म जैसा धर्मका प्रचार कर गये। लेकिन आज दिन मुझे बड़े खेदके साथ कहना पड़ता है कि अब नवयुवक कहां चले गये? क्या उनका पैदा होना हमेशाके लिये बंद होगया, जिससे जो हमारी जैन जाति दुनियांके पथपर अग्रसर थी, वह आज बे रोकटोक अवनतिके पथपर अनुगमन करती हुई दिखलाई देती है।

हे जातिके युवको, धर्मप्रेमियो! भगवानवीरकी सन्तान होनेका दावा रखनेवालों! जैन धर्मके सच्चे पुजारियो! अब फिर वह समय आगया, जब कि हमें दुनियांके सामने अपना आदर्श रखना पड़ेगा, अपनी खोई हुई शक्तियोंका फिर संचालन करना पड़ेगा। इसके लिये हमें अपनी जानपर बाजी लगानी पड़ेगी, और दुनियांको बतलाना पड़ेगा कि जैन जाति वही जाति है जिसका तेज विश्वव्याप्त था, धर्म प्राचीन और सभ्यता गौरवास्पद है, ऐसा दुनियांको बतलानेके लिये हमें दो बातें करनी पड़ेगी। (१) रूढ़ियोंका उन्मूलन। (२) अविद्यारूपी तिमिरका नाश करके घर २ विद्यारूपी सूर्यका प्रकाश करना।

अगर हमारी जातिके नवयुवक इन दोनों बातोंको अपने सफलीभूत होनेका केन्द्र मानलें, और उनकी पूर्ति करना अपनी आभ्यन्तरिक तीव्र भावनाओंसे विचारलें, तो इनमेंसे मुश्किल हों तो दूसरोंको भले ही हों, लेकिन जैनजातिके नवयुवकोंकी शक्तियों पर ऐसा कायरताका लांछन लगाना अच्छा नहीं। इस वर्तमान कालमें इन रूढ़ियोंने हमारी जातिमें वास करलिया है। ये रूढ़ियां हमें न इच्छानुसार नाच नचाया करती हैं, रूढ़ियां किसी भी राष्ट्र तथा जातिकी उन्नतिमें बड़ी बाधक होती हैं। यह रूढ़ियोंका ही कारण है कि आज हमारी जातिके सुदिन नहीं हैं। कहते हैं—"The makers of the nations are the breakers of the traditions." इसकी सत्यतामें किसी प्रकारका लांछन नहीं लग सकता है।

हे जैन जातिके नेताओ तथा धर्मके प्रचारको! आपसे भी प्रार्थना है कि जहां आप जाकर धर्मका प्रचार करते हैं, धार्मिक शिक्षा देते हैं, वहां सबसे पहिले आप नवयुवकोंको प्रोत्साहित

करें, उनकी भावनाओंमें तीव्रता भरें, उनको धर्मरूपी सुपथका दिग्दर्शन करावें और नगर२ या ग्राम२ में उनके संगठन संघ बनावें। अगर ऐसा हमारी जातिके नेता, धर्मके पुजारी कर सकते हैं, तो जैन जातिके सुदिन शीघ्र ही कल्पित भविष्यमें परिणत होते हुए दिख सकते हैं।

अगर हमारी जातिके नेतागण, "जिन" शब्दके अर्थकी गूढ़ताके पथप्रदर्शक बन सकते हैं तो उनका यह कर्तव्य कभी नहीं है कि वे चौरस मैदानमें खड़े होकर जैन जातिकी अवनतिकी बढ़ाई देखें। उनका तो प्रत्येक दशामें धर्म तथा कर्म यही हो सकता है कि वे अकलंक निकलंक भगवानकी तरह शहीद होनेको हमेशा तत्पर रहें। मुझे पूर्ण आशा है कि हमारी जैन जातिके नवयुवक तथा नेतागण, और धर्मप्रचारकगण एक नवयुवककी शिक्षापर नीतिके अनुसार अनुमान करते हुए कृतार्थ होंगे और नवयुवकोंमें उसी तीव्र भावनाका फिरसे संचार करेंगे जो आजसे २५०० वर्ष पूर्व थी।

સુકૃતથી નિર્વાણ.

(ગઝલ)

જગત જંજાળની બાજી, અમેલા જીવ ખેલે છે,
ધરી આત્મા તણો રસ્તો, અહો વિરલા તે છોડે છે.
પિતા તનુ માતને ભગિની, અને જે નાર અપના છે,
જીવન જ્યોતિ તણાં સ્નેહી, વિનાશે તેજ વૈરી છે.
જગતમાં જાગીને જોશો, બધી માયાજ કર્મોની,
બધાયા કર્મના માટે, બધી ધાંધલ ધર્મોની.
કરેલાં કર્મની શિક્ષા, પ્રભુ હરનિશ આપે છે,
છતાં જગ પ્રાણીઓ સર્વે, નયન અંધાપે રાખે છે.
પ્રભુના દ્વારમાં સરખા, મનુષ્યોનિય પ્રાણી છે,
તુલાએ ન્યાય સમ ઠારે, ઘટીત શિક્ષા સમાણી છે.
કરે સુકૃત જો પ્રાણી, સ્વર્ગ રસ્તે સિધાવે છે,
પછી નરભવ પામીને, મોહન નિર્વાણ પામે છે.

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કપ્પાલા.

જૈનો અને તેમનુ કર્ત્તવ્ય।

જૈન શબ્દ એ આજકાલ દુનિયા પર સર્વમાન્ય થઇ પડયો છે, પણ વાસ્તવિક રીતે જોતાં તેમાં રહેલુ ખરૂં રહસ્ય તો સેંકડે પાંચ ટકા પણ જાણતા નહિ હોય ?

જૈન શબ્દનો પ્રયોગ આજકાલ ધર્મ-જાતિ, સંઘ-શાસન-શાસ્ત્ર-પંથ અને એવાં બીજાં રૂપો સાથે થતા લાગ્યો છે, પણ યથાર્થમાં તે બધાનું મુળ એકજ છે. એટલે કે જૈન નામના બગીચાની તે બધી ક્યારીઓજ છે.

જૈન શબ્દનો વ્યુત્પત્તિ પૂર્વક અર્થ એવો થાય છે કે-जयति रागादि शत्रून् इति जिनः। जिनस्य इमे इति जैनः। અર્થાત્ રાગ દ્વેષ-ક્રોધ, માન-માયા-લોભ, ઇત્યાદિ શત્રુઓને જીતનાર જિન અને તેમને માનવાવાળા તે જૈન, પછી તે માનવાવાળી વ્યક્તિ ગમે તે જાતિ, કે ગમે તે ધર્મની હોય.

જિન શબ્દની વ્યાખ્યા જાણ્યા પછી, દરેકને એમ થયા સિવાય રહેતું નથી, કે જેણે રાગાદિ શત્રુઓ જીત્યા હોય, તે પછી બ્રહ્મા હોય, કે વિષ્ણુ હોય, પીર હોય કે-પૈગંબર હોય, ઇસુ ખ્રીસ્ત હોય કે, બુદ્ધ હોય, પણ તે જૈન કહેવાય છે. અને તેમને માનનારા બધા જૈની કહેવાય છે.

હાલ તો જૈન કુળમાં ઉત્પન્ન થનાર, પછી તે રાગાદિ રહિત હોય, કે દ્વેષનો સાગર હોય, સમ્યક્દર્શનયુક્ત હોય, કે-ઇશ્વરને ન માનતો હોય, છતાં તેના વંશ પરંપરાના જૈનત્વને લઇનેજ જૈન કહેવાય છે. ને તે પોતે પણ, કેશરનો પીળો ચાંલ્લો કરીનેજ પોતાને જૈન કહેવડાવે છે. બાકી નથી પડી તેમને જૈન શાસ્ત્રની, કે નથી પડી જૈન ધર્મના જૈનત્વની.

એવા અજ્ઞાન માણસોએજ હાલમાં જૈનત્વને ઉતારી પાડયું છે. હાલ તો જૈન તે કહેવાય છે, કે-જે તીર્થ માટે લડાલડ કરતો હોય, પુષ્પ પહેલાં કે ચાવલ પહેલા

તેની તકરારોમાં ઉતરતા હોય, આ તીર્થ દિગંબરી, અને આ શ્વેતાંબરી, એની હારજીત કરતા હોય, બાર વર્ષની બાળકીને વૃદ્ધ વયે વરતા હોય. તેવા અજ્ઞાન નરપશુઓજ પોતાને ખરા જૈન કહેવડાવવાનો દાવો કરે છે.

જે યુવાનો તીર્થોના ઝઘડાથી રહીત રહી ધર્મ સાધન કરે છે તેમજ સામાજીક સુધારાને માટે તનતોડ મહેનત કરે છે, તેઓને ઉપર બતાવેલા કેસરીઆ જૈનો હલકી નજરે નિહાળે છે. તેમની બધી પ્રવૃત્તિઓ અટકાવવા બનતું કરે છે, પણ તે અજ્ઞાનીઓને ખબર નથી, કે-આ સમય યુવાનો દ્વારા ક્રાન્તિ કરવાનો છે.

જૈનોનું ખરું લક્ષણ એ છે, કે-રાગદ્વેષ ઓછો કરવા પ્રવૃત્તિ કરવી, પણ જ્યાં રાત્રિદીન ઝઘડાનાં મૂળ શોધાતાં હોય-જ્યાં બીજાનાં મંદિર પોતાનાં કરી લેવાની નીચ પ્રવૃત્તિ પોષાતી હોય-જ્યાં તીર્થ સ્થાનોમાં મારામારી અને ખુના મરકી થતાં હોય-જ્યાં ગરીબની હાયના હજારો ચિત્કાર સમાજને શિર ચોંટતા હોય-જ્યાં મ્લેચ્છાદિ સરકારને હજારો રૂપિયા, તીર્થસ્થાનોના નામે અપાતા હોય-જ્યાં ભાઇ ભાઇમાં દ્વેષથી રહેવાતું હોય-જ્યાં કેસરના ચાંલ્લાવાળાઓ અન્યોન્ય જમવામાં, કે-કન્યા આપવા લેવામાં વટલાઇ જતા હોય-જ્યાં સેંકડો બાળ વિધવાઓ કુકર્મો કરી બાળ હત્યાઓ કરતી હોય-જ્યાં વૃદ્ધ ખસ્ચરો બાળ સ્ત્રીઓની જીંદગી બરબાદ કરતા હોય, ત્યાં જૈનત્વ રહેજ ક્યાંથી ?

પણ જ્યાં ક્લેશના ટાઇમમાં ક્ષમા રખાતી હોય-કેશર નો નામ પણ ન લેવાતું હોય-તીર્થસ્થાનોમાં 'પથી વર્તાતું' હોય ત્યાંજ જ (?) છે ત્યાંજ મહાવીરના પુત્રોનો નિવાસ છે.

જૈન ધર્મનું ખરું લક્ષણ ઉદારતા છે — ઉદારતા એટલે પક્ષપાતનો અભાવ. અપક્ષપાતપણું તે વીરનો મહામંત્ર છે, જે ધર્મમાં પક્ષપાત હોય, તે ધર્મ, ધર્મ નહિ પણ ધુતી ખાવાનાં ધતીંગ છે.

ધર્મમંદિરમાં જીવ માત્રને દાખલ થવાનો અધિકાર હોવો જોઇએ, ત્યાં ઉંચ કે-નીચ મનુષ્ય, કે-તિર્યંચ, પુરૂષ, કે-સ્ત્રીનો ભેદ હોવો જોઇએ નહિ.

ધર્મના આ સિદ્ધાંતને અમલમાં મુકવાજ શ્રી મહાવીર સ્વામીએ અને તેમના પૂર્વેના તિર્થંકરોએ સમોસરણમાં ધર્મોપદેશ કર્યો હતો. તેમની સભામાં ઉંચ કે-નીચ, મનુષ્ય કે-તિર્યંચનો ભેદ હતોજ નહિ. સર્વે જીવો સરખા ભાવથી સહિષ્ણુતાપૂર્વક, તેમની સભામાં બેસી ધર્મોપદેશ શ્રવણ કરતા હતા.

સાંપ્રત કાળે તેજ પ્રણાલિકાને માન આપી ભારતવર્ષીય હિંદુ મહાસભા તરફથી સમાજરત્ન શેઠ જમનાલાલ બજાજ અંત્યજોને હિંદુ મંદિરમાં દાખલ થવાની છુટ અપાવવા લાગ્યા છે, ત્યારે આપણે જૈનો મંદિરો માટે સામસામા લડી મરીએ છીએ !

જૈન માત્ર ચોવીસ તિર્થંકરોને માને છે. તિર્થંકરોની જન્મભૂમિ-દિક્ષા સ્થાન-જ્ઞાનભૂમિ-અને નિર્વાણ સ્થાન પર જૈન માત્રનો દર્શન, અને પુજન કરવાનો હક્ક છે.

પૂર્વાચાર્યોએ જ્યાં જ્યાં તપ કરી, દેહ ત્યાગ કર્યો છે, ત્યાં ત્યાં જૈન માત્રને ભકિત ભાવે વંદના કરવાનો હક્ક છે.

એ આપણે સારી રીતે જાણીએ છીએ, છતાં દિગંબરો અને શ્વેતાંબરો નાહક મારૂં અને તારૂં કરી લડી મરે છે

જે સ્થાનક દિગંબરોના કબજામાં હોય, તે સ્થાનક પર જો શ્વેતાંબરોને દર્શન-પૂજન કરવા દેવામાં આવે, તો કાંઇ દેવ બદલાઇ જવાના નથી, તેવીજ રીતે જે સ્થાનક શ્વેતાંબરોના કબજામાં હોય તે સ્થાનક પર જો દિગંબરોને દર્શન પૂજન કરવા દેવામાં આવે, તો દેવ બદલાઇ જવાના નથી.

દેવ તેના તેજ રહેશે, અને રહે છે. બદલાય છે, માત્ર આગેવાનોના વિચાર, આપણા અંદરો

અંદરના આ ઝઘડાને લઇનેજ આપણામાંથી સ્થાનકવાસી અને રાજચંદ્ર પંથી જુદા નીકળ્યા છે કે—જેમને તીર્થ સ્થાનો તરફ રાગ અગર દ્વેષ છેજ નહિ. જ્યાં રાગ નથી ત્યાં દ્વેષ થાયજ નહિ. અને જ્યાં દ્વેષ છે, ત્યાં કાલાંતરે રાગ થઇ શકે છે.

આપણો આપણાં તીર્થસ્થાનો પર અતિશે રાગ છે, તેથીજ આપણે આપણા સહધર્મી તરફ દ્વેષ કરીએ છીએ.

જેણે કેસરીયાજી હત્યાકાંડ જોયો હશે, અગર તેનું યથાર્થ વર્ણન વાંચ્યું હશે, તેને જરૂર તીર્થસ્થાનો પર થતા અત્યાચારોનું ભાન થયું હશે.

જો આપણે એમ તીર્થસ્થાનોના કબજા માટે લઢાલઢ કરીશું તો આપણને આપણી ઘટતી જતી સંખ્યાનાં કારણો શોધવા, આપણા સમાજને સુધારવાનો ટાઇમજ કદિ મળે.

જો આપણે સમાજને સુધારી વધારવા પ્રયત્ન નહિ કરીએ, તો જરૂર થોડાંક વર્ષમાં આપણે ખલાસ થઇ જઇશું

જૈન ધર્મ પ્રાણી માત્રનો ધર્મ છે. એ જાણવા છતા હાલ તો વાણીઆઓએ જૈન ધર્મ ખરીદી લીધો હોય, એમ જણાય છે. એટલે કે જૈન ધર્મમાં દાખલ થવાનો કોઇને હક્કજ ન હોય. હાય, કેટલી સંકુચિતતા, પણ તે સંકુચીતતા કોની છે. વાણીઆની નહિ કે ધર્મની.

ધર્મનું ક્ષેત્ર ગંભીર છે, વિશાળ છે, ઉદાર છે. તેમાં દરેક જણ પ્રવેશ કરી શકે છે. મહાવીરસ્વામીનો ધર્મોપદેશ વાણીઆ, એકલા માટે નહોતો.

મનુષ્ય ગમે તે જાતિનો હોય, પણ જો તે જૈન હોય, જૈન ધર્મ સ્વિકાર કરે તો તેને પોતાનો ધર્મ બન્ધુ તરીકે ન સ્વિકારવો તે મૂર્ખતાજ છે.

જૈન ધર્મની સંખ્યા ઘટવાનું કારણ એ નહિ તો બીજું શું હોઇ શકે? એક અજૈન જૈન થાય તો શું પ્રભુ પુજન ન કરી શકે.

એક અજૈન જૈન ધર્મના તમામ આચારો પાળે તો તેની સાથે વ્યવહારિક સંબંધ બાંધવામાં હરકત શું?

મારા માનવા પ્રમાણે તો આપણે જેવા પ્રકારના જૈન હઇએ, તેવા પ્રકારના જૈન, બીજી ગમે તે જાતીમાંથી બનાવી, **તેમની સાથે દરેક પ્રકારના વ્યવહારિક સંબંધ બાંધી** તેમને ચુસ્ત જૈન ધર્માનુયાયી બનાવવા જોઇએ.

શ્રાવક માત્ર એ પ્રમાણે વર્તન કરે તો, હું નથી ધારતો કે જૈન ધર્મનો પ્રચાર થતાં વાર લાગે.

દુનિયાની નજરે જૈન ધર્મને હલકો પાડનાર, તીર્થ સ્થાનોના ઝઘડા ઓછા થશે તોજ જૈન ધર્મ વિશ્વ વિખ્યાત બની શકશે.

ધર્મ જ્યાં સુધી આદર્શ ન હોય, તેને પાળનાર ચારિત્રવાન ન હોય, ત્યાંસુધી તે ધર્મ, ધર્મ ગણાતોજ નથી.

આદર્શ ધર્મ ત્યારે ગણાય, કે જ્યારે સર્વે ફિરકા એકત્ર થઇ જૈન એ શબ્દના ઝંડા નીચે રહી જૈન ધર્મનો પ્રસાર કરવા તન–મન–ધન અર્પણ કરે!

અંતરંગ માન્યતા ગમે તેવી હોય, પણ તીર્થસ્થાનો કે સામાજીક રિવાજોમાં સંપીને એકયતા પુર્વક, પોતાને વીર પ્રભુના પુત્ર ગણાવી વર્તન કરે, તોજ જૈન ધર્મ જગદ્વ્યાપી બની શકે!

આજકાલના જૈનતર હીન શ્રાવકો સાધુઓ કરતાં જૈનતત્વવાળા અન્ય ધર્મી સારા, કે જે તીર્થસ્થાનો માટે મારપીટ કરતા નથી.

ધર્મસ્થાનમાં લોહીનું ટીપું પડે, તો આખું મંદિર પવિત્ર થયેલું ગણાય, છતાં શ્રાવકો, કેસરીઆજી જેવા પ્રાચીન તીર્થમાં ખુના મરકી કરાવે તે જૈનત્વને લજાવનારૂં કૃત્ય નહિ, તો બીજું શું ગણાય?

પરંતુ તેજ ગણાય કે જે વ્યવહારમાં અવહિત હોય, પરદેશી સરકાર કે દેશી સરકાર, જ્યાં જૈનોનો જરા પણ પગ પેસારો નથી, જ્યાં જૈન શું કોઇ જાણતા જ નથી, જ્યાં તીર્થંકર ક્યારે

થયા, મંદિરો ક્યારથી થયાં, કોણે બંધાવ્યાં, શ્વેતાંબર એટલે કોણ, દિગંબરો એટલે કોણ, એજ કોઇ જાણતા નથી, ત્યાં ન્યાય મેળવવાની આશા રાખી હજારોનો ધુમાડો કરવો, તે મને તો ભાદરવા મહિના સિવાયનું શ્વાન મૈથુન જેવું લાગે છે.

શ્વેતાંબર પક્ષ તેજમાં હોય, તો દિગંબરોએ સહનશીલતા રાખી શાંત થવું જોઇએ. દિગંબર પક્ષ તેજમાં હોય, તો શ્વેતાંબરોએ શાંતિ ધારણ કરવી જોઇએ.

પણ આજકાલ તેથી ઉલટુંજ જોવામાં આવે છે. **શાંતિ તો શ્રાવકોમાંથી રસાતળે પહોંચી** ગઇ છે. પ્રાણી માત્ર પર સમભાવ ધારણ કરનારા શ્રાવકો, પોતાના ધર્મ બન્ધુ તરફ રાક્ષસી વૃત્તિ રાખતાં શીખી ગયા છે. ખેદ છે, **શરમ છે, તે જૈનોને, કે જે હમેશા તીર્થસ્થાનના નિમીત્તે ઝઘડા ઉભા કરે છે.**

શ્રાવક કુળમાં જન્મ ધારણ કરી, શાંતિ ગુમાવવી, તેનાથી તો શુદ્રના ઘેર જન્મ ધારણ કરવો હજાર દરજ્જે સારો છે.

જૈન શાસ્ત્ર એમ નથી કહેતાં કે-અમુક તીર્થ શ્વેતાંબરનું છે, અમુક તીર્થ તેમજ દિગંબરો પાસેથી લઇ લેવું જોઇએ.

જૈન શાસ્ત્રો કહે છે કે-**મંદિરો પ્રાણી માત્રની મિલકત છે. તેમાંથી ધર્મ બોધ લેવાનો દરેકને સરખોજ છે.** પછી કોઇ ગરીબ હોય કે અમીર રાજા હોય કે રંક પ્રભુના દરબારમાં સૌ સરખા છે. **જે નમે તેજ પ્રભુને ગમે**, જે સહન કરે છે તેજ શાશ્વત સુખને મેળવે છે.

સહન કરવાની મારી સલાહ વખતે, આપણા એકાદ પક્ષને ઠીક નહિ લાગે, પણ તેઓ અંતરંગમાં વિચાર કરી જોશે તો તેમને પણ અંદરો અંદરના ઝઘડા અનર્થકારકજ જણાશે.

વર્તમાન કાળના સાધુ સાધ્વીઓની ફરજ શ્રાવકોને એકત્ર કરવાની છે, નહિ કે વિખુટા પાડવાની ?

મારા સાંભળવામાં આવ્યું છે કે-કેટલાક કહેવાતા શ્વે૦ મુનીરાજો, તીર્થસ્થાનના ઝઘડા ઉભા કરવા શ્રાવકને ઉશ્કેરે છે. ને નાણાંના ફંડની અપીલ કરી નાણાં ભરાવે છે. જો તે વાત સત્ય હોય, તો મારે કહેવું પડશે કે-તે મુનિરાજ મુનિ નથી, પણ જૈનીઓનું હરામનું ખાનારા, **પાખંડી મિથ્યાત્વી મહંતો છે.**

તેવાઓને મુનિ કહી જીભને શરમાવવી તેના કરતાં સંપને ઇચ્છનાર શ્રાવકોના ગુણ ગાવા લાખ દરજ્જે સારા છે.

પ્રભુ ત્યારે સંઘને એકત્ર કરી જૈન સમાજને શિરથી તીર્થસ્થાનોના નામે ચોટેલું કલંક ભુંસી નાંખે એજ ઇચ્છા છે. ૐ શાંતિઃ શાંતિઃ

શ્રાવક હશે તે આટલેથીજ સમજી જશે.

તીર્થસ્થાનોમાં સંપથી ધર્મ ધ્યાન કરવું તેજ મેળવવું બાકી છે.

ત્રિકાળ સામાયક કરનાર શ્રાવકો જાગશો કે ?

લી. જૈન માત્રને એકત્ર જોવાને ઉત્સુક,
મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ. કાણીસાકર કમ્પાલા.

ખડકમાં અજ્ઞાનાંધકારનો નાશ.

(લેખકઃ-માસ્તર પુનમચંદ મંગળજી-છાણી.)

૧-ખડકમાં દશા હુમડ જ્ઞાતિમાં પહેલાં કોઇ જમાને દિગમ્બર જૈન પાઠશાળા ન હતી. પણ કંઇક ખડકના બાળક બાળીકાઓનું પુન્ય પ્રગટ થવાથી શ્રીયુત મુંબઇ નિવાસી સ્વજાતિ ભૂષણ દાનવીર શેઠ સાહેબ શ્રી. લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદે પધારી આ ખડક દેશને સુધાર્યો છે. અને અજ્ઞાનરૂપી અંધકારનો નાશ કરી જ્ઞાનરૂપી સુર્ય પ્રકાશાવ્યો છે.

૨-પહેલાં શ્રીયુત દાનવીર સ્વજાતિ ભૂષણ શેઠ લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ પહેલાં કડર નિવાસી શેઠ દોલાભાઇ કસ્તુરચંદ અમથારામ તરફથી નવાગામમાં પાઠશાળા સ્થાપી અને પોતાના નામથી છાણી પાઠશાળા સ્થાપી અને તેના અગ્રેસર પરોપકારી વિદ્યોતેજક ફતેચંદભાઇ તારાચંદ વિજ-

મનમરવાળાને નવાગામ તેન છાણી પાઠશાળાના મહામંત્રીનું પદ આપી તેમને કામ સોંપ્યું ત્યાંથી મહામંત્રીજી સાહેબે પ્રયત્ન કરી ઉપદેશ આપી ખડકમાં ગામો ગામ પાઠશાળાઓનો પ્રબંધ કરી આપ્યો છે.

૩–પહેલાં આ ખડક દેશમાં ણમોકાર મંત્ર શું છે, તેનું કોઇને ભાન ન હતું. પણ હાલ પાઠશાળાઓ થઇ તેના પછી એક આઠ વર્ષના છોકરાને પૂછવાથી પણ ણમોકાર મંત્ર શુદ્ધ ઉચ્ચારણથી બોલશે. પહેલાં મંદિરમાં પુજા ભણવી હોય તો ગંધર્વ લોક પૈસા લઇ ભણી આપતા પણ હાલ તો પાઠશાળા થઇ તેના પછી એક દશ વર્ષનો છોકરો પણ પુજા ભણી શકે છે. તો એ બધી ઉન્નતિ પાઠશાળાની કે શ્રીયુત શેઠ સાહેબ લલ્લુભાઇ તેમ મહામંત્રી સાહેબ ફતેચંદભાઇની છે

૪–શ્રીયુત વિદ્યોત્તેજક પારોપકારી મહામંત્રી ફતેચંદભાઇ પરોપકારી કામ કરી રહ્યા છે. તથા તેમનાથી મોટા તેમના ભાઇ છે, તે અપંગ છે, હાલી ચાલી શકતા નથી, અને પોતે પણ એકલા અને અપંગ ભાઇની સેવા ચાકરી કરી રહ્યા છે. અને ધર્મના કામમાં ટેકો આપતા રહી તેમ પાઠશાળાઓનું નિરીક્ષણ કરતા રહી ખડકનો ઉપકાર કરી રહ્યા છે, તો ખડકના બધા ભાઇઓ પર તેમનો મોટો આભાર છે.

૫–ખડકમાં સાત પાઠશાળા તેમ એક કન્યાશાળા છે તેમ આસરે સાડાત્રણસો છોકરા છોકરી લાભ લઇ રહ્યા છે. અને વિદ્યોત્તેજક પરોપકારી મહામંત્રીજી સાહેબ પ્રયત્ન કરી બીજાઓને ઉપદેશ આપી છોકરાઓને પરીક્ષાની વખતે ચોપડીઓ તેમ સ્લેટ પેન વગેરે ઇનામમાં આપે છે તો તેઓને ખડકની બાળીકાઓ ધન્યવાદ આપે છે કે બંન્ને શ્રીયુતો ચીરંજીવી રહો.

૬–તેમ આ ખડક દેશમાં આચાર વિચાર વિષે, શુદ્ધ ભોજન ક્રિયા વિષે કંઇ ભાન નહતું તેમ વ્રત ઉપવાસ પણ કેવી રીતે કરે તે પણ કોઇ જાણતું ન હતું, પણ શ્રીમાન ૧૦૮ મુનિ શ્રી શાન્તિસાગરજી મહારાજ (છાણી) વાળાના આગમનથી તેમ તેમના ઉપદેશથી આ ખડક સારા પાયા ઉપર આવ્યું છે, પણ હાલ રૂપીએ આઠ આના પ્રમાણે સુધર્યું છે. આશા છેકે દિવસે દિવસે સુધારાના પાયા ઉપર આવશે.

૭–શ્રીયુત મહામંત્રિજી સાહેબની ખડકની બાળીકાઓ ઉપર પુરી લાગણી હોવાથી આ વર્ષમાં પોતાના ખર્ચાથી એક હજાર આલોચના પાઠ છપાવી બહાર પાડી ખડકની બાળીકાઓને મફત આપવામાં આવ્યા છે. અને એવી આશા છે કે દરેક ધાર્મીક પુસ્તકો પોતાના નામથી પ્રગટ કરી વિના મુલ્યે ખડકના બાળીકાઓને મુફત આપી ઉન્નતી વધારશે.

૮–ગઇ સાલમાં એટલે સંવત ૧૯૮૫ના શ્રાવણ માસમાં ચૌદ ગામોની પંચ કમેટી બાંબુદા મુકામે થઇ હતી તેમાં સુધારાના સારા રિવાજો ઘડયા. તેનો લેખ મહા મંત્રીજી સાહેબે આપ્યો હતો તેમાં મુખ્ય અગ્રેસર શ્રીયુત વિદ્યોત્તેજક પરોપકારી ફતેચંદભાઇ તેમ નવાગામ પાઠશાળાના સેક્રેટરી નાગજીભાઇ વીરચંદ તેમજ જવાસ નિવાસી શેઠ કપુરચંદભાઇ ગલજી મળી પંચોને સમજાવી કુરીવાજો કાઢી સારા રીવાજો દાખલ કર્યા છે. તેમ ફીજુલ ન્યાતવરાના ખર્ચા ઘટાડી ટુંકાણમાં આટોપાય તેવા કાયદા ઘડયા છે. અને આ પંચ કમેટીમાં મહા મંત્રીજી સાહેબે પંચોને બહુ ઉપદેશ આપી ન્યાતવરાના ખર્ચા તેમ કુરીવાજો કઢાવ્યા છે, અને હજી પણ આશા છે કે ખડક દેશને સારા પાયા ઉપર લાવશે, એવી આશા છે.

(૯) આ ખડકદેશ એવી રીતે શ્રીયુત સ્વજાતિભૂષણ દાનવીર શેઠ ચોકસી લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ તેમ વિદ્યોત્તેજક પરોપકારી ફતેચંદભાઇ મહામંત્રીના પ્રયત્નથી આ ખડકદેશ સુધર્યો છે માટે આ ખડક પ્રાન્ત એ બંને શ્રીયુતોને વારંવાર ધન્યવાદ આપે છે કે આવા શ્રીયુતો વારંવાર ખડકમાં પધારી ઉત્તેજન આપે કે તેથી સારે રસ્તે દોરાય.

लागणी या प्रेम.

લે:–શા. ચુનીલાલ વીરચંદ ગાંધી–મુંબઇ.

લાગણીને મર્યાદા છે, તેને હદ છે, અને નથી, તેનું રૂપાંન્તર છે, તેની શાખાઓ છે, સૌમાં વ્યાપક છે, સૌના જીવનનું એ ચેતન છે, પ્રેરણા છે, જ્યાં જ્યાં જેવો અધિકાર તેવોજ વેગ લાગણીનો હોય છે. અધિકાર ઉપરાંતની લાગણી એ વિકાર છે.

"પિતા, પુત્ર, સ્વામી, સેવક, ભાઇ બહેન, પતિ, પત્નિ, દરેકની ભાવના અને પરિવર્તનને હદ છે."

સૌ સૌને લાગણી પુજનનો અધિકાર છે. "હદ" વ્યવહારમાં અગ્રસ્થાન ભોગવે છે. ત્યારે લાગણીની વિશુદ્ધતા ચહાનારાઓને માટે સર્વસ્વ હોમે છે. પોતાના બાળકો, સ્ત્રી, અને કુટુંબને દુઃખી સેવકને સર્વસ્વ આપીને માલીક ધર્મ પૂર્ણ થયો માનવો, એ લાગણી વ્યભિચાર થયો, કારણ કે લાગણીની હદનું ઉલંઘન થયું કહેવાય, એકની પ્રત્યે નીર્દયતા ને બીજાની પ્રત્યે ઉદારતા એ અન્યાય કહેવાય. લાગણી જે સમજે છે, તે કોઇને અન્યાય નજ કરે.

"એક યુવક એક કુમારીકા પ્રત્યે લાગણી પ્રગટાવે...કુમારીકા પ્રત્યેના પ્રેમને હદ નથી, કારણ કે તેમનો સહકાર પવિત્રપણે લગ્નમાં ફેરવાય અને તેઓ પ્રભુતામાં પગલાં મુકે તો એ પાપ નથીજ. પરંતુ યુવક ન્યાય પરાયણ હોવો જોઇએ કે જેથી બીજાને દુઃખી ન થાય.

"ત્યાગ મુર્તિ સમી વિદ્યમાન કોઇપણ આત્મા લાગણીથી જોઇ શકે છે. તેની સાથે સહકાર રાખી શકે છે, પરંતુ તેને હદ છે. એ હદ વીકારોને અટકાવી શકે છે અને નિર્દોષ ભાવનાને અમર રાખી શકે છે.

"વિધવા હોય કે સધવા હોય, પુરૂષ હોય કે સ્ત્રી હોય, સૌને લાગણી હોય છે, સૌને પ્રેમ ગમે છે, સૌ અનુરાગોથી ભરેલા છે. વીકાર જ્યાં જ્યાં પ્રગટ થાય ત્યાંની ભુમિકાને–વિકારને સમજનારા ડાહ્યા જનોએ પવિત્રતાની અંજલિઓનાં સીંચન કરી પવિત્ર બનાવી લેવી જોઇએ.

"સરસ્વતિચંદ્ર ને કુમુદની ભુમિકા જેટલી સ્પષ્ટ સમજાતી શકે છે તેટલીજ તે સમજવાની જરૂર છે.

સરસ્વતિચંદ્રને કુમુદનો અસીમ પ્રેમ મર્યાદાશીલ છે. લાગણીથી ભરેલો એ સહકાર માનવતાનું ભાન કરાવે છે. કુમુદ તેને ચહાય છે. છતાં કુમુદ પ્રમાદધનની પત્ની બની ગઇ છે. એટલે કુમુદ લાગણીની મર્યાદા બાંધી જીવે છે. સરસ્વતીચંદ્ર તેની લાગણીને સજીવન ને પવિત્ર રાખવા સંયમ વ્હાલો ગણી કહે છે—

"અહો ઉદાર લાગણીરે,
સતિ તું શુદ્ધ શાણીરે.
"ધુરે નાતે નીભાવી લે,
પડ્યું પાનું સુધારી લે.

એ આખી એ કવિતા પ્રેમની મર્યાદાનો દુર્ગ છે. લાગણીનો અભેદ કીલ્લો છે. કુમુદ અને સરસ્વતીચંદ્રના જેવી મર્યાદામય લાગણીના અધિકારો જીવંત છે ને તે કાયમ રહેશે એમાં શક નથી. લાગણી બે પ્રકારની છે.

જી હા ને હાજીના શબ્દોથી મતલબ પુરી કરનારા, માલીકને ઠગનારા, નીચે વળી વળી સલામો ભરનારા, દાંભિક જનોની એ નીતિને મૂર્ખ માલીકો લાગણી અને વીવેક સમજી મલકાય છે...આ પણ લાગણી છે.

સેવકોને મોટી મોટી લાલચો આપનારા ધર્મ ઢંઢેરો પીટનારા માલીકો...પ્રજાએ ઉપરથી માનવતા દરસાવે છે. આદર્શમય નોકરીનેજ જીવન માનનારા માલીકો સેવકને પુત્ર માની ન્યાય આપે છે. ત્યારે કેટલાએ ગરીબોના અમજીવી પૈસા ને રોટીના તરસ્યા માલીકો–નોકરો પાસેથી પશુની માફક કામ લે છે. નીર્દયી આજીવીકા આપતાં

હૈયાં બાળનારા—આજીવીકા ઉપર કાપકુપ મુકવાની તક શોધનારા માલીકોની સાકર જેવી જીભ એ પણ ભોળા માણસો લાગણી સમજે છે.

"ધર્મ રક્ષક, અને કુટુંબીક કુળની અમરવેલ છે. એવા આજના નવયુગના નવ સર્જકો બાળકોને ઉછેરનારા માબાપો ફરજ સમજી ઉછેરે છે, ભણાવે છે. ત્યારે કેટલાએ કસાઇઓ—સુકુમાર કન્યાને વીશમી સદીની શાહા જોગની હુંડી સમજે છે. ને પુત્ર રત્નોને કમાઇને લાવનારા યંત્રો સમજીને ઉછરે છે. આ પણ લાગણીઓજ છે. બેઉની ભાવના જુદી છે...

"એક મીત્ર હમેશને માટે એક સરખો ચહાય...સુખ દુઃખમાં સાથ આપે...અને વફાદારી સાચવે...તે ખરી લાગણી યા પ્રેમ કહેવાય.

કોઇ સમય દર્શન નહિ થાય, રસ્તામાં સામે આવતા જોઇનેજ પંથનો સીન ટ્રાન્સફર કરી રફુચક્કર થતા હોય ? કામકાજને લઇને કોઇ સમય મદદ માગીએ ત્યારે સગવડ નથી, યા ફુરસદ નથી કહી પતાવે...તેવા મીત્રો......... તમારે ત્યાં સલામો ભરતા આવે, કુદરતી પ્રેમનાં ભાગવત વાંચતા આવે. સીનેમા નાટકના પાસો લેતા આવે. તમારી જરૂરીયાત પુછતા આવે. લાગણીનાં પુર વહેવડાવતા આવે ત્યાં તમારી સ્થાતિનો વીચાર કરી નિર્ણય કરી લેવો કે... ભાઇ સાહેબનો કંઇ સ્વાર્થ છે. પૈસા ઉપર તેની વરાપ હોય છે. કે સંસારને ધુળમાં મેળવી દેવાની કપટ બાજી ખેલાય છે. વીકારોની વાસનાની લંપટતા હોય છે, ત્યારે મુર્ખાઓ એમ સમજે છે કે...આતો બલાઇ છે. લાગણી છે...લાગણી તો એક સરખી હોય છે. સુખ દુઃખમાં તેની ગતી સ્થીર હોય છે, પરંતુ તે આજનો જીવ જુદી જાય છે.

જાત કજાત બને છે, ત્યારે કજાત જાત બને છે. પતિવ્રતા સ્ત્રીની લાગણી અને એક વિષયાંધ અબળાની લાગણીમાં આકાશ જમીનનું અંતર હોય છે. રાત્રિનું પરિવર્તન 'સાદું' સ્વચ્છ ને સ્નેહને વીકસાવે છે, પ્રાણ પાથરે છે, સ્નેહીના બોલ બોલતાંજ ઝીલે છે. ત્યારે વાચાલતી અબળા... લાગણીની કૃતીમતાથી ઠગે છે. સ્નેહને બદલે વાસનાને પોષે છે. પતિને હૃદયથી ધીકારે છે.

સતી સેવાથી સંતોષ માને છે. ઘરના મળતા રોટલાથી સ્વર્ગ સુખ માણે છે ત્યારે વાસનાની અધિષ્ઠાતા રમણી દરબદર ભટકે છે. ને વિકારોને વધારે ને વધારે સતેજ કરે છે.

સતી સત્ય બોલે છે, ત્યારે દુરાચારીણી પળે પળે જુઠું બોલે છે. સતી ભુલ કબુલી પશ્ચાતાપ કરે છે, ત્યારે પાપીણી...ગુન્હો કબુલ કરવામાં પાપ માને છે. એક પાપને છુપાવવા અનેક પાપ કરે છે. પતિવ્રતાનાં વ્રત લે અને તોડે. પોતાનો અમુલ્ય દેહ કીચડમાં રગદોળતાં લેશ માત્ર અનુકંપા ન કરે. સૌન્દર્યનું લીલામ કરવામાં આનંદ માણે...કહો સતિ ને પાપીનીમાં કેટલું અંતર હોય છે. બેઉની લાગણીને મોટામાં મોટુ અંતર છે.

લાગણીના રંગજ એવા છે કે—હંસની સાથે હંસ થવાય છે. અને ગર્દભની સોબતે મુર્ખ થવાય છે.

" લાગણી એ શાન્તીનો સાગર છે. "
" લાગણી એ આનંદનો ખજાનો છે, "
' લાગણીમાં નીરંતર અમૃત છે. "

લાગણીને ભુલી શકાય નહિ એવી એ બક્ષિસ છે.

"અવગણના, અવિવેક, નીચ માનવનો સહકાર, ભુલ ઉપર ભુલ થવી, દુર્જનને સજ્જન ગણવો, અને અવિચારની અવધી, દુરાગ્રહનો હઠયોગ, ત્યાં લાગણીનો નાશ છે. અને લાગણીનો નાશ થતાં મનુષ્યનો પણ નાશ થાય છે."

"વચન પર પ્રાણ ન્યોછાવર કરવા, પરંતુ તેવા વચનમાં નેકી હોય તોજ મિત્રની સજ્જનતા હોય, લાગણીને સમજનારો હોય, સ્નેહને શોભાવનારો હોય, નીઃસ્વાર્થતાનો ચમકતો સીતારો હોય, પ્રમાણીકતાનો પુજારી હોય, આદર્શનો આશક હોય, દરિદ્રી હોય, દુર્બળ હોય, સર્વાંગત

હોય, ત્યાં ત્યાં નેક અને ટેક શોભે છે, ત્યાંજ અપાવેલાં બળીદાન દીપે છે."

લાગણીને ઊભરાવો, તમારી ભાવનાને પંથે ફુલડાં વેરો, તમારા સુહૃદયમાં-સદ્ વિચારોનું સીંચન કરો, સૌને પોત પોતાના પાપે મરવા દો, તમારી લાગણી કચડાતી હોય-ત્યાં પોકાર કરો. તમારી ફરજ ડુબતી હોય ત્યાં વાચાળ બનો, તમારી લાગણીને અમર રાખો.

'અમર રહો-લાગણી!"

—⋙⋘—

દીક્ષાનો ઉમેદવાર રૂપચંદ.

ભાઇ રૂપચંદ ડીસાલાલ જાતે દિ. જૈન નૃસિંહપુરા જ્ઞાતિના છે અને પરતાપગઢના વતની છે. તેમના વડીલ બહેન શ્રીમતી ગેંદીબાઇ તરફથી હમારા મંડળપર ૧ પત્ર તા. ૨૬-૫-૩૦ અને અને બીજો તા. ૨૮-૫-૩૦ એ એમ બે પત્રો આવ્યા જેમાં લખ્યું હતું જે-મારો ભાઇ રૂપચંદ મુંબાઇમાં શ્વે૦ સાધુ પાસે દિક્ષા લેવાનો છે એવી મને ચોકસ ખબર મળ્યા છે. મને ફકત તેનોજ આધાર છે તેને તમો દીક્ષા લેતાં હાલ તુરત રોકો અને પરતાપગઢ આવે તેમ કરો.

આ પત્રો ઉપરથી હમોએ, આ બાબત શ્વેતાંબર સમાજને લગતી હોઇ જૈન શ્વે. કોન્ફરન્સ, જૈન યુવકસંઘ, અને શેઠ નગીનદાસ કરમચંદસંઘવી, શેઠ જીવતલાલ પરતાપસી તથા અંધેરીના શ્વે. જૈન સંઘ (જ્યાં ભાઇ રૂપચંદને તા. ૩૧-૫-૩૦ એ દિક્ષા અપાનાર હતી) ને પત્રો લખ્યા કે આપ ભાઇ રૂપચંદને તેના વાલી અને દિ. જૈન સંઘની રીતસર સંમતી લીધા સિવાય કોઇપણ શ્વે. જૈન સાધુ બારવના કોઇપણ ભાગમાં દીક્ષા ન આપે તેમ તુરત વ્યવસ્થા કરો અને એ રીતે દિ. જૈન સમાજને નાહક ઉશ્કેરણીથી બચાવો. હવે ભાઇ રૂપચંદ અંધેરીથી તા. ૩૦-૫-૩૦ એ કઇ રીતે આવ્યો તે જણાવીશ.

તા. ૩૦ મા મેની સાંજ સુધીમાં જૈન શ્વે૦ કોન્ફરન્સ સિવાય કોઇ તરફથી હમોને હમારા પત્રોનો જવાબ ન મળ્યો અને રાત્રે ૯ વાગે હમોને ખબર મળી કે કાલે (તા. ૩૧-૫-૩૦) સવારે બીજા દીક્ષા લેનાર ભાઇ સાથે ભાઇ રૂપચંદને પણ દીક્ષા અપાવાની છે, આ સાંભળી મેં તુરતજ આ દીક્ષા અટકાવવા માટે મુંબાઇના શ્વે૦ જૈન સંઘ જોગ એક અપીલ પ્રસિદ્ધ કરવા 'હિંદુસ્તાન' પત્ર પર મોકલી, (જે તા. ૩૧-૫-૩૦ ના સવારના 'હિંદુસ્તાન અને પ્રજા મિત્ર'માં પ્રસીદ્ધ થઇ છે) અને ભાઇ જવેરીલાલ ચુનીલાલજીને રૂપચંદને મળી ચોકસ ખબર મેળવવા અંધેરી મોકલ્યો. ભાઇ જવેરીલાલ શેઠ નગીનદાસને બંગલે જઇ રૂપચંદને મલ્યો. અને તેને દીક્ષા આપવાની છે તે સંબંધી ખુલાસો પૂછ્યો તેણે બંગલામાં કઇ વાત કરવાંની ના પાડી અને જવેરીલાલ સાથે બહાર ગયો અને વાતચીત કરતો કરતો સ્ટેશન નજદીક તેઓ આવી પહોંચ્યા જ્યાં ભાઇ જગમોહનદાસ પોતાના અંગત કામસર ગામમાં જતાં હતા તે તેઓને મલ્યા. જગમોહનદાસે પણ રૂપચંદને તેની દીક્ષા સંબંધી પૂછતાં તેણે જણાવ્યું કે મારી ઇચ્છા હતી પણ મારી તે માટે યોગ્યતા નહોતી એમ કહી ગઇકાલે એ વાત મોકુફ રાખવામા આવી હતી પરંતુ આજે રાત્રે નગીનદાસ શેઠને બંગલે દિ. જૈ. યુવક મંડળના શેઠ પર આવેલા પત્ર પર વિચાર કરવા અત્રેના મુખ્ય માણસો ભેગા થયા હતા અને ચર્ચા દરમ્યાન એવા ઠરાવ પર આવ્યા છે જે યુવકસંઘવાળા અને આ દિ. મંડળ બધા એકજ લાગે છે તેમનાં કહેવાપર દિ. જૈન સમાજના આ ભાઇને તો કાલે જરૂર દીક્ષા આપવી જોઇએ.

હું ઇશ્વરના સોગન ખાઇ કહું છું જે મારી દીક્ષા લેવાની હવે બીલકુલ ઇચ્છા નથી અને મને શેઠ ઇચ્છા વિરૂદ્ધ દીક્ષા અપાવશે એમ લાગે છે. માટે તમો મને અત્યારે જો મગનમામા પાસે મુંબાઇ લઇ જાઓ તો સારૂ. તેમની સલાહ લઇ

ઠીક લાગશે તો પાછો અંધેરી આવીશ નહિતો કંઇ નહિ.

બાદ એ ત્રણે જણા સ્ટેશન પર ગયા જ્યાં રૂપચંદે જણાવ્યું કે જતો આવતો શેઠનો કોઇ માણસ મને જોશે તો ઠીક નહિ થાય માટે મોટરમાં જઇએ તો ઠીક તે પરથી જવા આવવાની મોટર ભાડે કરી તે વખતે ૧૦ વાગ્યા હતા બરાબર ૧૦॥ વાગે મુંબાઇ આવ્યા. જવેરીલાલે મને ઉપરોક્ત હકિકતથી વાકેફ કર્યો અને હું પણ તેઓ સાથે મગન મામાને ત્યાં જવા નીકળ્યો. બારાકુવા પાસે મોટર ઉભી રખાવી, તેના મામા જ્યાં રહે છે તે ઠેકાણે ગયા તે વખતે તેઓ ત્યાં ન હોતા, ત્યારે મેં રૂપચંદને કહ્યું કે રણછોડભાઇ તને મળવા ઇચ્છે છે માટે તારી ઇચ્છા હોય તો આવ, ત્યાં જઇને પછી અહીં આવીએ. તેણે ના પાડવાથી હમો પ્રીનસેસ સ્ટ્રીટ રણછોડ ભાઇને ત્યાં ગયા. ત્યાં મેં તેને તેની બ્હેનના પત્રની વાત કરી અને રણછોડભાઇએ પણ તેને કહ્યું કે તારી મોટી બ્હેન ગેંદીબાઇનો માંગરોળથી રજીસ્ટર પત્ર આવ્યો છે અને તેમાં લખ્યું છે જે કે ભાઇ રૂપચંદને દીક્ષા લેતા રોકજે અને પરતાપગઢ મોકલવાને માટે મારી તને સલાહ છે. તારી દિક્ષા લેવાની ઇચ્છા નથી ત્યારે તું હવે અંધેરી ન જા. અને તારી બ્હેન પરતાપગઢ બોલાવે છે માટે પરતાપગઢ જા. બાદ તે કામ ધંધો શું કરે છે એમ પૂછતાં તેણે કહ્યું કે પહેલા કાપડની ફેરી કરતો હતો અને હાલ લગભગ ૬ માસથી નગીનદાસ શેઠને ત્યાં છું. પગાર નક્કી કર્યો નથી. ત્યાંજ જમું છું અને મોટે ભાગે (શ્વે૦ મુનિ) રામવિજય મહારાજ પાસે મારે રહેવાનું થાય છે. આટલી વાતચીત થયા બાદ હમો ત્યાંથી નીચે ઉતર્યા અને મોટરમાં બેસી બારાકુવા પાસે આવ્યા જ્યાં જો મગન મામાને ત્યાં જવું હોય તો ત્યાં, અંધેરી જવું હોયતો અંધેરી, જ્યાં ઠીક લાગે ત્યાં જવા કહ્યું. તેણે કહ્યું કે મગન મામાને ત્યાં જાઇશ અને ત્યાંજ સુઇ જાઇશ એમ કહી સવારે અંધેરી જવું પડે તો જવા માટે ગાડી ભાડાના પૈસા ભાઇ જવેરીલાલ પાસે લઇ તે તેના મામાને ત્યાં ગયો. હમો હમારે ઘેર ગયા. આ વખતે ૧૧॥ વાગ્યા હતા.

આ ઉપરથી જોઇ શકાશે કે ભાઇ રૂપચંદની સહી કરાવી લઇ તા. ૧૦-૬-૩૦ ના મુંબાઇ "મુંબાઇ સમાચાર"માં જે હેવાલ બહાર પાડ્યો છે તેમાં જણાવેલ હકીકત તેને જબરજસ્તી કરવાની, લાલચ આપવાની વગેરે વાતો તદન સહરાગત ખોટી છે.

જે શ્વે. સાધુ પોતાની જુલ્મગારની કાર્યવાહીથી દીક્ષા માટે અયોગ્ય એવા બાળકોને દીક્ષા આપી દેશના કાર્ય માટે અને તેમના સમાજમાં ક્લેશ ફેલાવનાર તરીકે અત્યંત જાણીતા થએલા છે, જેમની ત્યાગ અને વૈરાગ્યની વાતો પ્રત્યે હમોને માન છે છતાં તેમને હમો હમારા એક શ્રી આચાર્યથી વધુ ઉંચા પદધારી નથી લેખતા. તેમની પાસે એક અજ્ઞાન દિ. જૈન ભાઇ કે જેને મુનિ ધર્મ તો શું, શ્રાવક ધર્મનું પણ પુરૂ જ્ઞાન નથી તેને હાલ દીક્ષા ન લેવાનું કહેવા માટે તેમજ એ શ્વે. સાધુને તેના વાલી અને દિગંબર જૈન સંઘની સંમતી લીધા સિવાય દીક્ષા ન આપે એમ સુચવવા માટે મંડળના એક મંત્રી તરીકે હું તદન વ્યાજબી હતો એમ સૌ કોઇ કબુલ કરશે. વળી ભાઇ રૂપચંદના ઉપરોક્ત નિવેદનથી, શેઠ જીવતલાલ તેની દીક્ષાની વાતથી તદન અજાણ્યા હતા એવુ તેમનું કહેવું પણ ભ્રમ ભરેલું લાગે છે. છેવટે હું ભાઇ રૂપચંદને સલાહ આપું છું કે આ ખોટી ફંદ જાળમાંથી ખસી જઇ વાસ્તવીક આત્મોન્નતિ અર્થે પૂર્વાપર વિરોધ રહિત આગમ ગ્રંથોનું અવલોકન તેમજ મનન કરે અને આચરણ કરે તથા જ્યારે સાચો વૈરાગ ઉત્પન્ન થાય ત્યારે બ્રહ્મચારી, ક્ષુલ્લક, ઐલક પદ અનુક્રમે ધારણ કરી જેને હાલ પોતે અસાધ્ય માને છે તેવી દિગંબરી દીક્ષા ધારણ કરી આત્મ કલ્યાણ કરે.

મુનીલાલ વીરચંદ ગાંધી.

મંત્રી, દિ૦ જૈન યુવક મંડળ-મુંબઇ.

કુદરત એજ કર્મ.

હરીગીત છંદ.

કુદરત કરે તે કોઇથી, કેહ્યું નવ કેહાય છે,
શાસ્ત્રો અને પુરાણુમાં, જશ તેહના ગોવાય છે.
જ્યાં હશે [illegible] કુદરત કરે ધરા પરે,
ધરા [illegible] પળ.. [illegible] તેજ છે કુદરત ખરે.
રામચંદ્ર વનમાં ગયા ને, પાંડવો દ્યુતને રમ્યા,
કૃષ્ણજી શ્રીકુમાર ધારી, નેમજી કપરે છર્યા.
સીતા હતી સતી છતાં, રાવણ ગયો પળમાં હરી,
કુદરત તણી માયા બધીએ, અમ નવ કોથી કળી.
કુદરત કહો કે કાળ કહો, વળી હેહ કે પ્રભુ કહો,
તગદીર કે નશીબ કહો, સૌ ભાર કર્મોને ધરો.
છે નામ સર્વે એક વસ્તુ, શાસ્ત્રમાં જુઓ બધે,
ઋષિ અને મુનિ બધા છે, વશ એ કુદરત કને.
ઉદય જ્યાં છે ભાગ્યનો, સૌ સુખ ત્યાં સોહાય છે,
અવળું હશે જ્યાં ભાગ્ય ત્યાં, સૌ દુઃખ મય દેખાય છે.
વિરા તમે સૌ સત્ય માની, કર્મ રૂડાં આદરો,
મોહન કહે અક્ષરંત બનીને, મુક્તિ નારીને વરો.

સુકૃતથી નિર્વાણ.

ગઝલ.

જગત જંજાળની બાજી, અમોલા જીવ ખેલે છે,
ખરી આત્મ તણો રસ્તો, અહો વિરલા કો છોડે છે. ૧.
પિતા-તનુ-[illegible] ભગિની, અને જે નાર અપની છે,
જીવન જ્યોતિ તણાં સ્નેહી, વિનાશે તેજ વેરી છે. ૨.
જગતમાં જાગીને જોશો, બધી માયાજ કર્મોની,
બધાયા કર્મના મારે, બધી બાંધલ ધર્મોની. ૩
કરેલાં કર્મની શિક્ષા, જગતમાં તેજ પામે છે,
બધાં જગ પ્રાણીઓ સર્વે, નયન બંધાયો રામે છે. ૪.
પ્રભુના દ્વારમાં સરખા, મનુષ્યોનેય પ્રાણી છે,
કુકર્મે ત્યાગ કરી દ્વારે, ખરીત શિક્ષા સમાણી છે. ૫.
કરે સુકૃત જે પ્રાણી, સ્વરગ રસ્તે સિધાવે છે,
અહો નર ભવ પામીને, મોહન નિર્વાણ પામે છે. ૬.

મોહનલાલ એમ. શાહ કાણીસાકર-કપાસા.

सूचना—इस अंकके साथ दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरतका "जैन ग्रंथ संग्रह" बांटा गया है। पाठक उसे सम्हाल के व संग्रहित रक्खें।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चंदावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

दिगंबर जैन

सम्पादक:-मूलचन्द किसनदास कापडिया-सूरत।

वर्ष [illegible] अङ्क १०

वीर सं० [illegible] श्रावण.

विषयानुक्रमणिका.

क्षमावणीके कार्ड १॥) सैंकड़ा

क्षमावणीकी चिट्ठियां ॥) सैंकड़ा

मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-सूरत।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २) विशेषांक मूल्य ॥)

ब्र० मोतीलालजी वर्णी—का सिवनीमें ता० १७ जुलाईको स्वर्गवास होगया है।

कानपुर—में पं० स्वरूपचंदजी सरोजने अपने पिताके स्मरणार्थ नवीन चैत्यालय स्थापित करके उसमें बाहुबली स्वामीकी प्राचीन प्रतिमा स्थापित की है।

पुत्र-जन्ममें दान—श्री० सेठ चंद्रभानजी साहूमल लि० ने वृद्धावस्थामें पुत्ररत्न प्राप्तिके हर्षमें १११)का दान जीवदया व विद्यादानकी संस्थाओंको किया है।

बड़वानी जीर्णोद्धार—का कार्य फिर चालू होगया है। मूर्ति भी ठीक कर दी गई है। मुनीम गुलाबचन्दजी फिर चंदेके लिये भ्रमण कर रहे हैं।

पोहरी जागीर—(ग्वालियर) में अकलंक आश्रमकी स्थापना हुई है। जिसके द्वारा शिक्षा प्रचार, औषधि वितरण, ट्रेक्ट प्रचार व वहांके तीर्थरक्षाका कार्य होता है। प्रमुखजैन जैन बड़े उत्साहसे कार्य करते हैं।

देवगढ़ जीर्णोद्धार—में पं० चंदाबाईजीने १५०), रा० ब० बिहारने २५०) दिये हैं। इस प्राचीन क्षेत्रके जीर्णोद्धारार्थ कुछ न कुछ दान अवश्य इस पर्यूषण पर्वमें "नाथूराम सिंघई, ललितपुरके" पतेपर भेजना न भूलें।

इन्दौरमें—तुक्ता विरोधक कानून होनेवाला है उसपर पं० मक्खनलालजी कासलीवाल आदि लोगादमी विरोध कर रहे हैं व कहते हैं कि यह तो धार्मिक प्रथा है! वाहरे पंडितजी व आपके मोले भक्त!

समवेदनापत्र पर आभार—हमारी धर्मपत्नी सौ० सविताबाईके असमयमें स्वर्गवास होनेके समाचार जानकर अनेक स्नेही, संबन्धी व पाठक पाठिकाओंने हमें करीब १५०–२०० समवेदना पत्र भेजे हैं, उन सबका पृथक् २ उत्तर न दे सकनेके कारण इस निवेदन द्वारा हम उन सब भाई बहिनोंका सहृदयसे आभार मानते हैं। संपादक।

पावापुरी केसमें हमारी सफलता।

सिद्धक्षेत्र पावापुरीके जलमंदिरमेंसे नवीन रख दी गई श्वे० जैन मूर्ति हटवाने आदिके लिये दि० जैनोंने जो दावा पटनाकी कोर्टमें श्वे० जैनोंपर मांडा था व जो पांच मासतक लगातार चला था, उसका फैसला तार द्वारा मिला है। इससे मालूम होता है कि इस केसमें पार्टीको हिस्सी हुई है। जो मूर्ति श्वे० जैनोंने जलमंदिरमें रख दी थी वह उनको हटाना पड़ेगी। शास्त्रमें दि० जैनोंका हक रहा तथा शुरूसे वहां जो भंडार भरा जाता था वह भी दि०का साबित हुआ। अर्थात् जलमंदिरका भंडार दोनोंका साबित हुआ। इन्तजाम श्वे० जैनोंका रहेगा। सांथ मंदिरमें अपना हक परवानगीसे रहेगा और हरएक पार्टीको अपना २ खर्च उठाना पड़ेगा। विशेष समाचार मिलनेपर प्रकट करेंगे।

वियोग—अमरावतीमें श्री० कन्हैयालालजी परवार जबलपुरमें ता० १० अगस्तको स्वर्गवास होगया। आपनी बीमारीके समय ही आपने १०००)का दान कर दिया था। आप परवार समाजके मुखिया व म्यु० कमिश्नर भी कई वर्ष रहे थे।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

दिगम्बर जैन

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततास, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम ॥

वर्ष २३वाँ | वीर सम्वत् २४५६, श्रावण, विक्रम सम्वत् १९८६. | अङ्क १०.

सम्पादकीय-वक्तव्य

गत अनेक वर्षोंकी भांति फिर भी इस वर्ष पर्यूषण पर्व आगया है।

हमारा पर्यूषण पर्व। मानों हमें वह सत्य मार्ग पर आरूढ़ करनेके लिये बारबार हमारे सामने आ उपस्थित होता है। यह बतलाता है कि यदि हमारे अन्दर प्रमादने निवास किया हो, धर्मकी अवस्था कम होगई हो और आत्मकल्याणकी ओर यदि प्रवृत्ति न हो तो सचेत होजाओ। पर्यूषण पर्व हमें "उत्तम क्षमाका" उपदेश करके अहिंसाके उच्च शिखरपर लेजाता है। कायरताका नाश कर वीरोचित भावना हमारे हृदयमें भरता है और अज्ञ एवं अविचारी प्राणियोंकी प्रवृत्तिपर कोप न करके उन्हें सन्मार्गपर लगानेका आदेश करता है।

जिनकी ऐसी धारणा है कि जैनियोंके क्षमा धर्मने देशमें कायरता फैलाई है, वे भारी भूलपर हैं। यह बात वर्तमानके अहिंसक सिद्धान्तसे स्पष्ट जाहिर होचुकी है। भारतवासी आज घोर उपसर्गोंको सहन करके अपने आत्मबलका परिचय देरहे हैं। गाली देनेवाले, मारने ठोकने और नाना प्रकारके दमन करनेवालोंके सामने शांति धारणकर अपनी अहिंसक वृत्तिका परिचय देते हैं। यही तो जैनियोंका क्षमा धर्म सिखलाता है। क्या कोई भी विचारशील मनुष्य इस सहनशीलताको कायरता कहनेका दुःस्साहस कर सकता है! उत्तम क्षमाका धारण करनेवाला या पूर्ण अहिंसक व्यक्ति अपनी आत्मशक्ति द्वारा महान् क्रूर परिणामी एवं शस्त्रधारी प्राणियोंको अपने वशमें कर सकता है।

किसी विद्वानका कथन है कि—

क्षमाशस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति ।
अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति ॥

अर्थात्—जिसके हाथमें क्षमारूपी हथियार है उसका दुर्जन पुरुष क्या कर सकता है? जिस भूमिमें घास आदि जलनेवाला पदार्थ नहीं हो वहांपर अग्नि गिरकर स्वयं शान्त होजाती है।

तात्पर्य यह है कि उत्तम क्षमाके अमोघ शस्त्रसे संसारपर विजय प्राप्त की जा सकती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि क्रोधीके सामने दूसरे क्रोधीका क्रोध द्विगुणित होजाता है, जब कि क्षमावानके सामने क्रोधका उपशान्त होजाना स्वाभाविक है। इसलिये उत्तम क्षमाका धारण करना प्रत्येक जैनका कर्तव्य है।

पर्यूषण पर्वसे हमें दूसरी शिक्षा "उत्तम मार्दव" धारण करनेकी मिलती है। जिसका सामान्य अर्थ मानका न करना है। जहां मान या अहम्मन्यताका ढोंग नहीं है वहीं सच्चा धर्म है। लेकिन जहां छोटे बड़प्पनका ख्याल रहता है, थोथी महत्ताका अभिमान रहता है वहीं अधार्मिकताका निवास होता है। जैनधर्म तो प्रारंभसे ही वैषम्यवादका विरोधी है। वह मनुष्यकी तो बात क्या, प्राणी मात्रसे प्रेमपूर्ण व्यवहार करनेका उपदेश करता है। दुनियांका कोई भी मनुष्य इस शासनमें प्रवेश कर सकता है।

हमारा धर्म धन बल विद्या और जातिमद आदिका पूर्ण विपक्षी है। जिसके पास जितना मद या अभिमान है वह धर्मसे उतना ही दूर है। यहां न तो व्यक्तिगत अभिमानको स्थान है और न जातिगत मदको अवकाश है।

श्री रविषेणाचार्य कहते हैं कि–

न जातिर्गर्हिता काचिद्गुणाः कल्याणकारणं ।
व्रतस्थमपि चाण्डालं तं देवा ब्राह्मणं विदुः ॥-पद्मचरित्र॥

अर्थात्–कोई भी जाति निंद्य नहीं है, किन्तु उच्चता तो गुणोंपर निर्भर है। कारण कि व्रतधारी चाण्डालको भी श्री जिनेन्द्र भगवानने ब्राह्मणके समान बतलाया है।

अब विचार करिये कि यहांपर निरभिमानी होनेका कैसा दिव्य उपदेश दिया गया है। हमारी समाज और धर्मके नाशका कारण एक खोटा अभिमान ही है। कमसेकम जैनधर्मियोंमें तो समान व्यवहार होना चाहिये था। मगर सखेद लिखना पड़ता है कि जैन जातिमें भी वैवाहिक संस्कार आदिमें छोटे बड़ेका ख्याल है! इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि अभिमान एवं पक्षपातको छोड़कर अपनी समाजमें अन्तर्जातीय विवाहकी प्रवृत्ति होजाती तो कमसे कम सामाजिक प्रेम बढ़कर कुछ अंशमें तो निरभिमानता आती।

और आपको मार्दवधर्मसे प्रेम है तो जातीमद तथा अन्य विघातक अभिमानोंका परित्याग कर पक्के जैन बनें, वास्तविक धर्मात्मा बनें। इसीमें कल्याण होगा। अन्यथा मार्दव धर्मकी भावना करनेमें तो आज अनेक वर्ष व्यतीत होचुके हैं। विवेकी वही है जो आचार्योंके उपदेशको अमलमें लाता है।

* * *

पर्यूषणपर्वसे तीसरा उपदेश "आर्जव" धर्मका मिलता है। जिसका अर्थ है माया अथवा छल कपटका न होना तथा बाह्य और आभ्यन्तर प्रवृत्तियोंका सरल रखना। जहां सरलता है वहीं धर्म है जबकि कपट घोर पाप है। सरलवृत्तिवाला सदा सुखी रहता है, जब कि कुटिल विचारवाला निरंतर आकुलित रहता है। कपटी पुरुष निर्दयी शत्रुसे भी कहीं अधिक हानिकारक होता है। कारण कि शत्रुसे तो मनुष्य सदा सावधान रह सकता है, मगर मित्रवत् आचरण करनेवाले व्यक्तिके कपटजालमें मनुष्य फंसकर सर्वस्व लुटा बैठता है। किसी कविने इसी भावको लेकर कहा है कि–

एक दुश्मन वह है जिसके हाथमें तलवार है।
एकको मीठी हंसी है जो छुरीकी धार है॥
सोचिये दो दुश्मनोंमें किससे डरना चाहिये?
उस हंसीके वारसे परहेज करना चाहिये॥

अब आप समझ सकते हैं कि कपटी पुरुषको कितना भयानक बतलाया गया है। जैन सिद्धान्तानुसार पुण्यपापकी व्यवस्था सरल और कपटी परिणामोंपर ही की गई है। इसलिये प्रत्येक आत्महितैषीका कर्तव्य है कि वह सरलतासे काम ले। सर्वदा निष्कपट होकर वर्तन करे। कपटी पुरुष अपने छलसे कुछ व्यक्तियोंको एक बार ही फंसाकर स्वार्थसिद्धि कर सकता है, जब कि सरल परिणामी जगतको हर्षोन्मुख करके स्वपरको सुखी बना सकता है। अतः प्रति मनुष्य अपने परिणामोंमें सरलता रखना चाहिये।

* * *

आचार्योंने चौथा "सत्य" धर्मका उपदेश दिया है। संसारके या पारलौकिक समान उत्तम कार्य सत्यपर ही निर्भर हैं। सत्यकी व्यवस्था विशाल है। मनुष्य यदि स्वार्थका परित्याग करदे तो सत्यका पालन स्वभावतः होने लगे। सत्यके सामने संसारको नत मस्तक होना पड़ता है। जो बात जैसी हो उसे बिना किसी भय या संकोचके वैसी ही कह देना यही सत्यकी सामान्य व्याख्या है। जहां सत्य है वहीं निर्भीकता है, और निर्भीकता ही निराकुलताकी प्रधान कारण है। सत्य और असत्यसे लाभालाभ उठानेके अनेक प्रमाण पाये जाते हैं। हम बांचते हैं सुनते हैं और नित्य अपनी आंखोंसे देखते हैं।

यदि सच पूछा जावे तो सत्यके आधारपर ही सारे संसारका व्यवहार टिका हुआ है। सत्यका जैन धर्ममें वही स्थान है जो कि अहिंसाका। बिना सत्यके अहिंसाका पालन नहीं होसकता। हमें अपने व्यावहारिक कार्योंमें, धार्मिक विचारोंमें और शास्त्रीय आज्ञाओंमें निर्भीकतासे प्रवृत्ति करना चाहिये। बस, सत्यका स्वतः पालन होता रहेगा। जहां स्वार्थ या कायरता आई कि सत्यका विनाश हुआ। इसलिये निष्पक्ष होकर सदा सत्यका सहारा लेना चाहिये। यही जैनधर्मका उपदेश है और यही मनुष्यको मनुष्यताका परिचय है।

* * *

पांचवां "शौच धर्म" बतलाया गया है। लोभका परित्याग करना ही शौच है। हालां कि बाह्य शुद्धिको भी शौच कहा गया है, मगर ऊपरसे साफ सुथरा होकर भी लोभसे परिपूर्ण गंदी वृत्ति रखनेवाला पुरुष पतित है, अशुचि है, और धर्मसे कोसों दूर है। जैनधर्ममें वास्तविक पवित्रताके सिवाय न तो ढोंगको ही स्थान है और न ऊपरी बनावट ही चल सकती है। यहां तो बाह्य पवित्रताके साथ ही साथ अन्तरंग शुद्धिकी सुख्य आवश्यकता है। "लोभ पापका बाप बखाना" इस वाक्यको ध्यानमें रखकर विचारना चाहिये कि लोभ कितना भयानक होता है। लोभी पुरुषकी आशायें वृद्धिगत होती जाती हैं। इसी लिये वह पराधीन होकर पापमें रत होजाता है। कहा गया है कि—

आशाया ये दासास्ते दासा भवन्ति सर्वलोकस्य।
आशा येषां दासी सः स्वामी सर्वलोकस्य॥

अर्थात्—जो आशाके दास होते हैं वे सर्व जगतके दास होजाते हैं। किन्तु जो आशाको अपनी दासी बना लेते हैं वे समस्त संसारके

स्वामी होजाते हैं। जब कि आशापर विजय प्राप्त करनेकी इतनी महत्ता बतलाई गई है तब क्यों न लोभवृत्तिको घटाया जावे? इसमें कोई संदेह नहीं है कि आशा और लोभको ठुकराकर मनुष्य विना मुकुटका सम्राट् होसकता है। लोभी पुरुषकी बात२में दीनता टपकती है, वह अपने संपत्तिका स्वयं भोग नहीं कर पाता, किन्तु वह दूसरेके ही काममें आती है। लोभी तो मात्र संचय कर करके पापको इकट्ठा किया करता है। इसलिये लोभवृत्तिका परित्याग कर संतोषपूर्वक अपना जीवन बिताना चाहिये, यही शौच धर्म है।

***

पर्यूषणपर्वमें छट्ठा दिन "संयम" का माना गया है। इंद्रिय और मनपर काबु रखते हुए प्रमाद रहित प्रवृत्तिका करना संयम है। उसको इन्द्रिय संयम और प्राणि संयम दो प्रकारसे कहा गया है। बाह्य इन्द्रियोंको विषय सेवनसे रोक लेना तथा परिणामोंसे भी विषयाकांक्षा पर विजय प्राप्त करना इंद्रिय संयम है। और समस्त प्राणियोंपर दया रखकर ऐसी प्रवृत्ति करना ताकि किसी जीवका न विघात हो और न उसे अपने निमित्तसे दुःख ही होने पावे, यही प्राणी संयम है। इसीको स्पष्ट करते हुये कहा गया है कि—

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो।
संयम रतन सम्हाल विषय चोर बहु फिरत हैं॥

मनुष्य विषय वासनाओं और मौजशौककी चकमकमें अंधा होकर अपने मार्गको भूल जाता है। यहांतक कि मनुष्यत्वको खो बैठता है। संयमी पुरुषकी प्रतिष्ठा धन बल विद्या और रूप-सम्पन्न पुरुषोंसे भी कहीं अधिक होती है।

खेद है कि वर्तमान जमानेमें संयमकी ओर बहुत कम लक्ष्य दिया जाता है। ज्यों ज्यों लोग संयमसे दूर होते जाते हैं त्यों त्यों विषय-लोलुपता और आत्मपतनके पास आते जाते हैं। हमारा धर्म हमें संयमसे रहनेका जिस खूबीके साथ उपदेश करता है, संभव है उतने उच्च दर्शनमें कहीं भी कथन नहीं मिलेगा। मगर दुःख है कि जैन समाजके बहुसंख्यक लोग संयमके बहुत पीछे हैं!

भारतमें ऐसे जबरदस्त आंदोलनके चलते हुये भी जब हमारी समाजसे विदेशी एवं अशुद्ध रेशमी वस्त्र और मखमलसे मोह नहीं छूटा है तब दूसरे संयमके विषयमें तो क्या कहा जाय? अगर आप सच्चे जैन हैं और संयम धर्मके उपासक हैं तब तो आपके शरीरपर विदेशी वस्त्रोंका टुकड़ा भी न रहना चाहिये। पवित्र जिनालयोंसे रेशमी और मखमली वस्त्र आज ही निकालकर विशुद्ध खादी होजाना चाहिये। यही तो बाह्य संयममें पूरा निमित्त कारण है। क्या हम आशा करें कि संयम धर्मको माननेवाली जैन समाज इस पर अमल करेगी? याद रहे कि बाह्य संयम अन्तरंग संयमके लिये जबरदस्त कारण है। तब ही आत्मकल्याण होसकेगा।

***

इसके पश्चात सातवें "तप धर्म" पर विचार करना चाहिये। "इच्छानिरोधस्तपः" अर्थात् इच्छाओंको रोकना तप है। यह भी आभ्यंतर

और बाह्य तपके भेदसे दो प्रकारका है । तथा मुनि और श्रावकके भेदसे भी दो तरहका बतलाया गया है । मुनिराजोंका तप तो समस्त आरम्भ परिग्रहका परित्याग कर निरंतर आत्मस्वरूपमें मग्न रहकर अतिदुर्धर हुआ करता है। परन्तु श्रावकोंका तप सहज-साध्य होता है ।

एकासन, उपवास आदि व्रत करना, सामायिक करना इंद्रियोंको खोटी प्रवृत्तियोंसे रोक लेना यह भी तप ही है । वास्तवमें तो मनको रोक रखना ही तपमें प्रधान कारण है । मनकी माफिक न चलकर आत्मा और विवेकके अनुसार चलनेवाला ही सच्चा तपस्वी है । यथा—

मनके मते न चालिये, मनका मता अनेक ।
जो मनपर असवार है ते साधु कोइ एक ॥

यहांपर मनको वशमें करनेका महत्व बतलाया गया है । हमारा कर्तव्य है कि अपनी आकांक्षाओंको कम करके मन और इंद्रियोंके विषयको संयत बना लेवें । और यथासाध्य आत्मसाधन करें, यही तप है ।

आठवां धर्म "त्याग" कहा गया है । इसका सामान्य अर्थ विषयकषायोंको छोड़ना और दान देना किया जाता है । मनुष्यकी महत्ता त्यागमें ही है । बड़े२ सम्राट और चक्रवर्ती तबतक महान नहीं कहलाये जबतक उनने त्याग नहीं किया था । दूरकी बात जाने दीजिये, महात्मा गांधीजी जबतक बैरिष्टरी करते रहे, और स्वार्थके लिये ही धंधा करते रहते रहे उन्हें तबतक कोई नहीं जानता था । जबसे उनने त्यागकी ओर अपना पग रखा और ज्योंज्यों आगे बढ़े त्योंत्यों लोगोंकी श्रद्धा उनके प्रति बढ़ती गई। और आज त्यागके माहात्म्यसे ही वे भारतमान्य ही नहीं, किन्तु जगत उन्हें श्रद्धाकी दृष्टिसे देखता है । त्यागकी अद्भुत सामर्थ्य है । मनुष्य जैसे२ त्याग करता है वैसे२ ही वह उच्च होता जाता है । तराजूके जिस पलड़े परसे ज्यों२ द्रव्य निकलता जाता है वही पलड़ा त्यों२ ऊंचा होता चला जाता है ।

मनुष्य यदि अपनी संपत्तिका सदुपयोग करना चाहे और अपनी कमाईको सफल बनाना चाहे तो इसका एक सरल उपाय त्याग ही है । लेकिन त्याग परिस्थितिको देखकर पात्रके अनुसार करना चाहिये । आज बड़ी भारी आवश्यक्ता ज्ञान दानकी है । इसके निमित्त जितना भी त्याग होसके करना चाहिये । जो पाठशाला, अनाथालय और विद्यालय तथा श्राविकाश्रम अपनी समाजमें चल रहे हैं, वे प्रायः समाजके दानी श्रीमानोंके सहारेपर ही चलते हैं । उनके निमित्त यथासाध्य त्याग करना चाहिये ।

दूसरा काम—जैनधर्मके प्रचारका है । उसके लिये उत्साही दानियोंका कर्तव्य है कि वे अपनी कठिन कमाईसे प्राप्त किये हुये द्रव्यसे जैन ग्रन्थोंको या नवीन ट्रैक्टोंको छपाकर अपनी ओरसे मुफ्त वितरण करावें । मात्र जैन समाजमें ही नहीं, किन्तु मनुष्य मात्रके हाथोंमें जैन ग्रंथ पहुंचकर उनके जीवनको सुधार दें, ऐसा प्रयत्न करना चाहिये । इसके लिये लाखों और करोड़ोंकी संख्यामें ट्रैक्ट वितरण करनेकी आवश्यक्ता है । इसके साथ ही साथ चारों दानमें यथोचित त्याग करना चाहिये ।

नवमां धर्म "आकिंचन्य" है। समस्त परिग्रहका परित्याग करके मोहपाशसे मुक्त होजाना यही उत्तम आकिंचन्य है। मगर हमें परिग्रहका प्रमाण करके आकांक्षाओंको सीमित करना चाहिये।

***

इसके पश्चात् दशमा धर्म "ब्रह्मचर्य" बतलाया गया है। इसकी महिमा अपरंपार है। फिर भी वह स्त्री मात्रका परित्याग या स्वदार संतोषके भेदसे दो प्रकारका कहा गया है। प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि वह कमसे कम १८ वर्ष (लड़की १४ वर्ष) तक अखण्ड ब्रह्मचारी रहे। पश्चात् विवाह किया जावे। गृहस्थावस्थामें रहता हुआ वह अपनी स्त्रीको छोड़कर बाकीके साथ मां बहिन और बेटीका भाव रक्खे। स्त्रियां भी पिता भाई और पुत्रकी कल्पना करके यथोचित् बर्ताव करें। यह भारतवर्ष इस पवित्र धर्मके लिये प्रसिद्ध है। यदि सच पूछा जावे तो आत्मशांति, ज्ञानवृद्धि और सुखमय जीवनके लिये प्रधान कारण ब्रह्मचर्य ही है।

इस प्रकार दश धर्मोंका उपदेश हमारे जैनाचार्योंने दिया है। यह पर्यूषण पर्व हमें उनके पालन करानेके लिये पुनः २ याद दिलाता है। आत्मशुद्धिका यह परम अवसर है। यदि ऐसे समय भी न चेत सके तो पर्यूषणपर्वका मनाना ही व्यर्थ समझना चाहिये।

तत्त्वभावना।

सत्याग्रहसंग्राममें जैनियोंका भाग।

गोंदिया-में जंगल सत्याग्रहमें केशरीमल दि० जैनको ४ मास व लक्ष्मीचंद परवार दि० जैनको ४ मासकी सख्त सजा हुई है तथा १४ जैनोंने अपनी विदेशी कपड़ेकी दुकानें बंद कर दीं। खंडवामें-रामचंद्र प्रे० जैनको ९ मासकी सजा हुई है। उदासरसीमें कातूरीबाई जैन व दुलीचंद जैनके नेतृत्वमें प्रभातफेरी निकलती है। मंदिरमें विदेशी वस्त्र पहनकर कोई नहीं आते। जबलपुर-में विदेशी वस्त्र बहिष्कारका आंदोलन जैनोंमें जोरपर है परन्तु सिं० गरीबदासजी म० इसमें रोड़ा अटकाते हैं! यह ठीक नहीं है। नजीबाबादमें विदेशी वस्त्र पहनकर मंदिर आना बन्द हुआ। आगरा-में बाबू कपूरचंद जैनका महावीर प्रेस जमानत मांगी जानेपर बंद कर दिया गया है। रोहतीमें ब्र० प्रेमसागरजी जलो कातनेका व खादीका खूब प्रचार करवा रहे हैं। अंकलेश्वर-में जेल निवासी देशभक्त सेठ छोटालाल गांधीकी धर्मपत्नी माणिकगौरीने जिला स्कूल बोर्डकी मेम्बरीसे स्तीफा दे दिया है। देवबन्द-में बा० ज्योतिप्रसादजीका जैनप्रदीप जिस प्रेसमें छपता था उसने तथा अन्य प्रेसोंने छापना मना कर दिया है। इससे जैन प्रदीप अभी बन्द पड़ा है। हाथरस-में परमदासजी जैन जेल गये। बेतुल-में दीपचंदजी जैन जमीनदारको जंगल

कानून तोड़नेके कारण १ वर्षकी सख्त सजा हुई। आगरा—में जैन सेवा मंडलने सत्याग्रह करके जैन मंदिरोंमें विदेशी वस्त्र पहनकर आना बंद करवा दिया। खेकड़ा—नेमीचंदजी जैन जेल गये। सभी भाई बहिन मंदिरमें स्वदेशी वस्त्र ही पहिनकर आते हैं। सूरत—के दि० जैन मंदिरोंमें स्वदेशी वस्त्र पहिनकर ही लोग आते हैं। मैनपुरी—में सेवाराम जैन व वसंतलाल जैन जेल गये। कटनी—में ४० जैन, जेल आचुके हैं। सिं० पन्नालाल जैन गांधेलीय खूब काम कर रहे हैं। अमरावती—में सेठ मंगलचंद परवारको व रतनलाल जैन अध्यापकको १-१ वर्ष सख्त कैदकी सजा हुई है। रोहतक—में रामकिशनदास जैन व भगत सुलदेवसिंह जैन १-१ वर्ष जेल गये हैं। मैनपुरी—के मंदिरोंमें देशी वस्त्र पहनकर ही जाना निश्चित हुआ है। गुजरानवाला—में तिलोकचन्द जैनको दो वर्षकी सख्त सजा हुई। रोहतक—में रामशरण जैनको २ वर्षकी सजा हुई थी वह अपील होनेपर ६ मासकी होगई। अमरावती—में रतनलाल काले १ वर्ष जेल गये। दाहोद में अंबालाल जैन डाक्टर पिकेटिंग करते पकड़े गये। रावलपींडी—में मद्य पिकेटिंगके कारण सुशीलाल जैन ६ मास जेल गये। लखनऊ—में स्वदेशी वस्त्र पहनकर मंदिर जाना निश्चित होचुका है। सूरत—सैयांके जैनीके भतीजे साकेरचंद जैन जो सिर्फ १९ वर्षका है उसपर पुलिसने दो केस चला रखे हैं। मैनपुरी—में संतलाल जैन जेल गये हैं।

बेरिस्टर चम्पतरायजी साहब—लंडन (विलायत) में सकुशल हैं। आपका पत्र है कि हम शीघ्र ही यहांसे लौटने वाले हैं अर्थात् हम ठीक ता० २४ नवम्बरको बम्बई आ पहुंचेंगे।

बांसवाडा—में ब्र० चुन्नीलालजी द्वारा खूब धर्मलाभ होरहा है। आपने एक माहतक अन्नमें सिर्फ चावल ही लेनेका नियम लिया है।

सूरतके—श्वेतांबर जैनोंमें पर्यूषणपर्वमें आगे व पीछे जीमन न करनेका एक पक्ष प्रयत्न कर रहा है। उसमें दूसरे पक्ष (रामविजय पक्ष) ने रोड़ा अटकाया और वे जीमन कर रहे हैं। बड़े दुःखकी बात है कि ऐसे एक जुलूसमें उन्होंने पत्थर फेंके पुलिस बुलाई व चौकल किया।

"वीर"—का सचित्र पर्युषण अंक दशलाक्षणी पर्वमें प्रकट होगा।

सिं० पन्नालालजी परवार पकड़े गये। अमरावतीके सुप्रसिद्ध नेता व परवार समाजके मुखिया, प्रा० धारासभाके सभासद तथा भारत० दि० जैन परिषद्के सभापति सिं० पन्नालालजी परवारके घर पांच सात दिन हुए आकर, पुलिस तलवार बंदूकका लाइसन्स जप्त करके तलवार बंदूकें ले गई। फिर गत ता० १९को फिर पुलिस सब इन्सपेक्टर आपके पास आया व कहा कि आपको अभी पुलिस सुप्रि० आदि बुलाते हैं, चलिये। सेठजीने कहा कि ठहरिये, हम भोजन करके आते हैं। तो उसने कहा कि नहीं, पहिले चलिये, जरासा काम है। इससे सेठजी तुर्त ही साथ हो लिये। कोतवालीमें पुलिस सुप्रि०ने आपसे कहा कि आप अपने बगीचेमेंसे कोंग्रेसके स्वयं सेवकोंकी छावनी उठा दीजिये। सेठजीने कहा कि हमारी धर्म-

आज्ञा सबके लिये है। हम किसीको ठहरनेकी मनाई नहीं कर सकते हैं, चाहे तो आप उन्हें वहां न ठहरने दें। इसपर पुलिस इकदम आप पर १४७ दफा लगाकर गिरफ्तार करके आपको ले गई, जिससे सारे अमरावतीमें सनसनी फैल रही है।

तीर्थरक्षा फंड—हमारी भारत० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका चालू खर्च निभानेके लिये प्रतिवर्ष प्रति दि० जैन गृहसे १) तीर्थरक्षा फंडके नामसे लिया जाता है, उसमें गत वर्ष १९६०॥=)॥ कमेटीको प्राप्त हुए थे। इस साल भी तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री सेठ चुन्नीलाल हेमचंद जरीवाला हीराबाग, बंबई समा दि० जैन भाइयोंसे निवेदन करते हैं कि आगामी पर्यूषण पर्वमें भी मंदिरोंमें इकट्ठे होते समय सब भाई अपने गृह पीछे एक एक रु० तीर्थरक्षा फण्डका इकट्ठा करके बंबई भेज दें। एक वर्षके बाद घर पीछे एक एक रु० तीर्थरक्षाके लिये देना कोई बड़ी बात नहीं है।

ही० गु० जैन बोर्डिंग बम्बई—से हजारों रुपये प्रति वर्ष सैकड़ों विद्यार्थियोंको स्कोलरशीप दी जाती है। तथा विद्यार्थीके साधन सम्पन्न होनेपर वापिस ली जाती है जो द्रव्य दूसरे विद्यार्थियोंके सहायतार्थ काममें आता है। अभी ही (सोलापुर) माढाके वकील शिवलाल हीराचन्द गुजरने अपनी स्कोलरशीपके ४००) वापिस भेज दिये हैं। इस प्रकार अन्य विद्यार्थी जो बड़ी२ नोकरी या पेशा कर रहे हैं वे भी अपनी स्कोलरशीपके रुपये वापिस करें। ऐसी इसके मंत्री सेठ ठाकोरदास भगवानदासजीकी ओरसे सूचना की जाती है।

चौरासी मथुरा—में आचार्य श्री शांतिसागरजी सिंहनिष्क्रीडित व्रत, मुनि नेमिसागरजी वसंत रुद्रोदर व्रत व मुनि नमिसागरजी लघु निष्क्रीडित व्रतके कई उपवास कररहे हैं। तथा क्षुल्लक ज्ञानसागरजी भी आंतरेसे पंचकल्याणक व्रतके १२ उपवास कररहे हैं। वहां दर्शनार्थ व आहारार्थ अनेक जैन भाई आते रहते हैं। चौरासीमें करीब १९ चौके लगे रहते हैं।

न्यायतीर्थ हुए—अबके साल जिनराज इन्दौर, बंशीधर बनारस, लालबहादुर व बर्द्धमान पार्श्वनाथ मोरेना विद्यालयसे "न्यायतीर्थ" की परीक्षामें पास हुए हैं। बधाई !

सौ० चिन्नम्मादेवी—कलकत्ताके "काव्य मध्यमा" में पास हुए हैं। बधाई !

वेष्टन आदि भेट देंगे—दि० जैन मंदिरोंमें भेट देनेके लिये हमने खादीके वेष्टन व पथापरे तैयार कराये हैं। अतः जहां चाहिये हों हमसे मुफ्त मगा लेवें। चौ० बसंतलाल जैन फर्म—कमलापति पुत्तूलाल जैन इटावा।

अयोध्याजी जीर्णोद्धार फण्ड—में अभी १००)की सहायता मिली है। वहां अजितनाथ टौंकके जीर्णोद्धारका कार्य प्रारम्भ हुआ है। विशेष सहायताकी आवश्यकता है। दसलाक्षणी पर्वमें दान करते समय इस तीर्थको भी न भूलें।

इन्दौर छावनी—में दि० जैन ज्ञान प्र० सभा इसी वांचनालयकी स्थापना श्रा० ब० ८ को होगई है।

हमारा जहाजी और वस्त्र व्यवसाय।

[ले०-पं० परमेष्ठीदास जैन, न्यायतीर्थ-सूरत]

आजसे कुछ शताब्दियोंके पहिलेका यदि सच्चा इतिहास मिले तो मालूम होगा कि हमारे भारतवर्षके तमाम व्यवसाय इतने बढ़ेचढ़े थे कि संसारमें कोई भी देश उसकी प्रतिद्वंदितामें उत्तीर्ण नहीं होसक्ता था। भले ही हमारे देशकी वर्तमान परिस्थिति इतनी दीनहीन होगई हो कि छोटीसे छोटी चीजोंके लिये हमें विदेशका मुंह ताकना पड़ता है, परन्तु एक दिन वह भी था कि भारतवर्षमें आश्चर्यचकित करदेनेवाली उत्तमोत्तम वस्तुयें तैयार की जाती थीं। यहांपर पहिले जहाज या नौका व्यवसायके विषयमें कुछ विवेचन ग्रन्थान्तरोंके आधार पर किया जाता है।

हमारे प्राचीन जैन शास्त्रोंमें तो अनेक स्थलों पर जहाजोंका वर्णन आता ही है, इसके साथ ही ऋग्वेदमें, महावंशोनामक बौद्ध इतिहासग्रंथमें तथा कालिदासके रघुवंशमें भी नौका और जहाजोंका वर्णन है। एक इतिहासज्ञ लिखते हैं कि बंगालमें जहाज बनानेकी विद्याने जब अपूर्व उन्नति की थी तब बंबईके बने हुये जहाज भी विलायती जहाजोंकी अपेक्षा कई गुने अधिक अच्छे समझे जाते थे। महाराष्ट्रमें सबसे पहिले महाराजा शिवाजीने जहाज बनानेकी कारीगरोंको उत्साहित कर उत्पन्न किया था। मुगल लोगोंके प्रयत्नसे भी इस देशकी जहाजी विद्या बहुत बढ़चढ़ गई थी। विजयदुर्ग, कुलाबा, सिन्धुदुर्ग, रत्नागिरि, अञ्जनवेल आदि बंदरोंमें महाराष्ट्रीय जंगी जहाज बनानेके 'डाक' कारखाने थे।

जबतक हमारे देशमें यह नौका या जहाजका व्यवसाय रहा तबतक भारतवर्ष पूर्ण सुखी था। हमारे यहांके जहाज ऐसे वैसे मामूली जहाज नहीं बनते थे किन्तु बड़े२ जंगी, मजबूत और किफायतसे बनते थे। महाराष्ट्रके जलसेनापति आंग्रेकी देखरेखमें बने हुये एक जहाजमें ११९०० मन माल भरा जाता था। और इसमें १६से लेकर ७४ तक बड़ी२ तोपें सजाई जाती थीं। इसी प्रकार आनंदराव धुलपे सेनापतिके हाथमें ५० जहाज थे। उनमें हमेशा १०० तोपें रहा करती थीं। और प्रत्येक जहाजमें तीनसौ चारसौ वीर बैठकर युद्ध किया करते थे। उस समय अंगरेज और पोर्तगालवालोंके जहाज बहुत निकृष्ट समझे जाते थे।

भारतीय जहाजोंकी मजबूतीको जब आप देखेंगे तब मालूम होगा कि विलायती जहाज १२ वर्ष बाद बेकाम समझे जाते थे परन्तु बम्बईके सागौनकी लकड़ीके बने हुये जहाज ५० वर्ष तक ज्योंके त्यों रहते थे। यूरोपके बने हुये जहाज ६ बार भारतसे इंग्लेण्ड आने जानेमें बेकार होजाते थे किन्तु देशी जहाज ८ बार आने जानेपर भी ज्योंके त्यों बने रहते थे। और फिर वे इंग्लेण्डकी जंगी जलसेना द्वारा खरीद लिये जाते थे। देशी जहाज इतने मजबूत होनेपर भी कम खर्चमें बनते थे। विलायतमें यदि एक हजार रुपया लगे तो हिंदु-

खातेमें ७१०) में ही उससे कईगुना अच्छा जहाज बन जाता था ।

ईष्टइंडिया कंपनी अपने रोजगारके लिये इस देशमें व्यापारी जहाज तैयार कराती थी। सन् १७७० ईस्वीमें बंगालमें इसी कारणसे यह कारीगरी बहुत बढ़ गई थी। जब यहां बड़े २ अच्छी जहाज बनने लगे तब लन्दन और लिवरपूलके जहाज बनाने वालोंकी छाती जलने लगी और सन् १८११ ईस्वीमें एक अंगरेज लेखकने सरकारसे प्रश्न किये कि–" क्या यह दु:खकी बात नहीं है कि ईष्टइंडिया कंपनी जहाज बनानेके काममें हिन्दुस्थानी कारीगरोंको नियुक्त कर इंगलेण्डकी भयानक हानि और यथार्थ अनिष्ट साधन कर रही है? यदि यह इंगलेण्डसे हिन्दुस्थानमें पूंजी लेजाकर इसतरह खर्च करेगी तो यहां जहाजकी कारीगरी नष्ट जायगी, इससे अंगरेजोंकी भयानक अवनती होगी!" फल यह हुआ कि यहांसे लाखों मन सागौन विलायत जाने लगा और वहीं जहाज बनने लगे। तथा यहांकी जहाजी विद्या नष्ट होने लगी।

इसप्रकार मात्र जहाज बनानेकी ही विद्या भारतवर्षसे विदा नहीं हुई किन्तु छोटी२ नावें बनानेकी कारीगरी भी लुप्त होगई। पुरानी रिपोर्टोंसे पता चला है कि हिन्दुस्थानमें इस प्रकार जहाज थे–

सन्	जहाजोंकी संख्या
१८९७	३४१८६
१८९९	२३०२
१९००	१६७६
१९०१	१०४९

इसप्रकार जहाजी विद्या और उनकी संख्या घटनेसे लाखों आदमियोंकी रोजी मारी गई। एक नहीं अनेकों व्यवसाय इसी प्रकार हमारे यहांसे मिट गये और बेकारी फैल गई।

वस्त्र व्यवसाय।

जिस प्रकार हमारा जहाजी व्यवसाय मिटा और भारतवर्षमें लाखों आदमी बेकार होगये, उसी प्रकार इस देशका वस्त्रव्यवसाय भी नष्ट होजानेसे हिन्दुस्थान और भी भिखारी बन गया। बंगालकी वस्त्र कारीगरी सन् १७१९ ई०से ईष्टइंडिया कंपनीके कारण गिरने लगी। फिर भी बंगालके कारीगर जो कपड़े बनाकर विलायत भेजते थे वे विलायती मालकी अपेक्षा ५०–६० रुपया कम मूल्यमें बिकनेपर भी काफी लाभ प्राप्त करते थे। परन्तु धीरे२ विलायतमें जानेवाले हिन्दुस्थानी कपड़ोंपर सैकड़े पीछे ७०) से ८०) तक महसूल लगाया गया और हिन्दुस्थानमें विलायती कपड़ा बिना महसूल लिये ही फैलने लगा। इस प्रकार हमारा वस्त्र व्यवसाय शनैः शनैः नष्ट होने लगा।

मलबार प्रान्तसे कपालिको नामक छींटका कपड़ा विलायतमें बहुत जाता था। मगर सन् १७००में विलायती जुलाहोंके दरख्वास्त करनेपर पार्लियामेण्टने कानून बनाया कि हिन्दुस्थानकी कपालिको बिना रोकटोक विलायतमें न जाने पावे। उसके प्रतिगज पीछे डेढ़ आना टैक्स जारी किया गया। इतना ही नहीं, किन्तु सन् १७२० में यह कानून हुआ कि " जो विलायती लोग हिन्दुस्थानी कपालिको बेचेंगे उनपर २००) और जो खरीदेंगे उनपर ५०)

जुर्माना होगा ! *" इस प्रकार हिन्दुस्थानका कपड़ा विलायतमें जाना तो बंद हो ही गया, मगर एक और उल्टा कुफल यह हुआ कि सन् १७९४ ईस्वीमें भारतमें जब १५६ पौण्ड कपड़ा आया था तो १८०९ में १८४४०० पौण्डसे भी अधिक विलायती कपड़ा यहां घुस गया और धीरे धीरे ६१ करोड़ रुपया बस्त्र आने लग गया ! इस प्रकार भारतीय वस्त्र व्यवसाय नष्ट हुआ और करोड़ों रुपयाका विदेशी कपड़ा आने लगा।

भारतवर्षका वस्त्र इतना उत्तम बनता था कि सारा आलम उसका उपयोग करता था। सन् १९०१ में अमेरिकामें १३६३१ गांठे, सन् १८००में डेनमार्कमें १४१० गांठे, सन् १७९९ ई०में पुर्तगालमें ९७१४ गांठे, तथा सन १८२०में अरब और ईरानकी खाड़ीके तटवाले देशोंमें ७००० गांठे कपड़ेकी यहांसे गई थी। मुहम्मद रजाखांके समय बंगाली जुलाहे ६ करोड़ बंगालियोंको वस्त्र पूरा करके १९ करोड़ रुपयाके कपड़े विदेशोंमें भेजते थे। मगर इतने थोड़े समयमें ही आज हमारे देशकी कैसी दशा होगई है ? इधर तो हमारे तमाम व्यवसाय नष्ट हो चले और उधर देशमें विलासिता और आवश्यकताएँ बढ़ती गई ! आखिरकार फल यह हुआ कि देश दरदरका भिखारी बन गया !

वस्त्रोंका उपयोग।

३० वर्ष पहिले हिन्दुस्थानमें कपड़ेकी खपत ३०० करोड़ गजकी थी, परन्तु तब इसी हिन्दुस्थानमें ३८० करोड़ गज कपड़ा तैयार भी होता था। वर्तमानमें अपने ५५० करोड़ गज कपड़ा उपयोगमें लाते हैं। अगर हम कुछ किफायतसे कपड़ोंका खर्च करके ११० करोड़ गजमें ही काम चलाने लग जावें तो १०० करोड़ गज परदेशी वस्त्रका स्वयमेव बहिष्कार होजावे। परदेशी वस्त्र भारतवर्षमें ६० से ७० करोड़ रुपया तकका आता है। किन्तु इन १०० करोड़ गजमें १६० करोड़ गज कपड़ा तो खास ब्रिटेनका हो जाता है! इसलिये यदि देशरक्षाकी कुछ आकांक्षा हो तो कपड़ेका उपयोग कम कर देना चाहिये। यदि अपन ३ गजके बदले २ गज कपड़ेसे ही काम चलाने लग जावें तो तिहाई हिस्साकी बचत होने लगी। इससे एक तो कपड़ेकी कीमत घटेगी, दूसरे जो सरकारी महसूल वस्त्र पर देना पड़ता है उसमें ९ से १० करोड़ रुपया तककी बचत भारतवर्षको हो जावेगी।

याद रहे कि अब भारतवर्षकी रक्षा स्वदेशी वस्त्रोंके द्वारा ही होसकती है। इसलिये १-परदेशी वस्त्रका बहिष्कार करो, २-चर्खा या तकलीपर नित्य सूत कातो, ३-रुई धुनकना, पौनी बनाना आदि कार्य सीखो, ४-शुद्ध खादीका ही उपयोग करो, ५-खादी बुनना सीखो और स्थान२पर चर्खा क्लास स्थापित कराओ। यही भारतकी मुक्तिका सरल और अच्छा उपाय है। अगर आप देशहितैषी हैं तो इन कार्योंमें आजसे ही लग जाइये। ऐसा करनेसे ही देशका कल्याण होगा।

* Useful Arts and Manufactures of Great Britain PP. 363.

जैनधर्ममें क्या है?

(ले०—पं० गुलजारीलाल जैन चौधरी—उदयपुर)

(१)

चतुर्थकालमें इस जैन धर्मका बहुत ज्यादः फैलाव था। उसके माननेवाले सम्पूर्ण भारतवर्षमें थे। वही आज संकुचित क्षेत्रमें होरहा है। इसका कारण जैनियोंकी ही भूल है। वे अपने धर्मकी छायामें अन्य जीवोंको नहीं आने देना चाहते हैं। यह हमारे बुजुर्गोंका धर्म है व हमीं मान सकते हैं, अन्य नहीं! उन आचार्योंसे कहीं बढ़े चढ़े हमारे निरक्षराचार्य पूर्वज थे, जिन्होंने हमको यह धर्म सौंपा है। उन्होंने कहा था—बेटा! उन आचार्योंके लिखेपर रूयाल मत करना, हमारा ही कहना मानना, उनको क्या है वे तो त्यागी हैं। धर्मकी रक्षा तो हम पर है। इससे अन्य धर्मावलंबीको इसकी छायामें पैर मत बढ़ाने देना।

इसपर हम अपनी डींग हांक रहे हैं। हमारे पक्षमें कुछ पढ़े लिखे लोग भी हैं जो कि पैसेके बलसे ही हमारी ताल ठोका करते हैं। अगर हम लोग दिनको रात भी कहें तो वे "हां" अवश्य भर देंगे। ऊँट कैसी नक्की पकड़ा दी है। दूसरे पक्षवाले कहते हैं कि अब फकीरकी फकीरी नहीं चलने देंगे। और है भी सच बात। अकबर बादशाहके जमानेमें ३ करोड़ जैन थे। आजकल ११॥ लाख ही हैं। उसीमें श्वेताम्बर, दिगम्बर उन्हींके अंतर्गत कई संप्रदाय हैं। फूटका तो खासा साम्राज्य है। थोड़ेसे भी जहांपर जैन हैं वहां भी फूट है। और एक दूसरेको काले पानीमेंसे देखते हैं। यह दशा है। बड़े आदमी तो छोटोंकी जरा भी सहायता नहीं करते हैं। उल्टी जड़ ही काटा करते हैं। और आत्युन्नति चाहते हैं। खेद!

जिसके धर्मके मानने वाले हैं उनका भी जरा रूयाल कीजिये। उनको "जिन" या "जिनेन्द्र" कहके पुकारते हैं। अभी महावीर स्वामीका शासन चल रहा है। उन्होंने अपनी जरासी आयुमें कितना काम किया है वह अवक्तव्य है। उनका कहना इस प्रकार है "सत्त्वेषु मैत्री" सम्पूर्ण संसारके एकेन्द्रियसे पंचेंद्रिय तक सबसे मित्रता रखना। किसीको भी जरा भी तकलीफ नहीं देना। चाण्डाल भी जैनधर्मका उपासक हुआ है। और पंडित आशाधरजीने इसकी पुष्टि की है।

शूद्रोऽप्युपस्कराचारवपुः शुध्याऽस्तु तादृशः।
जात्या हीनोऽपि कालादिलब्धौ ह्यात्माऽस्ति धर्मभाक्॥

इस श्लोकसे साफ जाहिर होता है कि शूद्र शरीर आचनादिसे शुद्ध होनेपर काललब्धिसे जातिसे हीन होनेपर भी श्रावक धर्मका आराधक होता है। फिर क्यों हमारे बिगाड़क लोग व्यर्थमें धर्मकी झूठी डींग मारा करते हैं?

प्रत्येक समाजमें उन्नतिकी इच्छा है, न कि अवनतिकी। आज ईसाई अपने धर्मकी जिस तरहसे भी होती है उन्नति व संख्या बढ़ा रहे हैं। मुसलमान भी प्रत्येक जातिको अपने धर्ममें लीन करते हैं। किसी भी समाजका हो पर वह अपनी इच्छाके अनुसार धर्मपालन कर सकता

है। मैंने ईसाई धर्मका प्रचार देखा है। मुफ्तमें ही गाना, बजाना, खेल दिखलाना इससे लोगोंको मोहित करते हैं। उपदेश भी अच्छा देते हैं, इसीसे लोग इसको पसंद करते हैं।

हमारी समाजके प्रचारक पहिले चंदाका सवाल लगा देते हैं। चाहे उपदेश न हो पर चंदा जरूर मिलना चाहिये। इसीसे कुछ प्रचार नहीं होता है। उल्टी बदनामी होती है। प्रचार करेंगे तो भी सिर्फ जैनियोंमें। जैनी तो जैनधर्मको पहिलेसे ही मान रहे हैं फिर उनको उतनी जरूरत नहीं है, जितनी कि अजैनोंको। तभी संख्या भी बढ़ेगी। स्वामीजीने भी धर्म लक्षण सम्पूर्ण जीवोंको संसारके दुःखोंसे छुड़ाकर सुखमें धरे उसको धर्म कहा है। यह कहीं भी नहीं कहा है कि इस धर्मको सिर्फ जैन ही पालन करे। अगर इस धर्मको प्रत्येक प्राणी धारण करनेवाले न होते तो फिर क्यों क्षत्रियोंने धारण करके मोक्ष प्राप्त किया? इत्यादि प्रमाणोंसे बिलकुल स्पष्ट है कि शूद्रसे लेकर ब्राह्मण तक इसको बड़ी खुशीसे धारण कर सकते हैं। तिर्यंचोंने भी जैनधर्म धारण करके सुगति धारण की। प्रत्येक प्राणी इसको पालकर आत्मसुधार कर सकता है।

१—मद्य, मांस, मधु, पंच उदंबर फल जैनी बननेवालेके लिये नहीं खाना चाहिये। क्योंकि इसमें त्रस-स्थावर कायके अनंत जीवोंकी हिंसा होती है। इसके सिवाय आदमी अपनी स्मरणताको भी खोदेता है। हिताहितका जरा भी ख्याल नहीं रहता है। इसीके कारण आज भारतकी यह दशा नजर आरही है। इसीको दूर करनेके लिये गांधीजीने शराबकी दुकानोंपर धरना जारी करा दिया है।

२—वैद्यक शास्त्रकी दृष्टिसे भी पानी छानकर पीना चाहिये। न मालूम पानीमें कौनसा जीव हो जिससे कि कोई बीमारी पैदा होजाय। इस लिहाजसे भी पानी छानकर पीना चाहिये। यही जैन धर्म आज्ञा देता है कि धार्मिक व लौकिक दोनोंको देखो।

४—अधिक हिन्दुस्थानवासी रात्रिमें भोजन करते हैं। जिससे बहुत आदमियोंको कई तरहके रोग होगये हैं। वर्षातमें तो बहुत ही कम आदमी रात्रि भोजन करते हैं। हिन्दू शास्त्रमें "अस्तंगते दिवानाथे" इत्यादि श्लोकसे भी रात्रि भोजनका निषेध किया है। ये ही मोटी२ बातें छोड़नेसे प्रत्येक प्राणी जैन धर्मका धारी होसकता है।

जैनधर्मकी उन्नतिमें प्रत्येक मानवको द्वेषभाव छोड़कर सम्मिलित होना चाहिये। तभी इसकी उन्नति होसकती है। इस जैनधर्मका धारी प्रत्येक प्राणी होसकता है, यही जैन धर्ममें है। (अपूर्ण)

दशलाक्षणी व्रत दशक।

(ले०-कविरत्न राजवैद्य नाथूराम जैन-ललितपुर)

दोहा-श्री जिनवरको प्रणमि कर, जिनवाणी उर धार।
दशलक्षण पद वर्णऊं, निज बुद्धी अनुसार ॥ १ ॥

उत्तम क्षमा।

धारो उत्तम क्षमा महान् ॥ टेक ॥

केवल क्षमा विना तप संयम शील अकारथ जान।
जिमि प्रत्यक्ष जानत सब ही जन अन्न नौन विन खान ॥ धा० ॥
पूर्वोपार्जित कर्म बीज ही सुख दुख फलकी खान।
पाते सहनशीलता धरकर दुखमें समता ठान ॥ धा० ॥ २ ॥
सर्व क्रोध बिपदा जीतनको क्षमा एक संग्राम।
यदि अनिष्ट आपद आजावे क्रोध न कीजे आन ॥ धा० ॥ ३ ॥
सुख चाहत हैं जीव सभी विध दुखसे डरत महान्।
क्रोध महा दुखदाइ जगतमें त्यागो हो बुधिमान ॥ धा० ॥ ४ ॥
याकों कहं केवली जिनवर दाता पद निर्वाण।
नाथूराम समझ दिल धारो उत्तम क्षमा महान् ॥ धा० ॥ ५ ॥

उत्तम मार्दव।

धारो मार्दव वृष सुखकार ॥ टेक ॥

मान नशेमें भूल अपनको मानत उच्च अपार।
अपने हाथों कांटे बोकर भटकत क्यों संसार ॥ धा० ॥ १ ॥
पुण्य उदयसे जाति रूप कुल धन योवन श्रंगार।
पुण्य क्षीण है नश हैं क्षणमें रहे न मान लगार ॥ धा० ॥ २ ॥
चक्रीश्वर धनवान गुणीजन हुए असंख्य निहार।
आयु पूर्ण भये चाले निज पथ, कृत कर्मों अनुसार ॥ धा० ॥ ३ ॥
देखो त्रिखंडी रावणने भी कीना मान असार।
वहु दुख सहकर लोक निंद्य हो पहुंचा नर्क मझार ॥ धा० ॥ ४ ॥

जब पशु आदिक नर्क गतीमें नीच हुए बहुवार।
तब वह मान कहां था चेतन मनमें लेहु विचार॥ धा०॥ ५॥
सब अनर्थका मूल मान है घातक वज्र प्रहार।
मान छांड मार्दव गुण धारो नाथू चितमें प्यार॥ धा०॥ ६॥

उत्तम आर्जव।

धारो उत्तम आर्जव सार॥ टेक॥

त्यागो सर्व कपट भावोंको सरल भाव चित धार।
माया रहित सर्व जीवोंको मिलत मुक्तिपद सार॥ धा०॥ १॥
जिम विचार मन माहीं आवें तैसे बचन उचार।
वैसे काज कायसे कीजे येही आर्जव सार॥ धा०॥ २॥
आतम बुद्धि रहित ये प्राणी करता कपट अपार।
बगुला सम सीधा बन करके वंचित सब संसार॥ धा०॥ ३॥
मायाचारीके घट भीतर सत्य न शान्ति लगार।
चिन्तावान निरन्तर रहकर परका अहित विचार॥ धा०॥ ४॥
मायाचारी तिर्यंच योनिमें भ्रमत अनंते वार।
यातें कुभावको त्याग सियानें अविनाशी पद धार॥ धा०॥ ५॥
धर्म स्वपर हितकारी जगमें सर्व सौख्य दातार।
नाथूराम मायाको तजकर आर्जव धारो सार॥ धा०॥ ६॥

उत्तम सत्य।

धारो उत्तम सत्य महान्॥

ज्योंका त्यों वचनोंका कहना सो है सत्य प्रमाण।
राग द्वेषके नष्ट करनको सत्य स्वभाव निदान॥ धा०॥ १॥
जो असत्य भाषण करते हैं निंद्य घृणित वे जान।
सब व्यवहार कर्म रुक जाते शरण न कोई आन॥ धा०॥ २॥
मिथ्याभाषी सांचहु बोले होय प्रति जन आन।
द्रव्योपार्जन आदि समयमें कहो न झूंठ सुजान॥ धा०॥ ३॥

देखो राजा हरिश्चन्द्रने धारा सत्य महान।
सर्व दुःख विपत्ति सहनकर पाया स्वर्ग विमान ॥ धा० ॥ ४ ॥
मिथ्या भाषीको राजासे मिलत दण्ड अधिकान।
जिव्हा छेदन ताड़न मारन सहत नर्कमें आन ॥ धा० ॥ ५ ॥
यातें आत्मस्वरूप सत्यको गहो शीघ्र मतिमान।
नाथूराम असत्य त्यागकर धारो सत्य महान ॥ धा० ॥ ६ ॥

उत्तम शौच।

गहो नर उत्तम शौच महान् ॥ टेक ॥

शुद्ध भावकर लोभ त्याग दो है जो दुखकी खान।
अपवित्र देहसे ममता तजना येही शौच प्रधान ॥ गहो० ॥ १ ॥
अस्थिमांस मज्जासे पूरित तौभी थिर नहिं जान।
ऐसी नश्वर देहके कारण लोभ न करो सुजान ॥गहो०॥ २ ॥
इसी देह पालन पोषणमें करते पाप महान्।
सर्व दुखोंका कारण चेतन देह समान न आन ॥गहो०॥ ३ ॥
करो अनेकों लेपन उबटन और बहुत स्नान।
तोभी रंचक शुद्ध न होवे बिन जप तपके जान ॥गहो०॥ ४ ॥
तीन लोक सम्पति मिल जावे तृष्णा घटे न आन।
कितनहु तृष्णा कीजे प्राणी मिलहै उदय प्रमान ॥गहो०॥ ५ ॥
जबतक लोभ न हियमे छूटे शौच न नाम निशान।
शौच विना सब धर्म असारा जप तप व्रत अरु ज्ञान ॥गहो०॥ ६ ॥
शौच महा निर्दोष जगतमें कारण है निर्वाण।
नाथूराम संतोष हिये धर धारो शौच महान ॥गहो०॥ ७ ॥

उत्तम संयम।

धारो संयम धर्म महान ॥ टेक ॥

जिसके धारेसे भरतादिक कीना मोक्ष पयान।
सो दुर्लभ है इस जग भीतर संयम रत्न महान ॥ धारो० ॥ १ ॥

पंच अक्ष मनके विषयादिक दुःखित दुर्गति धाम।
निष्कषाय हूं सबको जीते सो संयम अमलान ॥धारो०॥ २॥
परम्परा इस जन्म मरणकी काल अनन्त प्रमाण।
संयम बिन क्योंकर मेटेंगे किमि पावें निर्वाण ॥धारो०॥ ३॥
इन्द्रियजनित विषय क्षणभंगुर इस भव ही सुखदान।
पाक रूप होकर परभवमें डाले नर्क महान ॥धारो०॥ ४॥
दया क्षमा संतोष शीलता कायोत्सर्ग विधान।
स्वाध्याय पूजन संयम अंग धरो निजातम ज्ञान ॥धारो०॥ ५॥
संयम हितु कुल जैन धर्ममें पाकर उत्तम ज्ञान।
दौलत सुत नाथूशक्ती सम संयम धारो जान ॥धारो०॥ ६॥

उत्तम तप।

धारो उत्तम तप मतिमान ॥ टेक ॥

षट् षट् आभ्यन्तर बाहिज तप द्वादस भेद बखान।
पाकर ज्ञान करो तप उत्तम निज शक्ती अनुमान ॥धारो०॥ १॥
इन्द्रिय मन व्यापार रोक कर ममत्व परिग्रह हान।
निज मनमें वैराग्य भाव धर तप निरवांछित ठान ॥धारो०॥ २॥
राग द्वेष परिणति बश होकर भ्रमत वर्ष कोटान।
तिन सबहीके मेटन कारण तप समान नहिं आन ॥धारो०॥ ३॥
कर्म शिखिर योधा जीतनको तप है वज्र समान।
नर्क पशु चहुंगतिका टारक स्वर्ग मोक्षका थान ॥धारो०॥ ४॥
मोह अन्ध होकर क्यों चेतन भटकत दुःख निधान
दौलत सुत नाथू शिव मग तप कीजे शक्ति प्रमान ॥धारो०॥ ५॥

उत्तम त्याग।

धारो त्याग धर्म सुखदान ॥ टेक ॥

त्याग कहो या दान दीजिये हेतु स्वपर कल्यान।
समय समय प्रति चार संघको दीजे उत्तम दान ॥धारो०॥ १॥

औषधि शास्त्र अभय आहारा, श्री जिनधर्म बखान ।
पात्रापात्र विचार भावसों देहु सुपात्रहिं दान ॥धारो०॥ २ ॥
चंचल चपला सम यह लक्ष्मी थिर नहिं अथिर महान ।
मृत्यु भये नहि संग चलेगी नश जैहैं नादान ॥धारो०॥ ३ ॥
औषधि दे, तन होय निरोगी शास्त्र देय विद्वान ।
अभय देय निर्भय पद पावे, दे भोजन धनवान ॥धारो०॥ ४ ॥
इस भवमें सब सुःख भोगकर होवे जगमें नाम ।
स्वर्ग संपदा पाकर दानी अन्त लहे निर्वाण ॥धारो०॥ ५ ॥
जिमि बट बीज भूमिमें जाकर होवे वृक्ष महान ।
तैसेही लघु बीज दान यह देवे शर्म निधान ॥धारो०॥ ६ ॥
द्रव्य अदत्त साथ नहिं जावे देत कुगतिका दान ।
पुण्योदयसे पाय द्रव्यको करले कछुयक दान ॥धारो०॥ ७ ॥
सम्यग्दर्शन आदि धर्मका मूल अंग शुभ दान ।
दौलत सुत नाथू भव नाशक दीजे उत्तम दान ॥धारो०॥ ८ ॥

उत्तम आकिंचन्य ।

धारो आकिंचन्य व्रत सार ॥ टेक ॥

परिग्रह चौविस भेद कहे हैं तिनमे ममत्व निवार ।
तृष्णा रहित नियम कर लेवें सो आकिंचन्य सार ॥धारो०॥ १ ॥
ज्ञान स्वरूपी परम अतिन्द्रिय निर उपमा निर्धार ।
इमि आतममें लीन होयकर जो शुभ ज्ञेयाकार ॥धारो०॥ २ ॥
फिर इस आतमके संग संभव, होय परिग्रह पार ।
मिथ्या मोह राग भावोंसे, व्यर्थ फंसा संसार ॥धारो०॥ ३ ॥
अल्प परिग्रहकी तृष्णा हू, डाले नर्क मंझार ।
याते रोक प्रवृत्ती मनकी संतोषामृत धार ॥धारो०॥ ४ ॥
फिरा पाप मय जगके भीतर जीव अनंते बार ।
तिन सबका आधार परिग्रह और न वस्तु लगार ॥धारो०॥ ५ ॥
परिग्रह त्यागीको भव सुखमय खुला मुक्ति दरबार ।
दौलत सुत नाथू ममता तज तजो परिग्रह भार ॥धारो०॥ ६ ॥

उत्तम ब्रह्मचर्य।

धरो नर ब्रह्मचर्य व्रत ठान ॥ टेक ॥

चिद्रूपी शुचि आतममें ही रमण करें नित ध्यान।
घृणित निंद्य स्त्री स्पर्शन तज सो ब्रह्मचर्य महान ॥धरो०॥ १ ॥
अस्थि मांस मज्जा मल पूरित देह अपावन जान।
दुखित पापमय जगत चक्रमें भ्रमण कारिणी खान ॥धरो०॥ २ ॥
देह विनाशी है दुख राशी चेतन भिन्न पिछान।
याते शील संतोष धारकर रमहु आत्माराम ॥धरो०॥ ३ ॥
ज्येष्ठाको माता समान गिन लघ्वी पुत्री मान।
समवयस्क नारी भगिनी गिन त्यागो राग सुजान ॥धरो०॥ ४ ॥
ब्रह्मचर्यसे बल प्रभुता अरु होय रूप कुलवान।
देव इन्द्र नरसे पूजित है बरे मुक्ति पद थान ॥धरो०॥ ५ ॥
सीता अग्निकुंड जल हुवा सर्प सुमाल्य समान।
वस्त्र वृद्धि द्रौपदिकी कीनी शील धर्म पहिचान ॥धरो०॥ ६ ॥
ब्रह्मचर्य महिमा बहुतेरी काटत कष्ट महान।
रत्नत्रय शुभ हेतु होयकर करे प्राप्त सुज्ञान ॥धरो०॥ ७ ॥
दुखनाशक द्वय भव सुखदायक शिवमग है आसान।
दौलत सुत नाथू शुभ धारो ब्रह्मचर्य व्रत ठान ॥धरो०॥ ८ ॥

समुच्चय दशलाक्षणी पद।

सेवहु दशलाक्षण व्रत सार ॥ टेक ॥

क्रोध कषाय छोड़कर चेतन क्षमा लेव मन धार।
मान सर्व विध दूर करो जन मार्दव लहो सम्हार ॥
मन वच काय सरल वृत्ती कर धर्म आर्जवहु सार।
दुःखित वचन असत्य त्यागकर सत्य धर्म निर्धार ॥सेवहु०॥ १ ॥
लोभ त्याग अंतरंग शुद्धिसे धारो शौच अपार।
पंचेन्द्रिय मन प्राण रोककर संयम ले हित धार ॥सेवहु०॥ २ ॥

निजमनमें वैराग्य भावकर तपका करो प्रचार।
दीजे दान यथाविधि पात्रहिं त्यागधर्म चित धार ॥सेवहु०॥ ३ ॥
त्याग परिग्रह तृष्णाको हर आकिंचन पद धार।
छोड़ तिया संग चेतनमें रम ब्रह्मचर्य है सार ॥सेवहु०॥ ४ ॥
दशलाक्षण व्रत जो नर पाले काटे कष्ट अपार।
भव भवके अघ नष्ट जु करके स्नेह मुक्ति पद सार ॥सेवहु०॥ ५ ॥
निज स्वभावमय धर्म यही है सर्व सुःख करतार।
किया होलिकाने व्रत विधिसे पाया शिवसुख सार ॥सेवहु०॥ ६ ॥
यह उत्तम नरभव कुल जैनी पाय समय सुख सार।
नाथूराम जग भ्रम नाशनको दशलाक्षण व्रत धार ॥सेवहु०॥ ७ ॥

सुभाषित रत्नसंदोह।

(अनुवादक-पं० मूलचन्द्र जैन "वत्सल" सं० "आदर्श जैन")

(गतांकसे आगे)

पापाचरणों द्वारा संचित द्रव्य, स्वार्थ प्रिय बन्धु अनेक।
करते हैं उपभोग सौख्य युत, किंतु पापफल चखता एक॥
अहो खेद! आश्चर्य!! न मानव आत्मशुद्धिपर देता ध्यान।
किंतु अहर्निश पाप भार मस्तक पर रख बनता अज्ञान॥ ८ ॥
वर्तमान पर्याय त्याग मानव द्वितीय भव रखते जब।
सुत, बनिता, धन-धान्य, मित्रगण साथ न कोई चलते तब॥
किंतु विवेक शून्य मानव, करते प्रतिदिन उनसे अनुराग।
सत्य सहायक धर्म मित्रको देते हैं सहसा परित्याग॥ ९ ॥
आत्मज्ञान संलग्न विषय वासना विहीन प्रवीण सुजन।
अनुपमेय, अविचल, सुख, समता, शांति लाभ करते प्रतिदिन॥
वह अचिन्त्य सुख शांति, इन्द्र चक्राधिपको दुष्प्राप्य अलभ्य।
अतः अमित दुखदा इन्द्रिय सुख त्याग भजो सुधर्म दुर्लभ्य॥ १० ॥

विषय सौख्य संलग्न हुए ही नष्ट हुआ यदि मानव तन ।
उदधि मध्य मणि पतन सदृश है पुनः प्राप्ति असंत कठिन ॥
अतः आत्म सुख वंचक विषय-वासनाओंका दमन करो ।
भव संतति विनष्ट हित सत्वर मुक्ति प्राप्तिका यत्न करो ॥ ११ ॥
हालाहल विष सदृश प्राण हर, इन्द्र धनुषवत् क्षण नश्वर ।
कल्प काल पर्यंत भवार्णव मध्य दिलाते हैं चक्कर ॥
सतत अमित आपत्ति प्रदायक-विषय सौख्य दें मानव त्याग ।
असहनीय सांसारिक दुख भी दें उनको सहसा परित्याग ॥ १२ ॥
श्वान शुष्करस रहित कठिन हड्डी चर्वण करता मतिमंद ।
उसके संघर्षणसे निकला-स्वतनु रक्त चखता, सानंद ॥
हो सखेद यों स्वतनु वीर्य व्ययमें होता है शक्ति विहीन ।
किन्तु ज्ञान हत मानव उसमें सौख्य मान रहता तल्लीन ॥ १३ ॥
इन्द्रि सुखकी प्रबल वासना है अति दुखकर दुर्गति द्वार ।
विषय विरक्त वृत्ति है अनुपम सौख्य शांतिकी निर्मल धार ॥
अस्तु, काम क्रोधादि कषाएं, कामिन रति इच्छा त्यज कर ।
निर्मल ज्ञान चरित रत रहते पुण्य पुरुष जगके हितकर ॥ १४ ॥
अनुपम आत्मशक्तिके घातक, परिग्रहका करके परित्याग ।
काय, वचन, मन सहित महाव्रत समिति पालते रख अनुराग ॥
प्रबल मोह मद मर्दन करके करले कोप कषाय दमन ।
धर्मवीर, ऋषि धन्य धन्य हैं मेरा भव दुख करो शमन ॥ १५ ॥
वनिता विषय प्रलोभन गढ़में डाल करार्ता है अपमान ।
वित्त नष्ट होनेपर होता हृदय विदारक कष्ट निदान ॥
बंधुवर्ग स्वार्थान्ध, सत्य समता सुखके संतत बाधक ।
किन्तु मोह गृह ग्रसित मनुज धिक ! इन्हें मानता सुख साधक ॥१६॥
वनिता, वित्त और गृह तजकर साधु हुआ वैराग्य लिया ।
वेष दिगंबर बना परिग्रह जाल सकल परित्याग किया ॥
किन्तु दुरित क्रोधादि कषाएं विषय वासना हटी नहीं ।
हुआ न हृदय विरक्त वास्तविक, इच्छाएं कुछ घटी नहीं ॥ १७ ॥

अध्यात्म।

(ले०-डॉ० मित्रसेन जैन मुख्तयार-मुजफ्फरनगर)

सज्जनो! यह शास्त्र अध्ययन अभ्यंतर तपका पाँचवा भेद और उत्कृष्ट तपका मुख्य कारण है। इससे ज्ञानकी वृद्धि होती है, ज्ञानकी वृद्धि होनेसे चित्तमें उत्कट वैराग्य उत्पन्न होता है। वैराग्य होनेसे परिग्रहका त्याग होता है। परिग्रहके त्यागसे चित्त अपने वशमें रहता है। चित्तके वशीभूत होनेसे ध्यान होता है। ध्यानके होनेसे आत्माकी उपलब्धि होती है। आत्माकी उपलब्धि होनेसे ज्ञानावर्णादि अष्ट कर्मोंका नाश होता है। और कर्मोंका नाश ही मोक्ष कहा जाता है और यही अध्यात्म है। अर्थात् इस समयमें यथार्थ स्वरूपका ज्ञान करानेका कारण स्वाध्याय है। अतएव जैनी मात्रको स्वाध्याय करना परमावश्यक है।

मित्रो! विना श्री शास्त्रोंके अध्ययनके हम या आप इस निकृष्ट कालमें अपना उपकार नहीं कर सकते, चूंकि यह आप भलीभांति जानते हैं कि जिनको हम साक्षात् अर्हत सदृश जानकर पूज रहे हैं वे तो मुंहसे कुछ बोलते नहीं, और गुरु जैसे होने चाहिये वैसे दृष्टिगोचर नहीं होते, जिनके वचनामृतका पानकर हम अपनी आत्माका कल्याण कर सकें। अतएव श्रीजिन कथित शास्त्रोंहीका अध्ययन करना हमारे लिये इस भव और परभवमें सुख प्राप्ति और आत्माकी उन्नति करानेवाला है।

प्रिय सुखाभिलाषी सज्जनो! यह हम आपको पूर्व बतला चुके हैं कि जैन शास्त्रोंका अध्ययन करना ही परम्पराय मोक्षका कारण है, फिर यदि हम स्वाध्याय करनेमें विलम्ब करें तो कितने आश्चर्यकी बात है? प्रायः देखा जावे तो हमारे भाइयोंमेंसे ऐसे बहुत कम भाई निकलेंगे कि-जो नित्यप्रति नियमानुकूल यथाविधि शास्त्रस्वाध्याय करते हों। चूँकि प्रथम तो हमारे भाई स्वाध्यायका नियम लेनेहीमें इतनी असमर्थता दिखलाते हैं जिसका कि उल्लेख करना लेखन शक्तिके बाह्य है। यदि दबावके देनेसे किसीने प्रतिज्ञा ले भी ली तो उसका पालन करना, अति कठिन होजाता है।

क्या हुआ जब दर्शन करनेको आये और किसी भाईको स्वाध्याय करते हुये देखा तो आपने भी वहां बैठकर एक पत्र उठा लिया और एक-दो लकीर पढ़कर पत्र पटक चले गये? अस्तु, इस प्रकार इनके क्रमको देखकर किसी सज्जनने कह भी दिया कि, मित्र! ऐसा तो तुमको योग्य नहीं है, यथाविधि आद्योपान्त ग्रन्थकी स्वाध्याय करना चाहिये। तो इतना सुनकर हमारे उक्त महोदय झट ही उत्तर दे देते हैं कि भाई! तुम तो निकम्मे हो सो अपना समय पूरा करने दो। मैं तुम्हारे जैसा निकम्मा नहीं हूं, जो विशेष समय अपना मैं इसके लिये व्यय करूँ। मुझे वैरागी थोड़े ही बनना है, तुमको तो वैरागी बनना है, तुम बैठो, स्वाध्याय करो, चाहे भजन करो, मुझे इतना अवकाश कहां है? अहा हा! कैसा अच्छा उत्तर दिया! व्यर्थकी गप्पाष्टकोंमें तो घंटों व्यतीत करदें किंतु धर्मोपार्जन शास्त्र अध्ययन करनेके लिये एक मिनटकी भी फुर्सत नहीं है।

सज्जनो! बता सकते हो कि इन महोदयोंकी ऐसी बुद्धि क्यों हुई? मेरे विचारमें तो यह आता है कि यह स्वाध्याय न करनेका ही महात्म्य है। यदि उन्होंने एक ग्रन्थकी भी स्वाध्याय आद्योपांत कर मनन किया होता तो इस प्रकारकी निर्लज्जताका उत्तर कदापि नहीं देते। अस्तु, इनके अतिरिक्त बहुतसे हमारे भाई ऐसे भी हैं जिन्होंने आद्योपांत बहुतसे ग्रन्थोंकी स्वाध्यायकी है, किंतु जब उनसे पूछा जाय कि भाई साहिब! अमुक शास्त्र अमुक विषयमें क्या कहता है? तो उत्तरमें शून्य। इति।

प्रिय मित्रो! ग्रन्थको आद्योपांत पढ़नेसे भी काम नहीं चलता। पढ़ करके उसका मनन करना आवश्यक है। हमारे महर्षियोंने स्वाध्यायके पांच भेद कहे हैं, जैसे वांचना, पृच्छना, आम्नाय, अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेश। अतः इन पांच भेदों पर ही ज्ञानकी वृद्धिके कारण सुखाभिलाषी पुरुषोंका ध्येय है। आपको स्वीकार करना होगा कि पूर्वकालमें जितने सिद्ध हुये हैं, आगामी होंगे, तथा वर्तमानमें हैं वे सब स्वाध्यायसे ही हुवे हैं, होते हैं, तथा होनेवाले हैं। इसलिये गृहस्थोंको एकान्त स्थानमें बैठकर मन वचन कायकी शुद्धतापूर्वक नित्यप्रति नियमपूर्वक आद्योपांत शास्त्रकी स्वाध्याय करना और उसके ऊपर मनन करना यही अध्यात्म है।

अब देखना यह है कि मेरे निम्नलिखित शब्दोंमें कहांतक सचाई है। "श्री जिन कथित शास्त्रोंका ही अध्ययन करना अध्यात्म है"। सज्जनो! दुनियामें जितने मत प्रचलित हैं वह सब किसी न किसी शास्त्रोंके आधारपर हैं। बिना शास्त्रोंके कोई मत आपने नहीं सुना होगा। और शास्त्र जो हैं सो किसीके द्वारा निरूपित किये गये होंगे, बिना किसीके कहे हुवे वचनोंके शास्त्र बन नहीं सकते। इसीसे यह जगत विख्यात है कि अमुक शास्त्रके रचयिता अमुक महापुरुष हैं। लेकिन बिना पुरुषके प्रमाण किये हुवे उसके वचनोंकी प्रमाणता नहीं होसकती, अतएव हमें भी उचित है कि उसके वचनोंकी खोज करें जिसके कि वचन हमें माननीय हों। देखना चाहिये कि कहनेवाला पुरुष सदोष है या निर्दोष? यदि कहनेवाला ही सदोष होगा या दूसरोंको किस तरह निर्दोष कर सकेगा? संसारमें प्रायः कितने ही मतवाले अपने अपने शास्त्रोंको ईश्वर (देव) कृत मानते हैं। और जैन मत श्री अरहंत परमात्माके वचनानुकूल अनेक महर्षियों द्वारा अपने शास्त्रोंकी रचना मानता है। विचारना यह है कि देव कौनसा निर्दोष है।

देव वही है जिसने राग, द्वेष, मोहादि शत्रुओंका नाश किया हो, सर्वज्ञ हो, हितोपदेशी हो। अर्थात् संसार-समुद्रमें गिरे हुवे प्राणियोंको अपने वचनामृतरूपी नाव द्वारा उद्धार करनेवाला हो तथा क्षुधा, तृषा, जन्म, जरा, रोग, मरण, भय, विस्मय, अरति, दुःख शोक, चिंता, मोह, मद, पसेव, निद्रा, राग और द्वेष इन अष्टादश दोषों करके रहित हो, वही निर्दोष देव कहा जासकता है। और यह निर्दोषता केवल श्री जिनेन्द्रदेवके अन्य किसीमें नहीं पाई जाती। अतएव उन्हींके कहे हुवे शास्त्रोंका अध्ययन करना अध्यात्म है।

समाजकी शोचनीय दशा ।

(लेखक-विमलचन्द जैन, हाईस्कूल-बड़ौत)

आधुनिक अवस्थामें संसार तरक्कीके मैदानमें आरहा है। जो जातियां किसी दिन बेखबरीकी नींदमें बेहोश थीं वे आज जाग्रत अवस्थामें दिख रही हैं तथा अपने कर्तव्य मार्गपर बड़ी तेजीके साथ दौड़ लगा रही हैं, किन्तु हमारी जैन समाज अभीतक चादर ताने सोरही है, उसने अभीतक अपना एक करवट भी नहीं बदला। उसकी ऐसी हालतको देखकर विश्वाश नहीं होता कि वह किसी वक्त अपनेको तरक्कीके शिखरपर चढ़ा सकेगी।

जैन समाजकी हालत अत्यन्त शोचनीय है और ऐसी हालतमें भी उसे चौतरफसे कुरीतियोंने घेर रक्खा है। किन्तु उसे इसकी जरा भी फिकर नहीं। कुरीतियां एक रोग है जिससे समाज सख्त बीमार है। समाजके रोगकी दवा बहुत अरसेसे बड़े २ वैद्यों द्वारा होती आरही है, लेकिन रोग अभीतक हटा नहीं और न उसके हटनेकी कोई उम्मेद ही दिखती है, बल्कि ज्यों २ दवा की जाती है त्यों २ रोग बढ़ता ही नजर आता है! इस लिहाजसे कहना पड़ता है कि "वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो अब भी है।"

जैन समाजकी हालत क्यों बिगड़ रही है, उसका रोग क्यों नहीं रफा होता, वद्योंकी दवाएं क्यों असर नहीं करती आदि सब बातोंका उत्तर सिर्फ यही होसकता है कि हमारी समाजमें पंचायती संगठन नहीं है। अगर पंचायती संगठन होता तो आज यह दशा देखनेमें नहीं आती।

कहना होगा कि पंचायती संगठनके न होनेसे ही समाजके रोगकी चिकित्सा नहीं होसकी एवं वह रोगसे मुक्ति नहीं पासकी। इसलिये पंचायती संगठनका होना निहायत जरूरी है और वह आपसके वैर विरोध बरबाद किये नहीं होसकता।

पंचायती संगठनके बिना हमारी समाजकी हर तरहसे तरक्की रुकी हुई है और ऐसी अवस्थामें ही कुरीतियों (बालविवाह, वृद्धविवाह एवं कन्याविक्री) ने समाजको यहांतक कमजोर किया है कि उसके जीवन मरणका प्रश्न सामने आरहा है परन्तु तौभी हम नहीं चेतते और न उसके प्रश्नको हल करनेका उपाय ही करते हैं!

कुरीतियोंके द्वारा समाजकी जो बर्बादी हुई है वह समाज संरक्षकोंसे छिपी नहीं है। छोटे २ बच्चोंकी शादियां होजानेके कारण नवयुवकोंकी दशा अत्यन्त शोचनीय होरही है अर्थात उनके कच्चे वीर्यका पतन होजानेसे धातुक्षीण, तपेदिक, सुजाक एवं प्रमेह आदि हजारों भयंकर रोग उनपर आक्रमण कर लेते हैं। जिससे कि उनका शरीर निर्बल होता हुआ बहुत जल्दी मृत्युका शिकार बन जाता है।

इसके अलावा इस कुरीतिके जरिये सन्तानोत्पत्ति मारी जाती है। छोटी अवस्थाकी शादीसे सन्तानोत्पत्तिकी आशा करना आकाशके फूल तोड़ना है। इसलिये यह कुरीति समाजकी संख्या-

वृद्धिमें अत्यन्त बाधक होरही है। वर्तमानमें जो प्रतिदिन समाजके २१ मनुष्योंकी कमी होती है उसमें अधिक कारण इस कुरीतिका है।

दूसरा वृद्धविवाह-इसके जरिये समाजकी अबोध बालिकाएं वैधव्य अवस्थामें पड़ी अपने जीवनको समाप्त कर रही हैं जिनकी संख्या कई हजारोंमें गिनी जारही है। इसी तरह कन्याविक्रय भी बालविधवाओंके पैदा करनेमें पूरी सहायक है। इन दोनों कुरीतियोंके द्वारा भी सन्तानोत्पत्ति मारी जाती है तथा एक ओर बदरीका (व्यभिचार) जबर पैदा होजाता है जिससे कि समाजकी जीवन जड़ कटती जाती है।

वृद्धविवाह और कन्याविक्रयके जरिये ही समाजके गरीब घरानेके नवयुवक अविवाहित रह जाते हैं; जिन युवकोंके द्वारा योग्य सन्तान पैदा हो सकती है तथा जो शारीरिक संगठनमें अपनेको पास कर चुके हैं और जो सुशिक्षित एवं सदाचारी हैं उनके लिये समाज पुत्रियां देना अपना अपमान समझती है। और बुड्ढोंके गले उलटे गले बिल्ली बांधना मैं उन्हें बांधती है।

गरीब घरानेके योग्य युवकोंका अविवाहित रहना, बालविधवाओंकी वृद्ध होना और समाजकी संख्याका घटना ये सब उक्त कुरितियोंके जरिये ही होरहा है। इसलिये उनको समाजसे निकालना बहुत जरूरी है।

पंचायती संगठनके जरिये कुरीतियां दूर हो सकती हैं। यदि पंचायतियोंका संगठन होजावे तो हमारे नवयुवक मंडलको चाहिये कि वह इसके लिये शीघ्र ही अपनी कमरकस तैयार हो।

ઉપદેશ–શતક.

લે.–મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ–કંપાળા.

૧–અપરાધીનો પક્ષ કરવો નહિ.

૨–આપણું જે વાતમાં જેવું સત્ય જાણતા હોઈએ તે છોડી જુઠું બોલવું નહિ.

૩–અન્નને સાફ કરીનેજ કામમાં લેવું.

૪–અગ્નિ વિષે મળમુત્ર નાંખવાં નહિ. તેમજ થુંકવું નહિ.

૫–કૃતઘ્નપણું ન રાખવું.

૬–ઉપજ કરતાં ખર્ચ ઓછું રાખવું.

૭–કષ્ટભય વખતે પણ ભ્રષ્ટ આચરણ ન આચરવાં.

૮–કોઇ જીવનો ઘાત કરવો નહિ.

૯–કોઇ પણ જીવનો તિરસ્કાર ન કરવો.

૧૦–કુળનો ક્ષય કરનાર ગોત્ર ગમન છે.

૧૧–કન્યાવિક્રયનું ધન માંસ બરાબર છે.

૧૨–કન્યાવિક્રયના કારોબારમાં ભાગ લેવો તે ભ્રષ્ટ થવાની નિશાની છે.

૧૩–કોઇનો દ્વેષ કરવો નહિ.

૧૪–કોઇનું શીલ ભંગ કરવું નહિ. તેમજ પોતે પણ શીલને સંભાળ પૂર્વક સાચવવું.

૧૫–કોઇ પણ સ્ત્રી અગર પુરૂષ નગ્ન જોવા ઇચ્છા કરવી નહિ.

૧૬–કોઇ પણ પ્રાણીને દુભવવું નહિ.

૧૭–કોઇનું મન દુખાય એવું ન બોલવું.

૧૮–કોઇને શિર મિથ્યા અપવાદ મુકવો નહિ.

૧૯–કુટુંબનો નાશ મરણાંતે પણ ન કરવો.

૨૦–કોઇ ન્યાય મેળવવા પંચ તરિકે નીમે તો અન્યાય કરવો નહિ

૨૧–ખોટાં આચરણ આચરવાં નહિ.

૨૨–ગમે તેવી હાનિ થાય તોપણ મિત્રદ્રોહ ન કરવો.

૨૩–ગમે તેવા આપત્કાળમાં પણ આત્મઘાત કરવો નહિ.

૨૪–ચણ્ડાલ કર્મથી નિર્વાહ કરવો નહિ.

૨૫-ચુનાની ભઠ્ઠીનો વ્યવસાય કરવો નહિ.

૨૬-છેતરી કે દગલબાજી કરી બીજાને ફસાવી તેનું ધન ઝુંટવી લેવું નહિ.

૨૭-જે ફલમાં જીવની ઉત્પત્તિ થાય અને મરે તે ફળનો માંસ સમજી ત્યાગ કરવો.

૨૮-જળને ગાળીનેજ વાપરવું.

૨૯-જુઠી સાક્ષી ન પુરવી.

૩૦-જે સ્ત્રી સાથે લગ્ન થયું હોય તેનો ત્યાગ કરવો નહિ.

૩૧-જળ કે દેવસ્થાનમાં મળમુત્ર કે બળખા નાખવા નહિ.

૩૨-તૃણથી મેરૂ પર્યંતની ચીજને ચોરવી નહિ.

૩૩-તિર્થસ્થાનમાં કરેલા પાપનું પ્રાયશ્ચિત્તજ નથી.

૩૪-દાન રહિત રહેવું નહિ.

૩૫-દાન નિરાશ્રયીનેજ આપવું.

૩૬-દેવની નિંદા કે ભ્રષ્ટ ઉપાસના ન કરવી.

૩૭-દાન કરવું તે ફરજ સમજી કરવું પણ ફળની આશાએ ન કરવું.

૩૮-ધર્મ-આજ્ઞાનું ઉલંઘન કરવું નહિ.

૩૯-ધર્મભ્રષ્ટ કે કુપાત્રને દાન આપવું નહિ.

૪૦-ધન છતાં પરમાર્થ નહિ કરનારાને કૃપણ સમજી તેનો ત્યાગ કરવો.

૪૧-ધર્મ છે તેજ વિશ્વનું રક્ષણ કરનાર છે.

૪૨-ધન અધર્મ કરી મેળવવું નહિ.

૪૩-નગ્ન સ્નાન કરવું નહિ.

૪૪-ન્યાયનું ઉલંઘન ન કરવું.

૪૫-પશુ અગર તેના સંકલ્પ પુર્વક કોઇ ચીજને હોમી યજ્ઞ કરવો નહિ.

૪૬-પશુ યજ્ઞના પ્રસાદને લેવો નહિ.

૪૭-પરસ્ત્રી ગમન કરવું નહિ.

૪૮-પર ધન હરણ કરવું નહિ.

૪૯-પોતાનું ભલું કરવા બીજાનું બુરૂં ન કરવું.

૫૦-પોતાનાં વખાણ પોતાને મુખે ન કરવાં.

૫૧-પુત્ર વધુ સાથે હાસ્યમાં ઉતરવું નહિ.

૫૨-પોતાનું કામ બગડતું હોય તોપણ લોકોપવાદ લેવો નહિ.

૫૩-પારકાની નિંદા કરવી એ નર્કમાં જવાની નિસરણી છે.

૫૪-પવિત્ર માણસને બળાત્કારે ભ્રષ્ટ કરવો નહિ.

૫૫-પારકાનું ધન કે જમીન દબાવવાની ઇચ્છા ન કરવી.

૫૬-પારકાના ગુણને ગ્રહણ કરવા તેજ સાધુતાની નિશાની છે.

૫૭-પશુગમન ન કરવું.

૫૮-પોતાના ગોત્રમાં જન્મેલી કન્યા સાથે લગ્ન ન કરવું.

૫૯-પડતીના ટાઇમે બળવાનથી બાથ ન ભીડવી.

૬૦-પોતાનું કાર્ય બગાડીને પણ પરમાર્થ કરવું.

૬૧-પરમાર્થના કામમાં આળસ રાખવું નહિ.

૬૨-પરદ્રવ્યને છીનવી કે લુંટી લેવું નહિ.

૬૩-પક્ષી પાળી તેને પાંજરામાં પુરવું નહિ.

૬૪-બીજાને ભ્રષ્ટ કરવાની ઇચ્છા ન કરવી.

૬૫-માતા પિતાએ છોકરાંને ઉછેરવામાં કાળજી રાખવી.

૬૬-મરેલાનાં વસ્ત્ર લેવાં નહિ.

૬૭-મરણ ક્રિયાનું અન્ન જમવું નહિ,

૬૮-મનુષ્ય જન્મ બગાડનાર ઇન્દ્રીઓ છે, માટે તેને વશ કરવી.

૬૯-માન્યતા માની દેવને છેતરવા નહિ.

૭૦-મૂર્ખની મિત્રાચારી ન કરવી.

૭૧-યોગી જનોનો તિરસ્કાર ન કરવો.

૭૨-રાત્રી ભોજનનો ત્યાગ કરવો.

૭૩-રાજાથી રંક પર્યંત કોઇનો તિરસ્કાર ન કરવો.

૭૪-લાંચ લેવી નહિ.

૭૫-વિના અપરાધે કોઇને દુઃખી ન કરવાં.

૭૬-વૃક્ષને મુલ સહ કાપવું નહિ.

૭૭-વાવ, કુવા, તળાવ કે કોઇપણ જળાશયનું ખંડન ન કરવું.

૭૮-વિશ્વાસમાંજ પ્રભુનો અંશ છે.

૭૯-વિશ્વાસુને દગો કરવો નહિ.

૮૦-વ્રત કરનારને વ્રતભંગ કરવા સલાહ ન આપવી.

૮૧-વ્યસન માત્રનો વહાલ સમજી ત્યાગ કરો.

૮૨-વ્યભિચાર એ મહાન દુર્ગુણ છે.

૮૩-વિદ્યા વિક્રય કરવો નહિ.
૮૪-શાસ્ત્રોમાં નિંદાએલી ક્રિયાઓ ન કરવી.
૮૫-શાસ્ત્રમાં નિંદાએલી ચીજ ખાવી નહિ.
૮૬-સાધારણ કાર્યમાં પણ ક્રોધ ન કરવો.
૮૭-સ્ત્રીઓની બુદ્ધિ પ્રમાણે વર્તવું નહિ.
૮૮-શત્રુને પણ દગાથી ન મારવો.
૮૯-સ્ત્રીઓએ પતિને પરમેશ્વર સમજી માન આપવું.
૯૦-સલાહ લેવા આવનારને સાચી સલાહ આપવી.
૯૧-શરીર રહિત થવું, પણ ધર્મ રહિત ન થવું.
૯૨-શરીરને ક્રોધનું આવરણ થાય તો તેને શાંત કરવો.
૯૩-સ્વપ્ને પણ ગૌહત્યા, બાળહત્યા, સ્ત્રીહત્યા, પરદ્રોહ, વિશ્વાસઘાત કરવાની ઇચ્છા ન કરવી.
૯૪-શસ્ત્રનો ઘા કરી કોઇનો અંત આણવો નહિ
૯૫-શત્રુ હોય છતાં સાચો અને ઉદાર હોય તો તેની સેવા કરવી.
૯૬-સાધુ સાથે વેર ન કરવું.
૯૭-હાંસી કે મશ્કરીમાં પણ બીજાને કષ્ટ ન આપવું.
૯૮-હારજીતની રમત કે જુગાર રમવો નહિ.
૯૯-જ્ઞાનજ અંધાપો દૂર કરે છે માટે શાસ્ત્રજ્ઞાન દરેકે લેવું.
૧૦૦-જ્ઞાન થયા પછીજ મોક્ષનો રસ્તો દ્રષ્ટિગોચર થાય છે.

પ્રિય પાઠકો ! ઉપરના ઉપદેશ-શતકથી આપને કંઇપણ જ્ઞાન મળશે, તો હું મને કૃતકૃત્ય સમજીશ. ઉપદેશો અનેક છે, જ્ઞાન અગાધ છે પણ તેને ગોઠવનારનીજ ચાલુ જમાનામાં જરૂર છે. આ ઉપદેશ-શતક મારા સિદ્ધાંતો નથી, પણ આપણા પૂર્વાચાર્યોએ આપણને ધર્મમાં સ્થિર થવા બતાવેલા નીતિ-મંત્રો છે. તે સર્વે સમાજ, સર્વે જ્ઞાતિવાળાને સરખાજ ઉપયોગી છે.

આ ઉપદેશ શતકના એક એક સુત્રો ગૃહસ્થના ઘરની દિવાલપર કે સાર્વજનીક ધર્મશાળા, મંદિરના સભા મંડપોમાં મોટા અક્ષરે ચોંટાડાય તો હું ધારું છું કે જરૂર અસર-કર્તા નિવડે !

ૐ શાંતિ: શાંતિ:

આપણી વિધવા.

(લે:-ચંદુલાલ પીતાંબરદાસ શાહ-મુંબઇ)

['આપણી વિધવા' નો અર્થ વાચક સંકુચિત નહીં પણ વ્યાપક રૂપમાં કરે, કારણકે અહીં આ વિષય ફક્ત જૈન વિધવા નહીં પરંતુ સારાએ હિન્દુ સમાજની વિધવાના સંબંધમાં વ્યાપક રૂપે ચર્ચવામાં આવ્યો છે. છતાંય વાંચક સમજી લે કે આ લેખ લખવાનો મુખ્ય ઉદ્દેશ જૈન વિધવા માટે હોવાથી કેટલેક સ્થળે દિ. જૈન સમાજને સંબોધવામાં આવ્યો છે.]

રસમય સૌભાગ્ય-જીવનમાંથી સમાજ વા કીસ્મતના એકાદ ક્રુર નખરાથી વેડફાઇ શુષ્ક અને નરકથી પણ અધીક દુઃખમય અને કરપીણ જીવન જીવનાર, આપણા હિન્દુ સમાજની ધર્મ, તપશ્ચર્યા, શાંતિ અને ગંભીરતાની દીવ્ય મૂર્તિ સમોવડી વંદનીય વ્યક્તિ-જેને આપણે હડધુત કહીએ છીએ-તેજ 'આપણી વિધવા'; અને એ અવસ્થાનું જીવન એજ વૈધવ્ય કે રંડાપો.

'વૈધવ્ય ! રંડાપો !' વાચક એ શબ્દોચ્ચાર કર જો વાર ? જ્યારે એ શબ્દ માત્રના ઉચ્ચારથી ત્હારૂં હૃદય હચમચાઇ જાય છે, અને ઘડિભર એ જીવનાવસ્થાનું કલ્પિત ચિત્ર ત્હારા માનસ મધ્યે દોરાતાં ત્હને એ રાક્ષસી જીવનનો દુઃખદ ભાસ ચક્ષુતટે તરતો દ્રશ્યમાન થાય છે; જ્યારે એ શબ્દ માત્રની પાછળ આટલું બધું દુઃખદ વાતાવરણ વ્યુહ રચી રહ્યું છે, ત્યારે એ જીવનનો સાક્ષાત્ અનુભવ થતાં મનુષ્યની કેવી કરૂણ સ્થિતિ થતી હશે ?

એક તો અભાગા જાત, પછી 'સૌભાગ્યપદ' છીનવાય એટલે હૈયાતમાં હોળી સળગે અને 'ગંગાસ્વરૂપ' બને; (સમાજ ગંગાસ્વરૂપના ઇલકાબ અર્પે, પણ ગંગાસ્વરૂપ ગણે નહીં, એ પણ એક હિન્દુસમાજની અદ્વિતિય વિચિત્રતા !) અને એ હોળી સળગેલા જખ્મદગ્ધાત્માને પૂર્ણ પણે પ્રજ-

ળવા, સમાજના સિતમોના એક સામટા પ્રયોગોનાં પાપી પગરણ મંડાય, એ સિતમો, એ નાદીરશાહી–શીરાઝી જૂલ્મો, એ દુઃખ, એ કોપ, ગરીબડી રંકસમી હિન્દુવિધવાની અવશેષ શારિરીક, માનસિક, અને નૈતિક શક્તિને બરિમભુત કરી, ત્હેના જીવનને નિર્માલ્ય અને ઓજસહીન બનાવી, ત્હેનાં રહ્યાં સહ્યાં જીવનતત્વોને વેડફી નાખી, ત્હેના આખાય ભવને નરકાગાર સમો બનાવી દે છે. આથી વધૂ જાલિમ જીવન, દુઃખોની પરતાક્ષ સાંખી ધીર અને વીરતાંની મૂર્તિ સમી બની, કોણ જીવવાને શકિતમાન છે? ધન્ય હિન્દુવિધવા! કલાપિ ઠીકજ ગાઇ ગયો છે કેઃ 'છે વૈધવ્યમાં વધુ વિમલતા બ્હેની સૌભાગ્યથી કાંઇ...'

સ્ત્રી વિધવા બને એટલે બાપડીનું આવી બન્યું. હિન્દુ ધર્મની બેધારી–તાતી તલવાર ત્હેના જીવનને રેંસી નાખવા સદાય ત્હેના માથા ઉપર લટકી રહે છે. પતિ સ્વર્ગારોહણ કરી ગયા તેની જવાબદાર જાણે પત્નિજ ન હોય તેમ સાસરીયાં તેની પાસેથી "વેરની વસુલાત" લે છે. પુરતું ખાવાનું ન મળે. શ્વાસ લેવાની નવરાશ ન હોય, ડગલે અને પગલે હડધૂત થતી હોય, અને દુઃખથી આત્મા સંતપ્ત તો થયોજ હોય તેમાં અભિવૃદ્ધિ તરીકે "અપશુકનિઆળ" અને 'મ્હારાં પગલાંની' નાં વણુમાપ્યાં પ્રમાણુપત્રો મળે. દિલાસો તો કોઇ શાનુંજ આપે? શું નસીબ યોગે વૈધવ્યને પ્રાપ્ત થવાથી સ્ત્રીમાંથી સ્ત્રીપણું, ત્હેની રસીકતા, કળા અને કૌશલ્ય નષ્ટ થતાં હશે? ત્હેને પ્રાણ નહીં હોય? ત્હેનું જીવન જીવવા યોગ્ય નહીં રહ્યું હોય? નહીં! ઓ સમાજ! નહીં, ઓ હિંદુ સમાજ! ત્હારા સિવાય અન્ય કયો સમાજ વિધવાઓ પ્રત્યે આટલો બધો નિષ્ઠુર છે? બતાવીશ? જ્યારે અમુક દશા પ્રાપ્ત થવી એ કુદરતનાંજ હસ્તકે છે, ત્યારે પૃછીશ કે ઓ સમાજ! શાને બિચારી રંક વિધવા ઉપર પસ્તાળ પાડે છે? ત્હને ત્હારી વેડફાઇ જતી સ્ત્રી શકિતની જરીપણ કિંમત નથી? સમાજ! ત્હારે કબૂલ કરવું પડશે, નહીં કરે તો ત્હારાં પાપી બંધનોને તોડી નાખવા, ત્હારા ઉપર શેહાઇ અને માલીકીનો દોરદમામ રાખનાર એ જૂની પ્રણાલિકાવશ, ગોકળગાયથી પણ ધીમી ગતિવાળા સમાજનું નખ્ખોદ કાઢવા સર્જાએલ ઓલિયા બિરાદરોને આધુનિક યુવકદળ કાન પકડીને સીધા કરી કબૂલાવશે કે, એ વેડફાઇ જતી શકિતનો દુરૂપયોગ ન કરતાં, તેમને યોગ્ય સાધનોથી કેળવવામાં આવે તો એ શક્તિ સમાજને એવી તો ઉપયોગી થાય, અને ત્હેના (સમાજના) આત્માને એવો તો પવિત્ર અને તેજોજ્વળ બનાવે કે જે પવિત્રતા અને તેજ યુગોના યુગો વહી જાય છતાંય અન્યકો શક્તિથી મળી ન શકે.

વિધવાઓના મૂખ્ય બે વિભાગ પાડી શકાય–એક બાળવિધવા, બીજી વૃદ્ધવિધવા.

(૧) બાળવિધવાઃ–લગ્ન સુખનો જેણે અંશ પણ લ્હાવો લીધો નથી, અથવા તો જે બાળવિધવા હોય છે, તેઓમાંથી ઘણીક પોતાના શીયળધર્મને ભ્રષ્ટ કરી નાખે છે. મૂળ તો અજ્ઞાન અને બાળક, એટલે યુવાવસ્થાનાં અંકુરો ફૂટતાં અને અનુકૂળ સંજોગો મળી જતાં, કોઇ હેવાનને હાથે શીકાર થાય, હેવાતન લૂંટાય, અને સંયમ નિયમના શિક્ષણને અભાવે ઉજ્જ્વલ, સાદું, અને પરોપકારી જીવન ન જીવતાં પિશાચી જીંદગી ગાળે, ભ્રષ્ટ જીવન જીવે, અને વિધવાને હડધૂત કરનાર હિંદુ સમાજને શાપની વર્ષાથી ભીંજવી દે, યદિ એકાદ વખત ચીલો ચૂકેલી સ્ત્રી ફરીથી ધર્મજીવન ગાળવા તત્પર હોય, છતાંય, જો સમાજ તેનો અસ્વિકાર કરે તો કાંતો તે અનીતિને રસ્તે દોરવાય યા તો જેમ અનેકવાર બને છે તેમ ગળે ફાંસો ખાય, કૂવા, હવાડા પૂરે, કે ગ્યાસલેટ છાંટી બળી મરે, ને જો સમાજ સ્વિકારે તો કરેલાં દુષ્કૃત્યને પરિતાપવા માટે આદર્શ જીવન જીવે, અને સમાગમમાં આવતી અન્ય વિધવાઓને આત્મ દ્રષ્ટાંત દ્વારા અન્ય પંથે વાળે, અને ત્હેમની શકિત વેડફાતી બચે.

વાંચક! બાળવિધવાના જીવનની, ત્હેની પરિસ્થિતિ અને તેથી સાંપડતાં પરિણામોની આછી

રૂપરેખા દોરી આપણે એકાદ બે સંતાનની માતા થઇ ચૂકી હોય એવી વિધવાની હવે વાત કરીએ. આ અવસ્થામાં મૂકાએલ બ્હેનોની સ્થિતિ બાળવિધવાથી સ્હેજ પણ ઉતરે તેમ નથી. જે વયોવૃદ્ધ હોય તે તો વૃત્તિઓને દાબી દે છે, અને આદર્શ જીવન જીવે છે, પરંતુ જે પૌઢા હોય, જેના ઉપર સંતાન ભરણપોષણનો બોજો પડયો હોય છે તેને માટે અવળે પંથે પડવાનાં અનેક કારણો હોય છે. એવી વિધવાઓ ઘણે ભાગે દલણાં દળીને જીવન નિર્વાહ કરે છે, કારણ કે હિંદુ વિધવાનો પોતાના પતિની વડીલોપાર્જીત તેમ સ્વોપાર્જીત મિલ્કતપર બહુજ ઓછો હક હોય છે. યદિ પતિનું કુટુંબ અવિભકત હોય અને એ દરમિયાન પતિ મરી જાય તો તેની વિધવાને માત્ર ભરણપોષણ મળે છે. પતિ તરફથી કાંઇજ રોકડ મિલ્કત ન મળી હોય અને પાછળ છોકરાં હોય, અને દલણાં દળે પુરૂં ન થાય, તો છાનાં છપનાં વાસણ-કુસણો વેચો, રાચરચીલું છિન્નભિન્ન કરે, અવેજ વેચે, પલ્લુ હોય તો તે પણ વેડફી દે, અને તેથીય પૂરૂં ન થાય તો પૂછીશ કે ઓ હિંદુ સમાજ ! એ બાપડીનો શો આશરો ? પોતે શું ખાય, ને ટળવળતાં બાળકને શું ખવાડે ? નથી વિધવા ફંડ કે નથી વિધવા આશ્રમ. છે તો ગણ્યા ગાંઠયા. વિદ્યાર્થી માટે છાત્રાલયો હોય, શિષ્ય વૃત્તિઓ વ્હેંચાય; વિધવાઓ માટે એક ફૂટી બદામ પણ છે ? તેમને માટે સમાજે શું વ્યવસ્થા કીધી છે ? (સારીય દિગંબરી આલમમાં હું જાણું છું ત્યાં સુધી મુંબાઇ, સોજીત્રા, ઇંદોર, આરા, દિલ્હી વગેરે ચાર પાંચ શ્રાવિકા આશ્રમ છે) ત્હેમના જીવનને ઉપયોગી બનાવવા કેટલા સમાજ હિતેચ્છુઓ પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે ? ત્હેમને માટે કેટલા આશ્રમો છે ! વિદ્યાર્થી માટે કેટલાં વિદ્યાર્થીગૃહો છે ? શાને વસે કોઇના દિલમાં બિચારી વિધવાઓ જ્યાં કેવળ તેમની પ્રત્યે આંખમીચામણાં હોય ત્યાં ? ઠીક, ગરગચ્ચુ કે 'ગૃહઉદ્યોગ' આપણા સમાજમાં કેટલા છે ? ત્યારે એ ઉકરડે ઉછેટાતા કચરાની માફક વેડફી દેવાની વિધવાઓનો 'ઉપર આભ અને નીચે ધરતી' સિવાય અન્ય શો વિસામો રહ્યો ? આવી દશામાં તે પાપ પથે વળે, તેમાં શી નવાઇ ?

વાચક વિધવાઓની હાડમારીનો હવે ત્હને ખ્યાલ આવ્યો હશે. હિંદુ સમાજને વિધવાઓની કેટલી પડી છે તે પણ જાણ્યું હશે. શું ત્હારૂં હૃદય એમ નથી માનતું કે આ સમાજનો દોષ છે?

આ પ્રમાણે વિધવાની વર્તમાન પરિસ્થિતિ નિહાળી, ત્હેના જીવનની કરપીણ પરિસ્થિતી નિહાળી, ત્હેના જીવનની કરપીણ કથા જાણી; એટલે આપણે એજ વિચારવાનું રહ્યું કે વિધવાઓ શું કરીએ તો શુદ્ધ, કર્તવ્યપરાયણ, અને સમાજ સેવિકા બની જ્વાજ્વલ્યવાન અને આદર્શ જીવન જીવતાં શીખે. મ્હને નીચેના ઉપાયો ત્હેને માટે સુઝે છે:-

૧-વિધવા આશ્રમો ન હોય એવે સ્થાને સગવડ પડતાં અન્ય વિધવાગૃહો સ્થપાય. (એટલે કે તેમની સંખ્યામાં અભિવૃદ્ધિ થાય. અમદાવાદ જેવું સ્થાન સગવડભર્યું નીવડે.)

૨-વિધવાઓ માટે ગૃહઉદ્યોગનો પ્રતિબંધ થાય; સાધનો સમાજ એક યા બીજી રીતે પૂરાં પાડે.

૩-ધાર્મિક શિક્ષણની ઉત્તમ વ્યવસ્થા થાય.

૪-પતિની સંપત્તિનો સંપૂર્ણ હીસ્સો મળે. (પુત્રો હોય તો અર્ધી મીલ્કત મળે.)

નોંધ:-ફક્ત વિધવાશ્રમ ખોલાય તો છેલ્લાં ત્રણ તેનાં ખાસ આવશ્યક અંગો હોવાં જોઇએ. સમાજમાં રહી, સાસરીયામાં કે એકલી રહી જીવન જીવતી વિધવાઓ માટે છેલ્લાં ત્રણ આવશ્યક અંગોનો જો સમાજ તરફથી પ્રતિબંધ થાય તો મ્હારૂં માનવું છે કે વિધવાનું જીવન સુધરે, અને ઘર બેઠાં બેઠાં, આશ્રમમાં બાલબચ્ચાં હોવાથી ન જવાતું હોય તોપણ આત્મનિર્વાહ કરી શકે.

દિગંબર જૈન સમાજ આટલી વિજ્ઞપ્તિ ધ્યાનમાં લેશે કે ? અને વિધવા જીવનના પ્રખર અભ્યાસી આ લેખ ઉપર પ્રકાશ પાડશે કે ! બ્હેનોને પુરૂષો કરતાં આ જીવનનું વધુ જ્ઞાન હોય એ સ્પષ્ટ છે; કોઇ બ્હેન આ વિષયને વધુ ચર્ચશે તો મહાન ઉપકાર !

નિજાનંદ વિનાના જીવનની નિષ્ફલતા.

(લે૦-ત્રિભુવન રાયચંદ શાહ-ભાવનગર)

સંસારી સ્નેહનું સ્વરૂપ ચંચળ અને નાશવંત છે. માત, તાત, ભાઇ, બ્હેન, પુત્ર, મિત્ર, સગાંવ્હાલાં-એ સહુનો વિયોગ છેવટનો સર્જાયેલોજ છે. આત્માના એ કોઇ સદા માટે સાથી નથી. આત્માના પરિણામો અને સારાં નરસાં કર્મો સદા માટે માત્ર સાથી છે. સૌ સૌનો આત્મા દેહ અને દુનિયાને છોડી મરણ પછી કર્માનુસાર માર્ગે ચાલ્યો જાય છે. સંસારી સ્નેહના આનંદ અને લાભો જ્યાં સુધી દેહ છે ત્યાં સુધીજ રહી શકે છે અથવા રાખી પણ શકાય છે. સંસારીઓ એવા સ્નેહના વિયોગથી હૃદયભરતા દુઃખો અને પરિતાપો ભોગવે છે. એવાં દુઃખો અને પરિતાપોની અગ્નિ બુઝાવવાનો સરલ માર્ગ એ છે કે આત્માનો આનંદ જે અજર-અમર છે તે અનુભવતાં શીખવું. દુઃખો અને પરિતાપોમાંથી છૂટવું હોય તો સંસારમાં નિર્મમત્વ બુદ્ધિ રાખ્યેજ છૂટકો. જ્યાં સુધી અને જેટલા સંસારી સ્નેહનાં સુખ કે આનંદ નિર્માયા હોય ત્યાં સુધી અને તેટલાંજ તે ભોગવી શકાય. તેથી સંસારી સુખથી ફુલાવું ન જોઇએ, તેમ દુઃખમાં ગભરાવું ન જોઇએ. દુઃખમાં ગભરાયાથી કે પરિતાપ કરવાથી કંઇ દુખ ઓછું થતું નથી પણ ઉલ્ટું તેથી તો આર્તધ્યાન થાય છે અને અશુભ કર્મનો બંધ થાય છે. સંસારનો મોહ સંસારીઓને આત્માના આનંદનું ભાન ભુલાવી દે છે પણ સંસારમાં એવા પણ સમયો આવી જાય છે કે જે વખતે આપણે સંસારના સ્નેહ અને સુખ વિના સુના હોઇએ છીએ અને તે વખતે આપણને જે પરિતાપો અને ગ્લાનિઓ થાય છે તે મિટાવવા માટે આત્માના આનંદના-નિજાનંદના અનુભવ્યા સિવાય બીજો કોઇ સબળ ઉપાયજ નથી રહેતો. ઇષ્ટ અનિષ્ટની ભાવના આપણે છોડયા વિના ઉપાયજ નથી. આત્માના શુદ્ધ પરિણામોજ દુઃખને દૂર કરવામાં મદદગાર થશે. અને તેથીજ ભાવિ ઉજ્વલ થશે.

સંસાર એટલે એક પ્રકારના નાટકનો ખેલ, તેમાં આપણે વેષ ભજવતા હોઇએ તેમ આપણે સંસારની દરેક ફરજો બજાવવી જોઇએ એટલે સંસારનાં સુખ દુઃખોની અસર નાટકના વેષ ભજવવાના જેવી હોવી જોઇએ. નાટકના પાત્રના જેમ સુખ દુઃખ અમુક સમય સુધીનાં હોય છે તેમ આપણે પણ સંસારનાં સુખ દુઃખ નાશવંત હોવાથી આપણને તેની અસર આપણા આત્માપર થતી અટકવી જોઇએ. આત્માનંદ અથવા સ્વાનુભૂતિ અને ધર્મ સાધન માટે સત્સંગ થાય તેવું વાતાવરણ ઉભું કરવું અથવા પસંદ કરવું. એટલે તમોને તેના પ્રભાવે અવનવી દુનિયા અને અવનવો સ્નેહ દેખાશે. સંસારની ફરજો તો સંસાર ત્યાગની દશામાંજ છોડી શકાય કેમકે તેવીજ દશામાં તો આખી દુનિયાંજ પોતાની થાય છે અને આખી દુનિયાનું કલ્યાણ અને પોતાનું કલ્યાણ કરવાની ફરજોમાં સંસારની ફરજોનો અવકાશ રહેતો નથી. સંસારની ફરજો બજાવવામાં પણ આત્માનંદના અનુભવ વિનાનું જીવન સાર્થક નથી. સંસારના વ્યવહાર સાચવતાં પણ કમલ કીચડમાં અલિપ્ત રહે તેમ અલિપ્ત રહેવાય એટલે સંસારના હર્ષ-શોકથી અલિપ્ત રહેવાય. સંસારમાં રહ્યા છતાં તેમાં મમતા ન રહે તો તે સમય આત્માનંદ અનુભવી શકાય અને આત્માની-જીવનની ઉન્નતિ થઇ શકે. સંસારમાં શુદ્ધ નિસ્વાર્થ સ્નેહની લ્હાણો કે તેવા સ્નેહના વ્યવહારો અને સ્વપર કલ્યાણ એ જીવનની સાર્થકતાના-આત્માની ઉન્નતિના ઉપાયો-માર્ગો છે અને તેવા માર્ગોમાં

જેટલું ચલાય તેટલી સાર્થકતા. તે વિનાની તો મનુષ્ય પર્યાય અને પશુ પર્યાય સરખીજ છે. શારીરિક બળથી કે બુદ્ધિબળથી માત્ર પેટ ભરવું અને બહુ તો દુનિયાની નાશવંત કહેવાતી મઝાઓ લૂંટી નાશ પામવું અથવા સુખ દુઃખો ભોગવી પાછા બીજી પર્યાયમાં સુખ દુઃખો ભોગવવા જવું અને એ પ્રમાણે પર્યાયોમાં અથડામણીઓ કર્યે જવી કે જેનો કંઇ અંતજ નથી. એવી અથડામણીઓમાંથી છૂટવાનો ઉપાય મનુષ્ય પર્યાય છે અને તે પર્યાય જો નિરર્થક ગુમાવી તો ફરીવાર તે મળશે કે નહિં તે તો શંકાજ રહે કેમકે સત્કર્મોજ મનુષ્ય પર્યાય પમાડી શકે અને તે ન થયા તો મનુષ્ય પર્યાય દૂરજ છે. અને તે મનુષ્ય પર્યાયમાં નિજાનંદજ અક્ષય સુખને પમાડનારો છે. આત્માની અગાધ શક્તિ ઉપર મજબુત શ્રદ્ધા રહેશે તોજ હર્ષ-શોકના અને આર્તધ્યાનનાં પ્રસંગો નહીં આવે. આત્માનો સ્વાભાવિક ગુણ-નિજાનંદ પ્રકટી નીકળશે. અને સુખ દુઃખો-હર્ષ શોક દુનિયામાં જે મળે છે તે અસર નહીં કરી શકે. સંસારીઓ એવી નિજાનંદ દશામાં બધો વખત તો રહી શકવા મુશ્કેલ ગણાય તેમ છતાં સંસારની સારી નરસી પણ વિયોગને માટે સરજાએલી બધી વસ્તુઓ સાથેના વ્યવહારમાં નિજાનંદને એક સદાનો ખરો સાથી છે તેને જેમ બને તેમ ભુલવો ન જોઇએ અને તે જો નહિં ભુલાય તો જીવન રસમય અને સાર્થક થશે-વિપત્તિઓ અસર નહીં કરે-સંસારના મોહનું દુઃખ નહીં થાય અને શાશ્વત સુખની અથવા શુભ કર્મોની પ્રાપ્તિ થવાનો સંદેહ દુર થશે. શુભ કર્મોની પ્રાપ્તિથી સંસારમાં શોકને બદલે હર્ષ અને દુઃખને બદલે સુખ પણ પાસે આવશે. સંસારી ફરજો બજાવવામાં પણ નિજાનંદ જીવન અડચણ રુપ નહીં થાય પણ તેથી તો બહુ સરલતાથી તે ફરજો બજાવાશે કેમકે નિજાનંદથી સંસારી ફરજો નિષ્કામપણાથી બજાવાશે. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। તેવી રીતે ફરજો ખરા દિલથી બજાવવાથી તેનું પરિણામ સારૂં કે નરસું જીવનની સાર્થકતામાં અંતરાયરૂપ નહીં થાય, અને તેવી ફરજો યથાયોગ્ય રીતે બજાવવામાં ઉલ્ટી સરલતા થશે. એવા નિજાનંદમય અને સ્વપર હિત સાધક જીવનથી સર્વ પ્રાણીઓને અપનાવી શકાશે અને સર્વ પ્રાણીઓની સહાય અણુધારી મળવાના સંજોગો ઉભા રહેશે-અને અશુભ કર્મો દૂર રહેવાથી તેવા જીવન માટે સુખ સરજાયા વિના નહીં રહે. સૌ જનો એવું જીવન ગાળી મનુષ્ય જીવનની સાર્થકતાને પામો એજ અભ્યર્થના. इत्यलं ॐ शांति! शांति!!!

—❦—

ધર્મની આરાધના.

એક સરખા દિવસ સુખના, કોઇના જાતા નહીં-એ રાગ.

એક સરખા દિવસ સુખના,
ધર્મના મળતા નહીં.
તેથીજ શાણા શાહુબીથી,
તે દીનો ખોતા નહીં-એક૦
નરદેહ આ છે નાશવંત,
ફરીજ મળશે કે નહિ.
તેથીજ શાણા સફલ કરતા,
જન્મ નિજરૂપ ધ્યાનથી-એક૦
લક્ષ્મી મળો યા ના મળો,
તેની તેને પરવા નથી.
કીર્તિ મળો યા ના મળો,
નિજ ધર્મને ભૂલતા નથી-એક૦
ધન ધાન્ય પુત્ર ને સ્ત્રી સખા,
નિજ માત તાત સહુ મુકી.
જાવું અકેલા નીજ વાટે,
ધર્મ એક સાથે સહી-એક૦
સાર ત્રિભુવન સમજ લ્યો એ,
કહે પ્રેમથી વીનવી.
સત્સંગ જિન ગુરૂ શાસ્ત્રીનો,
વ્યર્થ તુમ ખોતા નહીં-એક૦

ત્રિભુવન રાયચંદશાહ-ભાવનગર.

સાધનાની શરૂઆત.

મન સુધારવાથી વચન અને શરીર સુધરે છે, મન બગડવાથી સર્વસ્વ બગડે છે, શરૂઆતમાં બધા દુર્ગુણો મનમાંજ ઉત્પન્ન થાય છે પછી વચન અને શરીરમાં હૃદયની દુષ્ટ ભાવનાઓ કાર્યરૂપે પ્રગટ થાય છે. મનને કેળવવા પ્રથમ આળસને દુર કરવું અવશ્ય જરૂરી છે. આ પ્રથમ પગથીઉં છે તેના ઉપર પગ મુકયા સિવાય આળ ચઢી શકાય નહીં, આળસ પ્રભુના માર્ગનો કાંતો રસ્તો રોકે છે અથવા રસ્તો ભુલાવે છે, જરૂરીઆતથી નિંદ્રા વધારે ન લેવી, શરીર આળસું બને તેટલી વધારે વિશ્રાંતિ શરીરને ન આપવી, કામકાજથી કંટાળવું નહીં, ધીમે ધીમે કામ કરી કોઇ કામમાં વધારે વખત વિતાવવો નહી. જમ્યા પહેલાં કે પછી સવાર સાંજ નકામાં ગપ્પાં મારવામાં વખત ન કાઢવો, નિરંતર વહેલા ઉઠવાની ટેવ પાડવી, શરીરને જરૂર જેટલો વિસામો આપવો, પેટ ભરીને ગળા સુધી ખાવાની ટેવ ન રાખવી, આ બધું કર્તવ્ય એ ઉચ્ચ જીવનનું બીજું પગથીયું છે. નિરંતર અમુક પ્રમાણમાંજ ચીજો ખાવી, તેની ગણતરી કરી રાખવી અને ઓછી વસ્તુઓ ખાવી, સ્વચ્છ અને સાદો ખોરાક લેવો, ભોજનનો વખત નક્કી કરી રાખવો, ઇચ્છામાં આવે ત્યારે ન ખાવું પણ કકડીને ભુખ લાગે ત્યારે ખાવું, રાત્રીએ ભોજન ન કરવું કેમકે તેથી નિદ્રા વિશેષ આવે છે, સ્વાદ માટે કે મનને રાજી રાખવા ખાતર ન ખાવું, હદપારની ઇચ્છા એ સ્વચ્છંદ વૃત્તિ છે તેથી હૃદયને સ્વતંત્ર બનાવી પવિત્ર કરવું. શારીરિક સંયમની રક્ષા કરતી શકિત પુર્વક કામ કરવું. વાણીના દોષો દુર થાય છે ત્યારે સત્યતા, વિશ્વાસ, સત્કાર, દયાળુતા અને આત્મ સંયમ વિગેરે ગુણોને પોષણ મળે છે, તે માનસીક સ્થીરતા અને દ્રઢ પ્રતિજ્ઞા પાળવાનું બળ પ્રાપ્ત કરે છે, કર્તવ્યનું બરાબર પાલન કર્યા વિના ઉચ્ચ સદ્દગુણોની પ્રાપ્તિ અને સત્યનું જ્ઞાન થતું નથી, સ્વાર્થની દ્રષ્ટિ રાખ્યા વિના પ્રમાણિકતાથી કર્તવ્યનું પાલન કરવું જોઇએ. ખોટા યશ કે લાભની આશાથી છલનો ઉપયોગ ન કરવો, મન વચન અને કર્તવ્યમાં પ્રમાણિક થવું, અન્યાય અને પક્ષપાત રહીત વ્યવહાર કરવો. સ્વપ્નમાં પણ તે વિચારો ન આવે ત્યારે હૃદય શુદ્ધ અને ઉદાર બને છે, ક્ષમાની ભાવનાનો વિકાશ કરવાથી દ્વેષ, વેર, ઇર્ષા વિગેરે દુર થાય છે, ક્ષમા અને દાનની પ્રવૃતિથી જીવનનો વિકાશ થાય છે, વેર આદિની ભાવવાને દુર કરવાથી તેનીમાંહી કોઇ શત્રુ રહેતો નથી, સ્વાર્થ ત્યાગમાંથી દાન અને ઉદારતા પ્રગટે છે, આ પ્રમાણે અંતઃકરણનું પરાવર્તન કરવાથી આત્માની અધિક ઉન્નતિ થાય છે. જે કોઇ પોતાના શરીર વચન અને મનને દ્રઢતાથી શીખામણ આપે છે, પોતાને વશ રાખે છે તે દુર્ગુણો અને કુવાસનાઓ ઉપર વિજય મેળવે છે. સંસારના સર્વ પાપો કેવળ અજ્ઞાનતાથી પ્રગટે છે. જ્યાંસુધી અજ્ઞાનતાના પાપનું દમન કરવામાં નહી આવે ત્યાંસુધી આનંદની પ્રાપ્તિ કોઇપણ વખતે નહીજ થાય. સર્વે જાતનાં દુઃખ મનની દુષ્ટ ભાવનામાંથીજ પ્રગટે છે અને સર્વે જાતનાં સુખ મનની સારી ભાવનામાંથી ઉત્પન્ન થાય છે. સુખ એ મનનો વ્યવસ્થાપૂર્વક વ્યય છે. દુઃખ એ અવ્યવસ્થાપુર્વક અનુચિત મનનો કરેલો ઉપયોગ છે. જ્યાંસુધી મનની અનુચિત ભાવનામાં મનુષ્ય પ્રવેશ કર્યા કરશે ત્યાંસુધી જીવન અનુચિતપણે પસાર થશે. ભુલ કરવી એ શોકનું કારણ છે. જ્ઞાનમાંથીજ આનંદની ઉત્પત્તિ છે. અજ્ઞાન અને મોહનો નાશ કરવામાં મુક્તિ રહેલી છે. જ્યાં મનની અનુચિત ભાવના અને પ્રવૃત્તિ છે ત્યાં બંધન છે અને જ્યાં ઉચીત ભાવના છે ત્યાં સ્વતંત્રતા અને શાંતિ છે.

હરગોવનદાસ નેમચંદ વખારીયા–મુંબઇ.

चातुर्मास किया।

मुनि, त्यागियोंके चातुर्मासके विशेष समाचार इस प्रकार मिले हैं—

मुनिश्री शांतिसागरजी (छानी)	इन्दौर
ब्र० बिहारीलालजी	भिंड
ब्र० कंकुबाईजी	बम्बई
ब्र० बोधीचंद्रजी	कुन्थलगिरि
ब्र० प्रेमसागरजी	रांठी
ब्र० महावीरप्रसादजी	शिरडशहापुर
ब्र० कन्हैयालालजी	कलड
ब्र० पार्श्वसागरजी	कुन्थलगिरि
म० विशालकीर्तिजी	लाडगांव (परभणी)
ब्र० चिंतामणीसागरजी	आकोट
ब्र० वीरसागरजी	पिपरी
ब्र० नेमिसागरजी	मालवत
मुनि धर्मसागरजी	बाहणी (कोल्हापुर)
ब्र० फतेहसागरजी	टाकाटुका
भ० यशकीर्तिजी	रामगढ़ (डुंगरपुर)
ऐ० प्रेमसागर व चंद्रसागरजी	फिरोजाबाद
उदासीन भयंतीनसागरजी	सागवा
मुनि ज्ञानसागरजी	चिनाचा (नालछा)
ब्र० धूनसिंहजी	कैराना (मुजफ्फरनगर)
ब्र० रंगीलाल व किशोरीलाल	बामीदौरा
ब्र० केशरीमलजी	इन्दौर छावनी

ब्र० गोरेलाल व ब्र० सम्मानसिंह आदि कुंडलपुर

तीर्थरक्षा फंडके लिये—तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे रामचंद्र जैन मुनीम तथा नैनसुख जैन भ्रमणार्थ भेजे गये हैं।

અલવા—ના દિ. જૈન મંદિર જીર્ણોદ્ધાર માટે ટીપ કરવા કાળુરામ અગ્રવાલ અને છોટાલાલ તલકચંદ ગુજરાતમાં ભ્રમણ કરી રહ્યા છે,

ઉજેડિયા—માં રક્ષાબંધન પર્વ સારી રીતે ઉજવાયો હતો. પાઠશાળા સારી રીતે ચાલે છે. ૬૫ વિદ્યાર્થી ભણે છે.

સોજીત્રા શ્રાવિકાશ્રમ—ને ૫૦) સમરત બ્હેન અમુલખના સ્મરણાર્થે મળ્યા છે તથા ૫) માસિકની સહાયતા જુબેલી બાગ ટ્રસ્ટ ફંડ મુંબાઇથી મળ્યા છે. અત્રે રક્ષાબંધન પર્વ સમયે બ્ર. સુરેંદ્રકીર્તિજીએ બહુનો યજ્ઞો પવિત સંસ્કાર કરાવ્યો હતો ને ધામધૂમથી સત્રૂના પૂજન થયું હતું.

ભાવનગરમાં—માં ૨૧૦ શેઠ રામચંદ ત્રીભોવનદાસની પત્ની કુંવરબાઇના નામના ૨૦૦૦) ના દાનથી દિગંબર જૈન મહિલા શિવણશાળા હમણાં શેઠ ચુનીલાલ ખુશાલચંદના પ્રમુખપણા નીચે સ્થાપન થઇ છે તે વખતે ૭૫) વ્રજલાલ શેઠ, ૫૧) પ્રમુખે તથા ૧૨૮) નો સીવવાનો સંચો ભેટ મળ્યો છે.

વડોદરા—ના ભાઇ જમનાદાસ તારાચંદ મ. ગાંધીજી પકડાયા ત્યારથી અન્ન છોડી દઇ માત્ર દુધ ફળ પર રહે છે. હમણાં સખ્ત માંદા પડેલા પણ પોતાનો નિયમ પણ રીતે સાચવ્યો હતો.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकलासूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

सम्पादकः—मूलचन्द किसनदास कापड़िया—सूरत।

विषयानुक्रमणिका.

वर्ष २३वाँ
अङ्क ११.

वीर सं० २४५६
भाद्रपद.

लेखकोंको आमंत्रण।

आगामी नवीन वर्षके प्रारम्भमें भी "दिगम्बर जैन" का सचित्र विशेषांक प्रकट होगा उसके लिये विद्वान लेखक व कविगण हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाके लेख व कविताएं एक मासके भीतर २ तैयार करके भेजनेकी कृपा करें। मेनेजर।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २) विशेषांक मूल्य ॥)

સુરતમાં સાકેરચંદ સરૈયાને સખ્ત કેદ:—અત્રેના જૈનોમાં અગ્રગણ્ય અને રાષ્ટ્રીય કાર્યકર્તા ભાઇ છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા તો નાસિકની જેલમાં ૧૧ વર્ષની જેલ ભોગવી રહ્યા છે એ દરમ્યાનમાં એમના ૧૫ વર્ષના ભત્રીજા ભાઇ સાકેરચંદ મગનલાલ સરૈયા તથા એમના બે નોકરો કસ્તુરચંદ મજે. જો અને છગન માળીને ગાંધીજીની ૧૧ શરતોને બ્રિટિશ રાજ્ય એવા બે પૈસાવાળા ફોટો પોતાની દુકાને વેચવા માટે સરકાર તરફથી એ ભાઇયો પાસે એક વર્ષની સારી ચાલની જામીનગીરી માંગવામાં આવી તે તેઓએ સ્વમાન સાચવવા ન આપી તેથી સરકારે એ ત્રણેને ૧-૧ વર્ષ સાદી કેદની સજા કરી છે તથા ભાઈ સાકેરચંદને વળી પોતાની દુકાનપર રાષ્ટ્રીય સમાચારો લખીને મુકાતું પાટીઉં લટકાવવા માટે કેસ ચલાવી ૧૫૦) દંડ કરવામાં આવ્યો જે પણ ન ભરવાથી ૨ માસ સખ્ત કેદની સજા થઇ છે. આ પ્રમાણે વીર બાળક સાકેરચંદ સરૈયા હાલ તો ૧૪ માસ માટે સરકારના મહેમાન બન્યા છે ને એમને સાબરમતી જેલમાં લઇ જવામાં આવ્યા છે. ભાઇ સાકેરચંદ વગેરેને અભિનંદન આપવા માટે સુરતમાં જાહેર સભા થઇ હતી તથા દિગંબર જૈનોની એક સભા પણ નવાપરા કુવાવાડીમાં શ્રી. ચીમનલાલ તલકચંદ સુખડિયાના પ્રમુખપણા નીચે મળી હતી જેમાં શ્રી. ગમનલાલ સુતરીયા, કાપડિયાજી અને પં. ઘરમેધાદાસજીના વિવેચનપૂર્વક સાકેરચંદ વગેરેને અભિનંદન આપવાનો ઠરાવ પાસ થયો હતો જેમાં સરકારની આવી બેહુદી દમનનીતિનો જવાબ આપવા જૈનોને રાષ્ટ્રીય કાર્યમાં વિશેષ ફાળો આપવાની સૂચના અપાઇ હતી. વળી ધારાસભા પીકેટીંગ વખતે સુરતના જૈન યુવક ને બાળ સૈનિકોએ લાઠીનો માર કે પકડાવાની બીક છોડી દઇ સક્રિય ફાળો આપેલો તેમને પણ અભિનંદન અપાયું હતું.

बालवीर–माकरचंद मगनलाल मैय्या–सूरत.

(इस नसिंहपुरा जैन बालकको राष्ट्रीय सत्याग्रहसंग्राममें १ वर्षकी सादी व २ माहकी सख्त कैद हुई है।)

"जैन विजय" प्रेस–सूरत.

। इस पत्र के इसी अंकका छोड़ पत्र ।

दिवाली का त्योंहार कैसे मनावें ।

हमारे जीवन में, हमारे व्यापार में, हमारी कलाओं में ज्योति (प्रकाश) करके ही दीवाली मना सकते हैं ।

घर की सफाई के साथ हमारी दूसरी बुराइयां, कमजोरियां (फूट, विदेशी वस्तुओं का उपयोग, सामाजिक व धार्मिक कुरूढियां) दूर करके भारत को स्वर्ग भूमि बनावें ।

फटाकों से नुकसान ।

[१] शारीरिक हानि—अनेक बालक व स्त्री पुरुष जल जाते हैं, गन्दी हवा से रोग होते हैं ।

[२] धन की हानि—लाखों रुपये विदेश में जाने से देश गरीब होता है तथा लाखों का बारूद देश में बनाकर धन, शक्ति व समय नष्ट किया जाता है ।

[३] धर्म की हानि—असंख्य छोटे मोटे निर्दोष जन्तुओं की हिंसा होती है तथा जो त्योहार जीवन में ज्योति लाने का था व अन्धकार-बुराइयां फैलाने का कारण बनाया सो कर्तव्य भ्रष्टता का महापाप है ।

जिस देश में विश्ववंद्य महात्मा गांधीजी और चालीस हजार भारत-वीर कैदमें हैं, जो प्रजा अपने दुःख प्रकट करे तो सजा पाती है उसमें कोई फिजूल खर्च करना, मौज उड़ाना या अज्ञान पूर्ण पुराने रिवाजों का पालन करना कितना भयंकर है ! यह स्वयं विचारें और कृपया फटाके, फुलझड़ी, तूली व बारूद में एक कौड़ी खर्च न करें और दीवाली के दिनों में बड़ी सभाएं करके अपनी दुर्दशा कैसे सुधरे यह सब समझावें ।

विदेशी वस्त्र, विदेशी खिलौने, फटाके, फैंसी चीजें आदि छोड़ कर भारत माता को विपत्ति में थोड़ी शान्ति दें अन्यथा माता के साथ बच्चों का भी अस्तित्व नहीं रहेगा ।

फटाके के व्यापारी व खरीददार अपना कर्तव्य विचारें, ऑर्डर दिये हों तो रद्द करें । बालक फटाके बहिष्कार की प्रभात फेरी व जुलूस निकालें, स्कूलों के संचालक व अध्यापक व्याख्यान देकर मनाई आज्ञा निकालें ।

नोटः—यदि इस प्रार्थना का पालन न होगा तो समिति को अन्तिम मार्ग धरने का (पिकेटिंग का) ग्रहण करना होगा ।

इस इश्तिहार को पुट्ठे पर लगाकर हर एक ग्राम में लगाने की कृपा करें ।

प्रार्थी—

मंत्री-फटाका निषेधक समिति

ब्यावर ।

श्री महालक्ष्मी छापाखाना ब्यावर ।

॥ श्रीवीतरागायनमः ।

नाना कथाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्ततास, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वाँ | वीर सम्वत् २४५६, भाद्रपद, विक्रम सम्वत् १९८६. | अङ्क ११.

सम्पादकीय-वक्तव्य

परम पावन पर्यूषण पर्व समाप्त होचुका है।

क्षमा याचना ।

आपने यथासाध्य व्रतोपवास आदि किये होंगे। धर्म-शास्त्रोंका स्वाध्याय और श्रवण करके आत्मभावोंको निर्मल किया होगा। तथा "खम्मामि सव्वजीवाणं"का पाठ पढ़कर प्राणी मात्रको क्षमा प्रदान की होगी। तब हम भी दि० जैनके पाठकों तथा सम्पूर्ण जैनसमाजसे यह आशा रखते हैं कि हमारी भूलोंको भी आप भूल गये होंगे। मनुष्य अज्ञ है, उससे गलतियां होती हैं। फिर भी पत्र सम्पादन करनेका कार्य तो ऐसा है कि सत्यका पक्ष लेकर न्यायपूर्ण बात लिखना पड़ती है संभव है कि वह किसीको अरुचिकर भी हो। अतः पत्र द्वारा ऐसे अनेक प्रसंग आसकते हैं कि किसीके मनको क्षोभ हो। इत्यादि कारणोंसे हम अपनेको क्षमापात्र समझकर इस पत्र द्वारा उन भाइयोंसे क्षमा याचना करनेके लिये उपस्थित हुये हैं जिनका मन हमारे द्वारा कृत, कारित या अनुमोदनासे क्षुब्ध हुआ हो।

निःशल्य होना ही सुख शांतिका एक परम उपाय है। और वह निःशल्यता परस्पर प्रेम या क्षमाभाव होनेपर ही होसकती है। इसलिये उदारभावसे परस्पर क्षमा प्रदानकर प्रेमपूर्वक धर्म देश और समाजकी सेवा करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिये। क्षमाशील व्यक्ति सर्वत्र सर्वदा सुखी रहता है। वह अपनी क्षमा शक्तिके द्वारा जगतको वशीभूत कर सकता है। क्षमावानका संसार सेवक होजाता है। हम आज क्षमावतार महात्मा गांधीजीको देखकर यह बात निःसंकोच कह सकते हैं कि क्षमामें अतुल बल है।

दिगम्बर जैन २३ वर्षसे जैन समाजकी अपूर्व सेवा कर रहा है। इसका जन्म उस समय हुआ था जब अपना समाज बहुत अंधकारमें था। इसके विशेषांकोंने तथा विद्वत्तापूर्ण लेखोंने समाजको निजका भान कराया और जागृत किया। इसका भाव निरंतर सेवामय रहा है। फिर भी अगर किसीको इसकी धार्मिक एवं न्यायपूर्ण नीतिसे कुछ क्लेश हुआ हो तो वे क्षमा प्रदान करेंगे, ऐसी हमारी आशा है।

* * *

अब दशहराका त्योहार आगया है, लोग इस समय मनामौन करते हैं।

दशहरा। अनेक राजा महाराजाओंकी इस दिन बड़े ठाटबाटसे सवारियां निकलती हैं और नागरिक आनन्दित होकर नाना प्रकारसे इस त्योहारको मनाते हैं। आप इस बातको जानते हैं कि मनुष्य जाति पशुओंकी अपेक्षा अधिक स्वार्थी है। वह अपने मौजशौकके खातिर दूसरोंको दुख दे सकती है, मूक-पशुओंको सता सकती है और निर्दयतापूर्वक उनके प्राण हरण कर सकती है। इस दशहरामें यह तमाम बातें देखनेको मिलेंगी। बड़े२ राजा महाराजा अपने मनोविनोदके लिये भैंसों और सांड़ोंको लड़ाते हैं, मेढ़ों और हाथियोंकी कुश्ती कराते हैं तथा उनको खूनाखून देखकर खुश होते हैं। अपनी विलासिताकी पुष्टिके लिये अज्ञान जानवरोंको इस प्रकार दुखी करना, क्या यह कम स्वार्थ है? इतना ही नहीं, किन्तु इस समयपर तो लोग अनेक प्राणियोंके प्राण हरणकर बलिदानके बहाने और अपने जिह्वा स्वादके हेतुसे घोर पाप करते हैं। कहिये ऐसे स्वार्थी मनुष्योंको क्या कहा जावे?

आज तो देशमें हाहाकार मचा हुआ है, हिंसा और अहिंसाका अपूर्व जंग मचा है, लाखों वीर भारतकी स्वतंत्रताके लिये मैदानमें कूद पड़े हैं और अभूतपूर्व युद्ध जारी है। ऐसे समयमें भारतीयप्रजाका क्या कर्तव्य है? क्या वह अब पशुओंकी कुश्ती कराके मनामौन कर सकती है? क्या अब पशुओंकी गर्दनपर छुरी चलाकर धर्मके ढोंग करनेका समय है? नहीं, अब तो अपनी व अपने देशकी लाज बचाने तथा अहिंसाधर्मके रक्षणका समय है। अपनी स्वार्थसिद्धिके लिये दूसरोंको दुःखी करना मनुष्यता नहीं है। अगर कोई अपने पशुबलसे किसीको दुःखी करता है तो समझना चाहिये कि वह मनुष्यत्वसे दूर है।

इस समय प्रत्येक जैन व जैन समाजोंका कर्तव्य है कि दशहरेके निमित्तसे होनेवाली घोर हिंसाको रोके और सुख शांतिमय अहिंसाका प्रचार करे। व्यर्थ व्ययको रोककर और कीर्तिकी थोथी आकांक्षाका परित्याग कर अपने द्रव्यको, अपनी बुद्धिको और अपने आत्मबलको ऐसे पुण्य कार्यमें लगाना चाहिये।

* * *

प्रति वर्षकी भांति फिर भी दीपावली पर्व आ रहा है। मगर पहिलेसे

दिवाली कैसे मनावेंगे? अबकी बार कुछ विशेषता होगी। भारतीय जनता बहुत समय पूर्व इस पर्वमें आनन्दोत्सव मनाती थी, दीपकोंसे नगरको जगमग करके इन्द्रपुरीका सुखानुभव किया करती थी और गान बाजित्रकी ध्वनिके साथ दशों दिशायें नाचने लगती थीं। मगर अब? अब तो देशकी दशा दूसरी ही होगई है। भारतवर्षमें चहुं ओर त्राहि २ मची है। सात करोड़से भी अधिक देशीय बंधु भूखों मरते हैं, और लाज ढकनेके लिये कपड़ेका चिथड़ा नहीं मिलता। करीब ३० हजारसे भी अधिक भारतीय सरकारी जेलोंमें पड़े हैं, और लाखों भाई नाना प्रकारसे दुःखी होरहे हैं। क्या ऐसे

संकटके समय आप गान तानके साथ दिवाली मनावेंगे? क्या चड़कीले भड़कीले चरबीमय विदेशी वस्त्रोंको पहिनकर अपनेको सुखी समझेंगे? क्या बनावटी रोशनीसे मकानोंको झकमका कर शोभा मानेंगे? नहीं, कभी नहीं। इस समय एक सच्चा देशभक्त भारतीय ऐसे मौज शौकके कार्योंको कभी नहीं कर सकता।

तब फिर आप "दिवाली कैसे मनावेंगे?" सीधे सादे देशी वस्त्रोंको पहिनकर मंदिरमें जावें, भगवान महावीरस्वामीकी पूजा करें और उनका जीवनचरित्र सुनें–सुनावें। उससे शिक्षा ग्रहण करें कि हम किसके उपासक हैं? जिसने संसारसे स्वतंत्र होकर मुक्तपद प्राप्त किया है, हम उस वीरकी पूजा करते हैं। तब क्या उन्हें पराधीन रहना चाहिये? उस स्वतन्त्रताकी मूर्तिकी पूजा करते हुये हम परतन्त्र रह सक्ते हैं? इत्यादि बातोंपर पूर्ण विचार करनेसे आपको स्वातन्त्र्य प्राप्तिकी इच्छा होगी। और उसके सम्यक् उपायोंमें लग जावेंगे। श्रीमान् लोग दिवालीके समय अपनी आय व्ययका हिसाब लगाते हैं, तब हमें इस बातका हिसाब करना चाहिये कि हमने देशकी आजादीके लिये कितना किया? देशकी कितनी सेवा की? धर्म और समाज रक्षणमें कितना भाग लिया? अब हमारा क्या कर्तव्य है? हम किन२ उपायोंसे देशसेवा कर सकते हैं? इत्यादि।

दिवाली आती है अंधकार दूर करके स्वच्छता फैलानेके लिये। हमें इस सुअवसरका सदुपयोग कर लेना चाहिये। विदेशी वस्तुओंसे हमारी भारतीय भावनाएँ नष्ट होगई हैं। इसलिये अब इनसे मोह छोड़कर अपने शरीरको स्वच्छ खादीसे सज्जित करना चाहिये और अपने मकानोंसे विदेशी कचरा निकालकर स्वदेशी वस्तुओंका उपयोग करना चाहिये। विदेशी वस्तुओंको रखते हुए आपके यहां वास्तविक शुद्धि नहीं हो सकती। कमसे कम दीपावलीके प्रकाशमें आंखें खोलकर इन तमाम बातोंको ध्यानपूर्वक देखना चाहिये।

देशकी दशा जर्जरित होगई है। आप त्योहारोंको विविध व्यंजन खाकर नहीं मना सकते। किन्तु साधारण भोजन करके अपनी बचतके पैसे उन गरीबोंके पेटमें पहुंचाना होंगे जो आज भूखे तड़प रहे हैं। नित्य चर्खा कातकर सूत तैयार करिये और अपने कपड़ोंकी स्वयं पूर्ति कीजिये। फिर उन विलासी (विदेशी) वस्त्रोंके न पहिरनेसे जो पैसे बचें उनसे अपने गरीब भाइयोंके तनको लाज ढंकिये। अपनी वाहियात आवश्यकताओंको कम करके बचे हुए द्रव्यसे उन भाइयोंकी आवश्यकताओंको पूर्ण करिये जो दिन रात परिश्रम करनेपर भी हाथपर हाथ रखे बैठे रहते हैं।

अगर आप इस नूतन वर्षसे इन बातोंको अमलमें लाना प्रारम्भ करदेंगे तो आपका दीपावली मनाना सफल होजावेगा। समयानुसार प्रवृत्ति करना बुद्धिमानोंका काम है। सीधासादा खाना पीना और साधारण वस्त्राभरणोंका पहिरना कोई शरम या पापकी बात नहीं है। बड़े२ श्रीमन् और धीमान् पं० मोतीलालजी नेहरू जैसे भारत वीर तथा महात्मा गांधी जैसे महापुरुष चर्खा कातते हैं, मोटेसे वस्त्रोंसे गुजारा

करते हैं और साधारण खानपानमें संतुष्ट रहते हैं। श्रीमती सरोजनी नायडू जैसी भारतीय महिलायें विलासिताका परित्याग कर जेलोंमें रहकर सामान्य खानपान और रहन सहनसे देश सेवामें लगी हुई हैं। तब क्या चर्खा कातना, खादी पहिरना और मामूली रहन सहन रखना हमारे लिये लज्जाकी बात होसकती है?

***

फटाका। दीपावलीके बाद नूतनवर्ष प्रारम्भ होता है। अब अपने जीवनमें भी कुछ नूतनता आना चाहिये। दीपावलीके समय आप अपने लड़कोंको फटाके खरीद कर देते हैं और पैसे देकर जुआ आदि दुर्व्यसनोंमें फंसाते हैं, क्या यह एक सभ्य समाजके लिये लज्जाकी बात नहीं है? एक एक घरसे अगर २-४ आने ही फटाकोंके लिये निकलते हैं तो समझ लीजिये कि समस्त भारतमें एक ही रातमें लाखों रुपयोंका धुँआ कर दिया जाता है! अनेकोंके तो जल मरनेके भी समाचार आते हैं। क्या अब आप इस पाप कार्यको पसंद करेंगे?

इस वर्षसे तो फटाकेकी प्रवृत्ति बिलकुल बन्द करना चाहिये। अच्छा तो यह हो कि व्यापारी स्वयं ही फटाके न मंगावें। अगर लोभ और लालचके वशीभूत होकर कोई मंगावे भी तो समाज उनको खरीद न करे। यदि बेचने-वाले बेचें, तथा खरीदनेवाले अपनी मूर्खतासे खरीदें तो विवेकशाली युवकोंका फर्ज है कि वे शान्तिपूर्वक उनको इस पाप कार्यसे रोकें। जब देशमें मातमसा छाया हो, तब फटाकोंका फोड़ना शोभा नहीं दे सकता। न तो यह वास्तवमें कोई आनंदकी वस्तु है और न यह सभ्यताकी ही निशानी है। किन्तु अज्ञ लोग व्यर्थ ही लाखों रुपयोंकी बरबादी करके देशको दूना दुःखी बनाते हैं। इन खोटी प्रवृत्तियोंको छोड़कर सज्जनतापूर्वक पर्वोंका मनाना यही भारतीय सभ्यता है।

सत्याग्रह-संग्राममें जैनियोंका भाग।

दमोह-में रघुवरप्रसाद जैनको ६ माह सख्त सजा हुई। वर्धा-में सेठ चिरंजीलालजी बड़जात्या व हीरालाल जिनदास चबरे जेल गये। खंडवा-में हुकमचंद जैन जंगल कानून सत्याग्रहमें बहुत कष्ट पा रहे हैं। चौरई-में सिं० दुलीचंदजी जैन पकड़े गये। सूरत-में रतनचंद गुलाबचन्द कापड़िया (मेवाड़ा दि० जैन) ने ८००) की देशी साड़ियां स्वयंसेविकाओंको बांटी। बनारसमें-जैन छात्र संघको मंदिरपर विदेशी वस्त्र पर पिकेटिंग करनेपर ४ दिनमें सफलता मिली। अमरोहा-सत्याग्रहमें बांकेलाल जैन व चांदबिहारीलाल जैन४ ४ माह जेल गये। रायपुरमें-हुलासचंद जैन व सहारनपुरमें नत्थूमल जैन पकड़े गये हैं। पेंडरामें-चौ० बुद्धूलाल जैनके प्रयत्नसे विदेशी शक्कर मंगाना बंद होगया व शराबकी बंदी हो रही है। कटंगी-में चेतरामजी जैन पकड़े गये। बांदामें-नन्हें-लाल जैन झंडा सत्याग्रहमें ३ माह जेल गये। कालकामें-त्रिलोकचन्द जैन जेल गये। खण्डवा-कांग्रेस कमेटीके मन्त्री बा० अमोलकचन्दजी दि० जैन खूब काम कर रहे हैं।

पर्यूषण पर्व ।

कारंजा—ब्र० आश्रममें पं० देवकीनंदजी दो दफे शास्त्र बांचते थे व रात्रिको एक १ धर्मपर व्याख्यान करते थे। गांवके तीनों मंदिरोंमें भी पंडितजीके व्याख्यान होते थे। चतुर्दशीको सब विद्यार्थियोंने उपवास एकाशन किये थे। पारणा बालचन्दजी सोलापुरने कराई थी। रावजी माणेकचन्द आलंदने एक दिन मिष्टान्न-भोजन भी दिया था।

रोहतक—बा० उग्रसेन वकील, पं० रवींद्रनाथ न्यायतीर्थ आदिके प्रयत्नसे कुल १७००) चंदा हुआ, जिसमेंसे १४००) स्थानीय संस्थाओंको और ३००) जीवदया सभा आगराको दिये गये। जलयात्रा भी शानसे निकली थी।

अजमेर—में पं० कस्तूरचंदजी उपदेशक खास बुलाये गये थे। जैसवाल जैन सभाके उद्योगसे शास्त्र व व्याख्यान सभाका अपूर्व आनंद रहा। मंडप सजाने, शास्त्र वेष्टन आदिमें खादीका उपयोग हुआ। सारी जनता खद्दर पहनकर ही आती थी।

कालका—में शास्त्र सभा व्याख्यान सभा जलयात्रा नगरकीर्तन सब हुए थे। बहिनोंने २१) चंदा करके संस्थाओंको भेजा।

अमरोहा—ब्र० सीतलप्रसादजीका चातुर्मास होनेसे विशेष आनंद रहा। आप अस्वस्थ होगये थे तौ भी शास्त्र बांचते थे। पूजन प्रतिक्रमण, सभा आदिका अच्छा आनंद रहा। कई नियम लिवाये गये। चार दानमें स्त्रियों और पुरुषोंने ८३॥=)का चंदा करके संस्थाओंको भेजा।

सुदी १५को रथयात्रा निकली थी तब पानीपतसे पं० अरहदासजी पधारे थे। आपके भजन व उपदेशसे सारे नगरमें जैनधर्मकी अच्छी प्रभावना हुई। हिन्दू मुसलमान सबने आपके उपदेशकी तारीफ की। वदी १को हमने भी कुछ उपदेश दिया था फिर क्षमावणी हुई थी।

देहली—पं० तुलसीरामजी काव्यतीर्थके पधारनेसे शास्त्र सभाका अपूर्व आनंद रहा। कन्याशिक्षालयके १२वें अधिवेशनमें भी आपका स्त्रीशिक्षा पर उत्तम व्याख्यान हुआ था।

लाहौर—४५) दानमें इकट्ठे हुए। बयाना रथोत्सवके लिये तार किया गया था।

उस्मानाबाद—पं० केवलकुमारजी तथा पं० बंशीधरजी शास्त्रीके पधारनेसे शास्त्र व्याख्यान सभा व शंका समाधानका अपूर्व आनंद रहा। कुंथलगिरी आश्रमको ७३) मिले।

रीठी—ब्र० प्रेमसागरजीका असरकारक उपदेश होता था। आम सभा भी की गई, गरीबोंको अन्न वस्त्र बांटा गया। पूजन प्रभावनाका अच्छा आनंद रहा।

पानीपत—ब्र० आदिसागरजीके कारण ठीक आनंद रहा। पंचमीको वेदी प्रतिष्ठा हुई। पं० अरहदास व पं० रूपचंदजी द्वारा भजन व उपदेश होता था। बाल सभा भी नित्य होती थी। १०००) दान हुआ। यहां निर्माल्य द्रव्य जलाया जाता है या जलमें सिराया जाता है।

नोट—जलमें डालना ठीक नहीं है।

किरतपुर—में लालमनदास वैष्णवको जैन दीक्षा दी गई। जलयात्रा भी निकाली गई थी।

रा० ब० सुलतानसिंहजी—के स्मरणमें १०८) विद्यादानमें व कुछ मंदिरोंमें भेजे जा चुके हैं।

जैन ग्रेजुएट चाहिये—बड़ोदा सरकार उच्च संस्कृत शिक्षा पानेके लिये दो जैन ग्रेजुएटोंको अपने खर्चसे यूरोप भेजना चाहती है। इस विषयमें पत्रव्यवहार मोतीचन्द गिरधर कापड़िया महावीर विद्यालय, गोवालिया टेंक बंबईसे करें।

फरुखनगर—के मंदिरमेंसे चांदीके छत्र चौकी भामंडल आदि चोरी चले गये हैं।

सावधान—हर्षकीर्तिवाली वही ठगी चतुरमती आर्यिका आजकल दांता (जयपुर)में ठहरी है। वहांके भाई बहिन इससे सावधान रहें!

महावीर ब्र० आश्रम कारंजा—की ओरसे एक डेप्युटेशन उसमानाबाद गया था, वहां सेठ नेमचंदजी वकीलने आश्रमको १००१) दिये व सेठ हीराचंद अमोचंदने १००१) देना स्वीकार किये तथा फुटकल मिलकर कुल ४१५०) सहायता मिली थी। इस आश्रमका कार्य अतीव सफलताके चल रहा है।

बामनौली—(मेरठ)में मंदिर बन रहा है उसके लिये सहायताकी आवश्यक्ता है।

मथुरामें धर्म प्रभावना—चौरासी (मथुरा)में आचार्य १०८ श्री शांतिसागरजी आदि ७ मुनि व ऐलक क्षुल्लकोंका चातुर्मास होनेसे दशलाक्षणी पर्वमें अपूर्व धर्मप्रभावना हुई थी। अभी संघपति सेठ घासीलालजी, सेठ रामचंद धनजी, सेठ फतेहचन्दजी परवार, पं० लालारामजी शास्त्री आदि पधारे थे तब "शंकासमाधान" व गंभीरताके चर्चा होती थी। आचार्यश्री शंकाओंका बराबर समाधान अतीव शांतिपूर्वक करते थे। वदी २ को मुनि नमिसागरजीने व वदी ४को मुनि चंद्रसागरजीने केशलोंच किया था तब दूर २के भाई इकट्ठे हुए थे। वदी ३ को रथयात्रा उत्सव बड़ी शानसे हुआ था तब कामावाले तुलसीरामजीने अच्छा नृत्य किया था।

ब्र० सीतलप्रसादजी—दशलाक्षणी पर्वमें अमरोहामें ज्वरसे सख्त बीमार होगये थे, जिससे तार आनेपर हमें अमरोहा आना पड़ा था। महाराजका ज्वर उतर कर एकदम शर्दी होगई थी व अत्यंत अशक्ति होगई थी, परन्तु वयोवृद्ध वैद्य बाबूलालकी परिचर्यासे फिर आराम होने लगा था। अब स्वास्थ्य सुधर रहा है व चिंताकी कोई बात नहीं है। अतीव बीमारीमें भी ब्रह्मचारीजी अपने सभी नियमोंमें बराबर दृढ़ रहे थे। सामायिक तीन दफे लेटे २ भी करते थे व पर्यूषणमें नित्य एक दफे ही दवा पानी आदि लेते थे, फिर पुनमसे तीन दफे दवा पानी लेने लगे थे। आप अमरोहामें पांच घण्टे नींदके सिवाय रातदिन परिश्रम करते रहते हैं। जिसमें गोम्मटसार कर्मकांडका अंगरेजी उल्था, स्वयंभू स्तोत्रकी टीका व पं० बिहारीलालजीके अपूर्ण जैन शब्दकोषको लिखनेके कार्य मुख्य हैं। अमरोहामें १०-१५ गृह संख्या होनेपर भी वहांके भाई अतीव धर्मप्रेमी

हैं। इन्होंने रातदिन लगकर ब्रह्मचारीजीकी सेवा की थी। ब्र०जी चिरायु हों!

थांदला—की नूतन पाठशालाके लिये अध्यापककी आवश्यकता है। वेतन ३०) तक।

लिखो—सूरजमल जेदन्द गांधी—दाहोद।

ला० गिरधारीलाल प्यारेलाल स्कोलरशीप फंडसे इस साल देहली कालेजके १२ विद्यार्थियोंको १९९) मासिक स्कोलरशीप देना मंजूर हुआ है।

पावापुरी केस—का चुकादा शीघ्र ही छप कर प्रगट होगा। वहांके जल मंदिरमेंसे श्वे० जैनोंको चुकादेसे तीन माहमें भीतर २ अपनी मूर्ति उठानी पड़ेगी।

जैन सुकृत भण्डार फण्ड—जो सुजानगढ़में सेठ रोडमल मेघराजजीके यहां १००००)के स्थाई दानसे चल रहा है, उसके गत वर्षका ३००) सूद इस प्रकार दिया गया है—१५०) औषधालय सुजारी, १५०) आश्रम बड़वानी व २००) करीब १९ संस्थाओंको बांटकर भेजे गये। तथा मंदिर गोलकसे २६॥≈) निकले वे भी संस्थाओंको भेजे गये हैं।

भ० जिनसेन—करवीरमठ (कोल्हापुर)के लिये शिष्य नियुक्त करनेको सांगली जैन बोर्डिंगमें ता० २७-९-३०को समस्त चतुर्थ जैनोंकी सभा होनेवाली है।

गुलबर्गमें मलखेड संस्थान—व मंदिरके शास्त्रभंडारके जीर्णोद्धारार्थ दक्षिणके दि० जैनोंकी सभा सेठ जीवराज गौतमचंद दोशीके सभापतित्वमें श्रा० सुदी १३ को हुई थी जिसमें प्रस्ताव हुए कि (१) संस्थान व जीर्णोद्धारके लिये कमेटीकी नियुक्ति (२) कमेटी २००)का चंदा करे व विक्रका लेना वसूल करे। उसी समय ६६०)का चंदा होगया था। फिर कमेटी उसी दिन वहांसे मलखेड गई थी। वहां जाकर शास्त्रभंडार खोला व उसकी ग्रंथ सूची भी की थी इसी कार्यमें कारंजासे ब्र० देवचंदजी तथा पं० देवकीनन्दनजी शास्त्री खास पधारे थे।

जिनसेन मठ—(कोल्हापुर)की व्यवस्था सरकारके हस्तक लेनेको हुई। जैनोंने कोल्हापुर राज्यमें अपील की थी जिसपरसे सरकारने मठकी सब मिलकत जप्त करली फिर प्रबंधार्थ एक कमेटी नियुक्त की है, परन्तु इसका विरोध जोरशोरसे हो रहा है। विरोधके लिये ३००० चतुर्थ जैनोंकी सभा कुंडलतीर्थ पर ता० १८-८-३०को भुष्पाल अप्पा आष्टाके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें प्रस्ताव हुआ कि आज तक किसी भी जैन मठकी व्यवस्था सरकारके हाथमें नहीं गई है, इससे चतुर्थ समाजका अपमान हुआ है व व्यवस्था हमें दी जावे।

ब्र० आश्रम कुन्थलगिरि—का १७ वां वार्षिकोत्सव ब्रह्मचारी बोधीचंदके सभापतित्वमें श्रावण सुदी १२ से १५ तक हुआ था जिसमें छात्रोंके मरदानगीके खेल व डूमे भी हुए थे। कुल १९९) सहायता मिली। तथा ११) तो पं० केन्द्रकुमार शास्त्री मैनेजरने प्रदान किये।

जैन पेण्टर—जैन मंदिरोंमें वेदी आदिपर सोने आदिका रङ्ग व चित्रकारी हम परमार्थ बना देंगे जो खर्च नहीं कर सकते, मात्र रङ्गका व सफर खर्च देना होगा। समर्थ जैनोंसे उचित चार्ज लेंगे। हुंडीलाल जैनचित्रकार—टूण्डला (आगरा)।

करहल–में दानवीर ला० फुलजारीलालजी जैन रईसका भादों सुदी १२ को ७१ वर्षकी आयुमें स्वर्गवास होगया। अन्त समय ५७१) दान निकाला गया था।

इन्दौर–में रा० रा० ब० सेठ कातूरचंदकी धर्मपत्नीका तथा श्राविकाश्रममें गंगाबाई छात्राका स्वर्गवास होगया। गंगाबाई अपने ५००)का दान संस्थाओंको कर गई है।

ललितपुर–में स्वदेशी वस्त्रका मंदिरोंमें खुब प्रचार होरहा है।

बयानामें फिर उपद्रव–बयानामें जैन रथ-यात्रा निकालनेकी मंजूरी मिली थी व गत जन-वरीमें जैन रथयात्रा निकली भी थी। उसके बाद हिन्दुओंने फिर वाइसरोयको अर्ज की है कि राजा नाबालिग है वहांतक रथयात्राकी मंजूरी न दी जावे व दी जावे तो नंगी मुर्ति न निकली जावे! इसपर स्थान २ से जैनोंका विरोध हो रहा है व पहिली आज्ञा चालु रखनेके तार भेजे जारहे हैं।

रावराजा आदि हुए–इन्दौर महाराजाकी १२वीं वर्षगांठकी खुशीमें सर सेठ हुकमचंदजी को 'रावराजा', रा० ब० हीरालालजीको राज्य-भूषण व लाला भैंदरीमलजी मित्तलको मुन्तमिम बहादुरकी पदवी मिली है। बधाई!

हीराबाग धर्मशाला–बम्बईका जुलाई मासमें ८८१ व अगस्तमें ८०७ जैन अजैन यात्रियोंने लाभ लिया था तथा पन्नालाल औषधालयका जुलाईमें ६८६७ व अगस्तमें ६८६१ रोगि-योंने लाभ लिया था।

जीवदया सभा आगरा–के प्रयत्नसे पेंडत, दिवली, लोया व आगरापारके मेले अहिंसक रूपसे समाप्त हुए हैं।

वियोग–इन्दौरकी सर सेठ हुकमचंद बोर्डिंगमें दाहोद नि० सोभागमल नामक २१ वर्षके अतीव होनहार विद्यार्थी जो कॉलेजमें पढ़ता था उनका गत ता० १२को बिमारीके कारण वियोग होगया। शोक!

सेठ रावजीभाईको मानपत्र–मथुराकी दि० जैन पचानकी ओरसे श्री० सेठ रावजी सखा-राम दोशी सोलापुरको गत ता० १२–९–३० को मानपत्र दिया गया था जिसमें आपकी जातिसेवा, धर्मसेवा, धर्मप्रेम, मुनि भक्ति, वात्स-ल्यगुण, परोपकार, परीक्षालयका उत्तम कार्य आदिकी अतीव प्रशंसा की गई है।

छुटया—કલોલ નિ. ચંદુલાલ જમનાદાસ વખારિયા ને હીરાલાલ પરશોતમદાસ વીસાપુર જેલ-માંથી તથા સોમચંદ ડાહ્યાભાઇ વરોડા જેલમાંથી સજા પુરી કરી છુટીને મુંબાઇ આવ્યા છે તેમને અભિનંદન આપવાની સભા દિ. જૈન યુવક મંડળ તરફથી થઇ હતી. આ ભાઇઓએ અંતમાં આભાર માની ફરી પ્રસંગ આવે જેલ જવાની તૈયારી બતાવી હતી તથા જેલનો અનુભવ કહી સંભ-ળાવ્યો હતો.

આમોદ—માં ભાઇ ડાહ્યાલાલને દારૂ પીકે-ટીંગને માટે ૧ મહિનાની સજા થઇ છે. આ ભાઇ નાગપુર ઝંડા સત્યાગ્રહ ને મીઠાના સત્યાગ્રહમાં પણ જેલ જઇ આવેલા છે.

स्वप्नका मूषक।

(ले०—'विद्यार्थी' महेन्द्रकुमार जैन, बिजनौर)

(१)

उरग-ताड़ित मूषक एक था,
भवन पै हमरे अति दौड़ता।
उरग (सांप) भी उसका बन पृष्ठग,
चकित मूषकको छु खदेड़ता॥

(२)

उरग था चहता हर तौरसे,
उदरमें मम मूषक आ समा।
पर नहीं जगमें कहीं भी तक,
फलत-फूलत केवल चाहसे॥

(३)

निकट ही करमें पहिने हुवे,
हथकड़ी, पगमें पगबेड़ियां।
न कुछ ज्ञात कि-क्या अपराधमें,
इस तरा हम थे छु पड़े हुए॥

(४)

खर खराहट में उनकी सुन,
उभय-वृत्त लगा सब देखने।
बज पड़ी हमरीं पगबेड़ियां,
खनखनाहट मूषकको मिली॥

(५)

अतिभयातुर मूषक देखता,
टकटकी छु लगाय कभी कभी।
"यदि बचा सकते तब लो बचा"
यह मुझे वह था कह सा रहा॥

(६)

पर नहीं मुख फेर सका पुनः।
जब लखीं हमरीं पगबेड़ियां।
पर भरी अति दीरघ सांस थी,
हृदयमें कुछ बात विचारके॥

(७)

करुण-वृत्त लखा निज आंखसे,
पर न मैं कुछ भी कर ही सका।
पर लगा कहने परतंत्रते,
धिक् तुम्हें! धिक है!! धिक है तुम्हें!!!

(८)

पुन कहा उस मूषक यारसे,
अति भले हमसे तुम सौगुने।
यदि चहो, सुखसे मर तो सको,
पर न मैं, धिक है! धिक है!! मुझे॥

(९)

सबल है यह घातक क्रूर है,
नहिं दया कुछ है इसके हिये।
किस तरा इससे निज-गोपना,
कर सको, प्रिय यार विचार तो॥

(१०)

"इसलिये जलदी चल साम्हने,
निज शरीर उसे हम सौंपदें।
यह विचार महाशय! क्या? तब"
इस तरा जब मूषकने कहा॥

(११)

झट कहा हमने उससे मम,
'उरग-हाथ पड़ो' नहिं भाव है।
न कुछ भी पुन मैं कह ही सका,
झट उठा वह बोल सुनो सखे!॥

(१२)
इस तरा यदि यार ! विचारते,
तब हजार दफा चुकते मर।
उदरमें पड़के सड़ते अथ,
उरग, कूकर काग, बिलावके ॥

(१३)
अवहिती बनके सुन, हे सखे !
पुन सलाह हमें निज दीजिये।
इस समै हमरा मन तो सखे,
कहत है हमसे अरु बुद्धि भी ॥

(१४)
यदपि मूषक दौड़ प्रसिद्ध है,
जगतमें मंगरे तक ही तब।
तदपि वे अजमाय उसे सखे !
करत मानस व्यर्थ निराश क्यों ? ॥

(१५)
वह रहा कहता, अरि सर्प भी,
सन सनाहट पूर्वक आगया।
पुन लिया उसको झट घेर ही,
मरण निश्चय मूषकका हुआ ॥

(१६)
अमिट है घटना जग-वासकी,
अटपटीं अथवा बहुरूपकीं।
लख उन्हें कहिं निश्चय एक सा,
नहिं हुवा, नहिं होय सकै कभी॥

(१७)
उरग-ऊपर भी सु कभी कभी,
यहँ वहां वह मूषक कूदके।
निकलके झट चंपत हो गया,
उरग भी उस पै बढ़ता गया ॥

(१८)
पर कहीं परसे उड़ता हुआ,
बन-मयूर वहांपर आपड़ा।
उरगको गहके निज चोंचमें,
निकट बैठ गया तरु-शाख पै ॥

(१९)
त्वरित मूषक आ कहने लगा,
मुसकराहटको मुंह पै बिछा।
जगतमें वह कार्य नहीं कहीं,
बुध परिश्रमसे नहिं होय जो ॥

(२०)
पर 'नहीं कुछ भी तकदीर है'
कह नहीं सकते बुध मूर्ख भी।
नहिं यहां वह जो मम आगती,
उरग ले बढ़ता वह मोर क्यों ?

(२१)
मरणके मुख भी यदि आ पड़ो,
पर प्रयत्न तजो न बचावका।
तब कहा हमने कहिये सखे !
उरग क्या करके सकता बच ॥

(२२)
इस तरा हम थे कह ही रहे,
पर अचानक ही उरगेश भी।
सटकके उसकी झट चोंचसे,
बदन पै हमरे वह आपड़ा ॥

(२३)
हड़बड़ाहटसे अति भीत हो,
जग उठे हम भी जलदी वहां।
उरग था नहिं मूषक मोर भी,
न तरु था, पर था मन कांपता ॥

॥ इति ॥

सामाजिक रूढ़ियाँ और जैनधर्म।

(ले०-पं० गुलजारीलालजी चौधरी-उदयपुर)

जैनधर्म—सार्वभौम धर्म प्रत्येक जीवको धारण करनेकी आज्ञा देता है। चारों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) वर्णवाले धारण कर सकते हैं और करते थे। जैनधर्ममें विजाति विवाहकी खुलासा आज्ञा है।

जीवंधर कुमारने वैश्यकी लड़की व्याही थी, और न वहांपर जाति पूछी, न पाई प्रीति मिलाई थी। आज परवार जातिमें आठ सांके चली रही हैं, उनका पता पूछनेपर कुछ भी जवाब नहीं मिलता है। पर उनकी मान्यता बड़ी है, उनके न मिलनेपर विवाह हो ही नहीं सकता है, दूसरी जन्म कुण्डली वह भी सची नहीं है। लोग बहस करते हैं कि इनके मिलानेसे अनिष्ट नहीं होता है; मैंने खुद अपनी आंखोंसे देखा है कि जिनकी सांके व कुण्डली सर्वश्रेष्ठ मिलती हैं पर वे विधवा, विधुर देखे जाते हैं। जैनधर्मके विरुद्ध आचरण करना, मानों अर्हंतको धोका देना है।

धर्मकी अपेक्षा आज रूढ़ियोंका ज्यादः महत्व है। धर्म छूटनेपर रूढ़ि कभी नहीं छूट सकती है। शास्त्र केवल धोक देने व सरस्वती भवनकी शोभा बढ़ानेको ही हैं। इनमें विजाति विवाह कूट२ कर भरा है वह समाजके उपयोगी है। पर कुछ लोगोंने "धर्मविरुद्ध" का शस्त्र ले रक्खा है। कोई भी अच्छा बुरा आन्दोलन उठा कि वही शस्त्र आकर अड़ता है। मेरी समझमें नहीं आता कि लोग इस प्रकारका प्रपंच जबाति मार्गमें क्यों रचते हैं।

शारदाबिल—यह भी जैनधर्मके विरुद्ध नहीं है। बल्कि धर्मका एक खासा अंग है। यह बिल ब्रह्मचर्यके पालनेमें सहायक है। धर्म आज्ञा देता है कि जितनी वीर्यरक्षा की जावे उतना ही पुण्य होता है ज्यादः अवस्था होनेसे संतान व शरीर भी पुष्ट रहता है। जिनको मेरे लिखनेपर विश्वास न होवे, "आत्म-कथा"में महात्मा गांधीजीके खुदके अनुभवको पढ़कर विश्वास करें। अधिक मृत्युका कारण बालविवाह है। दुबले, पतले, सूखा, चेहरा, आंखें घुसी हुई रोगी शरीर इत्यादि सब बालविवाहके ही कुफल हैं।

इसके अलावा स्त्रीकी भी बड़ी बुरी दुर्दशा है। वह विचारी बच्चाके पैदा होते अथवा बादको मृत्युको प्राप्त होती हैं। जैनधर्म सदा इसके विरुद्ध ही आज्ञा देता है। जब वर-कन्या विवाहका मतलब ही नहीं जानते हैं फिर उनके गुण—दोष पर जावेंगे ही क्या? इससे धार्मिक विरोधका नाम लेना समाजको धोका देना, व समाज देशकी दशा बिगाड़ना है।

जिस समय विवाह होता है उस समय भी धार्मिक क्रियाओंको छोड़कर मिथ्यात्व रूढ़ियों पर ध्यान देती हैं। जैनधर्मकी विवाह विधिका

कुछ भी ख्याल नहीं रखते हैं। बुंदेलखंडमें बरके ऊपरसे मूसल–पकानी व कई दिनकी बासी रोटी फेंकते हैं। एक दस्तूर गुड़ीका है वह भी बड़ा विचित्र है इसको देखकर बड़ी हंसी छूटती है। इस प्रकारसे मारवाड़ियोंमें भी अनेक अधर्मानुकूल प्रथाएं हैं। धार्मिक क्रियाओंको न करना और धर्मको चोट लगाना खतरनाक है। ये सब बंद करके थोड़ेमें शादी करनेकी आज्ञा धर्म देता है। हजारों रुपया खर्च मत करो। दश रुपया ही करो पर भाव ठीक रक्खो। बचा हुआ पैसा समाजोन्नतिमें खर्च करो। समाजका व धर्मका घनिष्ट संबंध है। समाजपर ही धर्म स्थिर है, दिवालोंमें नहीं है। जितनी ज्यादः संख्या होगी उतनी ही धर्मकी ज्यादः मान्यता होगी। इन सबके विरुद्ध जैन-धर्म है। कम खर्च करो, पाप मत करो, प्रत्येक कार्यको धार्मिकरूप दो। यही धर्मकी आज्ञा है। विवाहमें ज्यादः नटखट करनेकी जरूरत नहीं है, विवाह कोई धार्मिक कार्य नहीं है। पर धर्मके पालनेमें गृहिणी सहायक है। इससे यह धर्म साधनका निमित्त कारण जरूर है। अनेक आरम्भ परिग्रहका भाला करना पड़ता है। एक मासकी जिसकी जितनी आमदनी हो उसीमें विवाह करलो, यह हमारे धर्मका मंतव्य है।

जैनधर्ममें व्रत दो प्रकारके हैं, १ गृहस्थ, २ मुनि। आजकल गृहस्थोंने अपने धर्मको छोड़कर मुनि धर्म धारण किया है। पर हमारे ब्र० लोग तो यतियोंको भी मात कररहे हैं। किसी२ने तो अपनी नाम बड़ाईके लिये अधिष्ठातापन ही स्वीकार कर लिया है। धर्मप्रचारके नाम रुपया इकट्ठा करना ही इस पदका कार्य मान लिया है। खुद तो जैनियोंको पक्का मार्ग नहीं सुझा सकते हैं, फिर अजैनोंको तो जैन कैसे बना सकेंगे? जैनियोंकी संख्या बढ़ाना तो ये पाप समझते हैं। प्रथमानुयोगका स्वाध्याय तो बड़ी दिलचस्पीसे करते हैं किन्तु माननेको नमेट होजाते हैं। आजकल गेरुआ वस्त्र पहिरनेका रिवाज चल गया है, यह भी ठीक नहीं है। पक्का गेरुआ वस्त्र पहिरना ही श्रेयस्कर है।

जैन धर्मका मूल मन्तव्य अहिंसा है। बिना प्रयोजन किसी भी जीवको न सताओ। अपने प्राणोंकी तरह उनकी भी रक्षा करो। यही अहिंसा है। यह कायर बनानेवाली नहीं है। म० गांधी इसीके बलपर स्वराज्य लेनेका निश्चय कर चुके हैं। और अहिंसाका ही उप-देश जगतको देना चाहते हैं।

१–सर्वथा संकल्पसे त्रसकायकी व बिना प्रयोजन स्थावर कायकी हिंसाका त्याग करना अहिंसाव्रत है।

२–स्थूल झूठ व अप्रिय वचन न बोलना सत्यव्रत है।

३–गिरी, पड़ी, रखी चीजका न लेना, न देना, अचौर्यव्रत है।

४ स्वस्त्रीमें संतोष, अन्यको माता, बहिन, बेटीकी तरह मानना, अपने पतिमें ही संतोष, अन्यको पिता भाई व पुत्रके तरह मानना ब्रह्मचर्यव्रत है।

५–परिग्रहका प्रमाण करना अपरिग्रहव्रत है। इनको एक देश सर्वदेश पालनेसे गृहस्थ व यति दोनों ही धर्म बनते हैं।

जैनधर्म धारण करनेवालेको अष्ट मूलगुण धारण करके खुशी के साथ देवदर्शन पूजनादि करना चाहिये।

१. मद्य—यह पदार्थ कई पदार्थोंको सड़ाकर बनाया जाता है। जिससे कि असंख्य जीवोंकी उत्पत्ति होजाती है और ज्ञान विनाशक शक्ति भी आजाती है। इससे भारत भिखारी होगया है। इसीको देखकर देशमें इसका बंद करना जरूरी है। आज थोड़ीसी मजूरी करनेवाला मजूर भी शामको नशेमें चूर रहता है। घरपर स्त्री पुत्रादि भूखसे मरते हैं, पर वह नशा करता है। प्रत्येक नशीली चीज जैसे भांग, अफीम, गांजा, तमाखू इत्यादि चीजोंसे भी परहेज रखना योग्य है। धार्मिक व लौकिक दोनों तरहसे यह बुरी चीज है। करोड़ों रुपया विदेशमें जाता है और यह देश कंगाल होता है।

२. मांस—यह भी जीवोंको मारकर उत्पन्न होता है। देखनेमें घिन पैदा करता है। हिंदुस्तानके अन्दर यह व्यवसाय अब खूब होने लगा है। लोग बिचारे दीन पशुओंको मारकर खाते हैं और खुदको कांटा लगने पर दुख अनुभव होने लगेगा। देवीपर चढ़ानेवाले अपने बच्चेको चढ़ाकर क्यों नहीं उपायः पुण्योपार्जन करते हैं?

प्यारे भाइयो! सोचोतो सही कि जब हमारा लड़का अपनी मृत्युसे ही मरता है तो हमको कितना कष्ट होता है। फिर दूसरोंके बच्चे बलिदान करने पर क्या उनके माता पिता व खुदके लिये दुःख न होता होगा? मैं तो सत्य जब मानूं जब कि दाहिने हाथका दर्द बांये हाथमें आजावे पर यह कभी भी नहीं होसकता है। इसी प्रकार दूसरे प्राणियोंको वध करने पर न पुण्य होगा, न देवी प्रसन्न ही होगी। इससे अपनी जिह्वा इन्द्रिय पर दमन करके मांस खानेका त्याग प्रत्येक भारतवासीको करना लाजमी है। हमारे शरीरकी पुष्टि दूध, दही, घीसे होती है पर उनकी देनेवाली गौओंका भी वध भारतवर्षमें होरहा है। यह भी नास्तिकता चिन्ह है। इससे हमको इस तरफ भी ध्यान देना आवश्यक है।

मधु—के हुई वस्तुको खानेकी कोई भी इच्छा नहीं करता है न किसीको जूठन ही कोई खाता है। हां जो नीच होते हैं वे ही खाते हैं। सभ्य नहीं।

शहद मधुमक्खियोंका वमन है। यह महा अशुद्ध है, शास्त्रकारोंने इसकी घोर निन्दा की है। एक बूंद शहद खानेसे सात गाम जलाने बराबर पाप लगता है।

हिंसादि पांचों पापोंपर तामीरात हिंद आदि चल रहे हैं। कैदी प्रायः इन्हीं कसूरोंसे सजा पाते हैं। जो इनको नहीं करता है वह कभी भी दण्डका भागी नहीं होसकता है। आज महात्मा गांधीजी इसी अहिंसासे देशको स्वतंत्र बनानेकी कोशिश कररहे हैं। प्रत्येक प्राणीको जैन धर्मके उसूल पालना चाहिये। आठ मूलगुण, रात्रि भोजन, जल छानने, देवदर्शनसे ही प्रत्येक प्राणी जैनधर्मका आराधक बन सकता है। पर अफसोस कि कुछ लोग इसका प्रचार ही नहीं करते हैं और अपने घरका धर्म मानकर बैठ गये हैं। इसीसे आज जैन संख्या एकदम घट रही है। जैनी बनाना हमारा प्रधान कर्तव्य होना चाहिये।

(ले०-पं० मूलचन्द जैन वत्सल-बिजनौर)

(१)

वह तपस्वी था ! अपने जीवनके २९ वर्ष उसने तीव्र तपस्याकी सफलतामें समाप्त कर दिये थे।

दीर्घ समयके अनाहार व्रत द्वारा उसने अपनी दुर्जेय इंद्रियोंको स्वाधीन बना लिया था, मनकी वासनाएं होम दी थी।

द्वारिकाके रम्य उद्यानमें वह निष्काम साधनामें निमग्न था। यह क्या ?

उनके नेत्रोंसे अग्निकी ज्वालाएं निकलने लगीं, मस्तिष्क विकृत होगए, वह विक्षिप्त होगए केवल जलपान मात्रसे उनकी यह दुर्दशा कैसे होगई ! ओह ! वह जल नहीं था—तीव्र मदिरा थी। बेचारे यादव कुमारोंको इसका क्या पता था। उनके मुंहसे अर्गल शब्दबाणोंकी वर्षा होने लगी, वह विचार शून्य होगए। मदोन्मत्त विचरते हुए उन्होंने देखा।

(२)

अरे यह कौन ? वही दुष्ट तपस्वी, मायावी ! ध्वंसक। इसीके द्वारा द्वारावती ध्वंस होगी। पकड़ो इसे—मारो इसे—मारो—छोड़ो मत। यह दुष्ट है पापी है !

क्रोधसे उनका शरीर उबलने लगा, वह अपना अस्तित्व खो चुके थे, उन्हें अपने इस अविवेकका पता नहीं था। सुरापानसे चेतना शक्ति जागृत कैसे रह सकती ?

समीप ही पाषाण राशी थी, छोटे बड़े पत्थर अरोक गतिसे ऋषिराजका शरीर आच्छादित करने लगे। कितने पत्थरोंकी वर्षा हुई, गणना नहीं की जासकती। मुनिराज अबतक शांत थे, मौन थे, अविचिलित थे, कषायकी चिनगारियां छिपी हुई थीं। भस्मसे आच्छादित थीं।

(३)

पत्थरोंकी प्रचण्ड वर्षा रुकी नहीं, गालियोंका आघात भी शांत नहीं हुआ। तप शक्तिकी अंतिम परीक्षा थी, वरदान प्राप्तिका समय था, साधना सिद्धिमें एक क्षण मात्रका विलंब था, मोक्ष सुन्दरी वरमाला लिए मुनिकी प्रतिक्षा कर रही थी।

मुनिका आत्मचित्र परिवर्तित होने लगा, वह अब शांत न रह सके, क्षमाकोष शून्य होगया, क्रोधकी कराल ज्वाला पिचाशकी सदृश नेत्रोंपर नृत्य करने लगी। वह अपनेको न संभाल सके, क्षमा धारा उनके हृदयके प्रचंड ज्वालको रोक न सकी। वह उन्मत्त होगए। प्रतिहिंसा प्रज्वलित हो उठी।

(४)

यह भस्म होजाएँ !

मेरे तपमें इतना प्रभाव है। हां, यह अभी जलकर भस्म होजाएँ, समस्त द्वारावती भस्म होजाए। मैं तपस्वी ऋद्धिधारी ! मेरी रक्षाकी किंचित् अपेक्षा नहीं की ! इतनी अवहेलना, इतना अपमान, ऐसा भीषण अत्याचार ! आज मेरी शक्तिका प्रभाव देखे। मेरी अनिवर्य क्रोध ज्वालामें जले। मुनिका कंठ अवरुद्ध होगया। निर्बल आत्मा मुनि तपकी प्रबल

शक्तिको अपने अंतरंगमें नहीं रख सका, क्रोधने उसे भड़का दिया। विचार मात्रका विलंब था, अग्निकी ज्वलंतज्वाला जल उठी!

उन्हें ज्ञात हुआ! अबोध यादवकुमारोंने भयंकर कुकृत्य कर डाला है। अब द्वारिकाकी कुशल नहीं है। राजसिंहासन त्याग वह उसी समय दौड़े आये, एक क्षणमें नारायण और बल-भद्रके युगल मस्तक मुनिराजके चरणोंपर पड़ गये। उनके हृदयमें करुणाकी प्रार्थना थी और वाणीमें क्षमा याचना।

(६)

सर्व व्यर्थ! अति विलम्ब होचुका था, मुनिकी भृकुटिपर तनिक भी बल न पड़ा, क्रोध पारेका आताप किंचित् कम नहीं हुआ। धनुषके ऊपर चढ़ाया हुआ बाण छूट चुका था, उनके करुण क्रन्दन श्रवण करनेका अब समय नहीं था।

(७)

अग्निका अखंड ताण्डव होने लगा, पक्षी तीव्र लहरोंसे उछल कर अग्नि ज्वालामें पड़ने लगे, जलते हुए मानवों—पशुओंके कोलाहल नादसे पत्थर पिघलने लगा। समुद्र उमड़ने लगा, भयानक अग्निमें समुद्रका जल भी तैल सदृश जलने लगा!

(८)

भीषण अग्नि जल रही थी! वह उसके उदरमें खड़ा हुआ अग्निके घूंट पीरहा था। देखतेर सर्व ध्वंस होगया! सुन्दर राजमहल, अनंत राज्यलक्ष्मी, असंख्य प्राणी—समूह जलकर भस्म होगये।

ज्वाला सर्व भक्षण कर चुकी थी, किंतु उसे तृप्ति नहीं हुई! अन्तमें उसने अपने विशाल उदरमें मुनिके शुष्क शरीरको डाल लिया, वह उसे भी भस्म कर गई। देखतेर उसका शरीर क्षार होगया!

उसने अग्नि सुलगाई थी अन्यके लिये, सो उनको जलाया और स्वयं भस्म हुआ, वह भी जला उसकी आजीवन तपस्या, तप, त्याग जलकर भस्म हो गया!

(९)

वह कोपानल थी—हां, कोपानल, आह! क्रोधकी ज्वलंत ज्वालामें सर्व भस्म होगया। हाय द्विपायन! अपनी क्रोध ज्वालामें सर्वस्व भस्म कर डाला। तपस्वी होकर भी क्षमाकी मर्यादाका उल्लंघन कर दिया!

(१०)

क्या क्रोधकी भीषणताका अनुमान किया जा सकता है? हाय! क्रोध—क्रोध तेरा सर्वनाश हो! तूने स्वर्गपुरी द्वारिकानगरीको विशाल भस्मका शिखर बना दिया, तुझे शतशः धिक्कार है!

शरीरको स्वच्छ और निरोगी रखनेके नियम

(ले०-मास्टर पूनमचंद मंगलजी-छाणी)

प्राणियोंके जीवनके लिये तीन चीजोंकी आवश्यकता है-१ अन्न, २ पानी, ३ हवा, इनमें सबसे मुख्य हवा है क्योंकि अन्न और पानीके बिना प्राणी थोड़े समय तक जीभी सकता है परन्तु हवाके बिना तो क्षणभर भी जीना कठिन है। हवा एक ऐसा पदार्थ है कि वह किसीको भी दृष्टिमें नहीं आती परन्तु संसारमें कोई भी स्थान ऐसा नहीं है कि जहां हवा नहीं है। मनुष्यसे लेकर चीउंटी तक सब प्राणियोंको हवाकी जरूरत रहती है। किसी बर्तनमें एक जीवधारी रखकर जब हम उसकी हवा वायुनिष्कासन यंत्रके द्वारा निकाल डालते हैं तब वह जीवधारी उसी समय तड़फकर मर जाता है, इसीसे सिद्ध होता है कि हवा प्राणियोंका जीवन-मूल है।

इसी तरह कि जिस प्रकार भोजन और हवाके बिना मनुष्य जी नहीं सकता उसी प्रकार पानी भी एक पदार्थ है जिसके बिना मनुष्यका जीवन नहीं होसकता और इसीलिये पानीको संस्कृतमें जीवन कहते हैं। आरोग्य रहनेके साधनोंमें निर्मल पानी भी एक साधन बताया गया है इसीलिये स्वच्छ जल, स्वच्छ हवाकी प्राप्तिके लिये निम्नलिखित बातोंपर ध्यान देना चाहिये।

(१) एक कमरेमें एक या दोसे अधिक मनुष्य एक साथ न सोवें क्योंकि मनुष्योंकी श्वाससे हिंसक वायुका संचय बहुत होजाता है।

(२) सवेरे चार बजे कमरेकी सब खिड़कियां खोल दी जावें क्योंकि प्रातः शुद्ध वायुका सम्मिलन अधिक होता है और वह वायु स्वास्थ्यके लिये अधिक लाभकारी होती है।

(३) मकान समय२ पर गोबर और चूनेसे लीपा पोता जावें। क्योंकि इन दोनों पदार्थोंमें हवाके विषैले कीड़ोंके नष्ट करनेकी शक्ति है।

(४) मकानके आसपास नीम, तुलसी, निम्ब आदिके वृक्ष तथा गुलाबादिक फूलोंके पौधे जहांतक हो रखना चाहिये। क्योंकि इनसे हिंसक वायु बहुत शुद्ध होती है।

(५) मकानके आसपास किसी प्रकारका कूड़ा कचरा जमा न होने पावे।

(६) सवेरे और शामको नियमसे शहरके बाहिर खेतों और मैदानोंमें घूमनेके लिये जाना चाहिये। क्योंकि जैसी स्वच्छ हवा बाहिर मिलती है वैसी शहरमें मिलना दुर्लभ है।

(७) सोनेके पहिले हाथ मुँह धोकर शरीरको गाढ़े कपड़ेसे पोंछकर सोना चाहिये और मुख ढकके सोना ठीक नहीं है। क्योंकि इसीसे स्वच्छ वायुके आनेमें रूकावट होकर बुरी हवा पेटमें जाती है।

(८) सोनेके स्थानमें वायु और धूप आनी

रहे ऐसा बंदोबस्त होना चाहिये और यदि अधिक शीत न हो तो सिराने की खिड़की को छोड़ बाकी सब खिड़कियां खुली रखकर सोना चाहिये जिससे हवाका संचार भलीभांति होता रहे। एक ही कमरेमें कई मनुष्य न सोवें।

(९) जितनी तृषा हो उतना पानी पीवे। अधिक पीनेसे जलोदर और कम पीनेसे अजीर्ण रोग होता है।

(१०) पानी सदा बैठके पीना चाहिये।

(११) कहींसे थके हुए आकर तुरन्त पानी नहीं पीना चाहिये, किन्तु थोड़ी देर स्वस्थ बैठ कर गर्मी शांत होनेपर पानी पीना चाहिए, परंतु भोजनके अन्तमें नहीं।

(१२) भोजनकी पचावटके समय पानी औ-षधिका और प्रातःकाल सोतेसे उठकर पीनेसे अमृतका गुण करता है।

(१३) पीनेके सिवाय स्नानादि कार्योंमें भी स्वच्छ पानीका उपयोग करना चाहिये।

(१४) पानीको शुद्ध करनेकी दूसरी रीत—एक बड़ा आधी रेत आधे जलसे भरकर तिपाई पर रक्खो और उसके ऊपर एक पानी भरा घड़ा जिसकी तलीमेंसे पानी टपकता हो रक्खो, यह पानी टपक टपकके रेत और कोयलेमेंसे होकर नीचे जो एक घड़ा रक्खा है उसमें गिरने लगेगा, कारण इसकी तलीमें भी एक छेद है। सबसे नीचेके घड़ेमें गिरा हुआ पानी शुद्ध और निर्मल होता है। इसे पीनेसे किसी प्रकारकी हानि नहीं होसकती।

(१५) इसी रीतिसे शुद्ध किया हुआ पानी यदि न मिल सके तो वस्त्रसे छानके तो अवश्य ही पीना चाहिये। नहरुआ रोग जो एक प्रकारके जलके कीड़ेसे होता है जैनियोंके बहुत ही कम होता है। क्योंकि जैन सदा पानी छानके पीते हैं, परन्तु अन्य लोग पानीको कभी छानके नहीं पीते, उन्हें नहरुआ अधिकतासे होता है। स्वास्थ्यके लिये पानी पीनेमें शुद्धताका और स्वच्छ हवा लेनेका तथा ऊपर लिखी बातोंपर भी अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

घरको न घाटको।

कवित्त

भारतमें जन्म लैकें,
देशकूं लजाय रह्यौ,
खोलि क्यों न देखें 'प्रिय'
हियके कपाटको॥
त्यागिके सुतंत्र पद,
पींजरामें बंद भयो।
आपौ हू भुलाय डार्यौ,
भेष धार्यौ भाटको॥
चेति रे अज्ञानी जीव!
अपनी दशा सुधारि।
पालि करतव्य निज,
चूल्हे आरि खाटको॥
दुनियामें आय कें, न-
सुयश कमायौ कछु।
धोबीको सो कुत्ता भयो,
घरको न घाटको॥

"प्रिय"

जिनेन्द्र दर्शन माहात्म्य।

(ले०—हजारीलाल जैन अध्यापक जालंधर जाट-सागर)

प्राचीनकालसे ही समस्त जैनी एवं जैनधर्म श्रद्धालुजन जिनेन्द्र दर्शन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। अन्य जातियोंमें ऐसी बहुत कम स्त्रियां होंगी, जो अपने इष्टदेवका दर्शन प्रति दिवस किया करती हों या जिन्होंने प्रति दिन दर्शन करनेकी प्रतिज्ञा की है। परन्तु हमारी जैन जातिमें अत्यधिक स्त्रियां ऐसी मिलेंगी जिन्होंने आजन्म जिनदर्शनकी प्रतिज्ञा कर ली है। शायद ही कोई ऐसी अभागी स्त्री होगी जो प्रति दिवस कमसे कम एकवार दर्शन करने न जाती हो। यह सब देख सुनकर हमें अत्यंत आनंद होता है। तथा साथ ही साथ हमें अपनी जाति पर गौरव करनेका अवसर हाथ आ जाता है।

परन्तु यह बात कहते हमें लज्जा आती है कि अधिकांश पुरुष व स्त्रियां जिन दर्शनके उद्देश्यको नहीं जानते। पूछनेपर उत्तर मिलता है कि हमारे बाप दादे सदैव ऐसा करते आये हैं उसी प्रकार हम भी करते हैं। हमारे लेख लिखनेका मुख्य उद्देश्य यही है कि मैं ऐसे मनुष्य व स्त्रियोंको भ्रमात्मक मार्गसे हटाकर उन्हें असली रास्तेका दिग्दर्शन करादूं।

प्रिय वाचक वृन्द! यह जीव अनादि कालसे चौरासी लाख योनियोंमें भटकता फिरा है तथा सदैव हरएक योनिमें जन्म मरण सम्बंधी तथा और भी अनेक दुखोंको सहा है। परन्तु अब महान् पुण्योदयसे हमें नर पर्याय और उत्तम श्रावक कुल मिला है। कहनेका तात्पर्य यह है कि हमें सुमार्गका पथ तो मिल गया है, अब उसपर गमन करना और न करना यह हमारे ऊपर निर्भर है। बस, उसी सुमार्गपर चलनेका श्री जिनेन्द्र दर्शन एक मुख्य और आवश्यक उपाय है। थोड़े शब्दोंमें हम उसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि श्री जिनेन्द्र दर्शनसे हमारे जन्म जन्मांतरोंके पातक नाश होते हैं और हमारी आगामी गति सुधरती है। इसमें जाति विशेषसे कोई सम्बंध नहीं है। क्योंकि कहा भी है:—

जाति पांत पूछे नहिं कोई।
हरिको भजे मुक्ति गति होई॥

श्रावककी तो बात ही क्या, हमारे धर्म ग्रन्थोंमें इस बातके अनेक उदाहरण हैं कि तिर्यंच पशुओंने भी ईश्वरभक्तिसे कृतार्थ होकर स्वर्गमें देवपद ग्रहण कर साक्षात् प्रत्यक्ष दर्शन दे धर्मका माहात्म्य सुनाया। यहां मैं एक ऐसे ही मेंढकका वृतांत लिखता हूं जिसने ईश भक्तिकी केवल श्रद्धा से ही देवपद ग्रहण किया।

"राजगृही नगरीमें एक सेठ रहते थे, जो धनके अति परिणामसे मृत्युको प्राप्त हो अपने ही घरकी बावड़ी (कुए)में मेंढक हुए।

जब उनकी विधवा पत्नी बावरीपर कपड़ा धोने या पानी भरने आती तभी वह मेंढक पूर्वके स्नेहके वशीभूत हो उछलकर सेठानीके ऊपर आता था। सेठानी भयभीत हो उसे दूर फेंककर भाग जाती थीं।

निदान दैवयोगसे एक दिन अवधिज्ञानी मुनि महाराज सेठानीके गृह आहार निमित्त पधारे।

आहार करानेके पश्चात् सेठानीने मुनि महाराजसे पूछा-हे महाराज ! कृपाकर आप इस बावरीके मेण्डकका सम्बंध बताइये। इसका और हमारा कैसा सम्बन्ध है कि जबर मैं कार्यवश बावरीके पास जाती हूं तबर वह उछलकर मेरे ऊपर आता है। सेठानीकी बात सुन मुनि महाराज बोले कि-तुम्हारा भरतार ही आर्त परिणामसे मरकर मेण्डक हुआ है। सो वह तुम्हारे पूर्वके स्नेहसे उछलकर तुम्हारे ऊपर आता है। सेठानीको जब मुनि महाराज द्वारा यह बात विदित हुई तब उस मेण्डकको अपने घर ले आई और उसे कुण्डमें पानी भरकर छोड़ दिया।

एक दिन भगवान महावीरस्वामीका समवश्ररण विपुलाचल पर्वतपर आया। राजाने नगरीमें घोषणा करवा दी कि सब लोग वन्दनाको चलो। राजा श्रेणिक स्वयं हाथीपर सवार हो विपुलाचल पर्वतकी ओर प्रस्थान करने लगे। उस समय कुण्डमें किलोलें करते हुए मेण्डककी भी वन्दना करनेकी इच्छा हुई और कुण्डसे उछल कमलके फूलकी पंखुरी मुखमें ले उछलता हुआ चल पड़ा। अचानक वह राजा श्रेणिकके हाथीके पांव तले दबकर मर गया। भगवानकी भक्तिके भाव एवं श्रद्धासे उसने देवपद पाया और तत्काल अपने मुकुटमें मेंढकका चिन्ह लगाकर भगवानके समवशरणमें साक्षात उपस्थित हुआ। जब राजा श्रेणिकने उसका ऐसा निराला ठाट देखा तब वीर प्रभुसे उसके विषयमें पूछा। तब भगवानने उसकी समस्त कथा आद्योपान्त कह सुनाई जिसे सुनकर सब ही बड़े प्रसन्न हो ईश्वर भक्तिकी प्रशंसा करने लगे।"

महानुभावो! ध्यान रखिये ईशभक्तिकी श्रद्धा होनेपर ही उसका यथेष्ट फल मिल जाता है। चाहे वह विघ्न बाधाओंको आनेसे भक्तिकी उच्च सीढ़ीपर न चढ़ सके। परन्तु परिणामों या भावोंके प्रभावसे जीव तरणतारण होजाता है।

जिन दर्शन माहात्म्यका वर्णन करते समय हमारी जिव्हापर दर्शन कथामें कथित सुन्दरीका नाम सहसा आजाता है। सुन्दरीने कितने कष्टोंके सहनेपर भी अपने प्रणसे मुंह नहीं मोड़ा। इसका उच्च आदर्श हमें दर्शन कथासे मिल सकता है।

—o—

॥ कल्याण ॥

(तर्ज राधेश्याम)

जो स्वयम् वीर थे वीरोंके-वे कायर आज कहाते हैं!
थे सभी दलोंमें जो आगे उनको अब पीछे पाते हैं!
जिनके पित्रोंने दिनकर सम जिनधर्म सदा प्रगटाया है!
उनके पुत्रोंने नश्वर बन वह सब सतकर्म नशाया है!
जिनके पूर्वज देशोन्नतिमें तन मन धन अर्पण करते थे!
अरु देश जाति हित हर्ष सहित जो आत्म समर्पण करते थे!
झंडा जिनधर्म अहिंसाका भूमंडलपर लहराया था!
अरु घिरी हुई घनघोर घटामें ज्ञान भानु चमकाया था!
सन्तान उन्हींकी आज वही प्रतिदिन दुष्कृत्य कमाती है!
अवनी अवनति गतिका जगको वह ताण्डवनृत्य दिखाती है!
लेकिन नवयुवको! याद रखो यह नीति न अब चल पावेगी!
इसके द्वारा तो बची हुई निज जाति रसातल जावेगी!
यदि ध्यान दिया नहि अवनतिपर तो ध्यान रहे दुख पाओगे!
'कल्याण'का यह शुभ अवसर है इसको खोकर पछताओगे!

रहा परस्पर यदि यही होता भेद विकाश!
धर्म रसातल जायगा होकर शीघ्र विनाश!

कल्याणकुमार जैन "कवि भूषण"।

सुभाषित रत्नसंदोह ।

(अनुवादक-पं० मूलचन्द्र जैन "वत्सल" सं० "आदर्श जैन")

(गतांकसे आगे)

सांसारिक प्रलोभनाओंसे, हृदय न तनिक विरक्त हुआ ।
आत्मध्यानमें हुआ न तन्मय, मायामें अनुरक्त हुआ ॥
है तब सर्व निरर्थक, निष्फल, अतिशय आपतिधाम हुआ ।
हुआ न आत्मोद्धार तनिक भी योग हुआ नहिं काम हुआ ॥१८॥

यथा वारि चलनी द्वारोंसे होता क्षणभर मध्य विनष्ट ।
उसी प्रकार मानवोंका सामर्थ्य, आयु, बल होता नष्ट ॥
कामिन, पुत्र, बंधु गृह वैभव नाशयुक्त अतिशय निःसार ।
किंतु हुआ इनमें विमुग्ध मन मनुज न करता आत्मोद्धार ॥१९॥

बन्धु ! युवति कामिनी जनित सुख समझो क्षण नश्वर दुखदा ।
विष फलवत् परिपाक समय इंद्रिय सुख समझो कटु फलदा ॥
अतः प्रबल संकल्प शक्तिसे विषयेच्छाएं त्याग करो ।
अविचल सुखदा सम्यक् श्रद्धा, ज्ञान चरित अनुराग धरो ॥२०॥

जड़ता ध्वंसक, निर्मल ज्ञान विवेक प्रदीप प्रकाशित कर ।
विषय सौख्यसे हटा हृदयको न्याय मार्गपर स्थित कर ।
इतने योग्य साधनोंपर भी मन न धर्म पथ स्थित हो ।
समझ दैव प्राबल्य पुनः तू कर प्रयत्न सुमती रत हो ॥ २१ ॥

श्री जिनेन्द्र पद कंज भक्ति हो आत्म तत्व भावना भजूं ।
विषय विहित इंद्रिय दम, संयम यम श्रुति शमका साज सजूं ॥
दोष कथनके लिए मूक हो प्राणि मात्रका मित्र बनूं ।
जब तक मुक्ति न प्राप्त भावना यही पवित्र चरित्र बनूं ॥ २२ ॥

जिसका हृदय कोपाग्निसे दग्धित व्यथित हो तापमय ।
संसर्गमें जिसके सुखी होते अमित आतापमय ॥
वह मनुज यदि शतशः गुणोंका हो अतुल भण्डारसा ।
मणियुक्त विषधर सदृश है वह त्यक्त दुःखागारसा ॥२३॥

है भस्म कर देती अनल ज्यों अमित ईंधन व्यूहको।
त्यों व्रत नियम, उपवास, यम, तप जनित पुण्य समूहको ॥
कोपाग्नि भी क्षण मात्रमें कर दग्ध दुख देती अमित।
अतएव सहृदय साधुजन त्यज क्रोध होते शांति चित ॥२४॥
नरपति, फणेश, प्रचण्ड अरि, केहरि करीन्द्रादिक कभी।
यदि हों कुपित तो एक भवमें प्राण नाशक हैं सभी ॥
हा! किन्तु क्रोधानल, सकल सुख मूल शांति स्वधर्मको।
कर भस्म दुख देता सतत, हत विमल गुण सत्कर्मको ॥२५॥
रहता निरंतर शांत कारण वश कुपित होता कभी।
वह व्यक्ति कारण नष्ट होते, शीघ्र होता शान्त भी ॥
है किंतु जो मानव अकारण ही कुपित रहता अहो!
उसकी हृदय कोपाग्नि कैसे शान्त हो सकती कहो? ॥२६॥
ग्रह, काम मदिरा मद सदृश यह क्रोध दानव, व्यक्तिका।
कर धैर्य विचलित बुद्धि हत विध्वंस करता शक्तिका ॥
सतधर्म शीघ्र विनाश, कटुक कुवाच्य कहता ज्ञान हत।
अतएव सहृदय मनुज देते त्याग, हो सद्बुद्धि रत ॥ २७ ॥
मद मत्त, मदिरा मद सदृश आकृति बनाता क्रोध है।
आरक्त होते नेत्र, कंपित गात्र, भ्रष्टित बोध है ॥
उत्तम विचारोंका दमन औ नष्ट करता ज्ञान धन।
सम्पूर्ण दुःखप्रदा कुपथमें है फंसाता क्रूर बन ॥ २८ ॥
है ज्वलित अनल समूहसे पारा पिघलता शीघ्र ज्यों।
बस क्रोध अरि द्वारा अहो सतधर्म कर्म सशीघ्र त्यों ॥
मैत्री, दया, यश, व्रत, नियम, इन्द्रिय विनय तप आदि भी ॥
सौभाग्य, भाग्य, विवेक प्रतिमा नष्ट होते हैं सभी ॥२९॥
कोई मनुज मासोपवास सहित निरंतर तप वहे।
हो सत्य भाषी, संयमी, त्रिसमय सुध्यान निरत रहे ॥
परित्याग गृह वनमें बसे, दृढ़ पालता हो ब्रह्मव्रत।
वह किन्तु यदि है कोप वश तो व्यर्थ है सब पुण्य कृत ॥३०॥

(अपूर्ण)

त्याग धर्मकी महिमा

(ले०—परमेष्ठीदास जैन, न्यायतीर्थ–सूरत)

त्याग एक सामान्य विषय है। इसके संबंधमें आबालवृद्ध किसी न किसी रूपमें जानकारी रखते हैं। अगर इसके अन्तस्तलको टटोला जावे तो इसकी महिमा उतनी ही है जितनी कि घोर तप व संयम करनेकी। त्यागके विना न तो इस लोकमें कीर्ति होसकती है और न स्वर्ग मोक्षकी प्राप्ति हो सकती है। मुनि व तीर्थंकर जबतक त्याग नहीं करते तबतक जगत मान्य नहीं होते। दूरकी बात जाने दीजिये, वर्तमानमें आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे कि जिनको कल कोई जानता भी नहीं था आज उनको सारा देश श्रद्धाकी दृष्टिसे देखता है।

जगत्मान्य महात्मा गांधीजी त्यागके कारण ही इतना महत्व प्राप्त करसके हैं। अन्यथा जब वे बेरिष्टरी करते थे, हजारों रुपया कमाते थे, और बड़े २ अंगरेजोंके साथ उठते बैठते थे तब उन्हें भारत वर्षमें कौन जानता था? मगर जबसे उन्होंने आफ्रिकाके जेलोंमें कष्ट सहन किये, हिंसाका त्याग किया और लोगोंको अहिंसाका पाठ पढ़ाया, झूठ और दगाबाजीसे घृणा की, ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया, परिग्रहसे ममत्व छोड़ा और देशकी सेवार्थ अपने जीवनको अर्पण कर दिया तबसे भारतवर्ष ही नहीं किन्तु सारा आलम आपके सामने नतमस्तक होगया है। यह सब त्यागकी ही तो महिमा है।

अपने देशके सैकड़ों–हजारों नेता ऐसे हैं जिनको ४–६ माह पूर्व कुछ व्यक्ति ही जानते होंगे, मगर जबसे वे घर परिवारका परित्याग करके देश सेवाके लिये आत्मसमर्पण कर चुके तबसे वे भारतके बच्चे२ की जबान पर रहते हैं। हमारे जैनधर्ममें त्यागका भारी महत्व है। त्यागीकी देव भी सेवा करते हैं। त्यागसे मतलब घरबार छोड़कर वैरागी होजानेका ही नहीं है, किन्तु "शक्तितस्त्याग" का उपदेश किया गया है।

त्यागको वैसे तो कई विभागोंमें विभक्त कर सकते हैं, किन्तु मूलमें "औषधि शास्त्र अभय आहारा" का विधान किया गया है। इन्हीं चार भेदोंमें जगतके तमाम त्यागोंका समावेश होजाता है। इनमेंसे जो जिसके लिये अनुकूल पड़े वह उतना त्याग कर सकता है। त्याग तो एक ऐसा सरल और सीधा कार्य है कि उसे गरीब अमीर, मूर्ख विद्वान और नीच ऊंच सभी कर सकते हैं।

अगर आप श्रीमान हैं तो धर्मके प्रचारके लिये अपनी सम्पत्तिका त्यागकर द्रव्यको सफल बनाइये। आज विद्यादानकी सबसे अधिक आवश्यकता है। अगर आपने अपनी आर्थिक सहायतासे एक ही अच्छा विद्वान तैयार कर दिया तो कहना होगा कि बड़ा भारी कार्य कर दिया है। सामाजिक संस्थायें, विद्यालय, अनाथालय, श्राविकाश्रम आदि सब श्रीमानोंके सहारेपर ही चलते हैं। इनकी सहायता करना मानो धर्म देश और समाजकी सेवा करना है। अपना धर्म यह नहीं कहता कि सर्वस्व समर्पण

करके सभीको बाधा होजाना चाहिये। हां वह ऐसा त्याग करनेवालोंको सर्वोच्च अवश्य समझता है।

आपसे यदि इतना न होसके तो जितनी सामर्थ्य हो उसको न छिपाया जावे। अपनी शक्तिका छिपाना एक प्रकारका छल है। इस लिये धर्म प्रचारके लिये यथाशक्ति द्रव्य समर्पण करना आपका परम कर्तव्य है। क्या ही अच्छा हो यदि आप अपने द्रव्यसे धार्मिक ट्रैक्ट छपवाकर शास्त्रोंकी संख्यामें बटवावें ? प्रत्येक मनुष्यके पास जैन धर्मका संदेश पहुंचानेका यह सबसे सरल तरीका है।

यदि जीवदयाकी दृष्टिसे दानका विभाग किया जावे तो मुफ्त औषधि वितरण करना, गरीबोंको सहायता पहुंचाना, अपने शौकोंको कम करके देशी व्यापार और देशी चीजोंके कारखाने खोलकर बेकार लोगोंको काममें लगवा देना, परम उपकारका कार्य है।

चूंकि आज राष्ट्रीय वातावरण है। इसके लिये चारों ओरसे त्यागकी पुकार आरही है। देशको त्यागकी भारी आवश्यकता है। इसके लिये भी प्रत्येक स्त्री पुरुष, युवान, बालक और बालिका त्याग कर सकते हैं। यदि आप अधिक कुछ त्याग न कर सकते हों तो कमसेकम आर्थिक, मानसिक और वाचनिक सहायता तो कर ही सकते हैं। देशकी स्वातंत्र्य प्राप्तिके लिये चर्खा एक सबसे बड़ा अमोघ अस्त्र है। आप अपने द्रव्यसे इसकी क्लासें खुलवाइये। बेकारोंको मजूरी देकर सूत कतवाइये और कपड़ा तैयार कराइये। लोगोंको देशी वस्त्र उपयोग करनेके लिये समझाइये और अपने गांवके आसपास लोगोंको व्यसनोंसे निकालकर सन्मार्ग पर लगाइये। यह सेवा राष्ट्रीय सेवा है और धार्मिक भी कही जा सकती है। कारण कि शुद्ध स्वदेशी वस्त्रोंका प्रचार होनेसे हिंसाकी कमी होगी। लोगोंको बदीसे बचानेके कारण उनका उद्धार होगा। गरीबोंको काममें लगा देनेसे उनका पोषण होगा। क्या यह धार्मिक कार्य नहीं हैं ? ऐसे उत्तम कार्योंमें त्यागकी आवश्यकता है। इसमें आपको देशका त्याग करना होगा, समयका त्याग करना होगा और स्वार्थको तिलांजलि देना होगी।

भारतोद्धारकी धुनमें मस्त होकर जब हजारों वीर हथेलीपर प्राण लिये फिरते हैं तब क्या आप देश और धर्मके लिये इतना सीधा सादा काम भी नहीं कर सकेंगे ? याद रहे कि त्यागकी योग्यता प्रत्येक व्यक्तिमें है। अगर वह उस योग्यताको अमलमें लाता है तो समझना चाहिये कि अपनी मनुष्यताका उपयोग करता है और यदि अपनी शक्ति या योग्यताको छिपाता है तो कहना होगा कि कर्तव्यच्युत होकर मानवधर्मका विघात करता है।

आप इस बातको भलीभांति जानते हैं कि त्यागी कभी न तो दुःखी हुआ है और न अपयशी हुआ है, जब कि संचय करनेवाले अधिकांश व्याकुल और दुःखी देखे जाते हैं। इस विषय पर विशेष कहनेसे क्या लाभ ? इतना उत्तम पर्यूषण पर्व निकल गया, इस समय आपने त्याग धर्मका व्याख्यान सुना होगा, मनन किया होगा और दान दिया होगा। अगर कुछ त्याग न

किया हो तो इसका समय आज भी है। कारण कि त्यागका दिन कोई निश्चित नहीं होता है। मनुष्य हर समय नाना प्रकारका त्याग कर सकते हैं। क्या आपसे आशा की जावे कि आप विद्यादान, धर्मप्रचार या देशके लिये कुछ त्याग करेंगे?

द्रव्य संचय करते२ तो अब जिन्दगी समाप्त होनेवाली है। संचयसे संतोष कभी भी नहीं होसकता है, कारण कि–

न तृप्ता नैव तृप्यन्ति लोभाढ्या हि महाधनैः।
स्फारैरपि न पूर्यन्ते नदीपूरैः पयोधयः॥

अर्थात्–संचय करनेवाले लोभी पुरुष महान सम्पत्ति प्राप्त करनेपर भी न तृप्त हुये हैं और न तृप्त होसकते हैं। जैसे समुद्र नदीके पूरोंसे तृप्त नहीं होता।

हां, त्यागी पुरुष सदा संतोषी रहता है, तृप्त रहता है और सुखानुभव करता है। दानी पुरुषका धन ही सफल है और उसकी ही वास्तवमें कीमत है। लोभी पुरुषका द्रव्य तो मिट्टीके ढेलेके समान समझना चाहिये। समुद्र चूंकि संचयी है इसलिये उसके अतुल जलका कोई महत्व नहीं है, जब कि दानी बादलकी एक बूंदकी कीमत स्वातिनक्षत्रमें प्रदान करनेसे हजारों रुपयोंकी हो जाती है।

इससे अपनेको शिक्षा लेना चाहिये कि द्रव्य क्षेत्र, काल, भावकी आवश्यकतानुसार त्याग किया जावे। यह याद रहे कि त्यागमें नाम बड़ाई और महत्वाकांक्षाका मोह न रखे। अपनी समाजमें कुछ ऐसे श्रीमान हैं जो गुप्तरीत्या विद्यादान और नाना प्रकारकी सेवाओंके लिये त्याग किया करते हैं। समाजमें ऐसे त्यागियोंकी आवश्यकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि त्याग करनेवालेका जीवन उच्च है, धार्मिक है, उदार है और सुखी है, जब कि संचयशील पुरुषकी परिस्थिति इससे विपरीत ही होती है। इसलिये जो मार्ग आपको अभीष्ट हो उसको अवश्य ग्रहण करना चाहिये।

परीक्षित प्रयोग।

धातुपुष्ट पर चूर्ण–गोखरू बड़े, काले तिल, बबूलकी फली, और बड़के अंकुर यह सब १–१ छटांक, रूपरस (चांदी भस्म) ६ माशा, मिश्री १ पाव, सबका बारीक चूर्ण बनाकर १ तोलेकी मात्रासे दूधके साथ सेवन करनेसे धातु पुष्ट होकर अनेक वीर्य विकार नष्ट होते हैं।

पन्द्रह मिनटमें ज्वर उतारनेका लेप–कुचले ६ माशे, सौंठ ६ माशे, काला जीरा ६ माशे और अहिफेन ३ माशे। सबको बकरीके १ पाव दूधमें पीसकर मंद अग्निसे कुछ गरम कर सिरसे पांव तक मालिश करनेसे उसी वक्त ज्वर उतर जाता है।

मंदाग्नि पर चूर्ण–शुद्ध सुहागा १ तोला, नौसादर २ तोला, सोरा कलमी २ तोला, सौंचर २ तोला, कालीमिरच २ तोला। सबका बारीक चूर्ण कर ३ माशेकी मात्रासे खानेसे मंदाग्नि दूर होकर पेटके समस्त विकार दूर होते हैं तथा पेशाबको शुद्ध करता है।

तापतिल्ली पर–हल्दी भुनी १० तोला, फिटकिरी फूला १० तोला, इन्द्रायनकी जड़ १० तोला, मिश्री १० तोला। सबका चूर्ण बनाकर १ माशेकी मात्रासे गरम जलके साथ सेवन करनेसे तिल्ली दूर होती है। "वैद्य"

સમાજોન્નતિનો સરળ ઉપાય

(લેખક—દોશી ફુલચંદ સુરચંદ ઈડર.)

બંધુઓ ! આજકાલ દરેક સમાજો પોતાની ઉન્નતી કેમ થાય, પોતાનો ધર્મ ઉન્નત કેમ બને તેજ પ્રયત્ન કરી રહેલા છે. પ્રાચિન સમયમાં આપણો જૈન ધર્મ સમસ્ત સૃષ્ટિમાં અગ્રસ્થાને લેખાતો હતો. તે ધર્મની મહત્તા એટલી બધી વિસ્તૃત પ્રમાણમાં જગવ્યાપિ બની ગઇ હતી, કે અન્ય મતાવલમ્બી મહાન રાજા મહારાજાઓ, ઋષિ મહર્ષિઓ પણ તેની સામા શીર ઝુકાવતા હતા. પરંતુ અત્યારે તેજ ધર્મ અને સમાજ તરફ દષ્ટિ કરીએ તો દરેક ધર્મો કરતાં તેનુ સ્થાન છેલ્લું આવે છે. વિચારતાં-જોતાં આંખમાંથી અશ્રુ બાહીર્ગત થઇ જાય છે. આટલી બધી ધર્મની હીનતા થવાનું મૂળ કારણ શું ? શોધતાં જણાઇ આવે છે કે આપણો સીથી લાચાર અને બીજું કુસંપ રિપુની મિત્રતા.

કુસંપે મહાન રાજ્યોને જમીનદોસ્ત બનાવી દીધાં છે. કુસંપે અનેક એકસંપથી રહેતાં કુટુંબોમાં હલાહલ વિષનો સંચાર કરી પાયમાલ બનાવી દીધાં છે. કુસંપના યોગેજ મહાન યાદવ-સ્થળીની સ્થાપના થઇ હતી જે વિશ્વને અત્યાર સુધી કોઇ ભુલી શક્યું નથી. અરે આગળ ક્યાં જઇએ આપણા ભારત વર્ષમાંજ કુસંપના ઝેરી ભડકાઓ લાગવાથી તેની શી દશા આવી પડી છે ? કુસંપેજ આર્યધર્મ વિચ્છેદક યવનોને દેશમાં આવવા નીમંત્રણ કર્યું હતું. હાય ! જે ભૂમિના સંતાનો શાંતિ સુખ અને ઐશ્વર્યમાં મહાલતા તેજ ભુમિના સંતાનો કુસંપ દાવા-નળમાં કેવા સપડાઇ રહેલા છે કે જે વિચારતાં ખરેખર કંપારી છુટે છે. કુસંપ ધર્મ, કર્મ, ધન, વૈભવ, યશ સુખ શાંતિ દરેકનો નાશ કરે છે. કુસંપ પ્રેમઝરાને ભસ્મિભુત બનાવે છે. પ્રેમના નાશ ત્યાં દયાનો નાશ, દયાનો નાશ ત્યાં ધર્મનો પણ નાશ થાય, એ સ્વાભાવિક છે. કોઇપણ ધર્મનો પાયો દયા, અહિંસા વિના રચાયો નથી. પરંતુ તેના સંચાલકો દયા શબ્દને તિલાંજલી આપી તેથી વિરૂદ્ધ વર્તન કરતા હોઇ આપણે તે તરફ કેવી દ્રષ્ટિથી જોઇએ છીએ. ખરેખર આપણને આપણી કુસંપી અને છીછરું વર્તણુંકને માટે શા માટે તિરસ્કાર ન થવો જોઇએ. પરંતુ આવા ઝેરીલા ચેપીલા દુર્ગુણો આગળ કંઇપણ જોઇ શકાતું નથી.

કુસંપથી અનેક પ્રકારના ગેરફાયદા થાય છે. તેનાથી અનેક પ્રકારની હાનીઓ ભોગવવી પડે છે. તેનાથી કોઇએ કંઇપણ લાભ મેળવ્યો નથી તો આવા કુસંપને કયો હીનભાગી હશે કે તેનું અસ્તીત્વ આપણા ત્યાં જોવા ઇચ્છુક હોય. કોઇ એમ નહી કહી શકે કે કુસંપ હાનીકારક નથી. દરેક એમજ કહેશે કે આપણે કુસંપ ન જોઇએ. તો શા માટે આપણે કુસંપ દાવાનળની હોળીમાં ઝંપલાવવું જોઇએ ? બેશક નહીજ તેને તો દેશવટો આપ્યેજ છુટકો હોય.

ધર્મ બંધુઓ ? આપણે શાંતિના ઉપાસક મહાવીરના ભક્તો કે જે મહાવીરે જગતમાં અઢી-હજાર વર્ષ પૂર્વે અહીંસા ધર્મનો જય જયકાર કરાવ્યો હતો કે જેના પ્રભાવે વનવાસી હીંસક પશુઓ પણ પોતાનો કુદરતી વૈરી સ્વભાવ ત્યજી દઇ શાંતિ રસનું પાન કરતાં હતાં અહા ? શો તે સમય ! પરંતુ ફક્ત અઢી હજાર વર્ષમાં તેજ ધર્મની અને સમાજની શી પાયમાલ દશા. જ્યાં ભાઇ ભાઇમાં સંપ નહી ત્યાં બીજું શું કહેવું.

સુહૃદો ! આપણે મહાવીરના પુત્રો ! આપણને કુસંપ રિપુના ભક્તો થવું ન પાલવે. આપણે માટે અંદર અંદરના ભેદ ભાવો અને ધાર્મિક ઝગડાઓ કરવા શોભાસ્પદ નથી. આપણુ માટે તો એક સંપી અને નિરાગી હૃદય હોવા જોઇએ. આપણે જૈન સિદ્ધાંતના વિશાળ અને શુદ્ધ નીકલંક તત્વો માટે અભિમાન ધરાવીએ છીએ ત્યારે આપણાં રીત રીવાજો, વિવેક, વિનય સહનશીલતા, નોકરતા બાહોશીના શામભાવ, સંપ અને હૃદયની

વિશાળતા માટે શા માટે સંકુચીત મન રાખવું જોઈએ. યાદ રાખજો આ દુનીયામાં અહંભાવ, ઇર્ષા અને હઠાગ્રહી મુમતીલા સ્વભાવજ કુસંપનું મુળ છે કુસંપને વધાવવો હોય તોજ માન, કષાય અને હઠાગ્રહને માન આપજો. આ હઠાગ્રહી સ્વભાવેજ આપણી પાયમાલી કરી નાંખી છે.

બંધુઓ ! ઉપરના અહંભાવ ઇર્ષા અને હઠાગ્રહ કુસંપના એ પરમ સહાયક છે. જ્યાં એ ત્રણ દુર્ગુણો નથી ત્યાં કુસંપનો અભાવ છે. એ દુર્ગુણો ખરેખર જીવને મહાન ઘોર નરકમાં નાંખે છે. સંસાર બંધનને વધારે અને વધારે દ્રઢ બનાવે છે. આ કારણને લઇને પૂજ્ય મહાત્માઓ તેનો છાંયો પણ લેવો મહાન પાપ સમજે છે. અહંભાવી મનુષ્યને વધારે અપમાન સહેવું પડે છે. અહંભાવી કોઇનું ભલું કરી શકતો નથી. અરે ! પોતાનું ભલું કરી ન શકે તો બીજાનું ક્યાંથી કરી શકે ? તાડનું ઝાડ પોતાની ઉંચાઇને માટે ભલે મસ્ત બને પરંતુ તે પવનના એકજ સપાટે ધરાશાયી બની જશે અને તેના અસ્તીત્વને ગુમાવી બેસશે. પરંતુ આમ્રવૃક્ષને ઉખાડવાને પવનને ઘણી મહેનત પડશે અને પડશે તો તે ઉપકાર વૃત્તિથી પડશે.

આવીજ પ્રકાર આપણા જૈન સમાજમાં ચાલી રહ્યો છે. એક કહેશે હું વડો તો બીજો કહેશે હું વડો. આમ વડાઇ અને વિદ્વાતાના અહંકારમાં તેઓમાં ઇર્ષાનો અગ્નિ એટલો વ્યાપી રહ્યો છે કે ક્યારે તેના ઝેરી ભડકા આપણને હતા ન હતા કરી નાંખશે તે જાણવું પણ મુશ્કેલ છે. આવી રીતે વડાઇના પ્રવાહમાં તણાઇ કોઇએ પણ સાર કાઢ્યો નથી તો આપણે શી ગણતરીમાં.

વડાઇના અભિમાનમાં મસ્ત રહેનાર કૃષ્ણનું બળીમાન ભગવાન નેમનાથ આગળ કેટલું ટક્યું હતું. છ ખંડને જીતનાર ચક્રરત્નને ધારણ કરનાર મહાન ચક્રવર્તી ભરત મહાન બુદ્ધિશાળી હોવા છતાં બાહુબલીના બલનું માપ કરી શક્યા નહોતા. આત્માની શક્તિ અગાધ છે. પબ્લીક રીતે મહાન પ્રભાવશાળી માણસ કરતાં એક નાના ગામડામાં રહેનાર માણસ વધુ સંગીન કામ કરી શકે છે. રત્નો પાકવાનું સ્થાન એક હોતું નથી.

આજકાલ જૈન પેપરોનાં પાનાં ટીકા ટીપ્પણી અને નીંદાઓથી ભરેલાં હોય છે. કોઇમાં ફલાણો આમ છે, ફલાણાની વર્તણુંક આમ છે, ફલાણો ધર્મ વિચ્છેદક છે. ફલાણાનું જ્ઞાન એકેન્દ્રિ જ્ઞાન છે. તેને સ્ટેજમાં ઉતારી શકીએ છીએ ફલાણો ફલાણાની પાસે કામ કરતો હતો હમણાંજ ચઢી ગયો છે. ફલાણો હમણાંજ નવીન પાક્યો છે. તેનાથી શું ભલું થશે. આમ ટીકા ટીપ્પણી અને નીંદા કુથલીનાં બીલાડાં ચીતરી પેપરોનાં પાનાં બગાડી જાહેર જનતાનાં મન ઉશ્કેરી મૂકે છે. બંધુઓ ! આપણા શાસ્ત્રમાં નીંદા કરવી શું પાપ નથી ? શું નીંદા કરનાર માણસ પાપી કહી શકાતો નથી ? નીંદા કરનાર શું નરકમાં નથી જતો ? યાદ રાખજો "दुर्जनः परान् दोषान् पश्यति" તેનાથી બીજાનું ભલું થતું જોઇ શકાતું નથી. તો હે સમાજના પંડિતો ! બાબુઓ ! તમો આમ એક બીજાની નીંદા અને ઇર્ષાના પ્રવાહમાં તણાઇ શા માટે શુભ કર્મને હડસેલી મૂકો છો. તમારાં આવાં કર્તવ્યોથી કોઇ પણ દીવસ સમાજનું તેમ ધર્મનું ભલું થઇ શકવાનું નથી. સમાજનું ભલું તેજ માણસ કરી શકે છે કે જેનામાં ઇર્ષા, મોટપ, મમતા અને અસહિષ્ણુંતાનો અભાવ હોય છે અને વિશાળ હૃદયનો હોય છે. યાદ રાખજો તમારાં આવા આચરણોથી તમો સમાજનો વિશ્વાસ હમેશને માટે ગુમાવી બેસશો તમારે માટે સમાજ શંકાની દૃષ્ટિએ જોશે. ભલે તમો પોતાને મોટા માનતા હો. વા સમાજ હિતૈષિ ધારતા હો. પરંતુ જ્યાં સુધી તમો માન અને કીર્તિનો લોભ ત્યજી દેઇ એક સમાજ હીતના ધ્યેયથીજ કામ કરતાં નહી શીખો ત્યાં સુધી તમારો પરિશ્રમ નીર્થક થઇ હાંસીને પાત્ર થશો.

બહારની સમાજ તમારી તરફ હાંસી કરી રહી છે. તમારી હાંસી તેજ સમાજ અને ધર્મની હાંસી છે તે સાચે સાચું માનજો, આ લેખકનો અભીપ્રાય તમને નીંદવાનો યા ઉતારી પાડવાનો નથી. પરંતુ તમો સ્વાર્થને ત્યજી વિશુદ્ધ મનથી કામ કરો અને તેનાં મીઠાં ફળ સમાજ ચાખે એજ છે.

આ દુનીયામાં દરેક માણસો સદંતર નીષ્કલંક હોઇ શકતા નથી. કોઇમાં કોઇ અને કોઇમાં કોઇ દોષ હોય હોય અને હોયજ. દરેક પ્રકારના ગુણી તો ભગવાન સર્વજ્ઞજ હોઇ શકે છે. માટે દરેકે દુધ પાણીના મીશ્રણમાં દુધને અલગ કરનાર હંસની માફક ગુણગ્રાહી બનવું જોઇએ. કોઇ પણ માણસ હડધુત કરવાથી યા ઉતારી પાડવાથી સમજી શકતો નથી. પરંતુ ખાનગી સમજુતીથીજ સમજી શકે છે. એનાં હજારો બલકે લાખો પ્રમાણો શાસ્ત્રોમાં વાંચીએ છીએ. શું આગળના વખતમાં કોઇ મુની શ્રાવક યા સજ્જન પાપમય કર્મોને વશ નહીં થતો હોય? પરંતુ પહેલાં ઉપગુહન અંગના ધારક શ્રાવકો સમાજની તેમજ ધર્મની હાંસી થાય તેવો સમય આવે તે પહેલાંજ તેનો ઉપાય કરી લેતા હતા. તેઓ વિઘ્ન સંતોષી ન હતા પરંતુ ભુત ભવિષ્યનો વિચાર કરનારા હતા. પરંતુ હાય! અફસોસ કે આપણે તેજ મહાન પુરૂષોના પુત્રો હોવા છતાં આપણાં મન કેવળ ઇર્ષા, અદેખાઇ અને સ્વાર્થમય બની ગયેલા હોઇ કંઇ પણ ભવિષ્યનો વિચાર કરી શકતા નથી.

મહાનુભાવો! હાલની સમાજની પરિસ્થીતિ વીચારી એકસંપી બનો અને બનાવવાનો વિચાર કરો. યાદ રાખજો **"કપાળ ફુટે પાટો બાંધી શકાશે પરંતુ ઘર ફુટે પાટો બાંધી નહી શકાય."** મહાન રાજ્યો વીગેરેનો નાશ તેમના ઘર અંદરના કુસંપનેજ આભારી છે. ભારતવર્ષમાં યવનોનું આગમન ઘર કુસંપનેજ આભારી છે. તો શું આપણો અંદર અંદરનો કુસંપ સમાજ ધર્મને નુકશાનકર્તા નહી નીવડે? અલબત અણુછાજતું થતું હોય તો ખાનગી મસલતથી સામાધાની રૂપમાં કાર્ય કરી અટકાવો. પરંતુ પબ્લીક રીતે જાહેર પેપરોમાં ચર્ચવાથી ઇષ્ટને બદલે અનીષ્ટ પરિણામ આવે છે. વીચારો. જુઓ કે તમારા આવા કાર્યક્રમથી તમોએ કેટલો લાભ આપ્યો! એથી શું પ્રાત–પક્ષીના વિચારો દાબવાને સમર્થ નીવડયા? આ દુનીયામાં શીરજોરી અને મારતેમાંયાંથી કામ ન બની શકે. કાર્ય સાધના તો બુદ્ધિમતા અને શાંત વ્યવસાયથીજ બની શકે.

દાખલા તરીકે બારડોલી પ્રકરણમાં બ્રીટીશ રાજ્ય સત્તાને નમતું આપવું પડયું તે શાથી? અહિંસાત્મક અસહકારથીજ. ઘૃણા કરવાથી અને તીરસ્કારથી સામો પક્ષ વધારે હઠાગ્રહી અને દૃઢ બને; અને નમતું આપવાને બદલે વધારે અને વધારે ઉત્તેજીત બને છે. છેવટે તે પોતાના ધર્મને પણ તીલાંજલી આપી દે છે આવી રીતે આપણે ઘણી સંખ્યામાં આપણા ધર્મબંધુઓને ધર્મથી ચ્યુત કરી બેઠા છીએ. જે આપણાં સંકુચીત વિચારોનુંજ પરિણામ છે. આ વખતે મને યાદ આવે છે કે એક જૈન બંધુએ લાલાલજપતરાયને પુછયું કે લાલાજી આપે જૈન ધર્મમાં શું ખામી દેખી કે જૈનકુળમાં ઉત્પન્ન થવા છતાં આર્યધર્મને અંગીકાર કર્યો. લાલાજીએ કહ્યું કે જૈનધર્મના તત્વો માટે મને પુષ્કળ માન છે જૈન ધર્મમાં કોઇપણ પ્રકારની ખામી નથી. પરંતુ તેના સંચાલકો અને નેતાઓનાં મન સંકુચિત વિચારનાં છે. કે જેને લીધે મારે આર્યધર્મને સ્વીકારવો પડયો. બંધુઓ આપણા કેટલાક ખટપટી હૃદયનાઓને લીધે આવા સમર્થ વિદ્વાનોને સમાજથી દુર થતા જોઇએ છીએ. તો શું તેઓનો તિરસ્કાર કર્યાથી પોતાના વિચારોમાં ફેરફાર કરે? મહાન સ્વતંત્ર હૃદયના વિદ્વાન મનુષ્યો એમ હડધુત કર્યાથી પોતના વિચારો ફેરવી શકતા નથી. પરંતુ શાંતિથી તેના દુર્ગુણો ખાનગીમાં સમજાવ્યાથીજ તેઓ ખરાબ જણાતા વિચારોને છોડી શકે. બધાઓમાં સર્વજ્ઞતા હોતી નથી પરંતુ

કેટલાક માનના ભુખ્યા પણ હોય છે તેઓને માન આપીને પણ ધર્મમાં સ્થીત કરવા જોઇએ. આમ કર્યાથી સ્થીતિકરણ અંગનું પાલન પણ થઇ શકે છે કે જે મહાન પુણ્યદાયી છે.

બંધુઓ, આપણા આવા ઇર્ષાળુ મુંમતીલા, અહંભાવી, અને કુસંપી અનીચ્છનીય વિચારોને લેઇને જૈન-સમાજ તેમજ ધર્મને કેટલું ખમવું પડયું છે તેનો પણ વિચાર કરવો જરૂરનો છે.

૧—અખીલ ભારતવર્ષિય દિગંબર જૈન મહાસભા કે જેના ઉપર સમસ્ત દિગંબરોના ઉત્કર્ષનો આધાર હતો તે પડી ભાંગી અને નહી જેવી થઇ પડી.

૨—આપણા ધર્મસ્થાનના ઝગડાઓ દીન પ્રતિદીન વધારે અને વધારે પ્રમાણમાં ઉપસ્થીત થતા હોઇ આપણા કુસંપે તેમાં ફતેહમંદી મેળવી શકતા નથી. અને ધાર્યું કામ પાર પાડી શક્યા નથી.

૩—વિધર્મીઓથી થતા હુમલા સામે જોઇએ તેવી રીતે સામા થઇ શકતા નથી. અને ધર્મને કલંકીત થતો જોવો પડે છે.

૪—સમાજમાં જુના વખતના ઘર કરી રહેલા કુરીવાજોને દાબવાને યા જડમૂળથી કાઢવાને સમર્થ થતા નથી.

૫—એક એકની ઇર્ષાથી કુસંપ વધવાથી અંદર અંદર કલહ કરીએ છીએ અને છેવટે આપણાજ સાધર્મી ભાઇઓ પોતના ધર્મનીજ નીંદા કરવા પ્રેરાય છે તેના માટે ખરેખર જવાબદાર હોય તો સમાજ નેતાનો હીસ્સો લેનારાજ છે.

ઉપર કહ્યા તે સિવાય અનેક પ્રકારનાં નુકશાનો સમાજને ડગમગાવી રહ્યાં છે તેથી હે સમાજનેતાઓ! જરા સમજો અને વિચારો. આમ ઇર્ષાળુપણાની અને કુસંપથી કોઇપણ દિવસ કોઇનું ભલું થયું નથી. નાહકના પાપના ભારા બાંધવા પડે છે તે ખચીતજ જાણજો. કુસંપના અભાવે આર્ય સમાજીસ્ટો, શ્વેતાંબરો વીગેરે પોતાના ધર્મનો કેટલો બધો ફેલાવો કરી રહેલા છે તે અનુકરણીય છે. છેવટે જો તમારે સમાજને ઉત્તમ દશામાં લાવવી હોય તો ભગવાન અકલંક નહી પરંતુ નીકલંક જેવા ઉદાર બનો. બૌદ્ધ સંપ્રદાયના ભયથી કારાગારમાંથી નાસતા બન્ને ભાઇઓ અકલંક અને નીકલંક પોતાના બન્નેમાં અકલંક સમર્થ વિદ્વાન હોઇ તેમનાથી જૈન ધર્મનો ઉદ્ધાર થશે. એમ જાણી અકલંકને બચાવવા ખાતર મહાત્મા નીકલંક પોતાના યશની તેમજ શરીરની દરકાર કર્યા વિના આત્મભોગ આપ્યો હતો. આ ઠેકાણે મારો કહેવાનો આશય તેમ નથી કે અકલંક દેવ કરતાં નીકલંક વધારે પુજ્ય છે. બેશક અકલંક દેવ તે સમયના ધર્મ સ્થાપક હતા પરંતુ નીકલંક દેવનું વર્તન આપણને અત્યારે ધડો લેવા જેવું છે. તે વખતે નીકલંક આપણી માફક પ્રવાદમાં તણાયા નહતા; પરંતુ નીષ્કપટતાથી અને નીડરતાથી પોતાના ભાઇના હસ્તેજ ધર્મનો ઉદ્ધાર થવાની ઇચ્છા રાખી હતી.

મહાનુભાવો! આપણા સમાજને હાલમાં તેવા અકલંક અને નીકલંકોની જરૂર છે. નીકલંક એટલે કોઇપણ પ્રકારની ઇચ્છા વીના ધર્મને માટે મરવાનું પસંદ કરનારા અને અકલંક એટલે ધર્મોદ્ધારક એ બન્ને પ્રકારના મહાનુભાવોની જરૂ-રીયાત છે. હાલના સમયમાં આપણા સમાજમાં ધારે તો સમાજ નેતાઓ અકલંક અને નીકલંક બની શકે તેમ છે. પરંતુ બન્નેઓનો સમાજોદ્ધારનો ધ્યેય એકજ હોવા છતાં તેમની પ્રણાલીકાએ જુદુંજ પરિણામ નીપજાવી કાઢયું છે. એક બાજુ પંડિત પાર્ટીએ ધર્મક્ષેત્રમાં દાવાનળ સળગાવ્યો છે. જ્યારે બીજી તરફથી બાબુ પાર્ટી બન્ને હાથે તેનું કાળજું ખેંચી લેવા પ્રયત્ન કરી રહી છે. આમાં કોઇથી ભલું થઇ શકે નહી. "જેનો આગેવાન આંધળો તેનું કુટુંબ કુવામાં" એ ન્યાયે જ્યાં બન્નેમાં સંપ નહી ત્યાં શી રીતે સમાજનું ભલું થાય.

હે સમાજ નેતાઓ! આપણે દયા ધર્મનેજ

ધર્મ માનનારા કોઇનું દીલ દુભવવું તેમાં પાપ માનનારા શ્રાવકના ઉચ્ચ કુલમાં ઉત્પન્ન થયેલા તેમને આવા ધર્મને માટે અંદર અંદરના કલહનાં ઢીમાણાં શા શોભે ? **આપણે માટે તો પાર્ટી એ શબ્દજ ન જોઇએ.** જો તમારે ખરા અંતઃકરણથી સમાજ તેમજ ધર્મની ઉન્નતીજ કરવી હોય તો પાર્ટી શબ્દને દેશવટો આપો. કોઇનામાં એ ભાવ ન હોવો જોઇએ કે અમુક કામ હુંજ કરૂં. પરંતુ એજ ધ્યેય રાખવો જોઇએ કે અમુક કામ કરવું છે. તેને શુભેચ્છાથી કરવાનું અંગીકાર કરે તો તેના શુભ પરિણામથી આનંદ માનવો યા અશુભ પરિણામથી બીજી વખત પ્રયત્નશીલ થવું. પરંતુ કોઇના કાર્યથી અસંતુષ થવું જોઇએ નહી સેવા ભાવનાશાળી માટે એક નહી તો બીજાં અનેક વિશાળ કાર્યક્ષેત્ર હંમેશાં તૈયાર રહે છે

છેવટે એકસંપથી કાર્ય કરી શકો તેમ ન હોય તો સમાજ હીતની ખાતર મારે કહેવું પડે છે કે નાહકનું ખોટી રીતે હાથે કરી નુકશાન કરતાં સમાજને ભાગ્યના ભરૂસે છોડી દો. સમાજને કુસંપી-કાર્યક્રમની જરૂરીયાત નથી કુસંપી વાતાવરણમાં તમારી સેવા સમાજ હરગીજ નહીં ઇચ્છે. હાલના સમયમાં એક નહીં તો અનેક રીતે સમાજ પોતાનું ભલું કરી શકશે કુસંપના દાવાનળમાં કંઇ પણ કાર્ય થઇ શકેજ નહીં માટીનું મકાન વર્ષાઋતુમાં ઘણી ટકાય નહી. તે ખચીતજ માનજો.

પ્રીય પાઠકો મારા લખવાથી કોઇપણ પ્રકારનું માઠું લગાડશો નહીં પરંતુ ખરેખર જ્યારે સમાજની પરિસ્થીતિ જોઉં છું ત્યારે કલમ પણ અટકાવી શકાતી નથી. અંતે દરેક સમાજ હિતૈષીએ એક સંપીથી કામ કરી સમાજને ઉચ્ચતમ સ્થીતિમાં લાવે અને સમાજ ઉન્નતિના શિખરે પહોંચે એજ જોવા ઇચ્છતો વિરમું છું.

—⋙⋘—

નિર્વાણોત્સવ નિમિત્ત મિત્રોનો સંવાદ.

પદ્મકુમાર—કેમ ભાઇ વીરેન્દ્ર ! આજે પણ તમો બીલકુલ નવરા દેખાતા નથી ! અત્યારે ક્યાં દોડધામ કરી રહ્યા છો ?

વીરેન્દ્ર—ભાઇ ! શું આ નવરા બેસી રહેવાનો દિવસ છે ?

પ.—ત્યારે બીજું શું ? આજેતો સારો પોષાક પહેરીને મોજશોખથી દિવસ વ્યતીત કરવો.

વી.—આવા શુભ દિવસોએ પણ દરરોજની માફક મોજમજા ઉડાવવી અને આપણી જીંદગીનો અમુલ્ય સમય ગુમાવવો ?

પ.—આ દિવસો મોજમજામાં ન ગાળવા ત્યારે શું કરવું કામ કરાવનું તો બીજા દિવસો માટે સરજાયલુંજ છે.

વી.—તમારૂં કહેવું બરોબર છે ભાઇ ! આપણે આ અવની ઉપર જન્મ્યા છીએ તે કાંઇ પણ કાર્ય કરવાને માટેજ. અંગ્રેજી સુત્ર- Time is Money—ના અનુસાર આપણી અમૂલ્ય જીંદગીનો થોડો પણ વખત એવો ન જવો જોઇએ કે આપણે તે વખતમાં કાંઇ પણ કરવા લાયક કાર્ય ન કર્યું હોવું જોઇએ.

પ.—તમોને તો ભાઇ બધો વખત કામ કરવાનુંજ ગમે છે, તમે કંટાળતા નથી ? મ્હને તો જેમ વધુ ફરવા હરવાનું તથા આનંદમાં સમય વ્યતીત કરવાનું મળે તેજ સારૂં લાગે છે.

વી.—તમે બરાબર કહો છો ભાઇ પદ્મકુમાર ! આ દિવાળીના દિવસોમાં આનંદથી રહેવું જોઇએ અને સાથે કાંઇ શુભ કાર્ય પણ કરવું જોઇએ.

પ.—ભાઇ ! મ્હને કહેશો કે આ દિવસો આપણે કેવી રીતે વ્યતિત કરવા ?

વી.—સાંભળો-આ તે દિવાળીનો દિવસ છે. કે જે દિવસે આપણા અંતીમ તીર્થંકર મહાવીર સ્વામિ આ ક્ષણ ભંગુર સંસારમાંથી છુટીને ઉચ્ચ જે મોક્ષપદ તેને પામ્યા હતા. તે દિવસને આજે

આશરે ૨૫૦૦ ઉપર વર્ષો થઇ ગયાં છે તેમની યાદગીરીને માટે અને તેમના જેવા ઉચ્ચગુણો મેળવવાની ભાવના ભાવવાને માટે આ દિવાળીનો તહેવાર આપણા સમાજમાં પ્રાચીન સમયથી પ્રચલિત છે. આજે આપણે તેમના ગુણોની પૂજા કરીને, આપણને તેમના જેવા ગુણો પ્રાપ્ત થાય તે માટે પ્રાર્થના કરવી જોઇએ.

(ત્રીજો સ્નેહિ ચન્દ્રકાન્ત આવી મળે છે.)

ચન્દ્રકાન્ત—મિત્રો ! રસ્તા વચ્ચે આ શું સંભાષણ ચલાવી રહ્યા છો ?

વી.—પદ્મકુમાર ભાઇને આજના દિવસ વિષે કાંઇક સમજાવી રહ્યો છું.

પ.—મ્હને પણ તમારી મધુરી વાણી સાંભળવા દો. આગળ બોલો ભાઇ, વીરેન્દ્ર !

વી.—આજે આપણે પ્રાતઃકાળમાં વહેલા ઉઠી મંદીરમાં જઇ વીર ભગવાનનું પૂજન કરી તેમના ગુણોનું કીર્તન કરવું જોઇએ. દિવસે સબંધી વર્ગ સાથે આનંદમાં દિવસ વ્યતીત કરવો જોઇએ. સાંજના સર્વેએ ભેગા મળી કોઇ વિદ્વાન ભાઇએ બીજાઓને દિવાળીનું મહાત્મ્ય સમજાવવું જોઇએ અને વીર પ્રભુને પગલે ચાલવાને સર્વેને બોધ આપવો જોઇએ.

પ.—ત્યારે ભાઇ વીરેન્દ્ર ! આપણા લોકો તો રાત્રે દારૂખાનું ફોડીને આનંદ માને છે તેનું શું ?

વી.—અરે ! દારૂખાનું કે જેનાથી અસંખ્યાત જીવોનો ઘાત થાય છે તે અહિંસા તત્વને માનનારા જૈનોથી તે કેવી રીતે ફોડી શકાય ? વળી દારૂખાનાથી ઘણોજ ખોટો પૈસો બીજા રસ્તે વપરાય છે તેટલોજ ઉપયોગ જો સમાજના હિતાર્થે થતો હોય તો કેટલો લાભ થાય ? માટે તેનો આપણા સમાજમાંથી જડમૂળથી નાશ કરવો જોઇએ !

ચ.—આ શિવાય બીજા કયા દુષ્ટ રિવાજો છે કે જેને આપણે કાઢી નાંખવા જોઇએ ?

વી.—બીજા ઘણાય કુરિવાજો આપણા સમાજમાં મૂળ ઘાલી બેઠેલા છે કે જે આપણે દૂર કરવા જોઇએ. બાળલગ્નોને અટકાવવા માટે આપણી સભાઓ ઘણા ઘણા ઠરાવો કરે છે, છતાં તે રિવાજ હજુ દૂર થયો નથી. વળી વૃદ્ધ લગ્ન, કન્યા વિક્રય, મરણ પાછળના જમણો, શ્રીમંતનાં મિષ્ટાન્ન, લગ્નના લાંબા ખરચો—વિગેરે રિવાજો આપણે બંધ કરવા જેવા છે. આ સર્વ કરવાને માટે આપણે ભેગા મળી દરેક બંધુને તથા વડીલોને સમજાવવા જોઇએ અને તે પ્રમાણે ચાલવા સર્વેને વિનંતિ કરવી જોઇએ.

ચ.—બરાબર છે મિત્ર ! દિવાળીનો દિવસ તો ત્યારે ગણાય કે જ્યારે આપણે કાંઇ શુભ અને ચિરંસ્મરણીય કાર્ય કરી બતાવીએ. આપણા સમાજની તથા ધર્મની ઉન્નતિ કરવાનો આજ સ્હેલો ઉપાય છે. તે માટે દરેક યુવકે કટિબદ્ધ થવું જોઇએ. આજથી તે માટે મ્હારાથી બનતો પ્રયત્ન કરવાની હું પ્રતિજ્ઞા લઉં છું.

પ.—વીરેન્દ્રભાઇ ! તમારા શબ્દોએ મ્હારા અંતરમાં નવીનજ ચેતન આણ્યું છે હું પણ તે દુષ્ટ રિવાજોને દૂર કરવાને માટે પ્રયત્ન કરવાની પ્રતિજ્ઞા લઉં છું.

વી.—બરાબર છે પદ્મકુમાર ! તમને હું તે માટે અભિનંદન આપું છું અને દરેક યુવક તમારા જેવી પ્રતિજ્ઞાઓ લેશે એમ ઇચ્છું છું. ચાલો હવે સમય ઘણોજ વીતી ગયો છે. જય બોલો " વીર પ્રભુની. "

લી॰ જૈન જાતિ સેવક,
રતિલાલ કેશવલાલ શાહ બોરસદ.

"देशी वनस्पति."

" તુલસીજીના અપૂર્વ ચમત્કાર. "

લે॰—શા. કેશવલાલ એન. લાકરોડાવાળા ટાંકાકુંડ.

તુલસીની ઉત્પત્તિ:— આખા હિંદુસ્તાનમાં દરેક બાગ બગીચામાં તથા ઘર આગળ થાય છે. આનો છોડ હાથ દોઢ હાથભર ઊંચો થાય છે. તેનાં પાન બાવચીના પાન જેવાં ઝીણાં હોય છે તેનાં બી કાળાં વડના બી જેવાં ઝીણાં હોય છે. તુલસીનું પંચાંગ દવાના કામમાં આવે છે. આ

તુલશીમાં બે જાત છે કાળી અને સફેદ તુલશી હીન્દુ લોકોએ પવિત્ર માનવાથી દરેક જગ્યાએ મલી આવે છે. આનો ગુણ અપાર છે.

તુલશીના ગુણ.

हिक्काकासविषश्वासपार्श्वशूलविनाशन ।
पित्तकृत्कफवातघ्नस्सुरसः पूतिगन्धनुत ॥
"चरक"

તુલશીનાં પાન ખાંસી, વિષવિકાર શ્વાસ તથા પાર્શ્વશુળનો નાશ કરે છે. વળી તે પીતકારક, કફ અને વાયુનો નાશ કરનાર તથા દુર્ગંધનાશક છે.

कफानिलविषश्वासकासदौर्गन्ध्यनाशनः ।
पित्तकृत्पार्श्वशूलघ्नः सुरसः समुदाहृतः ॥ "सुश्रुत"

તુલશી કફ, વાયુ, વિષ, શ્વાસ ખાંસી અને દુર્ગંધનો નાશ કરનાર છે. તે પિતકારક છે અને પડખાના શુળનો નાશ કરનાર છે.

श्वेता च कृष्णा तुलसी कटुष्णा रूक्षते
दाहपित्तकरी हृद्या तुवरा दीपनी लघु ।
कटवी वातकफश्वासकासहिक्का क्रमान्नयेत ।
वान्ति दौर्गन्ध्यकुष्ठानि पार्श्वशूल विषापहा ।
मूत्रकृच्छ्ररक्तदोषं भूतबाधां च नाशयेत ।
शूलज्वरे चहिक्कां च नाशयेदिति कीर्तिता ॥
"भाव प्रकाश"

અર્થ:—સફેદ અને કાળી તુલશી તીખી, કડવી, ગરમ, તીક્ષ્ણ દાહજનક પિતકારક હૃદયને હિતકારી અગ્નીદીપક હલકી તથા વાત કફ શ્વાસ ખાંશી, હિક્કા, કુમી, ઉલટી, દુર્ગંધી, કોઢ, પાર્શ્વશુલ તથા વિષનો નાશ કરનાર છે. અને મુત્રકચ્છ રક્તદોષ, ભુતબાધા શુળ, જ્વર અને હેડકી દુર કરનાર છે.

यद्दिव्यरस्य कीकारस्य, तनुगतस्य च त्वचि ।
तुलसीकरोय ग्रहणं, कक्षश्च समनीनशत ॥
रोगाणां दत्वदानो, तुलसिका अरुवन्तु ।
रवणुं पताका पुनरुपीता आकरनय ॥
॥ अथर्व पुराण ॥

ચામડી, હાડકાં, માંસમાં જે મહાન રોગ પહોંચી ગયો હોય તેનો પણ ધોળી તુલશીથી નાશ થાય છે. કાળી તુલશી રૂપવાન કરવાવાળી છે. અને તેના સેવનથી શરીર ઉપરથી ધોળા ડાગ તથા ચામડીના અન્ય રોગ નાશ થાય છે. એમ પુરાણોમાં લખ્યું છે.

तुलसीकाननं चैव गृहे यस्यावतिष्ठते ।
तद्गृहे तीर्थभूतं नायान्ति यमकिंकरा ॥
तुलसीगन्धमादाय यत्र गच्छति मारुतः ।
दिशोदश्च पुनात्याशु भूतग्रामांश्चतुर्विधाः ॥
॥ पद्मोत्तर पुराण ॥

જે મકાનમાં તુળશીનો છોડ તે તીર્થ સમાન છે ત્યાં યમદુતો આવતા નથી. તુળશીની સુગંધ આપવાવાળો વાયુ જ્યાં જ્યાં જાય છે ત્યાં ત્યાં દશે દીશાઓ અને ચારે પ્રકારના જીવોને તત્કાળ શુદ્ધ કરે છે. કેમકે તુલશી વૈદ્ય લોકોનું જીવન રૂપ છે. અને દરેક દર્દ ઉપર અનુપાનથી આપવાથી એક વખત મર્ણ પથારીએ પડેલા મનુષ્યને જીવન આપી તત્કાળ સાજો કરી દેવે એવો ચમત્કાર તુલશીમાં છે.

" તુલશીના અનુભવેલા પ્રયોગો "

ખાંસી જીર્ણજ્વર અને છાતીના દર્દ તુલશીના પાનનો રસ કાળાં મરી અને સાકર એકત્ર કરી સાત દીવસ પીવાથી તત્કાળ નાશ પામે છે.

વાયુ કે કફથી થયેલો ઉન્માદ:—તુલશીનાં પાન શુંગાડવાં ચોપડવાથી તથા ખાવાથી અત્યંત લાભ થાય છે.

મુત્રરોગમાં—તુલશીના પાનના રસ સાથે લીંબુનો રસ મીલાવી તેનું સેવન કરવાથી ફાયદો થાય છે.

જીભ હોઠનાં ચાંદાં—તુલશીનાં પાન ચાવવાથી મટી જાય છે. મોઢાની બદબો જતી રહે છે. અવાળાં ને દાંત મજબુત થાય છે. દાંતના દરદો નાબુદ થઈ કંઠ શુદ્ધ થાય છે.

પાચન શક્તી—તેના પાન વાટી ખાવાથી વધે છે. વાયુ શુદ્ધ થાય છે તેમજ ઓડકાર શુદ્ધ આવે છે અને ભુખ લાગે છે.

યકૃત પ્લીહા, હરસમાં—તુલશીનાં પાન ખાવાથી અને લગાડવાથી અત્યંત ફાયદો થાય છે. તુલશીનાં પાન કૃમિઘ્ન છે, તેનો લેપ કરવાથી મચ્છર કરડતા નથી તેના પાનનું ચુર્ણ ભભરાવવાથી ઘામાં પડેલા કીડા મરે છે.

કોલેરામાં—તેના પાનની સાથે કાળાં મરીની ગોળી બનાવી આપવાથી ઉલટી અને ઝાડો બંધ થઇ જાય છે.

સાપ કરડે ત્યારે—તરતજ દશ પંદર તુલશીનાં પાન તથા કાળાં મરી સાથે ઘુટી પાવાં જોઇયે અને તેનાં પાન તથા મુળ વાટી સાપ કરડયો હોય તે જગ્યાએ ચોપડવાં જોઇયે.

વિછી કરડયો હોય ત્યારે તુલશીનાં પાન ચાવી કાનમાં ફુંકો મારવી અને મુળ તથા પાન વાટી કરડેલી જગ્યાએ લેપ કરવો.

સળેખમ, ખાંસી, છાતીના દર્દો—કાળી તુલશી અત્યંત ગુણકારી છે.

પ્લેગમાં—તુલશીનાં પાન ને કાળાં મરી સાકર સાથે ખવડાવાથી અને તેના પાનને શરીર પર લગાડવાથી બહુ લાભ થાય છે. શરીરના કોઇ પણ ભાગને સોજો હોય તો-તેનાં પાન વાટીને ચોપડવાથી સાજો થાય છે.

તુલશીનું નિત્ય સેવન કરવાથી શુદ્ધ લોહી પેદા થાય છે, અને મનુષ્ય હરેક પ્રકારના રોગથી બચી જાય છે.

કોઢમાં—તેનાં પાન ખાવા ને ચોપડવા હિતકારી છે.

તુલશી ચેપી રોગનો નાશ કરે છે કૃમિઘ્ન અને મલેરીયાના તાવનો નાશ કરવામાં ગુણકારી છે.

"સર્વ પ્રકારના તાવ માટે."

કાળાંમરીને તુલશીના પાંનના રસની સાત ભાવના આપી તેને બારીક વાટી ચણા જેવડી ગોળી કરી શીશીમાં ભરી લેવી, જેને તાવ આવતો હોય તેને ત્રણ કલાક અગાઉ દર કલાકે એક એક ગોળી ગરમ પાણી સાથે આપવાથી સર્વ પ્રકારના તાવનો તુરતજ નાશ કરે.

"બાળકના પેટની પીડા માટે."

તુલશીના પાનનો રસ ને આદાનો રસ બરોબર લઇ ગરમ કરી બાળકને પાવાથી સર્વ પ્રકારની પેટની પીડા મટે છે આવી રીતે નીત્ય સેવન કરવાથી બાળકના પેટમાં કોઇ જાતનું દર્દ થતું નથી.

"બાળકનું પેટ ફુલે તે ઉપર."

બાળકને દસ્ત સાફ ન આવતો હોય અને પેટ ફુલતુ હોયતો એક તોલો તુલશીનો રસ ગરમ કરી ટશીકો ટશીકો પાવાથી દસ્ત સાફ થઇ પેટ ફુલતુ મટી જાય છે. આ ઊપાય અમારો ખાસ અનુભવેલો છે.

માથાની પીડા માટે.

તુલશીનાં પાન છાંયે સુકવી માથું દુખે ત્યારે તેનો નાશ લેવાથી આરામ જરૂર થાય છે.

"ધાતુક્ષીણતા માટે."

કોઇ પુરૂષને પેશાબ પહેલા અથવા પછી ધાતુ જતી હોય તો તુલશીનાં પાન છ માસા તથા દુધનો રસ છ માસા સાત દીવસ પર્યંત પીવાથી જરૂર આરામ થાય છે. આ પ્રયોગ મારા મીત્ર માટે ખાસ અનુભવેલો છે.

"ટાઢીયા તાવનો ઊપાય."

શુંઠને તુલશીના રસમાં ઘસી કપાળે ચોપડવી માથે ઓઢી સુઇ જવુ જેથી પરસેવો વળી તાવ ઉતરી જાય છે.

"વિષમજવરનો ઊપાય."

એક દોકડા ભાર તુલશીના પાનનો રસ દોકડા ભાર મધ સાથે મરીની ભુકી નાંખી પીવાથી વિષમજવર નાશ થાય છે.

ફુદીનો તથા તુલશીનો ક્વાથ કરી પીવાથી શરૂઓ તાવ ઉતરે છે.

"રતાંધળાપણાની દવા"

કાળાં મરીની ઉપલી છાલ કાઢી નાંખી તુલશીના પાંદડાનો રસ મેળવી રતી બાર ગોળી બનાવવી, તેને મધમાં ઘસી સાંજે અંજન કરે તો બે દીવસમાં રતાંધળાપણું જતું રહે છે.

"બાળકના ટાઢીયા તાવ ઉપર."

કાળી તુળશીનાં ચાર પાન, બાવળનાં ચાર પાન અને અજમો એક માસો, બધાંને ઉકાળો કરી ઠંડુ થયે તાવ ચઢતાં પહેલા પીવાથી બાળકનો તાવ જાય છે.

પ્રિય બંધુઓ, તુલશી એક વનસ્પતી હોવા છતાં એક દેવી જેવો ચમત્કાર હોવાથી તેને તુલશી દેવીની ઉપમા આપવામા આવી છે જેથી હમે હવે ભારતીય બંન્ધુ જનોને પ્રાર્થના કરીયે છિયે કે તમે ઘોર નિંદ્રાનો ત્યાગ કરી ધ્યાન પુર્વક આ મહાન સંજીવક અને પવિત્ર તુલશીનો પ્રચાર પ્રત્યેક ઘરમાં કરવાનો પ્રયત્ન કરો અને તેના ગુણોનું પણ ફરી સંશોધન કરો. તુલશીના અદ્ભુત ગુણો જોઈનેજ આપણા પૂર્વજોએ તેને ઉત્તમ સ્થાન આપ્યું છે કેમકે તે શરીરને આરોગ્યતા આપે છે અને આરોગ્યથી સર્વ પ્રકારના ધર્મનું પાલન થાય છે.

સુંબાઈ—શ્રાવિકાશ્રમમાં શ્રાવિકાઓ નિત્ય પુજન પાઠ, સામાયિક વગેરે કરતી હતી. પં. દરબારીલાલજીનો વિદ્વતા પૂર્ણ ઉપદેશ થતો હતો. બે બહેને ત્રણ ત્રણ ઉપવાસ કરેલા. પારણાને દિન બ. કંકુબહેને સર્વેને જમણ આપ્યું હતું.

पर्युषण पर्व.

સોજીત્રા—માં બ. સુરેંદ્રકીર્તિજીએ સ્વાસ્થ્ય લાભની ખુશીમાં રૂ૫૦) ખરચી શાંતિનાથને દેહેરે દરવાજો બનાવી આપ્યો છે. અત્રેના શ્રાવિકાશ્રમનો પાંચમો વાર્ષિક મેળાવડો ભાદરવા સુદ ૧૧ ને દિને હરીલાલ કલ્યાણદાસના પ્રમુખપણા નીચે થયો હતો જેમાં પ્રથમ શ્રાવિકાઓના સરસ્વતિ પૂજન ને મંગલાચરણ પછી મંત્રી ત્રીભોવનદાસ મોતીલાલે ગત વર્ષનો રિપોર્ટ વાંચી સંભળાવ્યો હતો જેથી જણાય છે કે આશ્રમ પ્રગતિ પર આવતું જાય છે. રસોડે જમનારની સંખ્યા ૧૪ સુધી થઈ હતી. મેનાબ્હેનના પ્રયત્નથી રૂ૨૦૦) મદદ મળી તથા સ્થાવર મિલ્કત વગેરેમાં ખોટ આશરે ૪૦૦) ની મદદ મળી હતી ! નાની બ્હેન કુમાર પગારે ઉત્તમ સેવા આપી રહ્યા છે ને ૧૦૧) એક પણ આપ્યા છે. મેનાબ્હેનના પ્રયાણથી ગુજરાતની સ્ત્રીઓમાં અનેક સુધારા થયા છે. રિપોર્ટ પછી વકીલ રતનલાલ મગનલાલ, આશાલાલ, શંકરલાલ, શેઠ ભગવાનદાસ અમરદાસ તથા પ્રમુખના આશ્રમની પ્રગતિ સંબંધી વિવેચનો થયાં હતાં. છેવટે અધ્યાપિકા પ્રભાવતી બ્હેને પોતાના પગારમાંથી આર્થિક મદદ આપવા ઇચ્છા દર્શાવી જે સાભાર સ્વીકારાઇ હતી અને પ્રમુખ તરફથી ગઇ મની પ્રભાવના થઇ મેળાવડો વિસર્જન થયો હતો.

વડોદરા—બંને મંદિરોમાં શાસ્ત્ર સભા થતી તેમ વદ ૧-૨, બંને મંદિરોના વરઘોડા નિકળ્યા હતા. સર્વે સ્વદેશી વસ્ત્ર પહેરતા હતા ને વરઘોડામાં દેશી બેન્ડવાજ કામ ચલાવ્યું હતું. બે બહિનોએ ૫-૫ ઉપવાસ કરેલા ને ત્રણે ૩-૩ ઉપવાસ કર્યા હતા. અનાથાલય માટે તાર કરવામાં આવ્યો.

ચાંદખેડા—અત્રે પં. દીપચંદજી વર્ણીના પધારવાથી રાત્રે દાંડીઆ રમવાનું ને ગંધકુટી કાઢવાનું બંધ થયું. તથા ઘણા ભાઇ બહેનોએ સ્વાધ્યાય વગેરેનો નિયમ લીધો.

સોજીત્રા—શ્રાવિકાશ્રમમાં આ વર્ષે પ્રતિમા લાવી નિત્ય પૂજન ભજન શાસ્ત્ર સભા ગાનતાનથી થતા. સર્વે શ્રાવિકાઓ સવારે પાંચથી રાત્રે ૧૦ સુધી ધર્મ ધ્યાનમાંજ સમય વિતાવતી હતી. બ. સુરેંદ્રકીર્તિજી સરસ્વતિ ભુવનમાં શાસ્ત્ર વાંચતા હતા. ચંચળબ્હેને ૭ ને મણીબ્હેને ૬ ઉપવાસ કરેલા તથા બે જણે ૫-૫ ઉપવાસ કર્યા હતા. બે વ્રત ઉદ્યાપન પણ થયાં હતાં. જલયાત્રા પણ નીકળી હતી. નાની બ્હેને ત્રણ ઉપવાસ કરી આશ્રમમાં જમણ આપ્યું ને ખાદી વેંચી હતી.

વિજયનગર—રક્ષાબંધન પર્વમાં ૧૩) ધનામ ફંડમાં મળ્યા. કરમચંદનાથજીએ ચોવીસ જિન પૂજા કરાવી ૫૦) દાન કર્યું. અપેચંદે રવિવાર વ્રત ઉદ્યાપન કરી ૨૦) દાન કર્યું. નિત્ય શાસ્ત્ર સભા થતી. જલયાત્રા પણ નીકળી હતી.

પાડર—સામાયિક પ્રતિક્રમણ પં. ભુપેંદ્રકુમાર કરાવતા હતા ને શાસ્ત્ર પણ વાંચતા હતા. ત્રણ જાહેર સભા થઇ હતી. જેમાં મણીલાલ, મોહનલાલ, સોમચંદ, ચીમનલાલ, નગીનલાલ વગેરેએ ધાર્મિક વિવેચનો કર્યાં હતાં. પાઠશાળાનું કાર્ય અલ્પ વેતનમાં પં. ભુપેંદ્રકુમાર સારી રીતે કરે છે તે માટે તેમનો આભાર મનાયો હતો.

ભાવનગર—પૂજા વ્રત વિધાન શાસ્ત્ર વગેરે સારી રીતે થયાં હતાં.

તલોદ—નિત્ય પૂજન ને શાસ્ત્રસભા થતાં. ૭ ભાઇયોએ દશલક્ષણ વ્રત કરેલું. ધર્મ પ્રભાવના સારી થઇ હતી.

લાકરોડા—અનેક વ્રત થયા જલયાત્રા પણ નિકળી હતી.

ઓરાણ—૬૦-૭૦ જણે વ્રતો કરેલાં. કુસંપને લીધે જલયાત્રા બંધ રહી હતી.

ખાટનાસુવાડા—ગાંધી મોતીચંદના પત્નીએ ૧૦ ઉપવાસ કર્યા હતા ને ચાર છોકરાંએ ૧૦-૧૦ ઉપવાસ કરેલા. ઉદ્યાપન વૈદ્ય કેશવલાલે કરાવ્યું હતું. જલયાત્રામાં ૨૦૦૦ ની મેદની હતી, મંદિરમાં ૪૦૦) ઉપજ થઇ. ઉપવાસ કરનાર બાઇએ ૧૫) પ્રાંતિજ બોર્ડિંગને તથા ૩૬) સંસ્થાઓને દાન કર્યું.

કલોલ—યુવક મંડળ ને સેવાદળની સ્થાપના થઇ જેમણે વિદેશી ખાંડ ને કપડાં ન લેવાનો ને હોટલની ચા કોફી ન પીવાનો નિયમ લીધો. મંડળના ૭૦ સભાસદ છે. સર્વેએ જલયાત્રામાં ખાદીજ પહેરેલી તથા વિદેશી બેન્ડ પણ નહીં લાવેલા. આગળ રાષ્ટ્રીય વાવટો લઇ ચાલતા હતા. પૂજા પછી રાષ્ટ્રીય ગીતો પણ ગવાતા. વિલાયતી ભ્રષ્ટ ખાંડના પતાસાં ન વેંચી શ્રીફળની પ્રભાવના થઇ હતી.

પાલીના—બે ભાઇએ ૧૦-૧૦ ને ત્રણે ૫-૫ ઉપવાસ કર્યા હતા. એક દરજીએ પણ પાંચ ઉપવાસ કરેલા. પૂજન ને શાસ્ત્ર સભા નિત્ય થતાં. અત્રે નિર્માલ્ય દ્રવ્ય વેચીને તે પૈસા મંદિરના કામમાં લે છે તે અયોગ્ય છે. મુંગા પૂજારીને ન રાખવો જોઇએ પણ હાથેથીજ વારાફરતી પ્રક્ષાલ કરવી જોઇએ.

ઉંઝેડિયા—અનેક વ્રત ઉપવાસ કર્યા હતા. બૃ. પંચકલ્યાણક વિધાન થયું હતું. પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓના આકર્ષક ભજન થતાં હતા.

દાહોદ—પં. દીપચંદજી વર્ણીના હોવાથી ધર્મ લાભનો અનેરો અવસર પ્રાપ્ત થયો હતો. જૈન તરના ભાઇયોએ વિના વિરોધ ભાગ કાર્યમાં સામેલ થયા. સર્વે સ્વદેશી વસ્ત્ર પહેરતા તથા કેટલા [illegible] પણ લીધા.

[illegible] પૂજન પ્રભાવના [illegible] થયાં હતાં. પં. પરમેષ્ઠીદાસજી [illegible] વાંચતા હતા. સર્વે સ્વદેશી વસ્ત્ર [illegible] આવેલ. પર્વ-પછી થતાં જમણો રદ્દ [illegible] રાખ્યાં ને ચોપડાના [illegible] વોલંટિયર કોરને ભેટ [illegible] સબ્ય કરી તાર કર્યો. ચાર [illegible] તીર્થરક્ષા ફંડમાં આશરે ૧૫૦) ભરાય.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला—सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।

ॐ

सम्पादकः—मूलचन्द किसनदास कापड़िया-सूरत।

वर्ष २३वां
अङ्क १२

वीर सं० २४५६
आश्विन.

विषयानुक्रमणिका.

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २) विशेषांक मूल्य ॥)

આવશ્યકતા—લાકરોડા (મહીકાંઠા) ની દિ. જૈન પાઠશાળા માટે અધ્યાપક જોઈએ છે. પગાર ૩૦) માસિક સુધી. મંત્રીને સરનામે લખો.

ભ. રત્નકીર્તિના વીલ સંબંધી—એક ભાઈ લખે છે કે પાંચ વર્ષ પર ભ. રત્નકીર્તિજીના અવસાન સમયે વીલમાં ૧૦૦૦) પ્રવચનસાર ને પરમાત્મા પ્રકાશ ગ્રન્થ છપાવીને ગુજરાતમાં ભેટ વેચવાની વાત બહાર આવી હતી તો હજુ એ કાર્ય કેમ થતું નથી? એ વીલના એક ટ્રસ્ટી ધણું કરી શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરી હતા તો આપ એ બાબત પર ખુલાસો કરશો કે!

ખાસ અંક માટે—ગુજરાતના જે જે ભાઈઓ કવિતાઓ, લેખો વગેરે મોકલવા ઇચ્છતા હોય તે ૮ દિવસમાં અવશ્ય મોકલી આપે. તથા ગુજરાતમાંથી રાષ્ટ્રીય યુદ્ધમાં જેલ જનારા ભાઈયોના ફોટા અને પરિચય પણ પ્રાપ્ત કરી મોકલવા વિનંતિ છે.

સાથમા—માં એક વર્ષ થયાં પાઠશાળા સ્થાપન થઈ છે. હાલમાં વાર્ષિક પરીક્ષા ડૉ. બાઈલાલ કપુરચંદ શાહે લીધી હતી. પરિણામ સંતોષકારક છે. ૧૩ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે.

कुड़चीका भीषण हत्याकांड (ता० १२ जून २९)

तोड़ डाली गई मूर्तियोंका हृदयविदारक दृश्य

॥ श्रीवीतरागायनमः ।

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम ॥

वर्ष २३वाँ | वीर सम्वत् २४५६, आश्विन, विक्रम सम्वत् १९८६. | अङ्क १२.

दीप जला भक्ती करना ।

सुन्दर घृतमय दीपक लेकर पावन दिवस मनानेको ।
आई है अति प्रेमपूर्णसे नूतन वर्ष बतानेको ॥
मोक्ष दिवस है वीर प्रभूका इसकी याद दिलानेको ।
धर्म अहिंसामय सब पालो जैनधर्म दिखलानेको ॥

पवनप्रवाहोंसे क्यों बुझती मन्दज्योति क्यों दिखती है ?
इसका कारण यही विज्ञवर पापकर्मसे डरती है ॥
पूज्य पर्वमें जुवा खेलना कैसे संभव होता है ।
तांबे चांदी आदि पूजना जैन धर्म क्या कहता है ॥

रजत आदिके अर्चनसे भोः, क्या होगा कल्याण भला ।
उल्टा नर्कमार्ग होवैगा इससे छोड़ो सभी बला ॥
महावीर अति वीर धीरकी पूजा सब चितसे करना ।
जिससे हो कल्याण सभीका धर्म अहिंसायें रहना ॥

संवत चौविससै छप्पन तज सत्तावन होगा आरंभ ।
वीर प्रभूकी महा कृपासे सबको होवै सुख औशंभ ॥
कार्तिक कृष्ण अमावस्याको महावीरका शिववरना ।
नहि हैं घर माणिक्य परन्तु दीप जला भक्ती करना ॥

दयाचन्द्र जैन वि० विद्यालय—सागर ।

सम्पादकीय-वक्तव्य

दीपावली पर्व।

तमाम भारतीय पर्वोंमें दीपावली पर्व बड़े महत्वका है। और खास कर जैनियोंका तो यह परमपावन पर्व है, कारण कि इस दिन अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी मोक्ष पधारे थे। ऐसे पवित्र पर्वको पवित्रतापूर्वक ही मनाना अपना कर्तव्य है। हमेशाके अनुसार प्रातःकालमें निर्वाणकांड पढ़कर निर्वाणलाडू चढ़ाना, भगवान महावीर स्वामीकी पूजा करना, लोगोंको महावीरचरित्र सुनाना, धर्मप्रभावना करना, दीपकोंका प्रकाश करना इत्यादि कार्य तो लोग करेंगे ही, मगर देशकालकी परिस्थितिका विचार करके जो प्रवृत्ति करता है वही बुद्धिमान है। इसलिये धार्मिक क्रियायें जो थीं वह करना चाहिये, लेकिन आजकी हालतको देखकर बाह्य ढंगमें अवश्य कमी करना पड़ेगी। धार्मिक क्रियाओंमें भी अपनी समाजने कुछ मिथ्यात्वको स्थान दे रखा है। अब अन्ध श्रद्धाका जमाना नहीं है। इसलिये तमाम मिथ्या क्रियाओंका परित्याग करना चाहिये।

हम जो कुछ करते हैं, उसके उद्देश्यको समझना चाहिये, निरुद्देश्य कार्यको आंख बंद करके करते चले जाना अविवेक और मूढ़ता है। समाजके शिक्षित होजानेपर भी लक्ष्मी (रुपयापैसा) पूजन करना, पुतलपुतलियोंको पूजना जुआ आदि महा व्यसनोंमें सम्मिलित होना आदि कार्य जैन समाजके लिये लज्जाकी बात है। इन तमाम खोटी प्रवृत्तियोंको छोड़कर यह पर्व बड़ी ही पवित्रताके साथ मनाना चाहिये। जैन धर्ममें मूढ़ताको किंचित मात्र भी स्थान नहीं है, अगर कोई कुरूढ़िको पकड़े हुये अविवेकसे काम करता है तो वह जैनत्वका खोटा अभिमान करता है, ऐसा समझना चाहिये। इसलिये अपने तमाम आचरविचार सच्चे, आदर्श, विवेकपूर्ण और सभ्यतामय होने चाहिये। किसी भी समाजका अन्तरंग बाह्य चरणोंसे ही देखा जासकता है। इसलिये आप हम दीपावली जैसे पावन पर्वमें किसी प्रकारकी मूढ़ प्रवृत्तियोंका प्रदर्शन न करें।

* * *

अपव्यय।

दीपावली पर्वमें अनेक प्रकारसे इतना अपव्यय किया जाता है कि जो देशके लिये असह्य है। जहां खूब धन संपत्ति हो, देश और समाज सुखी हो, अपने भाइयोंकी अवस्था सुखमय हो, वहांपर अगर आनन्द विनोदके नामपर सभ्यतापूर्वक व्यय किया जावे तो किसी प्रकार ठीक भी है मगर जब अपना देश दुखी है, सर्वत्र त्राहि त्राहि मची है, देशके हजारों बाल और सैकड़ों वीरांगनायें कारावासमें पड़ी हैं, करोड़ों देशबंधु अधपेट रहकर दिन गुजारते हैं तब यदि कोई स्वार्थी हृदयहीन धनिक धनके मदमें मस्त होकर गुलछर्रे उड़ावें तो यह कितनी लज्जाकी बात है?

जैनसिद्धान्त तो "सत्वेषु मैत्रीं" का पाठ पढ़ाता है। इसलिये प्राणीमात्र अपना मित्र है। उसमें भी मनुष्य और फिर भी भारतीय तो और भी घनिष्ट मित्र कहलाये।

तब हम उनके दुःख सुखकी चिन्ता न करके अकेले मजा उड़ावें, यह कैसी मित्रता है? जिसमें तनिक भी विचारशक्ति है वह अपने मित्रको कभी भी दुखी नहीं देख सकता है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि अब पर्व और त्यौहारोंके नामपर अपव्यय न करके बचे हुये द्रव्यसे अपने देशबंधुओंकी सहायता करें।

दिवालीके समय झकमक झकमकमें हजारों रुपया खर्च किये जाते हैं, करोड़ों रुपयाके फटाकोंमें आग लगाकर व्यर्थका धुंआ उड़ाया जाता है, नाच गान और मौजमजामें द्रव्य बहाया जाता है और जुआरी मदकची व्यसनी लोगोंको रुपया पैसा देकर म हुआरी बतलाई जाती है, यह सब कार्य अनुचित हैं। ऐसे अपव्ययसे पापका उपार्जन तो होता ही है मगर देशकी छातीपर ताण्डवनृत्य करके उसे और भी कठिन बंधनोंमें बांधा जाता है; इसलिये हम जैन समाजके श्रीमानोंसे अपील करते हैं कि आप अब इन तमाम खराब खर्चोंको निकालकर पवित्रतापूर्वक पर्व मनानेका निश्चय कर लें।

यदि सच पूछा जावे तो देशमें गमी या मातमके समय खुशियां नहीं मनाई जाती हैं। आज देशमें मातम अथवा गमी आपको क्या नजर नहीं आती है? हमारो नवयुवक लाठियोंके प्रहारसे घायल होकर कांग्रेस होस्पिटल और दवाखानोंमें पड़े हुये हैं, कितनेही तो प्राण विसर्जन कर देशके लिये बलिदान हो गये हैं और अनेकों भाई नाना प्रकार से दुखी हो रहे हैं। ऐसी विकट परिस्थितिमें त्योहार नहीं मनाये जा सकते, दीपक और बिजलीके प्रकाशमें आनन्दोत्सव नहीं किये जा सकते। तथा विविध व्यञ्जन खाकर मौज नहीं उड़ा सकते। इस समय तो मात्र धार्मिक क्रियाओंको पूरा करके देशके लिये कुछ त्याग करिये, भारतके बंधन तोड़नेमें सहायता करिये और अपने देशबंधुओंकी हरप्रकारसे मदद करिये। यही विवेक और बुद्धिका फल है। "क्षेमं सर्वप्रजानां" की भव्य भावनाको माननेवाली जैन समाज इस समय मौज शौकसे मुंह मोड़कर देश सेवामें हाथ बटावेगी, ऐसी हमें आशा है।

***

हम देखते हैं कि भारतवर्षमें अनेक संवत प्रचलित हैं। ईस्वी सन्

वीर संवत न भूलिये। लिखा जाता है, शक और विक्रम संवतका प्रचार है, पारसी और मुसलमान अपने २ संवत लिखते हैं, यहां तक कि आर्यसमाजी भी दयानंद संवत लिखने लगे हैं। यह सब देखते हुये भी जैनसमाज अपना सबसे प्राचीन वीर संवत न लिखे यह खेद की बात है। हम अनेक वर्षोंसे जैन समाजका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं। मगर जितनी सफलता होना चाहिये उतनी नहीं हो सकी है। हम तो कहते हैं कि प्रत्येक जैन अपने खतेबही, चिट्ठी पत्री और हरजगह वीर संवत लिखना प्रारंभ कर दे। वीर संवत के बिना कोई भी खाता बही, हिसाब किताब या पत्रव्यवहार होना ही नहीं चाहिये।

दीपावलीके पश्चात नूतनवर्षका प्रारम्भ होता है। इसी शुभ दिनको अपने अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी मोक्ष पधारे थे। भगवानको मोक्ष गये २४५६ वर्ष समाप्त होगये हैं। इस दीपावलीके बाद अब वीर संवत २४५७ प्रारंभ होगा। यह संवत सबको लिखना प्रारम्भ कर देना चाहिये। वीर संवत लिखनेमें अनेक लाभ हैं। प्रथम तो यह कि बही खाता या पत्रादि लिखनेके प्रारम्भमें मंगलाचरण रूप "वीर" का शुभ नाम लिखा जावेगा। दूसरे भगवान महावीर स्वामीका यह एक स्मारक स्वरूप रहेगा। इससे जैन अजैन और बालक वृद्ध सभीको मालूम हो सकेगा कि वीर भगवानको मोक्ष पधारे इतने वर्ष होगये हैं। इत्यादि अनेक लाभ हैं।

इसलिये प्रत्येक जैनका कर्तव्य है कि चाहे आप जैनसे व्यवहार करें या अजैनसे, मगर वीर संवत अवश्य लिखें। विचारणीय बात तो यह है कि जब अपन ईस्वीसन् और विक्रम संवत लिखते हैं तब वीर संवत क्यों नहीं लिखना चाहिये? ऐतिहासिक दृष्टिसे संवतका लिखा जाना बड़े महत्वका कार्य है। प्रचलित संवतोंमें वीर संवत ही सबसे प्राचीन है। इसका बराबर प्रचार होना आवश्यक है। अगर आप दूसरोंको पत्रादि लिखते समय वीर संवत लिखेंगे तो दूसरे भी आपको लिखने लग जावेंगे। क्या हम आशा करें कि आप इस दीपावलीके नये खातेबहियोंसे ही वीर संवत लिखना प्रारम्भ कर देंगे?

***

अन्तिम निवेदन। इस वर्षका यह अंतिम अंक है अर्थात् "दिगम्बर जैन" का यह २३ वें वर्षका १२ वां (अन्तिम) अंक है। इस वर्षमें 'दिगम्बर जैन' ने सचित्र विशेषांक, उपहारी नवीन ग्रन्थ तथा उपयोगी लेखों द्वारा जैनसमाजकी कैसी सेवा की है यह पाठकोंसे छिपा नहीं है। चालू वर्षमें हिन्दुस्तानभरमें नवीन चेतन आगया है और जैनधर्मके अहिंसा सिद्धान्तके बलपर महात्मा गांधीजीने राष्ट्रीय सत्याग्रह संग्राम चालू कर दिया है, जो सर्वव्यापी होकर सारी दुनियांकी दृष्टि हिन्दुस्तान पर आकर्षित कर रहा है। क्योंकि ऐसा निःशस्त्र युद्ध दुनियांमें प्रथम ही है जिसमें हमारा अहिंसाका सिद्धान्त जिसकी कई लोग हंसी करते थे वही काम आरहा है। हर्ष है कि जैन वीर भी इसमें पीछे नहीं रहे हैं। अर्थात् दिगम्बर जैनसमाजमेंसे भी अनेक भाई जेल जाचुके हैं व अनेक भाई राष्ट्रीय संग्राममें अग्र भाग लेरहे हैं। आशा है कि इस प्रकार दिगम्बर जैनसमाज देशसेवाके कार्यमें अग्रगण्य रहेगी। तथा हमारे पाठकोंसे यह भी निवेदन करेंगे कि आप नवीन वर्षके लिये एक२ नया ग्राहक बनादें जिससे हम भी दिगम्बर जैनद्वारा आपकी विशेष सेवाकर सकें।

***

विशेषांक। गत १८ वर्षोंकी भांति आगामी नूतनवर्षके प्रारम्भमें ही हमने "दिगंबर जैन" का सचित्र विशेषांक निकालनेका निश्चय किया है। इसलिये विद्वान् लेखकोंसे

प्रेरणा करेंगे कि आप हिन्दी, गुजराती, संस्कृत व अंग्रेजी भाषाके उपयोगी लेख व कवितायें आगामी विशेषांकके लिये ८ दिनके भीतर अवश्य२ भेजिये। इस बार राष्ट्रीय ऐसे लेख जिसका संबंध जैनधर्मसे घटाया गया हो वे भी लिये जायंगे तथा वर्तमान राष्ट्रीय युद्धमें जेल जानेवाले दिगंबर जैन भाइयोंके चित्र व परिचय भी प्रकट करनेका हमारा इरादा है। इसलिये हरएक स्थानके भाई अपने यहांसे जेल जानेवाले दि० जैन भाइयों व बहिनोंके चित्र व संक्षिप्त परिचय प्राप्त करके हमें अवश्य२ भेजें।

***

उपहार ग्रन्थ। इस वर्षमें नवरत्न व हिन्दी जैन विवाह विधि दो छोटे२ ग्रन्थ उपहारमें दिये गये थे परन्तु आगामी २१ वें वर्षमें आध्यात्मिक सोपान और ऐतिहासिक जैन स्त्रियां ऐसे दो बड़े२ ग्रंथ उपहारमें दिये जानेका प्रबंध होरहा है। इन दो ग्रंथोंसे ही वार्षिक मूल्य वसूल हो जायगा अर्थात् वर्षके १२ अंक मुफ्तमें ही मिल जायगे। इसलिये नवीन ग्राहक होनेवाले शीघ्रता करें। नूतन वर्षसे ही ग्राहक बनाये जाते हैं।

***

तिथिदर्पण। आगामी विशेषांक प्रकट होनेमें कुछ विलंब अवश्य होगा और यदि उसके साथ हम तिथिदर्पण बांटे तो सबको तिथि देखनेमें बाधा पड़े, इसलिये इस अंकके साथ ही वीर सं० २४५७का जैन तिथिदर्पण बांटा गया है। यह हरएक पाठक सम्हाल के व गत्तेपर लगाकर संग्रहीत रखें। अबकी बार इसमें स्वर्गीय जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबहिन (सुपुत्री स्वर्ग० दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचन्दजी) जे० पी०का चित्र रखा गया है। आपका इसी वर्षमें असह्य वियोग होगया है और आप जैसी महान विदुषी व परोपकारी बहिनके सौ समाजसेवाके अपूर्व कार्य आपका चित्र देखकर हमारे पाठकोंको नित्य स्मरणमें रहें इसलिये तिथिदर्पणमें यह चित्र उपयुक्त ही होगा।

सहारनपुरमें—सौ० भगवतीदेवीने सुगंधदशमीके उद्यापनमें २०२) का दान मंदिर व संस्थाओंको किया था।

कानपुरमें—श्री० नवलबालमल जैनका ८० वर्षकी आयुमें स्वर्गवास हो गया। २११) दान किया गया। आप बड़े धर्मात्मा थे।

अल्प मूल्यमें अनेकांत—अनेकांत पत्र देहलीको ११४) की सहायता प्रचारार्थ मिली है इसलिये ६१ नये ग्राहकोंको २) वार्षिक मूल्यमें दिया जाता है। मगानेवाले करोलबाग देहलीसे शीघ्र ही पत्र लिखकर मगालें।

बम्बईमें—श्वे० जैन शेठ वीरचंद पानाचंद शाह संग्राम समितिके सेनापति नियुक्त हुए थे। आपने ८ दिनमें खूब काम किया व खूब सत्कार प्राप्त किया। इतनेमें आपको सरकारने पकड़ लिये व ४ मासकी सख्त कैद की है।

कराहलमें—दानवीर वयोवृद्ध ला० फूलभारीलालजी जैन रईसका स्वर्गवास होगया। ९०१) अंतसमय दान किया गया था।

नासिक जेलसे सरैयाजीके पत्र—हमारे परममित्र व राष्ट्रीय महान कार्यकर्ता श्री० छगनलाल सरैया जैनीके दो पत्र हमें नासिक जेलसे मिले हैं, जिनमें आप लिखते हैं कि मेरा भतीजा साकेरचंद १९ वर्षकी आयुमें ही जेलका महिमान बना है इसलिये मुझे परमहर्ष हुआ है। देश अब सत्यकी कसौटीपर चढ़ा है। जैनधर्म भी तो यही कहता है कि ज्यों२ अत्याचार और उपसर्ग सहे जाते हैं त्यों२ कर्मबंधन टूटते जाते हैं। इसी तरह अब देशके बंधन टूटनेकी भी यह तैयारियां हैं। आपकी भगवान महावीर व महात्मा बुद्ध नामक पुस्तक खूब बांची व बंचाई है। इससे आश्रमवाले केशवलाल व अन्य विद्वानोंने स्वीकार किया है कि दि० जैन धर्म पुरातन है। हम खूब स्वाध्याय करते हैं व दूसरोंको भी सुनाते हैं। आपकी भेजी हुई पुस्तकें मिल गईं। असहमत संगम, भगवान महावीर, भ० महावीर व बुद्ध इन ग्रन्थोंका गुजराती अनुवाद होना आवश्यक है। दि० जैन धर्मकी प्राचीनता और उसके महत्वके विषयमें यहां ४—९ विद्वानोंमें श्रद्धापूर्वक भावना उत्पन्न हुई है। महात्माजीके १२ वर्षके साथी मशरूवालाने आजकी हलचलको जैन दर्शनकी अटूट छायारूप वर्णन किया है। भगवान महावीरकी तीर्थंकर प्रवृत्तिका परिज्ञान कर आपने खूब प्रशंसा की है। इन ग्रंथोंके पठनमें मेरे साथियोंका अच्छा मन लगता है। मैं सकुशल हूं, आदि।

फोटो व परिचयकी आवश्यक्ता।

राष्ट्रीय सत्याग्रह संग्राममें आज तक जेलवासी करीब ७० दि० जैन भाइयोंके नाम मिले हैं, वे इस प्रकार हैं—

श्यामलाल वकील, रामशरण व लछमनदासजी रोहतक, छोटालाल गांधी अंकलेश्वर, शिवलाल महेता सोलापुर, छगनलाल सरैया सूरत, अयोध्याप्रसाद देहली, रतनलाल वकील बिजनौर, माणिकचंद शाह सोलापुर, सौभाग्यचंद देहली, सोमचंद व गिरधरलाल नृ० बम्बई, नेमीशरण वकील बिजनौर, म० भगवानदीन जबलपुर, चंदुलाल बखारिया बम्बई, जगदीशराम हिसार, रामचंद्र सिंहल रोहतक, पदमराज रानीवाले कलकत्ता, हरप्रसिंहजी व सुखदेवसिंहजी रोहतक, इंदुमती पुत्री पदमराज रानीवाले, पं० मथुराप्रसादजी ललितपुर, हुकमचंदजी व कुंदनलाल कटनी, जैनेंद्रकुमार, नन्हेंमल, मदनलाल, वैद्य दामोदरदास, दौलतराम व मोहनलाल देहली; विश्वंभरदास, बद्रीचंद्रजी झांसी, कवराभाइ दाहोद, अजितप्रसाद पं० सुमनलालजी सहारनपुर, रतनलाल अमरावती, मुन्नीलाल रावलपिंडी, भवेरीलाल व कस्तूरचंद दाहोद, संतलाल मैनपुरी, मंगलजी अमरावती, तनसुखराम, रामकिशनदास व भगतसुख रोहतक, दीपचंदजी बैतूल, नेमीचंदजी खेड़ा, केशरीमल व लखमीचंद गोंदिया, चेतराम कटंगी, नन्हेंलाल बांदा, तिलोकचंद कालका, साकेरचन्द सरैया सूरत, रघुवीरप्रसाद समोह, दुलीचन्दजी चौरई, बुद्धसेन व चांदवि-

हारीलाल अमरोहा, हुकामचन्द रायपुर, नाथूमल सहारनपुर, रामशरणदास व सुखदेवसिंह रोहतक, सिंघई पन्नालालजी अमरावती, सुमतिप्रसाद, मित्रसेन, उग्रसेन व बाबूराम मुजफ्फरनगर, सुमतिप्रसाद व सुमेरचन्द नगावरी, कामताप्रसाद बडौत व गांधवेलालजी कायमगंज, झूमनलालजी सहारनपुरके पुत्र, तुलसीराम रोहतक, जीवनलाल नयापुरा आदि।

इनके अतिरिक्त और भी कई दिगम्बर जैन इस राष्ट्रसंग्राममें जेल गये हैं, उन सबके फोटो व परिचय दिगम्बर जैनके आगामी सचित्र विशेषांकमें प्रकट करनेका हमारा इरादा है। इसलिये जहां२के भाई जेल गये हैं वहांके भाई उन जेलवासी बंधु व बहिनोंके फोटो व परिचय ढूढकर हमारे पास भिजवानेका अवश्य कष्ट उठावें। आशा है कि दिगंबर जैनके पाठक इतना कष्ट तो अवश्य उठावेंगे। सम्पादक।

हिन्दुस्थानी सेवादल—के स्थायी मंत्री अभी श्रवण पासोवा जैन वाले नियुक्त हुए हैं।

पौत्रजन्ममें बृ० दान—सेठ गेंदालाल सुगनमल जैन इन्दौरने पौत्रजन्मकी खुशीमें ६९६) का अनुकरणीय बृहत दान मंदिरों, जैन संस्थाओं व औषधालयों आदिको दिया है।

अयोध्याजी जीर्णोद्धार फंड—में लीलाधर प्रचारक मारफत ४६६।।) इटौंके पास हुए हैं।

जैन एसोशियेशन म्हेसूर—का ९वां अधिवेशन ता० ३ अक्टूबरको होगया।

बयाना जैन रथयात्रा—का झगड़ा फिर चालू है। फैसलेकी तारीख २७ अक्टूबर है।

जयपुर—में आश्विन सुदी १० को जैन रथयात्रा हुई थी।

कुशलगढ़—में वैमनस्य मिटकर आपसी मेल होगया।

मल्लीनाथ विद्यालय—शिरड शहापुरमें विजयादशमीको मर्दानी खेल हुए थे। यहांकी मनमंडली मफाखर्चपर कहीं भी जाती है।

शिमला—में अनंतचतुर्दशीको विशाल आम सभा जगतप्रसादजी एम० ए० एकाउन्टेंट जनरल पोस्ट व टेलीग्राफके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें भगवान महावीर व वीरताके विषयमें कई व्याख्यान दिये गये थे व जैन सभाकी वार्षिक रिपोर्ट भी सुनाई गई थी। सेठ प्रद्युम्नकुमारजी सहारनपुर भी उपस्थित थे। यहां जैन धर्मशालाकी आवश्यकता है। नीव रखी जाचुकी है।

कारंजाके—महावीर ब्रह्मचर्य आश्रममें विजयादशमीको सेठ बालचंद शाह सोलापुरकी अध्यक्षतामें मर्दानगीके आश्चर्यजनक खेल हुए थे। सि० शास्त्री पं० देवकीनंदनजीने प्रभावक भाषण दिया था।

श्वे० जैन कान्फरन्स—की ओरसे बनारस हिंदु युनीवर्सिटीमें जैन चेयर स्थापन करनेको ५१०००) के प्रोमीसरी नोट अर्पण किये गये हैं। क्या दि० जैन भाई भी कुछ करेंगे?।

परिषदकी परीक्षा—ईस बार फर्वरीमें होगी।

ब्र० कुंवर दिग्विजयसिंहजी—तुकिलीबाग ट्रस्ट फंडकी उपदेशकी कार्यसे बरी किये गये हैं अर्थात् अब आप इस फंडके उपदेशक नहीं हैं।

ऋषभ ब्र० आश्रम—मथुराको अगस्त मासमें ९७१॥) की सहायता मिली थी।

परतावगढ़में—राज्यकी ओरसे दशहरा पर होनेवाला बलिदान हमेशाके लिये बंद होगया। बधाई।

इन्दौरमें—अभी स्व० रा० ब० शेठ कस्तूरचंदजीकी धर्मपत्नीका २९ वर्षकी आयुमें स्वर्गवास हो गया था उनका नुकता करनेको लोगोंने बहुत आग्रह किया था तो भी सर शेठ हुकमचंदजी साहब अपने ९० वर्षके प्रस्ताव पर दृढ रहे व नुकता नहीं किया गया था।

तारणसमाजी—भाईयोंका सेमरखेडीमें आगामी माघ मासमें सेठ खुशालचन्दजी चौरईकी ओरसे भारी मेला भरेगा।

वैद्यक सीखनेको लिये—विद्यार्थियोंकी आवश्यकता है। मकान व पुस्तकें मुफ्त दी जायगी।

बालकिसन जैन वैद्य—सागर।

दान करके न देना घोर अन्याय है—बडवानीमें रामलालजी मालगुजारने ११७००)का दान कई जगहको किया था उसको न देनेके लिये अदालत तककी शरण ली। पंचोंको भी ५००) खर्च करने पड़े जिसमें ११०००) लाठआलाके तो आपसे मिल सके हैं। शेष रकम अभीतक नहीं दी है।

चौरासी (मथुरा)-में श्री जम्बूस्वामीका वार्षिक मेला ता० ९ से १६ अक्टूबर तक धूमधामसे होगा। आचार्य संघ भी वहां विराजमान हैं। प्रथम ब्रह्मचर्याश्रमका अधिवेशन भी होगा। तथा ता० १० व १७को दो जैन रथयात्रा सारे मथुरा शहरमें घूमेगी। मथुरा शहरमें आम जैन रथयात्रा निकलनेका यह प्रथम अवसर है।

भोपालमें—सेठ हीरालाल मन्नूलालकी ओरसे त्रिलोकसार विधान हुआ था तब (१९) दान भी किया गया था।

कंचनबाई श्राविकाश्रम—में गंगाबाई छात्राका देहावसान होगया। आपके जेवरके पास आपके १००) ये वे संस्थाओंको दान कर गई हैं।

श्री पावापुरीजीका मेला।

हमारे अंतीम तीर्थंकर श्री महावीरस्वामीके निर्वाण स्थान श्री पावापुरीजी सिद्धक्षेत्रमें महावीर निर्वाण दिन अर्थात् कार्तिक वदी ०)) ता० २१ अक्टूबरको महावीर निर्वाण उत्सव बड़ी भारी तैयारीके साथ होगा तथा रथयात्रा भी निकलेगी। इसलिये सब भाई इस मौकेपर श्री पावापुरीजीकी यात्राको सकुटुम्ब अवश्य २ पधारें। पश्चिम तथा दक्षिणके भाई E. I. R. रेल्वेके बख्तारपुर स्टेशनसे व पूर्वके भाई नवादा स्टेशनसे गुणावाजीके दर्शन करते हुए आवें।

लक्ष्मीनारायण, मैनेजर, पावापुरी।

महावीरस्वामी।

ले०-पं० पीताम्बरदास परवार-बांसा पथरिया

जय महावीर जिनेश जय आभार मानें आपका,
गौरव धरें वर्णन करें करते प्रकाश प्रतापका।
जगको बनाया था अभय तुमनें मिटाया पाप था,
फैले अहिंसा लोकमें तुमने किया आलाप था॥ १॥
जग जीव स्वागत कर चुके उपकारका आभार था,
आदर्श अनुपम देखकर सबने किया स्वीकार था।
करते विशारद हैं प्रगट वह वीरका दरबार था,
सीखा सदाको पाठ जब त्यागा दुराग्रह वार था॥ २॥
थी शक्ति अनुपम आपकी था पाठ सत्याग्रह लिया,
हिंसक मिटे हिंसा मिटी सुख शांतिको प्रचलित किया।
उपदेश करके आपने जगको बनाया वीर था,
विचरे जगतके जन अभय करमें न कोई तीर था॥ ३॥
जगके मनुज करते विजय उत्तम क्षमा ही शस्त्र था,
मनमें ग्रहण करते सभी समदर्शिता ही अस्त्र था।
कृतकार्य होते वीर वर वे वीर हिंसा पर करें,
लेते न शस्त्र कभी अहो सम्बोध कर धीरज धरें॥ ४॥
जय महावीर अभय धरें जगको सदा निर्भय करें,
मनपर किया करते विजय नरके पशूके दुख हरें।
निकली मधुर ध्वनि थी सुनी आघात करना पाप है,
करते विनाश न दुख लखो कैसा कड़ा सन्ताप है॥ ५॥
थे आप समदर्शी प्रभो! जगको सिखाया आपने,
फैली तभी समदर्शिता थी लोकमतके सामने।
सीखे सभी ये वीर बनना वीर वादी बन चुके,
करते पराजय शान्तिसे तुम विश्वपर जय पाचुके॥ ६॥
प्रतिवाद जग भनने किया उनने बनाया लोकमत,

बोले सभी स्वर एकसे हैं वीरके उपदेश सत।
लिखने लगे साहित्य वे महँवीर पथदर्शक बनें,
स्वाधीनतासे कर सके कल्याण जगके जन घनें ॥ ७ ॥
संकल्प करना पाप है मानव न कर सकते कभी,
लिखने विशारद वेदमें संकल्पको तज दें सभी।
पालन कराया आपने जगको अहिंसाधर्मका,
स्वीकार भारतने किया निर्भय अहिंसा कर्मका ॥ ८ ॥
अतिशय विराग धरे मनुज करते न वे संकल्पको,
अनुराग पूर्वक रागमें आदेश था अल्पज्ञको।
विचरें परस्पर प्रेमसे नर पशु फिरें भूपर अभय,
उपकार करते वे सदा क्योंकर करो उनको सभय ॥ ९ ॥
भारत जननिके पूज्य शिशु थे वीर भारतवर्षमें,
जय महावीर जिनेश थे आभारके आदर्शमें।
भूले जगत जन थे प्रभो हा, हा रंगे थे खूनमें,
हा हा गला घोटें मिले तुमको भरतकी भूममें ॥ १० ॥
निर्भय विमल मनसे प्रभो परिचय कराया आपने,
मनकी मलिनता त्यागकर बैठे सभी थे सामने।
थी तत्त्वमें गंभीरता बनते न वीर अशक्त जन,
लेते न शस्त्र सशक्त थे करने लगे मनका दमन ॥ ११ ॥
अपने वचनबलसे अहो पलटे नियत मन आपने,
हिलता न मेरु शिखर कभी होवे प्रलयके सामने।
हिंसा असत्य कुशीलको तज दें जगतके जन सभी,
चोरी तजें संयम सजें थे वीरके दृढ़ व्रत सभी ॥ १२ ॥
था वीरका व्रत विश्वको निष्पाप करनेका सही,
उनने विरोध नहीं किया उनकी ऋणी भारत मही।
कहने लगे भारत अहो हमको बनाया वीरने,
निष्पाप विचरें विश्वमें था व्रत सिखाया वीरने ॥ १३ ॥
उपकारके उपलक्षमें देते न दुःख सधीर जन,
करते विरोध न वे कभी जो साम्यवाद करें मनन।

श्रृंगी नखी पशु प्रेमसे उपदेशको सुनने लगे,
निर्भय बने बैठे व प्रायश्चित्त कर कहने लगे ॥ १४ ॥
उपकारके बदले हमें क्या कछ देना धर्म है,
वर्षे सुधारस वीरके भूले मनुज सत्कर्म हैं।
त्यों वीर समझाने लगे प्यारे अहिंसाधर्मको,
पालन करें जगके मनुज समझें धरमके मर्मको ॥ १५ ॥
होते अधीर न वीर थे आघात जग जनने तजे,
वात्सल्य परिचित प्रेमसे परिचय करानेको सजे।
ज्यों मेघ गर्जे विश्वमें भूपर बरसनेको लगे,
संताप जग जनके मिटे नर पशु न जाते थे ठगे ॥ १६ ॥
थे महावीर सदय अहो निर्भय जगत करने लगे,
अतिशय अपूर्व शक्तिसे आदर्श दर्शाने लगे।
आत्मावलम्बनमें उन्हें परकी जरूरत थी नहीं,
धरणेन्द्रभू पर आ बसे कहने लगे मैं हूं यहीं ॥ १७ ॥
आज्ञा मिले मुझको प्रभो सेवा करूं मैं आपकी,
प्रभुका सहायक बन सकूं शंका मिटे आघातकी।
उत्तर दिया था आपने स्वाधीन सेवा राष्ट्रकी,
शंका तजी थी वीरने जगके सभी अनुरागकी ॥ १८ ॥
स्वाधीनताके ध्येयमें क्योंकर सहायक बन सको,
निज आत्मबलकी शक्ति हो तो तुम महाव्रत धर सको।
लेते न वीर वसुन्धरा परका सहारा भी तजें,
जीतें प्रकृति तजेंद् विकृति करते सुतप समता सजें ॥ १९ ॥
जगके निवासी हैं निबल उनको सहारा दीजिये,
असमर्थको सामर्थ करनेकी प्रतिज्ञा कीजिये।
पलटो न भू भूकम्पसे करदो मनुजके मन सुमन,
निश्चित करो धरणेन्द्र तुम सर्व महाव्रत वीर जन ॥ २० ॥
अनुपम विरागी मार्ग था जो वीरने धारण किया,
सुखशान्तिके आदर्शसे जगने उसे अपना लिया।
यदि वीरके उपदेश हमको भूमिपर मिलते नहीं,
होता प्रलय निश्चित अहो नभ टूटता फटती मही ॥२१॥

दीपावलि।

(पं० परमानन्द जैन सांधेलीय-लाकरोडा)

बंधुओ! यों तो "दीपावलि पर्व" सारे हिंदुस्थानमें मनाया जाता है, लेकिन जैसा मनाना चाहिए वैसा नहीं मनाया जाता है। किन्तु अज्ञानतावश रूपान्तरमें मनाया जाता है। इस पर्वकी उत्पत्ति या इस पर्वके मनानेका यह कारण है कि इस कार्तिक वदी अमावस्याको श्री महावीरस्वामीने अविनाशी शिवधाम प्राप्त किया था। तथा उसी समय गौतम नामक गणधरको कैवल्य (केवलज्ञान) की प्राप्ति हुई थी। इस कारण इन दोनों महाउत्सवोंको करनेके लिए सुरलोकसे देवगण आये थे। उन्होंने भगवानका मायामयी शरीर बनाकर उसकी अंत्येष्ट क्रिया की। तत्पश्चात् देवोंने श्री वीर निर्वाण महोत्सव और केवलज्ञानोत्पत्ति उत्सवको भक्तिभावसे किया। उस समय कुछ अंधकार था इस कारण देवगणोंने रत्नमयी सुन्दर दीपक जलाये थे। तथा उस समय मगधदेशवासी सब श्रावक लोगोंने भी भक्तिभावसे उत्सव मनाया था एवं व्रत उपवासादि किए थे। उसी समयसे यह पर्व दीपावलि नामसे प्रचलित हुआ। आजकल भी उन्हीं परम पूज्य देवाधिदेव श्री भगवान महावीरस्वामीके निर्वाणादि उत्सवोंके स्मरणार्थ समस्त दिगम्बर जैन भाई पूजन स्तवन कर भक्तिभावसे निर्वाण लाडू चढ़ाते हैं। इसके सिवाय आजकल हमारे भाई धर्मकर्मसे सर्वथा हाथ धोकर अर्थात् अज्ञानी होकर जैनत्वपनेको गमाते हैं। मिथ्यात्वके वश होकर अपनी रुपया पैसादि सम्पत्तिको बढ़ानेके अभिप्रायसे "लक्ष्मी" की पूजा तथा बहियोंकी पूजा एवं मापने (तौलने) के बांट तराजू और मसीपात्र (दवात) खत-पत्र कलम आदिकी पूजा करते हैं और सैकड़ों रुपयेके फटाका फोड़ते हैं, जिससे हजारों जीवोंकी हिंसा होती है। तथा भारतवर्षके अन्दर लाखों करोड़ों रुपयेका जुआ खेला जाता है, जिससे हमारे कई भाइयोंको घरके बर्तन वगैरह तक गिरवी रखना पड़ते हैं और हजारों रुपया हार जाते हैं। फिर अपनी नाक कटायेसे रह जाते हैं।

बंधुओ! विचारिये कि क्या महावीरस्वामीने यही आदेश दिया था? कभी नहीं दिया, किंतु लोग आजकल अज्ञानी होकर धर्मकी ओटमें शिकार करते हैं, जिससे उनके जैनत्व (जैनीपने) में बाधा आती है। लेकिन विषयोंकी गृद्धतासे हेयोपादेयका जरा भी विचार नहीं करते हैं। वास्तवमें आजकल नाममात्रके जैनी हैं; किन्तु धार्मिक क्रियाओंसे कोसों दूर भागे जा रहे हैं। मिथ्यात्व रूप प्रवृत्ति करनेसे जरा भी बाज नहीं आते। दूसरोंकी निन्दा करना, गाली देना, आपसमें द्वेषभाव रखना या परस्परमें लड़ाई झगड़े कर मुकद्दमेबाजी करना यही आजकल मूढ़ स्वार्थी लोगोंने अपना कर्तव्य मान रक्खा है।

यदि कोई सुधारक धर्मकी उन्नतिका सच्चा मार्ग बतलाता है अथवा अहिंसा परिपूर्ण एकताका उपदेश देता है तो उसको यह स्वार्थी लोग अपना शत्रु समझकर उससे द्वेषभाव करते

हैं। लेकिन उस समय जरा भी विवेकसे नहीं विचारते हैं।

अय जैनियो! जरा विचारो और विवेक बुद्धिसे काम लो। भगवान महावीरस्वामीने जिस तरह गंभीर अहिंसा परमो धर्मः का एवं जीवादि सप्त तत्वोंका स्वरूप दर्शाया था। इसलिए हमारा और आपका यह फर्ज है कि जिस प्रकार हो सके जिन शासनकी प्रभावना करना अथवा दूसरोंकी निन्दा नहीं करना, गाली नहीं देना, मात्सर्यभाव नहीं रखना, परस्परमें प्रेमका संचार रहे, सब एक सूत्रमें बंधे रहे तथा जो अपनेसे बिछुड़े हुए भाई हैं उनको भी अपने गले लगावें, अपनावें। जब इस तरहकी भावना हम लोगोंमें हो जावेगी तब अवश्य यह पतित जैनसमाज उन्नत अवस्थामें पहुंच जावेगा। जब आपकी क्रियाएँ मिथ्यात्व रहित निर्दोष हो जावेंगी तभी आपका दीपावलि पर्व मनाना सफल होगा।

बन्धुओ! यदि आप सच्चे आत्महितैषी एवं जैनत्वका कुछ भी गौरव रखते हैं तो आपसे सब एक हो जाइये और पवित्र अहिंसा धर्मकी पताका फहराइये।

वास्तवमें इस गुजरात प्रान्तमें विद्याका कुछ भी प्रचार नहीं है। लोग धर्मका स्वरूप तक नहीं जानते। यहांतक कि उनसे शुद्ध णमोकार मंत्रका भी उच्चारण नहीं होता है! इसलिये ज्ञानकी उन्नतिके साधन जुटाना चाहिये। स्थान२ पर पाठशालाएँ खोलना चाहिये। तब अपनी दीपावलि सफल होगी।

अध्यात्म।

(ले० धर्मरत्न पं० दीपचन्द्रजी वर्णी)

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकासते।
चित्स्वभावाय भावाय सर्व भावांतरच्छिदे॥

पदार्थ—अनंत धर्मात्मक होता है, उन अनंत धर्मोंके वाचक शब्द भी अनंत होते हैं, वे अनंत धर्म पदार्थमें हर समय साथ ही साथ रहते हैं परन्तु उनका कथन एक साथ नहीं हो सका, वह क्रम क्रमसे होता है अर्थात् एक गुण कहे देनेपर ही दूसरा गुण कहा जासक्ता है। इस प्रकार क्रमसे कथन करनेको अनेकांतवाद, नयवाद, स्याद्वाद या कथंचित्‌वाद, या सापेक्ष कथन कहाता है। जिस समय जो गुण वक्ताके कथनमें आरहा है वह प्रधान और शेष गुण अप्रधान या गौण कहे जाते हैं, और इस तरह सभी गुण कथन और अकथनकी अपेक्षासे मुख्य तथा गौण होसक्ते हैं। परन्तु इससे यह न मान लेना चाहिये कि वे गुण पदार्थोंमें मुख्य या गौण होजाते हैं। नहीं, पदार्थोंमें तो वे अपनी सत्ता (षट्गुणी हानि वृद्धि) को लिये हुए सदैव ही अपने२ स्वरूपमें रहते हैं।

वास्तवमें न तो उनमें कोई मुख्य है और न कोई गौण है, अथवा यों कहिये कि सभी मुख्य हैं या गौण हैं। जैसे कि परमाणुओंमें सभी परमाणु आकार मिकदारकी अपेक्षासे समान हैं न उनमें कोई छोटा है न बड़ा है। क्योंकि परमाणु सब समान ही होते हैं और यदि वे

समान नहीं हैं, तो परमाणु ही नहीं है किन्तु परमाणुओंके समुदाय स्वरूप स्कंध हैं। तात्पर्य-पदार्थमें जैसे एक गुण अपनी सत्ता रखता है वैसे ही अनंत गुण अविरोध पूर्वक अपनी २ सत्ता रखते हैं, उनमें मुख्यता या गौणता कथन मात्र है। वक्ता अपनी इच्छा और प्रयोजनसे किसीको मुख्य और किसीको गौण करके कथन करता है। और वह भी इसलिये कि वह शब्दोंमें एक साथ उन गुणोंको जानता हुआ भी कह नहीं सक्ता। इसलिये जीव दर्शन स्वरूप भी है, ज्ञान स्वरूप भी है, आनन्द स्वरूप भी है इत्यादि रूपसे कहता है। इस प्रकार कहनेका आशय यही कि ऐसा भी है और अन्य स्वरूप भी है। यह भी शब्द या स्यात् कथंचित् अपेक्षासे इत्यादि शब्द इसी बातके द्योतक हैं कि पदार्थका स्वरूप इतना मात्र नहीं है। किन्तु आगे कुछ और भी कथन शेष हैं। इस प्रकारके सापेक्ष कथनसे ही पदार्थके यथार्थ स्वरूपका बोध होसक्ता है अन्यथा नहीं।

ये नय (उन अनंत धर्मोंमेंसे प्रत्येक धर्मको कहनेवाले वाचक शब्द) अपने २ धर्मोंको बताते हैं। अपने सिवाय अन्य धर्मोंका कथन नहीं करते। और न उनका निषेध ही करते हैं क्योंकि वे यदि अपने सिवाय अन्य धर्मोंका भी कथन करने लग जाय तो वे अपने धर्मके निश्चायक नहीं रहे जासक्ते और यदि विरोध करने लगे तो पदार्थ एक धर्म मात्र ही ठहर जावे। जैसा कि वह नहीं है। बस इन्हीं नयोंके द्वारा पदार्थके अनंत धर्मोंको जान लेना सो प्रमाणका विषय है जो कहा नहीं जा सक्ता। इसीलिये प्रमाणको अंशी अर्थात् सकलग्राही और नयको अंश अर्थात् देशग्राही कहा गया है।

जबतक प्रमाण और नयके स्वरूपको नहीं समझा जाता तब तक पदार्थका स्वरूप समझ हो नहीं सक्ता। इसलिये पदार्थको ठीक २ जाननेके लिये इनका जानना पहिले ही आवश्यक है।

बहुत लोगोंका कहना है कि स्याद्वाद संशयात्मक है, किसी भी बातका निश्चायक नहीं है, इत्यादि। परन्तु ऐसा उनका कहना, केवल उनके भोलेपनका सूचक है। वास्तवमें उन्होंने इसे समझा ही नहीं है। उनका कहना, केवल उनके ज्ञान पटपर एकांत अर्थात "ही" का चश्मा चढ़ रहा है, इसलिये वे सब पदार्थोंको ही रूपसे ही देखते हैं। उनके विरुद्ध कथन उनको वैसा ही कटुक लगता है जैसे पित्त रोगीको दूध। हम ऐसे लोगोंसे केवल यही कहना चाहते हैं कि आप लोग, पक्षपातको छोड़कर एक बार अवश्य ही इस नयवादको समझनेका कष्ट उठइये, और पश्चात् अपना मत स्थिर कीजिये, ताकि पदार्थका असली भाव समझमें आवे और उससे आप अपने आत्माका हित कर सकें। क्योंकि यह जाननेका प्रयोजन मात्र स्वात्मकल्याण करना है।

अब यह विचार करना है कि आत्मा क्या वस्तु है? और उसका कल्याण किस प्रकार होसक्ता है? अथवा मैं कौन हूं? कहांसे आया हूं? कहां जानेकी तैयारी कर रहा हूं? मेरा असली मुकाम कौन है? और वहां मैं किस

प्रकार पहुंच सक्ता हूं ? यहां मेरा कौन है ? और मैं किसका हूं ? ये सब क्रियाएं जो मैं कर रहा हूं क्यों और किसके लिये ? इसका फल क्या होगा ? इत्यादि बातोंपर विचार करनेके लिये सबसे प्रथम हमको मैं इस शब्दके वाचक पदार्थका विचार करना चाहिये । कि मैं किसका बोध कराता है ? मैं कौन है ? यह मैं की आवाज कहांसे आती है ? इत्यादि । इस विषयमें पंडित द्यानतरायजीने एक पद्यमें बहुत सरलतासे समझाया है कि तू आत्मा है तू उसे जान । वह कहां है और कैसे जाना पहिचाना जाता है उसके लिये कहते हैं कि—

भैया सोई आतम जानोरे ॥१॥
जाके बसते बस रहे जी पांचोंइन्द्रि गाम ।
जासबिना छिन एकमें जी गाम न ठाम न नाम ॥१॥
आप चलै अरु ले चलै जी पोंचे बहु मन भार ।
जास बिना जड़ ना चलेजी तन खेंचे संसार ॥२॥
जाको जारे मारते जी जरे मरै नहीं कोय ।
जो जाने सब जगतको जी ताहि न जाने कोय ॥३॥
घटघट व्यापी है रहो जी गजकुंथा सम रूप ।
जाने माने अनुभवे जी द्यानत सो चिद्रूप ॥४॥

अर्थात्—जिसके रहते हुए पांचोंइंद्रियां स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र अपना अपना व्यापार करती रहती हैं, जिसके इस शरीरमें इन्द्रिय रूपी ग्रामकी आबादी होरही है, और जिसके निकल जानेपर समयभरमें न ग्राम रहता है न स्थान रहता है और न नाम ही रहता है, सो ही आत्मा है । अथवा जो स्वयं चलता है जो अपने साथ तैजस कार्माण शरीरोंके सिवाय औदारिक (स्थूल) अथवा वैक्रियक शरीरके भारको भी ले चलता है । उसके सिवाय अन्यान्य वस्त्रादि वस्तुओंको भी ले जाता है । और जिसके निकलजाने पर इस शरीरको अन्यान्य संसारी जीव घसीटते फिरते हैं, सो ही आत्मा है । अथवा जिसको जलाने मारनेसे जलता मरता नहीं है, और जो सबको जानता है परन्तु उसे कोई नहीं जानता है सो आत्मा है । अथवा जो कुंथु आदि सूक्ष्म जीवोंसे लेकर हाथी जैसे शरीरोंमें व्याप्त होरहा है, जो जानता मानता अनुभव करता है, वही चिद्रूप आत्मा है, उसे जानो ।

इसी बातको अन्य एक महात्माने अपने शिष्यका प्रश्न होनेपर उसे कहा, हे वत्स ! इस दर्पणमें देख, तुझे आत्मा दिखेगा। शिष्यने कहा, महाराज इसमें तो मुझे मेरी ही परछांई दिखे, आत्मा तो नहीं दिखा । तब गुरु बोले—अच्छा स्नान पूजन करके आओ । तब उसने ऐसा ही किया और आके दर्पणको देखा । गुरुने पूछा क्यों वत्स, दिखा ? उत्तर नहीं महाराज, तिलक मुद्रादि लगाये हुए मेरी ही परछांई दिखो है । गुरु—अच्छा वस्त्रादि पहिरकर आओ और देखो ! उसने ऐसा ही किया । तब गुरुने पूछा, क्यों वत्स अब तो दिखा ? शिष्य—महाराज वस्त्रालंकारों सहित मेरी ही परछांई दिख रही है । गुरु—बहुत ठीक, ये तीन तरहके तेरे रूप किसने देखे ? शिष्य—जी, मैंने देखे हैं । गुरु—अच्छा भूलना मत, तुमने देखे हैं ना ? शिष्य—जी, गुरु—कैसे देखे ? शिष्य—दर्पणमें । गुरु—ठीक तब तू समझ—आत्मा देखा । शिष्य—नहीं, गुरु—अरे, अभी तो कहता था, मैंने रूप देखे

दर्पणमें देखे, सो तू देखनेवाला स्वयं आत्मा है। यदि तू न होता तो ये रूप कौन देखता ? इसलिये पहिचान के यही आत्मा है। इस प्रकार शिष्यको आत्माकी पहिचान गुरुने करा दी।

इस प्रकारसे प्रथम मैं कौन हूं ? इस प्रश्नका उत्तर "कि मैं सच्चिदानंद स्वरूप अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत सुख, अनंत वीर्यादि अनंत गुणोंका धारी एक शुद्ध बुद्ध चैतन्य आत्मा हूं" पाकर उक्त प्रकारसे उसकी पहिचान करना चाहिये। पश्चात् यह विचारना चाहिये कि जब मैं इस प्रकार शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूप आत्मा हूं। तो मेरी यह वर्तमान परिस्थिति क्यों ऐसी हो रही है कि जिससे मैं अपने इन शुद्ध अनंतगुणोंको प्राप्त नहीं करके पराधीन होरहा हूं ? ऐसा प्रश्न आत्मामें उठनेपर यह उत्तर तत्काल निकलता है कि उन अनंत शुद्ध शक्तियोंके अप्रकट होनेमें निमित्त कारण अन्य कोई वस्तु है जिसे कर्म कहते हैं और वह जीव (आत्मा) की शक्तियां प्रगट होनेमें उसी प्रकार बाधक है, जिस प्रकार सूर्यके प्रकाशमें मेघ पटल बाधक है। यद्यपि मेघ पटलके रहते हुए भी सूर्य अपनी प्रभा सहित अपने स्वरूप रूप ही रहता है, वह प्रभाहीन नहीं होजाता, तथापि मेघ पटलोंके कारण उसकी प्रभाका प्रकाश सर्वत्र अप्रकट रहता है। परन्तु इसमें अंतर इतना ही रहता है कि बादलोंसे आच्छादित होने पर भी सूर्यकी प्रभा चाहे अन्यत्र प्रकट प्रकाशित न होवे, परन्तु बादलोंके भीतर प्रकट प्रकाशित है। इस प्रकारसे आत्मा ज्ञानादि अनंत गुणोंका पुंज होते हुए भी कर्म पटलके अंदर ज्ञानादिकी प्रभा सहित प्रकट प्रकाशित नहीं है, किंतु वह ज्ञानादिकी शक्ति सहित है अर्थात् कर्म पटल उस चैतन्य प्रभु आत्माकी शक्तियोंके व्यक्तित्वमें बाधक होता है और ज्यों ही यह कर्म पटल कारणान्तरसे नष्ट या पृथक हो जाता है, त्यों ही आत्माकी वे अनंत शक्तियां प्रगट हो जाती हैं, तभी यह प्रभु कहलाता है। (अपूर्ण)

वीर निर्वाण संदेश।

मूक पशुओंका त्राण, किया विश्वकल्याण,
भारतके धर्म प्राण, योगी कर्म वीरका।
राष्ट्र धर्म नायक, आत्मशक्ति परिचायक,-
शांति प्रदायक, अघ क्षायक धर्म धीरका।
निर्वाण दिवस आज, आया ले नवीन साज,
सत्यकर्म साम्राज, फैलाओ प्रणवीरका।
धर्मध्वजा फहराओ, दिव्य भावना जगाओ,
सफल बनाओ, निर्वाण महावीरका।
महावीरका मनाओ, निर्वाण बंधु! ज्ञानरश्मि
चमकाओ, दिखलाओ प्रणवीरता।
प्रणवीरता दिखाओ, दृढ़ साहस जगाओ,
सत्य स्रोत सरसाओ, सज लाओ कर्मवीरता।
कर्म वीरता सजाओ, आत्मशक्ति प्रकटाओ,
शीघ्रतः भगाओ, विघटाओ भारी भीरुता।
भीरुता भगाओ, दिव्य तेज चमकाओ,
बंधु! विश्वको दिखाओ, आओ आज महावीरता।

"वत्सल"

सुभाषित-रत्नसंदोह।

(गतांकसे आगे)

कोपाग्निसे संतप्त मानव, त्याग स्वाभाविक क्षमा।
निज आत्मशक्ति विनष्ट कर, हिंसादिमें रहता रमा॥
हां घात कर पर प्राणका, होता निरंतर अघनिरत।
बनता निरादर पात्र, हा! क्या २ न करता क्रोध रत॥३१॥

दोष वश हमसे किसीका बन गया अपराध अति।
इसी ही लिए कोई कहे कटु शब्द कुवचन क्रोध युत॥
"अपराध हमसे होगया यह क्रोध करता युक्त है।"
इस भांति हृदय विचार, रखना क्षमा ही उपयुक्त है॥३२॥

अपराध दोषादिक विना, यदि कोई मानव व्यर्थ ही।
कटु वाक्य, गाली दे करे, उत्पात और अनर्थ ही॥
"यह अज्ञ है अविवेक रत कुछ भी न इसको ज्ञान है।
यह है क्षमाका पात्र" रखना यह क्षमा सुख खान है॥३३॥

होकर कुपित कोई मनुज यदि मार दे अज्ञानसे।
करना सहन उसको सतत सुविवेक एवं ज्ञानसे॥
"निज पूर्व कर्मोंके कुफलका फल हमें है मिल रहा"।
इस भांति विमल विचार कीजे रख हृदय क्षमता महा॥३४॥

सज्जन विमल ज्ञानी मनुज अविचल क्षमाकी धारसे।
अपराध मल धोते सभीका शून्य क्रोध विकारसे॥
करते विचार "स्वधर्म रत मैं" पूर्व क्रूर कुकर्मसे।
यह कष्ट दे मुझको, स्वयं है शून्य होता धर्मसे॥३५॥

कोई मनुज अपशब्द कह, करदे शरीर निपात भी।
पूर्व कृत दुष्कर्मसे, कर दे कभी प्राणांत भी॥
"क्रोधसे होता कुकर्माश्रव" विवेक विचार मन।
करना क्षमा संयुत सहन रखना सुरक्षित धर्म धन॥३६॥

एकत्र धान्य समूहको जैसे अनलका तुच्छ कण।
करता सशीघ्र विनष्ट है लगता न उसको एक क्षण॥
उपवास, व्रत, यम, नियम प्रभृति, अनेक संचित कर्म शुभ।

कोपाग्नि किंचित भस्म कर, भरती विचार घृणित अशुभ ॥३७॥
कोपवश हो अन्य नरका घात इच्छुक अज्ञजन।
करता स्वयं आघात अपना हो बहिर्मुख खिन्न मन॥
ज्यों अज्ञ अष्टापद श्रवण कर मेघ गर्जन क्रोध कर।
नभमें उछल होता विफल जर्जर स्वयं पड भूमिपर॥३८॥
किंचित विरुद्ध विचार सुन होता कुपित कुविचार युत।
उपकार लोप स्वबंधुका अपकारमें रहता निरत॥
शुभ मित्र, भगिनी, पितृका भी है बना रहता अप्रिय।
अत्यन्त क्षीण शरीर, इष्ट विनष्ट, होता कष्ट मय॥३९॥
जो मनुज सर्वत्र, नित्य विशिष्ट क्षमता युक्त है।
वह अति अलभ्य पवित्र पावन पुण्यसे संयुक्त है॥
तप, तीर्थयात्रा, ध्यान, दान, विज्ञान संयमवान है।
करुणा दया, उत्कर्षमें उसके न अन्य समान है॥४०॥
कोपवश हो वक्र भृकुटी और मुखमंडल विकृत।
रौद्र मूर्ति महा भयानक नेत्र प्रज्वलित अनलवत॥
देत कट कट, सर्व तन होता विकंपित औ ज्वलित।
क्रोधी मनुज बन निद्य राक्षस रूप दुख पाता अमित॥४१॥
अन्य जनके दाहकी इच्छा सहित अल्पज्ञ नर।
प्रज्वलित अनलकण फेंक हा सहसा जलाता है स्वकर॥
क्रोधित मनुज परघात अविचार्य कुत्सित कार्यमें।
संतप्त होता है स्वयं ही नित्य दुख अविचार्यसे॥४२॥
देह धारी शत्रु केवल प्राण करता नष्ट है।
किन्तु करता क्रोध रिपु मैत्री दयादि विनष्ट है॥
अविवेक द्रोह विवृद्धि कर जड़ता बढ़ाता है विषम।
हा विश्वमें बलवान अरि नरका न कोई कोप सम॥४३॥
दिव्य कान्ति विनष्ट कर दुर्भाग्य लाता है निकट।
सौभाग्य हन, उत्कृष्ट अनुपम फोड़ देता कीर्ति घट॥
अतएव विज्ञ, समस्त दुखदा क्रूर क्रोध विकार हन।
करते विजित हैं विश्वको बलदा क्षमा आगार बन॥४४॥
वत्सल]　　इति क्रोधप्रकरण। (क्रमशः)

स्त्रियोपयोगी शिक्षाएं।

(ले०-मास्टर पूनमचंद मंगलजी, छानी)

(१) ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिये जिससे कि दूसरे जीवोंको मानसिक वा कायिक पीड़ा हो क्योंकि ऐसे कार्य करनेवाली स्त्रीको सब कोई हिंसकनी और पापिनी कहते हैं।

(२) ऐसे वचन कभी नहीं बोलना चाहिये जिससे कि अपनी व परकी हानि हो क्योंकि ऐसे वचन कहने वाली स्त्रीको असत्यवादिनी (झूठी) और मायाचारिणी कहते हैं।

(३) रक्खी हुई गिरी हुई भूली हुई अमानत रक्खी हुई पराई वस्तु कदापि ग्रहण नहीं करना चाहिये क्योंकि परवस्तुको ग्रहण करनेवाली स्त्रियें चोरटी और ठगनी कहलाती हैं।

(४) किसीकी सम्पत्ति और गहना देखकर लोभ (लालच) कदापि नहीं करना चाहिये क्योंकि लोभ करनेवाली स्त्रियोंको पाप करनेमें भय नहीं रहता और लोभ करनेवाली स्त्रियें हमेशह दुःखिनी ही रहती हैं इस कारण अपने भाग्यसे जो कुछ प्राप्त हुआ है उसीमें संतोष धारण करना चाहिये।

(५) उठते बैठते चलते फिरते सोते अर्थात् हर समय जीवोंका भला चिन्तवना चाहिये; अपनी सामर्थ्यानुसार तन मन धनसे परका हित करना चाहिये। इस प्रकार हित चाहनेवाली स्त्रियोंको हितैषिणी, परोपकारिणी व धर्मपरायणा आदि कहते हैं।

(६) जो स्त्रियें पति समय परका अकल्याण चाहती रहती हैं और दूसरेके अवगुण ढूंढती रहती हैं उनको दुष्टिनी पापिनी और बदमाश आदि कहते हैं ऐसी स्त्रियोंकी संगतिमें कदापि नहीं बैठना चाहिये।

(७) जो स्त्रियें हितकारी प्रिय वचन बोलती हैं उनको सब कोई प्रियवादिनी, मिष्टभाषिणी आदि कहते हैं ऐसी स्त्रियोंका कोई भी दुश्मन नहीं होता।

(८) क्रोध कदापि नहीं करना चाहिये क्योंकि क्रोध करनेवाली स्त्रियोंकी अनेक स्त्रियें दुश्मन होजाती हैं और वे हरसमय अनेक प्रकारके दुःख देने व झूठा कलंक लगानेमें तत्पर रहती हैं अतएव कोई गाली दे या कुवचन कहे तो क्षमा धारण कर चुप रहना चाहिये क्योंकि क्षमारूपी ढाल और शीलरूपी ढाल जिसने ओढ ली है उनको दुश्मनके वचनरूपी बाण कदापि नहीं लग सकते। जैसे विना घास फूसके पत्थरपर पड़ी हुई अग्नि अपने आप शांत होजाती है। इस कारण क्षमारूपी और शीलरूपी ढालको ओढ़कर क्रोधके वशीभूत कदापि नहीं होना चाहिये।

(९) समयका एक निमेष मात्र भी वृथा नहीं खोना चाहिये। क्योंकि गया हुआ समय फिर करोड़ यत्न करनेपर भी हाथ नहीं आता। इस

कारण पढ़नेका अमूल्य समय जो बालकपन है उसका एक पल भी वृथा नहीं खोना। अहो-रात्र प्रति समय विद्या पढ़नेमें ही ध्यान लगाना चाहिये। क्योंकि विद्या ही सर्वोत्तम पदार्थ है। विद्यासे ही इस लोकमें सुख यश और परलोकमें अनुपम सुखकी प्राप्ति होती है। विद्या ही माताके समान अपनी व अपने पतिव्रता धर्मकी रक्षा करती है। विद्या ही पिताके समान हितमें लगाती है, विद्या ही शशिके समान चित्तको रंजन कर समस्त दुःखोंका दूर करती है, विद्या ही दशों दिशामें सीता, द्रोपदी, अनन्तमती, अंजना आदिके यशकी तरह अनुरूप यशको प्रकाश करती है। विद्या ही कल्पलताकी समान मनवांछित सुख देती है। विद्या ही अपूर्व गहना है जिसको धारण करनेवाली स्त्रियें अति-शय शोभाको प्राप्त होती हैं। विद्या ही अनुपम आभूषण है जो कि मांगी हुई दान करनेपर भी बढ़ती रहती है। विद्या ही अति उत्कृष्ट अलंकार (आभूषण) है कि जिसको चोर चुरा नहीं सक्ता। सास और जिठाणियें बढ़ा नहीं सकती। विद्या ही सर्वोत्कृष्ट धन है, जिसको राजा व दस्युगण (डकैत) जबरदस्ती नहीं छीन सकते। विद्या ही हितकारिणी सखी है जो विपत्तिमें हर समय सहाय करती है इत्यादि अनेक गुणोंको देनेवाली विद्या है। इस कारण विद्याके पढ़ने पढ़ानेमें समस्त कार्य छोड़कर तन, मन, धन और समयसे तत्पर रहना चाहिये। दुष्ट लोग और खराब स्त्रियें चाहें जो कुछ कहें, परन्तु तुम एककी भी नहीं सुनना, कमसे कम स्त्री शिक्षाकी ४ पुस्तकें तो अवश्य पढ़ लेना चाहिये।

(१०) कर्कश वचन कदापि नहीं बोलना चाहिये।

(११) शराब और रसोंका संसर्ग कदापि नहीं रखना।

(१२) पढ़ते समय अन्य चर्चा नहीं करना चाहिये।

(१३) धनाढ्यकी औरतें धनके मदसे मूर्छित होजाती हैं। उनको धनके मदसे मूर्छित न होना चाहिये, अवश्य विद्या पढ़नी चाहिये।

(१४) परके दोष देखनेवाले दुर्जन होते हैं।

(१५) दुर्जनका भरोसा करना मृत्युको बुला-नेके बराबर है।

(१६) जैन मतमें जीव अजीव आस्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष पुण्य और पाप ये नौ पदार्थ माने हैं।

(१७) अजीर्णता पर भोजन करना विषके तुल्य हैं।

(१८) आर्तध्यान ही दुःखका कारण है।

(१९) अपना प्रयोजन साधे बिना परका उपकार करना ही यथार्थ उपकार है।

(२०) निर्दय लोग सदा दुःखी ही रहते हैं।

(२१) जो लोग देवताके सामने बकरे भैंसे काटकर अर्पण करते हैं तथा अग्निमें पशुहोमको धर्म बताते हैं वे बड़े निर्दयी पापी हैं।

(२२) ऐसा कोई भी काम नहीं करना जिससे अपना दुर्नाम होजाय।

(२३) कुपात्रको दान देना सर्पको दुध पिला-नेके बरोबर है।

(२४) निर्बल जीवोंको तन मन वचन और

धनसे सहायता करके निर्भय करो, इसीको हमारे आचार्योंने अभयदान कहा है।

(१९) रूप धन आदिका गर्व कदापि नहीं करना चाहिये। अतिशय गर्व करनेसे रावणका नाश हुआ था।

(१७) धर्म कर्म प्रेमके साथ सदैव ही करने चाहिये।

(१८) विपत्तिमें धैर्य गुण ही यथार्थ मित्र होता है।

(२९) मनुष्य पर्याय और आर्यकुल (उत्तम कुल) पाना तथा विद्या पढनेकी सामग्री मिलना अतिशय दुर्लभ है व पूर्वभवके पुण्यसे मिलता है इसलिये इस भवमें भी पुण्य करते रहना चाहिये।

(३०) सुबह और शामको एकेक घंटा गर्हित कार्य छोड़कर हर्षित मन होकर नित्यप्रति अर्हंत भगवानका दर्शन पूजन किया करो जिससे हृदय पवित्र होकर पूर्व भवके किये हुए पापोंका नाश और शुभ कर्मोंका आश्रव (आगमन) हो।

(३१) देव दर्शन किये बिना भोजन कदापि नहीं करना।

(३२) क्रोध, मान, माया, लोभ ये चार कषाय बड़े दुःखदायक हैं, इस कारण इनके त्यागनेका क्रमसे उपाय करती रहो।

(३३) भले कामको करनेमें सबसे अग्रगामिनी बनना चाहिये।

(३४) भले काम शीघ्रताके साथ करना चाहिये।

(३५) पात्र सुपात्र कुपात्रकी परीक्षा करके योग्य पात्र देखकर दान देना चाहिये।

(३६) दिनमें निद्रा लेना रोग और दरिद्रताका मूल कारण है।

(३७) लड़ाई मूल हास्य (हंसी) करना है।

(३८) प्रथम वयसे (उमरसे) ही सदाचारिणी पढ़ी हुई औरतोंकी संगति करना प्रारंभ करो।

(३९) भ्राता और भ्रातृ भार्यासे कदापि बिगाड़ नहीं करना।

(४०) सास और जिठानीके निकट नम्रीभूत होकर रहना चाहिये।

(४१) हिंसा, चोरी, झूठ, कुशील और परिग्रह इन पांचों पापोंको मन, वचन, कायसे त्याग देना सो तो पांच महाव्रत हैं।

(४२) मूर्ख औरतें ही ध्रुवको त्याग, अध्रुवकी आशा करती है।

(४३) पतिव्रता सहस्रोंमें एक ही होती है।

(४४) बुरा काम करनेसे अख्याति (निंदा) होती है।

(४५) न्यायसे विचार किया जाय तो पृथ्वीमें परोपकारीका ही जीवन धन्य है।

(४६) शाठ्य (दुर्जनता), जाड्य (मूर्खता) छोड़ गुण सीखकर गुणाढ्य बनो।

(४७) अठारह दोष रहित वीतराग (अर्हन्त) देव हीकी पूजा करो।

(४८) पुण्यसे ही हिरण्यमय आभूषण मिलते हैं।

(४९) जो कन्या नित्य सत्य वचन बोलती हैं वही जैन कन्या हैं।

(५०) विद्याध्ययनमें हर समय ध्यान रखनेसे असाध्य विद्या भी साध्य होजाती है।

(५१) गुणवती कन्या सबको प्यारी लगती है।

(५२) अश्लील गालियें गानेसे ही औरतें बिगड़ जाती हैं।

(५३) नीच औरतें ही सास श्वसुरको नाना प्रकार क्लेश देकर दुःखित करती हैं।

(५४) तुम कदापि अपने मुखसे गाली वगैरह अश्लील वचन नहीं बोलना।

(५५) पतिकी सेवा करनेसे पतिव्रताओंको बड़ा आल्हाद होता है।

(५६) कुगुरुको गुरु, कुदेवको देव, व कुधर्मको धर्म मानना सो मिथ्यात्व है।

(५७) बदमाश औरतोंका संग नहीं करना। उनकी संगति करना मृत्युका द्वार है।

(५८) दुराचारी औरतोंकी मीठी २ बातोंपर पतिव्रता स्त्रीको कदापि विश्वास नहीं करना।

(५९) घरपर आये हुवे दिन दुखियोंको दया करके अन्न दान देना चाहिये।

(६०) छोटे भाई भगिनीके प्रति अतिशय स्नेह रखना चाहिये।

(६१) जीवोंकी रक्षा करना।

(६२) पानी छानकर पीना।

(६३) रात्रिको भोजन नहीं करना, रात्रिमें भोजन मांस बराबर और पानी लोहू बराबर गिना जाता है। इसलिये रात्रि भोजन अवश्य त्याग करना चाहिये।

(६४) विद्याहीन नारीका जन्म वृथा (फोगट) है।

(६५) जो औरतें पढ़नेमें आलस्य करती हैं वे सब जगह धिक्कार पाती हैं।

(६६) माता पिता और सासु श्वसुरकी सेवा-भक्ति तन मनसे करनी चाहिये।

(६७) पहरनेके कपड़े व रहनेका घर सदैव स्वच्छ रखना चाहिये।

(६८) औरतोंका प्रधान गहना (दागीना) शील और लज्जा है।

(६९) औरतोंका अट्टहास करना (जोरसे हंसना) बहुत बुरा कुलक्षण है।

(७०) जो औरतें अच्छे अच्छे व्यञ्जन बनाना जानती हैं वे ही सुघड़ हैं।

(७१) मूर्ख माता पिताओंकी संतान भी मूर्ख रहती हैं।

(७२) लोक निंदाके भयसे विद्या पढ़नेका प्रारंभ नहीं करनेवाली औरतें मूर्ख होती हैं।

(७३) पतिव्रता स्त्रियोंको इन्द्र भी नमस्कार करते है।

(७४) बेवकूफ औरतें शोकमें विह्वल हो जाती हैं।

(७५) विद्या पढ़नेके लिये बाल्य कालकी तुल्य अन्य कोई अमूल्य समय नहीं है।

चौपाई।

कर्कश वचन कहै जो नारी।
सो अति मूर्ख महा दुखियारी॥
पतिव्रता तिय स्वर्ग ही जावे।
दीर्घ काल लों अती सुख पावे॥ १॥
खोटी चर्चा कबहु न करना।
धन गृहादिमें मूर्च्छा हरना॥
दुर्जनता चितसे तुम छारहु।
निर्णय कर शुभ व्रत धर धारहु॥ २॥
आर्त्तध्यान करै जो नारी।
सो यथार्थ दुःख पावै भारी॥
निर्दयता चितमें मत लावो।
निर्धन पतिका धैर्य बढ़ावो॥ ३॥

निज तनका जो दर्प करै है।
सो गर्वित तिय दुःख भरै है॥
सब जीवनको निर्भय करना॥
धर्म कार्य पर नित चित धरना॥ ४॥
दुर्लभ मनुज जनम यह लहना।
प्रति दर्शन कर हर्षित रहना॥
गर्हित कर्म करै जो नारी।
सो पतिकी कबहु न हो प्यारी॥ ५॥

प्रिय माता और बहिनो! सुनो, जैसा ध्यान आपका मूर्खता चक्करमें है, वैसा ध्यान अपने खास कर्तव्यकी ओर नहीं है। आपका खास कर्तव्य यह है कि व्यंजन (भोजन) बनाना विद्या पढ़ना और जिनेन्द्रदेवकी पूजा स्तुतिमें प्रीति लगाना। आपको मूर्खताकी धुनमें न तो भोजनकी शुद्धतापर विचार है और न विद्याकी परवा है। तथा न जिनेन्द्र दर्शन व शास्त्र सुननेकी भी फुरसत है। क्या मैं आपसे पूछ सक्ता हूं कि क्या केवल मूर्खता ही आपकी आत्माको उभय सुखकी प्राप्ति करावेगी? नहीं माताओ! नहीं। मूर्खता तुम्हारी आत्मकल्याण करनेवाली नहीं है। परन्तु धर्म तो स्वर्गादि सुख देता। परन्तु अपने कर्तव्यका यथाशक्ति पालन भी करो ऐसी मेरी भावना है। आशा है आप मेरे इस तुच्छ निवेदनपर अवश्य ध्यान देंगी।

दोहा—जो अबला इस लेखको,
नित्य पढ़े मन लाय।
सो भोगही सुख सम्पदा,
दुःख कभी नहीं पाय॥ १॥

जैन समाजकी स्थितिपर मेरे विचार।

सज्जन वृन्द! जैन समाजकी वर्तमान परिस्थितिपर विचार कर यह प्रश्न उठता है कि जैन समाजकी रक्षा कैसे की जाय? मरती हुई जैन समाजको कायम रखनेके लिये किन २ उपायोंका अवलम्बन लिया जाय आदि हृदयमें विचारतरंगे उठती हैं। समाजके शुभचिंतक चाहे वो संस्कृतके जाननेवाले हों किंवा अंग्रेजी शिक्षाके ज्ञाता विद्वान होवें अपने विचारोंको अवश्य इस प्रश्नको हल करनेके लिये जुटाते हैं और अपने निश्चित विचार जैन समाजके समक्ष व्यक्त करते हैं। और उद्देश्य विभिन्नता न होनेपर भी विचार-विभिन्नता एक दूसरेमें होना अनिवार्य है। इन्हीं विचार-विभिन्नताको दूर करनेके जो साधन होना चाहिये उससे विपरीत आचरण जैन समाजके वर्तमान नेतागण कर रहे हैं और जैनत्वकी रक्षा करना चाहते हैं यह आश्चर्य है। वर्तमानमें जो आन्दोलन विचार-विभिन्नताको दूर करनेके लिये किये जारहे हैं वह स्वयं वैमनस्यका केन्द्र स्थल बन गया है। इस समय जैन समाजकी शक्ति बाबूपार्टी और पंडितपार्टीमें बिखर रही है और खंडनमंडनकी इतनी रफ्तार जम गई है कि एक दूसरेके प्रति मनमाने कठोर अश्लील शब्दोंका प्रयोग कर अपने विषय कषायोंको पुष्ट करते हैं यहांतक कि समाजके हितके लिये सत्यानाशी बालविवाहकी वृथा रूढ़ मानेको लक्ष्य कर बगैर मि०

शारदाका बालविवाह निषेधक कानून पास हुआ है) उसके विरुद्ध भी स्थिति पालक दलने कलम चलाई है। मुझे हार्दिक दुःख होता है कि ऐसे लोग जो दि० जैन समाजके कर्ताहर्ता नेता बननेकी इच्छा करते हैं इन कलमा बहादुरोंको इसप्रकार विवेक-शून्य लेखनी चलाते दि० जैन समाजपर दया नहीं आती? जबकि संसारका प्रत्येक बच्चा बालविवाहका निषेध कर रहा है ऐसी हालतमें दि० जैन समाजके स्थितिपालक दलके मुखिया अपनी राग अलग ही अलाप रहे हैं और बाल विवाहके रोके जानेसे विधवा-विवाहके होनेकी आशंका समझ रहे हैं! इस समय विजातिविवाह और विधवाविवाहकी आड़ लेकर समाजमें हदसे ज्यादह कलह बढ़ाई जारही है। यदि यही शक्ति खंडनमंडनमें न विता जैन साहित्यके प्रचारमें, अजैनोंको जैन बनानेमें लगाई जाय तो बहुत कुछ उत्कर्षका दृश्य दिखाई देने लगे। यह समाज बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्या क्रयादि, वेश्यानृत्य, विलासिताकी ओर पैसोंको पानीकी तरह बहानेमें अग्रेसर बन रही है जिसका परिणाम जैन समाजकी संख्याकी कमी तेजीसे होरही है। यदि इसप्रकार संख्या ह्रासके साधनोंको न निकालनेका प्रयत्न किया जायगा तो लेखकको निश्चय है कि इस धरातलपर जैन नाम मात्रको भी सुनाई न देंगे। अस्तु! सबको मिलकर प्रचलित कुप्रथाओंको निकाल सुप्रथाओंके प्रचारमें योग देना चाहिये। विजातिविवाह शास्त्र सम्मत है और योग्य शिक्षित वरकन्याकी प्राप्तिका विस्तृत क्षेत्र है। उपजातिविवाहकी इतनी संकीर्णता उपलब्ध होरही है कि जहां वर है तो उसमें गुण नहीं, शिक्षा नहीं। यदि लड़का पढ़ा लिखा है तो कन्या मूर्ख मिलती है। जिससे गृहस्थाश्रम शांतिके बजाय कलहका स्थान बन जाता है। जो लोग यह युक्ति देकर विजातिविवाहका खण्डन करते हैं कि इससे अच्छृंखलता बढ़ जायगी, विधवाविवाहादि मनमाना अत्याचारका प्रादुर्भाव होजायगा। वगैरह लिखना बहुत कुछ भ्रमपूर्ण है। हमारे ख्यालसे संगठन शिथिलताके स्थानमें दृढ़ होजायगा। यदि कोई धर्मविरुद्ध कार्य नहीं करेगा तो अभी उसकी जातिवाले ही उसके लिये विचार कर सकते हैं। फिर सारी समाज एक स्वरसे उसके लिये विचार करेगी।

दमननीति-का आतंक भी छारहा है। इसके बलसे हमारे नेतागण अपने उद्देश्यमें सफलता प्राप्त करना चाहते हैं सो अविचारितरम्य है। बहिष्कारकी सीमा होती है। किसी जीवकी प्रकृति पुरुषार्थ ऐब देखकर इस शस्त्रका प्रयोग करना चाहिये बात२ पर किसीको जातिच्युत, समाजसे बहिष्कृत कर देना जितना सहज है उतना ही किसीको जैनधर्ममें दीक्षित बनाना टेढ़ा है। दि० जैन समाजमें वैसे ही कार्यपटु प्रखर विद्वानोंकी कमी है। यदि कुछ लोग उनके छिद्रोंको ढूंढकर समाजके समक्ष पेश करें और उनके विपरीत भड़काते तो इससे बढ़कर कृतघ्नता क्या होगी। संसारी जीवोंमें कोई न कोई दोष अवश्य होते हैं उनके दोषोंका निकालना जितना नम्रता व्यवहारसे होना संभव है उतना बहिष्कारसे नहीं।

उन्नतिके उपाय

संसारकी सब कौमे उन्नतिकी ओर तेजीसे दौड़ रही है। अकेली जैन कोम ही गफलतमें पड़ी रही तो क्या कभी उसकी सत्ता कायम रहेगी? आप जैसे जैन समाजके नररत्नोंके विद्यमान रहते जैन समाजकी पतित हालत हो जाय तो क्या आपको शर्म नहीं आवेगी? संसारकी अन्य जातियोंके समक्ष आपका सिर नीचा नहीं होगा? अवश्य होगा। इसलिये नाककी रक्षाका प्रश्न दूर कर समाजकी स्थिति पर विचार कीजिये, घृणित प्रथाको निकाल दें और शास्त्रोक्त आदर्श प्रथाओंका प्रचार करें, अजैनोंको जैन बनानेका प्रयत्न करें। विवाह शादियोंमें कम खर्च करें। जनसंख्याकी कमी और विधवा-वृद्धिके कारणोंको रोकें। सादगीसे जीवन बितावे, शिक्षा प्रचार करें, विविध भाषाओंमें जैन साहित्यका अनुवाद करा कर प्रकाशित करें। इस विषयमें जैन समाजके नवयुवकोंसे कहूंगा कि आप क्या कर रहे हैं? आप निद्राको छोड़ दें, सुधारशास्त्रको गृहण कर पवित्र जैन धर्मकी वेदी पर चढ़ कर शपथ खावें कि आजसे हम प्राणान्त होनेपर भी जैन समाजको उन्नतिके लिये पीछा पैर न देंगे। देखते २ धर्मके नाम पर बलि हो जायगें पर जैन धर्मकी ध्वजाके नीचे सारे संसारको ला देंगे। "नागींय विशारद"

કુડચીનો ભીષણ અત્યાચાર.

તપાસ સમિતિનો મનનીય અહેવાલ.

મહત્વના મુદ્દાઓ; વિચારણીય ભલામણો.

સત્તાવાળાઓની ઉપેક્ષા.

સરકારી મનોદશાનો નિષેધ.

કુડચીના ભીષણ અત્યાચાર વિશે તપાસ કરવા માટે જે સમિતિ નીમાઇ હતી તેનો ૩૨ પૃષ્ઠનો સવિસ્તર સચિત્ર અહેવાલ એ કમીટી તરફથી અંગ્રેજી ભાષામાં તાજેતર પ્રગટ થયો છે. મજકુર સમિતિના પ્રમુખ તરીકે મુંબઇના જાણીતી સોલીસીટર શ્રી દીપચંદ બી. શાહ જેને કામ કર્યું હતું જ્યારે મુંબઇના દિ. જૈન યુવક મંડળના પ્રતિનિધિ શ્રી. જે. એચ. શાહ મંત્રીપદે નિયુક્ત થયા હતા શ્રી ચીમનલાલ જે. વખારીઆ બી. એ., એલ. એલ. બી., મુંબઇ ધારાસભાના સભ્ય શ્રી. વામન મુકાદમ, બેલગામવાસી શ્રી યશવંતરાવ આંકલે વકીલ, સાંગલીના શ્રી. બી. બી. પાટીલ બી. એ. એલ. એલ. બી., મુંબઇ હિન્દુ મહાસભાના મંત્રી શ્રી શ્રીપાદ નવરે અને દક્ષિણ હિંદુ મહાસભાવાલા શ્રી. એચ. એમ. જોષી અન્વેષણ સમિતિના સભ્યો હતા.

સમિતિના અહેવાલનો સંક્ષિપ્ત સાર નીચે મુજબ છે:—

આમુખ.

દિ. જૈન યુવક મંડળ અને જૈન યુવક સંઘે તા. ૧૩ મી ઓકટોબર સને ૧૯૨૯ ને દિને જે જાહેર સભા મુંબાઇમાં બોલાવી હતી તે સભામાં તપાસ કમીટી નીમવાનો ઠરાવ થયો હતો. મજકુર સમિતિએ દરેક બાબતમાં ઘટતી તપાસ કરી ભલામણો ને મુદ્દાઓના સંબંધમાં તે સર્વાનુમતે નિર્ણય ઉપર આવેલ છે.

સરકારની નીતિ એક કોમનો પક્ષપાત લઇ બીજી કોમને હેરાન કરવાની ને સરકાર કોમી ઝઘડાનું મુખ્ય કારણ છે તેનું આ

રીપોર્ટ એક જવલંત ઉદાહરણ છે. સરકારની આવી નીતિએ કારોબારનો એવો તો પગ પેસારો કરી દીધો કે એક મુસ્લીમ પટાવાળો પોતે ગંભીર રીતે દોષિત હોય છતાં પણ પોતાની નોકરી માટે તે સહી સલામત રહી શકે છે. આવી સ્થિતીમાં સરકારથી કાયદો ને વ્યવસ્થા તથા ન્યાયનું યથાર્થ પાલન થઇ શકે ?

અમે કરેલી તપાસ ઉપરથી જણાયું છે કે મુસ્લીમો પોતાને હિંદુઓ કરતાં ચઢીયાતા ગણે છે. તેમની ઉપર સત્તાવાળાઓનું કંઇ ચાલતું નથી. ધર્માનુષ્ઠાનમાં તેઓ બીજી જાતિઓ ઉપર અનેક વિઘ્ન બાધ નાખે છે. આમ ઘણા વર્ષ થયાં ચાલતું આવે છે. સરકારને સત્તાવાળાઓની ઉપેક્ષાને લઇને મુસ્લીમોની અન્યાયી વૃત્તિએ વધારે ભયંકર સ્વરૂપ લીધા કર્યું. આનો પરિણામ રૂપે મુસ્લીમોને હાથે જૈનો ઉપર અસહ્ય ને અમાનુષિ અત્યાચાર થયો.

અમને લાગે છે કે જો સરકાર હાલની નીતિ ચાલુ રાખશે તો કોમી વિદ્વેષનું વિષ વધુ ફેલાશે ને સરકારને કાયદો જાળવવાનું મુશ્કેલ થઇ પડશે. કુડચીના હિંદુઓ મુસ્લીમોની દયા ઉપર જીવે એ સ્થિતિ ઇષ્ટ હોઇ શકે નહિ. ઇનામદારની ઇચ્છા અનુસારજ હિંદુઓને જમીન મળે, તેમનું ખાવું પીવું ને બધી હીલચાલ મુસ્લીમોને આધીન રહીનેજ થતી હોય ટુંકામાં હિંદુઓ જાણે નિર્જીવ જેવા હોય એ સ્થિતિ અસહ્ય છે. સરકારની હાલની મનોદશા જોતાં હિંદુઓની મનોદશામાં પલટાની જરૂર છે. હિંદુઓએ પોતાના ને પોતાના ધર્મના રક્ષણ માટે કટિબદ્ધ થવાની આવશ્યકતા છે. હિંદુઓની દરેક ન્યાત જાતે આ મહત્વની વાત લક્ષમાં રાખવી જોઇએ.

કુડચી.

કુડચી ગામ બેલગામ જીલ્લામાં આવેલું છે. તેની વસ્તી આશરે છ હજાર માણસની છે. આઠસો વર્ષ ઉપર એક જૈન રાજાએ ત્યાં શ્રી નેમનાથનું મંદિર બંધાવ્યું હતું. બીજાપુરના રાજા આદીલશાહે કુડચી ગામ પોતાની પુત્રીને પહેરામણીમાં આપ્યું હતું અને મરલણી નામની પોતાની બેગમ ત્યાં ગુજરી જતાં તેના નામનો રોજો બંધાવ્યો હતો. આ પ્રમાણે આ ગામ એક શાહજાદીનું ઇનામી ગામ થવાથી ને ત્યાં બેગમનો રોજો બંધાવાથી તે મુસ્લીમોને માટે મહત્વનું થઇ પડયું. આદીલશાહની સત્તા ઘટી ત્યારેજ મુસ્લીમોને માટે એ ગામનું મહત્વ ઓછું થઇ પડયું. મરાઠાઓની સત્તાનું પ્રાબલ્ય થતાં હિંદુઓ સત્તામાં આવ્યા ને તેઓ નિરાબાધ રીતે રહી શકતા હતા. જ્યારથી બ્રિટિશ રાજ્યની સ્થાપના થઇ ત્યારથી મુસ્લીમોનું પ્રાબલ્ય પાછું થયું, તેમણે કેટલાક હિંદુઓને મુસલમાન પણ બનાવ્યા. તેમની સંખ્યા વધી. તેઓ ઇનામદાર ન હોવા છતાં ઇનામદાર પણ બની ગયા. ગામ મુસ્લીમોનું નથી પછી મુસ્લીમોનું ઇનામદાર શાનું ?

છ હજારની વસ્તીમાં હિંદુઓની વસ્તી માત્ર હજારેક માણસની છે. બાકીની વસ્તી મુસ્લીમોની છે. હિંદુઓમાં જૈન, લીંગાયત ને બીજા હિંદુઓનો સમાવેશ થાય છે, આમાં મરાઠા ભરવાડો ને લીંગાયતોને પોતાની મૂર્તિ નથી, એ ખાસ લક્ષમાં લેવા જેવું છે. જૈનોના બે મંદિર છે ને તેમાં તેઓ પુજા કરે છે જે વાત મુસ્લીમોને બીલકુલ પસંદ નથી. બીજા હિંદુઓ મૂર્તિ પૂજા કરવાનું ઇચ્છે છે, પણ મુસ્લીમો તેમની ઇચ્છા બર લાવવા દેતા નથી એટલે તેમનાથી મૂર્તિપૂજા થઇ શકતી નથી.

મુસ્લીમો હિંદુઓ આમળ પીરની પૂજા પણ કરાવે છે. શિવનું એક મંદિર છે, પણ તેનું લીંગ નથી. હિંદુઓ મૂર્તિ લાવે તો મુસ્લીમો તે લઇ જાય છે કે ભાંગી નાંખે છે. આથી હિંદુઓને પીપળાના ઝાડની પુજા કે એવીજ કોઇ પુજા કરીને ચલાવી લેવું પડે છે.

જૈનોનો ઇતિહાસ.

બાર વર્ષ ઉપર જ્યારે ચતુર્થોનું મંદિર ફરી બંધાવા માંડયું ત્યારે સરકારના ટેકાથી મુસ્લીમોએ

તેમને અંતરાય નાખવા માંડી. તેમણે મંદિરનો થોડોક ભાગ પાડી પણ નાખ્યો. સત્તાવાળાઓને બીવરાવ્યા પણ ખરા. આથી પોલીસે જૈનોને મંદિરનું કામ આગળ ચલાવતાં અટકાવ્યાં. તે પછી મુસ્લીમોનું આક્રમણ વધતુંજ ગયું. તેમણે જૈનોને તેમના ઘરમાં પણ સતામણી કરવા માંડી. છ વર્ષ ઉપર મુસ્લીમોએ પંચમ મંદિર પર હલ્લો કર્યો ને મૂર્તિઓ ભાંગી નાંખી. એ મૂર્તિ ચોરી પણ ગયા. બે વર્ષ ઉપર મુસ્લીમોએ એક ગૃહસ્થને મંદિરમાં પૂજા કરતાં ઘણીજ અંતરાયો કરી હતી. આમ સરકારી સત્તાવાળાઓની ઉપેક્ષા-વૃત્તિને લીધે મુસ્લીમો અને જૈનો વચ્ચેનો વિદ્વેષ વધતોજ ગયો.

જુને ૧૯૨૯ નો અત્યાચાર.

પીરની પૂજા કરવાની જૈનોએ ના પાડયાથી મુસ્લીમોને જૈનો ઉપર જે વિદ્વેષ ઉત્પન્ન થયો તેથી મુસ્લીમોની જૈનો ઉપર કરડી દૃષ્ટિ વધી. કેટલાંક ધાર્મિક ફંડોમાં નાણાં ભરવાની જૈનોએ ના પાડી એટલે મુસ્લીમોનો કોપાનલ વધી પડયો અને પરિણામે મુસ્લીમોએ તા. ૧૭ મી જુને એટલે (કતલની રાત્રિ)એ મંદિર ઉપર હુમલો કર્યો ને મૂર્તિઓ ભાંગી નાંખી. હુમલો કરનારાઓની સંખ્યા ૨૦-૨૫ જેટલી હતી. તેઓ બધા મુસલીમ હતા ને તેમના હાથમાં લાકડીઓ હતી. મૂળનાયક શ્રી પાર્શ્વનાથની મૂર્તિ પણ ભાંગી નાંખવામાં આવી હતી. મૂર્તિઓના કેટલાક કકડા મુસ્લીમ હુલ્લડખોરોએ નદીમાં નાંખી દીધા હતા. એ ઉપરાંત તેમણે કેટલીક ચોરી પણ કરી હતી.

આ અત્યાચાર સંબંધી પાંચ ફોટો પણ આ હેવાલમાં આપવામાં આવ્યા છે જેની વીગત નીચે મુજબ છેઃ—

(૧) મુસલમાનોએ જે જગ્યા પર ચતુર્થ જૈનોને મંદિર બાંધવામાં અટકાવ કરેલો તે જગ્યા.

(૨) છ વર્ષ ઉપર મુસલમાનોએ મૂર્તિઓ ખંડિત કરી હતી તે પંચમ જૈન મંદિરની જગ્યા.

(૩) તા. ૧૭ જુન ૧૯૨૯ દિને મૂર્તિઓ ખંડિત કરવા પછીના ચતુર્થ જૈન મંદિરની સ્થિતી.

(૪) ખંડિત કરેલી મૂર્તિઓનો ગ્રૂપ.

(૫) મૂળ નાયક શ્રી પાર્શ્વનાથની ખંડિત કરેલી મૂર્તિના કકડાઓ ગોઠવાયા પછીનું મૂર્તિનું દૃશ્ય.

આટલાથી ન ધરાતાં તેમણે જૈનોને ડરાવવા માંડયા. તા. ૧૯ મી જુને મંદિર સાથેનું મકાન જે મંદિરની મીલકત હતી તેની ઉપર હુમલો કરી તેનો નાશ કર્યો. તા. ૨૦ મીએ સભા ભરી તેમણે જૈનોને પજવવાનો ઠરાવ કર્યો. 'દીન દીન' ની બાંગ પોકારી જૈનોની માલ મીલકત ઝુંટવી લેવાની તેમણે પ્રતિજ્ઞા કરી. જમખંડીકરના મઠ ઉપર હલ્લો કરવાનો તેમણે નિર્ધાર કર્યો હતો પણ પોલીસ ફોજદાર વચ્ચે પડયાથી તેઓ ફાવી શકયા ન હતા. આ ઉપરાંત તેમણે જૈનોનું ઘાસ ચોરી લીધું એટલુંજ નહિ પણ જૈનોને નદીમાંથી પાણી લાવવા કે ખેતરમાંથી ઘાસચારો લાવતા અટકાવ્યા હતા. જૈનો ઉપર હુમલો કરી તેમને માર માર્યો હતો. નદીમાં લૂગડાં ધોતાં પણ અટકાવવામાં આવ્યા હતા.

આ ઉપરાંત હજામ, ધોબી, સુથાર વગેરે જૈનોનું કંઇ કામકાજ ન કરે તે માટે મુસ્લીમોએ ખાસ કાળજી રાખી હતી. જૈન ગલીઓમાં 'દીન દીન' નો પોકાર કરતા ફર્યા હતા. કેટલાક મુસ્લીમો એક જૈનની દુકાનમાંથી કેટલાંક લૂગડાં પણ લઇ ગયા હતા.

એક સાક્ષીના કહેવા મુજબ એક ગૃહસ્થને ત્યાં ત્રણ મુસ્લીમ બાળકો ગયા હતા ને પોતાની સાથે લીધેલ મરેલું પાડું તેના ઘરમાં નાખ્યું હતું, પોતાની ભેંસને સાથે લીધેલ હતી, તે ભેંસને ઘરવાળાની ભેંસે મારી છે એમ કહી રૂ. સો. નુકશાનીના માંગી નુકશાની ન આપે તો માર મારવાની ને મોઢામાં હાડકાં નાખવાની ધમકી આપી હતી. એક હાડકું લઇ હુમલો કર્યો હતો.

છેવટે ૩૫ રૂપીઆ આપ્યા ત્યારેજ ઘરવાળાનો છુટકારો થયો હતો. તા. ૨૦મીની રાત્રે મુસ્લીમોએ એક ખેડુતને પાંચ કલાક સુધી ગોંધી રાખ્યો હતો.

તા. ૨૨ મીએ મુસ્લીમોએ એક જૈનનું ઘર તોડી પાડયું હતું. તેનું ગાડું તળાવમાં ફેંકી દઇ પાણીના વાસણમાં મરેલો કાગડો નાખ્યો હતો. ઘર ઉપર પત્થરો ફેંકવા ઉપરાંત ઘરમાં માંસ પણ નાખ્યું હતું. એક બીજા જૈનના ઘર ઉપર ભાંગેલી મૂર્તિના ટુકડા ને હાડકાં લટકાવ્યા હતા !

કેટલાક મુસ્લીમોએ ખેતરમાંથી હળ વગેરે ચોરવાનું ને મંદિરમાં શાસ્ત્ર શ્રવણ વખતે ધણી ચીજો નાખવાનું કામ પણ કર્યું હતું.

સત્તાવાળાઓની ઉપેક્ષા.

મુસ્લીમોના અત્યાચારોના સંબંધમાં સત્તાવાળાઓની ઉપેક્ષા વૃત્તિ અક્ષંતવ્યજ કહી શકાય. તેમણે અત્યાચારોના સંબંધમાં તપાસ કરી નહિ. જૈનોને ઇન્સાફ આપવાની પરવા પણ કરી નહિ. જે રાત્રે મૂર્તિ ભાંગવાનો અત્યાચાર થયો હતો તે રાત્રે ફોજદાર મી. પહાણુ કુડચીમાંજ હતા. તેમને અત્યાચાર વિષે ખબર અપાઇ તો બીજે દિવસે એક મુસ્લીમ કારકુનને પંચનામું કરવા મોકલ્યો. કારકુને ગુન્હેગારોને કબજામાં લીધા નહિ, કોઇ તપાસ પણ કરી ન હતી. મામલતદારને આ ભીષણ કાંડના સંબંધમાં અરજી થઇ તો તેઓ અથણીથી તા. ૨૬ મી સુધી આવ્યાજ નહિ. સમાધાની કરાવવાનું બહાનું કાઢી તેમણે તા. ૨૭ મીએ જૈનોનું કોઇ લેખિત નિવેદન લેવાની પણ ના પાડી હતી. વળી કુડચી એ ઇનામી ગામ હોવાનું કહી મુસ્લીમોના પીરની પૂજા કરવાનું પણ તેમણે કહ્યું હતું !!!

મામલતદારે બહુમતી સાથે વૈર ન કરવાનું જણાવી લઘુમતીની રક્ષા કરવાની તત્પરતા દાખવી ન હતી. આવી વૃત્તિથી વિદ્વેષનો દાવાનલ વધી પડયો. મામલતદારે પીરની પૂજા કરવાનું કહી જૈનોને પીરની દરગાહ આગળ આવવાનું પણ કહ્યું હતું. આ વાત ઘણા જૈનોએ માન્ય રાખી ન હતી જોકે થોડાક જૈનો જેઓ ગયા હતા તેમના કાર્યને મામલતદાર મી. કુરકર્ણી ને મુસ્લીમોએ ખૂબ વખાણ્યું હતું !

મામલતદાર હિંદુ હોવા છતાં તેણે દરગાહને નમન પણ કર્યું હતું.

આઠેક દિવસ પછી બેલગામના કલેકટર તપાસ માટે આવતાં મુસ્લીમોએ બીજી જગ્યાએ મંદિર બાંધી આપવાની ખુશી બતાવી હતી પણ જૈનોએ એક મંદિરમાંથી મૂર્તિ ખસેડવાની નાખુશી જણાવતાં મુસ્લીમોએ ગામ બહાર મંદિર બાંધી આપવાની જીદ પકડી હતી.

છેવટે મૂર્તિ ખસેડવાની શરતે જૈનોની તરફેણમાં નિર્ણય કરાવી આપવાનું મામલતદારે વચન આપ્યું હતું. નવું મંદિર બંધાતા સુધી જૂના મંદિરમાં પૂજા કરવા કલેકટરે જૈનોને સમજાવ્યા હતા, પણ થોડા વખત બાદ મુસ્લીમોએ ફરી જઇ મંદિર માટે કંઇપણ સામાન પૂરો પાડવાની ના પાડી હતી. આથી કલેકટર ને મામલતદારને ઘટતી અરજીઓ થઇ. મામલતદારે બે એક મહીને અરજીઓ પાછી મોકલાવી, ફોજદારને અરજ કરવા જૈનોને જણાવ્યું. ફોજદારને અરજી થવાં તેણે અરજનો સ્વીકાર કરવાની પણ ના પાડી. તા. ૧૬ મી અકટોબરે મામલતદાર પાછા આવતાં તેણે બન્ને પક્ષના નિવેદન લીધાં. છેવટે શ્રી. આપા સાહેબ કાકુના ઘરમાં મૂર્તિઓ લઇ જવાની ને નહિતર મંદિર બંધ કરવાની મામલતદારે ધમકી આપી એટલે જૈનોને મૂર્તિઓ ખસેડવાનું પરાણે સ્વીકારવું પડયું.

ફોજદાર અરજી લે નહિ, તપાસ કરે નહિ, અરજીમાં ગુન્હેગારોના નામ લખવા પણ દે નહિ. પોલીસ પટેલ પણ મુસ્લીમ હોવાથી તેણે મુસ્લીમોની અત્યાચારી વૃત્તિ અંકુશમાં મુકવાને કંઇ પણ કર્યું નહિ. આવું ઘણુંયે બન્યું.

સરકારની બેદરકારી.

તા. ૧૭ મી જુને અત્યાચાર થયો. અત્યાચારના સંબંધમાં બીજેજ દિવસે મામલતદાર,

કલેકટર વગેરેને અરજી થઇ, તા. ૨૩ મીએ ઇચલ કરંજીમાં સભા ભરાઇ, કલેકટર, કમીશનર ને ગવર્નરને ઘટતું કરવા અરજ થઇ. તા. ૭ મી જુલાઇએ મુંબઇમાં સભા ભરાઇ ને તેજ અમલદારોને વચ્ચે પડવા વિનંતિ થઇ. હિંદના જુદા જુદા ભાગોમાંથી પણ સત્તાવાળાઓને સંખ્યાબંધ અરજો થઇ. તા. ૨૨ મી જુલાઇએ દક્ષિણ વિભાગના કમીશનરને ૩૨૫ જઇનોએ અરજ કરી. જુલાઇ માસમાં હિંદના જૂદાં જૂદાં ૧૪ મથકોમાં જે સભાઓ ભરાઇ હતી તે સભાઓના ઠરાવોની નકલો ને ઘટતી અરજો કલેકટર, કમીશનર ને ગવર્નરને મોકલવામાં આવી હતી. આ બધાનું પરિણામ માત્ર એ આવ્યું કે ગવર્નરે અરજી હોમ ડીપાર્ટમેન્ટને મોકલાવી આપી. કલેકટરે કંઇ ન કરતાં અરજીઓથી ને એવી બીજી હીલચાલથી મામલો વધુ બગડશે એમ જણાવ્યું. ગવર્નરે કેટલાક દિવસ સુધી સંખ્યાબંધ તારોના જવાબ પણ ન આપ્યા. આ બધા ઉપરથી એમજ કહી શકાય કે સરકાર ને સત્તાવાળાઓની બેદરકારીને લીધેજ જઇનોને ઘણું ખમવું પડયું છે.

બેલગામના કલેકટરે તા, ૧૨ મી ડીસેમ્બરે શ્રી. ભારતવર્ષીય દિગમ્બર જૈન મહાસભાના સામાન્ય મંત્રી ઉપર તેમની અરજીનો જે જવાબ લખ્યો છે તે ઉપરથી સરકારની બેદરકારીનો સરસ ખ્યાલ આવી શકે છે. તેમણે અરજીના જવાબમાં જણાવ્યું હતું કે ગુન્હેગાર દેખીતી રીતે જૈન હતો! સમાધાની થઇ ગઇ છે. તેથીજ ગુન્હેગાર સામેનો કેસ ખેંચી લેવામાં આવ્યો છે.

છેવટના નિર્ણયો અને ભલામણો.

રીપોર્ટમાં જણાવેલી વિગતો ઉપરથી જણાશે કે હિંદુઓ અને ખાસ રીતે જૈનોની કુડચીમાં લઘુમતી છે. તેમનાથી સામાજીક કે ધાર્મિક હિત જાળવવાનું મુશ્કેલ છે. મુસ્લીમોની ગામમાં સત્તા હોવાથી તેઓ તથા તેમની બધી માલ મીલ્કત મુસ્લીમોની દયા ઉપરજ ટકી શકે છે. મુસ્લીમોએ જૈનોની લાગણી દુખવવાના અનેક કરપીણ કામો કર્યાં છતાં સત્તાવાળાઓ તે વિષે ઉપેક્ષાવંતજ રહ્યા. મુસ્લીમો જૈનોને ન સતાવે એવી રીતના સત્તાવાળાઓએ કંઇપણ પગલાં લીધાંજ નહિ. ભવિષ્યમાં ભીષણ અત્યાચારો ન થાય તે માટે સરકારે કંઇપણ પગલાં લીધાં નથી કે તે વિષે કંઇપણ નિર્દેશ સરકાર તરફથી થયો નથી. મુસ્લીમો સંખ્યામાં બળવાન હોવાથી તેઓ જઇનો ને બીજા હિંદુઓને દબાવેલાજ રાખે છે.

સરકારે વસ્તુ સ્થિતિનો વિચાર કરી ન્યાયનું પાલન કરવું જોઇએ. આ રીપોર્ટ સરકાર ને જૈન જાતિના હિત માટે તૈયાર થયો છે. સરકાર એક જાતિ ઉપર મહેરબાની દેખાડે છે ને બીજી ઉપર ઉલટી વૃત્તિ રાખે એ ઠીક નથી. જૈનોના હકનું સરકારે રક્ષણ કરવુંજ જોઇએ.

પોતાનીજ જમીન ઉપર મંદિરો બાંધવાના જૈનોના હકનો સરકારે સ્વીકાર કરવો જોઇએ એમ અહેવાલ ઉપરથી સ્પષ્ટ થાય છે. તેમના ધર્માનુષ્ઠાનમાં મુસ્લીમો તરફથી કોઇ પણ પ્રકારનો બાધ ન નડવો જોઇએ. મુસ્લીમો જઇનોના હક ઉપર આક્રમણ કરે એ સરકારે સાંખી લેવું નજ જોઇએ.

સરકારના સત્તાવાળાઓ અત્યાચારના સંબંધમાં સુસ્ત અને બેદરકાર જણાયા છે. ન્યાયને બદલે તેમણે મહેરબાની દેખાડવાની વૃત્તિ રાખી છે. મામલતદાર કે ફોજદારને ન્યાયી કે બીન પક્ષપાતી વૃત્તિનો ખ્યાલ નથી. તેઓ નિર્દોષ માણસોની સતામણી થાય છતાં ઉપેક્ષાવંત રહ્યા છે, ગુન્હા ઉપર ઢાંક પીછોડો પણ કરેલ છે.

જૈનોને કોઇ પણ પ્રકારનો બદલો મળતો નથી તેમ હુલ્લડખોરો તરફથી સલામતીની ખાત્રી તેમને મળતી નથી, એ વાત સૌથી નવાઇ પમાડે તેવી છે. નાના અમલદારોની બેદરકારી પણ ઓછી નવાઇ પમાડે તેવી નથી.

જે જે બનાવો બન્યા છે તે ઉપરથી જણાય છે કે કુડચીમાં ન્યાય મળવાનું આશક્ય છે. જૈનોને થયેલ ભયંકર અન્યાયનું નિવારણ થયું નથી. સરકાર કોઈ પણ મુસ્લીમને પકડતી નથી એ પણ ઓછા આશ્ચર્યની વાત નથી. સરકાર તરફથી કંઈ તપાસ થતી નથી ને જ્યારે અરજીઓ થઈ ત્યારે ન્યાયયુક્ત સમાધાનીને બહાને સરકાર કંઈ વધુ તપાસ ચલાવતીજ નથી.

જૈનોને પોતાની જમીન ઉપર મંદિર બાંધવાનો હક્ક જોઈએ છે. તેમનાથી એક જગ્યાએથી બીજી જગ્યાએ મૂર્તિ ખસેડી શકાય નહિ કારણ કે આવું કૃત્ય ધર્મથી વિરૂદ્ધ છે, આથી મંદિર માટે કોઈ બીજી જગ્યા નકામી ને અગવડ રૂપ છે, આ ઉપરાંત સરકારે જૈનોને મુસ્લીમો તરફથી હવે પજવણી નહિ થાય તેની પૂરે પૂરી સંતોષ કારક ખાત્રી આપવી જોઈએ. સરકારે ગુન્હેગારોને શોધી કાઢી તેઓને સજા કરવી જોઈએ. મામલતદાર, ફોજદર ને પટેલ જેઓ પોતાની ફરજ બજાવવામાં બેદરકાર રહ્યા તેમને પણ સજા થવી જોઈએ.

જૈનોએ પોતાના પ્રયત્નથી પોતાના હિતનું રક્ષણ કરવા પગલાં લેવા જોઈએ. તેમણે કોઈ પણ આક્રમણ સામે થવા તૈયાર થવું જોઈએ.

સરકારે ગામમાં થોડોક વખત સુધી વધુ પોલીસ મુકવી જોઈએ. આનો ખર્ચ મુસ્લીમ શહેરીઓ પાસેથી લેવાવો જોઈએ. વળી જે જગ્યાએ મંદિર હતું ત્યાંજ મંદિર બાંધવાની જૈનોને પરવાનગી આપવી જોઈએ.

સરકારે અત્યાચાર ને માલ મીલ્કતના નુકશાનથી જૈનોને થયેલ નુકશાનનો બદલો તેમને મળે તે માટે ઘટતું કરવું જોઈએ. વળી આવો ભીષણકાંડ ફરી ન બને તે માટે પણ ઘટતાં સખ્ત પગલાં ત્વરિતતાથી લેવાવાં જોઈએ.

અંગ્રેજી ઉપરથી ગુજરાતી અનુવાદક—

ગીરધરલાલ ડુંગરશી શેઠ-સુરત.

નોટ—આ તપાસ કમીટીએ મોડા મોડા પણ આ રિપોર્ટ બહાર પાડી આ અત્યાચાર પર ઘણું અજવાળું પાડયું છે. એથી જણાઈ આવે છે કે કુડચીમાં જૈનો ઉપર કેવો અસહ્ય જુલમ અને અત્યાચાર મુસલમાનો તરફથી થયો હતો અને હજુ પણ કુડચીના જૈનો નિરાંતે બેસી શકતા નથી—અર્થાત અનેક તરેહની સતામણી થયાજ કરે છે. દિ. જૈન યુવક મંડળ મુંબાઈએ આ કાર્યમાં ઉત્તમ ફાળો આપ્યો છે તે માટે આખી જૈન સમાજ તેની આભારી છે અને આ મંડળે આટલેથી બેસી ન રહેતાં આ રિપોર્ટની નકલો બેલગામ કલેક્ટર, મુંબઈ ગવર્નર વગેરે પર મોકલી ઘટતી દાદ મેળવવા માટે છેક સુધી બરાબર પ્રયત્ન જારી રાખવો જોઈએ, ત્યારેજ કુડચીના જૈનોને કંઈ રાહત મળશે અને આપણા હકોની રક્ષા થઈ શકશે.

—⊱⊰—

ગુજરાતના દિગંબર જૈનો

અને

સ્વદેશ પ્રેમ.

મારા એક મિત્રે કંપાલા સાર્વજનિક લાયબ્રેરીમાં મને પુછ્યું કે-મોહનલાલ? **તમારા દિગંબર જૈનો ગુજરાત વિભાગમાં સ્વદેશ પ્રેમ શું છે. તે સમજતા નથી કેમ?** મેં પુછ્યું. આજે તમારે એ પુછવાની કાંઈ જરૂર. મારા તે મિત્રે કહ્યું મને લાગે છે કે-ગુજરાતના શ્વેતાંબર જૈનો કરતાં તમારા દિગંબર જૈનો સ્વદેશ સેવામાં પાછળ છો? હું નિસ્તેજ થયો, શું જવાબ આપવો તેના વિચારમાં, અંતે મન દ્રઢ કરી કહ્યું. ભાઈ, હું હિંદુસ્તાનથી ઘણોજ દૂર છું. જેથી મને ત્યાંની હકીકતની પુર્ણ માહિતી નથી. મારો તે મિત્ર મારો જવાબ સાંભળી જુસ્સામાં આવી ગયો. ને ટકોર તરીકે-નાનો બાળક હઈશ, શું હું નથી જાણતો કે-તું તારા

સમાજનાં દિગંબર જૈન અને બીજાં જૈન પેપરો મંગાવતો હોઇ કાંઇક લખાણ પણ લખી શકે છે ?

મેં હાથ મારી કહ્યું- ભાઇ, તે બધો શ્રી **સરસ્વતી દેવીની મહેરબાનીનો પ્રસાદ છે.** પણ ત્યાં કેમ હશે ? તેનું યથોચિત વર્ણન હું ક્યાંથી જાણું ? મારો તે મિત્ર છેડાઇ ગયો. અને બોલ્યો—મોહન મોહન ? વિચાર કરી પછીજ જવાબ આપ, શું તુંજ નહોતો કહેતો કે-જૈન **સમાજના સારા ભાગ્યે સ્વરાજ્યના રણુ યજ્ઞમાં નોકરશાહી દ્વારા જેલના મહેમાન બનવાનું પ્રથમ માન અંકલેશ્વર નિવાસી ભાઈ છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધી દિગંબર જૈનનેજ** પ્રાપ્ત થએલ છે. શું તું નહોતો કહેતો **કે-ભામાશાના વંશજ હમે જૈનો સ્વરાજ્યના રણયજ્ઞમાં પાછળ નહિજ રહીએ,** શું તું નહોતો કહેતો કે-કષાયો ઉપર જય **મેળવનાર હમે જૈનો અસહકારનો** અર્થ **જેટલી ઝડપથી સમજી શકીએ,** એટલી ઝડપથી ભાગ્યેજ બીજા સમજી શકતા હશે. વળી તું એમ નહોતો કહેતો કે-**હમારો દિગંબર જૈન સમાજ મહાત્મા ગાંધીના ફરમાન માત્રને માનવા એક પગે તૈયાર છે ?**

મારા અગાઉ બોલેલા શબ્દોના વાક્બાણથી હું સજ્જડજ થઇ ગયો. મારાથી એક પણ જવાબ આપી શકાયો નહિ, કેમકે મેં જેજે વખતે દિગંબર જૈન સમાજનું અભિમાન રાખી તેની સાથે વાત કરેલી તે, બધી વાતને આમ તેણે ફટકા લગાવવામાં સ્પષ્ટ કરીદીધી. છેવટે નિરાશ હૃદયે મેં કહ્યું—ભાઇ કહે, તારે કહેવાનો વખત છે તે મારે સાંભળવાનો વખત છે. પણ મહેરબાની કરી જરા સ્પષ્ટ તો કહે કે—આજે તું મારા ગુજરાતી દિ. જૈન સમાજ પછાડી 'કટાક્ષ કરવા કેમ નિકળી પડ્યો છે.'

મારો તે મિત્ર ઘણોજ ઉશ્કેરાય ગયો. તે કહેવા લાગ્યો કે-જરા આંખ ફાડી જો કે તારા દિગંબર જૈનોની કઇ વ્યક્તિએ ગુજરાતમાંથી **પૂજ્ય. છોટાલાલ ગાંધી અને ભાઇ સરૈયા તથા બીજા ૫-૭ ભાઇઓ સિવાય સ્વદેશ સેવામાં ભાગ લીધો ? કઈ જ્ઞાતિએ જમણવારો બંધ કર્યાં,** કઇ જ્ઞાતિમાંથી સ્વયંસેવક તૈયાર થઇ સંગ્રામે ચઢ્યા, કઇ જ્ઞાતિના યુવકોએ સ્વદેશી વ્રત લઇ **પરદેશી કાપડ પહેરનાર માટે મંદિર પર પીકેટીંગ કર્યું ?** શું તું મને બાળકજ સમજતો હઇશ. વિચાર કર, હું હંમેશ વર્તમાનપત્રોમાં નજર નાંખું છું. તારેજ ત્યાં આવતાં જૈનમિત્ર, દિગંબર જૈન, નવ ગુજરાત, સનાતન જૈન, મુંબઇ જૈન યુવક સંઘ પત્રિકા, બાળજીવન, આત્માનંદ આદિ પત્રો હમેશ મનન પૂર્વક વાંચું છું. તારાજ પ્રતાપે કાંઇક જૈન તત્વજ્ઞાન તરફ પ્રીતિવાળો થયો છું. છતાં તું મને ઉલટો સવાલ કરે છે ! ખેદ છે મોહન, તારી બુદ્ધિ પર નહિ, અરે તારી માન્યતા પર, તું આંખ ખોલીને જો, હિંદુસ્થાન આખું અત્યારે આઝાદીને પંથે ગમન કરે છે. મહાત્મા ગાંધી, રાષ્ટ્રપતિ જવાહીરલાલ, પંડિત નેહરુ, સરદાર વલ્લભભાઇ જેવા વીર પુરૂષો જેલ મહેલના મહેમાન બની એક શેર આટામાં શરીર તૃપ્તિ કરી હિંદ દેવી પ્રત્યેની ફરજ બજાવી રહ્યા છે. તે સમયે તમો દિગંબર જૈનો જાત જાતના મિષ્ટાનનાં જમણવાર, પછી તે લગ્નનાં કે મરોકાણનાં પણ જમતાં વિચારો સરખો કરતાં નથી. તમારાજ બંધુઓ જઇને અને વાણીઆ-ઓનું જોઇને પણ જમતાં શરમાતા નથી. શું **તમારા હૃદયમાંથી દેશ દાઝ માત્ર નાશ પામી છે. કે-તમારી જીહ્વા ઇંદ્રિય છોડતી નથી, કે-૧છી તમોને જમવાનો હડકવા વળગ્યો છે.** થયું છે શું ? વિચાર કરો, લાડ-ખડાયતા-શ્રીમાળી, શ્વેતાંબર જઇન, સ્થાનકવાસી જઇન વિગેરેએ જમણવાર બંધ કર્યા છે. મુંબઇના શ્વેતાંબર સમાજના દરેક પુરૂષે સામાજીક ઠરાવ કરી જમણવાર (નોકારસી સુદ્ધાંત) બંધ કર્યા છે, સ્થાનકવાસી બંધુઓએ પણ તેમાં સાથ દીધો છે.

તે વખતે તમે દિગંબરો ક્યાં કારણથી ઉંઘો છો, તે મને તો સમજાતું નથી. બોલ, મોહનલાલ! બોલ, જવાબ આપે છે? એમ નીચું ન જો? તું પણ એક દિગંબર જઇન અને તે પણ **સમાજની ઉંડી લાગણીવાળો** છે. તારી પણ આ દેશ યજ્ઞમાં ભાગ આપવાની ફરજ છે. એમ મૌન રાખે વળવાનું નથી, નહિ તો મારે તને **મૂર્ખ** માનીનેજ સંતોષ માનવો પડશે. કેમકે મહાત્મા ભર્તૃહરીએ કહ્યું છે. **કે—વિધાતાએ મૂરખને માટેજ મૌનની યોજના કરેલી છે.** પણ ના તું મૂરખ નથી તું ચકોર છે. મારે તારે હાથે હજી જઇન સિદ્ધાંતના ઉંડા રહસ્યોને સમજવાં છે. તારા સમાજને પણ તારા દ્વારા કેટલાંક કટાક્ષ ખમવાની જરૂર છે. માટેજ હું તને ખાસ દબાણ કરી કહું છું કે—તારા સમાજવાળાને લખી કાંઇક ઠરાવ કરાવ. તારી જ્ઞાતિવાળાને લખી વર્તમાન કાળે જમણવારો બંધ કરવા ઠરાવ કરાવ આમ બેસી શું રહે છે. કંઇક તો પ્રયત્ન કર.

મારા મિત્રના શબ્દો મને શલ્ય જેમ છાતીમાં કોરવા લાગ્યા, હું આંસું ખાળી શક્યો નહિ ને મારાથી રડી જવાયું. મારાં નેત્રમાં આંસુ જોઇને પણ મારો તે મિત્ર શાંત ન થયો. વળી તેણે ચલાવ્યું કે—

ભાઇ, તારા સમાજમાં પણ હવે તો યુવક મંડળો યુવક સંઘો સ્થપાયા છે તેઓ પણ સુઇ ગયાં હોય તેમ જણાય છે. મુંબઇનાજ વાતાવરણમાં ઉછરતા યુવકો પૈકી શ્વેતાંબર સમાજના યુવકોની પ્રવૃતિ જોઇને પણ દિગંબર સમાજના યુવકો કાંઇ કરતા નથી, આમ તમારા સમાજને થયું છે શું? શું તેઓ પોતાને હિંદી કહેતાં શરમાય છે. **કે—પછી વિશ્વાસઘાતી અમીચંદની પેઠે સ્વરાજ્ય યજ્ઞમાં વિશ્વાસઘાત કરવા ધાર્યો છે.**

અતિ હૃદય કઠણ કરી હું બોલ્યો—ભાઇ, હું તો જઇન માત્રને એકજ સમાજ ગણી, મને પોતાને જઇનજ કહેવરાવવા ઇચ્છું છું છતાં દિગંબર જઇન સમાજ તરફ મને જે લાગણી છે, તેથીજ હું તારાં આ વાકબાણો સાંભળી રહ્યો છું. ભાઇ, હમારા સમાજમાં **સ્વર્ગીય જૈન-કુલ ભૂષણ દાનવીર શેઠ માણેકચંદજીના ગુજરી ગયા પછી કોઇ આગેવાનજ નથી. હમારા સમાજની એકજ સંસ્થા મુંબઇ દિ૦ જૈન પ્રાંતિક સભા હાલ કુંભકરણની નિંદ્રામાં પડી છે. હમારા યુવકો વૃદ્ધોથી** ડરે છે—સોલીસીટરો-વકીલો—ગ્રેજ્યુએટોને ધંધાની પડી છે. હવે હમારો સમાજ આમ નાયક વિનાનો થઇ એકડા વિનાના સો મીંડાં જેવો નકામો થઇ પડ્યો છે. મધ્યસ્થ વર્ગના જે પુરૂષો કાંઇક દેશદાઝની ધગશવાળા છે, તેમને પણ આગળ આવેલાના આંખો આડા કાન જોઇ પાછા હઠવું પડે છે. નહિતો તેઓ જરૂર કાંઇક કરી શકે છે, તોપણ મુંબાઇમાં દિગંબર જઇન યુવક મંડળ દ્વારા કેટલાક દિ. જૈન યુવકો સારૂં કાર્ય કરી રહેલા છે.

ભાઇ, તું શાંત થા, મારી મેવાડા કોમે ઠરાવ કરીને નહિ, પણ શરમાઇને ચાલુ સાલે સોજીત્રા મુકામના લગ્ન ગાળામાં એક પણ બહુત જમણવાર કર્યું નથી. શાબાશી આપતા પહેલાં મારે સ્પષ્ટ કરવું પડશે કે—હા, **શ્રીમંત ને બારમાની અયોગ્ય નાતો તો કેટલાક કરેજ** જાય છે, પ્રભુ તેમને સન્મતિ આપી તેપણ બંધ કરાવે.

હું પાંચ હજાર માઇલ દૂર છું. ત્યાં હઉતો પણ એક હાથે શું કરી શકવાનો હતો?

વળી મારો મિત્ર છેડ્યો, મોહન, વાહરે, વાહ, શું **ગાંધીજી એકલા આખી બ્રિટીશ સલ્તનતને ધ્રુજાવતા નથી,** શું **વલ્લભભાઇ એકલા સમગ્ર ગુજરાતને દોરતા નથી, ચારિત્રવાન માણસ નિખાલસ દીલે જે રસ્તે ગમન કરે, જે રસ્તે જવાનો બોધ આપે તે રસ્તે દુનિઆને—સમાજને જવુંજ પડે છે. એ શું તું ભૂલી ગયો!** તારા સમાજને ચેતાવવા તારાથી કાંઇએ ન બને તો અહીંથી

તારા સમાજનાં જાહેર પત્રોમાં લખાણ લખ, સગાં-સ્નેહી મિત્રોને લખી તેમને તારા જેવા વિચારવાળા બનાવી-તેમના દ્વારા તારી જ્ઞાતિ સમાજનાં પંચ-મંડળોમાં **જમણવાર બંધ કરવાના, પરદેશી કાપડ પહેરી મંદિરમાં આવે તેના પર પીકેટીંગ કરવાના ઠરાવો** પાસ કરાવી તેમના દ્વારા તેનું સખત આંદોલન કરાવ, પછી જો જમણવાર બંધ થાય છે કે નહિ, સ્વદેશી કાપડ પહેરાય છે કે-નહિ!

જ્યારે **હિંદ માતાની મુક્તિના** રણજંગમાં **યુવાન, સ્ત્રી, પુરૂષો નોકરશાહીથી લાઠીના ભોગ થતા હોય, મહાત્મા ગાંધીજી અને નહેરૂ જેવા જેલની દિવાલોમાં સબડતા હોય,** ત્યારે આપણે મિષ્ટાન્ન જમવા, પરદેશી કાપડ પહેરવું તે શું વાસ્તવિક છે? ભાઇ, તું જરા પણ માઠું લગાડયા સિવાય તારા સમાજને સુધારવા પ્રયત્ન કર. તારી કડક કલમથી હું માહીતગાર છું. શું તું ભુલી ગયો કે-તારા એકજ વૃદ્ધ લગ્ન નિષેધ લેખથી તારી આખી જ્ઞાતિમાંથી વૃદ્ધ લગ્ન બંધ થયાં. શું તું ભુલી ગયો કે-તારા એકજ કટાક્ષથી પારણે ઝુલતા પોળીયાના વિવાહ (સગપણ) બંધ થઈ પડયા. એ તો એજ ખરૂં છે, કે-**યાહોમ કરીને પડો ફતેહ છે આગે.** આંખ મીંચી હૃદયને ઠીક લાગે, સત્ સ્વત્વની પ્રેરણા કરે તે સમાજ સુધારવા લખ્યાજ કરવું. **ઘણા ગડગડાટ પછી વરસાદને વરસવું પડે છે.** તેમ તારા સમાજને તારા જેવાના કલમ પ્રહારોથી સુધર્યા સિવાય છુટકો નથી, તમારા દિગંબર જૈનોમાં એટલું ઠીક છે કે-**સાધુ વર્ગ સામાજીક કાર્યોમાં માથું મારતો નથી.** શ્વેતાંબર જૈનોમાં તો કેટલાક કહેવાતા મુનિરાજો સંસારિક વ્યવહારમાં માથું મારી કાગનું પીંછ **વેતરી મારે છે. તમારો સમાજ શાણો છે** જેથી હું ધારૂં છું કે જરૂર આંદોલન કરે જમણવારો બંધ થશે, સાથે પરદેશી કાપડનો પણ ત્યાગ થશે. તેમજ યુવાન સ્ત્રી પુરૂષો દેશયજ્ઞમાં આહુતિ આપવા આગળ આવશે બોલ, તારૂં હૃદય શું કહે છે!

ભાઇ, બધું ખરૂં છે. તારા શબ્દ માત્ર સાચા છે-સમજણથી ભરેલા છે. હું તારો ઉપકાર માનું છું કે-તેં મને સમાજના શિરેથી આક્ષેપ ઉતારવાનો રસ્તો સુચવ્યો. હું આજેજ તે માટે **મારા સમાજના મુખ પત્ર દિગંબર જૈનમાં** લેખ લખીશ. પણ તે પહેલાં આજનો આપણો સંવાદ તો જરૂર લખી મોકલીશ. મારા ગુજરાતના દિ૦ જૈનો મારી મેવાડા કોમના ગુર્જરો એવા કઠણ હૃદયના તો નથી કે જે મારી વાત નહિ સાંભળે. તેઓ પણ જૈન ધર્મી છે, બાર વ્રતના ધારી છે, **મહાવીર પિતાના પુત્રો છે, સમાજને શિરે કલંક ચોંટે તેથી બીએ તેવા છે.** માટે જરૂર મારી વાત માની સ્વરાજ્ય મળતા સુધી કે-**મહાત્મા ગાંધીજી છુટતા સુધી જમણવારો બંધ કરશે,** તે ઉપરાંત સંપૂર્ણ સ્વદેશી બની **દેશની સ્વતંત્રતાના યુધ્ધમાં સૈનિક બની સમાજનું નાક સાચવશે.** મારા ઉત્તર હિંદુસ્તાન અને દક્ષિણ હિંદુસ્તાનના દિ૦ જૈનોની દેશ સેવાનો પડઘો જરૂર મારા ગુજરાતના બંધુઓને પડશે. ને તેઓ જરૂર આગળ આવશે. ભાઇ, તે મને ઘણાજ ઉપકારના ભાર નીચે દાબી દીધો અવસર મળ્યે રાત્રે આવજે, હું હવે રજા લઇશ. એમ કહી હું મારા તે મિત્રને લાયબ્રેરીમાંજ મુકી ચાલી નિકળ્યો.

સુજ્ઞ પાઠક, હું દિગંબર જૈન છું. તેથીજ મારા મિત્રને આટલી ટકોર કરવી પડી. **આપ દિગંબર જૈન હો તો હું માનું છું કે-જરૂર તમે તમારા હૃદયમાં સ્વદેશ પ્રેમને સ્થાન આપશો.** નહિતો પછી કહેવું પડશે કે-

નથી દેશની દાઝ જેને લગારે,
પડયો માતના પેટ પત્થર ભારે.

તમે તમારા જમણવારો જરૂર બંધ કરશો. સ્વદેશી વસ્ત્ર પહેરવા પ્રતિજ્ઞા વંત થશો. અને તમારામાંના ભેદભાવને દૂર કરશો, અને તે વધારે નહિતો મહાત્મા ગાંધીજી છુટતા સુધી બંધ કરી

દુનિઆને બતાવી આપશો કે—દિગંબર જૈનો **પણ હિંદ માતાના પુત્રો છે,** તે પણ સ્વદેશ સેવા કરી જાણે છે.

તમોએ કરેલા ઠરાવો કરેલા સુધારા લીધેલી પ્રતિજ્ઞાઓની હકીકત જાહેર પેપરોમા જરૂર છપાવશો. કે—જેથી તમારો નંબર સ્વરાજ્ય યજ્ઞમા પાછળ નથી, એમ સ્પષ્ટ થાય. પ્રભુ આપને સદ્‌બુદ્ધિ સુઝાડે એજ ઇચ્છા છે. ૐ શાંતિઃ

લખનાર: આપને સ્વદેશ સંગ્રામમા ચડેલા જોવાને ઉત્સુક—

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાણીસાકર.

મુ. કમ્પાલા. (યુગાન્ડા, આફ્રિકા)

નોટ—લેખકે આ લેખમાં ગુજરાતના દિ૦ જૈનોની જે પ્રકારની સ્થિતિ વર્ણવી છે તેવી છેક સ્થિતિ આજે નથી. ગુજરાતના દિ જૈનોમાંથી પણ ઘણા ભાઇ જેલ ગયા છે ઘણાએ દેશસેવામા ફાળો આપી રહ્યા છે તથા ઘણાખરા સ્વદેશી વસ્ત્ર પહેરે છે ને વિદેશી ચીજોનો યથાશક્તિ ત્યાગ કરી રહ્યા છે, વળી આવા કટોકટીના પ્રસંગે પર્યુષણમાં લગભગ બધે સ્થળે જમણવારો બંધ રખાયાજ હતી તેમજ કેટલેક સ્થળે ગમે તેવે પ્રસંગે પણ ન્યાતિ જમણ હાલ બંધ રાખવાના ઠરાવો થઇ ચુકયા છે. જો કે ગુજરાતના દિ. જૈન ભાઇઓએ આ દિશામા હજુ વિશેષ કાર્ય કરવાનું છેજ છતા પણ ગુજરાતના દિ૦ જૈનોની [illegible] સ્થિતિ છેક ઉતારી પડવા જેવી નો

સંપાદક

[illegible] —દિગંબર જૈન હિતવર્ધક સભાની મનેજીંગ કમીટી આસો સુદ ૨ ને દિને વડાલીમા મળી હતી જેમા કુરિવાજો બંધ કરવા સંબંધી ૧૦ ઠરાવો થયા હતા. આ સમયે ગામનું પંચ પણ ત્યા પધાર્યું હતું. વડાલીમા ફરીથી ફંડ ભરાવવાનો વિચાર થયો હતો તથા આવતી મીટીંગ પાલ કોન્ફરંસ વખતે બોલાવવા વિચાર રાખે છે.

અલવા—ના છોટાલાલ તલકચંદ જે કાલુરામ અગ્રવાલ સાથે ટીપ કરવા ગયા હતા તે જંગલમાંથી કંઇ ગુમ થયા છે. કોઇને ખબર મળે તો અલવા પંચને જણાવે.

પાદરામાં યુવક સંઘના ઠરાવો—પાદરામા વીસા મેવાડા દિ. જૈન યુવક સંઘની કાર્યવાહક કમેટીની બીજી બેઠક તા. ૨૦–૨૧ સપ્ટેંબરે રતીલાલ જગજીવનદાસ શાહના પ્રમુખપણા નીચે મળી હતી જેમા હીરાલાલ વકીલે સ્વાગત કર્યા પછી મોહનલાલ મથુરદાસ કાણીસાકર ને મોહનલાલ ઇશ્વરદાસના આવેલા સંદેશાઓ વંચાયા હતા. જે પછી નીચેના ઠરાવો પાસ થયા હતા. (૧) વીસા મેવાડાનું વસ્તી પત્રક તૈયાર કરવું. આ કામ પ્રેમચંદ શીવલાલભાઇ કરે (૨) ૧૯૩૧ ની વસ્તી ગણત્રી વખતે આપણા દરેક ભાઇ પોતાને દિ૦ જૈન લખાવે (૩) વીસા મેવાડા જ્ઞાતિનો પ્રાચીન ઇતિહાસ શોધી કાઢવો એ કાર્ય પણ ભાઇ પ્રેમચંદ શીવલાલ કરે. (૪) રાષ્ટ્રીય લડતનો અંત ન આવે ત્યા સુધી કોઇએ ન્યાતવરા જમવા નહિ (૫) દરેક સભ્યે સીમંતના જમણનો ત્યાગ કરવો. (૬) દરેક સભ્યે બને તેટલા સમય સુતર કાતવું (૭) દરેક ગામે સંઘની શાખા સ્થાપવી તથા કોઇ સ્થળે સંમત ઠરાવોની વિરૂદ્ધ કાર્ય થાય તો તેનો ત્યાંની શાખાએ વિરોધ કરવો ને જરૂર પડે બીજી શાખાઓની સહાય પણ લેવી (૮) નીચે મુજબની પ્રતિજ્ઞા દરેક સભ્ય પાળે

પ્રતિજ્ઞા—હું ૩૦ વર્ષની ઉમર સુધીમાં મૃત્યુ જમણ જમીશ નહિ તેમ પીરસણું લઇશ નહિ, પરદેશી કાપડ ખરીદીશ નહિ. કારણ કરવા રાવા નહિ જવાય ત્યાંથી અટકાવવા પૂર્ણ પ્રયત્ન કરીશ, સીમંતનું જમાડીશ નહિ કે પીરસણું લઇશ નહિ યુવક સંઘને આદર્શ બનાવવા બનતુ કરીશ, રાષ્ટ્રીય લડતના અંત સુધી કોઇપણ ન્યાત જમણ જમાડીશ નહિ, અને તેટલો સમય રેંટીઓ ચલાવીશ, (૯) આવતી બેઠક આવતા બે માસમાં સોજીત્રામાં બોલાવવી.

હીરાલાલ અંબઇદાસ વકીલ, મંત્રી.

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, सपाटिया चकला–सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाडी सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।